सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की सीरते त़य्यिबा से मु-तअ़ल्लिक़
कमोबेश 215 कुतुब से माख़ूज़ 23 बयानात पर मुश्तमिल हसीन गुलदस्ता

Faizane Aaisha Siddiqa (Hindi)

फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)
मक-त-बतुल मदीना

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स़ को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج٥١ ص١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह किताब **"फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا**"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **"हुरूफ़ की पहचान"** नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعْوت،اِسْتِعْمال (दा'वत, इस्ति'माल वग़ैरा)।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 ´ E-mail :translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

सय्यि–दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا
की सीरते त़य्यिबा से मु–तअ़ल्लिक़ कमो बेश
215 कुतुब से माख़ूज़ 23 बयानात पर मुश्तमिल ह़सीन गुलदस्ता

फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बा फ़ैज़ाने सह़ाबिय्यात

नाशिर

मक–त–बतुल मदीना अह़मदआबाद

www.dawateislami.net

नाम किताब : **फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा**

पेशकश : शो'बा फ़ैज़ाने सहाबिय्यात (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

पहली बार : शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1436 सि.हि.

ता'दाद : 3100

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 29 शव्वालुल मुकर्रम 1434 हि. — ह़वाला नम्बर : 185

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

''फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा''

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

06-09-2013

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

www.dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुता़-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी)

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

www.dawateislami.net

इज्माली फ़ेहरिस्त

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
1	सीरते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा	11
2	सय्यि-दतुना आ़इशा की इ़ल्मी शानो शौकत	27
3	सय्यि-दतुना आ़इशा और वाक़िअ़ए इफ़्क	39
4	सय्यि-दतुना आ़इशा के फ़रामीन	63
5	सय्यि-दतुना आ़इशा का ज़ौक़े इ़बादत	115
6	सय्यि-दतुना आ़इशा की सख़ावत	142
7	सय्यि-दतुना आ़इशा की रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िरी	170
8	सय्यि-दतुना आ़इशा का ज़ोह्दो क़नाअ़त	195
9	सय्यि-दतुना आ़इशा को नसीह़तें	227
10	मह़बूबए मह़बूबे ख़ुदा	254
11	सय्यि-दतुना आ़इशा की इन्फ़िरादिय्यत	283
12	सय्यि-दतुना आ़इशा की नेकी की दा'वत	317
13	सय्यि-दतुना आ़इशा की उमूरे ख़ानादारी	340
14	सह़ाबए किराम सय्यि-दतुना आ़इशा से आक़ा की बातें पूछते	378
15	सय्यि-दतुना आ़इशा ब हैसिय्यते मुफ़स्सिरा	410
16	सय्यि-दतुना आ़इशा का ईसार	432
17	सय्यि-दतुना आ़इशा का इ़श्क़े रसूल	447
18	सय्यि-दतुना आ़इशा का फ़रामीने मुस्त़फ़ा पर अ़मल	461
19	सय्यि-दतुना आ़इशा का सुवालात करना	481
20	सय्यि-दतुना आ़इशा की फ़साह़त	521
21	सय्यि-दतुना आ़इशा बत़ौरे मुह़द्दिसा व मुफ़्तिया	535
22	सय्यि-दतुना आ़इशा की गिर्या व ज़ारी	546
23	सय्यि-दतुना आ़इशा की तवाज़ोअ़ व इन्किसारी	560

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

"بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 19 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "**نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ**" या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" **(المعجم الكبير للطبرانی، ٦/١٨٥، الحديث:٥٩٤٢)**

दो म-दनी फूल : ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगी (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगी। ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगी ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगी ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगी और ﴾12﴿ जहां जहां किसी सह़ाबी का नामे मुबारक आएगा वहां رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पढ़ूंगी ﴾13﴿ इस किताब का मुत़ा-लआ़ शुरूअ़ करने से पहले इस के मुअल्लिफ़ीन को ईसाले सवाब करूंगी ﴾14﴿ **अपनी इस्लाह़ के लिये इस किताब के ज़रीए़ इल्म ह़ासिल करूंगी** ﴾15﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगी ﴾16﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगी ﴾17,18﴿ इस ह़दीसे पाक, "**تَهَادَوْا تَحَابُّوْا**" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।" **(مؤطا امام مالك، ٢/٤٠٧، الحديث:١٧٣١)** पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगी ﴾19﴿ किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगी (नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ[6] शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए तराजिमे कुतुब
(3) शो'बए दर्सी कुतुब (4) शो'बए इस्लाही़ कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

"**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़िये !

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** मुआ़-शरे के बिगड़े हुए अफ़्राद को सुधारने और सुन्नतों का पैकर बनाने में कलीदी किरदार अदा कर रही है। बिला शुबा मुआ़-शरे की इस्लाह़ सुन्नतों के सांचे में ढले हुए इस्लाहे़ उम्मत के जज़्बे से सरशार इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों पर मुन्ह़सिर है और इस मक़्सद की तक्मील के लिये इस्लामी नह्ज पर औलाद की दुरुस्त तरबियत ज़रूरी है। औलाद की दुरुस्त तरबियत ऐसी माएं ही कर सकती हैं जिन की सीरतो किरदार में अस्लाफ़े उम्मत का त़र्ज़े अ़मल झलक्ता हो। लिहाज़ा इस्लामी बहनों का सह़ाबिय्यात व सालिह़ात की सीरते त़य्यिबा से आगाह व मुज़य्यन होना ज़रूरी है क्यूं कि इन की इस्लाह़ के लिये सह़ाबिय्यात व सालिह़ाते उम्मत का किरदार मश्अ़ले राह है। इस सिल्सिले में सह़ाबिय्यात व सालिह़ात के ह़ालात व मा'मूलात और सीरतो किरदार पर मुश्तमिल मुस्तनद मवाद **(Literature)** बहुत ज़रूरी है। मगर **अफ़्सोस !** इस मौज़ूअ़ पर मौजूदा दौर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ मुरत्तब और मुस्तनद उर्दू कुतुब कम-याब हैं। बिला शुबा **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता लाखों लाख इस्लामी बहनें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़''** की कोशिश में मसरूफ़े अ़मल हैं और अक्सर इस्लामी बहनें इस ह़वाले से कमी मह़सूस करती हैं चुनान्चे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के चेनल **''म-दनी चेनल''** पर एक सिल्सिला बनाम **''फ़ैज़ाने सह़ाबिय्यात''** शुरूअ़ किया गया, जिस में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा, ह़ाजी अबू रजब **मुह़म्मद शाहिद अ़त्तारी** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی अपने ईमान अफ़रोज़ अन्दाज़ में सह़ाबिय्याते त़य्यिबात رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की सीरते त़य्यिबा के दरख़्शन्दा पहलूओं को उजागर फ़रमाते हैं और **म-दनी चेनल** के नाज़िरीन के लिये नसीह़त आमेज़ म-दनी फूल इर्शाद फ़रमाते हैं। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ की चहीती मजलिस **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (**शो'बा फ़ैज़ाने सह़ाबिय्यात**, सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद)) इस अहम तरीन सिल्सिले को इस्लामी बहनों के वसीअ़ मफ़ाद के पेशे नज़र ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े और तख़्रीज के साथ तह़रीरी सूरत में पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है। इस सिल्सिले की पहली काविश **''शाने ख़ातूने जन्नत''** शाएअ़ हो कर दादो तह़सीन वुसूल कर चुकी है।

अब शो'बा फ़ैज़ाने सह़ाबिय्यात की दूसरी काविश **''फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा''** पूरी आन बान के साथ शाएअ़ हो कर आप के हाथों में है। इस किताब को आप तक पहुंचाने में इस शो'बे के म-दनी उ़-लमा کَثَّرَھُمُ اللہُ تَعَالٰی ने अनथक कोशिश की है। इस में मौजूद ख़ूबियां यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे ह़बीब** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, **औलियाए किराम** رَحِمَھُمُ اللہُ تَعَالٰی की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं की बदौलत हैं और ख़ामियों में हमारी ला शुऊ़री कोताह फ़हमी का दख़्ल है।

www.dawateislami.net

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या और फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की हर नई किताब कमो बेश **16** मराहि़ल से गुज़र कर आप के हाथों में पहुंचती है। जिन में जम्अ़ मवाद, तरतीब व तालीफ़, तख़्रीज, तक़ाबुले आयात व तरजमा, फ़ोर्मेटिंग, प्रूफ़ रीडिंग, तफ़्तीशे तख़्रीज, मुफ़ीद व ना गुज़ीर ह़वाशी, आयाते क़ुरआनिया की पेस्टिंग, शर-ई तफ़्तीश और मुश्किल अल्फ़ाज़ की तस्हील व ए'राब, फ़ाइनल प्रूफ़ रीडिंग वग़ैरा ऐसे कठिन मराहि़ल शामिल हैं। पेशे नज़र किताब में मज़्कूरा मराहि़ल के साथ साथ दर्जे ज़ैल उमूर का भी इल्तिज़ाम किया गया है :

﴾1﴿...... इस किताब में सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के मक़ाम व मर्तबे, इ़ल्मी शानो शौकत, शाने फ़क़ाहत, मुह़द्दिसाना व मुफ़स्सिराना बसीरत, इ़श्क़े रसूल, उमूरे ख़ानादारी, उम्मुल मुअमिनीन और ह़ुज़ूर का तअ़ल्लुक़, विसाले पुर मलाल, मन्क़ूल तफ़्सीर व मरवी अह़ादीस, ख़ुसूसिय्यात, अफ़्ज़लिय्यत, ह़यात व सीरत और दीगर कई मौज़ूआ़त पर मुश्तमिल **23** बयानात यक्जा कर दिये गए हैं।

﴾2﴿...... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अह़ादीसे मुक़द्दसा बयान की गई हैं अगर्चे उन में ज़िम्नन किसी और की फ़ज़ीलत भी मज़्कूर हो, नीज़ सह़ाबा व सलफ़ सालिह़ीन से मन्क़ूल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के फ़ज़ाइल भी दर्ज किये गए हैं।

﴾3﴿...... अह़ादीस व अक़्वाल और दीगर मवाद की कमोबेश **1283** तख़ारुज, **142** क़ुरआनी आयात, **592** अह़ादीसे मुबा-रका, **161** फ़रामीने आ़इशा, सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के मु-तअ़ल्लिक़ **114** फ़रामीन, **29** ह़ैरत अंगेज़ ह़िकायात, **26** म-दनी बहारों और सेंकड़ों म-दनी फूलों के साथ इस किताब को मुज़य्यन किया गया है।

﴾4﴿...... मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर अह़ादीस वग़ैरा में मख़्सूस अ़-रबी जुम्ले मअ़ मफ़्हूम ज़िक्र कर दिये गए हैं।

﴾5﴿...... इस किताब को मुरत्तब करने के लिये अ़-रबी, उर्दू और फ़ारसी की कमो बेश **215** कुतुब से इस्तिफ़ादा किया गया है। जिन में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के कमो बेश **24** और **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** के **41** कुतुबो रसाइल शामिल हैं।

﴾6﴿...... ह़याते मुबा-रका के मुख़्तलिफ़ पहलूओं में ह़त्तल मक्दूर अह़ादीस को तरजीह़ दी गई है ब सूरते दीगर तफ़्सीर, तारीख़, सीरत वग़ैरा कुतुब को पेशे नज़र रखा गया है।

﴾7﴿...... आयाते मुबा-रका क़ुरआनी रस्मुल ख़त़ में लिखी गई हैं नीज़ आयात के ह़वालों के

www.dawateislami.net

एहतिमाम के साथ साथ **"तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान"** का इल्तिज़ाम किया गया है।

﴿**8**﴾...... अहादीसे मुबा-रका की तख़्रीज अस्ल मआख़िज़ से करने का इल्तिज़ाम किया गया है और बाक़ी ह़वाला जात में जो कुतुब दस्त याब हो सकीं उन से तख़्रीज की गई है।

﴿**9**﴾...... ह़त्तल इम्कान आसान और आ़म फ़ह्म अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये गए हैं ताकि ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी बहनें मुस्तफ़ीद हो सकें।

﴿**10**﴾...... अगर कहीं मुश्किल और ग़ैर मा'रूफ़ अल्फ़ाज़ ज़रूरी थे तो उन पर ए'राब लगा कर हिलालैन में मआ़नी व मत़ालिब लिख दिये हैं।

﴿**11**﴾...... अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े अवक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है और बत़ौरे वज़ाह़त मुफ़ीद व ज़रूरी ह़वाशी भी तह़रीर किये गए हैं।

﴿**12**﴾...... तरग़ीब व तहरीस के लिये कई मक़ामात पर अहादीस, वाक़िआ़त और अक़्वाल से ह़ासिल शुदा दर्स को म-दनी फूलों की सूरत में बयान किया गया है।

﴿**13**﴾...... इस किताब को दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के म-दनी इस्लामी भाई मुह़म्मद कफ़ील रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी سَلَّمَهُ الْغَنِی ने अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़ियात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है।

﴿**14**﴾...... किताब की तीन फ़ेहरिस्तें बनाई गई हैं : (1).... ज़िम्नी (2).... तफ़्सीली (3).... ह़िकायात। ज़िम्नी फ़ेहरिस्त आग़ाज़े किताब में और तफ़्सीली व ह़िकायात आख़िर में दी गई है।

किताब **"फ़ैज़ाने आइशा सिद्दीक़ा"** को ख़ुद भी मुकम्मल पढ़िये और दीगर मुसल्मानों को भी इस के मुत़ा-लए की तरग़ीब दिला कर नेकी की दा'वत को आ़म करने का सवाब कमाइये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शो'बा फ़ैज़ाने सह़ाबिय्यात सरदारआबाद {फ़ैसलआबाद}

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

2 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** 1434 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ **08** अक्तूबर **2013** ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴿1﴾...... सीरते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा

ब-रकाते दुरूदो सलाम

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **649** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**हिकायतें और नसीह़तें**" सफ़्ह़ा **610** पर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शुऐ़ब ह़रीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیْه नक़्ल फ़रमाते हैं : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, तृय्यिबा, ताहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "मैं वक़्ते सह़र कुछ सी रही थी कि मेरे हाथ से सूई गिर गई और चराग़ बुझ गया । इतने में हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए, आप صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **चेह्रए ज़ियाबार के अन्वार से सारा कमरा जगमगा उठा और सूई मिल गई ।**

मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेह्रए अन्वर कितना रोशन है । तो आप صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ आ़इशा** (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْهَا) ! **हलाकत है उस के लिये जो बरोज़े क़ियामत मुझे न देखेगा ।**" मैं ने अ़र्ज़ की : बरोज़े क़ियामत आप صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से कौन (बद नसीब) मह़रूम रहेगा ? इर्शाद फ़रमाया : **बख़ील** । मैं ने पूछा : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बख़ील कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : "**जो मेरा नाम सुन कर मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े ।**"

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع، الباب الثالث فی تحذیر من ترک الصلاۃ علیه عند ذکرہ، ص۱۵۳، مفهومًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बरादरे आ'ला ह़ज़रत, शहन्शाहे सुख़न, उस्ताज़े ज़मन मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان अपने मायानाज़ ना'तिया कलाम "**ज़ौक़े ना'त**" में फ़रमाते हैं :

सो-ज़ने (1) गुमशुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे
शाम को सुब्ह़ बनाता है उजाला तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 17)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1)...... सूई

www.dawateislami.net

ख़ुसूसी रफ़ाक़त व क़ुर्बते मुस्तफ़ा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (महबूबे रब्बुल अर्ज़ व वस्समावात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अय्यामे दुन्या के आख़िरी लम्हात की कैफ़िय्यात बयान करते हुए) फ़रमाती हैं : (जब मिज़ाजे रसूल शिद्दते मरज़ की वज्ह से गिरानी महसूस कर रहा था उस वक़्त) ''मेरे पास मेरे भाई ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए, उन के हाथ में मिस्वाक थी। मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन की त़रफ़ देखने लगे। मैं जानती थी कि आप मिस्वाक पसन्द फ़रमाते हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : ''क्या आप के लिये मिस्वाक लूं ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सर मुबारक से हां का इशारा फ़रमाया, तो मैं ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मिस्वाक ले ली वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सख़्त महसूस हुई। मैं ने अ़र्ज़ की : ''क्या मैं इसे नर्म कर दूं ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सर के इशारे से फ़रमाया : ''हां।'' मैं ने मिस्वाक (चबा कर) नर्म की। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने पानी का एक पियाला रखा हुवा था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस में दस्ते अक़्दस दाख़िल करते और अपने चेहरए अन्वर पर मस करते और फ़रमाते : ''**لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ، اِنَّ لِلْمَوْتِ سَکَرَاتٍ**'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, बेशक मौत के लिये सख़्तियां हैं।'' फिर अपना दस्ते अक़्दस बुलन्द कर के अ़र्ज़ करने लगे : ''**فِی الرَّفِیْقِ الْاَعْلٰی**'' या'नी रफ़ीक़े आ'ला में।'' यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया।''

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاتہ، ص١١٠٣، الحدیث:٤٤٤٩)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ''नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे घर, मेरी बारी के दिन, मेरी गरदन और सीने के दरमियान विसाल फ़रमाया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मौत के वक़्त मेरा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लुआ़बे अक़्दस मिला दिया।''

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاتہ، ص١١٠٤، الحدیث:٤٤٥١)

शम्ए ताबाने अ़र्श आस्ताने नबी ग़म गुसारे नबी त़ब्अ़-दाने नबी
राह़ते क़ल्बो रूहे रवाने नबी बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी
उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम

(शर्हे कलामे रज़ा, स. 1059)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बा'द अज़् ख़ुदा बुज़ुर्ग तरीन हस्ती नबिय्ये उम्मी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त बल्कि ज़ाहिरी ह़यात में भी ख़ुसूसी क़ुर्बतो रफ़ाक़त का शरफ़ जिस ह़रीमे नुबुव्वत को ह़ासिल हुवा वोह मह़बूबए मह़बूबे ख़ुदा ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने ह़-रमे नुबुव्वत में क़बूलिय्यत पाने पर सारी ज़िन्दगी इस एह़सानो शुक्र को याद रखा और बत़ौरे तह़दीसे ने'मत अपनी इस इ़ज़्ज़त व अ़-ज़मत को बयान भी फ़रमाया । चुनान्चे,

"सराए सलामत" के दस ह़ुरूफ़ की निस्बत से 10 ख़साइसे आ़इशा ब ज़बाने आ़इशा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **862** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"सीरते मुस्त़फ़ा"** सफ़ह़ा **659** पर शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی तह़रीर फ़रमाते हैं **:** इब्ने सा'द ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से नक़्ल किया है कि ख़ुद ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाया करती थीं कि मुझे तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِنَّ اَجْمَعِیْن पर ऐसी **10** फ़ज़ीलतें ह़ासिल हैं जो दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात को ह़ासिल नहीं हुईं **:**

﴾**1**﴿...... ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सिवा किसी दूसरी कंवारी औ़रत से निकाह़ नहीं फ़रमाया ।

﴾**2**﴿...... मेरे सिवा अज़्वाजे मुत़ह्हरात رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِنَّ اَجْمَعِیْن में से कोई भी ऐसी नहीं जिस के मां बाप दोनों मुहाजिर हों ।

﴾**3**﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी बराअत और पाक दामनी का बयान आस्मान से क़ुरआन में नाज़िल फ़रमाया ।

﴾**4**﴿...... निकाह़ से क़ब्ल ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَیْهِ السَّلَام ने एक रेशमी कपड़े में मेरी सूरत ला कर ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दिखला दी थी और आप तीन रातें ख़्वाब में मुझे देखते रहे ।

﴾**5**﴿...... मैं और ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक ही बरतन में से पानी ले ले कर ग़ुस्ल किया करते थे येह शरफ़ मेरे सिवा अज़्वाजे मुत़ह्हरात رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِنَّ اَجْمَعِیْن में से किसी को भी नसीब नहीं हुवा ।

www.dawateislami.net

《6》...... हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े तहज्जुद पढ़ते थे और मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आगे सोई रहती थी, उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ में से कोई भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस करीमाना महब्बत से सरफ़राज़ नहीं हुई।

《7》...... मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक लिहाफ़ में सोती रहती थी और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़ुदा (عَزَّ وَجَلَّ) की वहूय नाज़िल हुवा करती थी येह वोह ए'ज़ाज़े ख़ुदावन्दी है जो मेरे सिवा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की किसी ज़ौजए मुतहहरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को हासिल नहीं हुवा।

《8》...... वफ़ाते अक्दस के वक्त मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी गोद में लिये हुए बैठी थी और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सरे अन्वर मेरे सीने और हल्क़ के दरमियान था और इसी हालत में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा।

《9》...... हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी बारी के दिन वफ़ात पाई।

《10》...... हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर ख़ास मेरे घर में बनी।

अ-ज़-मते हुस्ने मा'मूर जिन की गवाह इफ़्फ़ते ज़ाते मस्तूर जिन की गवाह
शाने रब चश्मे बद दूर जिन की गवाह या'नी है सूरए नूर जिन की गवाह
उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

(शर्हे कलामे रज़ा, स. 1059)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हर मुसल्मान ब तक़ाज़ाए ईमान **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत करता है और दीन व दुन्या की सआदतों से बहरा मन्द होता है और इस से भी बढ़ कर यक़ीनन सआदत मन्द वोह है जिस को **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلَّم चाहें और इस पर तुर्रा येह कि इन की इफ़्फ़त व इज़्ज़त को आयाते कुरआनिया तहफ़्फ़ुज़ दें। इन का सीनए बे कीना जिस्मे सरकारे मदीना के लिये रेहूल बने। इन के मस्कन को शाहे हर दो सरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी हयाते दुन्या और हयाते क़ब्र के लिये मुन्तख़ब फ़रमाएं। ऐसी अ-बदी सआदतें और ला ज़वाल इज़्ज़तें जिस का ताज बनें वोह ज़ौजए रसूल, बिन्ते सिद्दीक़ हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ज़ाते वाला सिफ़ात है।

www.dawateislami.net

तआ़रुफ़े सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **679** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''जन्नती ज़ेवर''** सफ़ह़ा **483** पर है : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की साहिब ज़ादी हैं इन की मां का नाम ''उम्मे रूमान'' है इन का निकाह़ हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क़ब्ले हिजरत मक्कए मुकर्रमा में हुवा था लेकिन काशानए नुबुव्वत में येह मदीनए मुनव्वरह के अन्दर शव्वाल 2 सि.हि. में आईं येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़बूबा और बहुत ही चहीती बीवी हैं।

(شرح الزرقانی، الفصل الثالث فی ذکرازواجه الطاهرات ...الخ، عائشة اُمّ المؤمنین، ٣٨١/٤-٣٨٢-٣٨٥، ملتقطًا)

हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बारे में इर्शाद फ़रमाया : ऐ उम्मे स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ! मुझे आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बारे में कोई तक्लीफ़ न दो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझ पर आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सिवा तुम में से किसी बीवी के लिह़ाफ़ में वह़्य नाज़िल नहीं हुई।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ص٩٥٢، الحدیث:٣٧٧٥)

उन के बिस्तर में वह़ी आए रसूलुल्लाह पर
और सलामे ख़ादिमाना भी करें रूहुल अमीं

(दीवाने सालिक, स. 31)

फ़िक़्ह व ह़दीस के उ़लूम में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाज के दरमियान सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का द-रजा बहुत ऊंचा है। बड़े बड़े सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मसाइल पूछा करते थे।

सय्यि-दतुना आ़इशा की शाने इबादत व सख़ावत

शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मजीद फ़रमाते हैं : इबादत में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मर्तबा बहुत ही बुलन्द है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भतीजे ह़ज़रते इमाम क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का बयान है कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रोज़ाना बिला नाग़ा नमाज़े तहज्जुद पढ़ने की पाबन्द थीं और अक्सर रोज़ादार भी रहा करती थीं। सख़ावत और स-दक़ातो ख़ैरात के मुआ़-मले में भी तमाम उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में ख़ास तौर पर बहुत मुमताज़ थीं। उम्मे दुर्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कहती हैं कि मैं ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास थी उस वक़्त एक लाख दिरहम कहीं से

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास आए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने उसी वक़्त उन सब दिरहमों को लोगों में तक़्सीम कर दिया और एक दिरहम भी घर में बाक़ी नहीं छोड़ा। उस दिन वोह रोज़ादार थीं। मैं ने अ़र्ज़ किया कि आप ने सब दिरहमों को बांट दिया और एक दिरहम भी बाक़ी नहीं रखा ताकि आप गोश्त ख़रीद कर रोज़ा इफ़्तार करतीं, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया कि तुम ने अगर मुझ से पहले कहा होता तो मैं एक दिरहम का गोश्त मंगा लेती। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के फ़ज़ाइलो मनाक़िब में बहुत सी ह़दीसें आई हैं। 17 **र-मज़ानुल मुबारक** शबे सेह शम्बा (मंगल की रात) 57 या 58 हि. में मदीनए मुनव्वरह के अन्दर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की वफ़ात हुई। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आप की वसिय्यत के मुत़ाबिक़ रात में लोगों ने आप को **जन्नतुल बक़ीअ़** के क़ब्रिस्तान में दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात की क़ब्रों के पहलू में दफ़्न किया। (सीरते मुस्त़फ़ा, स. 660 ता 662, मुल्तक़ित़न)

क्यूं न हो रुत्बा तुम्हारा अहले ईमां में बड़ा
सब तो हैं मोमिन मगर हैं आप उम्मुल मुअमिनीं

(दिवाने सालिक, स. 13)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"बिन्ते सिद्दीक़" के सात हुरूफ़ की निस्बत से फ़ज़ाइले आ़इशा पर मुश्तमिल 7 रिवायात

﴾1﴿...... एक रोज़ रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से फ़रमाया : ऐ आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ! येह जिब्राईल (عَلَیۡہِ السَّلَام) हैं, तुम्हें सलाम कहते हैं।

(سنن الترمذی، ابواب المناقب عن رسول اللّٰہ، باب فضل عائشۃ رضی اللّٰہ عنہا، ص۸۷۲، الحدیث:۳۸۸۰)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیۡہِ السَّلَام सब्ज़ रेशमी कपड़े में ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की तस्वीर ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "येह दुन्या व आख़िरत में आप की ज़ौजा हैं।" **(المرجع السابق، الحدیث:۳۸۷۹)**

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप के नज़्दीक सब से प्यारा इन्सान कौन है ? फ़रमाया : आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا)। मैं ने फिर पूछा : और मर्दों में से ? फ़रमाया : उन के वालिद (या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ)। **(المرجع السابق، ص۴۷۳، الحدیث:۳۸۸۴)**

www.dawateislami.net

﴾4﴿...... नबिय्ये अकरम, रसूले मुहूतशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी लाडली शहज़ादी हज़रते सय्यि-दतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को मुख़ातब कर के इर्शाद फ़रमाया : रब्बे का'बा की क़सम ! तुम्हारे वालिद को आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बहुत ज़ियादा महबूब हैं ।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب ، باب فی الانتصار، ص٧٦٨، الحدیث:٤٨٩٨)

﴾5﴿...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बयान करते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पड़ोस में रहने वाला एक ईरानी जो शोरबा बहुत अच्छा बनाता था, एक दिन उस ने रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये बनाया और आप को दा'वत देने हाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : और क्या आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) भी (मदऊ है) ? अर्ज़ की : नहीं । इस पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की दा'वत क़बूल करने से इन्कार कर दिया, उस ने दोबारा दा'वत दी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : और क्या आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) भी ? उस ने इन्कार किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी (दा'वत क़बूल करने से) इन्कार फ़रमा दिया । उस ने तीसरी दफ़्आ दा'वत दी, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर पूछा : क्या आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) भी ? उस ने अर्ज़ की : जी हां ! (इन की भी दा'वत है) तब आप दोनों (**रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) एक दूसरे को थामते हुए उठे और उस के घर तशरीफ़ ले गए ।

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب ما یفعل الضیف اذا تبعہ۔۔۔الخ، ص٨٠٨، الحدیث:٢٠٣٧)

﴾6﴿...... उम्मुल मुअमिनीन बिन्ते अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने अपने सरताज, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये दुआ फ़रमाइये ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारगाहे ख़ुदा में यूं इल्तिजा की : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) के अगले पिछले ज़ाहिरी बातिनी गुनाह मुआफ़ फ़रमा दे । येह सुन कर हज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इस क़दर मुस्कुराईं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का सर अपनी गोद में चला गया । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम मेरी दुआ पर ख़ुश होती हो ? अर्ज़ की : मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ पर क्यूं न ख़ुश होउं ? तो रसूले करीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बेशक हर नमाज़ में येह दुआ मेरी उम्मत के लिये है ।

(صحیح ابن حبان، کتاب اخبارہ عن مناقب الصحابۃ، ذکر مغفرۃ اللہ جل وعلا ذنوب عائشۃ۔۔۔الخ، ص١٩٠١، الحدیث:٧١١١)

www.dawateislami.net

《7》...... आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا) की फ़ज़ीलत तमाम औ़रतों पर ऐसी है जैसे सरीद की सब खानों पर। (سنن الترمذی، ابواب المناقب عن رسول اللّٰہ، باب فضل عائشۃ، ص۸۷۳، الحدیث:۳۸۸۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शारेहे़ मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی फ़रमाते हैं : सरीद या'नी रोटी शोरबा बोटियां एक जान की हुई बेहतरीन ग़िज़ा है सारी ग़िज़ाओं से अफ़्ज़ल कि वोह ज़ूद हज़्म, निहायत मुक़व्वी बहुत मज़ेदार, चबाने से बे नियाज़ बहुत सिफ़ात की जामेअ़ ग़िज़ा है ऐसे ही ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا सूरत, सीरत, इ़ल्म, अ़मल, फ़साह़त, फ़त़ानत, ज़कावत, अ़क़्ल, हु़ज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की मह़बूबिय्यत वग़ैरा हज़ारहा सिफ़ात की जामेअ़ हैं। ह़क़ येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا सारी औ़रतों ह़त्ता की ख़दी-जतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا से भी अफ़्ज़ल हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا बहुत अह़ादीस की जामेअ़, उ़लूमे कुरआनिया की माहिर बीबी हैं رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا। (مراۃ المناجیح، کتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبی، ۸/۵۰۱)

मज़ीद फ़रमाते हैं : जनाब ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا के फ़ज़ाइल रैत के ज़र्रों, आस्मान के तारों की त़रह़ बे शुमार हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا रब तआ़ला का तोह़फ़ा हैं जो हु़ज़ूरे अन्वर को अ़त़ा हुई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا की इ़स्मत व इ़फ़्फ़त की गवाही खुद रब तआ़ला ने कुरआने मजीद में सूरए नूर में दी ह़ालां कि जनाबे मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا और यूसुफ़ عَلَیۡہِ السَّلام की इ़स्मत की गवाही बच्चे से दिलवाई गई।

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम
या'नी है सूरए नूर जिन की गवाह उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 311)

उम्मत को तयम्मुम की आसानी आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا के सदके़ से मिली, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا के सीने पर हुवा। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आख़िरी आराम गाह आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا का हु़जरा है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا का लुआ़ब हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लुआ़ब के साथ विसाल के वक़्त जम्अ़ हुवा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا के बिस्तर में वह़्य आती थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہا खुद सिद्दीक़ा हैं और सिद्दीक़ की बेटी हैं। (المرجع السابق، ص۵۰۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

करामाते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते सय्यिदुना रूहुल अमीन عَلَیْهِ السَّلَام का ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को सलाम कहना और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बिस्तर पर रसूले ख़ुदा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह़्य उतरना इन दो रिवायात को शैख़ुल ह़दीस मुफ़्ती अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की करामात में शुमार किया है और इस के इ़लावा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की एक तीसरी करामत भी बयान फ़रमाई है । चुनान्चे

सय्यि-दतुना आ़इशा की रहनुमाई से बारिश

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **346** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**करामाते सह़ाबा**" सफ़ह़ा **334** पर है : एक मर्तबा मदीनए मुनव्वरह में बारिश नहीं हुई और लोग शदीद क़ह़त़ में मुब्तला हो कर बिलबिला उठे । जब लोग क़ह़त़ की शिकायत ले कर ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमते अक़्दस में पहुंचे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि मेरे हुजरे में जहां हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर है, उस हुज्रए मुबा-रका की छत में एक सूराख़ कर दो ताकि हुज्रए मुनव्वरह से आस्मान नज़र आने लगे । चुनान्चे जैसे ही लोगों ने छत में एक सूराख़ बनाया फ़ौरन ही बारिश शुरूअ़ हो गई और अत़राफ़े मदीनए मुनव्वरह की ज़मीन सर सब्ज़ो शादाब हो गई और उस साल घास और जानवरों का चारा भी इस क़दर ज़ियादा हुवा कि कस्रते ख़ूराक से ऊंट फ़र्बा हो गए और चरबी की ज़ियादती से उन के बदन फूल गए ।

(سنن الدارمی، المقدمۃ، باب ما اکرم اللہ تعالٰی نبیہ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم بعد موتہ، ص۵۸، الحدیث:۹۳)

न हो मायूस मेरे दुख दर्द वाले — दरे शह पर आ, हर मरज़ की दवा ले
ख़ुदा का करम दस्त गीरी को आए — तेरा नाम ले लें अगर गिरने वाले
दरे शह पर ऐ दिल मुरादें मिलेंगी — यहां बैठ कर हाथ सब से उठा ले

(ज़ौक़े ना'त, स. 160, 162)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی इस ह़दीसे पाक के तह़त "**मिरआतुल मनाजीह़**" में फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि **आस्मानी आफ़ात की शिकायत अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मक़्बूल बन्दों से कर सकते हैं ।**

www.dawateislami.net

मज़ीद फ़रमाते हैं : (सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان) हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हयात शरीफ़ में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुल से दुआएं मांगते थे। बा'दे वफ़ात (हुज़ूरे अक्दस) जनाबे आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर बल्कि इस की ख़ाक की ब-र-कत से दुआ कराई, येह भी दर हक़ीक़त हुज़ूर ही के वसीले से दुआ है। येह तरीक़ा बहुत मुबारक है, इस हदीस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए : एक येह कि वफ़ात याफ़्ता बुज़ुर्गों के वसीले से दुआएं करना जाइज़ है। दूसरे येह कि उन के तबर्रुकात के वसीले से दुआएं करना जाइज़ बल्कि सुन्नते सहाबा है। तीसरे येह कि **बुज़ुर्गों की क़ब्रें बि इज़्ने इलाही दाफ़ेउल बला और मुश्किल कुशा हैं।** (مراٰۃ المناجیح، کتاب احوال القیامۃ۔۔۔الخ، باب الکرامۃ، ۸/۲۷۶۔۲۷۷، ملتقطاً)

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने महबूबए रसूले अन्वर, बिन्ते सिद्दीक़े अक्बर हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا को कितने फ़ज़ाइलो ख़साइल से नवाज़ा था, इस क़दर रफ़ीउश्शान मक़ाम रखने के बा वुजूद आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا हुब्बे जाह से नुफ़ूर और गुमनामी की ख़्वाहिश मन्द थीं, जैसा कि

गुमनामी की ख़्वाहां

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा तय्यिबा ताहिरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا ने क़ब्ल अज़ विसाल हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ से इर्शाद फ़रमाया : हज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُمَا तशरीफ़ लाए उन्हों ने मेरी ता'रीफ़ की तो मैं ने ख़्वाहिश की **''काश ! मैं गुमनाम होती !''**

(صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب ولولا اذ سمعتموہ قلتم ما یکون لنا۔۔۔الخ، ص۱۲۰۵، الحدیث:۴۷۵۳)

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा तय्यिबा ताहिरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا वोह हस्ती हैं, जिन की इ़ज़्ज़तो अ़-ज़मत और शोहरत के डंके आलमे इस्लाम में बज रहे हैं, जलीलुल क़द्र सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا की ता'रीफ़ में रत्बुल्लिसान हैं। लेकिन दिल अपनी ता'रीफ़ सुन कर ख़ुश नहीं हो रहा बल्कि गुमनामी का ख़्वाहां है।

काश ! हम सब को हुब्बे जाह से बचने और गुमनाम रहने का जज़्बा अ़ता हो जाए, वरना येह भी एक हक़ीक़त है कि बा'ज़ ब ज़ाहिर नेक और अच्छाइयों पर कारबन्द अश्ख़ास भी

www.dawateislami.net

हुब्बे जाह के मरज़ में गिरिफ़्तार हो जाते हैं, गुमनामी की ने'मत की त़लब नहीं रखते, अच्छाई व भलाई के इवज़ ता'रीफ़ व ह़ौसला अफ़्ज़ाई की ख़्वाहिश में उन का दिल मचलता है। साहिबे मिरक़ात मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : **"शोहरत पसन्दी के मरज़ में उ़-लमा व इबादत गुज़ार ज़ियादा मुब्तला होते हैं।"**

(مرقاة المفاتيح، كتاب الرقاق، باب الرياء والسمعة، ۹/۰۱۰، تحت الحديث: ۵۳۲۶)

इस अम्र की मज़ीद वज़ाहत और इस पर वारिद वईद का तज़्किरा **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़बूआ़ **102** सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब **"इल्मो हिक्मत के 125 म-दनी फूल"** सफ़्हा **53** पर कुछ यूं किया गया है : जब कोई इल्मी नुक्ता बयान करता है, तह़क़ीक़ी कारनामा अन्जाम देता है, मक़ाला लिखता या कहता या कोई तस्नीफ़ करता है तो उ़मूमन दिल में येह ख़्वाहिश पैदा होती है कि **काश !** कोई ता'रीफ़ करे बल्कि ता'रीफ़ी कलिमात लिख कर दे, इसी त़रह़ ना'त शरीफ़ पढ़ने वाले, सुन्नतों भरे बयान करने वाले और मुख़्तलिफ़ नेकियां बजा लाने वाले भी अक्सर ह़ौसला अफ़्ज़ाई के नाम पर अपनी ता'रीफ़ किये जाने के मुन्तज़िर रहते हैं या'नी उन की आरज़ू होती है कि **काश !** कोई ह़ौसला अफ़्ज़ाई करे और ज़ाहिर है कि अक्सर ह़ौसला अफ़्ज़ाई ता'रीफ़ ही पर मब्नी होती है। इन सब ता'रीफ़ और ह़ौसला अफ़्ज़ाई के त़लब गारों के लिये एक म-दनी फूल ह़ाज़िर है। सहाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ब वक़्ते वफ़ात फ़रमाया : "इस उम्मत के ह़क़ में मुझे सब से ज़ियादा ख़ौफ़ रियाकारी और मख़्फ़ी (या'नी छुपी हुई) शह्वत का है।" ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने यहां मख़्फ़ी शह्वत के मा'ना येह इर्शाद फ़रमाए हैं : **या'नी नेकी पर ता'रीफ़ की ख़्वाहिश होना।**

(جامع بيان العلم وفضله، باب ما جاء فى مسائلة الله عزوجل العلماء يوم القيامة...الخ، ص۲۴۸، ۲۴۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकियों पर त़-लबे शोहरत क़ाबिले मज़म्मत है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नेकी पर ता'रीफ़ की ख़्वाहिश और शोहरत की चाहत बहुत बुरा अ़मल है, येही चाहत व ख़्वाहिश रियाकारी की बुन्याद है जो आ'माले सालिह़ा की रूह़ानिय्यत और इस पर मिलने वाले अज्र को ख़त्म करती और रब तआ़ला عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मोल लेने का सबब बनती है। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद

www.dawateislami.net

गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : ''जाह व मन्सब का मु-तलाशी हमेशा रन्ज उठाता है और अगर बिलफ़र्ज़ इ़ज़्ज़त व शोहरत इस क़दर कसरत से मिले कि तमाम मख़्लूक़ उस की ह़द द-रजा ता'ज़ीम करे, तो फिर भी क्या फ़ाएदा ? इसे दवाम (या'नी हमेशगी) तो है नहीं क्यूं कि एक दिन मौत आ कर सब कुछ ख़त्म कर देगी।''

(ملخّص از کیمیائے سعادت،اصل ہفتم درعلاج دوستی جاہ وحشمت وآفات آن،فصل بدانکہ جاہ ......الخ،پیداکردن علاج دوستی جاہ، ص۲۶۳)

ख़ाक पाए आ़इशा का सदक़ा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हर क़ल्बी मरज़ से नजात अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

नीम जां कर दिया गुनाहों ने
मरज़े इ़स्यां से दे शिफ़ा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हर दौर में कुछ ऐसे अफ़राद पाए जाते हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ीम बन्दों और नेक लोगों की क़दरो मन्ज़िलत जानते मानते नहीं, लाइक़े सद तह़सीन हैं हमारे वोह अस्लाफ़ और लाइक़े तक़्लीद है उन का किरदार जिन्हों ने मुक़र्रबीने बारगाहे इलाह की बदगोई करने वालों से निमटने का त़रीक़ा बताया और अपने अ़मल से वाज़ेह़ किया कि किसी भी मुसल्मान और बिल ख़ुसूस सरदाराने मिल्लत की बदगोई व बद ख़्वाही ना क़ाबिले बरदाश्त है ऐसों से ख़ुद को दूर रखना और उन से अपनी मजालिस को पाक रखना ता'लीमाते इस्लामिया में से है, अभी आप ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا की अ़-ज़-मतों और रिफ़्अ़तों पर मुश्तमिल बयान सुना और येह भी कि जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا की मक़्बूलिय्यत व अहम्मिय्यत के मो'तरिफ़ थे। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का येह ए'तिराफ़ दिल से था, मुनाफ़िक़ों की त़रह़ सामने सामने ख़ुशामद करने वाले और पीठ पीछे साज़िशों के जाल बिछाने वाले और गले लगा कर पीठ में छुरा घोंपने वाले नहीं थे। इन ख़ालिस व सादिक़ मुअमिनीन और नुफ़ूसे कुदसिय्या ने अ़-ज़-मते आ़इशा का इक़रार व ए'तिराफ़ किया और इस का हर वक़्त पास भी रखा, माह़ोल व अह़वाल की तब्दीली ने इन के कुलूबो अज़्हान से अ़-ज़-मतो रिफ़्अ़ते आ़इशा को मह़्व न होने दिया और अगर किसी ने ज़बान दराज़ी की तो फ़ौरन उस की ज़बान को लगाम दी, जैसा कि

सय्यि-दतुना आ़इशा का मुख़ालिफ़ और सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पास आ कर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के बारे में ना मुनासिब गुफ़्त-गू

www.dawateislami.net

करने लगा, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ओ, मरदूद और बद तरीन आदमी ! निकल जा, क्या तू महबूबए रसूल की तक्लीफ़ का सब बनता है ?

(سنن الترمذی، ابواب المناقب عن رسول الله، باب فضل عائشة، ص٨٧٣، الحدیث:٣٨٨٧)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का येह त़र्ज़े अ़मल हम सब के लाइक़े तक़्लीद है अगर हमारे सामने कोई शख़्स किसी की बुराई करे, चुग़ली खाए तो उसे फ़ौरन रोक दिया जाए और अगर वोह किसी **अल्लाह** वाले का बद गो हो तो उसे अपने से फ़ौरन दूर कर दिया जाए कि हुस्ने अख़्लाक़, हुस्ने ए'तिक़ाद और हुस्ने अ़क़ीदत का येही तक़ाज़ा है। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ ने पारह **7**, **सू-रतुल अन्आ़म** की आयत नम्बर **68** में बद मज़्हबों के साथ मेलजोल रखने से मन्अ़ करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ (پ٧، الانعام:٦٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان इस आयते करीमा की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि बुरी सोह़बत से बचना निहायत ज़रूरी है। **बुरा यार बुरे सांप से बदतर है** कि बुरा सांप जान लेता है और बुरा यार ईमान बरबाद करता है। (तफ़्सीरे नुरुल इरफ़ान, पारह : 7, अल अन्आ़म, तह़तल आयह : 68, स. 164)

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा ! बे अ-दबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 193)

सय्यि-दतुना आ़इशा का नेकी की दा'वत का जज़्बा

ह़ज़रते सय्यि-दतुना बुनाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि वोह उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास थीं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में एक बच्ची लाई गई जिस पर **झांझन** थे जो आवाज़ कर रहे थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बोलीं कि इसे मेरे पास हरगिज़ न लाओ मगर इस सूरत में कि इस के **झांझन** तोड़ दिये जाएं मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि उस घर में फ़िरिश्ते नहीं आते जिस में **झांज** हो।

(سُنَنِ اَبوداؤد، کتاب الخاتم، باب ما جاء فی الجلاجل، ص٦٦٢، الحدیث:٤٢٣١)

www.dawateislami.net

मज़्कूरा ह़दीसे पाक में **''जरस''** का लफ़्ज़ इस्ति'माल हुवा है, लफ़्ज़े **''अजरास''** की तह़क़ीक़ करते हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **''अजरास** जम्अ़ **जरस** की, ब मा'ना जलाजल या'नी **घुंगरू** और उस जैसी आवाज़ देने वाली चीज़, ऊंट के गले के **घुंगरू** और बाज़ (नामी परिन्दे) के पाउं के छल्लों को भी अजरास या जलाजल कहते हैं। हमारे हिन्दूस्तान में भी पहले औ़रतों में झांजन का रवाज था।''

नीज़ ह़दीसे पाक में **झांजन** तोड़ देने का ज़िक्र है उस की शर्ह़ करते हुए मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''या इस त़रह़ (तोड़ दें) कि उन के अन्दर के कंकर निकाल दिये जाएं या इस त़रह़ कि उस के **घुंगरू** अलग कर दिये जाएं या इस त़रह़ की ख़ुद **झांजन** ही तोड़ दिये जाएं ग़-रज़े कि इन में आवाज़ न रहे।'' (مرآۃ المناجیح، کتاب اللباس، باب الخاتم، ۶/۱۳۵۔۱۳۶)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! औ़रतों को ज़ेवरात की आवाज़ें छुपाने का भी हुक्म है, इन्हें घर में चलने फिरने में भी इस क़दर ज़ोर से पाउं रखना कि ज़ेवर की झन्कार की आवाज़ ग़ैर मह़रमों तक पहुंचे, मन्अ़ है, चुनान्चे फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَ لَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ (پ۱۸، النور:۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुवा सिंगार।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ''या'नी औ़रतें घर के अन्दर चलने फिरने में भी पाउं इस क़दर आहिस्ता रखें कि इन के ज़ेवर की झन्कार न सुनी जाए।''

मज़ीद फ़रमाते हैं : ''इसी लिये चाहिये कि औ़रतें बाजेदार झांझन न पहनें ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** तआ़ला उस क़ौम की दुआ़ नहीं क़बूल फ़रमाता जिन की औ़रतें झांझन पहनती हों। इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अ़-दमे क़बूले दुआ़ का सबब है तो ख़ास औ़रत की आवाज़ और इस की बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़ज़बे इलाही होगी, पर्दे की त़रफ़ से बे परवाई तबाही का सबब है।'' (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 18, सू-रतुन्नूर, तह़तल आयह : 31, स. 656)

मेरे आक़ा, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इर्शाद फ़रमाते हैं : बजने वाला ज़ेवर औ़रत के लिये इस ह़ालत में जाइज़ है कि ना मह़रमों म-सलन ख़ाला, मामूं, चचा, फूफी के बेटों, जेठ, देवर, बहनोई के सामने न आती हो न इस के ज़ेवर की झन्कार (या'नी बजने की आवाज़) ना मह़रम तक पहुंचे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 128 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की रिवायत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के जज़्बए **अम्र बिल मा'रूफ़ व नह्‌य अ़निल मुन्कर** का पता चलता और इस बात की तरग़ीब मिलती है कि शर-ई उमूर की पासदारी करते हुए जहां जहां नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने का मौक़अ़ मिले इस से ज़रूर फ़ाएदा उठाना चाहिये । इस सिल्सिले में आप तमाम इस्लामी बहनों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और इस अ़ज़ीम म-दनी मक़्सद कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है**" को पायए तक्मील तक पहुंचाने में लग जाइये । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल नेकियों को आ़म करने और बुराइयों को मिटाने का म-दनी ज़ेह्‌न देता है, इस माह़ोल को अपना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दीनो दुन्या की ढेरों भलाइयां हाथ आएंगी, तरग़ीब के लिये एक म-दनी बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

चल मदीना की सआ़दत मिल गई

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ **32** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**चल मदीना(1) की सआ़दत मिल गई**" सफ़्ह़ा **3** पर है : बाबुल मदीना कराची की एक इस्लामी बहन के ह़ल्फ़िय्या बयान का ख़ुलासा है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! हमारा घराना आक़ाए ने'मत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के एक अ़ज़ीमुल मर्तबत ख़लीफ़ा عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْوَرٰی की औलाद से है, सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت के येह ख़लीफ़ए मुकर्रम मेरी वालिदए मोह़-त-रमा के नानाजान थे और हमारे तमाम अहले ख़ाना इन्ही के दस्ते मुबारक पर बैअ़त थे, इन से बैअ़त की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت की मह़ब्बत व अ़क़ीदत रग रग में सरायत किये हुए थी लेकिन अ़-मली ज़िन्दगी में मेरी मिसाल कोरे काग़ज़ की सी थी बिल ख़ुसूस नमाज़ों की पाबन्दी से मह़रूमी, फ़ेशन परस्ती और गाने बाजे सुनने की नुहूसत छाई हुई थी नीज़ ग़ुस्सा और चिड़चिड़ा पन भी मेरी आ़दत में शामिल था मेरे फूफीज़ाद भाई (जो कि **दा'वते इस्लामी** के

(1)...... शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ के हमराह दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले में ह़ज व ज़ियारते मदीना से मुशर्रफ़ होना म-दनी माह़ोल में चल मदीना की सआ़दत पाना कहलाता है ।

www.dawateislami.net

मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्ता थे) ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मेरे भाईजान को भी **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की न सिर्फ़ दा'वत दी बल्कि अपने साथ ले जाना शुरूअ़ कर दिया। भाईजान सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से वापस आ कर इज्तिमाअ़ में होने वाले बयान के मु-तअ़ल्लिक़ गुफ़्त-गू करते जिस में सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का ज़िक्रे ख़ैर सुनने को मिलता जिस की वज्ह से मुझे **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से अपनाइयत सी मह़सूस होने लगी, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इसी एह़सास ने मुझे पहली बार 1405 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ **1985** ई. के सालाना सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ख़ुसूसी निशस्त में शिर्कत पर उभारा। चुनान्चे मैं भी इस्लामी बहनों के साथ इज्तिमाअ़ में शरीक हुई जहां मैं ने पर्दे में रह कर सुन्नतों भरा बयान सुना और दुआ़ मांगी اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! उस इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ब-र-कत से मुझे गुनाहों से तौबा करने की सआ़दत नसीब हुई और फ़िक्रे आख़िरत का जज़्बा मिला जिस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये मैं ने म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करना शुरूअ़ कर दिया اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! म-दनी इन्आ़मात की ब-र-कत से मुझे अपने मह़रम के साथ **चल मदीना** की सआ़दत भी नसीब हो गई।

ऐ बीमारे इ़स्यां तू आ जा यहां पर — गुनाहों की देगा दवा म-दनी माह़ोल
अ़त़ाए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ोल — है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा म-दनी माह़ोल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَ الله — तुम अपनाए रख्खो सदा म-दनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 603, 604)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ुस्सा दूर करने का त़रीक़ा

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है: "जब तुम में से किसी को ग़ुस्सा आए तो अगर खड़ा हो तो बैठ जाए, अगर ग़ुस्सा चला जाए तो ठीक वरना लैट जाए।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب ما یقال عند الغضب، ص۷۵۳، الحدیث۴۷۸۲)

www.dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बयान ﴾2﴿..... सय्यि-दतुना आ़इशा की इ़ल्मी शानो शौकत

नेकियां बढ़ाने और गुनाह मिटाने का नुस्ख़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **419** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**म-दनी पन्जसूरह**" सफ़ह़ा **163** पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा बिन नियार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुकर्रम है : "मेरी उम्मत में से जिस ने सिद्क़े दिल से एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **10 रह़मतें** नाज़िल फ़रमाएगा, उस के लिये **10 नेकियां** लिखेगा, उस के **10 द-रजात** बुलन्द फ़रमाएगा और उस के **10 गुनाह** मिटा देगा।"

(المعجم الكبير، باب الهاء، من اسمه هانی......الخ، ما اسنده ابوبردة بن نيار، ٩/٢٤٧، الحديث:١٧٩٦١)

ज़ाते वाला पे बार बार दुरूद   बार बार और बे शुमार दुरूद
रूए अन्वर पे नूर बार सलाम   ज़ुल्फ़े अत़्हर पे मुश्कबार दुरूद

(ज़ौक़े ना'त, स. 89)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबा की मर्कज़ी दर्सगाह बारगाहे आ़इशा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हम अस्ह़ाबे रसूल को किसी बात में इश्काल होता तो हम ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में सुवाल करते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास से ही उस बात का इ़ल्म पाते।

(سُنَنُ التِرمذی، ابواب المناقب عن رسول الله، با ب فضل عائشة رضی الله عنها، ص٨٧٣، الحديث:٣٨٨٢)

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن बयान कर्दा रिवायत के तह़्त "**मिरआतुल मनाजीह़**" में तह़रीर फ़रमाते हैं : अस्ह़ाबे **रसूलुल्लाह** को किसी मस्अले में कोई इश्काल होता और वोह मुश्किल कहीं ह़ल न होती तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास हाज़िर होते, इन के पास या तो उस के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीस मिल जाती या किसी ह़दीस से उस मस्अले का इस्तिम्बात़ मिल जाता। अज़् आदम ता ईं दम (ह़ज़रते आदम عَلَیۡہِ السَّلَام से ले कर आज तक) कोई बीबी ऐसी आ़लिमा फ़क़ीहा पैदा न हुई जैसी जनाबे ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا हुईं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا उ़लूमे क़ुरआनिया, उ़लूमे ह़दीस की जामेअ़, बड़ी मुह़द्दिसा, बड़ी फ़क़ीहा थीं। सिर्फ़ एक मिसाल पेश करता हूं : किसी ने अ़र्ज़ किया कि ऐ उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ! क़ुरआन से मा'लूम होता है कि ह़ज व उ़म्रह में सफ़ा व मर्वह की सअ़्य वाजिब नहीं, सिर्फ़ जाइज़ है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا (1) कि इन के सअ़्य में गुनाह नहीं आप ने जवाब दिया : अगर येह सअ़्य वाजिब न होती तो यूं इर्शाद होता : لَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ لَا يَطَّوَّفَ بِهِمَا (कि इन के सअ़्य न करने में गुनाह नहीं)। देखो ! इस एक जवाब में उसूले फ़िक़्ह का कितना दक़ीक़ मस्अला ह़ल फ़रमा दिया कि वाजिब की पहचान येह है कि इस के करने में सवाब, न करने में गुनाह, जाइज़ की पहचान येह है कि उस के न करने में गुनाह न हो। यहां आयत में पहली बात फ़रमाई गई है।

(مراٰۃ المناجیح، کتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبی، ۸/۵۰۵)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उस बारगाहे आ़लिया की जलालते इ़ल्मी का क्या आ़लम होगा जहां सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان भी अपने इ़ल्मी इश्कालात का ह़ल पाते, इ़ल्मी मनाफ़ेअ़ उठाते और इस का इक़रार करते नज़र आते हैं। इस रिवायत से येह सुबूत मिलता है कि सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की त़बाएअ़ (त़बीअ़त की जम्अ़) इ़ल्मी मशाग़िल की त़रफ़ ह़द द-रजा माइल थीं और वोह हुसूले इ़ल्मे दीन की कोशिश में समझ न आने वाली बातों को नज़र अन्दाज़ या मुअख़्ख़र करने के आ़दी न थे बल्कि उसे समझने की तगो दौ में मसरूफ़ रहते ह़त्ता कि मर्कज़े उ़लूमे न-बविय्या, बारगाहे आ़इशा में भी रुजूअ़ करते। येह इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के शौक़े इ़ल्मे दीन की अ़लामत और उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की इ़ल्मी शानो शौकत पर दलालत है। ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا वोह बुलन्द रुत्बा ख़ातून हैं जिन्हें **अल्लाह रब्बुल अर्द़े वस्समावात** عَزَّوَجَلَّ ने दीगर बेश बहा ख़ुसूसिय्यात के साथ साथ उ़लूमे दीनियात से वाफ़िर ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमाया और ज़ाहिरी विसाले न-बवी के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को शाइक़ीने इ़ल्मे दीन का मरजअ़ बनाया और क़ुरआनी असरारो रुमूज़ और शर-ई क़वानीन व उसूल को समझने की ऐसी बे मिसाल ज़ेहनिय्यत व ख़ुदादाद सलाहिय्यत से नवाज़ा कि इन के सामने बड़े बड़े अहले इ़ल्मो फ़न की अ़क़्लें दंग और ज़बानें गुंग नज़र आती हैं।

(1)...... **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** इस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे। (پ۲، البقرۃ:۱۵۸)

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का एक तुर्रए इम्तियाज़ आयाते कुरआनिया और शरीअ़ते इस्लामिया के उसूलों और राज़ों पर गहरी नज़र है जिस की एक मिसाल अभी बयान की गई है जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने ह़ज व उ़म्रह में सफ़ा व मर्वह की सअ्य का दुरुस्त हुक्मे शर-ई, अस्ल व दलील के साथ बयान फ़रमाया। येह सलाहि़य्यत **अल्लाह रब्बुल अर्दे वस्समावात** عَزَّوَجَلَّ का खुसूसी अ़तिय्या है वोह जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे इस ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाता है। और फिर येह उ़-लमा व मुफ़स्सिरीन रब तआ़ला की अ़ता कर्दा फ़हमो फ़िरासत से उम्मत की दुरुस्त रहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल रहते हैं। ऐसे उ़-लमाए ह़क़ कुरआनो ह़दीस की रोशनी में जो कुछ बयान करते हैं, इस में उन की ज़ाती राय को दख़्ल नहीं होता बल्कि शरीअ़त के रहनुमा उसूल कार फ़रमा होते हैं। इस लिये उन की बयान कर्दा तफ़्सीर को ता'लीमाते इस्लामिया का आईना दार कहा जाता है।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बेहतरीन आ़लिमा ह़ज़रते आ़इशा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ज़ौजए सय्यिदुल मुर-सलीन सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की जलालते इल्मी के बयान को आगे बढ़ाते हुए मज़ीद कुछ रिवायात बयान की जाती हैं, जिन से मा'लूम होता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बेहतरीन आ़लिमा और ज़बर दस्त फ़क़ीहा थीं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : **كَانَتْ عَائِشَةُ أَفْقَهَ النَّاسِ وَأَعْلَمَ النَّاسِ وَأَحْسَنَ النَّاسِ رَأْيًا فِي الْعَامَّةِ** या'नी ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा (सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) तमाम लोगों से बढ़ कर फ़क़ीहा और तमाम लोगों से बढ़ कर आ़लिमा और तमाम लोगों में सब से ज़ियादा अच्छी राय रखने वाली थीं।

(المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، كانت عائشة افقه الناس، ۱۸/۵، الحديث:۶۸۰۸)

मा'लूम हुवा कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इल्म व फ़क़ाहत की ने'मतों और भरपूर ज़ेहनी सलाहि़य्यतों से इतना नवाज़ा कि इस ह़वाले से सब से मुमताज़ कर दिया। अपनी अम्मीजान आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की सीरते तृय्यिबा को सामने रखते हुए हम सब को भी चाहिये कि अपने दिल में जज़्बए इल्मे दीन बेदार करें, हुसूले इल्मे दीन का एक ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, मदारिसुल मदीना और जामिआ़तुल मदीना हैं। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

इस्लामी बहनों के लिये हुसूले इल्मे दीन के मवाक़ेअ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! लाखों लाख इस्लामी बहनों ने भी **दा'वते इस्लामी** के म-दनी पैग़ाम को क़बूल किया, फ़ेशन परस्ती से सरशार मुआ़-शरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों की दलदल से निकल कर उम्महातुल मुअमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की दीवानियां बन गईं । गले में दुपट्टा लटका कर शोपिंग सेन्टरों और मख़्लूत तफ़रीह गाहों में भटकने वालियों को करबला वाली इफ़्फ़त मआब शहज़ादियों رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की शर्मो हया के सदक़े वोह ब-र-कतें नसीब हुईं कि **म-दनी बुरक़अ़** उन के लिबास का **जुज़्वे ला यन्फ़क** बन गया ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! म-दनी मुन्नियों और इस्लामी बहनों को क़ुरआने करीम हिफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम देने के लिये कई **मदारिसुल मदीना** और आ़लिमा बनाने के लिये मु-तअ़द्दद "**जामिआ़तुल मदीना**" क़ाइम हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** में "हाफ़िज़ात" और "म-दनिय्या आ़लिमात" की ता'दाद बढ़ती जा रही है । बहर हाल इस्लामी भाइयों से इस्लामी बहनें किसी त़रह़ पीछे नहीं हैं, इस्लामी बहनों के म-दनी कामों की एक झलक ब मुताबिक़ (**मुहर्रमुल हराम** 1434 सि.हि./ दिसम्बर 2012 सि.ई.) सिर्फ़ पाकिस्तान में बराए हिफ़्ज़ व नाज़िरा म-दनी मुन्नियों और इस्लामी बहनों के तक़रीबन **294** मदारिसुल मदीना चलाए जा रहे हैं जिन में म-दनी मुन्नियों और इस्लामी बहनों की कुल ता'दाद तक़रीबन **22091** है और इस्लामी बहनों के **मद्र-सतुल मदीना** बालिग़ात (उ़मूमन वक़्त **:** सुब्ह़ **: 8:00** से ले कर अ़स्र तक मुख़्तलिफ़ अवक़ात में, दौरानिया **: 1** घन्टा **12** मिनट) की ता'दाद तक़रीबन **3495**, **मुदर्रिसात** की ता'दाद तक़रीबन **3994 मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ात) की शु-रका की ता'दाद तक़रीबन **39162** है । जामिआ़तुल मदीना की ता'दाद तक़रीबन **134** है जामिआ़तुल मदीना की **मुअ़ल्लिमात व नाज़िमात की ता'दाद** तक़रीबन **387** और **त़ालिबात** की ता'दाद तक़रीबन **5634** है म-दनी इन्आ़मात की आ़मिल की ता'दाद तक़रीबन **80707** है ।

(**मुहर्रमुल हराम** 1434 सि.हि./दिसम्बर **2012** सि.ई.) कुल मुअ़ल्लिमात की ता'दाद तक़रीबन **26019**, कुल मुबल्लिग़ात की ता'दाद तक़रीबन **18993**, कुल मुदर्रिसात की ता'दाद तक़रीबन **7323**, कुल घर दर्स देने वालियों की ता'दाद तक़रीबन **64141**, रोज़ाना बयान या म-दनी मुज़ा-करा सुनने वालियों की ता'दाद तक़रीबन **134206**, कुल हफ़्तावार इज्तिमाआ़त की ता'दाद तक़रीबन **182175**, इज्तिमाआ़त की शु-रकाए ह़ल्क़ा बा'द इज्तिमाअ़ की ता'दाद तक़रीबन **158536**, अ़लाक़ाई दौरा की शु-रका की ता'दाद तक़रीबन **17847**, अ़लाक़ाई दौरा में बयान की शु-रका की ता'दाद तक़रीबन **16415**, हफ़्तावार तरबिय्यती ह़ल्क़े की शु-रका की ता'दाद तक़रीबन **26739** है ।

www.dawateislami.net

मेरी जिस क़दर हैं बहनें सभी म-दनी बुरक़अ़ पहनें
हो करम शहे ज़माना म-दनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 288)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मु-तअ़ल्लिक़ समाअ़त फ़रमाया कि इस म-दनी माह़ोल में इस्लामी बहनों में इ़ल्मो अ़मल का जज़्बा पैदा करने की किस क़दर कोशिशें की जा रही हैं ! येह क़ाबिले क़द्र कोशिशें **मरह़बा !** लेकिन इन कोशिशों में इज़ाफ़ा करना और इस्लामी बहनों में जज़्बए इ़ल्मो अ़मल फ़ुज़ूं से फ़ुज़ूं तर करना हम सब की ज़िम्मादारी है, हमारी अक्सरिय्यत इ़ल्मे दीन से दूर होती जा रही है। इस कुढ़न को बयान करते और ह़ुसूले इ़ल्मे दीन की रग़बत दिलाते हुए शैख़ुल ह़दीस मुफ़्ती अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى रक़म त़राज़ हैं : आज कल मुसल्मान मर्दों और औ़रतों में इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने और दीन की बातों के जानने का जज़्बा और ज़ौक़ो शौक़ तक़रीबन मिट चुका है इस लिये हर त़रफ़ बे दीनी और ला मज़्हबिय्यत का सैलाब बढ़ता जा रहा है, हज़ारों नौ जवान लड़के और लड़कियां दीन व मज़्हब से आज़ाद और ख़ुदा व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बेज़ार हो कर जानवरों की त़रह़ बे लगाम हो रहे हैं बल्कि बहुत से तो ख़ुदा ही का इन्कार कर बैठे हैं और मानते ही नहीं कि ख़ुदा मौजूद है इस बे दीनी के तूफ़ान का एक ही सबब है कि मुसल्मानों ने ख़ुद भी दीन का इ़ल्म पढ़ना छोड़ दिया और अपने बच्चों को भी इ़ल्मे दीन नहीं पढ़ाया इस लिये बेह़द ज़रूरी है कि मुसल्मान मर्द व औ़रत ख़ुद भी फ़ुरसत निकाल कर दीन की ज़रूरी बातों का इ़ल्म ह़ासिल करें और अपने बच्चों और बच्चियों को ज़रूरी बातें बचपन ही से बताते और सिखाते रहें अगर अपने बच्चों को इ़ल्मे दीन पढ़ा कर आ़लिम नहीं बना सकते तो कम से कम इन को दीन का इतना इ़ल्म तो सिखा दें कि वोह मुसल्मान बाक़ी रह जाएं। (जन्नती ज़ेवर, स. 457)

इ़ल्म है न जज़्बए ह़ुस्ने अ़मल !
नाक़िसो बेकार हूं कर दो करम

(वसाइले बख़्शिश, स. 228)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ　　اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

"आ़इशा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से इल्मे आ़इशा के मु-तअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने मुबा-रका

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''مَا رَاَیْتُ اَحَدًا اَعْلَمَ بِفِقْہٍ وَلَا بِطِبٍّ وَلَا بِشِعْرٍ مِنْ عَائِشَۃَ'' या'नी मैं ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से बढ़ कर शे'र, ति़ब और फ़िक़्ह का आ़लिम किसी को नहीं पाया।'' (الاصابة فی تمییز الصحابة، العین المھملة، عائشة بنت ابی بکر الصدیق، ۸/۲۰۸)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी एक और रिवायत में तो मज़्कूरा उ़लूम समेत दीगर उ़लूम का भी तज़्किरा है, चुनान्चे फ़रमाते हैं : مَا رَاَیْتُ اَحَدًا مِنَ النَّاسِ اَعْلَمَ بِالْقُرْاٰنِ وَلَا فَرِیْضَۃٍ وَلَا بِحَلَالٍ وَلَا بِحَرَامٍ وَلَا بِشِعْرٍ وَلَا بِحَدِیْثِ الْعَرَبِ وَلَا بِنَسَبٍ مِنْ عَائِشَۃَ'' या'नी मैं ने लोगों में सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से बढ़ कर किसी को क़ुरआन, मीरास, ह़लाल व ह़राम, शे'र, अक़्वाले अ़रब और नसब का आ़लिम नहीं देखा।'' (حلیة الاولیاء، ذکر النساء الصحابیات، عائشة زوج رسول الله، ۲/۶۰، الرقم:۱۴۸۲)

﴾3﴿...... मश्हूर मुह़द्दिस व ताबेई इमाम शहाबुद्दीन ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم का इर्शादे अ़ज़ीम है : ''لَوْ جُمِعَ عِلْمُ نِسَاءِ ھٰذِہِ الْاُمَّۃِ فِیْھِنَّ اَزْوَاجُ النَّبِیِّ کَانَ عِلْمُ عَائِشَۃَ اَکْثَرَ مِنْ عِلْمِھِنَّ'' या'नी इस उम्मत की तमाम औ़रतों ब शुमूल अज़्वाजे नबी के इ़ल्म को अगर जम्अ़ कर लिया जाए तो आ़इशा का इ़ल्म उन सब के इ़ल्म से ज़ियादा होगा।'' (مَجْمَعُ الزوائد، ۹/۲۸۵، الحدیث:۱۵۳۱۸)

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''وَاللّٰہِ مَا رَاَیْتُ خَطِیْبًا قَطُّ اَبْلَغَ وَلَا اَفْطَنَ مِنْ عَائِشَۃَ'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से बढ़ कर मैं ने किसी भी ख़त़ीब को बलीग़ व ज़ही़न नहीं देखा।''

(مَجْمَعُ الزوائد، ۹/۲۸۵، الحدیث:۱۵۳۱۹)

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा बिन त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''مَارَاَیْتُ اَحَدًا اَفْصَحَ مِنْ عَائِشَۃَ'' या'नी मैं ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से बढ़ कर किसी को फ़सीह़ व बलीग़ नहीं देखा।''

(سنن الترمذی، ابواب المناقب عن رسول الله، باب فضل عائشة رضی الله عنها، ص۸۷۳، الحدیث:۳۸۸۳)

क़ाबिले फ़ख़्र उम्मे मोह़-त-रमा

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ''**मिरआतुल मनाजीह़**'' में इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **इलावा क़ुरआनो ह़दीस व फ़िक़्ह की आ़लिमा होने के बड़ी शाइरा,**

www.dawateislami.net

इल्मे अन्साब में बड़ी कामिल, फ़साहतो बलाग़त में बे मिसाल आ़लिमा थीं क्यूं न होतीं कि मह़बूबए मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन थीं, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ की लख़्ते जिगर और नूरे नज़र थीं, हम सब की बाइसे नाज़, क़ाबिले फ़ख़्र उम्मे मोह़-त-रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا जिन के गीत कुरआन गाता है। (مراۃ المناجیح،کتاب المناقب،باب مناقب ازواج النبی صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم...الخ،۸/۵۰۵)

शम्ए ताबाने अ़र्श आस्ताने नबी — ग़म गुसारे नबी त़ब्अ़-दाने नबी
राह़ते क़ल्बो रूह़े रवाने नबी — बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी
उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम

(शर्हे कलामे रज़ा, स. 1059)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन मह़बूबए मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا की वुस्अ़तो शाने इ़ल्मी मरह़बा ! कुरआन, इ़ल्मुल कुरआन और दीगर उ़लूमे इस्लामिया की माहिर, कई सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की मुअ़ल्लिमा और इ़ल्मी मुश्किलात की मुश्किल कुशा। **अल्लाहु ग़नी** عَزَّوَجَلَّ इन की जलालते इ़ल्मी का सदक़ा हमें भी इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने और इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا की सीरते त़य्यिबा का येह रोशन पहलू उन इस्लामी बहनों की तवज्जोह का त़ालिब है जो दीनी उ़लूम की त़रफ़ कमा ह़क़्क़ुहू तवज्जोह देने की बजाए नाविलों और डाएजस्टों के मुत़ा-लए पर ज़ोर देती हैं जिस में किसी क़िस्म का फ़ाएदा तो कुजा उलटा नुक़्सान का ख़द्शा रहता है। इस नुक़्सान देह मुत़ा-लए की तरहीब और मुफ़ीद मुत़ा-लए की तरग़ीब दिलाती हुई एक मुफ़ीद तह़रीर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **397** सफ़ह़ात पर मुशतमिल किताब **''पर्दे के बारे में सुवाल जवाब''** सफ़ह़ा **179** ता **182** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتۡ بَرَکَاتُهُمُ الۡعَالِیَه औरत के डाएजस्ट और नाविल पढ़ने के मु-तअ़ल्लिक़ सुवालन जवाबन तह़रीर फ़रमाते हैं :

नाविलें पढ़ना कैसा ?

सुवाल : औरतें आज कल **डाएजस्ट** और **नाविलें** वग़ैरा पढ़ती हैं इन के बारे में कुछ बताइये।

जवाब : अख़्बारी मज़्मूनों, डाएजस्टों और नाविलों में बारहा **कुफ़्रिय्यात** देखे जाते हैं। इन में बद मज़्हबों के मज़ामीन भी होते हैं जिन्हें पढ़ने से दीनो ईमान की बरबादी का ख़त़रा रहता है।

www.dawateislami.net

शरीअ़त की रू से बद मज़्हबों की मज़्हबी किताब और इन का लिखा हुवा नाम निहाद इस्लामी मज़्मून पढ़ना मर्द व औ़रत दोनों के लिये **ह़राम** है, हां ! मु-तसल्लिब सुन्नी आ़लिम इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ब वक़्ते ज़रूरत) ब क़-दरे ज़रूरत देख सकता है। बहर ह़ाल औ़रत का मुआ़-मला बहुत ही नाज़ुक है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : सह़ीह़ ह़दीस से साबित है कि लड़कियों को **सूरए यूसुफ़** शरीफ़ का तरजमा (व तफ़्सीर) न पढ़ाया जाए इस में मक्रे ज़नां (या'नी औ़रतों के धोका देने) का ज़िक्र फ़रमाया है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 455)

करें इस्लामी बहनें शर-ई पर्दा

अ़ता इन को ह़या शाहे उमम हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मक़ामे ग़ौर है, लड़कियों को क़ुरआने मजीद की एक सूरत **सूरए यूसुफ़** का तरजमा और तफ़्सीर पढ़ने से इस लिये मन्अ़ कर दिया गया है कि कहीं येह मन्फ़ी (या'नी उलट) असर न ले लें। अब आप ही अन्दाज़ा लगा लीजिये कि इन्हें बे ढंगी तस्वीरों और ह़या सोज़ फ़िल्मी इश्तिहारों वग़ैरा हज़ारों तबाह कारियों से भरपूर अख़्बारों, बाज़ारी माहनामों, नाविलों और डाएजस्टों की इजाज़त कैसे दी जा सकती है।

याद रहे ! इन जराइद का मुता़-लआ़ मर्दों की आख़िरत के लिये भी कम तबाह कुन नहीं।

सुवाल : बच्चियों को किस सूरत की ता'लीम दी जाए ?

जवाब : बच्चियों को **सू-रतुन्नूर** की ता'लीम दी जाए और इस सूरत का तरजमा व तफ़्सीर पढ़ाया जाए, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मरवी है कि हु़ज़ूर, मुफ़ीजुन्नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे गयूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नूरुन अ़ला नूर है : अपनी औ़रतों को कातना सिखाओ (पुराने ज़माने में कपड़ा घरों में बुना जाता था उसे कातना कहते हैं इस ह़दीस का मक़्सूद येह है कि इन्हें सीना, पिरोना वग़ैरा ख़ानगी उमूर सिखाओ) और इन्हें "**सू-रतुन्नूर**" की ता'लीम दो। (اَلْمُسْتَدْرَک، کتاب التفسیر، تفسیر سورۃ النور، النھی عن تعلیم الکتابۃ للنساء، ۳/۱۵۸، الحدیث:۳۵۴۶)

मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने **सू-रतुन्नूर** को मौसिमे ह़ज में मिम्बर पर तिलावत फ़रमाया और इस की ऐसी नफ़ीस पैराए में तशरीह़ फ़रमाई कि अगर रूमी इसे सुन लेते तो मुसल्मान हो जाते। (تفسیر مدارک التنزیل، سورۃ النور، تحت الآیۃ:۶۴، ۲/۵۲۳)

सू-रतुन्नूर अठारहवें पारे में है, इस में **9 रुकूअ़** और **64 आयाते मुबा-रका** हैं। लड़कियों को इस की ज़रूर ता'लीम दी जाए बल्कि तमाम ही इस्लामी भाइयों और इस्लामी

www.dawateislami.net

बहनों को इस का तरजमा व तफ़्सीर पढ़ना चाहिये।

सुवाल : सू-रतुन्नूर की तफ़्सीर कौन सी पढ़ें ?

जवाब : ख़ज़ाइनुल इरफ़ान या नूरुल इरफ़ान से पढ़ लीजिये। मज़ीद मुफ़स्सल तफ़्सीर पढ़ना चाहें तो ख़लीलुल उ़-लमा ह़ज़रते ख़लीले मिल्लत **मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान** क़ादिरी ब-रकाती मारहरवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की **"सू-रतुन्नूर"** की तफ़्सीर **"चादर और चार दीवारी"** का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये। इस तफ़्सीर की ख़ास ख़ूबी येह है कि इस में तरजमा **कन्ज़ुल** ईमान शरीफ़ से लिया गया है।

सारे उर्दू तरजमों में कन्ज़ुल ईमां ला जवाब
तरजमा क़ुरआन का वोह कर दिखाया आप ने

(मनाक़िबे रज़ा, स. 76)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यि-दतुना आ़इशा की शाने फ़क़ाहत व त़बाबत

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उ़म्र में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तमाम बीबियों में सब से छोटी थीं मगर इल्मो फ़ज़्ल, ज़ोहदो तक़्वा, सख़ावतो शुजाअ़त और इ़बादतो रियाज़त में सब से बढ़ कर हुईं इस को फ़ज़्ले ख़ुदा वन्दी के सिवा और क्या कहा जा सकता है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भान्जे थे, इन का बयान है कि फ़िक़्ह व ह़दीस के इलावा मैं ने **ह़ज़रते** सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) से बढ़ कर किसी को अश्आ़रे अ़रब का जानने वाला नहीं पाया वोह दौराने गुफ़्त-गू हर मौक़अ़ पर कोई न कोई शे'र पढ़ दिया करती थीं जो बहुत ही बर मह़ल हुवा करता था। इल्मे त़िब और मरीज़ों के इलाज मुआ़-लजे में भी उन्हें काफ़ी महारत थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के शागिर्दों में सह़ाबा व ताबिईन की एक बहुत बड़ी जमाअ़त है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के फ़ज़ाइलो मनाक़िब में बहुत सी ह़दीसें भी वारिद हुई हैं।

(सीरते मुस्त़फ़ा, स. 661 ता 662, मुल्तक़ित़न)

अ़ल्लामा ज़ुरक़ानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی नक़्ल फ़रमाते हैं **:** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने एक दिन हैरान हो कर ह़ज़रते सय्यि-दतुना बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

www.dawateislami.net

से अ़र्ज़ किया कि ऐ अम्माजान ! मुझे आप के इल्मे फ़िक़्ह पर कोई तअ़ज्जुब नहीं क्यूं कि आप ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ौजा और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ की बेटी होने का शरफ़ पाया है इसी त़रह़ मुझे इस पर भी कोई तअ़ज्जुब और ह़ैरानी नहीं है कि आप को इस क़दर ज़ियादा अ़रब के अश्आ़र क्यूं और किस त़रह़ याद हो गए ? इस लिये कि मैं जानता हूं कि आप अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ की नूरे नज़र हैं मगर मैं इस बात पर बहुत ही ह़ैरान हूं कि आख़िर येह त़िब्बी मा'लूमात आप को कहां से और कैसे ह़ासिल हो गईं ? येह सुन कर ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا ने उन (या'नी अपने भान्जे सय्यिदुना उ़र्वह) के कन्धों पर थपकी देते हुए फ़रमाया : ऐ उ़र्वह (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ) ! **अल्लाह** के ह़बीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी आख़िरी उ़म्र शरीफ़ में अक्सर अ़लील हो जाया करते थे और अ़-रबो अ़जम के अत़िब्बा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये दवाएं तज्वीज़ करते थे और मैं उन दवाओं से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इलाज किया करती थी (इस लिये मुझे त़िब्बी मा'लूमात भी ह़ासिल हो गईं) ।

(شرح الزُّرقانی علی المواهب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاهرات، عائشة اُمّ المؤمنین، ٣٨٩/٤ تا٣٩٢)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبۡحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! येह है उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا की नज़रे अ़मीक़ कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इलाज मुआ़-लजा के लिये तज्वीज़ कर्दा दवाओं को याद करने का सिल्सिला जारी रखा ह़त्ता कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا फ़न्ने त़िब में माहिर हो गईं, बिला शुबा इस में रह़मते इलाही शामिले ह़ाल होने के साथ साथ भरपूर तवज्जोह और बा कमाल ह़ाफ़िज़ा कार फ़रमा है। हम अगर अपने गिर्दो पेश में देखें तो रोज़ाना कई उमूर सर अन्जाम पाते और अह़वाल पेश आते हैं लेकिन उन में हमें कितना याद रह पाता है येह सब पर अ़यां है। जिस का एक सबब हम में बढ़ता हुवा म-रज़े इस्यां है जिस की वज्ह से म-रज़े निस्यां ज़ोर पकड़ता जा रहा है। जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **120** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"राहे इल्म"** सफ़्ह़ा **98** पर इमाम बुरहानुद्दीन ज़रनौजी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِى ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِى का शे'र नक़्ल फ़रमाते हैं :

شَكَوۡتُ اِلٰى وَكِيۡعٍ سُوۡءَ حِفۡظِىۡ   فَاَرۡشَدَنِىۡ اِلٰى تَرۡكِ الۡمَعَاصِىۡ

www.dawateislami.net

तरजमा : मैं ने अपने उस्ताज़ हज़रते सय्यिदुना वकीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ السَّمِيْع को ज़ो'फ़े हाफ़िज़ा की शिकायत की तो उन्हों ने मुझे गुनाहों से इज्तिनाब की हिदायत की। (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّمِ طَرِيْقَ التَّعَلُّم، ص١١٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُالله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की बे शुमार ब-रकात हैं और इस म-दनी माहोल में ईमान अफ़रोज़ म-दनी बहारों का ज़ुहूर होता रहता है आप की तरग़ीब के लिये एक म-दनी बहार पेश की जाती है, चुनान्चे

मैं पेन्ट शर्ट पहना करती थी

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि मैं मग़रिबी तहज़ीब की जुनून की ह़द तक दिलदादा थी ह़त्ता कि लड़कों की त़रह़ **पेन्ट शर्ट** पहना करती, ना मह़रम मर्दों के साथ बिला झिजक **गुफ़्त-गू** करती और बद तमीज़ क़िस्म के दोस्तों की **सोह़बत** में रहा करती थी। मेरे वालिद साह़िब होटल चलाते थे, मैं इतनी **बेबाक** थी कि वालिद साह़िब के मन्अ़ करने के बा वुजूद होटल के काउन्टर पर बैठ जाया करती थी ! मैं एक स्कूल में पढ़ती थी, **अल्लाह** की शान कि अचानक मेरे दिल में दीनी मद्रसे में पढ़ने का शौक़ पैदा हुवा ! मैं ने जब वालिद साह़िब से इस का इज़्हार किया तो उन्हों ने मौक़अ़ ग़नीमत जाना और मुझे हाथों हाथ **दा'वते इस्लामी** के **मद्र-सतुल मदीना** (लिल बनात) में दाख़िल करवा दिया। मैं ने वहां क़ुरआने पाक पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। चन्द दिन बा'द हमारी मुअ़ल्लिमा ने हमें सह़राए मदीना, मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के सालाना बैनल अक़्वामी **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** के बारे में बताया और घर घर जा कर **नेकी की दा'वत** के ज़रीए इस्लामी बहनों में इज्तिमाअ़ की दा'वत आ़म करने की तरग़ीब दी। हम ख़ूब जोशो ख़रोश के साथ इस सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत आ़म करने में मसरूफ़ हो गईं। मुझे इज्तिमाअ़ के आख़िरी दिन की **ख़ुसूसी निशस्त** का बड़ी बेचैनी से इन्तिज़ार था क्यूं कि मैं ने पहले कभी भी इज्तिमाअ़ में शिर्कत नहीं की थी। बिल आख़िर इन्तिज़ार की घड़ियां ख़त्म हुईं और वोह दिन भी आ ही गया ! मैं ने बड़े जज़्बे के साथ सालाना सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ख़ुसूसी निशस्त में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की। जिस में **"गुनाहों का इलाज"** के मौज़ूअ़ पर होने वाला टेलीफ़ोनिक बयान सुनने का शरफ़ ह़ासिल हुवा, बयान सुन कर मैं ख़ौफ़े ख़ुदा से थर्रा उठी, मुझे

www.dawateislami.net

एक दम एह़सास हो गया कि हाए हाए ! मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की कैसी कैसी ना फ़रमानियों में मुब्तला हूं ! आख़िर में रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ हुई, दौराने दुआ़ इज्तिमाअ़ में शरीक बे शुमार इस्लामी बहनों की गिर्या व ज़ारी देख कर मेरी आंखों से **आंसू** भी बह निकले, मेरा दिल नदामत के समुन्दर में ग़ोते खाने लगा । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने हर गुनाह से **तौबा** की और अपनी इस्लाह़ का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया । मद्र-सतुल मदीना के ज़रीए इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी और वहां लगी हुई म-दनी चोट की ब-र-कत से मैं **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गई, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने **शर-ई पर्दा** शुरूअ़ कर दिया और **नमाज़ों** की भी पाबन्द हो गई । आज मेरे वालिदैन मुझ से बहुत ख़ुश और **दा'वते इस्लामी** के एह़सान मन्द हैं कि जिस की ब-र-कत से इन की फ़ेशन ज़दा बेटी **सुन्नतों भरी ज़िन्दगी** की शाहराह पर गामज़न हो गई । (इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 300)

सुन्नतें मुस्त़फ़ा की तू अपनाए जा   दीन को ख़ूब मेह़नत से फैलाए जा
येह वसिय्यत तू अ़त्तार पहुंचाए जा   उस को जो उन के ग़म का त़लब गार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 344)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आख़िरी लम्ह़ाते ह़यात में बेहतरीन अ़मल

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मह़्वे गुफ़्त-गू थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह़्य आई कि इस सह़ाबी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की ज़िन्दगी की एक साअ़त बाक़ी रह गई है । येह वक़्ते अ़स्र था । रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब येह बात उस सह़ाबी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) को बताई तो उन्हों ने मुज़्त़रिब हो कर इल्तिजा की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसे अ़मल के बारे में बताइये जो इस वक़्त मेरे लिये सब से बेहतर हो ।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**इ़ल्मे दीन सीखने में मश्ग़ूल हो जाओ ।**'' चुनान्चे वोह सह़ाबी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) इ़ल्मे दीन सीखने में मश्ग़ूल हो गए और मग़रिब से पहले ही उन का इन्तिक़ाल हो गया । रावी फ़रमाते हैं कि अगर इ़ल्म से अफ़्ज़ल कोई शै होती तो रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसी का हुक्म इर्शाद फ़रमाते ।

(تفسیر کبیر، سُوْرَۃُ البقرۃ، تحت الآیۃ:۳۱، ۱/۴۱۰)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾3﴿...... सय्यि-दतुना आइशा और वाक़िअए इफ़्क

दुरूदे पाक ज़रीअए दीदार व पहचान व शफ़ाअत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ **680** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **''मुका-श-फ़तुल क़ुलूब''** सफ़हा **78** पर **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल फ़रमाते हैं : एक आदमी हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ नहीं भेजता था, एक रात वोह ख़्वाब में रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम, महबूबे रब्बे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदारे अज़ीम से मुशर्रफ़ हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की त़रफ़ तवज्जोह न फ़रमाई, उस ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप मुझ से नाराज़ हैं इस लिये तवज्जोह नहीं फ़रमा रहे ? फ़रमाया : नहीं, मैं तुम्हें पहचानता ही नहीं। उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने तो उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से सुना है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने उम्मतियों को तो मां से भी ज़ियादा पहचानते हैं। ताजदारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उ़-लमा ने सच कहा है लेकिन तूने मुझे दुरूद शरीफ़ भेज कर अपनी याद नहीं दिलाई। **''मेरा कोई उम्मती मुझ पर जितना दुरूद भेजता है मैं उसे उतना ही पहचानता हूं।''** फिर उस शख़्स ने रोज़ाना **100 मर्तबा दुरूद शरीफ़** पढ़ना शुरूअ़ कर दिया, कुछ मुद्दत के बा'द दोबारा ख़्वाब में मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार का शरफ़ हासिल हुवा, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''मैं अब तुझे पहचानता हूं और क़ियामत के रोज़ तेरी शफ़ाअ़त भी करूंगा।''** या'नी इस लिये कि वोह रसूले ख़ुदा, हबीबे किब्रिया, जनाबे अहमदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुहिब (या'नी महब्बत करने वाला) बन गया था।

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوب، الباب التاسع فی المحبة، ص٤٠)

www.dawateislami.net

मौलाना **किफ़ायत अ़ली काफ़ी शहीद** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَاحِد फ़रमाते हैं :

दुरूदो रह़मतो स-लवात ह़ज़रत पर पढ़ा कीजे　　जनाबे मुस्त़फ़ा पर रात दिन सल्ले अ़ला कीजे !
जहां तक हो सके उस मूजिबे ईजादे आ़लम की　　सिफ़ातो ना 'तो ह़म्दो मद्ह़ो तह़सीनो सना कीजे !

(काफ़ी की ना'त, स. 73)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वाक़िअ़ए इफ़्क क्या है ?

येह वाक़िआ़ ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़[1] से वापसी पर हुवा। इस की तफ़्सील बयान करते हुए उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इर्शाद फ़रमाती हैं : सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब किसी सफ़र का इरादा फ़रमाते तो अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात के दरमियान क़ुरआ़ अन्दाज़ी फ़रमाते उन में से जिस का नाम निकल आता उस को अपने साथ सफ़र में ले जाते। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : आप ने ग़ज़्वे में शिर्कत के लिये हमारे दरमियान क़ुरआ़ अन्दाज़ी फ़रमाई तो उस में मेरा नाम निकल आया, आयते ह़िजाब के नुज़ूल के बा'द मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह निकली। मैं कजावा में सुवार रहती और इसी में सफ़र करती हम चले ह़त्ता कि पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस ग़ज़्वे से फ़ारिग़ हो कर वापस हुए, हम वापसी पर जब मदीनए मुनव्वरह के क़रीब आ गए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस रात वहां से कूच का ए'लान फ़रमाया।

जब लोगों ने कूच का ए'लान किया तो मैं खड़ी हुई (और क़ज़ाए ह़ाजत के लिये) लश्कर से दूर चली गई, जब मैं क़ज़ाए ह़ाजत से फ़ारिग़ हो कर अपने कजावे की त़रफ़ वापस आई तो मैं ने अपने सीने को मस किया, क्या देखती हूं कि मेरा हार गुम हो गया है मैं वापस अपने हार की तलाश में गई तो उस की तलाश ने मुझे रोक लिया (या'नी देर हो गई) और वोह लोग जो मेरा हौदज (कजावा) उठाते थे आए उन्हों ने मेरा कजावा उठाया और जिस ऊंट पर सुवार थी उस पर

(1).... ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़ का दूसरा नाम ग़ज़्वए मुरैसीअ़ है, येह शा'बान 5 हिजरी में पेश आया, इस ग़ज़्वे के मश्हूर वाक़िआ़त में अन्सार व मुहाजिरीन को लड़ाने की नाकाम मुनाफ़िक़ाना साज़िश, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़ज़रते सय्यि-दतुना जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से निकाह़ और इफ़्फ़त मआब ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पर लगने वाला बे बुन्याद और झूटा इल्ज़ाम है जो वाक़िअ़ए इफ़्क के नाम से मश्हूर है। इफ़्क का मा'ना है : किज़्ब, बहुत बड़ा झूट, बोहतान। (मुलख़्ख़स अज़ : सीरते मुस्त़फ़ा, स. 306, مدارج النبوۃ، (فارسی)، ۱۵۸/۲)

www.dawateislami.net

रख दिया उन का ख़याल था कि मैं हौदज में हूं। लोगों को हौदज के उठाते और उस को ऊंट पर रखते वक़्त हौदज के हलका पन का एहसास न हुवा मैं उस वक़्त नौ उम्र थी लोगों ने ऊंटों को उठाया और चल दिये, लश्कर के चले जाने के बा'द मुझे हार मिल गया मैं लश्कर की जगह पर आई वहां कोई भी नहीं था तो मैं ने उस जगह का इरादा किया जहां मैं थी और मेरा ख़याल था कि वोह मुझे गुम पा कर मेरी त़रफ़ वापस आएंगे इसी अस्ना में बैठे बैठे मुझ पर नींद ग़ालिब हुई और मैं सो गई।

ह़ज़रते सफ़्वान बिन मुअ़त्तल सु-लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लश्कर के पीछे आ रहे थे, वोह सुब्ह़ के वक़्त मेरी जगह के क़रीब आए और दूर से किसी सोए हुए इन्सान का वुजूद देखा जब उन्हों ने मुझे देखा तो पहचान लिया और (इस से पहले) उन्हों ने आयए ह़िजाब (पर्दे का हुक्म) नाज़िल होने से पहले मुझे देखा था, और اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ पढ़ा तो मैं जाग गई मैं ने दुपट्टे से अपना चेहरा ढांप लिया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम ने न तो कोई बात की और न ही मैं ने اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ के इलावा उन से कोई बात सुनी। उन्हों ने अपनी सुवारी को बिठाया और उस के पाउं को अपने पाउं से दबाए रखा, मैं उठी और उस पर सुवार हो गई और वोह ऊंट पकड़ कर आगे आगे पैदल चलने लगे ह़त्ता कि हम दो पहर की सख़्त गरमी में लश्कर के पास आए और वोह आराम करने के लिये उतरे हुए थे।

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : हलाक हुवा जो शख़्स हलाक हुवा। जिस ने बोहतान बांधने में बहुत ज़ियादा ह़िस्सा लिया था वोह मुनाफ़िक़ीन का सरदार **अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सलूल** था उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मुझे ख़बर दी गई कि **अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सलूल** के पास इफ़्क के मु-तअ़ल्लिक़ बातें की जातीं और उन्हें फैलाया जाता वोह उन की तौसीक़ करता, कान लगा कर उन्हें सुनता और आगे बयान करता।

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : फिर हम मदीनए मुनव्वरह आ गए। मदीनए मुनव्वरह आने के बा'द मैं एक महीना बीमार रही और लोग बोहतान लगाने वालों की गुफ़्त-गू में मश्ग़ूल थे मुझे इस के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ मा'लूम न था।

ह़त्ता कि जब मैं कमज़ोर हो गई तो उम्मे मिस्त़ह़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के साथ मनासेअ़ की त़रफ़ निकली, वोह हमारी क़ज़ाए ह़ाजत की जगह थी, हम रात को ही बाहर जाया करते थे और येह हमारे घरों के क़रीब बैतुल ख़ला बनाने से पहले की बात है। क़ज़ाए ह़ाजत से फ़ारिग़ होने के बा'द जब मैं और उम्मे मिस्त़ह़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) अपने घर की त़रफ़ वापस आ रही थीं तो उम्मे

www.dawateislami.net

मिस्त़ह़ (رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا) अपनी चादर के बाइस फिसल कर गिर पड़ीं और कहा : मिस्त़ह़ हलाक हो जाए। मैं ने कहा : तुम ने बहुत बुरी बात की है क्या तुम ऐसे शख़्स को बुरा भला कहती हो जो ग़ज़्वए बद्र में शरीक थे। तो उन्हों ने मुझे अहले इफ़्क के मु-तअ़ल्लिक़ बताया, इस बात ने मेरी बीमारी में और इज़ाफ़ा कर दिया जब मैं अपने घर वापस आई तो रसूले ख़ुदा, **अह़मदे मुज्तबा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए, सलाम कहने के बा'द मेरा ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाया, मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने वालिदैन के घर जाने की इजाज़त त़लब की। मैं चाहती थी कि अपने वालिदैन से इस ख़बर की तस्दीक़ करूं।

फ़रमाती हैं : आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे वालिदैन के पास जाने की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी (जब मैं वहां गई) तो मैं ने अपनी वालिदा से कहा : ऐ मेरी प्यारी वालिदा ! लोग क्या बातें कर रहे हैं ? मेरी वालिदा ने कहा : इस की परवाह न करो, बख़ुदा ! कभी ऐसा भी होता है कि कोई ख़ूब सूरत औ़रत हो, उस के ख़ावन्द को उस से मह़ब्बत हो और उस की सोकनें भी हों तो वोह उस के ह़क़ में बातें बनाती हैं और ऐ़ब लगाती हैं। उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا फ़रमाती हैं : मैं ने (तअ़ज्जुब से) कहा : سُبْحٰنَ اللّٰه ! लोग ऐसी बातें करते हैं। फ़रमाती हैं : मैं उस रात सुब्ह़ तक रोती रही कि मेरे आंसू नहीं रुकते थे और न ही मुझे नींद आई फिर मैं सुब्ह़ के वक़्त भी रोती रही।

इस दौरान शहन्शाहे अबरार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबू त़ालिब और उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُمَا को त़लब फ़रमाया, जब वह्य का सिल्सिला रुका हुवा था आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी बीवी के फ़िराक़ के मु-तअ़ल्लिक़ इन दोनों से दरयाफ़्त फ़रमाया और मश्वरा लिया। उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : हम तो उन में भलाई ही जानते हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबू त़ालिब كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तंगी नहीं फ़रमाई, उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا के इ़लावा और भी बहुत औ़रतें हैं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا से दरयाफ़्त कर लीजिये वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सच बोलेंगी। तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا को त़लब फ़रमाया और फ़रमाया : ऐ बरीरा (رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا) ! तुम ने आइशा (رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا) में कुछ देखा है जिस से तुझे कुछ शक होता है ? ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا ने अ़र्ज़ किया : उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया ! मैं ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا में कुछ नहीं देखा, मैं ने उन में ऐसी कोई बात नहीं देखी जिसे मैं मा'यूब ख़याल करूं, हां ! येह कि वोह एक कमसिन लड़की हैं आटा गूंध कर सो जाती हैं घरेलू बकरी आती है और आटा खा जाती है।

www.dawateislami.net

उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : मैं उस रोज़ भी रोती रही मेरे आंसू न रुकते थे और न ही मुझे नींद आती थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : मेरे वालिदैन सुब्ह़ के वक़्त मेरे पास आए ह़ालां कि (इस त़रह़) मैं मुसल्सल दो रातें और एक दिन रोती रही थी मेरे आंसू नहीं रुकते थे और न ही मुझे नींद आती थी ह़त्ता कि मैं ने ख़याल किया कि मेरा रोना मेरा जिगर फाड़ देगा। एक दफ़्अ़ा मेरे वालिदैन मेरे पास बैठे हुए थे और मैं रो रही थी इसी अस्ना में एक अन्सारिया औ़रत ने अन्दर आने की इजाज़त मांगी मैं ने उसे इजाज़त दी तो उस ने भी मेरे साथ बैठ कर रोना शुरूअ़ कर दिया। हम इसी ह़ाल में थे कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए, सलाम करने के बा'द तशरीफ़ फ़रमा हुए, उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : ह़ालां कि जब से मेरे मु-तअ़ल्लिक़ क़ीलो क़ाल होती रही इस से क़ब्ल आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ नहीं लाए थे। एक महीना इन्तिज़ार किया लेकिन मेरे मुआ़-मले के मु-तअ़ल्लिक़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह़्य नाज़िल नहीं हुई।

उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब तशरीफ़ फ़रमा हुए तशह्हुद पढ़ा, फिर आप ने फ़रमाया : ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ! मुझे तुम्हारी त़रफ़ से ऐसी ऐसी बातें पहुंची हैं अगर तुम पाक दामन हो तो अ़न्क़रीब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें बरी कर देगा और अगर तुम गुनाह में मुलव्वस हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करो और उस के हुज़ूर तौबा करो क्यूं कि जब बन्दा ए'तिराफ़े जुर्म करने के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है।

फ़रमाती हैं : जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना कलाम पूरा फ़रमाया मेरे आंसू रुक गए ह़त्ता कि मैं एक क़त़रा आंसू भी मह़सूस न करती थी।

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : मेरा गुमान भी न था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे मुआ़-मले में वह़्य नाज़िल फ़रमाएगा जिस की तिलावत की जाएगी मुझे इस बात की उम्मीद थी कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नींद की ह़ालत में ख़्वाब देखेंगे जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे बरी फ़रमा देगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! नबियों के सालार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस मजलिस से अ़ला-ह़दा न हुए और न ही घर वालों से कोई बाहर निकला था ह़त्ता कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह़्य का नुज़ूल होने लगा, वह़्य की शिद्दत से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वोही ह़ालत होने लगी जो होती थी ह़त्ता कि सख़्त सर्दी के दिन में कलाम की सक़ालत के बाइ़स जो आप पर नाज़िल किया गया, मोतियों की मिस्ल आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पसीने के क़त़रे गिर रहे थे।

www.dawateislami.net

जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से वह्य की शिद्दत ज़ाइल हुई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हंस रहे थे और पहला कलिमा जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया येह था : ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इस बोहतान से तुझे बरी कर दिया है । (صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث الافک، ص۱۰۳۷، الحدیث:۴۱۴۱، ملتقطًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रईसुल मुनाफ़िक़ीन की नापाक साज़िश

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मुनाफ़िक़ों के सरदार **अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य** ने इस वाक़िए को ह़ज़रते सय्यि-दतुना बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर तोहमत लगाने का ज़रीआ बना लिया और ख़ूब ख़ूब इस तोहमत का चरचा किया यहां तक कि उस मुनाफ़िक़ ने इस शर्मनाक तोहमत को इस क़दर उछाला और इतना शोरो ग़ोग़ा मचाया कि मदीने में हर त़रफ़ इस इफ़्तिरा और तोहमत का चरचा होने लगा और बा'ज़ मुसल्मान म-सलन सना ख़्वाने मुस्त़फ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित और ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्त़ह़ बिन उसासा और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ना बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم भी इस बद लगाम के दाम में आ गए और इन साह़िबान की ज़बान से भी कोई कलिमा बे जा सरज़द हुवा, हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस शर अंगेज़ तोहमत से बेह़द रन्ज व सदमा पहुंचा और मुख़्लिस मुसल्मानों को भी इन्तिहाई रन्जो ग़म हुवा । ह़ज़रते सय्यि-दतुना बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मदीने पहुंचते ही सख़्त बीमार हो गईं, पर्दा नशीन तो थीं ही साह़िबे फ़िराश भी हो गईं और इन्हें इस तोहमत तराशी की बिल्कुल ख़बर ही नहीं हुई । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बराअत और पाक दामनी का ए'लान करना मुनासिब न समझा और वह्ये इलाही का इन्तिज़ार फ़रमाने लगे इस दौरान आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस मुआ-मले में अपने मुख़्लिस अस्ह़ाब से मश्वरा फ़रमाते रहे ताकि इन लोगों के ख़यालात का पता चल सके।

(مدارجُ النبوۃ(فارسی)، ۲/۱۵۹۔۱۶۰، مُلْتَقِطًا وَمُلَخَّصًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बद मज़्हबों के जहन्नमी करतूत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वाक़िआ़ सिर्फ़ इतना ही है, इस पर ही उस दौर के मुनाफ़िक़ीन ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा अ़फ़ीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पाको साफ़ दामने बे दाग़ को दाग़दार बनाने की नाकाम साज़िशें कर के नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ईज़ा पहुंचाई और येही काम आज कल के बा'ज़ बद मज़्हब कर रहे हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें उन के शर से मह़फ़ूज़ फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बहर ह़ाल इस साज़िश को बे निक़ाब करने वाले और ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की पाकबाज़ी को साबित करने वाले फ़रामीने इलाहिय्यह और अह़ादीसे न-बविय्यह, इस बयान का ह़िस्सा हैं, जो मुख़्तसर वज़ाह़त के साथ ज़िक्र किये जाएंगे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वाक़िअ़ए इफ़्क के तनाज़ुर में शाने आ़इशा ब ज़बाने सह़ाबा

﴾1﴿.... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, नबिय्युल अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **मुतम्मिमुल अर-बईन, ग़ैज़ुल मुनाफ़िक़ीन**, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से जब इस तोहमत के बारे में गुफ़्त-गू फ़रमाई तो उन्होंने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब **अल्लाह रब्बुल आ़-लमीन** عَزَّوَجَلَّ को **येह गवारा नहीं कि आप** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **के जिस्मे अत़्हर पर एक मख्खी भी बैठ जाए** क्यूं कि मख्खी नजासतों पर बैठती है तो भला जो औ़रत ऐसी बुराई की मुर-तकिब हो ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस عَزَّوَجَلَّ कब और कैसे पसन्द फ़रमाएगा कि वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में रह सके। **(مدارجُ النبوۃ(فارسی)، ۱۶۱/۲)**

﴾2﴿.... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

कामिलुल ह़या-इ वल ईमान ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने वाक़िअ़ए इफ़्क के मु-तअ़ल्लिक़ बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब **अल्लाह रब्बुल उ़ला** عَزَّوَجَلَّ ने **आप के साए को ज़मीन पर नहीं पड़ने दिया** कि कहीं ज़मीन पर नजासत न हो ह़क़ तआ़ला जब आप के साए की इतनी ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है तो आप के ह़-रमे मोह़तरम की ना शाइस्तगी से क्यूं ह़िफ़ाज़त न फ़रमाएगा।

(المرجع السابق)

www.dawateislami.net

﴾3﴿...... हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم

अमीरुल मुअमिनीन, मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने शाने रिसालत और हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा अफ़ीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की इफ़्फ़त बयान करते हुए अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **एक मर्तबा आप की ना'लैने अक्दस में ग़ैर ताहिर चीज़ लग गई थी तो रब्बे जलील** عَزَّ وَجَلَّ **ने हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन** عَلَيْهِ السَّلَام **को भेज कर** आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर दी कि आप अपनी ना'लैने अक्दस को उतार दें। इस लिये हज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا مَعَاذَاللّٰه अगर ऐसी होतीं तो ज़रूर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर वह्य नाज़िल फ़रमा देता कि "आप इन को अपनी ज़ौजिय्यत से निकाल दें।"

(مدارك التنزيل، سورة النور، تحت الآية:١١، ٢/٤٩٢، مفهومًا)

﴾4﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

मेज़बाने नबी हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जब इस तोहमत की ख़बर सुनी तो उन्हों ने अपनी बीवी से कहा कि जो कुछ कहा जा रहा है क्या तुम्हें इल्म नहीं ? वोह फ़रमाने लगीं : अगर आप हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन मुअत्तल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की जगह होते तो क्या रसूले पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह-रमे पाक के साथ ऐसा करते ? हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : हरगिज़ नहीं ! फिर वोह फ़रमाने लगीं : अगर हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा अफ़ीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की जगह मैं होती तो कभी **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ येह ख़ियानत न करती, जब कि **हज़रते सय्यि-दतुना आइशा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا **मुझ से बेहतर और हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन मुअत्तल** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **तुम से बेहतर हैं।**

(مدارك التنزيل، سورة النور، تحت الآية:١١، ٢/٤٩٢)

﴾5﴿...... हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا

वाक़िअए इफ़्क की हक़ीक़त के मु-तअल्लिक़ रब्बुल इज़्ज़त की जानिब से अभी तक वह्य का नुज़ूल नहीं हुवा था कि रहमते आ-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस वाक़िए की बाबत हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और हज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मश्वरा त़लब फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ ने बरजस्ता अ़र्ज़ की : **वोह आप** صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की बीवी हैं और हम इन्हें अच्छा ही जानते हैं।** (صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب حديث الافك، ص١٠٣٧، الحديث:٤١٤١)

﴾6﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا

आक़ाए दो जहां, सय्याहे़ ला मकां صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वाक़िअ़ए इफ़्क के मु-तअ़ल्लिक़ जब अपनी ज़ौजए मुत़ह्हरा ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا से दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **اَحْمِیْ سَمْعِیْ وَبَصَرِیْ وَاللّٰهِ مَا عَلِمْتُ اِلَّا خَيْرًا** या'नी **मैं अपने कान और आंख की ह़िफ़ाज़त करती हूं, ख़ुदा की क़सम मैं तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا **को अच्छा ही जानती हूं।** (المرجع السابق، ص١٠٤٠)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا

ख़ादिमए आइशा ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا से जब मह़बूबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया ! मैं ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا में कुछ नहीं देखा, **मैं ने उन में ऐसी कोई बात नहीं देखी जिसे मैं मा'यूब ख़याल करूं**, हां ! इतनी बात ज़रूर है कि वोह अभी कमसिन लड़की हैं वोह गूंधा हुवा आटा छोड़ कर सो जाती हैं और बकरी आ कर खा जाती है। (المرجع السابق)

﴾8﴿...... रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अपना मौक़िफ़ :

एक दिन रसूले अन्वर, शाहे बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बर सरे मिम्बर (या'नी मिम्बर पर खड़े हो कर) इर्शाद फ़रमाया : ऐ मुसल्मानो ! उस शख़्स (अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य मुनाफ़िक़) की त़रफ़ से कौन मेरी मदद करेगा जिस से मुझे मेरे घर वालों के मुआ़-मले में अज़िय्यत पहुंची है, **وَاللّٰهِ مَا عَلِمْتُ عَلٰی اَهْلِیْ اِلَّا خَيْرًا وَلَقَدْ ذَكَرُوْا رَجُلًا مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ اِلَّا خَيْرًا** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की क़सम ! मैं अपनी बीवी को हर त़रह़ से अच्छा ही जानता हूं** और मुनाफ़िक़ीन ने (इस बोहतान में) में एक ऐसे मर्द (सफ़्वान बिन मुअ़त्त़ल) का ज़िक्र किया है जिस को मैं बिल्कुल अच्छा ही जानता हूं।

(صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب فی حديث الافك وقبول توبة القاذف، ص١٠٦٧، الحديث:٢٧٧٠)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

रसूले रहमत की शानो अ-ज़मत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा रिवायात व वाक़िआत से मा'लूम हुवा कि सहाबा व सहाबिय्यात رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के कुलूबो अज़्हान महब्बते रसूल से मा'मूर थे, इन के दिलों में मोजज़न बे पनाह इश्क़े रसूल का तक़ाज़ा था जो कि हक़ और शरीअ़त का हुक्म है कि नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मा'मूली सी ना पसन्दीदा चीज़ की निस्बत का तसव्वुर भी न किया जाए, बा'ज़ अवक़ात ऐसे इत्तिफ़ाक़ात रूनुमा हो जाते हैं जो इम्तिहानात का काम देते हैं, इस से खोटे खरे, अच्छे बुरे और अपने पराए का इम्तियाज़ हो जाता है, वाक़िअए इफ़्क भी उन वाक़िआत में से एक है, जिस ने मुनाफ़िक़ीन को सच्चे मुसल्मानों से बाहर निकाल दिया। (यहां उन मुसल्मानों की बात नहीं हो रही जो इस वाक़िए के वक़्त थोड़ी देर के लिये बात को सहीह समझ न पाए, लेकिन जब बा'द में बात वाज़ेह हो कर सामने आ गई तो अपने क़ुसूर से ताइब हो गए) बहर कैफ़ इस वाक़िए से मुनाफ़िक़ीन की पहचान हो गई और पता चल गया कि बा'ज़ नाम के मुसल्मानों का मन्शूर व मक़्सूद ही येही होता है कि महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, ग़म ख़्वारे उम्मत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शानो अ-ज़मत को अपने नापाक निशाने पर लिया जाए, लेकिन आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान तो सब से बुलन्द है :

वोह ख़ुदा ने मर्तबा तुझ को दिया न किसी को मिले न किसी को मिला
कि कलामे मजीद ने खाई शहा तेरे शहरो कलामो बक़ा की क़सम

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 80)

किसी को येह वस्वसा न आए कि मुनाफ़िक़ व बद मज़्हब शाने रिसालत में तन्क़ीस करते हैं तो इस से आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़तो अ-ज़मत में फ़र्क़ आ जाता है, ऐसा नहीं बल्कि इस का तसव्वुर भी नहीं कि जिसे ''وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ؕ (پ۳۰،الم نشرح:۴)'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया।" का ताजे रिफ़अ़त नसीब हो, जिस के सर ''وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ؕ (پ۳۰،الضحی:۴)'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक पिछली तुम्हारे लिये पहली से बेहतर है।" जैसा रोज़े अफ़्ज़ूं फलता फूलता सेहरा सजा हो, जिस की बुलन्दो बाला शान पर क़ुरआन ''وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ (پ۳،البقرۃ:۲۵۳)'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कोई वोह है जिसे सब पर द-रजों बुलन्द किया।" के अल्फ़ाज़ से गवाह हों, जिस की इ़ज़्ज़तो तौक़ीर के अह़काम, ''وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ (پ۲۶،الفتح:۹)'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और रसूल की ता'ज़ीम व तौक़ीर करो।" जैसे अल्फ़ाज़ के साथ आस्मान से नाज़िल और ता क़ियामत क़ुरआन में साबित हों, उस की रिफ़अ़तो अ-ज़मत में कमी का क्या वहम, वोह वहम (या'नी गुमान) ही

www.dawateislami.net

फ़ासिद है वोह ज़ेहन ही पलीद है वोह क़ल्ब ही नापाक है वोह वस्वसा ही शैतानी है वोह मजलिस ही मबग़ूज़ है जो सब से औला व आ'ला नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में ज़र्रा बराबर कमी को या कमी करने वाले को अपने पास फटक्ने दे । अभी मेरा मक़्सूद यहां अ़क़ीदे के मुनाफ़िक़ों और अदब से आ़रियों के साज़िशी और मुनाफ़िक़ाना रवय्यों को बे निक़ाब करना है, येह मुनाफ़िक़ व बे अदब हमेशा इस ताक में रहते हैं कि माहे नुबुव्वत या मु-तअ़ल्लिक़ीने बारगाहे नुबुव्वत पर कीचड़ उछालने और इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या को अपने नापाक निशाने पर लेने का मौक़अ़ मिल जाए, लेकिन याद रखिये ! चांद पर थूकने की सअ़्य दर अस्ल अपना मुंह गन्दा करने की कोशिश है, चांद तो अपनी पूरी आबो ताब के सा चमक्ता रहता है ।

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की ह़-र-कत पे ख़न्दा ज़न
फूंकों से येह चराग़ बुझाया न जाएगा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुनाफ़िक़ीन ने इस वाक़िअ़ए इफ़्क को दलील बना कर ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा, अ़फ़ीफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के दामने इफ़्फ़त को दाग़दार साबित करना था और मक़्सूदे अस्ली नबिय्ये उम्मी, मक्की म-दनी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान को क़द्ग़न (या'नी ऐ़ब) लगाने की नापाक जसारत था लेकिन इन बद नसीबों को मुंह की खाना पड़ी, जब ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा अ़फ़ीफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की हर बुराई से बराअत की सनद पर मुश्तमिल **10** आयाते क़ुरआनिया ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए, जब येह आयात लोगों में तिलावत हुई तो हर मुसल्मान के हां ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की क़द्रो मन्ज़िलत पहले से दो चन्द हो गई और मुनाफ़िक़ीन की मुना-फ़क़त मज़ीद वाज़ेह़ हो गई, ज़ौजए **रसूलुल्लाह** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की शान में नाज़िल होने वाली वोह आयाते बय्यिनात येह हैं :

اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ
الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۱﴾ لَوْلَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ
وَّ قَالُوْا هٰذَاۤ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۲﴾ لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ
هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَاۤ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۴﴾
اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖۗ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿۱۵﴾ وَلَوْلَاۤ

www.dawateislami.net

اِذۡ سَمِعۡتُمُوۡهُ قُلۡتُمۡ مَّا یَكُوۡنُ لَنَاۤ اَنۡ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ٭ۖ سُبۡحٰنَكَ هٰذَا بُهۡتَانٌ عَظِیۡمٌ ﴿۱۶﴾ یَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنۡ تَعُوۡدُوۡا لِمِثۡلِهٖۤ اَبَدًا

اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ ﴿ۚ۱۷﴾ وَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الۡاٰیٰتِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِیۡمٌ حَكِیۡمٌ ﴿۱۸﴾ اِنَّ الَّذِیۡنَ یُحِبُّوۡنَ اَنۡ تَشِیۡعَ الۡفَاحِشَةُ

فِی الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ ۙ فِی الدُّنۡیَا وَ الۡاٰخِرَةِ ؕ وَ اللّٰهُ یَعۡلَمُ وَ اَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۹﴾ وَ لَوۡ لَا فَضۡلُ اللّٰهِ عَلَیۡكُمۡ

وَ رَحۡمَتُهٗ وَ اَنَّ اللّٰهَ رَءُوۡفٌ رَّحِیۡمٌ ﴿٪۲۰﴾ (پ۱۸، النور:۱۱تا۲۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह कि येह बड़ा बोहतान लाए हैं तुम्हीं में की एक जमाअ़त है उसे अपने लिये बुरा न समझो बल्कि वोह तुम्हारे लिये बेहतर है उन में हर शख़्स के लिये वोह गुनाह है जो उस ने कमाया और उन में वोह जिस ने सब से बड़ा ह़िस्सा लिया उस के लिये बड़ा अ़ज़ाब है क्यूं न हुवा जब तुम ने इसे सुना था कि मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों ने अपनों पर नेक गुमान किया होता और कहते येह खुला बोहतान है इस पर चार गवाह क्यूं न लाए तो जब गवाह न लाए तो वोही **अल्लाह** के नज़्दीक झूटे हैं और अगर **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रह़मत तुम पर दुन्या और आख़िरत में न होती तो जिस चरचे में तुम पड़े उस पर तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब पहुंचता जब तुम ऐसी बात अपनी ज़बानों पर एक दूसरे से सुन कर लाते थे और अपने मुंह से वोह निकालते थे जिस का तुम्हें इ़ल्म नहीं और उसे सहल समझते थे और वोह **अल्लाह** के नज़्दीक बड़ी बात है और क्यूं न हुवा जब तुम ने सुना था कहा होता कि हमें नहीं पहुंचता कि ऐसी बात कहें इलाही पाकी है तुझे येह बड़ा बोहतान है **अल्लाह** तुम्हें नसीह़त फ़रमाता है कि अब कभी ऐसा न कहना अगर ईमान रखते हो और **अल्लाह** तुम्हारे लिये आयतें साफ़ बयान फ़रमाता है और **अल्लाह** इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चरचा फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या व आख़िरत में और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते और अगर **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रह़मत तुम पर न होती और येह कि **अल्लाह** तुम पर निहायत मेह्रबान मेह्र वाला है तो तुम इस का मज़ा चखते।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی आयत नम्बर 12 की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : मुसल्मान को येही हुक्म है कि मुसल्मान के साथ नेक गुमान करे और बद गुमानी मम्नूअ़ है। बा'ज़ गुमराह बेबाक येह कह गुज़रते हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **مَعَاذَ اللّٰه** عَزَّوَجَلَّ इस मुआ़-मले में बद गुमानी हो गई थी वोह मुफ़्तरी कज़्ज़ाब हैं और शाने रिसालत में ऐसा कलिमा कहते हैं जो मुअमिनीन के ह़क़ में भी लाइक़ नहीं है **अल्लाह** तआ़ला मुअमिनीन से फ़रमाता है कि तुम ने नेक गुमान क्यूं न किया, तो कैसे मुम्किन था कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बद गुमानी करते और ह़ुज़ूर की निस्बत बद गुमानी का लफ़्ज़ कहना बड़ी सियाह बात़िनी है ख़ास कर ऐसी ह़ालत में जब कि बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि ह़ुज़ूर ने ब क़सम फ़रमाया कि मैं जानता हूं कि मेरे अह्ल पाक हैं।

मस्अला : इस से मा'लूम हुवा कि मुसल्मान पर बद गुमानी करना ना जाइज़ है और जब किसी नेक

www.dawateislami.net

शख़्स पर तोहमत लगाई जाए तो बिग़ैर सुबूत मुसल्मान को उस की मुवा-फ़क़त और तस्दीक़ करना रवा नहीं । (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 18, सू-रतुन्नूर, तहूतल आयह : 12, स. 651)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गुज़श्ता आयात में **"बड़े बोहतान"** का ज़िक्र है इस की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इर्शाद फ़रमाते हैं : यहां बड़े बोहतान से मुराद उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا पर तोहमत लगाना है । चूंकि वोह तमाम मुसल्मानों की मां हैं और मां को तोहमत लगाना बेटे की इन्तिहाई बद नसीबी है इसी लिये इसे बड़ा बोहतान फ़रमाया गया । (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पारह : 18, सू-रतुन्नूर, तहूतल आयह : 11, स. 422)

नुज़ूले आयात के बा'द सय्यि-दतुना आ़इशा का त़र्ज़े अ़मल

नुज़ूले आयात के बा'द उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा, अ़फ़ीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا रब عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाईं, चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन फ़िल ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا की वालिदए मोह़-त-रमा ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا) की बराअत नाज़िल फ़रमाई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : **"بِحَمْدِ اللّٰهِ لَا بِحَمْدِ اَحَدٍ وَّلَا بِحَمْدِكَ"** या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का शुक्र अदा करती हूं, आप का शुक्र अदा करती हूं न किसी और का ।"

(صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب حديث الافك، ص١٠٤١، الحديث:٤١٤٣، ملتقطًا)

शम्ए ताबाने अ़र्श आस्ताने नबी   ग़म गुसारे नबी तब्अ़ दाने नबी
राह़ते क़ल्बो रूह़े रवाने नबी   बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी
उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम
अ़-ज-मते हुस्ने मा'मूर जिन की गवाह   इफ़्फ़ते ज़ाते मस्तूर जिन की गवाह
शाने रब, चश्मे बद दूर जिन की गवाह   या'नी है सूरए नूर जिन की गवाह
उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

(शर्हे कलामे रज़ा, स. 1059)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मुनाफ़िक़ों की रविश इख़्तियार करते हुए बे बुन्याद इल्ज़ाम लगाने वालों और वालियों, बोहतान तराशी के मुर-तकिब होने वालों और वालियों और मुसल्मानों की इ़ज़्ज़तो आबरू को पामाल करने वालों और वालियों की ता'दाद कुछ कम नहीं

www.dawateislami.net

लेकिन एक ता'दाद उन साबिरीन व साबिरात की भी है जो ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, अ़फ़ीफ़ा, त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरत को अपनाते हुए ऐसे कठिन मराहि़ल को सब्रो शिकैबाई से सर कर लेते हैं और येह कोई नई बात नहीं है कई पाक दामनों को त़ा'नो तश्नीअ़ के तीर अपने क़ल्बे नाज़नीन पर सहना पड़े, म-सलन ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ज़ुलैख़ा का इल्ज़ाम लगा, ह़ज़रते सय्यि-दतुना मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को इसी इल्ज़ाम के तह़्त बा'ज़ लोगों ने सताया, बनी इसराईल के एक आ़बिदो ज़ाहिद ह़ज़रते सय्यिदुना **जुरैज** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर बोहतान बांधा गया। लेकिन इन सब नुफ़ूसे क़ुदसिय्या ने इस पर सब्र किया जिस का **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उन्हें जीते जी दुन्या में मीठा फल मिल गया। बेह़द व बे शुमार उख़्रवी इन्आ़मात इस से फ़ुज़ूं। बहर ह़ाल उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا झूटे इल्ज़ाम व बोहतान से बा इ़ज़्ज़त बरी हो गईं और अपनी शान का बयान ब ज़बाने क़ुरआन पा कर दोनों जहान में सुर्ख़-रू और ह़क़ीक़ी मुसल्मानों की निगाहों में मज़ीद मुअ़ज़्ज़ज़ हो गईं।

किस ज़बां से हो बयाने इ़ज़्ज़ो शाने अहले बैत — मद्ह़ गोए मुस्त़फ़ा है मद्ह़ ख़्वाने अहले बैत
उन की पाकी का ख़ुदाए पाक करता है बयां — आयए त़त्हीर से ज़ाहिर है शाने अहले बैत

(ज़ौक़े ना'त, स. 73)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अब जो सय्यिदह पर तोहमत लगाए वोह काफ़िर है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर लगाया जाने वाला इल्ज़ाम व बोहतान जब क़ुरआनी आयात, फ़रामीने मुस्त़फ़ा और अक़्वाले सह़ाबा की रू से सरासर झूटा साबित है तो हर मुसल्मान पर लाज़िम है कि वोह ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को इस तोहमत से पाक और इस इल्ज़ाम से बरी जाने, अब आयाते क़ुरआनिया से ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के अ़फ़ीफ़ा व त़य्यिबा होना वाज़ेह़ त़ौर पर साबित है, مَعَاذَاللّٰہ अब भी अगर कोई आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को पाको साफ़ न जाने तो वोह बेशक अपने आप को मोमिन और ख़ादिमे अहले बैत समझता रहे, शरीअ़ते इस्लामिया उसे काफ़िर जानती है।

ज़िक्र रोके फ़ज़्ल काटे नक़्स का जूयां रहे
फिर कहे मरदक कि हूं उम्मत रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 152)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सय्यिदी आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت **"फ़तावा र-ज़विय्या"** में इर्शाद फ़रमाते हैं : उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا का क़ज़फ़ (या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا को तोहमत लगाना) कुफ़्रे ख़ालिस है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 245)

एक मक़ाम पर चन्द उन अक़्वाल व अफ़आल की त़रफ़ तवज्जोह दिलाई जिन के मुर-तकिब पर हुक्मे कुफ़्र लगता है, चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : (जो) दामने इफ़्फ़त मा-मने तय्यिब अत़्यब, आ'त़र अत़्हर (पाक व ख़ुशबूदार) कनीज़ाने बारगाहे त़हारत पनाह हज़रते उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़ صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی زَوْجِهَا الْكَرِيْمِ وَاَبِيْهَا وَعَلَيْهَا وَبَارَكَ وَسَلَّمَ (या'नी **अल्लाह तआला** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के शोहरे नामदार, वालिदे करीम और ख़ुद आप पर दुरूदो सलाम और ब-र-कतें नाज़िल फ़रमाए) के बारे में इस इफ़्के मबग़ूज़ मग़्ज़ूब मल्ऊन (झूटे, ला'नती, क़ाबिले नफ़रत और लाइक़े ग़ज़ब बोहतान) के साथ अपनी नापाक ज़बान आलूदा करे।

(المرجع السابق، ص١٢٤)

इस लिये अहले बैते नुबुव्वत से मह़ब्बत का येह मत़लब नहीं कि चन्द अफ़राद को छोड़ कर बक़िय्या पर ला'न त़ा'न शुरूअ़ कर दो, बल्कि गुलिस्ताने मुस्त़फ़ा का हर फूल ख़्वाह अज़्वाजे मुत़ह्हरात हों, या औलादे रसूल या सह़ाबा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن सब के सब नेक व मक़्बूले बारगाह और हमारे सरों के ताज व लाइक़े सद एह़तिराम, इन में से किसी एक के बारे में ज़बाने बद दराज़ करना, गुस्ताख़ी व बे अ-दबी और जहन्नम में ले जाने वाला अ़मल है। अहले बैत से ह़क़ीक़ी मह़ब्बत येह है कि नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के घराने के हर फ़र्द ख़्वाह वोह आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाज हों या औलाद सब को मह़बूब जाना और माना जाए और इस दरे दौलत के वाबस्तगान या'नी सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को मुअ़ज़्ज़म व मुकर्रम कहा और समझा जाए। येह है अहले बैते नुबुव्वत से ह़क़ीक़ी मह़ब्बत जो कि सिर्फ़ और सिर्फ़ अहले सुन्नत को नसीब हुई है, जिस की त़रफ़ इशारा करते हुए वासिफ़े अहले बैते नुबुव्वत, बरादरे आ'ला ह़ज़रत, शहन्शाहे सुख़न मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

बे अदब गुस्ताख़ फ़िर्क़े को सुना दे ऐ ह़सन !
यूं कहा करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत

(ज़ौक़े ना'त, स. 77)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इफ़्फ़ते आइशा पर एक और दलील

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जैसा कि तमाम अहले ह़क़ का मौक़िफ़ है और इस बात

www.dawateislami.net

को मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ाफ़िज़ मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡهَادِى ने अपनी तफ़्सीर **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** के अन्दर नक़्ल फ़रमाया है कि आयते बराअत नाज़िल होने से क़ब्ल ही ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन की त़रफ़ से क़ुलूब मुत़्मइन थे, आयत के नुज़ूल ने इन का इ़ज़्ज़ो शरफ़ और ज़ियादा कर दिया।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 18, सू-रतुन्नूर, तह़्तल आयह : 11, स. 651)

अगर बिलफ़र्ज़ ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهَا की पाक दामनी पर क़ुरआनो ह़दीस ख़ामोश भी रहते तो एक दलील ऐसी भी थी जो ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهَا को इस झूटे इल्ज़ाम से बरी करने के लिये काफ़ी थी और वोह येह कि जिस मर्द या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन मुअ़त्त़ल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهُ के साथ आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهَا पर इल्ज़ाम लगाया गया था वोह मख़्सूस नक़्स की वज्ह से किसी औ़रत से सोह़बत करने के क़ाबिल ही नहीं थे, चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन मुअ़त्त़ल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهُ

शारेहे बुख़ारी, ख़लीफ़ए सदरुश्शरीअ़ह, मुह़िब्बे **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِى **"नुज़्हतुल क़ारी शर्ह़े सह़ीह़ुल बुख़ारी"** में रक़म त़राज़ हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهُ को जब इस अफ़्वाह (या'नी वाक़िअ़ए इफ़्क) की इत्तिलाअ़ हुई तो फ़रमाया : बख़ुदा मैं ने अब तक किसी औ़रत से सोह़बत नहीं की है न ह़लाल त़ौर पर न ह़राम त़ौर पर। इब्ने इस्ह़ाक़ (رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه) ने येह भी रिवायत किया है कि "वोह ह़सूर थे। या'नी औ़रतों के लाइक़ न थे।" ख़ुद उम्मुल मुअमिनीन (ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهَا) ने उन का येह क़ौल नक़्ल फ़रमाया है : سُبۡحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने किसी औ़रत का सत्र नहीं खोला है। **(نُزھۃُ القاری، کتاب المغازی، باب حدیث الافک، ۸۲۱/۳)**

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهُ का मुख़्तसर तआ़रुफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन मुअ़त्त़ल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهُ का मुख़्तसर तआ़रुफ़ भी पेश किया जाता है मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : आप की कुन्यत अबू अ़म्र है, सु-लमी हैं, तमाम ग़-ज़वात में शरीक हुए। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهُ बड़े मुत्तक़ी और साह़िबे ख़ैर, शुजाअ़ थे। ग़ज़्वए आरमीया में शहीद हुए, **60** साल से ज़ियादा उ़म्र पाई मश्हूर सह़ाबी हैं। (अल अक्माल (मुतर्जम), स. 40)

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हर नबी की बीवी पाक दामन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह वोह दलाइले क़ाहिरा थे जो ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा अफ़ीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की इफ़्फ़तो इस्मत को साबित करते और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की शाने अ-ज़मत निशान को मज़ीद बुलन्द करते हैं और इन दलाइल में मज़्बूत़ तरीन दलील कुरआने पाक की आयात हैं, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के किरदार से बिल्कुल मुत़्मइन थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को यक़ीन था कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पाको साफ़ हैं, सिर्फ़ येही नहीं बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ब अ़त़ाए इलाही अज़ रूए इ़ल्मे ग़ैब हर नबी की बीवी का पाक दामन होना बयान फ़रमाया, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अश्रस खुरासानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوۡرَانِی से मरवी है कि नबिय्ये अकरम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : **किसी नबी की बीवी बदकारी में मुब्तला नहीं हुई ।**

(تاریخ دمشق، لوط بن ھاران، ویقال:بن اھرن ۵۰/۳۱۸)

तमाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अज़्वाज अज़ रूए ह़दीसे पाक किरदार में साफ़ थीं, येह ग़ैबी ख़बर **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ब अ़त़ाए ख़ुदा वन्दी इर्शाद फ़रमाई ।

एक शुबे का इज़ाला

यहां येह शैत़ानी वस्वसा पैदा हो सकता है कि अगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इ़ल्मे ग़ैब था तो हुज़ूर ने बराअते आइशा का इज़्हार क्यूं न फ़रमाया ?

दर अस्ल रह़मते आ़-लमिय्यान, नबिय्ये ग़ैबदान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़क़ीक़ते ह़ाल से बा ख़बर थे, लेकिन वह़्ये इलाही नाज़िल होने तक ख़ामोशी में कई दीगर ह़िक्मतों के इ़लावा एक मस्लह़त येह भी थी कि अपने घर की खुद सफ़ाई देने से लोग कह सकते थे कि अपने घर और अपनी इ़ज़्ज़त का मुआ़-मला था इस लिये ऐसा बयान दे दिया, वगर्ना येह कैसे हो सकता है कि तमाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अज़्वाज की पाक दामनी की तो ख़बर दे रहे हों और अपनी बीवी का पता न हो ? ब मुत़ाबिक़ कुरआनो ह़दीस हर **सह़ीह़ुल अ़क़ीदा** मुसलमान का ईमान है कि मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब अ़त़ाए रह़मान नबिय्ये ग़ैबदान हैं । पहले नबी से आख़िरी नबी तक की अज़्वाज की इ़फ़्फ़त का इ़ल्मे ग़ैब, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इ़ल्मे ग़ैब फ़क़त़ यहीं तक मौक़ूफ़ नहीं बल्कि रोज़े अव्वल से रोज़े आख़िर तक के तमाम वाक़िआ़त व ह़ादिसात से भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बा ख़बर हैं, जैसा कि

www.dawateislami.net

इल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा का सुबूत क़ुरआन से

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने पाक कलाम क़ुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाता है :

(پ۳۰،التکویر:۲۴) وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ۚ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं।

इस आयते मुबा-रका से मा'लूम हुवा कि मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ग़ैब** बताते हैं और ज़ाहिर (या'नी UNDERSTOOD) है कि बताएगा वोही जिस को इल्म होगा। तो बिला शुबा रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ की इनायत से **रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **इल्मे ग़ैब** की दौलत से मालामाल हैं। बारगाहे रिसालत में आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, आ़शिक़े माहे रिसालत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت अ़र्ज़ करते हैं :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 264)

शर्ह़े कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **!** आप की शाने अ़-ज़मत निशान के क्या कहने ! शबे मे'राज ऐ़न जागती ह़ालत में आप ने अपने मुबारक सर की आंखों से अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया, तो यूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो कि ग़ैबुल ग़ैब है वोह भी अपने फ़ज़्लो करम से आप पर ज़ाहिर व आशकार हो गया तो अब कोई और ग़ैब आप से किस त़रह़ निहां या'नी छुपा रह सकता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बा'ज़ गुमराहों और बद अ़क़ीदा लोगों के गन्दे ज़ेहनों को शाने ह़बीबे किब्रिया और इल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा की ख़ुशबू पसन्द नहीं, मुर्दार ख़ोर गिध की मानिन्द उन की नज़रो फ़िक्र ह़ज़राते अम्बिया व मुक़र्रबीने बारगाहे इलाह के नक़ाइस व उ़यूब तलाश करने की सअ़्ये ना मश्कूर में सरगर्दां रहती है। इल्मे ग़ैब की बात चली है तो अ़र्ज़ कर दूं कि बा'ज़ ऐसी सूरतें भी हैं जिन में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अ़त़ा होने वाले उ़लूमे ग़ैबिया का इन्कार मूजिबे कुफ़्र है, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **692** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा **244** ता **248** पर है :

नबी के इल्मे ग़ैब का मुन्किर मुसल्मान है या काफ़िर ?

सुवाल : नबी के इल्मे ग़ैब का मुन्किर मुसल्मान है या काफ़िर ?

जवाब : इल्मे ग़ैब का इन्कार करना बा'ज़ सूरतों में कुफ़्र है बा'ज़ सूरतों में गुमराही, बा'ज़

www.dawateislami.net

सूरतों में न कुफ़्र, न गुमराही, न फ़िस्क़ या'नी कुछ भी हुक्म नहीं इन तमाम सूरतों की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है, चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के रिसाले **''ख़ालिसुल ए'तिक़ाद''** की तम्हीद में लिखा है :

﴾1﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही आलिमे बिज़्ज़ात है बे उस के बताए एक हर्फ़ कोई नहीं जान सकता।

﴾2﴿...... **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और दीगर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने **बा'ज़ ग़ुयूब** का इल्म दिया।

﴾3﴿...... **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इल्म औरों से ज़ाइद है (जैसा कि मुसल्मानों का अक़ीदा है), इब्लीस का इल्म مَعَاذَ اللہ इल्मे अक़्दस से हरगिज़ वसीअ़ तर नहीं (बल्कि उस का, इल्मे अक़्दस के साथ कोई मुक़ाबला ही नहीं)।

﴾4﴿...... जो इल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सि-फ़ते ख़ास्सा (या'नी मख़्सूस सिफ़त) है जिस में उस के हबीब **मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शरीक करना भी शिर्क हो वोह हरगिज़ इब्लीस के लिये नहीं हो सकता जो ऐसा माने क़त्अ़न मुशिरक **काफ़िर** मल्ऊन बन्दए इब्लीस है।

﴾5﴿...... ज़ैद व अ़म्र व हर बच्चे, पागल, चौपाए को **इल्मे ग़ैब** में **मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुमासिल (बराबर) कहना हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सरीह (खुली) तौहीन और **खुला कुफ़्र** है। येह (या'नी ऊपर बयान कर्दा पांचों नम्बरों के) सब मसाइल ज़रूरिय्याते दीन से हैं और इन का मुन्किर (इन्कार करने वाला), इन में अदना (मा'मूली) शक लाने वाला **क़त्अ़न** काफ़िर। येह **क़िस्मे अव्वल** हुई।

﴾6﴿...... औलियाए किराम نَفَعَنَا اللّٰہُ تَعَالٰی بِبَرَکَاتِہِمْ فِی الدَّارَیْن (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में इन की ब-र-कतों से हमें मालामाल करे) को भी कुछ उ़लूमे ग़ैब मिलते हैं मगर ब वसा-तते रुसुल عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام (या'नी रसूलों के ज़रीए)। मो'तज़िला (नामी बातिल फ़िर्क़ा) خَذَلَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन को ग़ारत करे) कि सिर्फ़ रसूलों के लिये **इत्तिलाए ग़ैब** मानते और औलियाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का **उ़लूमे ग़ैब** का अस्लन (बिल्कुल) हिस्सा नहीं मानते गुमराह व मुब्तदेअ़ (बिद्अ़ती) हैं।

﴾7﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने महबूबों खुसूसन **सय्यिदुल महबूबीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **ग़ुयूबे ख़म्सा** (पांच उ़लूमे ग़ैबिया) से बहुत जुज़्इय्यात का इल्म बख़्शा जो येह कहे कि ख़म्स (या'नी पांच) में से किसी फ़र्द (हिस्से) का इल्म किसी को न दिया गया हज़ारहा अहादीसे मु-तवातिरुल मा'ना का मुन्किर (इन्कार करने वाला) और बद मज़्हब ख़ासिर (नुक़्सान उठाने वाला) है। येह **क़िस्मे दुवुम** हुई।

﴾8﴿...... **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ता'यीने वक़्ते **क़ियामत** (या'नी क़ियामत कब आएगी इस) का भी इल्म मिला।

www.dawateislami.net

﴾9﴿...... हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बिल इस्तिस्ना जमीअ़ जुज़्इय्याते **ख़म्स** (या'नी किसी इस्तिस्ना के बिगै़र पांचों उ़लूम के तमाम हि़स्सों) का इ़ल्म है ।

﴾10﴿...... जुम्ला मक्नूनाते क़लम व मक्तूबाते लौह़ बिल जुम्ला रोजे़ अव्वल से रोजे़ आख़िर तक तमाम **मा का-न व मा यकून मुन्द-र-जए लौह़े मह़फ़ूज़** और इस से बहुत ज़ाइद का इ़ल्म है जिस में मा वराए क़ियामत तो जुम्ला अफ़्रादे ख़म्स दाख़िल और दरबारए क़ियामत अगर साबित हो कि इस की ता'यीने वक़्त भी दर्जे लौह़ है तो इसे भी शामिल । (ख़ुलासा : लौह़े मह़फ़ूज़ पर दर्ज कर्दा जो कुछ छुपा और ज़ाहिर और जो कुछ हो चुका और आयिन्दा होने वाला है इस का भी और इस से बहुत ज़ियादा चीज़ों का इ़ल्म है और इस में क़ियामत के इ़लावा दीगर पांच उ़लूम के तो तमाम अफ़्राद का इ़ल्म दाख़िल है और अगर क़ियामत आने का वक़्त भी लौह़े मह़फ़ूज़ पे लिखा हुवा है तो इस का भी इ़ल्म इस में आ गया है) ।

﴾11﴿...... हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ीक़ते रूह़ का भी इ़ल्म है ।

﴾12﴿...... जुम्ला मु-तशाबिहाते कु़रआनिया का भी इ़ल्म है । येह पांचों मसाइल **क़िस्मे सिवुम** से हैं कि इन में ख़ुद उ़-लमा व अइम्मए अहले सुन्नत मुख़्तलिफ़ (एक दूसरे से इख़्तिलाफ़ करने वाले) रहे हैं जिस का बयान बि औ़निही तआ़ला वाज़ेह़ होगा इन में मुस्बत व नाफ़ी (या'नी तस्लीम करने वाले और इन्कार करने वाले) किसी पर مَعَاذَالله कुफ़्र क्या मा'ना ज़लाल (गुमराही) या फ़िस्क़ का भी हुक्म नहीं हो सकता जब कि पहले सात मस्अलों पर ईमान रखता हो ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 414, 415)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा अ़फ़ीफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهَا की कु़रआने मजीद से साबित शुदा शाने अ़-ज़मत निशान का बयान मुला-ह़ज़ा फ़रमाया, इन ना मुसाइद ह़ालात में जब कि मुनाफ़िक़ीन आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهَا के दामने इ़स्मत पर कीचड़ उछालने की कोशिश कर रहे थे तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهَا ने इस कु़रआनी आयत को सहारा बनाया :

فَصَبۡرٌ جَمِیۡلٌ ؕ وَ اللّٰهُ الۡمُسۡتَعَانُ عَلٰی مَا تَصِفُوۡنَ ﴿۱۸﴾

(پ۱۲، یوسف:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो सब्र अच्छा और **अल्लाह** ही से मदद चाहता हूं उन बातों पर जो तुम बता रहे हो ।

(شعب الایمان،باب فی معالجة کل ذنب بالتوبة،۳۸۴/۵،الحدیث:۷۰۲۸)

और इसी सहारे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर उम्मीद बांधे, सब्रो शिकैबाई के तल्ख़ घूंट पी कर ह़ालात की साज़गारी का इन्तिज़ार करने लगीं और जब ह़ालात ने पलटा खाया तो ज़माने में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهَا की शाने इ़फ़्फ़तो इ़स्मत के डंके बजने लगे जो اِنۡ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ ता क़ियामत बजते रहेंगे, हमें फ़ख़्र है कि हम उस पाकीज़ा मां की बेटियां हैं जिन की शानो इ़ज़्ज़त ख़ुद **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ ने कु़रआन में सब्त फ़रमा दी

www.dawateislami.net

और हमेशा हमेशा के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नामे पाक बुलन्दो मुमताज़ फ़रमा दिया।

हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ गो हैं कि वोह हमें हमारी अम्मां मोह़-त-रमा ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के फ़ैज़ान से फ़ैज़याब फ़रमाए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के नक़्शे क़दम पर चलते हुए अपनी पूरी ज़िन्दगी बा ह़या व बा इ़ज़्ज़त तौ़र पर गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (आमीन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस वाक़िअ़ए इफ़्क से हमें येह दर्स मिलता है कि हम एक दूसरे पर बोहतान तराशी से इज्तिनाब करें, लिहाज़ा यहां पर क़ज़फ़ की ता'रीफ़, इस का हुक्म और इस की ह़द के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ अ़र्ज़ किया जाता है :

क़ज़फ़ की ता'रीफ़, हुक्म और क़ाज़िफ़ पर ह़द्दे शर-ई का बयान

किसी को ज़िना की तोहमत लगाने को क़ज़फ़ कहते हैं और येह कबीरा गुनाह है। यूंही लिवात़त की तोहमत भी कबीरा गुनाह है मगर लिवात़त की तोहमत लगाई तो ह़द नहीं बल्कि ता'ज़ीर है और ज़िना की तोहमत लगाने वाले पर ह़द है। ह़द्दे क़ज़फ़ आज़ाद पर अस्सी (80) कोड़े है और गुलाम पर चालीस (40)। (बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 394)

जो इस्लामी बहनें आपस में एक दूसरे की इ़ज़्ज़त उछालती, सुनी सुनाई बातों पर किसी को बदकारा जानती या कहती हैं उन को रब्बे क़ह्हार व जब्बार की पकड़ से डर जाना चाहिये। **वल्लाह !** दोज़ख़ का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। लिहाज़ा क़ज़फ़ की वई़दात पर मुश्तमिल आयात व अह़ादीस मुला-ह़ज़ा कीजिये और लरज़िये :

क़ज़फ़ की वई़दों पर मुश्तमिल चन्द आयात व अह़ादीस

﴾1﴿ ...... وَالَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَیْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِیْنًا۠ (پ۲۲، الاحزاب:۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।

﴾2﴿ ...... وَالَّذِیْنَ یَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ یَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِیْنَ جَلْدَةً وَّ لَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًاۚ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَۙ اِلَّا الَّذِیْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْاۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ (پ۱۸، النور:۴،۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो पारसा औ़रतों को ऐ़ब लगाएं फिर चार गवाह मुआ़-यना के न लाएं तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और उन की कोई गवाही कभी न मानो और वोही फ़ासिक़ हैं मगर जो इस के बा'द तौबा कर लें और संवर जाएं तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स अपने मम्लूक पर ज़िना की तोहमत लगाए क़ियामत के दिन उस पर ह़द लगाई जाएगी मगर जब कि वाक़ेअ़ में वोह ग़ुलाम वैसा ही है जैसा उस ने कहा।'' (صحیح مسلم، کتاب الأیمان، باب التغلیظ علی من قذف......إلخ، ص۹۰۵، الحدیث:۱۶۶۰)

हज़रते सय्यिदुना इक्रिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, वोह कहते हैं : एक औ़रत या मर्द ने अपनी बांदी को ज़ानिया कहा। हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : तूने ज़िना करते देखा है ? उस ने कहा : नहीं। फ़रमाया : क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है ! क़ियामत के दिन इस की वज्ह से तुझे **80** कोड़े मारे जाएंगे।

(مصنّف عبد الرزاق، کتاب العقول، باب قذف الرجل مملوکہ، ۹/۳۲۰، الحدیث:۱۸۲۹۱)

गुनाह के इल्ज़ाम का अ़ज़ाब

लोगों पर गुनाहों की तोहमत लगाने वालों के अ़ज़ाब की एक दिल हिला देने वाली रिवायत मुला-ह़ज़ा हो, चुनान्चे जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में देखे हुए कई मनाज़िर का बयान फ़रमा कर येह भी फ़रमाया कि कुछ लोगों को ज़बानों से लटकाया गया था। मैं ने जिब्रईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام से उन के बारे में पूछा तो उन्हों ने बताया कि येह वोह लोग हैं जो मोमिन मर्दों और औ़रतों पर बिला वज्ह इल्ज़ामे गुनाह लगाते हैं। (شرح الصدور، باب من ینجی من عذاب القبر، ص۱۸۳)

शक्की मिज़ाजों को तम्बीह

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **504** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''ग़ीबत की तबाह कारियां''** सफ़ह़ा **295** पर **अमीरे अहले सुन्नत**, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ शक्की मिज़ाजों को तम्बीह करते हुए फ़रमाते हैं : जो शक्की मिज़ाज औ़रतें अपने मर्दों पर तोहमतें धरतीं और इस त़रह़ की बातें करती हैं कि किसी औ़रत के चक्कर में है, सब पैसे उसी को दे आता है वग़ैरा यूं ही जो वहमी मर्द अपनी औ़रतों पर इस त़रह़ गुनाह की तोहमतें लगाते हैं कि इस की किसी के साथ **''आशनाई'' है**, अपने आशना को फ़ोन करती है, उस से मिलती है, गन्दे काम करवाती है वग़ैरा। उन को बयान कर्दा इल्ज़ामे गुनाह के अ़ज़ाब की रिवायत से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये। इस ज़िम्न में एक इ़ब्रत अंगेज़ ह़िकायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

www.dawateislami.net

औरत पर तोहमत लगाने के सबब हलाकत

हज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى **''शर्हुस्सुदूर''** में नक़्ल करते हैं : एक शख़्स ने ख़्वाब में जरीर ख़-तफ़ी को देखा तो पूछा : ''مَافَعَلَ اللهُ بِكَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआ-मला किया ?'' तो उन्हों ने कहा : मेरी मग़्फ़िरत कर दी। मैं ने पूछा : मग़्फ़िरत का क्या सबब बना ? कहा : उस तक्बीर कहने पर जो मैं ने एक जंगल में कही थी। मैं ने पूछा : फ़रज़्दक़ का क्या हुवा ? तो उन्हों ने कहा : अफ़्सोस पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाने के बाइस वोह हलाकत में गिरिफ़्तार हुवा।

(شَرْحُ الصُّدُور، باب فی نبذ من اخبار من رأی الموتٰی......الخ، ص۲۸۵)

हाए......! हाए......! हाए......! हम ने न जाने ज़िन्दगी में कितनों पर बोहतान बांधे होंगे ! **आह......!**

दिल हाए गुनाहों से बेज़ार नहीं होता मग़्लूब शहा ! नफ़्से बदकार नहीं होता
शैतान मुसल्लत़ है अफ़्सोस ! किसी सूरत अब सब्र गुनाहों पर सरकार नहीं होता
गो लाख करूं कोशिश इस्लाह़ नहीं होती पाकीज़ा गुनाहों से किरदार नहीं होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 234)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मौजूदा दौर में ह़ज़रते सय्यि-दतुना बीबी आ़इशा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के नक़्शे क़दम पर चलने की सअ़्ये मश्कूर और इन की सीरते त़य्यिबा को अपनी ज़िन्दगी पर लाज़िम करने की क़ाबिले क़द्र कोशिश को परवान चढ़ाने के लिये ख़ुद को अच्छे और म-दनी माह़ोल में ढालने की अज़्-ह़द ज़रूरत है वरना अगर म-दनी ज़ेह्न बन भी जाए तब भी इस पर इस्तिक़ामत की सआ़दत मुश्किल हो जाती है और इस इस्तिक़ामत का हुसूल उस वक़्त आसान हो जाता है जब एक इस्लामी बहन **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल को इख़्तियार करती और अपने अ़लाक़े में होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत पाती है। अगर इस कोशिश में अपने मह़रम का साथ भी मिल जाए तो सोने पर सुहागा, ऐसे ही एक इस्लामी भाई जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई, उन इस्लामी भाई की ब-र-कत से उस घर की इस्लामी बहन भी म-दनी माह़ोल में आ गई, जैसा की **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **220** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें''** हि़स्सए अव्वल सफ़्ह़ा **142** पर है :

www.dawateislami.net

ए'तिकाफ़ का फ़ैज़ इंग्लेंड पहुंचा

सख्खर शह्र (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है **: र-मज़ानुल मुबारक** (1410 सि.हि., 1990 ई.) मेरे बहनोई की **इंग्लेंड** से सख्खर (बाबुल इस्लाम सिन्ध पाकिस्तान) आमद हुई । इस्लामी भाइयों के तवज्जोह दिलाने पर मैं ने उन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **आशिक़ाने रसूल** के साथ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की ब-र-कतें लूटने की दा'वत दी। उन्हों ने हाथों हाथ हामी भर ली और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **मो'तकिफ़** हो गए। एक ख़ालिस इंग्रेज़ी माहोल में रहने वाला जब ए'तिकाफ़ में बैठा और उस ने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतें और ज़रूरी अह़काम सीखे, **क़ब्र** व आख़िरत के अह़वाल सुने तो मुसल्मान होने के नाते उस का दिल चोट खा कर रह गया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की ब-र-कत से उन्हें गुनाहों से तौबा का तोह़फ़ा मिला और तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में आ गए। चेहरे पर **दाढ़ी** सजा ली, **इमामा शरीफ़** से सर, सर सब्ज़ कर लिया, **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स और बयान सीख कर दौराने ए'तिकाफ़ ही **सुन्नतों भरा बयान** करने लगे ! **इंग्लेंड** में जा कर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों की धूमें मचाने की निय्यत कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ता दमे तह़रीर वोह **इंग्लेंड** में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी और **बारह म-दनी कामों** के ज़िम्मादार हैं, उन के बच्चों की अम्मी (या'नी मेरी बहन) भी **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो कर **इंग्लेंड** जैसे ह़या सोज़ माह़ोल में रहते हुए भी **म-दनी बुरक़अ** ओढ़ती हैं, ख़ुद दुरुस्त **क़ुरआने पाक** सीख कर अब मद्र-सतुल मदीना बालिग़ात में इस्लामी बहनों को पढ़ाती हैं और इस्लामी बहनों के म-दनी कामों की **तन्ज़ीमी ज़िम्मादार** हैं।

कर के हिम्मत मुसल्मानो आ जाओ तुम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
उख़्रवी दौलत आओ कमा जाओ तुम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 625)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾4﴿...... सय्यि-दतुना आ़इशा के फ़रामीन

मजालिस की ज़ीनत

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इर्शाद फ़रमाती हैं : ''زَيِّنُوْا مَجَالِسَكُمْ بِالصَّلَاةِ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم या'नी नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ कर अपनी मजालिस आरास्ता करो।''

(تاريخ مدينة دمشق، حرف الخاء فی اباء من اسمه عمر، عمر بن الخطاب، ٣٨٠/٤٤)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के मज़्कूरा फ़रमाने आ़लीशान से मा'लूम हुवा कि पैकरे अन्वार, नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना **रब तबा-र-क व तआ़ला** की रिज़ा पाने, शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा का ह़क़दार बनने और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कुर्ब पाने का बाइ़स है नीज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना बाइ़से नुज़ूले रह़मत और मजालिस की ज़ीनत है।

ऐ काश ! फ़ुज़ूल गोई से हमारी जान छूट जाए और हर वक़्त ज़बान पर दुरूदे पाक जारी रहने की आ़दत बन जाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे
मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 290)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का मह़बूबए मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन होना, सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के फ़िराक़ की वज्ह से मुज़्तरिब होना, पेचीदा ला यन्ह़ल (या'नी ह़ल न होने वाले) मसाइल में सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضْوَان का आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की त़रफ़ रुजूअ़ करना, क़ुरआने करीम का आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की बराअत बयान करना, मह़बूबे रब्बे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के हुजरे में वफ़ात पाना और क़ियामत तक के लिये यहीं आराम फ़रमा होना

www.dawateislami.net

वगैरा जैसी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की ला ता'दाद खुसूसिय्यात हैं जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان व दीगर अज़्वाजे मुतहहरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ में एक मुन्फ़रिद व मुमताज़ मक़ाम पर फ़ाइज़ करती हैं, इन्हीं में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को एक शरफ़ येह अ़ता फ़रमाया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बहुत बड़ी आ़लिमा व मुफ़्तिया थीं,(1) मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی इर्शाद फ़रमाते हैं : अज़ आदम ता ईं दम (या'नी तख़्लीक़े ह़ज़रते आदम عَلَیۡہِ السَّلَام से आज तक) कोई बीबी ऐसी आ़लिमा फ़क़ीहा पैदा न हुई जैसी जनाबे आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا हुई । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا उ़लूमे कुरआनिया, उ़लूमे ह़दीस की जामेअ़ थीं, बड़ी मुह़द्दिसा और बड़ी फ़क़ीहा ।

(مراٰۃ المناجیح، کتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبی، ۸/۵۰۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शम्सुद्दीन अबू **अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के बारे में इर्शाद फ़रमाते हैं : **"اَفْقَهُ نِسَاءِ الْاُمَّةِ عَلَى الْاِطْلَاقِ"** या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا मुत़्लक़न उम्मत की तमाम औ़रतों से ज़ियादा फ़क़ीह हैं ।"

(سیر اعلام النبلاء، عائشة اُمّ المؤمنین، ۲/۱۳۵)

बल्कि खुद सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात, मह़बूबे रब्बुल अर्दे वस्समावात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को हुक्म फ़रमाया : तुम अपना दो तिहाई दीन इस हुमैरा (या'नी ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) से ह़ासिल करो ।

(التفسیر الکبیر، سورۃُ القدر، تحت الاٰیة:۳، الجزء الثانی والثلاثون، ۱۱/۲۳۲)

येही वज्ह है कि अजिल्ला अस्ह़ाबे सय्यिदुल मुर-सलीन और ताबिईन رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن पेश आ-मदा पेचीदा मसाइले दीन के ह़ल्ले मुबीन के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की त़रफ़ रुजूअ़ करते और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इल्मो ह़िक्मत से भरपूर म-दनी फूल इर्शाद फ़रमातीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की ज़बाने गौहर बार से निकलने वाले येह म-दनी फूल व नसाएह़ दर ह़क़ीक़त गौहरे शब ताब की त़रह़ आस्माने हिदायत के दरख़्शन्दा सितारे हैं जो अपने अन्दर गुम गुश्ता राहों के लिये हिदायत और तिश्न-गाने इल्म के लिये सेराबी का सामान समोए

(1)...... उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की बा'ज़ खुसूसिय्यात जानने के लिये इसी सिल्सिले के बयान "सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा की इन्फ़िरादियत" और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की आ़लिमाना, फ़क़ीहाना, मुफ़स्सिराना, मुह़द्दिसाना, फ़सीह़ाना व अदीबाना शान के चन्द गोशों से मु-तआ़रिफ़ होने के लिये इस सिल्सिले के दर्जे ज़ैल 3 बयानात मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : (1)...... सय्यि-दतुना आ़इशा बत़ौरे मुह़द्दिसा व मुफ़्तिया । (2)...... सय्यि-दतुना आ़इशा बत़ौरे मुफ़स्सिरा । (3)...... सय्यि-दतुना आ़इशा की फ़साह़त ।

www.dawateislami.net

हुए हैं, नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को उम्मुल मुअमिनीन होने की वज्ह से नसीह़त करने का ह़क़ भी ह़ासिल है जैसा कि एक मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने ख़ुद इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! मुझे तुम पर मां होने की वज्ह से नसीह़त करने का ह़क़ और इ़ज़्ज़तो अ़-ज़मत ह़ासिल है।

(کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، فصل فی تفضیلھم فضل الصدیق، الجزء الثانی عشر، ٦/٢٢٤، الحدیث:٣٥٦٣٣)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"हुरूफ़े तहज्जी" के उन्तीस हुरूफ़ की निस्बत से 29 फ़रामीने आ़इशा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! अब **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के **29** फ़रामीने मुबा-रका का गुलदस्ता पेश किया जाता है इस के रंग बिरंगे म-दनी फूलों से फ़ैज़याब होने की सअ़्य कीजिये।

﴾1﴿ हुज़ूर का ख़ुल्क़ क़ुरआन है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान, "**اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ** (پ٢٤، المؤمن:٦٠)" (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा) को पूरा करते हुए हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ को क़बूल फ़रमाया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया और इस के साथ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अख़्लाक़े ह़-सना की ता'लीम फ़रमाई बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ क़ुरआन था, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन हश्शाम बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुवा मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا मुझे **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ के मु-तअ़ल्लिक़ ख़बर दीजिये। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ क़ुरआन था, क्या तुम क़ुरआन नहीं पढ़ते ? **وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ** (پ٢٩، القلم ٤:) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **बेशक** तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है।

(احیاء علوم الدین، کتاب آداب المعیشۃ واخلاق النبوۃ، باب بیان تادیب اللہ تعالٰی...الخ، ٢/٤٣٨. مسند احمد، مسند السیدۃ عائشۃ، ١٠/١٦٧، الحدیث:٢٥٣٣٨، ملتقطاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मकारिमे अख़्लाक़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : ''اِنَّ اللّٰہَ بَعَثَنِیْ لِتَمَامِ مَکَارِمِ الْاَخْلَاقِ وَکَمَالِ مَحَاسِنِ الْاَفْعَالِ'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अख़्लाक़ के द-रजात मुकम्मल करने और अच्छे आ'माल के कमालात पूरे करने के लिये मुझे भेजा है।''

(شرح السنة للبغوی، کتاب الفضائل، باب سیّد الاوّلین وآخرین محمد صلوات اللّٰہ وسلامہ......الخ ۲۰۲/۱۳، الحدیث:۳۶۲۱)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ''**एह़याउल उ़लूम**'' में पैकरे हुस्ने अख़्लाक़, नबियों के सरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ के सिल्सिले में इर्शाद फ़रमाते हैं : नबियों के सालार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बारगाहे इलाही में बहुत **तज़र्रोअ़** व आ़जिज़ी फ़रमाया करते और **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ से हमेशा सुवाल किया करते कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मह़ासिने आदाब व मकारिमे अख़्लाक़ से मुज़य्यन फ़रमाए।

(اِحْیَاءُ عُلُوْمِ الدِّیْن، کتاب آداب المعیشة واخلاق النبوة، باب بیان تادیب اللّٰہ تعالٰی ...الخ، ۴۳۷/۲ تا ۴۳۸)

चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी दुआ़ में अ़र्ज़ किया करते : ''اَللّٰھُمَّ اَحْسَنْتَ خَلْقِیْ فَاَحْسِنْ خُلُقِیْ'' या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तूने मेरी सूरत अच्छी की मेरी सीरत को भी अच्छा कर दे।''

(مسند احمد، مسند عبد اللّٰہ بن مسعود، ۵۴۵/۲، الحدیث:۳۹۰۰)

और अ़र्ज़ करते, ''اَللّٰھُمَّ! جَنِّبْنِیْ مُنْکَرَاتِ الْاَخْلَاقِ'' या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे बुरे अख़्लाक़ से दूर रख।''

(الاحسان فی تقریب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، ذکر ما یستحب للمرء ان یسال اللّٰہ جل وعلا......الخ، ص۳۶۳، الحدیث: ۹۶۰)

''मुह़म्मद'' के चार हुरूफ़ की निस्बत से हुस्ने अख़्लाक़ की फ़ज़ीलत में 4 रिवायात

इख़्लास के साथ ब निय्यते सुन्नत अच्छे अख़्लाक़ अपनाने के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं, इख़्तिसार के साथ सिर्फ़ 4 अक़्वाल ज़िक्र किये जाते हैं, चुनान्चे

(1)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबियों के सालार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ''مَکَارِمُ الْاَخْلَاقِ مِنْ اَعْمَالِ الْجَنَّۃِ'' या'नी हुस्ने अख़्लाक़ जन्नत के आ'माल में से है।''

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلة، الترغیب فی الضیافة واکرام الضیف ...الخ، ص۸۳۲، الحدیث: ۱۶)

www.dawateislami.net

(2)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं, **इमामुल आ़बिदीन, सय्यिदुस्साजिदीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बन्दा अपने हुस्ने अख़्लाक़ की वज्ह से रात को इबादत करने वाले और दिन को रोज़ा रखने वाले के द-रजे को पा लेता है।'' (شُعَبُ الْاِیْمَان، باب فی حسن الخلق، ٦ /٢٣٧، الحديث:٧٩٩٨)

(3)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अगर मकारिमे अख़्लाक़ (इख़्तियार करने) आसान होते तो इन्हें इख़्तियार करने में घटिया लोग तुम पर सब्क़त ले जाते लेकिन येह तल्ख़ व कड़वे हैं, इन पर वोही शख़्स सब्र कर सकता है जो इन की फ़ज़ीलत से वाक़िफ़ है और जो इन के सवाब की उम्मीद रखता है।

(تاريخ مدينة دمشق، حرف السين، ذكر من اسمه سعيد بن العاص، ١٣٦/٢١)

(4)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : ''**حُسْنُ الْخُلُقِ هُوَ الْاِيْمَانُ وَسُوْءُ الْخُلُقِ هُوَ النِّفَاقُ**'' या'नी हुस्ने अख़्लाक़ ईमान है और बुरे अख़्लाक़ निफ़ाक़।'' (اِحْيَاءُ عُلُوْمِ الدِّيْن، كتاب رياضة النفس......الخ، بيان علامات حسن الخلق، ٨٧/٣)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हुस्ने अख़्लाक़ के तमाम गोशों के जामेअ़ थे, हुस्ने अख़्लाक़ में क्या क्या चीज़ें शामिल हैं, उन में से चन्द एक को ज़िक्र किया जाता है मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

हुस्ने अख़्लाक़ की 10 बातें

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : नबिय्ये अकरम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मकारिमे अख़्लाक़ के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया : ''**10** बातें हुस्ने अख़्लाक़ में से हैं और वोह किसी शख़्स में होती हैं मगर उस के बेटे में नहीं होतीं, बेटे में हों तो बाप में नहीं होतीं, ग़ुलाम में हों तो आक़ा में नहीं होतीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के लिये सआ़दत मन्दी का इरादा फ़रमाता है उसे इन में से ह़िस्सा अ़ता फ़रमाता है (वोह 10 बातें येह हैं) : (1)...... सिदक़े मक़ाल (या'नी सच बोलना) (2)...... जंग में साबित क़-दमी (3)...... साइलीन की ह़ाजत रवाई (4)...... एह़सान का बदला देना (5)...... अमानत की ह़िफ़ाज़त (6)...... सिलए रेह़्मी (7)...... पड़ोसी और (8)...... अपने दोस्त के साथ हुस्ने सुलूक (9)...... मेहमान नवाज़ी और (10)...... इन सब की अस्ल ''ह़या'' है।'' (شُعَبُ الایمان، باب الحیاء، ١٣٧/٦، الحدیث:٧٧٢٠)

www.dawateislami.net

"ह़या" रूह़ की पाक दामनी का नाम है

ज़िक्र कर्दा ह़दीस शरीफ़ के तह़त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पहले 9 अख़्लाक़ के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "येह ज़ाहिरी मकारिमे अख़्लाक़ हैं जो बातिनी मकारिमे अख़्लाक़ से पैदा होते हैं (मज़ीद फ़रमाते हैं :) इन सब की अस्ल ह़या (इस लिये) है कि येह "रूह़ की पाक दामनी का नाम है।" मज़ीद फ़रमाते हैं "जिस को इन अख़्लाक़ में से जो ख़ुल्क़ दिया गया वोह उस को पाक करने वाला है और वोह इस एक के ज़रीए़ सआ़दत पा लेता है तो जिस में येह तमाम मुकारिमे अख़्लाक़ जम्अ़ हों उस की सआ़दत मन्दी का आ़लम क्या होगा।" और फ़रमाते हैं : "अख़्लाक़े ह़-सना (इन के इलावा भी) बहुत सारे हैं और हर ख़ुल्क़े ह़सन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अख़्लाक़ में से है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने अख़्लाक़ से मुज़य्यन होने को पसन्द फ़रमाया है पस अख़्लाक़े ह़-सना में से जिस बन्दे को जो ख़ुल्क़ भी दिया गया वोह उस के लिये दारैन में श-रफ़ो फ़ज़ीलत और बुलन्दी पाने का सबब है।"

(فیض القدیر، حرف المیم، ٣/٦، تحت الحدیث:٨١٩٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ ह़ुस्ने अख़्लाक़ की अस्ल

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं : "**رَأْسُ مَكَارِمِ الْاَخْلَاقِ الْحَيَاءُ**" या'नी मकारिमे अख़्लाक़ की अस्ल "ह़या" है।"

(مَكَارِمُ الْاَخْلَاق لابن ابی الدنیا، باب ذکر الحیاء وما جاء فیه، ص٦٢)

"ह़या" की ता'रीफ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का फ़रमान मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि "**मकारिमे अख़्लाक़ की अस्ल ह़या है**" **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 64 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**बा ह़या नौ जवान**" सफ़ह़ा 7 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "ह़या" का मा'ना बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं, ह़या के मा'ना हैं : "**ऐ़ब लगाए जाने के ख़ौफ़ से झेंपना।**" इस से मुराद "वोह वस्फ़ है जो उन चीज़ों से रोक दे जो **अल्लाह** तआ़ला और मख़्लूक़ के नज़्दीक ना पसन्दीदा हो।"

लोगों से शरमा कर किसी ऐसे काम से रुक जाना जो उन के नज़्दीक अच्छा न हो

www.dawateislami.net

"**मख़्लूक़ से ह़या**" कहलाता है, येह भी अच्छी बात है कि आ़म लोगों से ह़या करना दुन्यावी बुराइयों से बचाएगा और उ़-लमा व सु-लह़ा से ह़या करना दीनी बुराइयों से बाज़ रखेगा मगर ह़या के अच्छा होने के लिये ज़रूरी है कि मख़्लूक़ से शरमाने में ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी न होती हो और न ही वोह ह़या किसी के हुक़ूक़ की अदाएगी में रुकावट बन रही हो।

"**अल्लाह तआ़ला से ह़या**" येह है कि उस की हैबतो जलाल और उस का ख़ौफ़ दिल में बिठाए और हर उस काम से बचे जिस से उस की नाराज़ी का अन्देशा हो। ह़ज़रते सय्यिदुना शहाबुद्दीन सुहरवर्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़-ज़-मतो जलाल की ता'ज़ीम के लिये रूह़ को झुकाना ह़या है।" और इसी क़बील (क़िस्म) से ह़ज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ह़या है जैसा कि वारिद हुवा है कि "वोह **अल्लाह** तआ़ला से ह़या की वज्ह से अपने परों में छुपे हुए हैं।"

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب الادب، باب الرفق والحیاء وحسن الخلق، ۹/۲۷۰، تحت الحدیث:۵۰۷۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मौजूदा दौर की ह़ालते ज़ार

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज कल फ़ेशन एबल नौ जवान लड़कियों में ह़या का दूर दूर तक कोई निशान नज़र नहीं आता, आह ! कैसा दौर आ गया है शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इर्शाद फ़रमाते हैं : **अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस !** जवान लड़की अब चादर और चार दीवारी से निकल कर मख़्लूत़ ता'लीम की नुहूसत में गिरिफ़्तार, "**बॉय फ्रेन्ड**" के चक्कर में फंस गई, इसे जब तक चादर और चार दीवारी में रहने की सआ़दत ह़ासिल थी वोह शरमीली थी और अब भी जो चादर व चार दीवारी में होगी वोह اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! बा ह़या ही होगी। **अफ़्सोस !** ह़ालात बिल्कुल बदल चुके हैं, अब तो अक्सर कंवारी लड़कियां शादियों में ख़ूब नाचतीं और मेहंदी व माइयों की रस्मों वग़ैरा में बे बाकाना बे ह़याई के मुज़ा-हरे करती हैं, बा'ज़ क़ौमों में येह भी रवाज है कि दूल्हा निकाह़ के बा'द रुख़्सती से क़ब्ल ना मह़रमात कि जिन से पर्दा ज़रूरी है उन जवान लड़कियों के झुरमट में जाता है और वोह दूल्हा के साथ खींचा तानी व हंसी मज़ाक़ करती हैं येह सरासर ना जाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **अल ग़रज़ !** आज की फ़ेशन एबल व बे पर्दा लड़किया अफ़्आ़ल व अक़्वाल हर लिह़ाज़ से चादरे ह़या को तार तार कर रही हैं। मां बाप अपनी औलाद को पहले से नहीं संभालते और फिर जब कोई लड़की अपनी मरज़ी से किसी के साथ "**मन्सूब**" हो जाती है तो अब मां बाप सर पकड़ कर रोते हैं, जो बाप लड़की को कॉलेज भेजते हैं, फ़िल्में डिरामे देखने से नहीं रोकते

www.dawateislami.net

ग़ालिबन उन की येह दुन्यवी सज़ा होती है। (बा ह़या नौ जवान, स. 16 ता 20)

या शहीदे करबला फ़रियाद है जाने बीबी फ़ातिमा फ़रियाद है
बहरे ज़ैनब बे ह़याई का हु़ज़ूर ख़ातिमा हो ख़ातिमा फ़रियाद है
उम्मते नाना की बहनों को बना पैकरे शर्मो ह़या फ़रियाद है

(वसाइले बख़्शिश, स. 502)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3,4)...... तवाज़ोअ़ अफ़्ज़ल इबादत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **853** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा **261** पर शैखु़ल इस्लाम, शैख़ शहाबुद्दीन **इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की** शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْکَافِی उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا का फ़रमान नक़्ल करते हैं : "**तवाज़ोअ़ अफ़्ज़ल इबादत है।**"

(اَلزَّوَاجِر عَنِ اقْتِرَافِ الْکَبَائِر، الکبیرۃ الرابعۃ الکبر والعجب والخیلاء، ۱/ ۱٤۰)

एक जगह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया :

"**لَا تَشَوَّهُوْا فِی الْعِبَادَةِ وَعَلَیْکُمْ بِالتَّوَاضُعِ فَاِنَّ اَفْضَلَ الْعِبَادَةِ التَّوَاضُعُ**" या'नी तुम इबादत में शक्लें मत बिगाड़ो, तुम पर तवाज़ोअ़ इख़्तियार करना लाज़िम है क्यूं कि तवाज़ोअ़ अफ़्ज़ल इबादत है।"

(الزھد للمعافی بن عمران موصلی، باب فی فضل التواضع والتشدید، ص۲٤۹، الحدیث:۱۱۳)

एक और मक़ाम पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है :

"**اِنَّکُمْ لَتَغْفُلُوْنَ اَفْضَلَ الْعِبَادَةِ: التَّوَاضُعُ**" तुम ज़रूर अफ़्ज़ल इबादत या'नी तवाज़ोअ़ से ग़ाफ़िल हो।"

(کِتَابُ الزُّھد لعبد اللّٰہ بن مبارک، باب فی التواضع، ص۱٤۳، الحدیث:۳۹۳)

एक मक़ाम पर फ़रमाया : "**اِنَّکُمْ لَتَدَعُوْنَ اَفْضَلَ الْعِبَادَةِ: التَّوَاضُعُ**" या'नी बेशक तुम ज़रूर अफ़्ज़ल इबादत या'नी तवाज़ोअ़ को तर्क करते हो।"

(شُعَبُ الإِیْمَان، باب فی حسن الخلق، فصل فی التواضع، ٦/ ۲۷۸، الحدیث:۸۱٤۸)

देखो ! दो दो ताकीदों के साथ हमारी अम्मीजान, ह़बीबए ह़बीबे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا इर्शाद फ़रमा रही हैं कि "बेशक तुम ज़रूर अफ़्ज़ल इबादत या'नी तवाज़ोअ़ को तर्क करते हो", एक ताकीद "बेशक" और दूसरी "ज़रूर"।

www.dawateislami.net

तवाज़ोअ़ की ता'रीफ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! साबिक़ा सुतूर में आप ने तवाज़ोअ़ के बारे में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के फ़रामीन मुला-ह़ज़ा फ़रमाए अब तवाज़ोअ़ की ता'रीफ़ भी मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये, चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**" में तवाज़ोअ़ की ता'रीफ़ बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "**अपने आप को ह़क़ीर और कमतर समझने को तवाज़ोअ़ कहते हैं।**" (مِنْهَاجُ الْعَابِدِيْن، ص ٨١)

तवाज़ोअ़ का इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अल्वाह़ (या'नी तख़्तियों) को पकड़ कर उन पर नज़र डाली तो अ़र्ज़ किया : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तूने मुझे ऐसी बुज़ुर्गी से सरफ़राज़ फ़रमाया है जिस से मुझ से पहले किसी को सरफ़राज़ न फ़रमाया था।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : "क्या तुम जानते हो कि मैं ने तुम्हारे साथ ऐसा क्यूं किया है ?" अ़र्ज़ किया : "मैं नहीं जानता।" फ़रमाया : "इस लिये कि मैं ने अपने बन्दों के दिलों पर नज़र फ़रमाई तो तुम्हारे दिल से ज़ियादा किसी को तवाज़ोअ़ करने वाला नहीं पाया लिहाज़ा

ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) **!** जो मेरी अ़-ज़मत के सामने झुक जाए, मेरी मख़्लूक़ पर बड़ाई न चाहे, अपने दिल पर मेरे ख़ौफ़ को लाज़िम कर ले, अपना दिन मेरे ज़िक्र में गुज़ारे और मेरी ख़ात़िर अपनी ज़बान को नफ़्सानी ख़्वाहिशात से रोक ले तो मैं भी उस की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाता हूं।"

(بَحْرُ الدُّمُوع، الفصل الحادی والثلاثون: صون الانسان من عثرات اللسان والعجب، ص٢٠١)

तवाज़ोअ़ व इन्किसारी के फ़ज़ाइल पर मब्नी 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

(1)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक द-रजा इन्किसारी करेगा तो **अल्लाह** سُبْحَانَہٗ عَزَّوَجَلَّ उस को एक द-रजा बुलन्द कर देगा और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर एक द-रजा तकब्बुर करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को एक द-रजा पस्त कर देगा यहां तक कि उस को **अस्फ़लुस्साफ़िलीन** में डाल देगा।

(سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب البراءة من الكبر والتواضع، ص٦٧٨، الحديث:٤١٧٦)

(2)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इन्किसारी करते हुए किसी लिबास पर क़ुदरत रखते हुए उसे छोड़ देगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

उसे क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ात के सामने बुला कर येह इख़्तियार देगा कि वोह ईमान के हुल्लों में से जिस को चाहे पहन ले। (سنن الترمذی، ابواب صفة القيامة والرقائق والورع، ص٥٨٨، الحديث:٢٤٨١)

(3)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि बेशक **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि स-दक़ा माल को नहीं घटाता और जो आदमी किसी को मुआफ़ कर दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की इज़्ज़त बढ़ा देता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इन्किसारी करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को बुलन्द फ़रमा देगा।

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی التواضع، ص٤٩١، الحديث:٢٠٢٩)

(4)...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें जन्नत के बादशाहों की ख़बर न दूं ? मैं ने अर्ज़ की : क्यूं नहीं। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : वोह कमज़ोर व ना तुवां जिन्हें लोग कुछ न समझते हों, फटे पुराने कपड़े पहनते हों अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़रूर उन की क़सम पूरी फ़रमा देगा (येह लोग अहले जन्नत के बादशाह हैं)।

(سُنَن اِبْنِ مَاجَه، کتاب الزهد، باب من لا يؤبه له، ص٦٦٩، الحديث:٤١١٥)

बिखरे बाल, आज़ुर्दा सूरत होते हैं कुछ अहले महब्बत
बद्र मगर येह शान है उन की बात न टाले रब्बुल इ़ज़्ज़त

(बज़्मे औलिया, स. 47)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तवाज़ोअ़ महज़ लि वज्हिल्लाह हो......!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! तवाज़ोअ़ ख़ालिस **लि वज्हिल्लाह** या'नी महज़ रिज़ाए इलाही पाने की निय्यत से होनी चाहिये तभी येह अ़ज़ीम अज्रो सवाब कमाने और बुलन्दिये द-रजात का बाइ़स होगी वरना दुन्यादार ग़नी के लिये उस के माल के सबब तवाज़ोअ़ करना दीन की बरबादी और जहन्नम में दाख़िले का बाइ़स हो सकती है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1548** सफ़हात पर मुश्तमिल किताबे मुस्तत़ाब **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** जिल्द अव्वल सफ़हा **497** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه इर्शाद फ़रमाते हैं : अरबाबे इक्तिदार और सरमाया दार लोगों से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है, इन की दा'वतें खाने और इन के तहाइफ़ क़बूल करने में आख़िरत के लिये शदीद ख़त़रात हैं कि इन की दा'वतें खाने और तोहफ़े क़बूल करने वाले का इन की ख़ुशामद करने और

www.dawateislami.net

ख़्वाह म ख़्वाह हां में हां मिलाने से बचना बहुत ही मुश्किल होता है। ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा : जो किसी ग़नी (या'नी मालदार) की इस के ग़ना (या'नी मालदारी) के सबब तवाज़ोअ़ करे उस का दो तिहाई दीन जाता रहा। (كشف الخفاء، حرف الميم، ٢/٢١٥، الحديث:٢٤٤٢)

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : "माले दुन्या के लिये तवाज़ोअ़ रू ब ख़ुदा (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर तवाज़ोअ़ करना) नहीं (लिहाज़ा) येह ह़राम हुई।" (जै़लुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ, स. 12)

ख़ुशामद की मज़म्मत

मज़ीद फ़रमाते हैं : मत़्लब येह है कि किसी दुन्यादार मालदार आदमी की बिला इजाज़ते शर-ई मह़्ज़ उस की दौलत के सबब तवाज़ोअ़ करना ह़राम है। अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! येह गुनाह आज कल बहुत ही ज़ियादा आ़म है। "मालदार आदमी" आ़म लोगों के लिये बाइ़से इम्तिह़ान होता है क्यूं कि दौलत की कसरत के सबब उस का एक ख़ास रो'ब होता है अगर्चे वोह एक "फूटी बादाम" तक न दे फिर भी नफ़्सियाती असर से मग़्लूब हो कर ख़्वाह म ख़्वाह उस के साथ ख़ाज़िआ़ना व ख़ुशा-मदाना अन्दाज़ से लोग पेश आते हैं। सरकारे आ'ला ह़ज़रत के वालिदे गिरामी **रईसुल मु-तकल्लिमीन** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان नक़्ल करते हैं, ह़दीस शरीफ़ में आया है : "मुसल्मान ख़ुशामदी नहीं होता।" और झूटी झूटी ता'रीफ़ें इस से भी बदतर, कि एक तो तमल्लुक़ (या'नी ख़ुशामद) दूसरे किज़्ब (या'नी झूट) तीसरे इस शख़्स का नुक़्सान कि मुंह पर ता'रीफ़ करने को ह़दीस में गरदन का काटना फ़रमाया और इर्शाद हुवा : "मद्दाहों (या'नी मुंह पर ता'रीफ़ करने वालों) के मुंह में ख़ाक झोंक दो" ख़ुसूसन अगर मम्दूह़ (या'नी जिस की ता'रीफ़ की गई) फ़ासिक़ हो, कि ह़दीस में फ़रमाया : "जब फ़ासिक़ की मद्ह़ (या'नी ता'रीफ़) की जाती है, रब तबा-र-क व तआ़ला ग़ज़ब फ़रमाता है और अ़र्शुर्रह़मान हिल जाता है।" (अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिदुआ़अ, स. 154)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن जाइज़ और ना जाइज़ तवाज़ोअ़ की वज्ह बयान करते हुए "**फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़**" जिल्द **7** में इर्शाद फ़रमाते हैं : "**ऐ अ़ज़ीज़ !** अस्ल कार येह है कि मह़बूबाने ख़ुदा के लिये जो तवाज़ोअ़ की जाती है वोह दर ह़क़ीक़त ख़ुदा ही के लिये तवाज़ोअ़ है व लिहाज़ा ब कसरत अह़ादीस में उस्ताज़ व शागिर्द व उ़-लमा व आ़म मुस्लिमीन के लिये तवाज़ोअ़ का हुक्म हुवा। (येह तवाज़ोअ़ **लि वज्हिल्लाह** है) तवाज़ोअ़ **लि ग़ैरिल्लाह** की शक्ल येह है कि عِيَاذًا بِاللهِ किसी काफ़िर या दुन्यादार ग़नी के लिये उस के सबब तवाज़ोअ़ हो कि यहां वोह निस्बत मौजूद ही नहीं या मौजूद है तो मल्ह़ूज़ नहीं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 7, स. 595, 597)

www.dawateislami.net

अपने कपड़े ख़ुद धो लेना   ना 'ले पाक भी ख़ुद सी लेना

सादा सादा नेक त़बीअ़त   صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5,6﴿ "वरअ़" अफ़्ज़ल इ़बादत

वरअ़ (या'नी तक़्वा व परहेज़ गारी) की फ़ज़ीलत के बारे में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का फ़रमान है : "**तुम लोग वरअ़ से ग़ाफ़िल हो ह़ालां कि येह अफ़्ज़ल इ़बादत है।**" (تَنْبِیْہُ الْمُغْتَرِّیْن، الباب الرابع فی جملۃ اخری، ومنھا محبۃ المال للانفاق۔۔۔الخ، ص۲۳۹)

एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : "**बेशक लोगों ने अपने दीन का बड़ा ह़िस्सा ज़ाएअ़ कर दिया है और वोह "वरअ़" है।**"

(المصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب الزھد،کلام عائشۃ رضی اللّٰہ عنھا، ۱۹۲/۸،الحدیث:۸)

वरअ़ के 4 द-रजात

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने "**वरअ़**" के चार द-रजात बयान फ़रमाए हैं उन का ख़ुलासा येह है : **ह़राम से बच कर वरअ़ इख़्तियार करना दीन से है** और इस के 4 द-रजात हैं :

(1)...... अ़वाम का वरअ़ :

येह ज़ाहिरी ह़राम से बचने का नाम है।

(2)...... सालिह़ीन का वरअ़ :

येह उन शुबुहात से बचने का नाम है जिन में एह़तिमालात होते हैं। जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो तुझे शक में डाले उस को छोड़ कर उसे इख़्तियार कर जो तुझे शक में न डाले।"

(جَامِعُ التِّرْمِذِی، ابواب صفۃ القیامۃ۔۔الخ، ۶۰باب، ص۵۹۴، الحدیث:۲۵۱۸)

एक और रिवायत में है कि "**गुनाह दिलों में खटक्ता है।**"

(3)...... मुत्तक़ीन का वरअ़ :

येह ख़ालिस ह़लाल को तर्क कर देने का नाम है जिस के मु-तअ़ल्लिक़ ह़राम की त़रफ़ ले जाने का ख़ौफ़ हो जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْم का इर्शादे अ़ज़ीम है : "आदमी उस वक़्त तक परहेज़ गारों का द-रजा ह़ासिल नहीं कर सकता जब तक कि उस काम को

www.dawateislami.net

जिस में बुराई न हो छोड़ दे और उस काम से डरे जिस में बुराई हो।"

(سنن الترمذی، ابواب صفة القیامة والرقائق والورع، ۱۷-باب، ص۵۸۲، الحدیث:۲۴۵۱)

(4)...... सिद्दीक़ीन का वरअ़ :

येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ से किनारा कश हो जाने का नाम है इस ख़ौफ़ से कि कहीं ज़िन्दगी का कोई लम्हा ऐसा न गुज़रे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब में इज़ाफ़े का फ़ाएदा न दे अगर्चे वोह जानता है कि येह उसे ह़राम की त़रफ़ नहीं ले जाएगा।

(اِحْیَاءُ عُلُوْمِ الدِّیْن، کتاب العلم، الباب الثانی فی العلم المحمود......الخ، بیان العلم الذی هو فرض کفایة، ۱/ ۳۳، مُلَخَّصًا)

मु-तवर्रिईन (परहेज़ गारों) की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत

जो लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर तक़्वा व परहेज़ गारी इख़्तियार करते हैं **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** अपने फ़ज़्लो करम से उन्हें ढेरों अज्रो सवाब और बे शुमार इन्आ़मात से नवाज़ता है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه "**क़ूतुल क़ुलूब**" में नक़्ल फ़रमाते हैं : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अव्वलीन व आख़िरीन को एक मुक़र्ररा दिन में (ह़िसाब किताब के लिये) जम्अ़ फ़रमाएगा तो उन्हें एक आवाज़ से निदा देगा जिस त़रह़ क़रीब वाला सुनेगा उसी त़रह़ दूर वाला भी सुनेगा। चुनान्चे फ़रमाएगा :

ऐ लोगो ! जब से मैं ने तुम्हें पैदा किया तब से आज तक मैं ख़ामोश रहा (और तुम्हारी बातें सुनता और तुम्हारे आ'माल देखता रहा) अब तुम ख़ामोश रहो और सुनो : येह तुम्हारे आ'माल ही हैं जो तुम पर पेश किये जाएंगे। **ऐ लोगो !** मैं ने एक नसब बनाया और तुम ने एक नसब बनाया मगर मेरे नसब को तुम ने गिरा दिया और अपने नसब को बुलन्द किया, मैं ने कहा :

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ
(پ۲۶، الحجرٰت:۱۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़ गार है।

मगर तुम ने इन्कार किया (और कहा :) फ़ुलां बिन फ़ुलां, फ़ुलां से ज़ियादा दौलत मन्द है। आज मैं तुम्हारा नसब गिराऊंगा और अपना नसब बुलन्द करूंगा। (फिर इर्शाद फ़रमाएगा :) कहां हैं मुत्तक़ी (या'नी परहेज़ गार लोग) ? तो **एक जमाअ़त के लिये परचम नस्ब किया जाएगा आख़िर वोह (अहले तक़्वा की) जमाअ़त उस परचम के पीछे पीछे चलेगी और उन्हें जन्नत में बिग़ैर ह़िसाब दाख़िल कर दिया जाएगा।"**

(قُوْتُ الْقُلُوْب، الفصل الثانی والثلاثون، شرح مقامات الیقین، شرح مقام الخوف ووصف الخائفین ...الخ، ۱/ ۳۷۶)

www.dawateislami.net

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुसीबत पर सब्र कीजिये......!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जब भी कोई मुसीबत पहुंचे म-सलन सर में दर्द हो, बुख़ार हो, एक्सीडेन्ट (Accident) हो जाए या किसी अ़ज़ीज़ का इन्तिक़ाल हो जाए । **अल ग़रज़** कैसा ही कठिन मरह़ला हो ज़बान पर ह़र्फ़े शिकायत नहीं लाना चाहिये बल्कि सब्र करते हुए अज्रे अ़ज़ीम का ह़क़दार बनना चाहिये क्यूं कि येह मसाइबो आलाम बा'ज़ दफ़्आ़ गुनाहों की बख़्शिश और बुलन्दिये द-रजात का सबब हुवा करते हैं जैसा कि ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब बन्दे के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां कोई मर्तबए कमाल मुक़द्दर होता है और वोह अपने अ़मल से उस मर्तबे को नहीं पहुंचता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के जिस्म या माल या औलाद पर **मुसीबत** डालता है फिर इस पर सब्र अ़त़ा फ़रमाता है यहां तक उसे उस मर्तबे तक पहुंचा देता है जो उस के लिये इ़ल्मे इलाही में मुक़द्दर हो चुका है ।"

(سُنَن اَبِی داوٗد، کتاب الجنائز، باب الامراض المکفرة للذنوب، ص۴۹۹، الحدیث:۳۰۹۰)

20 ग़मों की ह़िकायत

इसी ज़िम्न में एक ह़िकायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان **"मस्नवी शरीफ़"** के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : "एक औ़रत के **20** बेटे थे, क़ज़ाए इलाही से हर साल एक एक बेटा **18, 18** साल की उ़म्र में फ़ौत होना शुरूअ़ हुवा, **19** तक येह साबिरा रही जब **20**वें बच्चे को वोही बीमारी हुई तो येह घबरा गई बहुत कुछ इ़लाज मुआ़-लजा किया, लड़का जां-बर (शिफ़ायाब) न हो सका और मर गया नतीजा येह हुवा कि मां दीवानी हो गई । एक रात इसी जुनून की ह़ालत में ख़्वाब में एक निहायत दिलकश बाग़ देखा जिस की सर सब्ज़ी, नहरों की रवानी, ज़ैबाइश बयान नहीं हो सकती, उस में बे शुमार बंगले बने हुए थे हर एक पर मालिक का नाम कन्दा (या'नी लिखा हुवा) था, एक निहायत नफ़ीस बंगले पर अपना नाम लिखा हुवा देखा । बहुत ही ख़ुश हो कर अन्दर चली गई अन्दर की रौनक़ और बहार देख कर दंग रह गई, उस के बाग़ में टहलने लगी और मकान के कमरों में घूमने फिरने लगी, एक कमरे में देखा कि उस के बीसों लड़के निहायत ऐशो आराम से बैठे हैं, इसे देख कर बोले कि अम्मां ! हम अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) के पास निहायत आराम से हैं ।

www.dawateislami.net

पुकारने वाले ने पुकारा : **ऐ मोमिना !** तेरा मक़ाम येह है मगर तेरे आ'माल तुझे यहां तक नहीं पहुंचा सकते थे इस लिये तुझे **20** ग़म दिये गए येह **20** ग़म इस मन्ज़िल की **20** सीढ़ियां थीं जिन को तूने रब (عَزَّوَجَلَّ) के करम से तै कर लिया, अब तेरे लिये ख़ुशी ही ख़ुशी है। जब वोह येह ख़्वाब देख कर चौंकी तो चीख़ी कि ख़ुदाया ! तू मुझे **100** बेटे दे और **100** ही को जवानी में मौत दे, मुझे क्या ख़बर थी कि तेरे क़ह्र में मेह्र पोशीदा है।" (रसाइले नईमिय्या, स. 440)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ मुसीबत ज़दा की ख़ताएं मुआफ़

इसी लिये उम्मुल मुअमिनीन हज़रते **सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : "जब **मोमिन को कांटा चुभता है या इस से भी कम तक्लीफ़ होती है तो अल्लाह तबा-र-क व तआला (उस के सबब) उस से एक ख़ता मिटाता और उस के लिये एक द-रजा बुलन्द फ़रमा देता है।"**

(شُعَبُ الْاِيْمَان، باب فی الصبر علی المصائب، فصل فی ذکرمافی الاوجاع...الخ، ۷/۱۵٦، الحديث:۹۸۲٦)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! झूम जाइये ! अपने प्यारे प्यारे **अल्लाहुर्रहमान वर्रहीम** عَزَّوَجَلَّ की रहमत पर कुरबान जाइये ! **रब** عَزَّوَجَلَّ की रहमत के भी क्या कहने कि बन्दों को छोटी या बड़ी जो कोई भी मुसीबत पहुंचती है वोह **रहीम व करीम** عَزَّوَجَلَّ इस पर भी अपने बन्दों को अज्रो सवाब से नवाज़ता है, लिहाज़ा अक़्लमन्द को मुसीबत पर वावेला मचाते हुए बे सब्री का मुज़ा-हरा करने की बजाए रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के लिये सब्र करते हुए सवाबे आख़िरत का हक़दार बनना चाहिये।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तुझे साबिरीन का वासिता ! हमें भी मसाइब पर सब्र करने की ला ज़वाल दौलत से मालामाल फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ आग से रुकावट

आइये ! औलाद के फ़ौत हो जाने पर सब्र करने के अज्र के सिल्सिले में सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का फ़रमाने आलीशान मुला-हज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं : "जिस के तीन बच्चे फ़ौत हो गए और वोह सवाब की उम्मीद रखते हुए साबिर रहा तो वोह (फ़ौत शुदगान) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के **इज़्न से उस के लिये आग से रुकावट बन जाएंगे।"** (مصنف ابن أبي شيبة، كتاب الجنائز، فی ثواب الولد يقدمه الرجل، ۳/۲۳۳، الحديث:۸)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यक़ीनन औलाद फ़ौत होने पर सब्र करना बहुत ही मुश्किल होता है लेकिन **याद रखिये !** जो काम जिस क़दर दुश्वार होता है उस पर सब्र करने का अज्रो सवाब भी उतना ही ज़ियादा होता है, औलाद फ़ौत होने की मुसीबत बहुत बड़ी होती है इस लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस पर अज्र भी बे शुमार रखा है, चुनान्चे इस पर सब्र की फ़ज़ीलत में मज़ीद रिवायात मुला-हज़ा फ़रमाइये और अपने प्यारे रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर झूमिये......!

इन्तिक़ाले औलाद पर फ़ज़ीलते सब्र पर मुश्तमिल 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

(1)...... जिस मुसल्मान के तीन बच्चे बालिग़ होने से पहले मर जाएं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन बच्चों पर अपनी रह़मत के फ़ज़्ल से उस मुसल्मान को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। एक रिवायत में है कि ''जिस के तीन बच्चे बालिग़ होने से पहले फ़ौत हो गए वोह शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा।''

(صحیحُ البُخاری شریف، کتاب الجنائز، باب ما قیل فی اولاد المسلمین، ص۳۸۶، الحدیث:۱۳۸۱)

(2)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक औ़रत **सय्यिदुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मर्द ह़ज़रात आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इर्शादात सुन लेते हैं । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें भी एक दिन अ़त़ा फ़रमा दें जिस में हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हों आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम सिखाएं। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम फुलां दिन फुलां मक़ाम पर जम्अ़ हो जाओ।''

चुनान्चे औ़रतें जम्अ़ हो गईं। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात में से कुछ सिखाया। फिर फ़रमाया : ''तुम में से **जो औ़रत अपने तीन बच्चे आगे भेजेगी वोह उस के लिये आग से ह़िजाब हो जाएंगे।**'' एक औ़रत ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! और दो बच्चे ? ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी ने कहा : उस औ़रत ने इस (और दो बच्चे) का दो बार इआ़दा किया तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : और दो बच्चे (भी) और दो बच्चे (भी) और दो बच्चे (भी)।

(صحیح البخاری، کتاب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، باب تعلیم النبی اُمّتہ...الخ، ص۱۷۶۹، الحدیث:۷۳۱۰)

(3)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक औ़रत अपने बच्चे को ले कर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया : ऐ **अल्लाह** के नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! इस बच्चे के लिये दुआ़ फ़रमा दें क्यूं कि मैं अपने तीन बच्चों

www.dawateislami.net

को दफ़्ना चुकी हूं। नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तू तीन बच्चों को दफ़्ना चुकी है ? उस ने अ़र्ज़ की : हां। फ़रमाया : बेशक तूने अपने लिये आग से हि़फ़ाज़त के लिये एक मज़्बूत़ दीवार तय्यार कर ली है।

(صحیح مسلم، کتاب البر و الصلة والآداب، باب فضل من یموت له ولد فیحتسبه، ص١٠١٦، الحدیث:٢٦٣٦)

(4)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़स्सान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से अ़र्ज़ की : "मेरे दो बच्चे मर चुके हैं क्या आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ मुझे ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कोई ऐसी ह़दीस नहीं सुनाएंगे जो हमें अपने मुर्दों के बारे में मुत़्मइन कर दे ?" फ़रमाया : **हां !** छोटे बच्चे जन्नती होंगे। उन में से कोई बच्चा अपने वालिद या वालिदैन से मिलेगा तो उन के कपड़े या हाथ को ऐसे पकड़ेगा जैसे मैं ने तुम्हारे कपड़े का दामन पकड़ा है और उसे उस वक़्त तक न छोड़ेगा जब तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को और उस के वालिद को जन्नत में दाख़िल न फ़रमा दे।

(صحیح مسلم، کتاب البروالصلة والآداب، باب فضل من یموت له...الخ، ص١٠١٥، الحدیث:٢٦٣٥)

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तुझे तेरे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का वासित़ा ! हमें हर क़िस्म की छोटी बड़ी मुसीबत पर सब्र करने की ला ज़वाल दौलत से मालामाल फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9)...... मुर्दों को भलाई से याद करो

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं : "अपने मुर्दों को भलाई के साथ ही याद करो।"

(مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الجنائز، ما قالوا فی سب الموتی...الخ، ٢٤٥/٣، الحدیث:٥)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सरापा अ़-ज़मत है : **"अपने मुर्दों की ख़ूबियां बयान करो और उन की बुराइयों से बाज़ रहो।"** (سنن الترمذی، کتاب الجنائز، ٣٤-باب آخر، ص٢٦٦، الحدیث:١٠١٩)

मज़ीद फ़रमाया : मुर्दों को बुरा न कहो क्यूं कि वोह अपने आगे भेजे हुए आ'माल को पहुंच चुके हैं। (صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب الجنائز، باب ما ینهی من سب الاموات، ص٣٨٩، الحدیث:١٣٩٣)

www.dawateislami.net

याद रखिये : फ़ौत शुदगान की बुराई करना भी ग़ीबत है, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : माइज़ अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जब रज्म किया गया था, (या'नी ज़िना की ''हद'' में इतने पथ्थर मारे गए कि वफ़ात पा चुके थे) दो शख़्स आपस में बातें करने लगे, एक ने दूसरे से कहा : इसे तो देखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की पर्दा पोशी की थी मगर इस के नफ़्स ने न छोड़ा, رُجِمَ رَجْمَ الْكَلْب या'नी कुत्ते की त़रह़ रज्म किया गया। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुन कर सुकूत फ़रमाया (या'नी ख़ामोश रहे) कुछ देर तक चलते रहे, यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र एक मुर्दा गधे के पास से हुवा जिस की एक टांग ज़ियादा फूलने के सबब ऊपर उठी हुई थी। सरकारे वाला तबार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन दोनों शख़्सों से फ़रमाया : **जाओ !** इस मुर्दार गधे का गोश्त खाओ। उन्हों अ़र्ज़ की : **या नबिय्यल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इसे कौन खाएगा ? इर्शाद फ़रमाया : वोह जो तुम ने अपने भाई की आबरू रेज़ी की वोह इस गधे के खाने से भी ज़ियादा सख़्त है। क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है ! वोह (माइज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) इस वक़्त जन्नत की नहरों में ग़ोते लगा रहा है। (سنن ابی داؤد، کتاب الحدود، باب رجم ماعِز بن مالك، ص٦٩٦، الحديث:٤٤٢٨)

हज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی लिखते हैं : ''मुर्दा की ग़ीबत ज़िन्दा की ग़ीबत से बदतर है, क्यूं कि ज़िन्दा शख़्स से मुआफ़ करवाना मुम्किन है जब कि मुर्दा से मुआफ़ करवाना मुम्किन नहीं।'' (فیض القدیر للمناوی،حرف الهمزة، ١/ ٥٦٢، تحت الحديث:٨٥٢)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा फ़ौत शुदा लोगों की बुराई करना भी ग़ीबत है। बा'ज़ अवक़ात बड़ा सब्र आज़्मा मुआ-मला होता है म-सलन डाकू, दह्शत गर्द, अपने अ़ज़ीज़ के क़ातिल वग़ैरा क़त्ल कर दिये जाएं या उन्हें फांसी लगा दी जाए तो लोग ग़ीबत के गुनाह में पड़ ही जाते हैं। इसी त़रह़ ख़ुदकुशी करने वाले मुसल्मान के बारे में बिला इजाज़ते शर-ई येह कह देना कि ''**फ़ुलां ने ख़ुदकुशी की**'' येह ग़ीबत है, यूं ही नाम व पहचान के साथ किसी मुसल्मान की ख़ुदकुशी की अख़्बार में ख़बर भी न लगाई जाए कि इस से मरने वाले की ग़ीबत भी होती और इस के साथ साथ मर्हूम के अहलो इयाल की इ़ज़्ज़त पर भी बट्टा लगता है। मस्अला येह है कि मुसल्मान ख़ुदकुशी करने से इस्लाम से ख़ारिज नहीं हो जाता उस की नमाज़े जनाज़ा भी अदा की जाएगी, उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत भी करेंगे, मरने वाले मुसल्मान को बुराई से याद करने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं। (माख़ूज़ अज़ ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 192)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾10﴿ जन्नत सख़ियों का घर है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सख़ावत जहन्नम से बचाने और जन्नत में ले जाने वाले आ'माल में से है, जैसा कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाया करती थीं : **''जन्नत सख़ियों का घर और जहन्नम बख़ीलों का घर है ।''** (تَنۡبِیۡہُ الۡمُغۡتَرِّیۡن، الباب الثالث، ومنھا کثرۃ الفتوۃ والمرؤۃ ومنھا کثرۃ السخاء والجود...الخ، ص ۱۷۰)

सख़ावत जन्नत में एक दरख़्त है......!

सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सख़ावत जन्नत में एक दरख़्त है, जो सख़ी है उस ने उस की टहनी पकड़ ली है, वोह टहनी उस को न छोड़ेगी जब तक जन्नत में दाख़िल न कर ले और बुख़्ल जहन्नम में एक दरख़्त है, जो बख़ील है उस ने उस की टहनी पकड़ ली है, वोह टहनी उसे जहन्नम में दाख़िल किये बिग़ैर न छोड़ेगी ।''

(شُعَبُ الایمان، باب فی الجود والسخاء، ۷/ ۴۳۵، الحدیث:۱۰۸۷۷)

लोगों में सब से बड़ा सख़ी

कहा गया है कि ''लोगों में सब से बड़ा सख़ी वोह है जो **हुक़ूक़ुल्लाह** को उ़म्दा त़रीक़े पर अदा करे अगर्चे इस के इलावा दीगर कामों में लोग उसे बख़ील ही कहते हों और सब से बड़ा बख़ील वोह है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ की अदाएगी में बुख़्ल करे अगर्चे दूसरे कामों में लोग उसे सख़ी ही कहते हों ।'' (الزُّھۡدُ وَقَصۡرُ الۡاَمَل، ازھد الناس واجود الناس، ص ۶۰)

फ़वाइदे स-दक़ा पर मुश्तमिल 25 म-दनी फूल

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن फ़ज़ाइले स-दक़ात की अह़ादीस ज़िक्र फ़रमा कर इन फ़ज़ाइल का **25** म-दनी फूलों में इस त़रह़ इह़ात़ा फ़रमाते हैं : ''इन ह़दीसों से साबित हुवा कि जो मुसल्मान इस अ़मल में नेक निय्यत, पाक माल से शरीक होंगे उन्हें क-रमे इलाही व इन्आ़मे ह़ज़रते रिसालत पनाही تعالٰی ربّہ وتکرّم و صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से **25** फ़ाएदे मिलने की उम्मीद है : (1)...... **बि इज़्निही तआ़ला** बुरी मौत से बचेंगे, **70** दरवाज़े बुरी मौत के बन्द होंगे । (2)...... उ़म्रें ज़ियादा होंगी । (3)...... उन की गिनती बढ़ेगी । (4)...... रिज़्क़ की वुस्अ़त माल की कसरत होगी, इस की

www.dawateislami.net

आदत से कभी मोहताज न होंगे। (5)…. ख़ैरो ब-र-कत पाएंगे। (6)…. आफ़तें बलाएं दूर होंगी, बुरी क़ज़ा टलेगी, **70** दरवाज़े बुराई के बन्द होंगे, **70** क़िस्म की बला दूर होगी। (7)…. उन के शह्र आबाद होंगे। (8)…. शिकस्ता हाली दूर होगी। (9)…. ख़ौफ़े अन्देशा ज़ाइल और इत्मीनाने ख़ातिर हासिल होगा। (10)…. मददे इलाही शामिल होगी। (11)…. रह्मते इलाही उन के लिये वाजिब होगी। (12)…. मलाएका उन पर दुरूद भेजेंगे। (13)…. रिज़ाए इलाही के काम करेंगे। (14)…. ग़ज़बे इलाही उन पर से ज़ाइल होगा। (15)…. उन के गुनाह बख़्शे जाएंगे, मग़फ़िरत उन के लिये वाजिब होगी, उन के गुनाहों की आग बुझ जाएगी। (16)…. ख़िदमते अहले दीन में स-दक़ा से बढ़ कर सवाब पाएंगे। (17)…. ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा अज्र लेंगे। (18)…. उन के टेढ़े काम दुरुस्त होंगे। (19)…. आपस में मह़ब्बतें बढ़ेंगी जो हर ख़ैरो ख़ूबी की मुत्तबेअ़ हैं। (20)…. थोड़े सर्फ़ में बहुत का पेट भरेगा कि तन्हा खाते तो दूना उठता। (21)…. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर द-रजे बुलन्द होंगे। (22)…. मौला तबा-र-क व तआ़ला मलाएका से उन के साथ मुबाहात (या'नी फ़ख़्र) फ़रमाएगा। (23)…. रोज़े क़ियामत दोज़ख़ से अमान में रहेंगे, आतिशे दोज़ख़ उन पर ह़राम होगी। (24)…. आख़िरत में एह़साने इलाही से बहरा मन्द होंगे कि निहायते मक़ासिद व ग़ायते मुरादात है। (25)…. ख़ुदा ने चाहा तो उस मुबारक गुरौह में होंगे जो हुज़ूरे पुरनूर, सय्यिदे आ़लम, सरवरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'ले अक़्दस के तसद्दुक़ में सब से पहले दाख़िले जन्नत होगा।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 153)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सख़ावत के कसीर फ़ज़ाइल और बुख़्ल की इब्रत नाक वईदात के पेशे नज़र हमें चाहिये कि सख़ावत करते हुए बुख़्ल से इज्तिनाब करते हुए कसरत से स-दक़ा व ख़ैरात करते रहा करें।

क्या अल्लाह को सख़ी कह सकते हैं ?

याद रखिये ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये लफ़्ज़े **"सख़ी"** इस्ति'माल नहीं कर सकते, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **692** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़्ह़ा **130** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : **"अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सख़ी

www.dawateislami.net

नहीं जवाद कहना चाहिये। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **"फ़तावा र-ज़विय्या"** जिल्द **27**, सफ़ह़ा **165** पर फ़रमाते हैं : "**अस्माए इलाहिय्यह तौक़ीफ़िया** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम क़ुरआनो ह़दीस की त़रफ़ से उसी के ठहराए हुए) हैं, यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जवाद होना अपना ईमान मगर उसे सख़ी नहीं कह सकते कि शर-अ़ में वारिद नहीं।"

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "मुह़ा-व-रए अ़रब में उ़मूमन सख़ी उसे कहते हैं जो ख़ुद भी खाए औरों को भी खिलाए। जवाद वोह जो ख़ुद न खाए औरों को खिलाए। इसी लिये **अल्लाह तआला** को सख़ी नहीं कहा जाता। सख़ी के मुक़ाबिल (Opposite) बख़ील है (और बख़ील वोह है) जो ख़ुद खाए और न खिलाए। जवाद का मुक़ाबिल मुम्सिक है (और मुम्सिक वोह है) जो न खाए न खाने दे। **अल्लाह तआला** की तमाम दुन्यवी उख़्रवी ने'मतें दुन्या के लिये हैं उस (की अपनी ज़ात) के लिये नहीं।"

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب العلم، الفصل الثالث، ۱/۲۲۱)

《11》..... स-दक़े को ह़क़ीर न जानो......!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अगर ज़ियादा मिक़्दार में स-दक़ा देने की क़ुदरत न हो तो थोड़े स-दक़े को ह़क़ीर जानते हुए स-दक़ा करने से बाज़ नहीं रहना चाहिये इसी त़रह़ जिस को स-दक़ा दिया जा रहा है उस को भी चाहिये कि कम मिक़्दार में स-दक़ा होने की सूरत में उस को ह़क़ीर न जाने कि क़ियामत वाले दिन एक एक दाने का सवाब पहाड़ के बराबर होगा, चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाया करती थीं : **"स-दक़े में से किसी चीज़ को ह़क़ीर न जानो क्यूं कि इस में से एक दाना क़ियामत के दिन सवाब के पहाड़ के साथ तोला जाएगा।"**

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने एक फ़क़ीर को अंगूर का एक दाना दिया तो उस ने वापस कर दिया गोया उस की निगाह में वोह कम था उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : क्या तूने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह इर्शाद नहीं पढ़ा : "فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ (پ۳۰، الزلزال:۷) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा।" अंगूर के इस दाने में कितने ज़र्रात हैं ? (येह सुन कर) उस शख़्स ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश त़लब की।

(تَنْبِيْهُ الْمُغْتَرِّيْن، الباب الثالث، ومنها كثرة الصدقة بكل ما...الخ، ص۱۸٤)

www.dawateislami.net

मज़्कूरा और इस से अगली आयते मुबा-रका के तह़्त मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : "हर मोमिन व काफ़िर को रोज़े क़ियामत उस के नेक व बद आ'माल दिखाए जाएंगे मोमिन को उस की नेकियां और बदियां दिखा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बदियां बख़्श देगा और नेकियों पर सवाब अ़ता फ़रमाएगा और काफ़िर की नेकियां रद कर दी जाएंगी क्यूं कि कुफ़्र के सबब अकारत (या'नी ज़ाएअ़) हो चुकीं और बदियों पर उस को अ़ज़ाब किया जाएगा । मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी (رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) ने फ़रमाया कि काफ़िर ने ज़र्रा भर नेकी की होगी तो वोह उस की जज़ा दुन्या ही में देख लेगा यहां तक कि जब दुन्या से निकलेगा तो उस के पास कोई नेकी न होगी और मोमिन अपनी बदियों की सज़ा दुन्या में पाएगा तो आख़िरत में उस के साथ कोई बदी न होगी । **इस आयत में तरग़ीब है कि नेकी थोड़ी सी भी कारआमद है और तरहीब है कि गुनाह छोटा सा भी वबाल है ।"**

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 30, सू-रतुज़्ज़िल्ज़ाल, तह़्तल आयह : 7, स. 1116)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾12﴿ स-दक़ा इवज़ से बचा रहे

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह वालियों की येह शान है कि इन के आ'माल ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये होते हैं, किसी मख़्लूक़ से उस का कोई इवज़ त़लब नहीं करतीं बल्कि अगर कोई ख़ुद देना चाहे तो भी नहीं लेतीं और कमाले तक़्वा येह कि अगर कोई उन्हें एह़सान के बदले दुआ़ भी दे देता तो भी दुआ़ के बदले दुआ़ देतीं कि कहीं उस का दुआ़एं देना इस एह़सान का इवज़ हो कर आख़िरत के अज्रो सवाब से मह़रूम न कर दे । उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की भी येही शान थी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को जब कोई साइल दुआ़एं देता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पहले उसे दुआ़एं देतीं फिर भीक अ़ता फ़रमातीं, किसी ने पूछा : "(आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) अ़ता से पहले दुआ़ क्यूं देती हैं ?" फ़रमाया : "ताकि **मेरा स-दक़ा इवज़ से बचा रहे ।"** (مرآۃ المناجیح، کتاب الزکوۃ، باب افضل الصدقۃ، ۳/۱۲۴)

स-दक़ा देने के आदाब

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی स-दक़ा देने के आदाब बयान करते हुए फ़रमाते हैं : स-दक़ा करने वाले को चाहिये कि सुवाल करने से पहले स-दक़ा दे, ख़ुफ़्या त़ौर पर स-दक़ा दे और देने के बा'द भी उसे छुपाए, सुवाल करने वाले के साथ नरमी से पेश आए, उस के मांगने से पहले उसे जवाब न

www.dawateislami.net

दे, उस के मु-तअ़ल्लिक़ वस्वसों का शिकार न हो (कि न जाने क्यूं मांग रहा है ? क्या मजबूरी है ? वग़ैरा वग़ैरा), अपने नफ़्स को बुख़्ल से रोके, साइल ने जिस चीज़ का सुवाल किया है उसे वोह चीज़ अ़ता कर दे या अच्छे त़रीक़े से उसे लौटा दे, अगर अ-ज़ली दुश्मन इब्लीस لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَيْه उस के दिल में वस्वसा अन्दाज़ी करे कि साइल इस चीज़ का ह़क़दार नहीं तो उस की मुख़ा-लफ़त करते हुए साइल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा ने'मतें दिये बिग़ैर न लौटाए क्यूं कि वोह इस का ज़ियादा मुस्तह़िक़ है। (مجموعة رسائل الامام الغزالی، الادب فی الدین، آداب المتصدق، ص۴۰۹) **हां !** अगर साइल मु-तअ़न्नित (या'नी पेशावर भिकारी) हो तो न दे।

(बहारे शरीअ़त, स-द-क़ए फ़ित्र का बयान, सुवाल किसे ह़लाल है और किसे नहीं, ह़िस्सा : 5, जि. 1, स. 945)

ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! तुझे तेरे सख़ी बन्दों की शाने सख़ावत का वासित़ा ! हमें भी सख़ावत का जज़्बा अ़ता फ़रमा दे। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾13﴿...... सूरए वाक़िअ़ह पढ़ने की तरग़ीब

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا औरतों को (**सू-रतुल वाक़िअ़ह** की तरग़ीब दिलाते हुए) इर्शाद फ़रमातीं : **"तुम में से कोई सूरए वाक़िअ़ह पढ़ने से आ़जिज़ न रहे।"** (تفسیر دُرِّ مَنْثُوْر، سورة الواقعة، ۱۷۴/۱۴)

सू-रतुल वाक़िअ़ह ख़ुशह़ाली का बाइस

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सू-रतुल वाक़िअ़ह के फ़ज़ाइलो ब-रकात के क्या कहने ! ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"सूरए वाक़िअ़ह तवंगरी (या'नी ख़ुशह़ाली लाने) वाली सूरत है लिहाज़ा इसे पढ़ो और अपनी औलाद को सिखाओ।"**

(تَفْسِیْر رُوْحُ الْمَعَانِی، سورة الواقعة، الجزءُ السابع والعشرون، ص۱۲۸)

फ़क़्रो फ़ाक़ा से बचने का नुस्ख़ा

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के म-रज़ुल मौत में उन की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गए और उन से फ़रमाने लगे : तुम्हें किस चीज़ की शिकायत है ? अ़र्ज़ किया : मेरे गुनाहों की। इस्तिफ़्सार फ़रमाया : किस चीज़ की ख़्वाहिश है ? अ़र्ज़ किया : मेरे रब की रह़मत की।

www.dawateislami.net

इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या मैं आप के लिये किसी त़बीब को न बुला लूं ? अ़र्ज़ किया : त़बीब ने ही तो बीमार किया है । इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ख़ज़ाने से कुछ अ़त़ा कर दूं ? अ़र्ज़ किया : आज से पहले तो आप मुझे इस से रोकते थे तो आज मुझे इस की कोई ह़ाजत नहीं । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : (माल ले लो और) उसे अपने अहलो इयाल के लिये छोड़ देना । अ़र्ज़ किया : मैं ने इन्हें ऐसी चीज़ सिखा दी है कि जब वोह उसे पढ़ेंगे मोह़ताज नहीं होंगे, मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना कि "**जिस ने हर रात सू-रतुल वाक़िअ़ह पढ़ी वोह फ़क़्रो फ़ाक़े में मुब्तला नहीं होगा ।**"

(شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی فضائل السوروالآیات، ۲/۴۹۱، الحدیث:۲۴۹۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कई कई रातें फ़ाक़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बहर ह़ाल अगर कभी फ़ाक़े की नौबत आन पहुंचे तो इस पर सब्र कर के सवाब कमाना चाहिये बल्कि कभी कभी खाना होने के बा वुजूद हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल करने की निय्यत से भी भूक बरदाश्त करनी चाहिये, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कई कई रातें मुसल्सल फ़ाक़ा फ़रमाते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले ख़ाना को रात का खाना मुयस्सर न आता ।

(جامع ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی معیشۃ النبی -----الخ، ص۵۶۳، الحدیث:۲۳۶۰)

﴾14﴿...... हुज़ूर के बा'द सब से पहली बिद्अ़त

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "सुल्त़ाने मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के (विसाले ज़ाहिरी के) बा'द **सब से पहली बिद्अ़त पेट भर कर खाने की पैदा हुई,** जब लोगों के पेट भर जाते हैं तो उन के नफ़्स दुन्या की त़रफ़ सरकश हो जाते हैं ।" (इस क़ौल में बिद्अ़ते मुबाह़ा या'नी जाइज़ बिद्अ़त मुराद है)

(احیاء علوم الدین، کتاب کسر الشھوتین، بیان فوائد الجوع وآفات الشبع، الفائدۃ الخامسۃ، ۳/۱۰۷)

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1548** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़्हा **644** पर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : "पेट भर कर खाना मुबाह़ या'नी जाइज़ है मगर "**पेट का क़ुफ़्ले मदीना**" लगाते हुए या'नी अपने पेट को ह़राम और शुबुहात से बचाते हुए ह़लाल गि़ज़ा भी भूक से कम खाने में दीन व दुन्या के बे शुमार फ़वाइद हैं। खाना मुयस्सर न होने की सूरत में मजबूरन भूका रहना कोई कमाल नहीं, वाफ़िर मिक़्दार में खाना मौजूद होने के बा वुजूद मह़्ज़ रिज़ाए इलाही की ख़ात़िर भूक बरदाश्त करना येह ह़क़ीक़त में कमाल है, चुनान्चे रिवायत में है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, दो जहां के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **इख़्तियारी त़ौर पर भूक बरदाश्त फ़रमाते थे।**"

(شُعَبُ الْاِيْمَان، باب فی المطاعم والمشارب، فصل فی ذم كثرة الاكل ٥/٢٦، الحديث: ٥٦٤٠)

लूट ले रह़मत, लगा क़ुफ़्ले मदीना पेट का
पाएगा जन्नत, लगा क़ुफ़्ले मदीना पेट का

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 644)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत में आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस

मा'लूम हुवा इख़्तियारी त़ौर पर भूक बरदाश्त करना हमारे मक्की म-दनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत है। और सुन्नत की अ़-ज़मत के तो क्या कहने ! ख़ुद साहि़बे सुन्नत, सरापा रह़मत, बि इज़्ने रब्बुल इ़ज़्ज़त मालिके जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत को ज़िन्दा रखा उस ने मुझ से मह़ब्बत की और **जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।**"

(سُنَنُ التِّرمذی، ابواب العلم، باب الاخذ بالسنة واجتناب البدع، ص ٦٣٠، الحديث: ٢٦٧٨)

पारह **26 सू-रतुल अह़्क़ाफ़** की आयत नम्बर **20** में **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِیْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ (پ٢٦، الاحقاف: ٢٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम अपने हि़स्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब बदला दिया जाएगा।

www.dawateislami.net

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भूक शरीफ़

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मुफ़स्सिरे क़ुरआन, सदरुल अफ़ाज़िल अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस आयत में **अल्लाह तआ़ला** ने दुन्यवी लज़्ज़ात इख़्तियार करने पर कुफ़्फ़ार को तौबीख़ (या'नी मलामत) फ़रमाई तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और हुज़ूर के अस्ह़ाब (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने लज़्ज़ाते दुन्यविय्या से कनारा कशी इख़्तियार फरमाई। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात तक हुज़ूर के अहले बैते (अत़्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने कभी जव की रोटी भी दो रोज़ बराबर न खाई। येह भी ह़दीस में है कि पूरा पूरा महीना गुज़र जाता था दौलत सराए अक़्दस (या'नी मकाने आ़लीशान) में (चूल्हे में) आग न जलती थी, चन्द खजूरों और पानी पर गुज़र की जाती थी। ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, आप फ़रमाते थे कि (ऐ लोगो !) मैं चाहता तो तुम से अच्छा खाना खाता और तुम से बेहतर लिबास पहनता लेकिन मैं अपना ऐ़शो राह़त अपनी आख़िरत के लिये बाक़ी रखना चाहता हूं।"

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 26, सू-रतुल अह़क़ाफ़, तह़्तल आयह : 20)

खाना तो देखो जव की रोटी बे छना आटा रोटी भी मोटी
वोह भी शिकम भर रोज़ न खाना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم
कौनो मकां के आक़ा हो कर दोनों जहां के दाता हो कर
फ़ाक़े से हैं शाहे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का खाना

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जव के इवज़ अपनी ज़िरह रह्न (या'नी गिरवी) रखी और मैं जव की रोटी और पिघली हुई मु-तग़य्यर चरबी ले कर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ-ज़मत में ह़ाज़िर हुवा, मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : "आले मुह़म्मद के पास किसी सुब्ह़ और शाम को एक साअ़ (तक़रीबन तीन किलो 840 ग्राम) अनाज न रहा था।" ह़ालां कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आल नव घरों पर मुश्तमिल थी। (صحيح البخارى، كتاب الرهن، باب فى الرهن فى الحضر، ص٦٤٧، الحديث:٢٥٠٨)

www.dawateislami.net

येह उस शाहे ख़ुश ख़िसाल, महबूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक ह़ाल है, जिस के हाथों में दोनों जहां की चाबियां दे दी गईं। मेरे मक्की म-दनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़क्र इख़्तियारी था। वरना **ख़ुदा की क़सम !** जिस को जो कुछ मिलता है वोह सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े ही में मिलता है और काएनात की हर हर शै को फ़ैज़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पहुंचता है। **ऐ काश !** हमें भी क़स्दन भूका रहने और भूक की शिद्दत के बाइ़स ब निय्यते सुन्नत कभी कभी अपने पेट पर पथ्थर बांधने की सआ़दत भी नसीब हो जाया करे।

मगर ख़याल रहे कि शादी शुदा ख़वातीन को शोहर की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ली रोज़े और खाने पर क़ुदरत होने के बा वुजूद इख़्तियारी त़ौर पर फ़ाक़े इख़्तियार करने की इजाज़त नहीं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾15﴿...... मिस्वाक रब तआ़ला की रिज़ा का बाइ़स

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मिस्वाक के दीनी व दुन्यवी बे शुमार फ़वाइद हैं, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का फ़रमान है : "मिस्वाक में मुंह की पाकीज़गी, **रब** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा, मलाएका की ख़ुशी है और येह सुन्नत भी है, इस के ज़रीए़ नेकियों में इज़ाफ़ा होता और क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा (के मज़्बूत़ होने) में मदद मिलती है, बल्ग़म को ख़त्म करती और आंखों को जिला बख़्शती है, दांतों की बीमारियां ख़त्म करती, मसूड़ों को मज़्बूत़ करती और ज़बान में फ़साह़त पैदा करती है।" (اَلْبَصَائِرُ وَالذَّخَائِر، الجزء الثانی، ص١٧٦، الرقم:٥٦٣)

"मिस्वाक" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के मु-तअ़ल्लिक़ 5 अह़ादीसे मुबा-रका

(1)..... पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है : "मुझे मिस्वाक का (इतना) ह़ुक्म दिया गया ह़त्ता कि मुझे अन्देशा हुवा कि **येह मुझ पर फ़र्ज़ हो जाएगी।**" (المعجم الكبير، باب الواو، ابوالمليح بن أسامة الهذلى عن واثلة،٩/١٧٧، الحديث:١٧٦٥٠)

(2)..... रसूलों के सालार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : **"अगर मुझे ख़ौफ़ न होता कि मैं मुअमिनीन को मशक़्क़त में डाल रहा हूं तो उन्हें नमाज़े इ़शा को ताख़ीर से अदा करने और हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने का ह़ुक्म देता।"**

(سنن ابی داؤد، کتاب الطهارة، باب السواك، ص٢٣، الحديث:٤٦)

www.dawateislami.net

(3)..... रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : "वुज़ू आधा ईमान है और मिस्वाक आधा वुज़ू है, अगर मुझे ख़ौफ़ न होता कि मैं अपनी उम्मत को मशक़्क़त में डाल रहा हूं तो इन्हें हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने का हुक्म देता। मिस्वाक कर के दो रक्अ़तें पढ़ना मिस्वाक किये बिग़ैर पढ़ी गई **70** रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है।"

(مُصَنَّف اِبْنِ اَبِیْ شَیْبَہ، کتاب الطھارات، ما ذکر فی السواک، ۱/۱۹۷، الحدیث:۲۲)

(4)..... मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें मिस्वाक का हुक्म फ़रमाते रहे ह़त्ता कि हम ने गुमान किया कि अ़न्क़रीब मिस्वाक (की फ़र्ज़िय्यत) के मु-तअ़ल्लिक़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर आयत नाज़िल हो जाएगी। (المرجع السابق، ص۱۹۸، الحدیث:۲۸)

(5)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "जब तुम में से कोई रात को उठे तो उसे चाहिये कि मिस्वाक कर ले क्यूं कि जब कोई बन्दा रात को उठ कर मिस्वाक करता है फिर वुज़ू कर के नमाज़ के लिये खड़ा हो जाता है तो एक फ़िरिश्ता आता है ह़त्ता कि उस के पीछे खड़ा हो कर क़ुरआने पाक की तिलावत सुनता है, फ़िरिश्ता उस आदमी के क़रीब होता रहता है ह़त्ता कि अपना मुंह उस के मुंह पर रख देता है और बन्दा जो आयत भी तिलावत करता है वोह फ़िरिश्ते के पेट में दाख़िल होती है।" (المرجع السابق، ص۱۹٦، الحدیث:۱۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मिस्वाक शरीफ़ की ब-र-कतों के क्या कहने ! इस में दीनी फ़वाइद के साथ साथ बे शुमार दुन्यवी फ़वाइद भी हैं, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **499** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"नमाज़ के अह़काम"** सफ़ह़ा **72** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : **"इस** (या'नी मिस्वाक शरीफ़) **में मु-तअ़द्दद कीमियावी अज्ज़ा हैं जो दांतों को हर त़रह़ की बीमारी से बचाते हैं।"**

मौत के सिवा हर बीमारी से शिफ़ा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि "मिस्वाक में साम (मौत) के इलावा हर बीमारी से शिफ़ा है।"

(الجامع الصغیر، حرف السین المحلی بأل، ص۲۹۷، الحدیث:۴۸۴۰)

www.dawateislami.net

औ़रतों के लिये मिस्वाक का हुक्म

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के बारे में मरवी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की मिस्वाक पानी में भिगोई रहती थी अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا नमाज़ या किसी और काम में मसरूफ़ न होतीं तो मिस्वाक पकड़ कर करतीं।

(مُصَنَّف اِبْنِ اَبِی شَیْبَۃ، کتاب الطہارات، ما ذکر فی السّواک، ۱/۱۹۷، الحدیث:۲۰)

इस्लामी बहनों के लिये मिस्वाक करने का हुक्म बयान करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان एक सुवाल के जवाब में फ़रमाते हैं : इन के लिये उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की सुन्नत है लेकिन अगर वोह न करें तो ह़रज नहीं। इन के दांत और मसूढ़े ब निस्बत मर्दों के कमज़ोर होते हैं, मिस्सी (या'नी एक क़िस्म का मन्जन) काफ़ी है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सए सिवुम, स. 357)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾16﴿...... सुन्नते फ़ज्र की फ़ज़ीलत

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इर्शाद फ़रमाया करती थीं : **''नमाज़े फ़ज्र की दो रक्अ़तों की मुह़ा-फ़ज़त करो कि इन में ख़ैर और बख़्शिशें हैं।''**

(مُصَنَّف اِبْنِ اَبِی شَیْبَۃ، کتاب صلٰوۃ التّطوع والامامۃ، فی رکعتی الفجر، ۲/۱۴۴، الحدیث:۶)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मज़्कूरा रिवायत में फ़ज्र की दो रक्अ़तों से मुराद सुन्नते फ़ज्र हैं, سُبۡحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सुन्नते फ़ज्र की फ़ज़ीलत के क्या कहने कि ख़ैरो भलाई और बख़्शिशों का मज्मूआ़ है, चुनान्चे एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिस के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे नफ़्अ़ अ़ता फ़रमाए। इर्शाद फ़रमाया : फ़ज्र की दो रक्अ़तों की पाबन्दी करो क्यूं कि इन में फ़ज़ीलत है। और एक रिवायत में है, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना कि फ़ज्र की नमाज़ से पहले दो रक्अ़तें (या'नी सुन्नते फ़ज्र) न छोड़ा करो क्यूं कि इन में बख़्शिश है।

(الترغیب والترھیب، کتاب النوافل، الترغیب فی المحافظۃ علٰی رکعتین۔۔۔الخ، ص۱۹۱، الحدیث:۲۔۳)

www.dawateislami.net

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "फ़ज्र की दो रक्अ़तें दुन्या और जो कुछ इस दुन्या में है, सब से बेहतर हैं।" और एक रिवायत में है कि **"येह दो रक्अ़तें मुझे सारी दुन्या से ज़ियादा मह़बूब हैं।"**

(صحیح مسلم، کتاب صلٰوۃ المسافرین وقصرھا، باب استحباب رکعتی سنۃ الفجر۔۔۔الخ، ص٢٦٤، الحدیث:٧٢٥)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी में हमें भी सुन्नते फ़ज्र पर मुह़ा-फ़ज़त इख़्तियार कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से बख़्शिश व मग़्फ़िरत का ह़क़दार बनना चाहिये।

आइये ! इस बारे में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अ़मल मुबारक मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नवाफ़िल में से किसी की इस क़दर मुह़ा-फ़ज़त न फ़रमाते जिस क़दर फ़ज्र की दो रक्अ़तों की फ़रमाते।

(صحیح البخاری، کتاب التھجد، باب تعاھد رکعتی الفجر۔۔۔الخ، ص٣٣٦، الحدیث:١١٦٩)

मज़्कूरा फ़रमाने आ़इशा में फ़ज्र की दो रक्अ़तों से मुराद सुन्नते फ़ज्र हैं लेकिन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इन को नवाफ़िल से ता'बीर किया है तो इस सिल्सिले में अ़र्ज़ है कि नवाफ़िल पर भी सुन्नत का इत़्लाक़ होता है। सदरुश्शरीअ़ह, **बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی "बहारे शरीअ़त" में फ़रमाते हैं : "नफ़्ल आ़म हैं कि सुन्नत पर भी इस का इत़्लाक़ आया है।"

(बहारे शरीअ़त, सुनन व नवाफ़िल का बयान, हिस्सए सिवुम, जि. 1, स. 663)

याद रखिये ! फ़ज्र के पहले की दो सुन्नतें **"सुन्नते मुअक्कदा"** हैं ह़त्ता कि बा'ज़ ने इन को वाजिब भी कहा है, **"फ़तावा शामी"** के ह़वाले से मज़ीद फ़रमाते हैं : सब सुन्नतों में क़वी तर सुन्नते फ़ज्र है, यहां तक कि बा'ज़ इस को वाजिब कहते हैं और इस की मशरूइय्यत का अगर कोई इन्कार करे तो अगर शुब्हतन या बराहे जह्ल हो तो ख़ौफ़े कुफ़्र है और अगर दानिस्ता बिला शुब्हा हो तो उस की तक्फ़ीर की जाएगी व लिहाज़ा येह सुन्नतें बिला उ़ज़्र न बैठ कर हो सकती हैं न सुवारी पर न चलती गाड़ी पर, इन का हुक्म इन बातों में बिल्कुल मिस्ले वित्र है। (المرجع السابق)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾17﴿...... शोहर के चेहरे का ग़ुबार रुख़्सार से साफ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बीवी के ज़िम्मे शोहर के हुक़ूक़ बे शुमार हैं ह़त्ता कि

www.dawateislami.net

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ औ़रतो ! अगर तुम अपने ऊपर अपने शोहरों के हुक़ूक़ जानतीं तो **तुम में से हर एक औ़रत अपने शोहर के चेहरे का ग़ुबार अपने रुख़्सार से साफ़ करती ।"**

(اَلْمُصَنَّف لِاِبْنِ اَبِیْ شَیْبَۃ، کتاب النکاح، ۳/۳۹۸، الحدیث:۸)

औ़रत के ज़िम्मे शोहर के हुक़ूक़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1010** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल" जिल्द 2**, सफ़ह़ा **184** पर शैख़ुल इस्लाम, शहाबुद्दीन **इमाम अह़मद बिन ह़जर** मक्की शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام इर्शाद फ़रमाते हैं : औ़रत पर वाजिब है कि ❁...... हमेशा अपने शोहर से ह़या करे। ❁...... उस के सामने निगाहें नीची रखे। ❁...... उस के हुक्म की इत़ाअ़त करे। ❁...... उस की गुफ़्त-गू के वक़्त ख़ामोश रहे। ❁...... उस की आमद और रवानगी पर खड़ी हो जाए। ❁...... सोते वक़्त अपना आप उसे पेश कर दे। ❁...... उस की अ़दम मौजू-दगी में उस की इ़ज़्ज़त और माल के मुआ़-मले में उस से ख़ियानत न करे। ❁...... उस को पसन्द आने वाली ख़ुश्बू लगाए। ❁...... मिस्वाक से अपना मुंह साफ़ रखे। ❁...... उस की मौजू-दगी में हमेशा सजी संवरी रहे और उस की अ़दम मौजू-दगी में बनाव सिंघार न करे। ❁...... उस के घर वालों और रिश्तेदारों की इ़ज़्ज़त करे और ❁...... उस की त़रफ़ से कम को भी ज़ियादा समझे।

मज़ीद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाली औ़रत को चाहिये कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और अपने शोहर की इत़ाअ़त की कोशिश करे और पूरी कोशिश कर के शोहर की रिज़ा ह़ासिल करे क्यूं कि वोही इस की जन्नत और दोज़ख़ है। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، الکبیرۃ:۲۸۰، ۲/۸٤)

चुनान्चे शफ़ीए़ रोज़े शुमार, बि इज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"जो औ़रत इस ह़ाल में मरी कि उस का शोहर उस से राज़ी था तो वोह जन्नत में जाएगी।"** (سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب حق الزوج علی المَرأۃ، ص۲۹۷، الحدیث:۱۸۵٤)

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ❁...... अपने शोहर की इत़ाअ़त करने वाली औ़रत के लिये हवा में परिन्दे, पानी में मछलियां, आस्मान में फ़िरिश्ते और चांद सूरज उस वक़्त तक इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं जब तक कि वोह अपने शोहर की इत़ाअ़त में रहती है। ❁...... जो औ़रत अपने शोहर की ना फ़रमानी करती है उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत होती है। ❁...... जो औ़रत अपने शोहर के चेहरे पर तेवरी चढ़ाने का

www.dawateislami.net

बाइ़स बनती है तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहती है यहां तक कि उसे हंसा कर राज़ी कर ले और ۞...... जो औ़रत अपने शोहर की इजाज़त के बिग़ैर अपने घर से निकलती है उस के वापस पलटने तक फ़िरिश्ते उस पर ला'नत भेजते रहते हैं। **(الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة: ٢٨٠، ٢/٨٤)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللّٰه اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾18﴿...... बात़िन की इस्लाह़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़ाहिर की इस्लाह़ के साथ साथ बात़िन की इस्लाह़ भी बेह़द ज़रूरी है, चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स लोगों को नाराज़ कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़ी रखेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (उस के और लोगों के माबैन मुआ़-मले में) उसे किफ़ायत फ़रमाएगा और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ कर के लोगों को खु़श करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को लोगों के सिपुर्द कर देगा।"

(صَحِیْح اِبْنِ حِبَّان، کتاب البر والاحسان، باب الصدق والامر بالمعروف......الخ، ذکر الاخبار عما یجب علی المرء من ارضاء اللّٰه......الخ، ص ١٩١، الحديث: ٢٧٧)

(एक रिवायत में येह भी है) और जो अपने बात़िन की इस्लाह़ करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के ज़ाहिर की इस्लाह़ फ़रमा देगा। **(اَلْمُصَنَّف لِاِبْنِ اَبِیْ شَیْبَة، کتاب الزهد، یحیٰی بن جعده، ٨/٢٢٧، الحديث: ٧)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ **56** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **"बेटे को नसीह़त"** सफ़ह़ा **49** पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی बात़िन की आरास्तगी की अहम्मिय्यत उजागर करते हुए फ़रमाते हैं : **अब मेरी आख़िरी बात ग़ौर से सुन ले ! इस में ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र कर और इस पर अ़मल कर !** यक़ीनन तेरी नजात और काम्याबी की सूरत बन जाएगी। अगर तुझे येह मा'लूम हो जाए कि बादशाहे वक़्त एक हफ़्ते के बा'द तुझ से मिलने आ रहा है तो मुझे मा'लूम है और मैं ख़ूब जानता हूं कि इस अ़र्से में जहां तेरा गुमान हो कि बादशाह की नज़र पड़ सकती है उस की इस्लाह़ व दुरुस्तगी में मश्ग़ूल और मसरूफ़ हो जाएगा म-सलन अपने कपड़ों

www.dawateislami.net

को साफ़ सुथरा रखेगा, अपने बदन की देखभाल और ज़ैबो ज़ीनत पर खु़सूसी तवज्जोह देगा, घर की इक इक चीज़ को साफ़ व आरास्ता करने की कोशिश करेगा। अब तू ख़ूब सोच और समझ और ग़ौरो फ़िक्र कर कि मैं ने किस जानिब इशारा किया है तू तो बड़ा समझदार और फ़हीम है और **अ़क्लमन्द के लिये तो इशारा ही काफ़ी है।** (ایھا الولد، ص۳۱)

चुनान्चे इरादे की दुरुस्ती पर ख़बरदार करते हुए रसूलों के ताजदार, ग़ैबों पर ख़बरदार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

"اِنَّ اللّٰہَ لَا یَنْظُرُ اِلٰی صُوَرِکُمْ وَاَمْوَالِکُمْ وَلٰکِنْ یَنْظُرُ اِلٰی اَعْمَالِکُمْ وَقُلُوْبِکُمْ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी शक्लो सूरत और तुम्हारे माल को नहीं देखता, वोह तुम्हारे आ'माल और तुम्हारे दिलों पर नज़र फ़रमाता है।"

(سُنَنِ اِبْنِ ماجہ، کتاب الزھد، باب القناعۃ، ص۶۷۴، الحدیث:۴۱۴۳)

ज़ाहिरो बातिन एक

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **43** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इमामे आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **की वसिय्यतें**" सफ़्ह़ा **14** पर इमामुल अइम्मा, सिराजुल उम्मह ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "तू जिस त़रह़ लोगों के सामने रहे उन की ग़ैर मौजू-दगी में भी इसी त़रह़ रहा करना क्यूं कि तेरा इ़ल्मी मुआ़-मला उस वक़्त तक सह़ीह़ नहीं हो सकता जब तक तू अपने ज़ाहिरो बातिन को एक न कर ले।"

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे बुज़ुर्गों का इस्लाहे बातिन का कैसा जज़्बा था **मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये !** चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम क़ादिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक रात क़ादिसिया शह्‌र के बासियों ने सुना, कोई कह रहा है कि "**ऐ क़ादिसिया वालो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एक वली ने अपने नफ़्स को "**दरिन्दों के जंगल**" में क़ैद कर दिया है, जाओ ! और उसे शह्‌र में ले आओ, ऐसा न हो कि दरिन्दे उसे कोई नुक़्सान पहुंचा दें।" येह ग़ैबी आवाज़ सुन कर तमाम शह्‌र वाले जंगल की त़रफ़ रवाना हो गए और मैं भी उन के साथ हो लिया, एक जगह पहुंच कर हम ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन नूरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक गढ़े में आराम फ़रमा रहे हैं, हम सब ने मिल कर उन्हें गढ़े से बाहर निकाला और (भरपूर इसरार कर के) शह्‌र में ले आए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझे श-रफ़े मेज़बानी अ़ता फ़रमाया और चन्द दिन मेरे घर मुक़ीम रहे।

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रवाना होने लगे तो मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से उस गढ़े में आराम करने का मक़्सद पूछा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जवाब दिया : "इस का सबब येह था कि

www.dawateislami.net

जब मैं सफ़र करता हुवा उस मक़ाम पर पहुंचा तो मेरा नफ़्स ख़ुशी से झूमने लगा और कहने लगा कि मैं जल्द ही शह्र में दाख़िल हो जाऊंगा, जहां बहुत से लोग मुझे जानने और पहचानने वाले हैं, वोह मेरी मेहमान नवाज़ी करेंगे और मुझे त़रह़ त़रह़ के लज़ीज़ खाने खिलाएंगे।" जब मैं ने अपने नफ़्स की येह ह़ालत देखी तो सख़्त अफ़्सुर्दा हुवा, चुनान्चे मैं ने इसे मुख़ात़ब कर के कहा : **"ऐ नफ़्स !** तू इस बात पर ख़ुश हो रहा है कि तुझे अच्छे अच्छे खाने मिलेंगे, आराम व सुकून ह़ासिल होगा, **रब तआला की क़सम !** मैं तुझे शह्र में नहीं ले कर जाऊंगा बल्कि तुझे यहीं क़ैद कर दूंगा और तेरी मौत भी इसी जगह वाक़ेअ़ होगी, तू कभी भी क़ादिसिया शह्र का नज़ारा नहीं कर सकेगा।" लिहाज़ा मैं ने नज़्र मान ली कि मैं शह्र में दाख़िल नहीं होउंगा और न ही अपने नफ़्स की ख़्वाहिश को पूरा करूंगा। (حکایات الصالحین، باب ریاضة النفس، ص۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

19...... नजात की राह

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ (پ۲۸، الطلاق:۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के लिये नजात की राह निकाल देगा।

इस आयत की तफ़्सीर में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا का फ़रमान है : (इस से मुराद येह है कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **इसे दुन्या के ग़मों और परेशानियों में काफ़ी है।** (دُرِّ مَنْثُوْر، سُوْرَةُ الطلاق، تحت الآية:۲، ۵۴۲/۱۴)

ख़ौफ़े ख़ुदा से आंसू बहाना

पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शख़्स ख़ौफ़े ख़ुदा से रोता है वोह हरगिज़ जहन्नम में नहीं जाएगा ह़त्ता कि दूध थन में वापस आ जाए। (سنن الترمذی، کتاب فضائل الجهاد، باب ما جاء فی فضل الغبار فی سبیل الله، ص۴۱۵، الحدیث:۱۶۳۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से एक आंसू बहाना मेरे नज़्दीक एक हज़ार दीनार स-दक़ा करने से ज़ियादा पसन्दीदा है। (شعب الایمان، باب فی الخوف من الله تعالی، ۵۰۲/۱، الحدیث:۸۴۲)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गुनाहों की कसरत और नेकियों की त़रफ़ रग़बत न होने का एक सबब ख़ौफ़े ख़ुदा की कमी भी है लिहाज़ा अपने दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करने की जिद्दो जुह्द जारी रखनी चाहिये ।

पारह **27**, **सू-रतुर्रह़मान** आयत नम्बर **46** में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿۴۶﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं ।

इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर बयान करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन मुअमिनीन से जन्नत का वा'दा फ़रमाया जो अपने **रब** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़े होने से डरे और ख़ाइफ़ (डरने वाला) वोह है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त बजा लाए और उस की ना फ़रमानी छोड़ दे ।

(تَفْسِیْرُ الطَّبَرِی، پ۲۷، سورۃ الرَّحمٰن، تحت الآیۃ:۴۶، ۶۰۲/۱۱)

सोने और चांदी की जन्नतें

इन दो जन्नतों के मु-तअ़ल्लिक़ साह़िबे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان ने दो अक़्वाल नक़्ल फ़रमाए हैं : ﴾1﴿...... जन्नते अ़दन और जन्नते नईम और ﴾2﴿...... येह भी कहा गया है कि एक जन्नत रब से डरने का सिला और एक शहवात तर्क करने का सिला ।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 27, सू-रतुर्रह़मान, तह़्तल आयह : 46, स. 984)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾20﴿...... आदमी गुनहगार कब होता है ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बात़िनी आफ़ात में से एक आफ़त ख़ुद पसन्दी भी है, ख़ुद पसन्दी ऐसा मरज़ है जो इन्सान को धोके में मुब्तला रखता है कि वोह अपने गुनाहों को भूल जाता है और बारगाहे इलाही में अपने आप को बहुत मुक़र्रब जानने लगता है ह़ालां कि ह़क़ीक़त से इस का कुछ वासित़ा नहीं होता, इस ह़वाले से उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हमारी तरबिय्यत फ़रमाई, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **301** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बह़रुद्दुमूअ़ बनाम आंसूओं का दरिया"** सफ़ह़ा **268** पर इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा गया : **"आदमी**

www.dawateislami.net

गुनहगार कब बनता है ? फ़रमाया : जब वोह ख़ुद को नेक समझने लगता है ।"

(بَحْرُ الدُّمُوْع، الفصل الحادی والثلاثون: صون الانسان من عثرات اللسان والعجب، ص١٩٨)

ख़ुद पसन्दी क्या है ?

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! कितने प्यारे अन्दाज़ में इबादत गुज़ारों के लिये नसीहत व तरबिय्यत का सामान फ़राहम किया जा रहा है कि इन्सान को कभी भी अपने आप को नेक ख़याल नहीं करना चाहिये क्या ख़बर जिन नेक आ'माल के सबब वोह अपने आप को नेक समझ रहा है वोह बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में मक़्बूल हैं भी या नहीं, इस फ़रमाने आ़लीशान में ख़ुद पसन्दी की मज़म्मत की गई है तो **आइये !** ख़ुद पसन्दी के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ जानने की कोशिश करते हैं, चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं कि किसी (दीनी व दुन्यवी) ने'मत के ज़वाल से मुत़्मइन होते हुए उस पर ख़ुश होना और उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इन्आ़मो इक्राम न जानना बल्कि अपना कमाल ख़याल करना उ़ज्ब (या'नी ख़ुद पसन्दी) है । (اِحْیَاءُ عُلُوْمِ الدِّیْن، کتاب ذم الکبر والعجب، بیان ذم العجب وآفاته، ٣/ ٤٠٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद पसन्दी की तबाह कारी बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "ख़ुद पसन्दी करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का मुन्तज़िर होता है ।"

(شعب الایمان، باب فی معالجة کل ذنب بالتوبة، فصل فی الطبع علی القلب، ٥/٤٥٣، الحدیث:٧٢٥٤)

दो चीज़ों में हलाकत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "हलाकत दो चीज़ों में है : (1)...... मायूसी (2)...... ख़ुद पसन्दी ।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस फ़रमान को नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : "आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इन दोनों आफ़तों को इस लिये जम्अ़ फ़रमाया कि मायूस आदमी अपनी मायूसी की वज्ह से सआ़दत के ह़ुसूल से मह़रूम रहता है जब कि ख़ुद पसन्द आदमी येह गुमान करते हुए सआ़दत के ह़ुसूल की कोशिश नहीं करता कि वोह इसे पा चुका है ।"

(بَحْرُ الدُّمُوْع، الفصل الحادی والثلاثون، صون الانسان من عثرات اللسان والعجب، ص١٩٨)

www.dawateislami.net

ख़ुद पसन्दी की आफ़ात

हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ख़ुद पसन्दी की आफ़ात बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "ख़ुद पसन्दी की आफ़ात कसीर हैं, ख़ुद पसन्दी इन्सान को तकब्बुर की त़रफ़ ले जाती है क्यूं कि येह तकब्बुर के अस्बाब में से एक सबब है लिहाज़ा ख़ुद पसन्दी से तकब्बुर पैदा होता है और तकब्बुर की कसीर आफ़ात हैं जो कि पोशीदा नहीं, येह तो मुआ-मला बन्दों के साथ है और **अल्लाह तआला** के साथ इस त़रह़ है कि ख़ुद पसन्दी गुनाहों को भूलने की त़रफ़ ले जाती है कि बा'ज़ गुनाहों को तो सिरे से ही भुला देती है और इन्सान उन को तलाश नहीं करता क्यूं कि वोह अपने गुमान में ख़ुद को उन्हें तलाश करने से बे परवाह जानता है इस त़रह़ वोह उन को भूल जाता है और जो गुनाह याद भी होते हैं वोह उन्हें छोटे जानते हुए उन की तलाफ़ी व तदारुक करने की कोशिश नहीं करता बल्कि वोह समझता है कि इन से इस की बख़्शिश कर दी गई है। जहां तक इ़बादात और आ'माल का तअ़ल्लुक़ है तो वोह इन्हें बहुत अ़ज़ीम समझते हुए इन पर फ़ख़्र करता और अपने फ़े'ल के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर एह़सान जतलाता है और इस पर जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत है कि इसे तौफ़ीक़ से नवाज़ा और इ़बादत करने की क़ुदरत अ़त़ा फ़रमाई, इन्हें भूल जाता है। फिर जब इन्सान ख़ुद पसन्दी का शिकार हो जाता है तो उस की आफ़ात से वोह अन्धा हो जाता है और जो इन्सान आ'माल की आफ़ात को तलाश नहीं करता उस की अक्सर सअ़्य (कोशिश) अकारत (बेकार) जाती है क्यूं कि आ'माले ज़ाहिरा जब ऊ़यूब व नक़ाइस से पाको साफ़ और ख़ालिस न हों तो उन का नफ़्अ़ बहुत कम होता है।"

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم الکبر والعجب، بیان آفة العجب، ۴۵۳/۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! ख़ुद पसन्दी और फ़ख़्रो ग़ुरूर में मुब्तला एक इस्राईली इ़बादत गुज़ार का इ़ब्रत नाक वाक़िआ़ मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

इस्राईली इ़बादत गुज़ार और एक गुनहगार

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **97** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**तकब्बुर**" सफ़ह़ा **53** पर है : बनी इस्राईल का एक शख़्स जो बहुत गुनहगार था एक मर्तबा बहुत बड़े आ़बिद (या'नी इ़बादत गुज़ार) के पास से गुज़रा जिस के सर पर बादल साया फ़िगन हुवा करते थे। उस गुनहगार शख़्स ने अपने दिल में सोचा : "मैं बनी इस्राईल का इन्तिहाई गुनहगार और येह बहुत बड़े इ़बादत गुज़ार हैं, अगर मैं इन के पास बैठूं तो उम्मीद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ पर भी रह़्म फ़रमा दे।" येह सोच कर वोह उस आ़बिद के पास बैठ गया। आ़बिद को उस का बैठना बहुत ना गवार गुज़रा, उस ने दिल में कहा : "**कहां मुझ जैसा**

www.dawateislami.net

इबादत गुज़ार और कहां येह परले द-रजे का गुनहगार ! येह मेरे पास कैसे बैठ सकता है !" चुनान्चे उस ने बड़ी ह़क़ारत से उस शख़्स को मुख़ात़ब किया और कहा : **"यहां से उठ जाओ !"** इस पर रब तआ़ला ने उस ज़माने के नबी عَلَیْہِ السَّلَام पर वह़्य भेजी : "उन दोनों से फ़रमाइये कि वोह अपने अ़मल नए सिरे से शुरूअ़ करें, मैं ने उस गुनहगार को (उस के ह़ुस्ने ज़न के सबब) बख़्श दिया और इबादत गुज़ार के अ़मल (उस के तकब्बुर के बाइ़स) ज़ाएअ़ कर दिये ।"

(احیاء علوم الدّین، کتاب ذم الکبروالعجب ، بیان مابه التکبر، ۳/۴۲۸)

गर तकब्बुर हो दिल में ज़र्रा भर
सुन लो ! जन्नत ह़राम होती है

(वसाइले बख़्शिश, स. 270)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! जब एक गुनहगार शख़्स ने ख़ौफ़े ख़ुदा को अपने दिल में बसाया और आ़जिज़ी व इन्किसारी को अपनाया तो उस की बख़्शिश कर दी गई जब कि ब ज़ाहिर नेक व परहेज़ गार मगर दर ह़क़ीक़त **मु-तकब्बिर** शख़्स की नेकियां बरबाद हो गईं । बा'ज़ इस्लामी बहनें इबादत गुज़ार होने के ज़ो'म में ख़ुद को **"बड़ी पहुंची हुई"** समझने लगती और दूसरों को गुनाहगार क़रार दे कर हर वक़्त उन की ऐ़बजूई में मुब्तला रहती हैं । हरगिज़ हरगिज़ ख़ुद को नेक व पारसा और नजात पाने वाली और दूसरों को गुनाहगार व बदकार और तबाहो बरबाद होने वाली न समझें, हमेशा रब तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर से डरना चाहिये और नेक आ'माल करते वक़्त इख़्लास की भीक मांगनी चाहिये ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《21, 22》...... ग़-ल-बए ख़ौफ़े ख़ुदा से मा'मूर 5 फ़रामीने आ़इशा

(1)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ग़-ल-बए ख़ौफ़े ख़ुदा के वक़्त फ़रमाया : **काश !** मैं दरख़्त होती (2)...... **काश !** मैं (बजाए इन्सान के) पथ्थर होती (3)...... **काश !** मैं मिट्टी का एक ढेला होती (4)...... किसी मौक़अ़ पर एक दरख़्त की

www.dawateislami.net

त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : **काश !** मैं इस दरख़्त का पत्ता होती (5)...... **काश !** मैं ज़मीन के पौदों में से एक पौदा होती और कोई क़ाबिले ज़िक्र शै न होती।

(الطبقات الکبرٰی لابن سعد، ذکر ازواج رسول اللہ، ۱۰/۷۴۔۷۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان ने अपने बेटे को नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : **"ऐ मेरे बेटे !** यक़ीनन दुन्या एक गहरा समुन्दर है और इस में बहुत सारे लोग ग़र्क़ हो चुके हैं पस इस गहरे समुन्दर में नजात के लिये तेरा सफ़ीना ख़ौफ़े ख़ुदा होना चाहिये।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह नसीह़त भी फ़रमाई : **"ऐ मेरे बेटे !** दुन्या को आख़िरत के इवज़ बेच डाल, दोनों से नफ़्अ़ पाएगा और आख़िरत को दुन्या के बदले मत बेच वरना दोनों जहां में ख़सारा पाएगा।" **(الزھد وقصر الامل، ص ٦١)**

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ौफ़े ख़ुदा जितना ज़ियादा होता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी वाले कामों से बचने का जज़्बा भी उतना ही ज़ियादा होता है, **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : ख़ौफ़े ख़ुदा का कम अज़ कम द-रजा जिस का असर आ'माल पर ज़ाहिर होता है, येह है कि वोह मम्नूआ़त से रोक दे और मम्नूआ़त से रोकने वाली येह रुकावट वरअ़ (परहेज़ गारी) कहलाती है।

(फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम, ख़ौफ़ का बयान, फ़स्ल : ह़क़ीक़ते ख़ौफ़, स. 149)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

23...... गुमनामी की ख़्वाहिश

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : **"ऐ काश ! मैं गुमनाम होती।"** **(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالٰی، ۱/۴۸۶، الحدیث:۷۹۱)**

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़ौजए सय्यिदुल मुर-सलीन, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का मज़्कूरा फ़रमान इन की आ़जिज़ी पर दलालत करता और हमें नसीह़त का सामान बहम पहुंचाता है। अमीरुल मुअमिनीन, ख़ली-फ़तुल मुस्लिमीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बेटी और सय्यिदुल मुर-सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ौजा हो कर और क़ुरआने पाक की आयाते त़य्यिबात से ता'रीफ़ो तौसीफ़ पा कर चहार दांगे आ़लम में अ़ज़ीमुश्शान शोहरत पाने वाली शख़्सिय्यते वाला इ़ज़्ज़त की क़ल्बी ख़्वाहिश येह है कि **काश !** मैं भूले बिसरे और गुमनाम लोगों में से हो जाऊं। येह है आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की आ़जिज़ी जिस में हमारे लिये दर्स है कि दिल का इत़्मीनान ख़ुद को

www.dawateislami.net

गुमनाम रखने में होना चाहिये, इस के बा वुजूद अगर **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ शोहरत की बुलन्दियां अ़त़ा फ़रमाए तो येह उस की करम नवाज़ी है, जैसा कि

शोहरत की ख़्वाहिश बुरी और अगर ख़ुद बख़ुद मिल जाए तो फ़ज़्ले रब है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : शोहरत त़लब करना बुरा है, **हां !** अगर बन्दे की त़रफ़ से किसी **कोशिश व ख़्वाहिश के बिग़ैर मह़ज़ अ़त़ाए इलाही के त़ौर पर शोहरत ह़ासिल हो, तो येह बुरा नहीं,** मगर कमज़ोर लोगों को इस में भी ख़त़रा है और जिन की ईमानी ह़ालत मज़्बूत़ होती है वोह इस ख़त़रे से बाहर हैं।

(احياء العلوم، كتاب ذم الجاه والرياء، بيان فضيلة الخمول، ٣/٣٤٢)

मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने किसी बन्दे को बिला त़लब व ख़्वाहिश दीन में शोहरत अ़त़ा फ़रमा दे (तो ऐसी शोहरत मज़्मूम नहीं), जैसे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ख़ु-लफ़ाए राशिदीन رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن और अक्सर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को शोहरत अ़त़ा फ़रमाई।

(الاربعين فى أصولِ الدِّين، اصل السادس فى الرعونة وحب الجاه، ص١٤٤)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى के ज़िक्र कर्दा फ़रमान से पता चला कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कामिल व मुख़्लिस बन्दे हुब्बे जाह के मरज़ से पाक होते हैं, येह शोहरत त़लब नहीं करते और ऐसे बन्दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बहुत प्यारे होते हैं, जैसा कि

गुमनामी के त़ालिब, मह़बूबाने ख़ुदा

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى **"मिरआतुल मनाजीह़"** में फ़रमाते हैं : जिस मुसल्मान में **3** सिफ़तें हों वोह ख़ुदा तआ़ला को बड़ा प्यारा है : (1)...... मुत्तक़ी हो या'नी गुनाहों से बचता हो और **अल्लाह** रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلِه وسلَّم) के अह़काम पर अ़मल करता हो। (2)...... ग़नी या'नी लोगों से बे परवाह हो। ख़याल रहे कि **अल्लाह तआ़ला** मुत्तक़ी बन्दे को लोगों से बे परवाही नसीब फ़रमाता है, जो उस के दरवाज़े पर झुका रहे उसे दूसरे दरवाज़ों पर जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

वोह एक सज्दा जिसे तू गिरां समझता है
हज़ार सज्दों से देता है आदमी को नजात

(3)...... ख़फ़ी या'नी लोगों में छुपा हुवा या'नी वोह लोगों में अपनी शोहरत नहीं चाहता, हर नेकी छुप कर करता है, ख़ुद भी गुमनाम रहने की कोशिश करता है कि इसी में आ़फ़िय्यत व आराम है।

(مرآة المناجيح، كتاب الرقاق، باب استحباب المال والعمر للطاعة، ٧/٩٦)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन, बिन्ते अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की सीरते त़य्यिबा को मश्अ़ले राह बनाते हुए हमें भी खु़द को गुमनाम रखने की कोशिश और ख़्वाहिश करनी चाहिये कि ब निय्यते रिज़ाए इलाही इस कोशिश व ख़्वाहिश में अज्रो सवाब और आ़फ़िय्यत है, मुख़्तलिफ़ ह़ीले बहानों से खु़द को नुमायां करने वालियां और किसी तक़रीब या इज्तिमाअ़ में खु़द को बना संवार कर दूसरी इस्लामी बहनों से ता'रीफ़ की ख़्वाहां अपनी निय्यत की इस्लाह़ फ़रमा लें और जिन इस्लामी बहनों को माईक पर आने या बड़े इज्तिमाआ़त में दर्सो बयान करने का मौक़अ़ नहीं मिलता वोह दिल छोटा करने की बजाए न पूछे जाने को ही ग़नीमत जानें और गुमनाम रहने का ज़ेह्न बनाएं कि हमारी अम्मां मोह़-त-रमा ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का येही ज़ेह्न था।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़सावते क़ल्बी के अस्बाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गुनाहों से इज्तिनाब और नेकियां करने का ज़ेह्न न बनने का एक बहुत बड़ा सबब क़सावते क़ल्बी (दिल का सख़्त होना) भी है, क़सावते क़ल्बी (दिल सख़्त होने) के कई अस्बाब हैं इन में से एक सबब गुनाह करना भी है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे खु़श ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा जब एक गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता लगा दिया जाता है फिर अगर वोह उसे छोड़ दे और तौबा व इस्तिग़फ़ार करे तो उस का दिल चमका दिया जाता है और अगर वोह मज़ीद गुनाह करे तो उस सियाही में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है यहां तक कि वोह सियाही उस के दिल पर छा जाती है येह वोही ज़ंग है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में यूं ज़िक्र फ़रमाया है :

كَلَّا بَلْ سَكْتَةٌ رَانَ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾

(پ۳۰، المطففین: ۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।

(جَامِعُ التِّرْمِذِی، کتاب تفسیر القران، باب ومن سورۃ ویل للمطففین، ص۷۶۹، الحدیث:۳۳۳۴)

जी चाहता है फूट के रोऊं तेरे ग़म में
सरकार ! मगर दिल की क़सावत नहीं जाती

(वसाइले बख़्शिश, स. 243)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "बन्दा जब गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता लगा दिया जाता है और फिर जब दोबारा गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक और सियाह नुक्ता लगा दिया जाता है यहां तक कि उस का सारा दिल सियाह हो जाता है।"

सलफ़ सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का येह क़ौल भी इस की ताईद करता है कि "गुनाह कुफ़्र के क़ासिद हैं या'नी इस ए'तिबार से कि येह दिल में सियाही पैदा कर के इसे इस त़रह़ ढांप लेते हैं कि फिर वोह कभी किसी भलाई को क़बूल नहीं करता, उस वक़्त वोह सख़्त हो जाता है और उस से हर रह़मत व मेह्रबानी और ख़ौफ़ निकल जाता है, फिर वोह शख़्स जो चाहता है कर गुज़रता है और जिसे पसन्द करता है उस पर अ़मल करता है, नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में शैत़ान को अपना वली बना लेता है तो वोह शैत़ान उसे गुमराह करता, वर-ग़लाता, झूटी उम्मीदें दिलाता और जिस क़दर मुम्किन हो उस से कुफ़्र से कम किसी बात पर राज़ी नहीं होता।"

(الزواجر عن اقتراف الكبائر، مقدمة المؤلف، خاتمه، ۲۷/۱)

दिल सख़्त होने का एक सबब फ़ुज़ूल गोई भी है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने ह़वारियों को नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ लोगो !** तुम फ़ुज़ूल गोई से बचते रहो, कभी भी **ज़िक्रुल्लाह** के इ़लावा अपनी ज़बान से कोई लफ़्ज़ न निकालो, वरना तुम्हारे दिल सख़्त हो जाएंगे, अगर्चे दिल नर्म होते हैं (लेकिन फ़ुज़ूल गोई इन्हें सख़्त कर देती है) और सख़्त दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मह़रूम होता है (या'नी अगर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के उम्मीद वार हो तो अपने दिलों को सख़्ती से बचाओ)।" **(عُيُونُ الحِكايات، ۱۱۹)**

दिल सख़्त होने का एक सबब पेट भर कर खाना खाना है जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1548** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **708** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो पेट भर कर खाने का आ़दी हो जाता है उस के बदन पर गोश्त बढ़ जाता है और जिस के बदन पर गोश्त बढ़ जाता है वोह शह्वत परस्त हो जाता (उस की शह्वत बढ़ जाती) है और जो शह्वत परस्त हो जाता है उस के गुनाह बढ़ जाते हैं और जिस के गुनाह बढ़ जाते हैं उस का दिल सख़्त हो जाता है और जिस का दिल सख़्त हो जाता है वोह दुन्या की आफ़तों और रंगीनियों में ग़र्क़ हो जाता है। **(اَلْمُنَبِّهات لِلْعَسْقَلَانی، باب الخماسی، ص۴۸)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "राहे आख़िरत पर गामज़न बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की आदत थी कि वोह हमेशा सालन नहीं खाते थे बल्कि वोह ख़्वाहिशाते नफ़्स की तक्मील से बचते थे क्यूं कि **इन्सान अगर ह़स्बे ख़्वाहिश लज़ीज़ चीजें खाता रहे तो इस से उस के नफ़्स में अकड़** (या'नी मग़रूरी) **और दिल में सख़्ती पैदा होती है,** नीज़ वोह दुन्या की लज़ीज़ चीज़ों से इस क़दर मानूस हो जाता है कि लज़ाइज़े दुन्या की महब्बत उस के दिल में घर कर जाती है और वोह रब्बे काएनात جَلَّ جَلَالُهٗ की मुलाक़ात और उस की बारगाहे आली में हाज़िरी को भूल जाता है, उस के हक़ में दुन्या जन्नत और मौत क़ैदख़ाना बन जाती है। और जब वोह अपने नफ़्स पर सख़्ती डाले और उस को लज़्ज़तों से महरूम रखे तो दुन्या उस के लिये क़ैदख़ाना बन जाती और तंग हो जाती है तो उस का नफ़्स उस क़ैदख़ाने और तंगी से आज़ादी चाहता है और मौत ही उस की आज़ादी है। हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुआज़ राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़रमान में इसी बात की तरफ़ इशारा है, चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "**ऐ सिद्दीक़ीन के गुरौह !** जन्नत का वलीमा खाने के लिये अपने आप को भूका रखो क्यूं कि नफ़्स को जिस क़दर भूका रखा जाए उसी क़दर खाने की ख़्वाहिश बढ़ती है।" (या'नी जब शिद्दत से भूक लगी होती है उस वक़्त खाना खाने में ज़ियादा लुत्फ़ आता है, इस का तजरिबा उ़मूमन हर रोज़ादार को होता है, लिहाज़ा दुन्या में खूब भूके रहो ताकि जन्नत की आ'ला ने'मतों से खूब लज़्ज़त याब हो सको) (احياء العلوم، كتاب كسر الشهوتين، بيان طريق الرياضة فى كسر شهوة البطن، ١١٤/٣)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾24, 25﴿...... लोगों की मज़म्मत की वज्ह

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ **853** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" जिल्द अव्वल सफ़हा **66** पर शैख़ुल इस्लाम, शहाबुद्दीन इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى हदीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : **उम्मुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को मक्तूब लिखा : "**जब बन्दा अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ना फ़रमानी का कोई अ़मल करता है तो उस की ता'रीफ़ करने वाले लोग उस की मज़म्मत करने लगते हैं।**" (كتاب الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد عائشة رضى الله عنها، ص، ١٣٦، الحديث: ٩١٧)

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक ख़त़ में हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मुख़्तसर नसीहत करने को कहा तो हज़रते सय्यि-दतुना

www.dawateislami.net

आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہا ने **हज़रते** सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को ख़त़ लिखा, **سَلَامٌ عَلَیْکَ اَمَّا بَعْدُ** मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना है कि ''जो शख़्स इन्सानों की नाराज़ी के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लोगों की नाराज़ी से महफ़ूज़ रखेगा और जो ख़ुदा को नाराज़ कर के लोगों की रिज़ा का त़लब गार हो ख़ुदा तआला उसे लोगों के हाथ सोंप देगा।'' **(سُنَنُ التِّرْمِذِی، کتاب الزھد ۶۱، باب منه، ص۵۷۳، الحدیث:۲۴۱۴)**

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़ौजए सय्यिदुल मुर–सलीन उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि–दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہا ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ के नसीह़त त़लब करने पर सय्यिदुल मुर–सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़दीसे मुबारक से नसीह़त फ़रमाई कि जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा को पेशे नज़र रखे और लोगों की नाराज़ी की परवाह न करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे लोगों की नाराज़ी से बचाएगा और जो शख़्स लोगों की ख़ुशनूदी के लिये ह़राम काम करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की परवाह न करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उन्ही लोगों के सिपुर्द कर देगा फिर वोही लोग उसे हलाक या ज़लीलो ख़्वार कर देंगे जिन्हें ख़ुश करने के लिये उस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ कर लिया था लिहाज़ा बन्दों को राज़ी रखने के लिये रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ कर लेना कहीं की अ़क़्ल मन्दी नहीं बल्कि सरासर ह़माक़त है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी इत़ाअ़त और अच्छी बातों में दूसरों की मुवा–फ़क़त की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और अपनी ना फ़रमानी वाले कामों से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जो कोई रब को करते हैं नाराज़
उन से रह़मत बई़द होती है

(वसाइले बख़्शिश, स. 571)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾26﴿ क़सावते क़ल्बी कैसे दूर हो ?

मरवी है कि एक औ़रत ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि–दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہا से क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) की शिकायत की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہا ने इर्शाद फ़रमाया : **''मौत को कसरत से याद किया कर तेरा दिल नर्म हो जाएगा।''** जब उस औ़रत ने ऐसा किया तो उस का दिल नर्म हो गया पस उस ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि–दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہا का शुक्रिया अदा किया।

(اَلرَّوْضُ الْفَائِق، المجلس الثالث فی ذکر الموت وزیارۃ القبور......الخ، ص۲۳)

www.dawateislami.net

क़सावते क़ल्बी दूर करने का एक और नुस्ख़ा

एक शख़्स ने दरबारे रिसालत में अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि यतीम के सर पर हाथ फेरो और मिस्कीन को खाना खिलाओ।
(مسند امام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، ٤/١١٦، الحديث:٧٧٨٧)

ऐ हमारे पाक परवर्द गार ! हमारे दिलों की सख़्ती को दूर कर के अपनी याद से मा'मूर फ़रमा, फ़ुज़ूल गोई और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की इत्तिबाअ़ और हर त़रह़ के गुनाह से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा और हर वक़्त अपना ज़िक्र करने वाली ज़बान अ़त़ा फ़रमा।
اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

हो गया क़ल्ब हाए सियाह लुत़्फ़ नूरे ख़ुदा कीजिये
क़ल्ब पथ्थर से भी सख़्त है इस को नरमी अ़त़ा कीजिये
जगमगा दीजे क़ल्बे सियह लुत़्फ़ बदरुद्दुजा कीजिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 232)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मौत की याद दिल पर गुनाहों की वज्ह से चढ़े ज़ंग को दूर करती है, मौत की याद गुनाहों से तवज्जोह हटाती और ग़ाफ़िल कुन आसाइशों को बे लज़्ज़त कर देती है, **मौत** की याद जहां दिल की सफ़ाई और नरमी का सबब है वहीं येह अ़मल बन्दे के लिये दुन्या व आख़िरत में इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई का सबब भी है, जैसा कि

﴾27﴿ लै-लतुल क़द्र की दुआ़

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इस रात के आ'माल के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाती हैं कि अगर मैं जान लेती कि **लै-लतुल क़द्र** कौन सी रात है तो उस शब मेरी दुआ़ अक्सर येह होती : **"أَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ"** या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से अ़फ़्वो आ़फ़िय्यत का सुवाल करती हूं।" (مُصَنَّف اِبنِ اَبِی شَیْبَة، کتاب الدُّعاء باب الدعاء بالعافية، ٢٧/٧، الحديث:٨)

शबे क़द्र इन्तिहाई ब-र-कतों वाली शब है इस शब फ़िरिश्ते रजिस्टरों में आयिन्दा साल होने वाले मुआ़-मलात लिखते हैं जैसा कि **"तफ़्सीरे सावी"** में है : **"اَیْ اِظْهَارُهَا فِیْ دَوَاوِیْنِ الْمَلَاءِ الْاَعْلٰی"** या'नी इन (उमूरे तक़्दीर) को मुक़र्रब फ़िरिश्तों के रजिस्टरों में ज़ाहिर कर दिया जाता है।"
(تفسير الصاوى، پ٣٠، القدر، تحت الآية:١، ٦/٢٠٦)

www.dawateislami.net

"लै-लतुल क़द्र" कहने की वुजूहात

इस रात को **लै-लतुल क़द्र** कहने की वुजूहात बयान करते हुए मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इर्शाद फ़रमाते हैं : इस शब को **लै-लतुल क़द्र** चन्द वुजूह से कहते हैं :

(1).... इस में साल आयिन्दा के उमूर मुक़र्रर कर के मलाएका के सिपुर्द कर दिये जाते हैं। **(2)**.... इस में क़द्र वाली चीज़ या'नी कुरआन नाज़िल हुवा। **(3)**.... जो इ़बादत इस में की जावे उस की क़द्र है। **(4)**.... क़द्र ब मा'ना तंगी या'नी मलाएका इस रात में इस क़दर आते हैं कि ज़मीन तंग हो जाती है। इन वुजूह से इसे शबे क़द्र या'नी क़द्र वाली रात कहते हैं।

(मवाइज़े नईमिय्या, स. 62)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शबे क़द्र कौन सी रात है यक़ीनी त़ौर पर नहीं मा'लूम, एक बार मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बताने ही वाले थे कि शबे क़द्र कौन सी रात है कि दो मुसल्मानों का बाहम लड़ना मानेअ़ हो गया और हमेशा हमेशा के लिये शबे क़द्र की पहचान उठा ली गई। अह़ादीसे मुबा-रका में इस की ता'यीन के लिये चन्द मख़्सूस अ़लामात और अय्याम बयान किये गए हैं। हमें चाहिये कि हर रात और ख़ुसूसन वोह रातें जिन के बारे में शबे क़द्र होने का गुमान है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में गुज़ारें और बारगाहे इलाही में रो रो कर अपने गुनाहों की मग़फ़िरत के लिये दुआएं मांगें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की मज़्कूरा बाला रिवायत में अ़फ़्वो आ़फ़िय्यत का ज़िक्र है, शारेहे़ मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : **आ़फ़िय्यत** के मा'ना हैं : "**आफ़ात से सलामती व ह़िफ़ाज़त।**" आफ़ात में दुन्यावी आफ़तें भी दाख़िल हैं जैसे ना गहानी मुसीबतें बुरी बीमारियां वग़ैरा। उख़्रवी आफ़तें भी शामिल हैं जैसे गुनाह में मश्ग़ूलिय्यत, नेकियों से दूरी, बे सब्री, ना शुक्री वग़ैरा। बा'ज़ ने फ़रमाया कि **आ़फ़िय्यत** गुनाहों से ह़िफ़ाज़त है और आख़िरत की **आ़फ़िय्यत** अ़ज़ाब से बचा लेना है।

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! कैसी प्यारी दुआ़ है इन्सान पर तीन क़िस्म की ही मुसीबतें आती हैं : जानी, माली और इ़याली फिर येह तीनों मुसीबतें दो त़रह़ की होती हैं दुन्यावी और दीनी। गोया कुल **6** क़िस्म की आफ़तें हुईं, इन छ[6] क़िस्म की मुसीबतों में से एक छोटे से जुम्ले में अम्न मांग ली। ख़याल रहे कि गुनाह से बचा लेना **आ़फ़िय्यत** है और गुनाह सरज़द हो चुकने के बा'द

www.dawateislami.net

मुआफ़ कर देना अफ़्व, इस प्यारे महबूब ने हम को सब कुछ सिखा दिया **अल्लाह तआला** हमें सीखने की तौफ़ीक़ दे । (مراٰۃ المناجیح، کتاب الدعوات، باب مایقول عند الصباح والمساء والمنام، الفصل الاوّل، ۴/۱۶ ملتقطاً)

ऐ काश ! अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ हमारे दिलों से दुन्या की ज़लील दौलत की ह़िर्स मिटा दे और हमें अपने अस्लाफ़ के नक़्शे पा को दलीले राह बनाते हुए सलामतिये ईमान की फ़िक्र करने और आख़िरत की तय्यारी में मसरूफ़ रहने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्हमत फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿28﴾ पानी की ने'मत पर शुक्र अदा करना

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : **"जो बन्दा ख़ालिस (ठन्डा और मीठा) पानी पिये और वोह बिग़ैर तक्लीफ़ के (जिस्म में) दाख़िल हो और बिग़ैर किसी तक्लीफ़ के बाहर भी निकल आए तो उस पर शुक्र लाज़िम है ।"** (تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، ابراهیم بن عبد الملک، ۷/۴۲، الرقم:۴۴۵)

पूरी सल्तनत की क़ीमत एक गिलास पानी......!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन عَزَّوَجَلَّ की बे शुमार ने'मतें हर लम्ह़ा हर घड़ी हम पर तेज़ तर बारिशों से भी ज़ियादा तेज़ी के साथ बरस रही हैं, एक पानी की ने'मत को ही ले लिया जाए तो इस में ही ला ता'दाद ने'मतें पोशीदा हैं, सरे दस्त सिर्फ़ पानी पीने के ह़वाले से ग़ौर कीजिये तो इस में पीने से ले कर जिस्म से ख़ारिज होने तक कई एक ने'मतें हैं यक़ीनन अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न चाहता तो न पानी हमारे ह़ल्क़ से नीचे उतरता न जिस्म से ख़ारिज होता, एक मर्तबा ह़ज़रते इब्ने सिमाक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد के पास तशरीफ़ ले गए इसी दौरान ख़लीफ़ा ने पीने के लिये पानी मंगवाया, जब पानी पेश किया गया तो इब्ने सिमाक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق ने फ़रमाया : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! ज़रा ठहरिये ! अगर आप को पानी पीने से रोक दिया जाए तो आप इतना पानी किस क़दर क़ीमत दे कर ख़रीदेंगे ?" फ़रमाया : "आधी सल्तनत दे कर ।" फ़रमाया : "**बस पी लीजिये ।**" जब ख़लीफ़ा ने पी लिया, उन्हों ने फ़रमाया : "अब अगर येह पानी निकलना चाहे और न निकल सके तो किस क़दर क़ीमत दे कर इस का निकलना मोल लें (या'नी ख़रीदें)गे ?" कहा : "**पूरी सल्तनत दे कर ।**" इर्शाद फ़रमाया : "बस याद रखिये ! आप की तमाम **सल्तनत की क़ीमत पानी का एक घूंट**

www.dawateislami.net

और इस का पेशाब है तो येह सल्त़नत ज़रूर इस लाइक़ है कि इस की त़रफ़ रग़्बत न दिलाई जाए।'' (تاریخ الخلفاء، الرشید ھارون، فصل فی نبذ من اخبار الرشید، ص۱۸۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पानी अ़ज़ीम ने'मत है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत है जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने अ़ज़ीम में जा बजा एह़सान याद दिलाया और एक जगह ख़ास इस ने'मत पर शुक्र अदा करने की हिदायत फ़रमाई, चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

اَفَرَءَیْتُمُ الْمَآءَ الَّذِیْ تَشْرَبُوْنَ ﴿۶۸﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿۶۹﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْ لَا تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۰﴾ (پ۲۷، الواقعۃ:۶۸تا۷۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो भला बताओ तो वोह पानी जो पीते हो क्या तुम ने इसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले हम चाहें तो इसे खारी कर दें फिर क्यूं नहीं शुक्र करते।

पानी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कितनी अ़ज़ीम ने'मत है इस का अन्दाज़ा इस ह़िकायत से लगाइये, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : येह ने'मत कितनी अ़ज़ीम है कि मज़े से पी ली जाती और आसानी से निकाली जाती है। इस बस्ती का एक बादशाह था (जिसे पेशाब रुकने का मरज़ था) वोह अपने ख़ादिमों में से एक ख़ादिम को देखता कि वोह मटके के पास आता, कूज़े में पानी भर कर खड़े खड़े ग़टाग़ट पी जाता तो वोह बादशाह कहता : ''**काश !** मैं तेरी त़रह़ होता कि पी कर प्यास बुझाता। कितनी अ़ज़ीम है येह ने'मत कि तू मज़े से पीता है और आसानी से निकाल देता है।'' क्यूं कि जब वोह बादशाह पानी पीता था तो हर घूंट में उस के लिये कई मुसीबतें होती थीं। (شُعَبُ الایمان، باب فی تعدید نعم اللّٰہ...الخ،۴/۱۱۴، الرقم:۴۴۷۵،مفھومًا)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस सूरते ह़ाल के पेशे नज़र हमें चाहिये कि हमारी हर हर घड़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का शुक्र अदा करते हुए उस की याद में बसर हो कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **इन ने'मतों का ब कसरत ज़िक्र किया करो क्यूं कि इन का ज़िक्र इन का शुक्र है।**

(کتاب الزھد لابن مبارک، الجزءُ الحادی عشر، ص۳۹۶، الرقم:۱۴۳۴)

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : ''जिसे चार चीज़ें अ़त़ा की गईं उसे वोह भलाई अ़त़ा की जाएगी जो ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की आल को अ़त़ा की गई **(1)**.... शुक्र करने वाला दिल। **(2)**.... सब्र करने वाला बदन और

www.dawateislami.net

(3).... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाली ज़बान। **(4)**.... और ऐसी बीवी कि जब उस की त़रफ़ देखे तो उसे खुश कर दे।''

(تاريخ مدينه دمشق لابن عساكر، ذكر من اسمه معبد، معبد ابو المخارق الراهبى، ٣٣٧/٥٩، الرقم: ٧٥٤٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(29) ज़बान की आज़्माइश

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ''**बेशक मुसीबत व आज़्माइश कलाम के सिपुर्द** (या'नी ताबेअ़) **होती हैं।**''

(الآثار لِاَبِی یُوْسُف، باب الغزو والجيش، ص١٩٦، الحديث:٨٨٧)

ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر फ़रमाते हैं : जब **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुबारक मुंह में ज़बान को रखना चाहा तो ज़बान से फ़रमाया : **ऐ ज़बान !** तुझे पैदा करने का मक़्सद येह है कि तू मेरे नाम के सिवा किसी और का नाम न ले और मेरे कलाम के सिवा और कोई कलाम न पढ़े अगर इस के इ़लावा तू ने कुछ और कहा तो याद रख तू भी और बाक़ी आ'ज़ा भी मुसीबत में गिरिफ़्तार होंगे। (اَسرارُالاولیا، فصل چہارم، سخن درذکر توبہ، ص۲۳)

मत़लब येह कि ज़बान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के बिग़ैर कुछ भी न बोले। उस का नाम ले, उस के मह़बूबों का नाम ले, काम की बात करे, उस बनाने वाले परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी के ख़िलाफ़ ज़बान कोई कलाम न करे। (कुफ़्ले मदीना, स. 15)

बहराम और परिन्दा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ामोशी में अम्न है और फ़ुज़ूल गोई में आफ़ात ही आफ़ात हैं, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ **48** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले ''**ख़ामोश शहज़ादा**'' सफ़ह़ा **2** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : बातूनी शख़्स दूसरों को बोलने पर मजबूर कर देता, अपना और दीगर अफ़राद का वक़्त बरबाद करता, कई बार बोल कर पछताता और बारहा परेशानी उठाता है, वाक़ेई इन्सान जब तक ख़ामोश रहता है बहुत सारी आफ़्तों से अम्न में रहता है। कहते हैं : बहराम किसी दरख़्त के नीचे बैठा था, इसे एक परिन्दे की आवाज़ सुनाई दी और इस ने उसे मार गिराया फिर कहने लगा : ज़बान की ह़िफ़ाज़त इन्सान और परिन्दे दोनों के लिये मुफ़ीद है

www.dawateislami.net

अगर येह परिन्दा अपनी ज़बान संभालता तो हलाक न होता।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ामोशी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा

(1)...... ''**مَنْ صَمَتَ نَجَا** या'नी जो चुप रहा उस ने नजात पाई।''

(سُنَنُ التِّرمِذِی، ابواب صفة القيامة...الخ، ٤٥- باب، ص٥٩١، الحديث:٢٥٠١)

(2)...... ''**اَلصَّمْتُ سَيِّدُ الْاَخْلَاقِ** या'नी ख़ामोशी अख़्लाक़ की सरदार है।''

(فردوس الاخبار بمأثور الخطاب، باب الصاد، ذكر الفصول من ادوات الف واللام، ٥٧٨/٢، الحديث:٣٦٦٦ ملتقطًا)

(3)...... ''**اَلصَّمْتُ اَرْفَعُ الْعِبَادَةِ** या'नी ख़ामोशी आ'ला द-रजे की इबादत है।''

(فردوس الاخبار بمأثور الخطاب، باب الصاد، ذكر الفصول من ادوات الالف واللام، ٥٧٨/٢، الحديث :٣٦٦٥)

(4)...... ''आदमी का ख़ामोशी पर क़ाइम रहना **60** साल की इबादत से बेहतर है।''

(شُعَبُ الايمان، باب فى حفظ اللسان، فصل فى فضل السكوت عما لا يعنيه، ٢٤٥/٤، الحديث:٤٩٥٣)

60 साल की इबादत से बेहतर की वज़ाहत

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان चौथी ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं: या'नी अगर कोई शख़्स **60** साल इबादत करे मगर ज़ियादा बातें भी करे, अच्छी बुरी बात में तमीज़ न करे इस से बेहतर येह है कि थोड़ी देर ख़ामोश रहे क्यूं कि ख़ामोशी में फ़िक्र भी हुई, इस्लाहे नफ़्स भी, मआरिफ़ व ह़क़ाइक़ में इस्तिग़राक़ भी, ज़िक्रे ख़फ़ी के समुन्दर में ग़ोता लगाना भी, मुरा-क़बा भी। (مراٰة المناجیح، کتاب الآداب، باب حفظ اللسان والغیبة والشتم، ٦/٤٧٩، مختصراً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** तमाम मुआ-शरे को म-दनी मुआ-शरा और हर मुसल्मान को सुन्नतों का पैकर बनाना चाहती है। इस सिल्सिले में इस्लामी भाइयों की त़रह़ इस्लामी बहनें भी दिन रात कोशां हैं। **आइये!** इस्लामी बहनों के म-दनी कामों का जाएज़ा लेते हैं:

www.dawateislami.net

इस्लामी बहनों के म-दनी कामों की एक झलक

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! लाखों लाख इस्लामी बहनों ने भी **दा'वते इस्लामी** के म-दनी पैग़ाम को क़बूल किया, फ़ेशन परस्ती से सरशार मुआ़-शरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों की दलदल से निकल कर उम्महातुल मुअमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की दीवानियां बन गईं । गले में दुपट्टा लटका कर शोंपिंग सेन्टरों और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में भटक्ने वालियों को करबला वाली इफ़्फ़त मआब शहज़ादियों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की शर्मो ह़या के सदक़े वोह ब-र-कतें नसीब हुईं कि **म-दनी बुरक़अ़** उन के लिबास का **जुज़्वे ला युन्फ़क** बन गया ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! म-दनी मुन्नियों और इस्लामी बहनों को क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम देने के लिये कई **मदारिसुल मदीना** और आ़लिमा बनाने के लिये मु-तअ़द्दद **"जामिआ़तुल मदीना"** क़ाइम हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** में "ह़ाफ़िज़ात" और "म-दनिय्या आ़लिमात" की ता'दाद बढ़ती जा रही है । बहर ह़ाल इस्लामी भाइयों से इस्लामी बहनें किसी त़रह़ पीछे नहीं हैं, इस्लामी बहनों के म-दनी कामों की एक झलक ब मुत़ाबिक़ (**मुह़र्रमुल ह़राम** 1434 सि.हि./ दिसम्बर 2012 सि.ई.) सिर्फ़ पाकिस्तान में बराए ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा म-दनी मुन्नियों और इस्लामी बहनों के तक़रीबन **294** मदारिसुल मदीना चलाए जा रहे हैं जिन में म-दनी मुन्नियों और इस्लामी बहनों की कुल ता'दाद तक़रीबन **22091** है और इस्लामी बहनों के **मद्र-सतुल मदीना** बालिग़ात (उ़मूमन वक़्त **:** सुब्ह़ **: 8:00** से ले कर अ़स्र तक मुख़्तलिफ़ अवक़ात में, दौरानिया **: 1** घन्टा **12** मिनट) की ता'दाद तक़रीबन **3495**, **मुदर्रिसात** की ता'दाद तक़रीबन **3994 मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ात) की शु-रका की ता'दाद तक़रीबन **39162** है । जामिआ़तुल मदीना की ता'दाद तक़रीबन **134** है जामिआ़तुल मदीना की **मुअ़ल्लिमात व नाज़िमात की ता'दाद** तक़रीबन **387** और **त़ालिबात** की ता'दाद तक़रीबन **5634** है । म-दनी इन्आ़मात की आ़मिल की ता'दाद तक़रीबन **80707** है । (**मुह़र्रमुल ह़राम** 1434 सि.हि./दिसम्बर **2012** सि.ई.) कुल मुअ़ल्लिमात की ता'दाद तक़रीबन **26019**, कुल मुबल्लिग़ात की ता'दाद तक़रीबन **18993**, कुल मुदर्रिसात की ता'दाद तक़रीबन **7323**, कुल घर दर्स देने वालियों की ता'दाद तक़रीबन **64141**, रोज़ाना बयान या म-दनी मुज़ा-करा सुनने वालियों की ता'दाद तक़रीबन **134206**, कुल हफ़्तावार इज्तिमाआ़त की ता'दाद तक़रीबन **182175**, इज्तिमाआ़त की शु-रकाए ह़ल्क़ा बा'द इज्तिमाअ़ की ता'दाद तक़रीबन **158536**, अ़लाक़ाई दौरा की शु-रका की ता'दाद तक़रीबन **17847**, अ़लाक़ाई दौरा में बयान की शु-रका की ता'दाद तक़रीबन **16415**, हफ़्तावार तरबिय्यती ह़ल्क़े की शु-रका की ता'दाद तक़रीबन **26739** है ।

मेरी जिस क़दर हैं बहनें सभी म-दनी बुरक़अ़ पहनें
हो करम शहे ज़माना म-दनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 288)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप भी तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा 'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएंगी और अपने हां होने वाले **दा 'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाती रहेंगी और **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कर के **फ़िक्रे मदीना** करते हुए रोज़ाना म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के अपनी ज़िम्मादार इस्लामी बहन को जम्अ़ करवाती रहेंगी तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बेड़ा पार हो जाएगा। **दा 'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता एक इस्लामी बहन की रिक़्क़त अंगेज़ ह़िकायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे,

क़ाबिले रश्क मौत

सांघड़ (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का ह़ल्फ़िय्या बयान है कि मेरी बहन **बिन्ते अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार अ़त्तारिय्या** को केन्सर के मूज़ी मरज़ ने आ लिया। आहिस्ता आहिस्ता ह़ालत बिगड़ती गई। डॉक्टरों के मश्वरे पर ऑपरेशन करवाया, त़बीअ़त कुछ संभली मगर कमो बेश एक साल बा'द मरज़ ने दोबारा ज़ोर पकड़ा तो राजपूताना अस्पताल (ह़ैदरआबाद बाबुल इस्लाम सिन्ध) में दाखि़ल कर दिया गया। एक हफ़्ता अस्पताल में रहीं मगर ह़ालत मज़ीद अब्तर होती चली गई। अचानक उन्हों ने बा आवाज़े बुलन्द **कलिमए त़य्यिबा** का विर्द शुरूअ़ कर दिया, कभी कभी दरमियान में اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللہ भी पढ़तीं। बुलन्द आवाज़ से لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللہ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विर्द करने से पूरा कमरा गूंज उठता था, अ़जीब ईमान अफ़्रोज़ मन्ज़र था, जो आता मिज़ाज पुर्सी करने की बजाए उन के साथ **ज़िक्रुल्लाह** शुरूअ़ कर देता। डॉक्टर्ज़ और अस्पताल का अ़मला ह़ैरत ज़दा था कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कोई मक़्बूल बन्दी मा'लूम होती है वरना हम ने तो आज तक मरीज़ की चीखे़ं ही सुनी हैं और येह मरीज़ा शिक्वा करने की बजाए मुसलसल **ज़िक्रुल्लाह** में मसरूफ़ है। तक़रीबन 12 घन्टे तक येही कैफ़िय्यत रही, अज़ाने मग़रिब के वक़्त इसी त़रह़ बुलन्द आवाज़ से **कलिमए त़य्यिबा** का विर्द करते करते उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : पेट का कु़फ़्ले मदीना, जि. 1, स. 654)

तेरा शुक्र मौला दिया म-दनी माह़ोल न छूटे कभी भी खु़दा म-दनी माह़ोल
ऐ इस्लामी बहनो ! तुम्हारे लिये भी सुनो है बहुत काम का म-दनी माह़ोल
तुम्हें सुन्नतें और पर्दे के अह़काम येह ता'लीम फ़रमाएगा म-दनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 602, 603)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾5﴿...... सय्यि-दतुना आइशा का ज़ौक़े इबादत

निफ़ाक़ और जहन्नम से आज़ादी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **419** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"म-दनी पंजसूरह"** सफ़ह़ा **394** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान सख़ावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی के ह़वाले से दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक भेजा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **10** रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर **10** बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **100** रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर **100** बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह बन्दा निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से बरी है और क़ियामत के दिन उस को शहीदों के साथ रखेगा।"

(المعجم الاوسط،باب المیم، من اسمه محمد، ۵/۲۵۲، الحدیث:۷۲۳۵)

है सब दुआ़ओं से बढ़ कर दुआ़ दुरूदो सलाम
कि दफ़्अ़ करता है हर इक बला दुरूदो सलाम

(तकब्बुर, स. 9)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अवराक़े तारीख़ के मुत़ा-लए और गिर्दो पेश के मुशा-हदे से मा'लूम होता है कि जिन्हों ने इ़बादतो रियाज़त को अपना शिआ़र बनाया और अपने मक़्सदे ह़यात या'नी इ़बादते इलाहिय्यह को अपनाया तो नती-जतन दोनों जहां की इ़ज़्ज़तो अ़-ज़मत व सुर्ख़-रूई उन के माथे का झूमर बनी। ऐसी परहेज़ गार व बा वक़ार शख़्सिय्यतों की फ़ेहरिस्त बहुत त़वील है कि उन के अस्माए गिरामी का शुमार ही कसीर अवक़ात और सफ़ह़ात का तक़ाज़ा करता है और इन सआ़दत मन्दों की फ़ेहरिस्त में मर्द व ज़न शामिल हैं। इन दरख़्शां सितारों में एक ज़ात ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की है जिन को ज़बाने

www.dawateislami.net

रिसालत से فَضْلُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ[1] के अल्फ़ाज़ के साथ ला ज़वाल फ़ज़ीलत का मुज़्दा नसीब हुवा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की ज़ाते सितूदा सिफ़ात एक मुसल्मान के लिये किसी तआरुफ़ की मोहताज नहीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की सीरते पाक ऐसी ताबनाक है कि जिस की रोशनी में कई भूले राहयाब हुए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की जलालते इल्मी से कई तिश्नगाने इल्म सैराब हुए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का तक़्वा व परहेज़ गारी, इबादतो रियाज़त ऐसी कि इस के चरचे चार दांगे आलम आम हुए। इस की कुछ झल्कियां इस बयान में मुला-हज़ा कीजिये।

गरमी की शिद्दत में रोज़ा

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا अ-रफ़ा के दिन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا रोज़े से थीं और गरमी की शिद्दत के बाइस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पर पानी छिड़का जा रहा था। हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अ़र्ज़ करने लगे : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इफ़्तार कर लीजिये (क्यूं कि उस दिन का रोज़ा फ़र्ज़ या वाजिब न था)। उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा, आबिदा, ज़ाहिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाने लगीं : मैं इफ़्तार करूं ? हालां कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना है कि **"अ-रफ़ा के दिन का रोज़ा एक साल पहले के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।"** (مسند احمد، مسند عائشه رضی الله عنها، ۱۰/۲۶۷، الحديث:۲۵۷۱۲)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! سُبْحٰنَ اللّٰہ ! उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का नेकियां इकट्ठी करने का जज़्बा सद करोड़ मरहबा ! और हदीसे न-बवी पर इस क़दर अमल पैरा कि सख़्त गरमी में भी नफ़्ली रोज़े का एहतिमाम फ़रमातीं जब कि हमारा हाल येह है कि हम सर्दियों के फ़र्ज़ रोज़े छोड़ने में भी ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ते तक नहीं कि फ़राइज़ में सुस्ती के सबब अगर ख़ुदाए जब्बार व क़हहार عَزَّوَجَلَّ ने क़हरो ग़ज़ब फ़रमाया तो हमारा क्या बनेगा। लिहाज़ा उस के ख़ौफ़ से हर वक़्त लरज़ां व तरसां रहना चाहिये :

मेरे अश्क बहते रहें काश हर दम तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही !
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا إِلَى الله اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(1)...... या'नी जनाबे आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) की फ़ज़ीलत सारी औरतों पर ऐसी है जैसे सरीद की फ़ज़ीलत तमाम खानों पर। (صحيح البخاری، كتاب الاطعمة، باب ذكر الطعام، ص۱۳۸۸، الحديث:۵۴۲۸)

www.dawateislami.net

गर्मियों के रोज़े का लुत्फ़ो सुरूर

गर्मियों के रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **942** में फ़रमाते हैं **: रोज़े** का तो मज़ा ही इस बात में है कि सख़्त गरमी हो, शिद्दते प्यास से लब सूख गए हों और भूक से ख़ूब निढाल हो चुके हों। ऐसे में **काश ! मदीनए मुनव्वरह** زادھا اللہ شرفاً وّتعظیماً की मीठी मीठी गरमी और ठन्डी ठन्डी धूप की याद ताज़ा हो और **ऐ काश !** करबला के तपते हुए सह़रा और गुलिस्ताने नुबुव्वत صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के महक्ते हुए नौ शिगुफ़्ता फूलों, तीन दिन की भूक और प्यास से तड़पते बिलक्ते मदीने के **"ह़क़ीक़ी म-दनी मुन्नों"** और शहन्शाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के भूके प्यासे मज़्लूम शहज़ादों की याद तड़पाने लगे और जिस वक़्त भूक और प्यास कुछ ज़ियादा ही सताए उस वक़्त तस्लीमो रिज़ा के पैकर, मदीने के ताजवर, नबियों के सरवर, मह़बूबे दावर صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के शि-कमे अत़्हर पर बंधे हुए बा मुक़द्दर पथ्थर भी याद आ जाएं तो क्या कहने !

लिहाज़ा **प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** वाक़ेई रोज़े तो ऐसे होने चाहिएं कि हम अपने आक़ाओं और सरकारों की ह़सीन यादों में गुम हो जाएं।

कैसे आक़ाओं का बन्दा हूं रज़ा
बोलबाले मेरी सरकारों के

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 360)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़मल जितना दुश्वार उतना ही ज़ियादा सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ फ़रीदुद्दीन **अ़त्तार** علیہ رحمۃ اللہ الغفار नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम علیہ رحمۃ اللہ الاکرم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "बरोज़े क़ियामत मीज़ाने अ़मल में वोही अ़मल ज़ियादा वज़्न दार होगा जो दुन्या में ज़ियादा दुश्वार होगा।"

(تذکرۃ الاولیاء(فارسی)، ابراھیم بن ادھم، ص۹۵)

और सख़्त गरमी में रोज़ा रखने पर जन्नत की बिशारत भी है, चुनान्चे

www.dawateislami.net

रोज़े की ख़ुश्बू

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के उस्ताज़े ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ग़ालिब ह़द्दानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی शहीद कर दिये गए। तदफ़ीन के वक़्त लोगों ने उन की **क़ब्र** शरीफ़ से मुश्क की ख़ुश्बू मह़सूस की। इन के भाइयों में से किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : **یا اَبا فِراسٍ مَا صُنِعْتَ؟** या'नी ऐ अबू फ़िरास आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया गया ? कहा : "अच्छा मुआ़-मला फ़रमाया गया।" पूछा : आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कहां ले जाया गया ? कहा : "**जन्नत** में।" पूछा : "कौन से अ़मल के बाइ़स ?" फ़रमाया : "ह़ुस्ने यक़ीन, त़ूले तहज्जुद (या'नी तहज्जुद में लम्बे क़ियाम) और **तेज़ गर्मियों** (में रोज़ों) **की प्यास** के सबब।" फिर पूछा : "आप की **क़ब्र** से मुश्क की ख़ुश्बू क्यूं आ रही है ?" तो जवाब दिया : "येह मेरी तिलावत और (रोज़ों में) प्यास की ख़ुश्बू है।" **(حلیۃ الاولیاء، المغیرۃ بن حبیب، ۲۶۶/۶، الرقم:۸۵۵۳)**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी
करम हो करम या ख़ुदा या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तीन चीज़ों से मौला अ़ली का प्यार

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : मुझे **तीन** चीज़ें बड़ी प्यारी हैं : "**اِکْرَامُ الضَّیْفِ، صِیَامُ الصَّیْفِ، جِھَادٌ بِالسَّیْفِ**" या'नी मेहमान की ख़िदमत, गरमी के रोज़े, तलवार से जिहाद।" **(مراٰۃ المناجیح، باب صیام التطوع، الفصل الثانی، ۱۹۲/۳۔۱۹۳)**

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह वालों को इ़बादत पर कमर बस्ता रहने का किस क़दर जज़्बा था वोह किसी के कहने या किसी की आमद पर भी इ़बादत से ला तअ़ल्लुक़ न होते थे जब कि हमारे पास कोई दुन्यवी ओ़हदे दार आ जाए तो उस की आव भगत में अपनी रोज़ मर्रा की इ़बादत में सुस्ती करते और फ़राइज़ तक क़ज़ा कर डालते हैं, हमारे अस्लाफ़ का त़रीक़ए कार क्या था आइये ! इस ह़िकायत से दर्स ह़ासिल कीजिये :

www.dawateislami.net

क़ियामत की सख़्त तरीन गरमी से बचने का नुस्ख़ा

हज्जाज बिन यूसुफ़ एक मर्तबा दौराने सफ़रे हज **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा व मदीनए मुनव्वरह** زَادَهُمَااللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के दरमियान एक मन्ज़िल पर उतरा और दो पहर का खाना तय्यार करवाया और अपने ह़ाजिब (या'नी मुहाफ़िज़) से कहा कि किसी मेहमान को ले आओ। ह़ाजिब ख़ैमे से बाहर निकला तो उसे एक **आ'राबी** लैटा हुवा नज़र आया, इस ने उसे जगाया और कहा : चलो तुम्हें अमीर **हज्जाज** बुला रहे हैं। **आ'राबी** आया तो **हज्जाज** ने कहा : मेरी दा'वत क़बूल करो और हाथ धो कर मेरे साथ खाना खाने बैठ जाओ। आ'राबी बोला : मुआ़फ़ फ़रमाइये ! आप की दा'वत से पहले मैं आप से बेहतर एक **करीम** की दा'वत क़बूल कर चुका हूं। **हज्जाज** ने कहा : वोह किस की ? वोह बोला : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जिस ने मुझे रोज़ा रखने की दा'वत दी और मैं **रोज़ा** रख चुका हूं। **हज्जाज** ने कहा : इतनी सख़्त गरमी में **रोज़ा** ? आ'राबी ने कहा : हां ! **क़ियामत की सख़्त तरीन गरमी से बचने के लिये। हज्जाज** ने कहा : आज खाना खा लो और येह **रोज़ा** कल रख लेना। आ'राबी बोला : क्या आप इस बात की ज़मानत देते हैं कि मैं कल तक ज़िन्दा रहूंगा ! **हज्जाज** ने कहा : मैं ऐसा नहीं कर सकता। आ'राबी बोला : तो फिर आप मुझ से देर से आने वाले के बदले में इस जल्दी आने वाले के बारे में कैसे कह सकते हैं जिस पर आप क़ादिर नहीं ? **हज्जाज** ने कहा : हमारा खाना बड़ा उ़म्दा है। आ'राबी ने जवाब दिया : इस को न तुम ने और न ही बावर्ची ने उ़म्दा बनाया इस को तो आ़फ़िय्यत ने उ़म्दा किया।

(البداية والنهاية، ثم دخلت سنة خمس وتسعين، ترجمة الحجاج بن يوسف الثقفى......الخ، الجزء التاسع، ١٤٧/٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मैं ने जब भी इ़बादत का सोचा, नफ़्स ने फ़ौरन उस दम दबोचा
नेकियों का नहीं सिल्सिला कुछ, बस गुनाहों में ही दिल फंसा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 267)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़-रफ़ा के बारे में कुछ अहम मा'लूमात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने ह़दीसे आ़इशा में पढ़ा कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا शदीद गरमी में नफ़्ली रोज़ा रख कर अ़-रफ़ा का दिन गुज़ारती थीं। अ़-रफ़ा किसे कहते हैं ? **आइये !** इस बा ब-र-कत दिन के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ मुला-ह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

हकीमुल उम्मत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان **"मिरआत शर्हे मिश्कात"** में इर्शाद फ़रमाते हैं : (**ज़ुल हिज्जा** की) नवीं तारीख़ को भी **"अ-रफ़ा"** कहते हैं और अ-रफ़ात मैदान को भी, मगर लफ़्ज़े अ-रफ़ात सिर्फ़ मैदान को कहा जाता है न कि इस दिन को रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, (1) فَاِذَآ اَفَضۡتُمۡ مِّنۡ عَرَفٰتٍ चूंकि इस जगह का हर हिस्सा अ-रफ़ा है इस लिये इसे जम्अ अ-रफ़ात कहा जाता है, इस जगह को चन्द वज्ह से अ-रफ़ा कहते हैं :

(1)...... इसी जगह हज़रते सय्यिदुना आदम व हव्वा عَلَیْہِ السَّلام و رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की मुलाक़ात तीन सो **(300)** बरस के फ़िराक़ के बा'द हुई और एक दूसरे को पहचाना।

(2)...... इसी जगह जिब्रईले अमीन ने जनाबे ख़लील (عَلَیْہِ السَّلام) को अरकाने हज सिखाए और आप ने फ़रमाया : عَرَفْتُ या'नी मैं ने पहचान लिया।

(3)...... येह जगह तमाम दुन्या में जानी पहचानी है कि यहां हज होता है या'नी मश्हूर है।

(4)...... रब तआला इस दिन हाजियों को मग़्फ़िरत का तोहफ़ा देता है, अरफ़ ब मा'ना अतिय्या। रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, (2) عَرَّفَهَا لَهُمۡ ۝

(5)...... तमाम हुज्जाज वहां पहुंच कर अपने गुनाहों का इक़रार व ए'तिराफ़ करते हैं, ख़याल रहे कि **क़ियामे अ-रफ़ा हज का रुक्ने आ'ला है जिसे येह मिल गया उसे हज मिल गया।**

(مراٰۃ المناجیح، کتاب المناسک، باب الوقوف بعرفۃ، ۱۳۹/۴، ۱۴۰)

हो जाए मेरी हाज़िरी अ-रफ़ातो मिना में
और मुज़्दलिफ़ा का भी करूं ख़ूब नज़ारा

(वसाइले बख़्शिश, स. 170)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ-रफ़ा के दिन जहन्नम से आज़ादी

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"अ-रफ़ा के दिन अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **अपने बन्दों को सब से ज़ियादा ता'दाद में जहन्नम से आज़ाद करता है।"**

(صحیح مسلم، کتاب الحج، باب فضل الحج والعمرۃ...الخ، ص۵۰۳، الحدیث:۱۳۴۸)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی **"मिरआतुल मनाजीह" जिल्द 4, सफ़हा 140** पर इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : या'नी साल भर

(1)...... **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो जब अ-रफ़ात से पलटो। (پ۲، البقرۃ:۱۹۸)

(2)...... **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उन्हें इस की पहचान करा दी है। (پ۲۶، محمد:۶)

www.dawateislami.net

के तमाम दिनों से ज़ियादा नवीं ज़िल हिज्जा को गुनहगार बख़्शे जाते हैं, (इस हदीसे पाक में मज़्कूर लफ़्ज़े "**अ़ब्द**" से इस्तिद्लाल करते हुए फ़रमाते हैं कि) अ़ब्द के उ़मूम से मा'लूम होता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस दिन हाजियों के इ़लावा और बन्दों को भी बख़्शता है, इसी लिये ग़ैरे हुज्जाज के लिये इस दिन रोज़ा सुन्नत है।

अ़फ़्वो रह़मत का बख़्शिश का साइल | हूं निहायत गुनहगारो ग़ाफ़िल
मेरा सब ह़ाल तुझ पर खुला है | या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 132)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ाजियों के लिये अ़-रफ़ा के रोज़े का हुक्म

फ़ु-क़हा (किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) फ़रमाते हैं : **अ़-रफ़ा का रोज़ा ग़ैरे ह़ाजी के लिये सुन्नत है ह़ाजी के लिये सुन्नत नहीं,** बल्कि ऐसे कमज़ोर को जो रोज़ा रख कर अरकाने ह़ज अदा न कर सके, (रोज़ा रखना) मकरूह है। (مراٰۃ المناجیح، کتاب الصوم، باب صیام التطوع، ۳/۱۸۲)

"अ़-रफ़ा" के चार हुरूफ़ की निस्बत से अ़-रफ़ा का रोज़ा रखने के 4 फ़ज़ाइल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **743** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**जन्नत में ले जाने वाले आ'माल**" सफ़ह़ा **277** पर ह़ाफ़िज़ इमाम श-रफ़ुद्दीन अ़ब्दुल मुअमिन बिन ख़लफ़ दम्याती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی अह़ादीसे मुबा-रका नक़्ल फ़रमाते हैं :

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**जो अ़-रफ़ा के दिन रोज़ा रखता है इस के पै दर पै दो सालों के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।**"

(مسند ابی یعلٰی، حدیث سھل بن سعد الساعدی، ۶/۴۸۷، الحدیث:۷۵۴۸)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से अ़-रफ़ा के दिन रोज़ा के बारे में सुवाल किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "हम **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में **इसे दो साल के रोज़ों के बराबर समझते थे।**"

(المعجم الاوسط، باب الالف، من اسمه احمد، ۱/۲۱۹، الحدیث:۷۵۱)

www.dawateislami.net

﴾3﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे : **"अ़-रफ़ा का रोज़ा 1000 दिन के रोज़ों के बराबर है ।"** (شُعَبُ الایمان، باب فی الصیام، تخصیص یو م عرفۃ بالذکر، ۳/۳۵۷، الحدیث:۳۷۶۴)

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने अ़-रफ़ा के दिन रोज़ा रखा, उस के **एक साल के अगले और एक साल के पिछले गुनाह मुआ़फ़** कर दिये जाते हैं ।"

(مجمع الزوائد، ۳/۴۳۶، الرقم:۵۱۴۲۔ المعجم الکبیر، من اسمہ قتادہ، قتادۃ بن نعمان الانصاری...الخ، ۸/۷۹، الحدیث: ۱۵۳۴۹)

न नामे में इ़बादत है न पल्ले कुछ रियाज़त है
इलाही ! मग़्फ़िरत फ़रमा हमारी अपनी रह़मत से

(वसाइले बख़्शिश, स. 239)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़-रफ़ा दुआ़ओं की क़ुबूलिय्यत का दिन है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपने वालिद से वोह अपने दादा से रिवायत करते हैं : ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیۡہِ اَفۡضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسۡلِیۡم ने फ़रमाया : **(दुआ़ओं में से) बेहतरीन दुआ़ अ़-रफ़ा के दिन की दुआ़ है ।**

(سنن الترمذی، احادیث شتّٰی، باب فی دعاء یوم عرفۃ، ص۸۱۹، الحدیث:۳۵۸۵)

शर्हे ह़दीस

इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुए ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی इर्शाद फ़रमाते हैं : (अ़-रफ़ा के दिन की दुआ़ "बेहतरीन दुआ़" इस लिये है) क्यूं कि इस दिन की दुआ़ जल्द क़बूल होती है और इस पर मांगने से ज़ियादा मिलता है । सवाबे दुआ़ इस के इ़लावा है, इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि नवीं बक़र ईद

www.dawateislami.net

(9 ज़ुल हिज्जतिल हराम) की दुआ बेहतरीन अमल है ख़्वाह कहीं मांगी जाए, अगर हज मुयस्सर हो और मैदाने अ-रफ़ात में मांगी जाए, तो ज़हे नसीब वरना अपने घर या मस्जिद वग़ैरा जहां हो सके मांगे, येह दिन ग़फ़्लत में न गुज़ार दे, इसी लिये समझदार लोग नवीं बक़र ईद को रोज़ा रखते हैं, इबादात व दुआओं में मश्ग़ूल रहते हैं इस दिन को लह्वो लअ़ब में नहीं गुज़ारते। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस दिन सिर्फ़ दुआ ही न मांगे बल्कि रब तआ़ला की ह़म्दो सना भी करे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से दिल को चैन और क़रार है। (مراۃ المناجیح،کتاب المناسک،باب الوقوف بعرفۃ،۴/۱۴۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेकियों से जलना शैतानी अमल है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यूं तो शैतान हमेशा ही ज़लीलो ख़्वार और ग़मगीन रहता है मगर नवीं ज़िल हिज्जा के दिन हाजियों को अ-रफ़ा में देख कर बहुत ग़मगीन होता है और नेक काम पर ग़म करना, नेकियों से जलना शैतानी अमल है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : ह़ज़रते सय्यिदुना **तल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह** बिन कुरैज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अ-रफ़ा के दिन से ज़ियादा किसी दिन शैतान बहुत छोटा, बहुत फिटकारा हुवा और बहुत ज़लील व ग़ुस्से में न देखा गया येह सिर्फ़ इस लिये है कि वोह (आज के दिन) रह़मते बारी के नुज़ूल और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बड़े गुनाहों की मुआफ़ी देने को मुशा-हदा करता है। (شرح السنة، كتاب الحج، باب فضل يوم عرفة، ۷/۱۵۸، الحديث: ۱۹۳۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नमाज़े तहज्जुद की पाबन्दी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **862** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **"सीरते मुस्तफ़ा"** सफ़ह़ा **660** पर शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरत बयान करते हुए फ़रमाते हैं : इबादत में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मर्तबा बहुत ही बुलन्द है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भतीजे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का बयान है कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **रोज़ाना बिला नाग़ा नमाज़े तहज्जुद पढ़ने की पाबन्द थीं और अक्सर रोज़ादार भी रहा करती थीं।**

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जब इ़बादत की कसरत का ज़ेह्न हो तो इस के लिये वक़्त ख़ुद वक़्त देता है, ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ज़ोहदो तक़्वा और इ़बादतो रियाज़त का तज़्किरा करते हुए एक बात गोश गुज़ार करना ज़रूरी समझती हूं कि दुन्यवी और ख़ानगी उमूर की ज़िम्मादारी वक़्त की कमी का ज़रूर एह़सास दिलाती है और इ़बादत की कसरत बल्कि फ़र्ज़ इ़बादत तक से दूर होने पर मजबूर करती नज़र आती है लेकिन अगर म-दनी ज़ेह्न हो और निय्यत भी साफ़ हो तो मन्ज़िल तक रसाई आसान हो जाती है। जब म-दनी ज़ेह्न पाने में काम्याबी मिलती है तो वक़्त ऐसा बा ब-र-कत हो जाता है गोया कि ख़ुद आगे बढ़ कर अपने आप को पेश कर देता है। ज़ाती, ख़ानगी और दुन्यवी उमूर संवरते, ह़ालात सुधरते और सह़ीह़ डगर पर चलते नज़र आते हैं। क्या ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर कोई ऐसी ज़िम्मादारी न थी ? क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا दुन्यवी कामों के लिह़ाज़ से फ़ारिग़ुल बाल थीं ? क्या ख़ानादारी सर अन्जाम देने से मा'ज़ूर व नुफ़ूर थीं ? नहीं, हरगिज़ नहीं बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने बाप की फ़रमां बरदार बेटी और शोहरे नामदार की मह़बूब तरीन ज़ौजा होने के साथ साथ घरेलू उमूर निहायत अह़्सन अन्दाज़ से निभाने वाली इन्तिहाई समझदार ख़ातून थीं। बा'दे विसाले न-बवी कई शर-ई मुआ़-मलात में उम्मते मुस्लिमा की रहबरी और सह़ाबा व ताबिईन की मुअ़ल्लिमा होने की ज़िम्मादारी भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने संभाली। इन गूना गूं (या'नी त़रह़ त़रह़ की) मसरूफ़िय्यात के बा वुजूद इ़बादतो रियाज़त की कसरत और नफ़्ली इ़बादात की त़रफ़ रग़्बत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरत का एक नुमायां पहलू है आप भी ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरत से दर्स व हिदायत के म-दनी फूल चुन कर अपने लाज़िमी उमूर को संवारने के साथ साथ इ़बादते इलाही पर भी भरपूर तवज्जोह दीजिये। अव्वलीन तवज्जोह तो फ़र्ज़ व वाजिब पर होनी चाहिये। इस के बा'द सुनन व मुस्तह़ब्बात पर भी अ़मल की कोशिश करनी चाहिये। नफ़्ली नमाज़ों, नफ़्ली रोज़ों की भी कसरत कर के फ़ैज़ाने इलाही से बहरा वर होने की भरपूर सअ़्य करनी चाहिये कि नबियों के सालार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : मेरे किसी बन्दे का ब मुक़ाबला फ़र्ज़ इ़बादतों के दूसरे ज़रीए़ से मुझ से क़रीब होना मुझे ज़ियादा पसन्द नहीं और मेरा बन्दा नवाफ़िल के ज़रीए़ मेरे क़रीब होता रहता है ह़त्ता कि मैं उस से मह़ब्बत करने लगता हूं और जब मैं उस से मह़ब्बत करता हूं तो मैं उस के कान हो जाता हूं जिन से वोह सुनता है और उस की आंखें हो जाता हूं जिन से वोह देखता है और उस के हाथ हो जाता हूं जिन से वोह पकड़ता है और उस के पाउं हो जाता हूं जिन से वोह चलता है, अगर वोह मुझ से मांगता है तो उसे देता हूं और अगर मेरी पनाह लेता है तो उसे पनाह देता हूं। **(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ص۱۵۹۷، الحدیث:۶۵۰۲، ملخصاً)**

www.dawateislami.net

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی ख़ुदा तआ़ला के फ़रमान ''मेरे किसी बन्दे का ब मुक़ाबला फ़र्ज़ इबादतों के दूसरे ज़रीए़ से मुझ से क़रीब होना मुझे ज़ियादा पसन्द नहीं'' की वज़ाहत में फ़रमाते हैं : या'नी मुझ तक पहुंचने के बहुत ज़रीए़ हैं, मगर इन तमाम ज़राएअ़ से ज़ियादा महबूब ज़रीआ़ अदाए फ़राइज़ है इसी लिये सूफ़िया फ़रमाते हैं कि फ़राइज़ के बिग़ैर नवाफ़िल क़बूल नहीं होते इन की माख़ज़ येह ह़दीस है। अफ़्सोस उन लोगों पर जो फ़र्ज़ इबादात में सुस्ती करें और नवाफ़िल पर ज़ोर दें और हज़ार अफ़्सोस उन पर जो भंग, चरस, ह़राम गाने बजाने को ख़ुदा रसी का ज़रीआ़ समझें नमाज़ रोज़े के क़रीब न जाएं। (और नवाफ़िल के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पाने से येह मुराद है कि) बन्दए मुसल्मान फ़र्ज़ इबादात के साथ नवाफ़िल भी अदा करता रहता है ह़त्ता कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का प्यारा हो जाता है क्यूं कि वोह फ़राइज़ व नवाफ़िल का जामेअ़ होता है। इस का मत़लब येह नहीं कि फ़राइज़ छोड़ कर नवाफ़िल अदा करे। महब्बत से मुराद कामिल महब्बत है। इस इबारत (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हाथ कान वग़ैरा होना) का येह मत़लब नहीं कि ख़ुदा तआ़ला वली में हुलूल कर जाता है जैसे कोएले में आग या फूल में रंग व बू, कि ख़ुदा तआ़ला हुलूल से पाक है और येह अ़क़ीदा कुफ़्र है बल्कि इस के चन्द मत़लब हैं : एक येह कि **वलिय्युल्लाह** के येह आ'ज़ा गुनाह के लाइक़ नहीं रहते हमेशा इन से नेक काम ही सरज़द होते हैं, उस पर इबादात आसान होती हैं गोया सारी इबादतें इस से मैं करा रहा हूं या येह कि फिर वोह बन्दा इन आ'ज़ा को दुन्या के लिये इस्ति'माल नहीं करता सिर्फ़ मेरे लिये इस्ति'माल करता है, हर चीज़ में मुझे देखता है हर आवाज़ में मेरी आवाज़ सुनता है या येह कि वोह बन्दा फ़ना **फ़िल्लाह** हो जाता है जिस से ख़ुदाई त़ाक़तें इस के आ'ज़ा में काम करती हैं और वोह वैसे काम कर लेता है जो अ़क़्ल से वरा हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने कन्आ़न में बैठे हुए मिस्र से चली हुई क़मीसे यूसुफ़ी की ख़ुश्बू सूंघ ली, ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने तीन मील के फ़ासिले से च्यूंटी की आवाज़ सुन ली ह़ज़रते सय्यिदुना आसिफ़ बरख़ियां رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने पलक झपक्ने से पहले यमन से तख़्ते बिल्क़ीस ला कर शाम में ह़ाज़िर कर दिया ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने मदीनए मुनव्वरह से ख़ुत़्बा पढ़ते हुए नहावन्द तक अपनी आवाज़ पहुंचा दी ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ियामत तक के वाक़िआ़त ब चश्म मुला-ह़ज़ा फ़रमा लिये येह सब इसी त़ाक़त के करिश्मे हैं आज नार की त़ाक़त से रेडियो तार, वायर्लेस, टेलीवीज़न अ़जीब करिश्मे दिखा रहे हैं तो नूर की त़ाक़त का क्या पूछना इस ह़दीस से वोह लोग इ़ब्रत पकड़ें जो त़ाक़ते औलिया के मुन्किर हैं।

(مراۃ المناجیح، کتاب فضائل القرآن، باب ذکر اللہ عزّوجلّ،۳/۳۰۸)

www.dawateislami.net

नमाज़े तहज्जुद अ़ज़ीम ने'मत है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! तहज्जुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम ने'मत है येह ने'मत जिसे अ़ता हो जाए उस के वारे ही न्यारे हो जाते हैं क्यूं कि येह वोह अ़मल है जिस के ज़रीए बन्दा बहुत जल्द अपने रब عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पा लेता है। नमाज़े तहज्जुद के चन्द फ़ज़ाइल मुला-ह़ज़ा कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे हम सब को इस की ब-र-कतों से मालामाल होने का जज़्बा नसीब हो जाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरकार पर नमाज़े तहज्जुद फ़र्ज़ थी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारह **15**, **सू-रए बनी इस्राईल** की आयत नम्बर **79** में इर्शाद फ़रमाता है :

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ﳓ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद करो येह ख़ास तुम्हारे लिये ज़ियादा है।

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद ह़ाफ़िज़ मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **"तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : तहज्जुद : नमाज़ के लिये नींद को छोड़ने या बा'दे इशा सोने के बा'द (वक़्ते फ़ज्र से पहले पहले) जो नमाज़ पढ़ी जाए उस को कहते हैं। नमाज़े तहज्जुद की ह़दीस शरीफ़ में बहुत फ़ज़ीलतें आई हैं। नमाज़े तहज्जुद सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर फ़र्ज़ थी जुम्हूर का येही क़ौल है। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के लिये येह नमाज़ सुन्नत है।

मस्अला : तहज्जुद की कम से कम दो रक्अ़तें और मु-तवस्सित़ चार और ज़ियादा आठ हैं और सुन्नत येह है कि दो दो रक्अ़त की निय्यत से पढ़ी जाएं।

मस्अला : अगर आदमी शब की एक तिहाई इ़बादत करना चाहे और दो तिहाई सोना, तो शब के तीन ह़िस्से कर ले दरमियान तिहाई में तहज्जुद पढ़ना अफ़्ज़ल है और अगर चाहे कि आधी रात सोए आधी रात इ़बादत करे तो निस्फ़े अख़ीर अफ़्ज़ल है।

मस्अला : जो शख़्स नमाज़े तहज्जुद का आ़दी हो उस के लिये तहज्जुद तर्क करना मक्रूह है।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 15, सूरए बनी इस्राईल, तह़्तल आयह 79 स. : 541)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बिग़ैर हिसाब जन्नत में दाखि़ला

तहज्जुद की ने'मत ह़ासिल करने वाले लोगों को क़ियामत के दिन बे ह़िसाब जन्नत में दाखि़ले की बिशारत दी जाएगी। जब सब लोग अपने ह़श्र के बारे में फ़िक्र मन्द होंगे कि न जाने आज हमारे बारे में क्या फ़ैसला किया जाए उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तहज्जुद गुज़ारों को सब लोगों से जुदा फ़रमा कर बे ह़िसाब जन्नत में दाखि़ला अ़त़ा फ़रमाएगा, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **743** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़्ह़ा **140** पर ह़ाफ़िज़ुल मशरिक़ वल मग़रिब ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुह़म्मद श-रफ़ुद्दीन अ़ब्दुल मुअमिन दम्यात़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی ह़दीसे मुबा-रका नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क़ियामत के दिन तमाम लोग एक ही जगह इकठ्ठे होंगे, फिर एक मुनादी निदा करेगा : "कहां हैं वोह लोग जिन के पहलू बिस्तरों से जुदा रहते थे ?" पस वोह लोग खड़े होंगे और ता'दाद में बहुत कम होंगे और **बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाखि़ल हो जाएंगे**, फिर तमाम लोगों को ह़िसाब देने का हुक्म होगा।" (الترغیب والترھیب ،کتاب النوافل ، الترغیب فی قیام اللیل ، ص۲۰۵ ، الرقم:۹)

उन के करम के सदक़े फ़ज़्लो करम से उन के
अ़त्तार पीछे पीछे जन्नत में जा रहे हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 381)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुबूलिय्यत की घड़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, आप फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : "बेशक रात में एक ऐसी घड़ी है जिस में मुसल्मान बन्दा जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से **दुन्या व आखि़रत की कोई भलाई त़लब करे** तो वोह उसे ज़रूर अ़त़ा फ़रमाता है और येह घड़ी हर रात में है।"

(صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب فی اللیل ساعۃ مستجاب ...الخ، ص۲۷۴، الحدیث:۷۵۷)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा रिवायत में दुआ की क़ुबूलिय्यत का वक़्त बताया गया है। जो इस्लामी बहनें अपनी दुआएं क़ुबूल न होने की रट लगाए रखती हैं अगर वोह अपनी नींद को क़ुरबान कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सज्दा रेज़ होंगी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत उन्हें घेर लेगी और दुआएं मुस्तजाब होने के साथ साथ मुश्किलात भी हल होंगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तहज्जुद या फ़ज्र के लिये जल्दी आंख खुलने का म-दनी नुस्ख़ा

अब तहज्जुद जैसी ने'मत जो क़ुर्बे ख़ुदा वन्दी, दुआओं की क़ुबूलिय्यत और दुन्या व आख़िरत की भलाई त़लब करने का निहायत ही बेहतरीन ज़रीआ है उस में सब से बड़ी रुकावट येह है कि नफ़्सो शैत़ान नींद से बेदार नहीं होने देते। नींद से बेदार होने के लिये सब से पहले अपना ज़ेहन बनाएं कि मैं ने नमाज़े तहज्जुद अदा करनी है फिर येह वज़ीफ़ा करें जो **पैकरे इल्मो हिक्मत**, शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत**, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने म-दनी मुज़ा-करा नम्बर **120** में इर्शाद फ़रमाया कि नमाज़े **तहज्जुद** या फ़ज्र के लिये जल्दी आंख खुल जाए इस के लिये पारह **16**, **सूरए कह्फ़** की आख़िरी **4** आयतें पढ़ लें :

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿۱۰۷﴾ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا لَا یَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿۱۰۸﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّیْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّیْ وَ لَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ یُوْحٰۤى اِلَیَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌۚ فَمَنْ كَانَ یَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْیَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّ لَا یُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये फ़िरदौस के बाग़ उन की मेहमानी है वोह हमेशा उन में रहेंगे उन से जगह बदलना न चाहेंगे तुम फ़रमा दो अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही हो तो ज़रूर समुन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी अगर्चे हम वैसा ही और उस की मदद को ले आएं तुम फ़रमाओ ज़ाहिर सूरते ब-शरी में तो मैं तुम जैसा हूं मुझे वह्य आती है कि तुम्हारा मा'बूद एक ही मा'बूद है तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।

और निय्यत कीजिये कि मुझे इतने बजे उठना है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन आयाते मुबा-रका को पढ़ने की ब-र-कत से आंख खुल जाएगी, अगर शुरूअ़ में येह वज़ीफ़ा करने से आंख न खुले तो मायूस न हों वज़ीफ़ा जारी रखें। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जल्द उठने की आ़दत बन जाएगी।

www.dawateislami.net

जल्दी बेदार होने का एक त़रीक़ा येह भी है कि अलार्म **(Alarm)** लगा कर सोएं और अगर मुम्किन हो तो दो घड़ियों में कुछ मिनट के वक़्फ़े से अलार्म लगाएं और अगर रात को देर से सोने की वज्ह से नमाज़े फ़ज्र के लिये आंख नहीं खुलती और न ही कोई जगाने वाला मौजूद है तो वाजिब है कि जल्दी सोएं कि फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जब येह अन्देशा हो कि सुब्ह़ की नमाज़ जाती रहेगी तो बिला ज़रूरते शरइय्या उसे रात देर तक जागना मम्नूअ़ है।

(حاشیه ابن عابدین ،کتاب الصلاۃ ، مطلب فی طلوع الشمس من مغربها، ۳۳/۲)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **''फ़तावा र-ज़विय्या''** में नींद कम करने के त़रीक़े इर्शाद फ़रमाते हैं : अगर तूले ख़्वाब (लम्बी नींद) से ख़ौफ़ करता है तक्या न रख बिछोना न बिछा कि बे तक्या व बे बिस्तर सोना भी मस्नून है, सोते वक़्त दिल को ख़याले जमाअ़त से ख़ूब मु-तअ़ल्लिक़ रख कि फ़िक्र की नींद ग़ाफ़िल नहीं होती, खाना ह़त्तल इम्कान अ़लस्सबाह़ खा कि वक़्ते नौम तक बुख़ाराते त़आम फ़र्व लें और तूले मनाम के बाइस न हों, सब से बेहतर इलाज तक़्लीले ग़िज़ा है। सोते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौफ़ीक़े जमाअ़त की दुआ़ और उस पर सच्चा तवक्कुल मौला तबा-र-क व तआ़ला जब तेरा ह़ुस्ने निय्यत व सिद्क़े अ़ज़ीमत देखेगा ज़रूर तेरी मदद फ़रमाएगा। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 7, स. 88, 90 मुल्तक़ित़न)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े चाश्त और सय्यि-दतुना आ़इशा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا **चाश्त की 8 रक्अ़तें पढ़ती थीं** फिर फ़रमातीं कि अगर मेरे मां बाप उठा भी दिये जाएं तो मैं येह रक्अ़तें न छोड़ूं। (المؤطا امام مالك، كتاب قصر الصلاة فى السفر، باب صلاة الضّحى، ص۹۷، الحديث:۳۶۷)

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى **''मिरआतुल मनाजीह़'' जिल्द 2 सफ़्ह़ा 299** पर इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी अगर इशराक़ के वक़्त मुझे ख़बर मिले कि मेरे वालिदैन ज़िन्दा हो कर आ गए हैं तो मैं उन की मुलाक़ात के लिये येह नफ़्ल न छोड़ूं बल्कि पहले येह नफ़्ल पढ़ूं फिर उन की क़दम बोसी करूं।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन की नफ़्ली नमाज़ पर इस क़दर इस्तिक़ामत उन औ़रतों के लिये ताज़ियानए इब्रत है जो फ़र्ज़ नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा कर के नमाज़े चाश्त तक सोती रहती हैं। **अल्लाहु अक्बर !** मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़बूब

www.dawateislami.net

ज़ौजा तो इतनी इबादत गुज़ार व दीनदार और उम्मतियों का येह ह़ाले ज़ार की नवाफ़िल का तो पूछना ही क्या ? फ़राइज़ से भी बेज़ार बल्कि उलटे दिन रात त़रह़ त़रह़ के गुनाहों के आज़ार में गिरिफ़्तार !

दिल हाए गुनाहों से बेज़ार नहीं होता
मग़्लूब शहा ! नफ़्से बदकार नहीं होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 234)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सारे दिन की ह़ाजतें सुब्ह़ की 4 रक्अ़त में

ह़ज़रते सय्यिदुना **नुऐम बिन हम्मार** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है वोह फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम, ताजदारे अ़-रबो अ़जम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि रब तआ़ला फ़रमाता है **: ऐ इब्ने आदम ! तू शुरूअ़ दिन में मेरे लिये 4 रक्अ़तें पढ़ ले, मैं आख़िर दिन तक तेरे लिये काफ़ी होउंगा ।** (سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الضُّحٰی، ص ۲۱۱، الحدیث:۱۲۸۹)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! कितनी प्यारी फ़ज़ीलत इर्शाद फ़रमाई कि शुरूअ़ दिन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करे तो रब्बे काएनात सारा दिन उस आदमी की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा या'नी जो अव्वल दिन में अपने दिल को रब तआ़ला की इबादत के लिये फ़ारिग़ कर दे आख़िर दिन तक रब तआ़ला उस के दिल को ग़मों से फ़ारिग़ फ़रमा देगा । दिन के आग़ाज़ की फ़राग़त बड़ी ने'मत है, उस वक़्त नमाज़े फ़ज्र अदा करना, क़ुरआने पाक की तिलावत करना, ज़िक्रो अज़्कार में मश्ग़ूल रहना फिर इश्राक़ व दुह़ा के नफ़्ल अदा करते हुए दिन की इब्तिदा करना ख़ुश नसीब व सआ़दत मन्द लोगों का ह़िस्सा है इस सआ़दत से मह़रूम होना निरी नादानी और ग़फ़्लत है । इस क़ौल "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हो जाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का हो जाता है ।" का येही मा'ना है ।

(مراۃ المناجیح، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الضُّحٰی، ۲/۲۹۷۔ مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الضُّحٰی، ۳/۳۵۵، تحت الحدیث:۱۳۱۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नमाज़े इश्राक़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **308** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"इस्लामी बहनों की नमाज़"** सफ़ह़ा **179** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास**

www.dawateislami.net

अत्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नक़्ल फ़रमाते हैं : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो शख़्स नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग़ होने के बा'द **अपने मुसल्ले में** (या'नी जहां नमाज़ पढ़ी वहीं) **बैठा रहा** ह़त्ता कि इशराक़ के नफ़्ल पढ़ ले सिर्फ़ ख़ैर ही बोले तो उस के **गुनाह बख़्श** दिये जाएंगे अगर्चे **समुन्दर की झाग** से भी ज़ियादा हों । (سُنَنِ اَبِی داوٗد، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الضُّحٰی، ص ۲۱۱، الحدیث:۱۲۸۷)

ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "**अपने मुसल्ले में बैठा रहे**" की वज़ाह़त करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : या'नी मस्जिद या घर में इस ह़ाल में रहे कि ज़िक्र या ग़ौरो फ़िक्र करने या इल्मे दीन सीखने सिखाने या **बैतुल्लाह** के त़वाफ़ में मश्ग़ूल रहे । नीज़ "**सिर्फ़ ख़ैर ही बोले**" के बारे में फ़रमाते हैं : "या'नी फ़ज्र और इशराक़ के दरमियान ख़ैर या'नी भलाई के सिवा कोई गुफ़्त-गू न करे और ख़ैर से मुराद वोह बात है जिस पर सवाब मुरत्तब हो ।" (مرقاۃ الفاتیح، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الضُّحٰی، ۳/۳۰۸، تحت الحدیث:۱۳۱۷)

नमाज़े इशराक़ का वक़्त : नमाज़े इशराक़ के वक़्त का आग़ाज़ सूरज के एक नेज़ा बुलन्द होने से होता है यहां तक कि मकरूह वक़्त निकल जाए (या'नी तुलूए आफ़्ताब के तक़रीबन **20** मिनट बा'द) । (مأخوذ از مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلٰوۃ، الذکر بعد الصلٰوۃ، ۳/۴۵، تحت الحدیث:۹۷۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि मालिके जन्नत, क़ासिमे ने'मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "**जो चाश्त की 12 रक्अ़तें पढ़ ले तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस के लिये जन्नत में सोने का मह़ल बनाएगा ।**"

(سنن الترمذی، ابواب الوتر، باب ما جاء فی صلاۃ الضُّحٰی، ص ۱۴۱، الحدیث:۴۷۳)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **134** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**जन्नत की तय्यारी**" सफ़ह़ा **63** पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे बा अ़-ज़मत है : बेशक जन्नत में एक दरवाज़ा है जिसे दुहा कहा जाता है जब क़ियामत का दिन आएगा तो एक **मुनादी** निदा करेगा : **नमाज़े चाश्त** की पाबन्दी

www.dawateislami.net

करने वाले कहां हैं ? येह तुम्हारा दरवाज़ा है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से इस में दाख़िल हो जाओ।

(المعجم الاوسط، باب الميم، من اسمه محمد، ١٨/٤، الحديث:٥٠٦٠)

बे अ़दद ग़ुलाम आक़ा ख़ुल्द जा रहे हैं साथ
पीछे पीछे मैं भी काश शाहे बह़रो बर जाता

(वसाइले बख़्शिश, स. 412)

नमाज़े चाश्त का वक़्त : इस का वक़्त आफ़्ताब बुलन्द होने से ज़वाल या'नी निस्फ़ुन्नहारे शर-ई तक है और बेहतर येह है कि चौथाई दिन चढ़े पढ़े। (बहारे शरीअ़त, सुनन व नवाफ़िल का बयान, हिस्सा : 4, जि. 1, स. 676) नमाज़े इश्राक़ के फ़ौरन बा'द भी नमाज़े चाश्त पढ़ सकते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पाबन्दे चाश्त तंगदस्ती से मह़फ़ूज़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **120** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"राहे इल्म"** सफ़ह़ा **105** पर **"साह़िबे हिदाया"** के मश्हूर शागिर्द इमाम बुरहानुद्दीन ज़रनूजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى तह़रीर फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन बिन अ़ली رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ह़ुसूले रिज़्क़ के लिये नमाज़े चाश्त पढ़ना बेह़द मुफ़ीद और मुजर्रब है। **(تعليم المتعلم، ص١٢٧)**

इसी त़रह़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ **32** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **"तंगदस्ती के अस्बाब और उन का ह़ल"** सफ़ह़ा **16** पर है : **मशाइख़े किराम** फ़रमाते हैं : दो चीज़ें कभी जम्अ़ नहीं हो सकतीं मुफ़्लिसी और चाश्त की नमाज़ या'नी जो कोई चाश्त की नमाज़ का पाबन्द होगा اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ कभी मुफ़्लिस न होगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत का मा'मूल

एक मर्तबा रात भर म-दनी मश्वरे के बाइ़स हमारे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सो न सके। बा'दे फ़ज्र एक इस्लामी भाई ने अ़र्ज़ की : अभी आप आराम फ़रमा लीजिये **10:00** बजे दोबारा उठना है, लिहाज़ा उठ कर इश्राक़ व चाश्त अदा फ़रमा लीजियेगा। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जवाब दिया : "ज़िन्दगी का क्या भरोसा, सो कर उठना नसीब हो या नहीं......या......क्या मा'लूम आज ज़िन्दगी के आख़िरी नफ़्ल अदा हो रहे हों ?" येह

www.dawateislami.net

फ़रमाने के बा'द इशराक़ व चाश्त के नफ़्ल अदा फ़रमाए फिर आराम फ़रमाया।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने नमाज़े तहज्जुद और इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल के फ़ज़ाइल मुला-हज़ा फ़रमाए और इन की ब-र-कतें भी सुनीं। **ऐ काश !** आज से हमारा येह म-दनी ज़ेह्न बन जाए कि कुछ भी हो जाए हम फ़राइज़ की अदाएगी के साथ साथ नवाफ़िल की भी कसरत करें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सूरज गहन की नमाज़

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا दीगर नफ़्ली इबादात के साथ साथ जब कभी सूरज को गहन लगता तो नमाज़े कुसूफ़ भी अदा फ़रमातीं जैसा कि ह़दीसे पाक में है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाती हैं कि मैं ह़ज़रते आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के पास ह़ाज़िर हुई जब सूरज को गहन लगा हुवा था तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सूरज गहन की नमाज़ अदा कर रही थीं।

(ماخوذ از صحیح البخاری، کتاب الکسوف، باب صلاۃ النساء مع الرجال فی الکسوف، ص۳۱۳، الحدیث:۱۰۵۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अब सूरज ग्रहन की नमाज़ के बारे में मज़ीद कुछ मा'लूमात मुला-हज़ा फ़रमाइये।

सूरज ग्रहन क़ियामत की याद दिलाने के लिये !

चांद ग्रहन को ख़ुसूफ़ और सूरज ग्रहन को कुसूफ़ कहते हैं, रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم ने सूरज ग्रहन की नमाज़ भी पढ़ी है और चांद ग्रहन की भी, नमाज़े कुसूफ़ बा जमाअ़त होती है और चांद ग्रहन की नमाज़ अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा, येह दोनों नमाज़ें सुन्नत हैं, दो दो रक्अ़तें हैं आ़म नमाज़ों की त़रह़ पढ़ी जाएंगी, हां ! इन में क़ियाम रुकूअ़ वग़ैरा बहुत दराज़ होगा। जैसा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा में किया, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सूरज ग्रहन में बहुत दराज़ क़ियाम व रुकूअ़ और सज्दे से नमाज़ पढ़ी कि ऐसा करते मैं ने आप को कभी न देखा।

(صحیح البخاری، کتاب الکسوف، باب الذکر فی الکسوف، ص۳۱۵، الحدیث:۱۰۵۹)

www.dawateislami.net

आस्मानी व ज़मीनी आफ़ात या'नी बारिशों और आंधियों का आना, ज़मीनी ज़ल्ज़ले, किसी के मरने जीने से नहीं बल्कि रब عَزَّوَجَلَّ की कुदरत के इज़्हार के लिये हैं। ऐसे ही चांद सूरज का गहना किसी की मौत ज़िन्दगी की वज्ह से नहीं बल्कि क़ियामत की याद दिलाने और रब की कुदरत ज़ाहिर करने के लिये होते हैं। (ماخوذازمراۃ المناجیح،باب صلاۃ الخسوف،۲/۳۸۴،۳۸۸)

कुफ़्फ़ारे अ़रब का ख़याल था कि किसी बुरे आदमी की पैदाइश या अच्छे आदमी की मौत पर ग्रहन लगता है। नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان को समझाते हुए इर्शाद फ़रमाया : जाहिलिय्यत वाले कहते थे कि सूरज और चांद ज़मीन के किसी **बड़े आदमी** के मरने पर गहते हैं हालां कि सूरज चांद **न किसी की मौत पर गहें न किसी की ज़िन्दगी पर** येह तो **ख़ल्क़े इलाही** में से **दो मख़्लूक़** हैं **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ अपनी मख़्लूक़ में जो चाहे पैदा करता है। (سنن النسائی، کتاب الکسوف، نوع اخر(١٦)، ص٢٥٧، الحدیث:١٤٨٧)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग्रहन देखो तो ज़िक्रुल्लाह करो

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़याल रहे कि कुफ़्फ़ारे अ़रब व मुश्रिकीने हिन्द के ग्रहन के मु-तअ़ल्लिक़ अ़जीब ख़यालात थे, कुफ़्फ़ारे अ़रब कहते थे कि किसी बुरे आदमी की पैदाइश या अच्छे आदमी की वफ़ात पर ग्रहन लगता है। मुश्रिकीने हिन्द का अ़क़ीदा है कि चांद और सूरज पहले इन्सान थे, उन्हों ने भंगियों, चमारों से कुछ क़र्ज़ लिया और अदा न किया इस सज़ा में इन्हें ग्रहन लगता है, चुनान्चे हिन्दू ग्रहन के वक़्त भंगियों को ख़ैरात देते हैं और मांगने वाले भंगी भी कहते हैं कि सूरज महाराज का क़र्ज़ चुकाओ। इस्लाम इन लग्विय्यात से अ़ला-हदा है वोह फ़रमाता है कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुदरत की निशानियां हैं, जब चाहे चांद सूरज को नूरानी कर दे और जब चाहे इन का नूर छीन ले चूंकि येह क़हरे ख़ुदा वन्दी के ज़ुहूर का वक़्त है इस लिये हदीसे पाक में फ़रमाया गया : **"जब तुम येह ग्रहन देखो तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का ज़िक्र करो।"**

(صحیح مسلم، کتاب صلاۃ الکسوف، باب ما عرض علی النبی فی صلاۃ الکسوف...الخ، ص٣٢٦، الحدیث:٩٠٧)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی सूरज ग्रहन के वक़्त ज़िक्र करने की वज्ह बयान करते हुए फ़रमाते हैं : चूंकि येह क़हरे ख़ुदा वन्दी के ज़ुहूर का वक़्त है इस लिये इस वक़्त नमाज़ पढ़ो, दुआएं मांगो, स-दक़ा दो, गुलाम आज़ाद करो ताकि रहम किये जाओ। (مراۃ المناجیح،باب صلاۃ الخسوف،۲/۳۷۹)

www.dawateislami.net

सूरज ग्रहन के वक़्त स-दक़ा करने का भी हुक्म दिया गया है क्यूं कि स-दक़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को बुझाता और बुरी मौत को दूर करता है जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 40 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **"राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल"** सफ़ह़ा 4 पर ह़दीसे पाक मन्कूल है : "**اِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ وَتَدْفَعُ عَنْ مِيْتَةِ السُّوْءِ**" या'नी बेशक स-दक़ा रब عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को बुझाता और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है।" (سنن الترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ما جاء فی فضل الصدقۃ، ص١٨٩، الحدیث:٦٦٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानी पर सज्दा करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानियां देख कर उस के ज़िक्र में मश्ग़ूल हो जाना चाहिये। ह़दीसे पाक में इस की तरग़ीब दी गई है ह़ज़रते सय्यिदुना इक्रिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सुब्ह़ की नमाज़ के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से कहा गया कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार, मह़बूबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मोह़-त-रमा (ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (ब ह़वाला : मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 386)) वफ़ात पा गईं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सज्दे में गिर गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा गया कि क्या इस घड़ी सज्दा करते हैं ? तो उन्हों ने फ़रमाया : क्या हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह इर्शाद नहीं फ़रमाया : जब तुम (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की) कोई निशानी देखो तो सज्दा करो। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बीवियों के तशरीफ़ ले जाने से बड़ी निशानी क्या होगी ? (سُنَنُ التِّرْمِذِی، ابواب المناقب، باب فضل ازواج النبی، ص٨٧٤، الحدیث:٣٨٩٤)

नेक लोगों की वफ़ात से ब-र-कत रुख़्सत हो जाती है

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی **"मिरआतुल मनाजीह़" जिल्द 2** सफ़ह़ा **386** पर इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : येह ह़ज़रात बा ब-र-कत हैं, जिन के वसीले से अ़ज़ाब दूर रहता है, रब की रह़मतें आती हैं, इन की वफ़ात पर **ज़िक्रुल्लाह** तआ़ला, नवाफ़िल और सज्दे ज़ियादा करो, क्यूं कि इन की ह़यात की ब-र-कत तो जाती रही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र की ब-र-कत से अ़ज़ाब दूर है, ख़याल रहे कि अज़्वाजे मुत़ह्हरात (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِنَّ اَجْمَعِیْن) की वफ़ात की त़रह़ सूरज ग्रहन भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानी है। लिहाज़ा इस वक़्त भी ज़िक्र व नफ़्ल और सुजूद चाहिये।

www.dawateislami.net

मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه इसी बाब की एक और ह़दीस के तह़्त सफ़ह़ा **387** पर फ़रमाते हैं : ''ख़याल रहे कि नमाज़ ग्रहन के बा'द दुआ़ मांगना भी सुन्नत है, बैठ कर मांगे या खड़े हो कर क़िब्ला रू हो या क़ौम की त़रफ़ रुख़ करे, इमाम दुआ़ मांगे लोग आमीन कहेंगे, खड़े हो कर दुआ़ मांगे, लाठी या कमान पर टेक लगाना बेहतर है।''

गहन की नमाज़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1250** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **787** पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی सूरज ग्रहन की नमाज़ के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाते हैं : **सूरज गहन** की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा है और **चांद गहन** की नमाज़ मुस्तह़ब। **सूरज गहन** की नमाज़ जमाअ़त से पढ़नी मुस्तह़ब है और तन्हा तन्हा भी हो सकती है और जमाअ़त से पढ़ी जाए तो ख़ुत़्बा के सिवा तमाम शराइत़े जुमुआ़ इस के लिये शर्त़ हैं, वोही शख़्स इस की जमाअ़त क़ाइम कर सकता है जो जुमुआ़ की कर सकता हो वोह न हो तो तन्हा तन्हा पढ़ें घर में या मस्जिद में। (الدر المختار و ردالمحتار، کتاب الصلاة، باب الکسوف، ۳/۷۷-۸۰)

मस्अला : गहन की नमाज़ नफ़्ल की त़रह़ दो रक्अ़त लम्बी लम्बी सूरतों के साथ पढ़ें फिर उस वक़्त तक दुआ़ मांगते रहें कि गहन ख़त्म हो जाए। (الدر المختار وردالمحتار، کتاب الصلاة، باب الکسوف، ۳/۷۹)

मस्अला : गहन की नमाज़ में न अज़ान है न इक़ामत न बुलन्द आवाज़ से क़िराअत।

(الدر المختار وردالمحتار، کتاب الصلاة، باب الکسوف، ۳/۷۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ावन्द की ना शुक्री का वबाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि जब ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, माहे नुबुव्वत, महरे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सूरज ग्रहन की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो लोगों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम ने आप को देखा कि आप ने अपनी इस जगह में कुछ लेने का क़स्द किया, फिर देखा कि आप पीछे हटे। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''**मैं ने जन्नत मुला-ह़ज़ा की तो उस से ख़ोशा लेना चाहा अगर ले लेता तो तुम रहती दुन्या तक खाते रहते** और मैं ने आग देखी और आज के मिस्ल कोई ख़ौफ़नाक मन्ज़र कभी न देखा, मैं ने दोज़ख़ में औ़रतों की ता'दाद ज़ियादा देखी।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह क्यूं ? फ़रमाया : इन के कुफ़्र की वज्ह से। अ़र्ज़

www.dawateislami.net

किया गया : क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ कुफ़्र करती हैं ? फ़रमाया : ख़ावन्द की ना शुक्री और एह़सान फ़रामोशी करती हैं, अगर तुम उन से ज़माने भर तक भलाई करो, फिर तुम्हारी त़रफ़ से कुछ ज़रा सी बात देख लें तो कहें कि मैं ने तुम से कभी भलाई न देखी।

(صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب کفران العشیروھو الزوج ...الخ، ص۱۳۳۷، الحدیث:۵۱۹۷)

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى **''मिरआतुल मनाजीह़'' जिल्द 2 सफ़ह़ा 381, 382** पर इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : जन्नत सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने आ गई या जन्नत के पास प्यारे आक़ा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पहुंच गए और इस के अंगूर के ख़ोशे को हाथ भी लगा दिया, क़रीबन तोड़ ही लिया था, इरादा येह था कि इस का ख़ोशा तुम्हें और क़ियामत तक के मुसल्मानों को दिखा दें और खिला दें, मगर ख़याल येह आ गया कि फिर जन्नत ग़ाइब न रहेगी और ईमान बिलग़ैब न रहेगा। ख़याल रहे कि जन्नत के फलों को फ़ना नहीं। रब तआला फ़रमाता है :

اُكُلُهَا دَآىٕمٌ (پ۱۳، الرعد:۳۵) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** इस के मेवे हमेशा।

लिहाज़ा अगर वोह ख़ोशा दुन्या में आ जाता तो तमाम दुन्या खाती रहती वोह वैसा ही रहता।

ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इसी ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : उस ख़ोशे से जो दाना तुम खा लेते वहां फ़ौरन दूसरा दाना लग जाता जैसा कि बिहिश्त के मेवों की ख़ासिय्यत है। (اَشِعَّةُ اللَّمعَات(مترجم)، کتاب الصّلاۃ، باب صلاۃ الخسوف،۲/۷۰۵)

देखो ! चांद सूरज का नूर, समुन्दर का पानी, हवा लाखों साल से इस्ति'माल में आ रहे हैं कुछ कमी नहीं आई।

इस ह़दीस से दो मस्अले मा'लूम हुए : एक येह कि हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم जन्नत और वहां के फलों वग़ैरा के मालिक हैं कि ख़ोशा तोड़ने से रब (عَزَّوَجَلَّ) ने मन्अ़ न किया ख़ुद न तोड़ा। क्यूं न हो कि रब तआला फ़रमाता है : اِنَّاۤ اَعْطَیْنٰكَ الْكَوْثَرَؕ इसी लिये हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सह़ाबा को कौसर का पानी बारहा पिलाया। दूसरे येह कि हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को रब तआला ने वोह त़ाक़त दी है कि मदीने में खड़े हो कर जन्नत में हाथ डाल सकते हैं और वहां तसर्रुफ़ कर सकते हैं, जिन का हाथ मदीने से जन्नत में पहुंच सकता है, क्या उन का हाथ हम जैसे गुनहगारों की दस्त गीरी के वासित़े नहीं पहुंच सकता और अगर येह कहो कि जन्नत क़रीब आ गई थी तो जन्नत और वहां की ने'मतें हर जगह ह़ाज़िर हुईं, बहर ह़ाल इस ह़दीस से या हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ह़ाज़िर मानना पड़ेगा या जन्नत को।

मुफ़्ती साहि़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : इस से (येह भी) मा'लूम हुवा कि

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की निगाह आयिन्दा वाक़िआत को देख लेती है क्यूं कि दोज़ख़ियों का दोज़ख़ में जाना क़ियामत के बा'द होगा जिसे हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم आज ही देख रहे हैं, जैसे हम ख़्वाबो ख़याल में आयिन्दा वाक़िआत को देख लेते हैं। ख़याल रहे कि पहले दोज़ख़ में औ़रतें ज़ियादा होंगी और जन्नत में मर्द ज़ियादा, मगर बा'द में औ़रतें ज़ियादा हो जाएंगी, इस त़रह़ कि दोज़ख़ी औ़रतें मुआ़फ़ी से या सज़ा भुगत कर जन्नत में पहुंच जाएंगी अगर्चे मर्द मुआ़फ़ी पा कर आएंगे मगर इन की ता'दाद औ़रतों से थोड़ी होगी लिहाज़ा येह ह़दीस उस के ख़िलाफ़ नहीं जिस में फ़रमाया गया कि जन्नत में अदना जन्नती के निकाह़ में दुन्या की औ़रतें होंगी क्यूं कि यहां इब्तिदा का ज़िक्र है और इस ह़दीस में इन्तिहा का। औ़रत की फ़ित़रत में येह बात है कि किसी का एह़सान याद नहीं रखती, बुराई याद रखती है, येह इस्लाम के ख़िलाफ़ है। (مراۃ المناجیح، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الخسوف،۲/۳۸۲-۳۸۳)

मोह़सिन का शुक्र अदा करना चाहिये, एह़सान फ़रामोश नहीं होना चाहिये, चुनान्चे शुक्रिया का हुक्म बयान करते हुए **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **125** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"शुक्र के फ़ज़ाइल"** सफ़ह़ा **47** पर इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : **مَنْ لَمْ يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ الله** या'नी जो लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र अदा नहीं कर सकता।

(مسند احمد، مسند ابی ھریرہ، ۴/۹۹ الحدیث:۷۷۱۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम औ़रतों की अक्सर आ़दत है कि ज़रा किसी घराने या किसी औ़रत के कपड़ों या ज़ेवरात को अपने से अच्छा देख लिया तो ख़ुदा की ना शुक्री करने लगती हैं और कहने लगती हैं कि ख़ुदा ने हमें ना मा'लूम किस जुर्म की सज़ा में मुफ़्लिस और ग़रीब बना दिया, ख़ुदा का हम पर कोई फ़ज़्ल ही नहीं होता, मैं बद क़िस्मत ऐसे फूटे नसीब ले कर आई हूं कि न मयके में सुख नसीब हुवा, न सुसराल में ही कुछ देखा, फ़ुलानी फ़ुलानी घी दूध में नहा रही है और मैं फ़ाक़ों से मर रही हूं। इसी त़रह़ औ़रत की आ़दत है कि उस का शोहर अपनी त़ाक़त भर कपड़े, ज़ेवरात, साज़ो सामान देता रहता है लेकिन अगर कभी किसी मजबूरी से उस की कोई फ़रमाइश पूरी न कर सका तो कहने लगती है कि **तुम्हारे घर में कभी सुख नसीब नहीं हुवा।** इस उजड़े घर में हमेशा तंगदस्त व भूकी ही रही, कभी भी तुम्हारी त़रफ़ से मैं ने कोई भलाई देखी ही नहीं। मेरी क़िस्मत फूट गई, तुम्हारे जैसे फ़क़ीर से बियाही गई, मेरे मां बाप ने मुझे भाड़ में झोंक दिया। इस क़िस्म की ना शुक्री करती और जली कटी बातें सुनाती रहती हैं। इसी वज्ह से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"मैं ने जहन्नम में ज़ियादा ता'दाद औ़रतों की देखी।"** जैसा ऊपर ह़दीसे पाक में ज़िक्र किया गया।

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिये ! खुदा के इन्आमों और शोहर या दूसरों के एह्सानों की ना शुक्री बहुत ही बुरी आदत और बहुत बड़ा गुनाह है। हर मुसल्मान पर लाज़िम है कि वोह हमेशा अपने से कमज़ोर और गिरी हुई हालत वालों को देखा करे जैसा कि ह़दीसे पाक में है कि "जिस ने **दीन (के मुआ-मले) में अपने से बेहतर** शख़्स को देख कर उस की इक़्तिदा की और जिस ने **दुन्या (के मुआ-मले) में अपने से कमतर** को देख कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल पर उस का शुक्र अदा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे साबिरो शाकिर लिख देता है।"

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، ابواب صفة القیامة والرقائق والورع، باب۵۸، ص۵۹۳، الحدیث:۲۰۱۲)

अगर येह बात हमेशा ज़ेह्न नशीन रहे कि अगर मेरे पास घटिया कपड़े और ज़ेवर हैं तो खुदा का शुक्र है कि फुलां और फुलानी से तो हम बहुत ही अच्छी हालत में हैं कि उन लोगों को बदन ढांपने के लिये फटे पुराने कपड़े भी नसीब नहीं होते। इसी त़रह़ अगर मेरे शोहर ने मेरे लिये मा'मूली गिज़ा का इन्तिज़ाम किया है तो इस पर भी शुक्र है क्यूं कि फुलानी फुलानी औरतें तो फ़ाक़ा किया करती हैं। बहर ह़ाल अगर अपने से कमज़ोर और ग़रीबों पर नज़र रखेंगी तो शुक्र अदा करेंगी और अगर अपने से मालदारों पर नज़र करेंगी तो ना शुक्री की बला में फंस कर अपने दीन व दुन्या को तबाह व बरबाद कर डालेंगी। इस लिये ज़रूरी है कि ना शुक्री की आदत छोड़ कर हमेशा खुदा के इन्आमों और शोहर वग़ैरा के एह्सानों का शुक्रिया अदा करते रहना चाहिये। **अल्लाह तबा-र-क व तआला** कुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाता है :

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّكُمْ وَ لَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِیْ لَشَدِیْدٌ ۝ (پ۱۳، ابراهیم:۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर एह्सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा और अगर ना शुक्री करो तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है।

इस आयते मुबा-रका ने ए'लान कर दिया कि शुक्र अदा करने से खुदा की ने'मतें बढ़ती जब कि ना शुक्री से अ़ज़ाबे इलाही नाज़िल होता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रिज़ाए इलाही के लिये बाहम मह़ब्बत करने के फ़ज़ाइल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमेशा ऐसी सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये जिस से इबादत का शौक़ और सुन्नत पर अ़मल करने का ज़ौक़ बढ़े। हम-नशीन ऐसा हो जिसे देख कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए, उस की बातों से नेकियों की त़रफ़ रग़बत बढ़े, दुन्या की मह़ब्बत में कमी और आख़िरत की उल्फ़त में ज़ियादती हो। मुसाहिब ऐसा हो कि उस के सबब

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत में इज़ाफ़ा हो। इस के बर अ़क्स बुरी सोहबत इख़्तियार करने में ज़बर दस्त नुक़्सान होता है अच्छी सोहबतों की भी क्या ख़ूब ब-र-कत है कि गुनाहों से भी बचत होती रहती है और लोग भी महब्बत करते हैं। ग़ैर सन्जीदा ह-र-कतें करने वालियों, फ़ेशन परस्तों और बे नमाज़ियों की सोहबत से बचना चाहिये। **आइये !** अब अच्छों की सोहबत में बैठने की म-दनी बहार भी सुनिये कि अच्छी सोहबत किस त़रह़ गुनाहों भरी ज़िन्दगी से छुटकारा दिलाती है। चुनान्चे,

मैं रोज़ाना तीन, चार फ़िल्में देख डालती !

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि **दा'वते इस्लामी** के मुश्कबार **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होने से क़ब्ल मैं एक मोडर्न लड़की थी। दुन्यवी ता'लीम ह़ासिल करने का जुनून की ह़द तक **शौक़** था, **फ़िल्म बीनी** का भूत तो कुछ ऐसा सुवार था कि मैं एक रात में **तीन तीन, चार चार फ़िल्में** देख डालती ! और مَعَاذَاللہ गानों की भी ऐसी रसिया थी कि घर का कामकाज करते वक़्त भी टेप रेकॉर्डर पर ऊंची आवाज़ से **गाने** लगाए रखती। मेरी एक बहन (जो शादी हो जाने के बा'द दूसरे शह्र में रिहाइश पज़ीर थीं) को **दा'वते इस्लामी** से बड़ी महब्बत थी। वोह जब कभी **बाबुल मदीना** (कराची) आतीं तो इतवार के दिन **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में होने वाले **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में ज़रूर शिर्कत करतीं, रात में इ़श्क़े रसूल में डूबी हुई पुरसोज़ ना'तें सुना करतीं, जिस की वज्ह से मुझे गाने सुनने का मौक़अ़ न मिलता, चुनान्चे मुझे उन पर बहुत **ग़ुस्सा** आता बल्कि कभी कभी तो उन से लड़ पड़ती ! एक मर्तबा जब वोह बाबुल मदीना आईं तो क़रीब बुला कर निहायत शफ़्क़त से कहने लगीं : "जो बेहूदा फ़िल्में और डिरामे देखता है वोह अ़ज़ाब का ह़क़दार है।" मज़ीद **इन्फ़िरादी कोशिश** जारी रखते हुए बिल आख़िर उन्हों ने मुझे **फ़ैज़ाने मदीना** में होने वाले **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करने पर राज़ी कर लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की। इत्तिफ़ाक़ से उस दिन वहां बयान का मौज़ूअ़ भी **टीवी की तबाह कारियां**(1) था येह बयान सुन कर मेरे दिल की कैफ़िय्यत बदलना शुरूअ़ हो गई, रिक्क़त अंगेज़ **दुआ़** ने सोने पर सुहागे का काम किया, दौराने दुआ़ मुझ पर रिक्क़त त़ारी और आंखों से आंसू जारी थे, मैं ने सच्चे दिल से अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से

(1)...... शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की आवाज़ में ऑडियो और विडियो केसिट और इसी बयान का रिसाला मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब कीजिये। (इल्मिय्या)

www.dawateislami.net

तौबा भी कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! जब मैं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से वापस घर की त़रफ़ रवाना हुई तो मेरा दिल टीवी के गुनाहों भरे प्रोग्रामों और गानों बाजों से **बेज़ार** हो चुका था। इज्तिमाअ़ से वापसी पर अपने कमरे में मौजूद कार्टूनों की **तसावीर** उतार कर **का'बए मुशर्रफ़ा** और **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के प्यारे प्यारे तुग़रे आवेज़ां कर दिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ता दमे तह़रीर मैं **जामिअ़तुल मदीना** (लिल बनात) में दर्से निज़ामी की ता'लीम ह़ासिल कर रही हूं नीज़ अपने अ़लाक़े में अ़लाक़ाई मुशा-वरत की ख़ादिमा (ज़िम्मादार) की हैसिय्यत से **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम करने के लिये भी कोशां हूं। (इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 302)

सरकार ! चार यार का देता हूं वासित़ा
ऐसी बहार दो न ख़ज़ां पास आ सके

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ करवाने का नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना हुमरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वुज़ू के लिये पानी मंगवाया जब कि आप एक सर्द रात में नमाज़ के लिये बाहर जाना चाहते थे मैं उन के लिये पानी ले कर ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपना चेहरा और दोनों हाथ धोए। (येह देख कर) मैं ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को किफ़ायत करे रात तो बहुत ठन्डी है।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना "जो बन्दा कामिल वुज़ू करता है उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।" (اَلتَّرْغِيب وَالتَّرْهِيب لِلْمُنْذِرِى، ۱/۹۳، الحديث:۱۱)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बयान ﴾6﴿...... सय्यि-दतुना आइशा की सख़ावत

100 हाजतों का पूरा होना

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ **56** सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "**फ़ैसला करने के म-दनी फूल**" सफ़हा **1** पर है : मदीने के सुल्तान, रहमते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है :
مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَلَيْلَةَ الْجُمُعَةِ مِائَةً مِّنَ الصَّلَاةِ قَضَى اللّٰهُ لَهٗ مِائَةَ حَاجَةٍ سَبْعِيْنَ مِنْ حَوَائِجِ الْاٰخِرَةِ وَثَلَاثِيْنَ مِنْ حَوَائِجِ الدُّنْيَا
या'नी जो मुझ पर जुमुआ़ के दिन और रात **100** मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की **100** हाजतें पूरी फ़रमाएगा **70** आख़िरत की और **30** दुन्या की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस दुरूदे पाक को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तहाइफ़ पेश किये जाते हैं बिला शुबा मेरा इ़ल्म मेरे विसाल के बा'द वैसा ही होगा जैसा कि मेरी ह़यात में है।"

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الميم، ۷/۱۹۹، الحديث:۲۲۳۵۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जूदो सख़ा की इन्तिहा

उम्महातुल मुअमिनीन के फ़ज़ाइलो मनाक़िब के मु-तअ़ल्लिक़ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **59** सफ़हात पर मुश्तमिल ईमान अफ़्रोज़ किताब "**उम्महातुल मुअमिनीन**" सफ़हा **34** पर मन्कूल है : **जलीलुल क़द्र** ताबेई व मुहद्दिस हज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने **उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا **को सत्तर हज़ार दिरहम राहे ख़ुदा में स-दक़ा करते देखा ह़ालां कि उन की क़मीस के मुबारक दामन में पैवन्द लगा हुवा था।** (مدارج النبوت(فارسی)، قسم پنجم، باب دوم، دروذکر ازواج مطہرات، ۲/۴۷۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! माले दुन्या कम हो या ज़ियादा जब तक हमारे हाथ में न आए हम स-दक़ातो ख़ैरात पर मुश्तमिल नेक इरादों के ख़ूब बड़े बड़े पुल बांधते हैं और जब येह मालो अस्बाब हमारे क़ब्ज़े में आने लग पड़ता है तो ख़ैरातो स-दक़ात करने के जज़्बात कम

www.dawateislami.net

और कमज़ोर होना शुरूअ़ हो जाते हैं।

70 हज़ार दिरहम की मालिका पैवन्द दार लिबास पर ही क़नाअ़त करते हुए जूदो सख़ावत का मुज़ा-हरा फ़रमाएं और हमारी येह ह़ालत कि इज़ाफ़ए माल की त़लब के साथ साथ ज़ाती ज़रूरिय्यात पर अख़राजात तक काफ़ी नहीं बल्कि मज़ीद से मज़ीद तर सुहूलिय्यात के हुसूल की हवस बढ़ती चली जाए, हम रोज़ाना नए से नए लिबास पहनें, नित नए फ़ेशन का सूट सिलवाएं और ख़ूब अपनी अमीरी को ज़ाहिर करें। ज़रा मुवा-ज़ना तो करें उन के पास जितना माल आए सब राहे ख़ुदा में ख़र्च हो जाए, हमारे पास जितना आए सब जाइज़ व ना जाइज़ ख़्वाहिशात पूरी करने और तिजोरी भरने के काम आए। वहां फ़ु-क़रा ख़ैरात पाते और यहां धक्के खाते। उन का माल सरासर बराए ख़ुदा और हमारा सारे का सारा माल बराए ख़्वाहिशाते दुन्या। वोह इस दौलत को नेकियों में इज़ाफ़े का सबब बनाएं और हम इस दौलत से अपने अन्दर हुब्बे मालो जाह के जज़्बात बढ़ाएं। येह एक इज्माली तक़ाबुल है जो उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरत और हमारी मौजूदा ह़ालत के दरमियान पाया जाता है।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सख़ावत मुला-ह़ज़ा फ़रमाई कि सारा माल राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिया ह़ालां कि ख़ुद पैवन्द दार लिबास ज़ैबे तन फ़रमाया हुवा था। पैवन्द दार लिबास की क्या फ़ज़ीलत है, येह भी मुला-ह़ज़ा कीजिये !

पैवन्द दार लिबास की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते इमाम अबू नुऐ़म अह़मद बिन **अ़ब्दुल्लाह** अस्फ़हानी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की ख़िदमते बा ब-र-कत में अ़र्ज़ की गई : **یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْن! لِمَ تُرَقِّعُ قَمِیْصَکَ** या'नी ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! आप अपनी क़मीस में पैवन्द क्यूं लगाते हैं ? फ़रमाया : इस से दिल नर्म रहता है और मोमिन इस की पैरवी करता है। **(حلیۃ الاولیاء، علی بن ابی طالب، ۱/۱۲۴، الرقم:۲۵۴)**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपनी सहूलत की सूरत में नहीं बल्कि अपनी ज़रूरत पर दूसरों की ज़रूरत को मुक़द्दम रखने और ख़ुद रूखी सूखी पर गुज़ारा कर के दूसरों के पेट भरने की मिसाले बे मिसाल मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं, चुनान्चे

www.dawateislami.net

खु़द भूके रह कर दूसरों के पेट पाले !

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **1548** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा **1429** पर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं **: उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا बहुत सखी़ थीं। एक दफ़्आ़ ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन जु़बैर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने उन की खि़दमत में **एक लाख दराहिम** भेजे तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने वोह सब दिरहम **एक ही रोज़ में राहे खु़दा में तक़्सीम कर दिये** और उस रोज़ आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا खु़द रोजे़ से थीं। शाम के वक़्त बांदी ने अ़र्ज़ की : क्या ही अच्छा होता कि एक दिरहम रोटी के लिये रख लेतीं। तो फ़रमाया : मुझे याद नहीं रहा, याद रहता तो बचा लेती। (مدارج النبوت(فارسی)، قسم پنجم، باب دوم، درذکر ازواج مطہرات، ۲/۴۷۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने वुस्अ़त के बा वुजूद इन्तिहाई सादा और ज़ाहिदाना ज़िन्दगी गुज़ारी और जो दौलत भी ह़ाज़िर हुई आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने राहे खु़दा में तक़्सीम फ़रमा दी यहां तक कि **लाख दराहिम** आए वोह भी लुटा दिये और रोज़ा इफ़्त़ार करने के लिये भी कोई एहतिमाम न फ़रमाया और एक हम हैं कि अगर कभी नफ़्ल रोज़ा रख भी लें तो हमें इफ़्त़ार के वक़्त हमा अक़्साम के फल, कबाब, समोसे, ठन्डा ठन्डा शरबत और न जाने क्या क्या चाहिये। बहर ह़ाल हमें उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के नक़्शे क़दम पर चलना चाहिये और दौलत से इस क़दर मह़ब्बत नहीं रखनी चाहिये कि राहे खु़दा में ख़र्च करने के मुआ़-मले में दिल तंग हो।

फ़क़ीरों, ग़रीबों और मिस्कीनों पर जब भी ख़र्च करने का ज़ेह्न हो तो दिली कुशा-दगी के साथ ख़र्च किया जाए कि इस की भी ब-र-कतें मिलती हैं। येह ह़क़ीक़त है कि जो शख़्स किसी की मदद करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मदद करता है। दूसरों का ख़ैर ख़्वाह कभी ना मुराद नहीं होता, जो किसी पर रह़्म करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़्म करता है। स-दक़ा व ख़ैरात से माल में ब-र-कत होती है और जो लोग दिल में माल की मह़ब्बत नहीं बिठाते वोही लोग सख़ावत जैसी ने'मत से ह़िस्सा पाते हैं और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उम्मीदे वासिक़ रखे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को कभी रुस्वा नहीं फ़रमाता। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे

www.dawateislami.net

मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ **411 सफ़हात** पर मुश्तमिल किताब **"उ़यूनुल हिकायात" हिस्सए अव्वल** सफ़हा **212** पर इमाम अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की ज़िक्र कर्दा हिकायत का ख़ुलासा है :

ख़राब मछली से क़ीमती मोती का ज़ुहूर

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन नासेह़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ النَّافِع फ़रमाते हैं : "एक ग़रीब शख़्स बहुत इ़बादत गुज़ार और कसीरुल अ़याल था। घर का ख़र्च ऊन की रस्सियां फ़रोख़्त कर के पूरा करता और जितना मिल जाता उस पर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र बजा लाता। एक मर्तबा वोह नेक शख़्स ऊन की रस्सियां बेचने बाज़ार गया। वापसी पर घर वालों के लिये खाने का सामान ख़रीदने लगा तो एक शख़्स आया और कहने लगा : "मैं सख़्त ह़ाजत मन्द हूं, मुझे कुछ रक़म दे दो।" उस रह़्म दिल इ़बादत गुज़ार शख़्स ने वोह सारी रक़म उस ग़रीब ह़ाजत मन्द साइल को दे दी और ख़ुद ख़ाली हाथ घर लौट आया। जब घर वालों ने खाने का पूछा : तो उस ने जवाब दिया : "एक शख़्स जो हम से ज़ियादा ह़ाजत मन्द था, मैं ने सारी रक़म उस को दे दी।" घर वालों ने कहा : "अब हम किस त़रह़ गुज़ारा करें ?" वोह नेक शख़्स घर में रखे हुए एक टूटे पियाले और घड़े को उठा कर बाज़ार की त़रफ़ इस उम्मीद पर चल पड़ा कि शायद इन्हें कोई ख़रीद ले ताकि मैं अपने घर वालों के लिये कुछ खाने का सामान ले आऊं। वोह बाज़ार में एक ऐसे शख़्स के पास से गुज़रा जिस के पास एक फूली हुई मछली थी। मछली वाले ने कहा : "तू मेरा ख़राब माल अपने ख़राब माल के बदले ख़रीद ले (या'नी येह टूटा हुवा पियाला और घड़ा मुझे दे दे और मुझ से येह फूली हुई मछली ले ले)।" उस आ़बिद ने येह सौदा मन्ज़ूर कर लिया और मछली ले कर घर पलट आया (और घर वालों के ह़वाले कर दी)।

जब उन्हों ने उस मछली को देखा तो कहने लगे : **"हम इस बेकार मछली का क्या करें ?"** उस आ़बिद शख़्स ने कहा : "तुम इसे भून लो हम इसे ही खा लेंगे, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ज़ात से उम्मीद है कि वोह तुम को रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा।" चुनान्चे घर वालों ने **मछली का पेट चाक किया तो उस के अन्दर से एक निहायत क़ीमती मोती निकला।**

फिर जब सुब्ह़ हुई तो वोह इ़बादत गुज़ार उस मोती को ले कर जौहरी के पास गया और उस से उस की क़ीमत के बारे में पूछा। तो जौहरी कहने लगा : "इस क़दर क़ीमती मोती तेरे पास कहां से आया ?" उस नेक आदमी ने जवाब दिया : "हमें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने येह रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाया है।" जौहरी ने कहा : "येह तो बहुत क़ीमती मोती है, मैं इस की क़ीमत अदा नहीं कर सकता, तुम फ़ुलां जौहरी के पास चले जाओ वोह तुम्हें इस की क़ीमत दे सकेगा।"

www.dawateislami.net

चुनान्चे वोह नेक शख़्स उस मोती को ले कर दूसरे जौहरी के पास पहुंचा। जब उस ने क़ीमती मोती देखा तो **70** हज़ार (दिरहम) में ख़रीद लिया। **जब** वोह नेक शख़्स **70** हज़ार (दिरहम) ले कर घर पहुंचा तो इतने में एक फ़िरिश्ता सुवाली के रूप में आया और कहने लगा : "मुझे उस माल में से कुछ माल दे दो जो तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अ़ता किया है।" नेक शख़्स कहने लगा : "हम भी कल तक तुम्हारी त़रह़ मोह़ताज और ग़रीब थे। तुम इस में से आधा माल ले जाओ।" फिर उस ने माल तक़्सीम किया और उस का आधा ह़िस्सा (उस साइल को देने के लिये) पकड़ा। येह देख कर उस साइल ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ब-र-कतें अ़ता फ़रमाए, मैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक फ़िरिश्ता हूं, मुझे तुम्हारी आज़्माइश के लिये भेजा गया था।"

(عُيُونُ الحِكايات، الحكاية الخامسة عشر بعد المائة، حكاية الرجل الفقير وحب اللؤلؤ، ص١٣٣، ملتقطًا)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़िकायत में एक नेक शख़्स की सख़ावत और यक़ीने कामिल की अ़ज़ीम मिसाल मौजूद है कि ख़ुद अपने लिये खाने की शदीद ह़ाजत के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर अपना ह़िस्सा अपने दूसरे ह़ाजत मन्द भाई को दे दिया, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भी उसे ऐसा नवाज़ा और ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाया जहां से उस का वहमो गुमान भी न था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हर वक़्त अपनी रह़मते कामिला का साया अ़ता फ़रमाए रखे और ईसार व सख़ावत और यक़ीने कामिल की अ़ज़ीम ने'मतें अ़ता फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सख़ावत और नेक निय्यती का स-मरा माल में ख़ैरो ब-र-कत और माल की फ़िरावानी जब कि बख़ीली व बद निय्यती का नतीजा माल की हलाकत व बरबादी है, बत़ौरे इब्रत एक वाक़िआ़ मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

बद निय्यती का अ-सरे बद

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आस्मान पर उठा लिये जाने के थोड़े दिनों बा'द का वाक़िआ़ है कि यमन में "सन्आ़" शह्र से छे[6] मील की दूरी पर "सरवान" नामी एक बाग़ था। उस बाग़ का मालिक फलों को तोड़ने के वक़्त फ़क़ीरों और मिस्कीनों को बुलाता था और हवा से गिरने और नीचे बिछी हुई चादर से अलग गिरने वाले फल उन के लिये छोड़ देता था। इस त़रह़ उस बाग़ का बहुत सा फल फु-क़रा व मसाकीन को मिल जाया करता था। बाग़ का मालिक मर गया तो उस के तीनों बेटे उस बाग़ के मालिक हुए जो बहुत बख़ील थे। उन लोगों ने आपस में तै कर लिया कि अगर फ़क़ीरों और मिस्कीनों को हम लोग बुलाएंगे तो बहुत सा फल येह लोग ले जाएंगे और हमारे अहलो इयाल की रोज़ी में तंगी हो जाएगी।

www.dawateislami.net

चुनान्चे उन्हों ने क़सम खाई कि सूरज निकलने से क़ब्ल ही चल कर हम लोग बाग़ के फल तोड़ लें ताकि फु-क़रा व मसाकीन को ख़बर ही न हो। ना गहां रात ही में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बाग़ में एक आग भेज दी जिस ने पूरे बाग़ को जला कर ख़ाकिस्तर कर दिया और उन लोगों को ख़बर भी न हुई। येह लोग अपने मन्सूबे के मुताबिक़ रात के आख़िरी हिस्से में जब बाग़ के पास पहुंचे तो वहां जले हुए दरख़्तों को देख कर हैरान रह गए। उन्हों ने कहा कि हम लोग रास्ता भूल गए हैं फिर ग़ौरो फ़िक्र के बा'द उन को पता चला कि हम रास्ता नहीं भूले बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें फलों से महरूम कर दिया है मगर उन में से जो ब निस्बत दूसरे भाइयों के कुछ नेक नफ़्स था। उस ने कहा कि मैं ने तुम को न कहा था कि ऐसा काम न करो इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी नहीं होता लिहाज़ा तुम लोग ख़ुदा की तस्बीह़ पढ़ो और अपने इरादे से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो, तो उन सब ने कहा : हमारे रब के लिये पाकी है, हम लोग यक़ीनन ज़ालिम हैं कि हम ने फु-क़रा व मसाकीन का ह़क़ मारा है फिर वोह तीनों भाई एक दूसरे को मलामत करते हुए कहने लगे :

قَالُوْا یٰوَیْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا طٰغِیْنَ ﴿۳۱﴾ عَسٰى رَبُّنَاۤ اَنْ یُّبْدِلَنَا خَیْرًا مِّنْهَاۤ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿۳۲﴾ (پ۲۹، القلم: ۳۱،۳۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बोले हाए ख़राबी हमारी बेशक हम सरकश थे उम्मीद है कि हमें हमारा रब इस से बेहतर बदल दे हम अपने रब की त़रफ़ रग़बत लाते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : उन लोगों ने सच्चे दिल से तौबा कर ली तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन लोगों की तौबा क़बूल फ़रमाई और फिर उन को उस के बदले एक दूसरा बाग़ अ़ता फ़रमा दिया, उस बाग़ का नाम "ह़ैवान" था और उस में अंगूर का एक ख़ोशा ख़च्चर का बोझ हो जाया करता था। ह़ज़रते अबू ख़ालिद यमानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه का बयान है कि मैं उस बाग़ में गया था तो मैं ने देखा कि उस बाग़ में अंगूरों के ख़ोशे ह़बशी आदमी के क़द के बराबर बड़े थे। (تفسیرُ الصاوی، پ۲۹، سورۃ القلم، تحت الآیۃ:۱۷تا۳۲، ۳/۱۵۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن की सीरत का मुता-लआ़ करने से येह बात रोज़े रोशन की त़रह़ आशकार होती है कि हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को जब दौलते दुन्या मिली तो उन्हों ने जूदो सख़ा कर के बारगाहे ख़ुदा में क़ुर्ब पाने की कोशिश की और आज हमारी अक्सरिय्यत माले दुन्या से सख़ावत करना तो दूर की बात है सिर्फ़ कमाने और संभालने की फ़िक्र में इर्शादे ख़ुदा वन्दी और अह़कामे शर-ई को भी भुलाए हुए है। ऐसा माल जो रब्बे ज़ुल जलाल से दूर कर दे तो वोही वबाले जान बन जाता है, इस अम्र का मुशा-हदा तो ब

www.dawateislami.net

आसानी किया जा सकता है कि ह़िर्स व लालच ज़ियादा से ज़ियादा जम्अ़ माल ही की त़रफ़ राग़िब करते और बुख़्ल जैसी सि-फ़ते बद पैदा करते हैं जिस की वज्ह से माले दुन्या का ह़रीस राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने से भी कतराता है। अच्छे आ'माल और राहे ख़ुदाए ज़ुल जलाल में दिया हुवा माल तो काम आता है मगर जो कुछ धन दौलत पीछे छोड़ आता है उस में भलाई का इम्कान न होने के बराबर होता है। इसी बात के पेशे नज़र मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "**अपनी ज़िन्दगी तन्दुरुस्ती में अपने हाथ से ख़ैरात कर जाए,** येह बुरा है कि ज़िन्दगी में कन्जूस रहे, मरते वक़्त वसिय्यत करे या उम्मीद करे कि मेरे वारिस मेरी त़रफ़ से स-दक़ा व ख़ैरात किया करेंगे **येह शैत़ानी धोका** है।" (مرآۃ المناجیح،کتاب الرقاق،۷/۱۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सख़ावत ब नज़रे शरीअ़त व त़रीक़त

शारेहे ह़दीस, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی "**मिरआतुल मनाजीह़**" में फ़रमाते हैं : **शरीअ़त में सख़ावत** का अदना द-रजा येह है कि **इन्सान फ़र्ज़ स-दक़े अदा करे** और त़रीक़त में अदना द-रजा येह है कि सिर्फ़ फ़र्ज़ पर क़नाअ़त न करे, नवाफ़िल स-दक़े भी दे, ह़क़ीक़त व मा'रिफ़त वालों के हां इस का अदना द-रजा येह है कि कि अपनी ज़रूरिय्यात पर दूसरों की ज़रूरिय्यात को तरजीह़ दे। इन में से हर द-रजे के स-दक़े के नतीजे मुख़्तलिफ़ हैं। (مرآۃ المناجیح،کتاب الزکاۃ،باب الانفاق وکراھیۃ الامساک،۳/۹۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोटी के बदले गोश्त

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी है कि एक मिस्कीन ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से सुवाल किया जब कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا रोज़े से थीं और घर में सिवाए एक रोटी के कुछ न था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अपनी बांदी से फ़रमाया : इसे वोह रोटी दे दो, तो बांदी ने कहा : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की इफ़्त़ारी के लिये इस के सिवा कुछ नहीं। सय्यिदह आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया : इसे वोह रोटी दे दो। बांदी कहती हैं : तो मैं ने वोह रोटी उसे दे दी। जब शाम हुई तो अहले बैत या उस शख़्स ने हदिय्या भेजा जो हमें बकरी (का गोश्त) हदिय्या करता था और उस को ढांप कर लाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने

www.dawateislami.net

ख़ादिमा को बुला कर फ़रमाया : ''كُلِيْ مِنْ هٰذَا خَيْرٌ مِّنْ قُرْصِكِ **या'नी लो, इस में से खाओ येह तुम्हारी उस रोटी से बेहतर है।''** (شُعَبُ الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل فیما جاء فی الایثار،۳/۲٦۰، الحدیث:۳٤۸۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

स-दक़े से माल में कमी नहीं आती

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा कि राहे ख़ुदा में दी जाने वाली चीज़ हरगिज़ ज़ाएअ़ नहीं होती आख़िरत में अज्रो सवाब की ह़क़दारी तो है ही, बा'ज़ अवक़ात दुन्या में भी इज़ाफ़े के साथ हाथों हाथ इस का ने'मल बदल अ़ता किया जाता है जैसा कि आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बांदी रोटी साइल को देने से हिच-किचाई कि उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इफ़्त़ार किस से करेंगी ? मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का रब तआ़ला की ज़ात पर तवक्कुल था कि शाम आएगी तो इस का भी इन्तिज़ाम हो जाएगा और हुवा भी यूं कि जैसे ही शाम का वक़्त आया तो एक ऐसे शख़्स की त़रफ़ से हदिय्या आया जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया करता था उस ने पूरी बकरी का गोश्त हदिय्या कर दिया। येह सब ब-रकात राहे ख़ुदा में कुशादा दिली के साथ ख़र्च करने और तवक्कुल की हैं और येह बात तो यक़ीनी है कि राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने से बढ़ता ही है घटता नहीं जैसा कि ह़दीसे पाक में है, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार, मह़बूबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**مَا نَقَصَتْ صَدَقَةٌ مِّنْ مَّالٍ** या'नी स-दक़ा माल में कमी नहीं करता।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب استحباب العفو والتواضع، ص۱۰۰۲، الحدیث:۲۵۸۸)

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ाफ़िज़ मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले क़ुरआन कन्ज़ुल ईमान मअ़ **''तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान''**, सफ़्ह़ा **93** पर पारह **3**, **सू-रतुल ब-क़रह** आयत नम्बर **265** के तह़्त फ़रमाते हैं : बा इख़्लास मोमिन का स-दक़ा और इन्फ़ाक़ ख़्वाह कम हो या ज़ियादा हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को बढ़ाता है।

ऐसी एक और तरग़ीब भरी ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये जिस में सख़ावत की हाथों हाथ ब-र-कत ज़ाहिर हुई। और येह ज़ेह्न बनाइये कि सख़ावत करते वक़्त दुन्यवी फ़वाइद की बजाए उख़रवी फ़ज़ाइल को मद्दे नज़र रखना है, चुनान्चे

www.dawateislami.net

आटे के बदले पकी हुई रोटियां

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **403** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه एक ह़िकायत नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़-जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के दरवाज़े पर एक साइल ने सदा लगाई। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ौजए मोह़-त-रमा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا गुंधा हुवा आटा रख कर पड़ोस से आग लेने गई थीं ताकि रोटी पकाएं। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने वोही आटा उठा कर साइल को दे दिया। जब वोह आग ले कर आईं तो आटा नदारद (या'नी ग़ाइब)। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : उसे रोटी पकाने के लिये ले गए हैं। बहुत पूछा तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़ैरात कर देने का वाक़िआ़ बताया। वोह बोलीं, سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! येह तो अच्छी बात है मगर हमें भी तो कुछ खाने के लिये दरकार है ! इतने में एक शख़्स एक बड़ी लगन (या'नी बरतन) में भर कर गोश्त और रोटी ले आया। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : देखो ! तुम्हें किस क़दर जल्द लौटा दिया गया, गोया रोटी भी पका दी और गोश्त का सालन मज़ीद भेज दिया। (روض الرياحين، الحكاية الثامنة والعشرون بعد الثلاث مائة، ص٣٦٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सख़ावत किसे कहते हैं ?

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى "**मिरआतुल मनाजीह़**" में फ़रमाते हैं : **सख़ी** वोह है जो अपने माल से ख़ुद भी खाए औरों को भी खिलाए। **जवाद** वोह है जो ख़ुद न खाए औरों को खिलाए। (مراۃ المناجیح، کتاب الزکاۃ، باب الانفاق وکراھیۃ الامساک، ۳/۶۹)

बख़ील की ता'रीफ़

बख़ील वोह है जो अपना माल ख़ुद खाए दूसरों का ह़क़ न दे।

मुम्सिक वोह है जो न ख़ुद खाए और न किसी को खाने दे जोड़े और छोड़े। (المرجع السابق)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

शुजाअ़त अफ़्ज़ल या सख़ावत

किसी आ़लिम से पूछा गया कि "**सख़ावत बेहतर है या शुजाअ़त ।**" फ़रमाया : ख़ुदा तआ़ला जिसे सख़ावत दे, उसे शुजाअ़त की ज़रूरत ही नहीं, लोग ख़ुद बख़ुद उस के सामने चित हो जाएंगे । (مرأۃ المناجیح، کتاب الزکاۃ، باب الانفاق وکراھیۃ الامساک،۳/۷۴)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"सख़ावत" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से सख़ावत के मु-तअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सख़ावत उन आ'माल में से है जिन तक रसाई **जन्नत** तक पहुंचाती है, सख़ावत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बहुत पसन्द और कन्जूसी बहुत ही ना पसन्द है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सख़ी को जन्नत अ़ता फ़रमाएगा और कन्जूस को जहन्नम में भेज देगा । अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सख़ावत करने और मज़ीद सवाब ह़ासिल करने की ह़िर्स पैदा करने के लिये इस के फ़ज़ाइल पर चन्द अह़ादीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **244** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बिहिश्त की कुन्जियां**" सफ़ह़ा **228** पर शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं :

﴿1﴾...... **اَلسَّخِيُّ قَرِيْبٌ مِّنَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْجَنَّةِ قَرِيْبٌ مِّنَ النَّاسِ بَعِيْدٌ مِّنَ النَّارِ وَالْبَخِيْلُ بَعِيْدٌ مِّنَ اللّٰهِ بَعِيْدٌ مِّنَ الْجَنَّةِ بَعِيْدٌ مِّنَ النَّاسِ قَرِيْبٌ مِّنَ النَّارِ وَالْجَاهِلُ السَّخِيُّ اَحَبُّ اِلَى اللّٰهِ مِنْ عَابِدٍ بَخِيْلٍ** या'नी सख़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से क़रीब है, जन्नत से क़रीब है, तमाम लोगों से क़रीब है, जहन्नम से दूर है और कन्जूस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर है, जन्नत से दूर है, तमाम लोगों से दूर है, जहन्नम से क़रीब है और जाहिल सख़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को आ़बिद बख़ील से ज़ियादा प्यारा है ।

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی السخاء، ص۴۷۹، الحدیث:۱۹۶۱)

﴿2﴾...... सख़ावत जन्नत में एक दरख़्त है तो जो शख़्स (दुन्या में) सख़ी होगा वोह उस दरख़्त की एक शाख़ को पकड़ेगा वोह शाख़ उस को नहीं छोड़ेगी यहां तक कि उस को जन्नत में दाख़िल कर देगी और बुख़्ल जहन्नम में एक दरख़्त है तो जो शख़्स (दुन्या में) बख़ील होगा वोह उस दरख़्त की एक शाख़ पकड़ेगा तो वोह शाख़ उस को नहीं छोड़ेगी यहां तक कि उस को दोज़ख़ में डाल देगी ।

(شُعَبُ الایمان، باب فی الجود والسخاء، ۷/۴۳۵، الحدیث:۱۰۸۷۷)

www.dawateislami.net

﴾3﴿...... **لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ خِبٌّ وَّلَا بَخِيْلٌ وَّلَا مَنَّانٌ** या'नी जन्नत में मक्कार दग़ाबाज़, कन्जूस और एह़सान जताने वाला दाख़िल नहीं होगा। **(السنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ،باب ماجاء فی البخل، الحدیث:١٩٦٣)**

﴾4﴿...... **خَصْلَتَانِ لَا تَجْتَمِعَانِ فِیْ مُؤْمِنٍ اَلْبُخْلُ وَسُوْءُ الْخُلُقِ** या'नी दो ख़स्लतें मोमिन में जम्अ़ नहीं होंगी कन्जूसी और बद अख़्लाक़ी। **(سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ما جاء فی البخل، ص٤٧٩، الحدیث:١٩٦٢)**

﴾5﴿...... सख़ी और बख़ील की मिसाल उन दो शख़्सों की सी है जिन पर लोहे की दो ज़िरहें हों, सख़ी जब ख़ैरात करने का इरादा करे तो ज़िरह फैल जाए और कन्जूस जब ख़ैरात का इरादा भी करे तो ज़िरह और तंग हो जाए और हर कड़ी अपनी जगह चिमट जाए।

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب مثل المنفق والبخیل، ص٣٦٦، الحدیث:(٧٧)١٠٢١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अंगूर का दाना

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से एक बार साइल ने खाना मांगा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सामने अंगूर पड़े हुए थे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक शख़्स को फ़रमाया : एक दाने को उठाओ और उस मिस्कीन को दे दो तो वोह आप को देख कर तअ़ज्जुब करने लगा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : क्या तुम तअ़ज्जुब करते हो, तुम देखो इस दाने में कितने ज़र्रे हैं। **(شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل فی الاختیار فی صدقۃ التطوع، ٢٠٤/٣، الحدیث:٣٤٦٦)**

जब कि **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** पारह **30**, **सू-रतुज़्ज़िल्ज़ाल** की सातवीं आयत में इर्शाद फ़रमाता है :

فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّۃٍ خَیْرًا یَّرَہٗ ؕ (پ٣٠، الزلزال:٧)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा।

भूके को खाना खिलाने का सवाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये भूके को कोई सा ह़लाल व त़य्यिब खाना खिलाना बहुत बड़े सवाब का काम है। जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़बूआ़ **88** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा ?"** सफ़ह़ा **35** पर इमाम जलालुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फरमाने अ़-ज़मत निशान है : जिस ने भूके को खाना

www.dawateislami.net

खिलाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा।

(مکارم الاخلاق للطبرانی، باب فضل اطعام الطعام، ص۳۷۳، الحدیث:۱٦٤)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी की ज़र्रा बराबर नेकी को भी ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाता ब ज़ाहिर कैसी ही मा'मूली चीज़ हो उसे राहे ख़ुदा में पेश करने में शरमाना नहीं चाहिये। हम ने उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सख़ावत के बारे में मुला-ह़ज़ा किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا थोड़ी सी चीज़ भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़ैरात करने से नहीं झिझक्ती थीं और हम जब तक अपनी वाह वाह चाहने के लिये कसीर माल राहे ख़ुदा में ख़र्च न कर लें क़ल्बी सुकून नहीं मिलता **ऐ काश !** जब भी राहे ख़ुदा में कोई चीज़ ख़र्च करने का मौक़अ़ मिले तो फ़क़त़ **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर ख़र्च करें।

दे हुस्ने अख़्लाक़ की दौलत   कर दे अ़ता इख़्लास की ने'मत

मुझ को ख़ज़ाना दे तक़्वा का   या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 109)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपना मुह़ा-सबा कीजिये !

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उम्मुल मुअमिनीन या'नी हम सब मोमिनों की मां हैं हम बेटियां हैं अपनी अम्मां मोह़-त-रमा की सीरते त़य्यिबा पर अ़मल के लिये किस क़दर कोशां हैं येह हम सब का अपने आप से सुवाल होना चाहिये इस के जवाब में हमारा सिर्फ़ र-मज़ान के रोज़ों का एहतिमाम, ग़रीबों की ह़ाजत मन्दी से चश्म पोशी और अपनी इफ़्त़ारी का ख़ूब से ख़ूब तर इन्तिज़ाम येह हमारा ह़ाल और इस सुवाल का जवाब अपने आप से और किसी दूसरे से पोशीदा नहीं है बराए रिज़ाए इलाही ईसार व सख़ावत का म-दनी ज़ेह्न मुसल्सल ना पैद होता जा रहा है ह़ालां कि राहे ख़ुदा में ख़र्च करना और ह़त्तल वुस्अ़ ईसार व सख़ावत का म-दनी ज़ेह्न रखना एक मह़मूद सिफ़त और बारगाहे ख़ुदा में मक़्बूल होने की अ़लामत है और उस की राह में ख़र्च करने वालों को सवाब के ह़ुसूल और ख़ौफ़ व ह़ुज़्न के दूर होने की भी बिशारत दी गई, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ क़ुरआन **''कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान''** पारह **3**, **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर **262** में इर्शादे **रब्बुल उ़ला** है :

www.dawateislami.net

ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَآ أَنفَقُوا۟ مَنًّا وَلَآ أَذًى ۙ لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"सख़ावत में ब-र-कत है" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से सख़ावते अस्लाफ़ के 14 वाक़िआत

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श की सख़ावत :

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का जज़्बए ईसार व सख़ावत मुला-ह़ज़ा कीजिये चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **413** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"उ़यूनुल ह़िकायात" ह़िस्सए दुवुम** सफ़ह़ा **217** पर इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरज़ा बिन्ते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास जिज़्या वग़ैरा का माल आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये बहुत सा माल भिजवाया। उन्हों ने माले कसीर देख कर फ़रमाया : "**अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मग़्फ़िरत फ़रमाए। मेरे इलावा मेरे और मुसल्मान भाई भी हैं जो इस माल के मुझ से ज़ियादा मोह़ताज होंगे।" लोगों ने कहा : "येह सब का सब आप के लिये है (दीगर ह़क़दारों को अपना ह़िस्सा मिल चुका है)।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कह कर ज़मीन पर एक कपड़ा बिछाते हुए कहा : "सारा माल यहां डाल कर उस पर एक कपड़ा डाल दो।" लोगों ने तमाम दिरहम वहां डाल दिये।

ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरज़ा बिन्ते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मुझ से फ़रमाया : "इस कपड़े के नीचे अपना हाथ डाल कर एक मुठ्ठी दिरहमों

www.dawateislami.net

की भरो और फुलां यतीम को दे आओ, एक मुठ्ठी फुलां ग़रीब को दे आओ, एक मुठ्ठी फुलां रिश्तेदार को दे आओ।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हुक्म फ़रमाती जातीं और मैं लोगों को तक़्सीम करती जाती। यहां तक कि चन्द दिरहमों के इ़लावा बाक़ी तमाम दराहिम तक़्सीम फ़रमा दिये। फिर मैं ने अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की मग़्फ़िरत फ़रमाए। क्या इस में हमारा कुछ हि़स्सा नहीं ?'' फ़रमाया : ''हां ! जो बाक़ी बचा है वोह तुम्हारे लिये है।'' मैं ने कपड़ा उठाया तो उस के नीचे सिर्फ़ पचासी **(85)** दिरहम बाक़ी थे। फिर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि–दतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हाथ उठा कर इस त़रह़ दुआ़ की : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की जानिब से मुझे इस के बा'द कोई हदिय्या नसीब न हो।'' फिर उसी साल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हो गया।

(عیون الحکایات، الحکایۃ الثامنۃ والستون بعد الثلاث مائۃ: اللھم لا یدرکنی عطا لعمر، ص۳۲۳)

ताजो तख़्तो हुकूमत मत दे   कस्रते मालो दौलत मत दे
अपनी रिज़ा का दे दे मुज़्दा   या अल्लाह ! मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 109)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿2﴾...... ह़ज़रते सय्यि–दतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा की सख़ावत :

ह़ज़रते सय्यि–दतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا गु–रबा और मसाकीन को ब कसरत खाना खिलाया करती थीं जिस की वज्ह से उन का लक़ब ''उम्मुल मसाकीन'' (मिस्कीनों की मां) है।

(ماخوذ ازشرح الزرقانی، المقصد الثانی، الفصل الثالث، فی ذکر ازواجہ الطاھرات......الخ، زینب ام المساکین والمؤمنین، ۴/۴۱۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की करोड़ों रह़मतें हों मुअमिनीन की माओं पर जिन्हों ने हर ह़ाल में रब्बे करीम का शुक्र अदा किया। ख़ुद भूक व प्यास बरदाश्त कर के उम्मत के गु–रबा व फु–क़रा की परेशानियां दूर फ़रमाईं। इन्हें मालो दौलत और दुन्यवी साज़ो सामान से मह़ब्बत न थी बल्कि वोह तो ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में सरशार थीं। दुन्यवी मालो दौलत की आमद इन्हें ख़ुश न करती बल्कि इस की फ़िरावानी इन के लिये परेशानी का बाइस बनती। इन के पास जो माल आता उसे फ़ौरन स–दक़ा कर देतीं। येह सब हमारे मक्की

www.dawateislami.net

म-दनी आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरबिय्यत व सोहबत का असर था। जिस त़रह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से किसी उम्मती की परेशानी नहीं देखी जाती इसी त़रह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घर वाले भी उम्मते मुस्लिमा को परेशानी में मुब्तला देख कर बे क़रार हो जाते। इन्हीं पाकीज़ा हस्तियों के रहमो करम से हम जैसे गुनाहगारों का गुज़ारा हो रहा है। हमारे मक्की म-दनी आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही हमारी सरवत व इज़्ज़त हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दामन से वाबस्तगी दो जहां की दौलत से खरबों द-रजे बेहतर है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दर के गुलाम दुन्या के इमाम नज़र आते हैं। **अल्लाह तबा-र-क व तआला** हमें मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दामने करम से हमेशा हमेशा वाबस्ता रखे आप की सच्ची गुलामी अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

किसी शाइर ने क्या ख़ूब कहा है :

दामने मुस्तफ़ा से जो लिपटा यगाना हो गया

जिस के हुज़ूर हो गए उस का ज़माना हो गया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿...... हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन की सख़ावत :

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी ज़िन्दगी में दो मर्तबा अपना सारा माल राहे ख़ुदा में ख़ैरात किया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की **सख़ावत का येह आ़लम** था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत से **गु-रबाए अहले मदीना के घरों में ऐसे पोशीदा त़रीक़ों से रक़म भेजा करते थे** कि उन गु-रबा को ख़बर ही नहीं होती थी कि येह कहां से आता है ? मगर जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का विसाल हो गया तो उन ग़रीबों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात के बा'द इस असर (या'नी पोशीदा त़रीक़े से इन के पास रक़म आने) को जान लिया कि हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही थे जो ग़रीबों के घरों में रक़म मुन्तक़िल करते थे। (سِیَر اعلام النبلاء، علی بن الحسین ابن الامام علی بن ابی طالب، ٤/٣٩٣)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया कि सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आबिदीन अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दो मर्तबा अपना सारा माल राहे ख़ुदा में ख़र्च किया मगर किसी को कानों कान ख़बर न हुई, इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक अ़र्सा मदीने शरीफ़ के गु-रबा के घरों में ख़ुफ़्या त़रीक़े से पैसे भिजवाते रहे लेकिन इस बात का किसी को भी पता न चला यहां तक कि ख़ुद उन गु-रबा को भी न पता था कि येह रक़म कहां से आती है, बा'दे वफ़ात पता चला कि येह रक़म सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आबिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भेजा करते थे। **सख़ावत करते वक़्त इख़्लास हो तो ऐसा**, नेकियां छुपाने का जज़्बा हो तो ऐसा, **ऐ काश !** हमें भी इस जज़्बे का कोई करोड़वां ह़िस्सा नसीब हो जाए।

अ़ता कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत
न नज़्दीक आए रिया या इलाही !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पोशीदा अ़मल अफ़्ज़ल है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस क़दर हो सके अपने नेक आ'माल को पोशीदा त़ौर पर अदा कीजिये क्यूं कि ज़ाहिरी आ'माल के मुक़ाबले में पोशीदा आ'माल ज़ियादा अफ़्ज़ल हैं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा, अ़फ़ीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "ज़ाहिरी त़ौर पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के मुक़ाबले में पोशीदा त़ौर पर (**अल्लाह** का ज़िक्र) करना **70 गुना अफ़्ज़ल** है।"

(مسند ابی یعلی، مسند عائشة، ٤/٧٥، الحدیث:٤٧٣٦)

हम रियाकारी से बचते ही रहें
येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये !

(वसाइले बख़्शिश, स. 161)

इसी त़रह़ पोशीदा त़ौर पर किये जाने वाले नेक आ'माल की अफ़्ज़लिय्यत के बारे में क़ुरआने मुबीन में **अल्लाहु** मतीन عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने दिल नशीन है :

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِیَ ۚ وَ اِنْ تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ؕ (پ٣، البقرة:٢٧١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर ख़ैरात अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है।

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَنَّان "**तफ़्सीरे नईमी**" जिल्द **3** सफ़ह़ा **129** पर इस आयते मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : जैसे स-दक़ाते वाजिबा और बा'ज़ नफ़्ली स-दक़े अ़लानिया देना बेहतर और अक्सर खुफ़्या देना अफ़्ज़ल,, ऐसे ही दीगर इ़बादात, नमाज़, ह़ज वग़ैरा का भी येह ही हुक्म है।

(तफ़्सीरे नईमी, सू-रतुल ब-क़रह, तह़्तल आयह : 271, जि. 3, स. 129)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी का जज़्बए सख़ावत :

ह़ज़रते सय्यिदुना शुरह़्बील बिन मुस्लिम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ लोगों को अमीरों का खाना खिलाते और खुद घर जा कर सिर्का और ज़ैतून तनावुल फ़रमाते।

(الزھد للامام احمد بن حنبل، زھد عثمان بن عفان، ص١٠٦، الرقم:٦٨٤)

इमामुल अस्ख़िया ! कर दो अ़ता ह़िस्सा सख़ावत का !
क़नाअ़त हो इ़नायत, दें न दौलत की फ़िरावानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 398)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ की सख़ावत :

ह़ाकिमे यमन ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सख़ावत का येह ह़ाल था कि अपनी आमदनी में से तो क्या बचाते, सारी आमदनी ख़ैरात, स-दक़े, हदाया में ख़र्च कर के और क़र्ज़ भी लेते रहे, दा'वतें, हदिये, स-दक़े, ख़ैरात करते रहे।

(مراۃ المناجیح، کتاب البیوع، باب الافلاس، ٤/٣٠٠)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान की सख़ावत :

दुन्या ही में जन्नत की खुश ख़बरी पाने वाले सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सख़ावत मुला-ह़ज़ा हो।

www.dawateislami.net

(1)...... प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहदे मुबारक में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक बार चार हज़ार **(4000)** (दिरहम या दीनार) ख़ैरात किये।

(اسد الغابة فی معرفة الصحابة، باب العين والباء، عبد الرحمٰن بن عوف، ۴۷۸/۳)

(2)...... एक बार चालीस हज़ार **(40,000)** दीनार राहे ख़ुदा में दिये। (المرجع السّابق)

(3)...... एक बार पांच सो **(500)** घोड़े मुजाहिदों को दिये। (المرجع السّابق)

(4)...... एक बार डेढ़ हज़ार **(1500)** ऊंट राहे ख़ुदा में दिये। (مراۃ المناجیح، کتاب المناقب، باب مناقب العشرۃ، ۴۴۵/۸)

(5)...... वफ़ात के वक़्त पचास हज़ार **(50,000)** दीनार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में देने की वसिय्यत की। (اسد الغابة فی معرفة الصحابة، باب العين والباء، عبد الرَّحمٰن بن عوف، ۴۷۹/۳)

(6)...... एक बार आप बीमार हुए तो अपना तिहाई माल ख़ैरात करने की वसिय्यत की मगर बा'द में आराम हो गया तो वोह माल ख़ुद ही ख़ैरात कर दिया। (مراۃ المناجیح، کتاب المناقب، باب مناقب العشرۃ، ۴۴۵/۸)

(7)...... जो सहाबए किराम ग़ज़्वए बद्र में शरीक हुए और शहीद न हुए आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने उन में से हर एक के लिये **400** दीनार की वसिय्यत की और उन सहाबा की ता'दाद **100** थी।

(اسد الغابة فی معرفة الصحابة، باب العين والباء، عبد الرحمٰن بن عوف، ۴۷۹/۳)

(8)...... एक बार एक दिन में डेढ़ लाख दीनार ख़ैरात किये रात को हिसाब लगाया फिर बोले कि मेरा सारा माल मुहाजिरीन व अन्सार पर स-दक़ा है हत्ता कि फ़रमाया : मेरी क़मीस फुलां को और मेरा इमामा फुलां को। (हज़रते सय्यिदुना) जिब्रीले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) हाज़िर हुए। अर्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अब्दुर्रहमान (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) के स-दक़ात क़बूल, उन्हें बे हिसाब जन्नती होने की ख़बर दीजिये। (مراۃ المناجیح، کتاب المناقب، باب مناقب العشرۃ، ۴۴۵/۸)

(9)...... आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अज़्वाजे मुतह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ के लिये एक बाग़ की वसिय्यत की जो चार लाख (दिरहम या दीनार) का बेचा गया।

(سنن الترمذی، ابواب المناقب عن رسول اللّٰه، مناقب عبد الرحمن بن عوف، ص۸۵۲، الحديث:۳۷۵۸)

(10)...... एक मर्तबा आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपना पूरा तिजारती क़ाफ़िला जो सात सो **(700)** ऊंटों पर मुश्तमिल था, मअ़ ऊंटों और उन पर लदे हुए सामानों के राहे ख़ुदा में ख़ैरात कर दिया।

(اسد الغابة فی معرفة الصحابة، باب العين والباء، عبد الرحمٰن بن عوف، ۴۷۸/۳، مفهومًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾7﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहली की सख़ावत :

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा (बाहली) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बांदी का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ स-दक़ा को पसन्द फ़रमाते थे और उस को (साइलों के लिये) जम्अ़ फ़रमाते। किसी साइल को भी (अपने दरवाज़े से ना मुराद) नहीं लौटाते थे अगर्चे एक पियाज़, खजूर या कोई भी खाने की चीज़ दे देते। एक दिन उन के पास सिर्फ़ तीन ही अशरफ़ियां थीं, उस दिन इत्तिफ़ाक़ से यके बा'द दीगर तीन साइल आ गए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तीनों को एक एक अशरफ़ी दे दी। बांदी कहती हैं : मुझे गुस्सा आया और मैं ने कहा कि हमारे लिये कुछ नहीं छोड़ा। फिर वोह सो गए। फिर जब नमाज़े ज़ोहर की अज़ान दी गई तो मैं ने उन्हें बेदार किया और वोह वुज़ू कर के मस्जिद में चले गए। मुझे उन के हाल पर बड़ा तर्स आया और वोह उस दिन रोज़े से थे। मैं ने (किसी से) क़र्ज़ ले कर रात का खाना तय्यार किया और चराग़ जलाया। फिर मैं जब उन के बिस्तर को दुरुस्त करने के लिये गई तो क्या देखती हूं कि तीन सो **(300)** दीनार पड़े हुए थे। मैं ने (दिल में) कहा : उन्हों ने येह काम (या'नी दीनारों को स-दक़ा) इसी भरोसे पर किया है जो उन्हों ने पीछे छोड़ रखे हैं। वोह नमाज़े इशा के बा'द जब घर आए और रोशन चराग़ और बिछा हुवा दस्तर ख़्वान देखा तो मुस्कुराए और फ़रमाया : येह (ने'मतें) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ख़ैर (ही ख़ैर) हैं। फिर मैं ने उन्हें खाना खिलाया और अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस न-फ़क़े (ख़र्चे) को यूंही ला परवाही के साथ बिस्तर पर छोड़ कर चले गए और मुझ से कह कर भी नहीं गए कि मैं इन को उठा लेती। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हैरान हो कर पूछा : कैसा न-फ़क़ा ? मैं तो घर में कुछ भी छोड़ कर नहीं गया था। येह सुन कर मैं ने उन का बिस्तर उठा कर जब उन्हें दिखाया तो वोह बहुत ख़ुश हुए लेकिन उन्हें इस पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। (حلیۃ الاولیاء، محمد بن عمرو المغربی، ۱۰/۱۳۴)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾8﴿...... हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया की सख़ावत :

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सख़ावत और अमीरी (दौराने बादशाहत) ज़र्बुल मसल बन चुकी थी। हज़राते अहले बैते अत़्हार رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ख़ुसूसन

www.dawateislami.net

(ह़ज़रते सय्यिदुना) इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को ब यक वक़्त पांच पांच लाख दीनार नज़राना दिये हैं। (مراٰۃ المناجیح، کتاب الرقاق، باب فضل الفقراء، ۷/ ۷۹)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《9》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर की सख़ावत :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब के फ़रज़न्दे अरजुमन्द ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا इल्मो फ़ज़्ल के साथ बहुत ही इबादत गुज़ार और मुत्तक़ी व परहेज़ गार थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡخَالِق फ़रमाया करते थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا मुसल्मानों के इमाम हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के मिज़ाज में बहुत ज़ियादा सख़ावत का ग़-लबा और बहुत ज़ियादा स-दक़ा व ख़ैरात की आ़दत थी। अपनी जो चीज़ पसन्द आ जाती थी फ़ौरन ही उस को राहे ख़ुदा में ख़ैरात कर देते थे। आप ने अपनी ज़िन्दगी में एक हज़ार **(1000)** ग़ुलामों को ख़रीद ख़रीद कर आज़ाद फ़रमाया।

(करामाते सह़ाबा, स. 159)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《10》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र की सख़ावत :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡكَرِیۡم के भाई और ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब और अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हैं। येह बहुत ही दानिश मन्द व ह़लीम, निहायत ही इल्मो फ़ज़्ल वाले और बहुत ही पाकबाज़ व परहेज़ गार थे और सख़ावत में तो इस क़दर बुलन्द मर्तबा थे कि इन को **बह़रुल जूद (या'नी सख़ावत का दरिया)** और **अस्ख़ल मुस्लिमीन** (या'नी मुसल्मानों में सब से ज़ियादा सख़ी) कहते थे। बा'ज़ कहते हैं कि इस्लाम में इन जैसा सख़ी नहीं पैदा हुवा। (करामाते सह़ाबा, स. 223, अल अक्माल (मुतर्जम), स. 49)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《11》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई की सख़ावत :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुमैदी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡكَافِی बा'ज़ हुक्काम के साथ यमन तशरीफ़ ले गए। फिर वहां से वापसी पर दस हज़ार **(10,000)** दिरहम लिये मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ रवाना हुए। आप

www.dawateislami.net

رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के लिये मक्का शरीफ़ से बाहर ही ख़ैमा नस्ब कर दिया गया। लोग आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास आते रहे। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस वक़्त तक अपनी जगह से न हटे जब तक वोह तमाम (दिरहम) तक़्सीम न कर लिये।''

एक दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सुवार थे कि कोड़ा हाथ से गिर गया। एक शख़्स ने उठा कर पेश किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे सोने के पचास **(50)** दीनार अ़ता फ़रमाए।

(احیاء العلوم، کتاب العلم، الباب الثانی فی العلم المحمود، بیان العلم الذی ھو فرض کفایۃ، ۴۱/۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾12﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म की सख़ावत :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **561** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत''** सफ़ह़ा **330** पर आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن नक़्ल फ़रमाते हैं : एक शख़्स पर हुज़ूर (या'नी इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के दस हज़ार **(10,000)** आते थे, वा'दा गुज़रे मुद्दत हो चुकी थी। एक मर्तबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ लिये जाते थे, सामने से वोह आता था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को देख कर डर के मारे एक गली में हो गया। क़िस्मत की बात कि वोह गली दूसरी त़रफ़ से सर बस्ता (या'नी बन्द) थी। इमाम वहीं तशरीफ़ ले गए। फ़रमाया : ''क्यूं, तुम इधर कैसे आ गए !'' सबब बताया कि मैं हुज़ूर का मक़रूज़ (या'नी क़र्ज़दार) हूं वा'दा गुज़र गया, मैं डरा कि हुज़ूर तक़ाज़ा फ़रमाएंगे और मेरे पास इस वक़्त मौजूद नहीं इस लिये मैं इस त़रफ़ आ गया। फ़रमाया : दस हज़ार **(10,000)** भी ऐसी चीज़ हैं कि किसी मुसल्मान का क़ल्ब (या'नी दिल) परेशान किया जाए मैं ने मुआ़फ़ किये।

(ماخوذ از الخیرات الحسان، الفصل السابع عشر فی کرمہ، ص۵۷)

तेरी सख़ावत की धूम मची है मुराद मुंह मांगी मिल रही है
अ़ता हो मुझ को मदीने का ग़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 504)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾13﴿...... एक अ़-रबी ग़ुलाम की सख़ावत :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **413** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''उ़यूनुल ह़िकायात''** ह़िस्सए दुवुम सफ़ह़ा **240** पर इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन

www.dawateislami.net

मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد कहते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अ़याश عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق को फ़रमाते सुना कि एक शख़्स ने ह़ातिम त़ाई से कहा : "क्या अ़-रबों में तुझ से ज़ियादा भी कोई सख़ावत करने वाला है ?" उस ने कहा : "हर अ़-रबी मुझ से ज़ियादा सख़ी है।" फिर उस ने अपना एक वाक़िआ़ कुछ इस त़रह़ बयान किया : "एक रात मैं एक अ़-रबी गुलाम के हां मेहमान बना। उस के पास उ़म्दा क़िस्म की सो **(100)** बकरियां थीं। उस ने एक बकरी मेरे लिये ज़ब्ह़ की और गोश्त पका कर मेरी ज़ियाफ़त की। जब उस ने बकरी का मग़्ज़ मेरी त़रफ़ बढ़ाया तो वोह बहुत लज़ीज़ था। मैं ने कहा : "**कितना लज़ीज़ है !**" फिर वोह चला गया और बकरियां ज़ब्ह़ कर के उन का मग़्ज़ पका पका कर मुझे खिलाता रहा यहां तक कि मैं ख़ूब सैर हो गया। जब सुब्ह़ हुई तो मैं ने देखा कि **वोह अपनी सो की सो बकरियां ज़ब्ह़ कर के उन का मग़्ज़ मुझे खिला चुका था।** अब उस के पास एक बकरी भी न थी।"

साइल ने ह़ातिम त़ाई से कहा : "उस की मेज़बानी का तुम ने क्या सिला दिया ?" उस ने कहा : "अगर मैं अपनी तमाम चीज़ें भी उसे दे देता तो इस एह़सान का बदला न चुका सकता था।" साइल ने कहा : "वोह तो ठीक है लेकिन तुम ने उसे क्या दिया था ?" ह़ातिम त़ाई ने कहा : "मैं ने अपनी पसन्दीदा ऊंटनियों में से सो **(100)** ऊंटनियां उसे दे दीं।"

(عيون الحكايات، الحكاية السادسة والثمانون بعد الثلاث مائة، كل العرب اجود منى، ص۳۳۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾14﴿......सरकारे आ़ली वक़ार की सख़ावत :

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुज़ूर शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने सख़ावत मोह़ताजे बयान नहीं मगर जहां सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, ताबिईने इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की शाने सख़ावत बयान हुई तो एक त़ाइराना नज़र अपने मीठे मीठे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़लीशान सख़ावत भी मुला-ह़ज़ा कर लीजिये, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रसूले अ़ज़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم तमाम इन्सानों से बढ़ कर सख़ी थे। माहे र-मज़ान में जब ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात करते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत ही ज़ियादा सख़ावत फ़रमाते थे और ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام माहे र-मज़ान की हर रात आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात करते और कु़रआने मुक़द्दस का दौर

www.dawateislami.net

करते । पस **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भलाई में तेज़ हवा से ज़ियादा सख़ी थे ।

(صحیح البخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدءُ الوحی الی رسول اللہ ﷺ، ص٦٧، الحیث:٦)

सख़ावत तेरे घर की है इनायत तेरे घर की है
तेरे दर का सुवाली झोलियां भर भर के लाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 312)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरकार ने किसी भी साइल को "لَا" न फ़रमाया

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जब भी किसी चीज़ का सुवाल किया गया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी "لَا" (या'नी नहीं) न फ़रमाया ।

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب حسن الخلق والسخاء ......الخ ص١٥٠٤، الحدیث:٦٠٣٤)

येही वोह मज़्मून है जिस को मश्हूर ताबेई शाइर फ़रज़्दक़ मु-तवफ़्फ़ा 110 सि.हि. ने यूं बयान किया :

مَا قَالَ لَا قَطُّ اِلَّا فِیۡ تَشَهُّدِهٖ
لَوۡلَا التَّشَهُّدُ کَانَتۡ لَاؤُهٗ نَعَم

इसी का तरजमा किसी फ़ारसी शाइर ने इस त़रह़ किया है कि

نہ گُفت لَا بزبانِ مبارکش ہرگز
مگر دَرْ اَشْھَدُ اَنْ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ

या'नी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी साइल के जवाब में **لَا** (नहीं) का लफ़्ज़ नहीं फ़रमाया बल्कि हमेशा **نَعَمْ** (हां) ही कहा मगर कलिमए शहादत में **لَا** (नहीं) का लफ़्ज़ ज़रूर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक पर आता था और अगर कलिमए शहादत में **لَا** कहने की ज़रूरत न होती तो इस में भी **لَا** (नहीं) की जगह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, **نَعَمْ** (हां) ही फ़रमाते ।

इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن इस का इज़्हार यूं फ़रमाते हैं :

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न "لَا" है न ह़ाजत "अगर" की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 225)

www.dawateislami.net

और हमारे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सख़ावते मुस्त़फ़ा बयान करते हुए फ़रमाते हैं :

''नहीं'' जिन की प्यारी ज़बां पर नहीं है
वोह मक्के में सख़ियों के सरदार आए

(वसाइले बख़्शिश, स. 478)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़त़ाए मुस्त़फ़ा पर फ़क़ीरी का ख़ौफ़ नहीं रहता

हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सख़ावत किसी साइल के सुवाल ही पर मह़दूद व मुन्ह़सिर नहीं थी बल्कि बिग़ैर मांगे भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों को इस क़दर ज़ियादा माल अ़त़ा फ़रमाते कि दुन्याए सख़ावत में इस की मिसाल नादिरो नायाब है। चुनान्चे ज़ुरक़ानी में है : ''आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बहुत बड़े दुश्मन उमय्या बिन ख़लफ़ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन उमय्या رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ (क़बूले इस्लाम से क़ब्ल) जब ह़ाज़िरे दरबार हुए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को इतनी कसीर ता'दाद में ऊंटों और बकरियों का रेवड़ अ़त़ा फ़रमा दिया कि दो पहाड़ियों के दरमियान का मैदान भर गया। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ मक्का जा कर (चिल्ला चिल्ला कर अपनी क़ौम) से कहने लगे कि ऐ लोगो ! दामने इस्लाम में आ जाओ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) इस क़दर ज़ियादा माल अ़त़ा फ़रमाते हैं कि फ़क़ीरी का कोई अन्देशा नहीं रहने देते। इस के बा'द फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ख़ुद भी मुसल्मान हो गए।''

(شرح الزرقانی، المقصد الثالث فیما فضله الله تعالٰی به، الفصل الثانی فیما اکرمه الله تعالٰی به من الاخلاق الزکیة، ۶/۱۰۹، ۱۱۰)

मुझे अपनी सख़ावत के समुन्दर से कोई क़त़रा
अ़त़ा कर दो नहीं दरकार मुझ को ताजे सुल्त़ानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 498)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ियामत तक के लोग फ़ैज़याब

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی **''मिरआतुल मनाजीह़'' जिल्द 8 सफ़ह़ा 67** पर सख़ावते मुस्त़फ़ा के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : **सख़ी ऐसे कि हु़ज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की सख़ावत से आज भी बल्कि क़ियामत तक लोग परवरिश पाते रहेंगे।**

www.dawateislami.net

वोह बह़रे सख़ावत हैं वोह क़ासिमे ने 'मत हैं
त़यबा का गदा हरगिज़ नादार नहीं होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 236)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सख़ावत सबबे दुख़ूले जन्नत

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : बहुत से दीन में ना फ़रमानी करने वाले जो अपनी मईशत में तंगी का शिकार होते हैं लेकिन वोह सख़ावत की वज्ह से जन्नत में जाएंगे। (احیاء العلوم، کتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان فضیلۃ السخاء ۳/۳۰۵)

बिला ह़िसाब हो जन्नत में दाख़िला या रब !
पड़ोस ख़ुल्द में सरवर का हो अ़त़ा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 98)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़द द-रजा सख़ावत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **318** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"फ़ज़ाइले दुआ़"** सफ़ह़ा **277** पर सरकारे आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ह़दीसे पाक से माख़ूज़ मज़्मून तह़रीर फ़रमाते हैं : **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सख़ावत इस द-रजा थी कि उन के भान्जे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में इन के तसर्रुफ़ात मह़जूर कर दिये (या'नी रोक दिये) थे।

(ماخوذ از صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الھجرۃ، ص۱۵۱۱، الحدیث:۶۰۷۳)

अपने पास कुछ न रखतीं जो कुछ भी उन के पास आता उस को स-दक़ा कर देतीं।

(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب مناقب قریش، ص۸۹۷، الحدیث:۳۵۰۵)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मज़ीद एक रिवायत में है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक मर्तबा क़सम खाई तो उस के कफ़्फ़ारे में चालीस **(40)** ग़ुलाम आज़ाद फ़रमाए। (ماخوذ از صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الھجرۃ، ص۱۵۱۱، الحدیث:۶۰۷۳)

क़ुरबान जाएं सख़ावते आ़इशा पर कि एक क़सम के कफ़्फ़ारे में चालीस **(40)** ग़ुलाम

www.dawateislami.net

आज़ाद फ़रमा दिये ह़ालां कि क़सम के शर-ई कफ़्फ़ारे में एक गुलाम आज़ाद करना है और क़सम का कफ़्फ़ारा भी तीन त़रह़ का है : ﴾1﴿...... गुलाम आज़ाद करना ﴾2﴿...... 10 मिस्कीनों को खाना खिलाना ﴾3﴿...... या फिर 10 मिस्कीनों को कपड़े पहनाना या'नी येह इख़्तियार है कि इन तीन बातों में से जो चाहे करे।(1) (الدر المختار، کتاب الایمان، ص۲۸۲، بہارِ شریعت،۲/۳۰۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सख़ी क़ियामत के दिन क़ुर्बे इलाही में !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सख़ावते आइशा के बयान के ज़िम्न में सख़ावत के फ़ज़ाइल और अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के सख़ावत करने के वाक़िआत भी मुला-ह़ज़ा फ़रमाए और येह भी मा'लूम हुवा कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا सख़ावत की अ़ज़ीम सिफ़त से भी मुत्तसिफ़ थीं। सख़ावत उन आ'माल में से है जो बरोज़े क़ियामत रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब का बाइ़स हैं, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 125 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"शुक्र के फ़ज़ाइल"** सफ़ह़ा 101 पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिद्दुन्या عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعُلٰى फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं : "जिन बन्दों में करम, सख़ावत, ह़िल्म, रह़मत, शफ़्क़त, भलाई, शुक्र और सब्र जैसी ख़स्लतें होंगी वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रबीन में होंगे।"

ऐ हमारे प्यारे **रब्बे ज़ुल जलाल !** हमें इख़्लास की ला ज़वाल दौलत से मालामाल कर के सख़ावत और तमाम नेक आ'माल में रियाकारी की तबाह कारी से बचा ले। अपने मुख़्लिस मह़बूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें सरापा इख़्लास बना दे।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

नफ़्से बदकार ने दिल पर येह क़ियामत तोड़ी अ़-मले नेक किया भी तो छुपाने न दिया
मेरे आ'माले सियह ने किया जीना दूभर ज़हर खाता तेरे इर्शाद ने खाने न दिया

(सामाने बख़्शिश, स. 44, 45)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पाबन्दे सौमो सलात और पैकरे जूदो सख़ा ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की इबादतो रियाज़त और स-दक़ा व ख़ैरात का आ़लम आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया, येह है يُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ की अ़-मली तस्वीर !

(1)...... **क़सम** के मु-तअ़ल्लिक़ आसान तरीन मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 616 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"नेकी की दा'वत"** ह़िस्सए अव्वल, सफ़ह़ा 161 ता 190 का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

ख़ुद भूके रह कर औरों को खिला देते थे
कैसे साबिर थे मुह़म्मद के घराने वाले !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दों की पहचान है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में दिल खोल कर ख़र्च करते हैं और इन का येही वस्फ़ इन के हिदायत याफ़्ता होने की अ़लामत है।

मालो दौलत की दिल में हवस है, हुब्बे दुन्या ही बस हर न-फ़स है
अपनी उल्फ़त का साग़र पिला दो, या ह़बीबे ख़ुदा इल्तिजा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 267)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सख़ावत करना कसीर व बे पायां दुन्यवी व उख़रवी इन्आ़माते इक्रामात से बहरा मन्द होने का सबब बनता है। और राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल पाने के लिये सिद्क़ो इख़्लास की ज़रूरत है कस्रते माल की नहीं जैसा कि आप ने इस बयान में मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि हमारी मोह़तरम अम्मीजान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا थोड़ी सी चीज़ भी ख़ैरात कर देती थीं और रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ का दिया हुवा माल उसी की राह में ख़र्च करना दुन्या के ग़मों और आख़िरत की फ़िक्रों से भी नजात दिलाता है। अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये **म-दनी माह़ोल** ज़रूरी है, वरना आ़रिज़ी त़ौर पर जज़्बा पैदा होता भी है तो अच्छी सोह़बत के फ़ुक़्दान (या'नी कमी) के सबब इस्तिक़ामत नहीं मिल पाती। अपना म-दनी ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और म-दनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब बहारें और ब-र-कतें हैं। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे माह़ोल में रचने बसने की ब-र-कत से मु-तअ़द्दद इस्लामी बहनों को शर-ई पर्दा करने की सआ़दत नसीब हो गई एक ऐसी ही म-दनी बहार मुला-ह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे,

बे पर्दगी से तौबा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **397** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़्ह़ा **32** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास **अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **"म-दनी बहार"** तह़रीर फ़रमाते हैं **: पंजाब** (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के तह़रीरी बयान का लुब्बे लुबाब है **:** मैं **दा'वते इस्लामी** के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले **T.V.** पर **फ़िल्में डिरामे** देखने की आ़दी थी, बाज़ार

www.dawateislami.net

वग़ैरा जाने के लिये **बे पर्दा** ही निकल खड़ी होती, **नमाज़** भी नहीं पढ़ती थी। यूं मेरे सुब्ह़ व शाम **ग़फ़्लत** व मा'सियत में बसर हो रहे थे। एक बार किसी ने मुझे **मक-त-बतुल मदीना** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे **बयानात** के केसिट दिये, मैं ने उन्हें सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मैं ख़्वाबे ग़फ़्लत से **बेदार** हो गई। उन बयानात की ब-र-कत से मुझे **ख़ौफ़े ख़ुदा** की दौलत नसीब हुई, **इश्क़े रसूल** का जज़्बा मिला और मैं नमाज़ी बन गई, मैं ने अपने तमाम गुनाहों बिल ख़ुसूस **बे पर्दगी से पक्की तौबा** कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **म-दनी बुरक़अ़** मेरे लिबास का ह़िस्सा बन गया। वोह बे लगाम ज़बान जो पहले **गाने** गुनगुनाने में मसरूफ़ रहती थी अब اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **ना'ते मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनाने लगी। ता दमे तह़रीर **दा'वते इस्लामी** की ज़ैली मुशा-वरत की ख़ादिमा के त़ौर पर सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल कर रही हूं।

कटी है ग़फ़्लतों में ज़िन्दगानी न जाने ह़श्र में क्या फ़ैसला हो
इलाही हूं बहुत कमज़ोर बन्दा न दुन्या में न उ़क़्बा में सज़ा हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 165)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! मक-त-बतुल मदीना की जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें और **V.C.D's** सुनना, सुनाना बहुत मुफ़ीद है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! कई ख़ुश नसीब इस्लामी बहनें रोज़ाना कम अज़ कम एक सुन्नतों भरा बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं और मुख़य्यर (या'नी साहिबे हैसिय्यत) इस्लामी बहनें तक़्सीम भी करती हैं आप भी हर माह या कम अज़ कम हर साल रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ में लंगरे रसाइल तक़्सीम करने की निय्यत फ़रमाइये और ह़स्बे तौफ़ीक़ इस में सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें, **V.C.D's** और रसाइल वग़ैरा बांटिये कि येह भी स-दक़ा है और राहे ख़ुदा में स-दक़ा व ख़ैरात के क्या कहने ! हु़ज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान का **स-दक़ा** उ़म्र में ज़ियादती का सबब है और बुरी मौत को दफ़अ़ करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की वज्ह से **तकब्बुर** व फ़ख़्र को दूर फ़रमा देता है। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرانِی ، عمرو بن عوف بن ملحقۃ المزنی، ۶/۴۴۰، الحدیث:۱۳۵۰۸)

मैं सब दौलत रहे ह़क़ में लुटा दूं
ख़ुदा ! ऐसा मुझे जज़्बा अ़त़ा हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 165)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴿7﴾...... सय्यि-दतुना आइशा की रौज़ए रसूल पर हाज़िरी

जुमा'रात व शबे जुमुआ दुरूद पढ़ने की फ़ज़ीलत

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के कागज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह **यौमे जुमा'रात** और **शबे जुमुआ** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने वालों के नाम लिखते हैं।

(تاریخ مدینة دمشق، حرف المیم فی اباء من اسمه علی، علی بن محمد بن احمد، ۱۴۲/۴۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रौज़ए पर हाज़िरी की कैफ़िय्यत

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, फ़रमाती हैं : मैं अपने घर जिस में **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मेरे वालिद मदफ़ून हैं (या'नी रौज़ए अत़्हर), में दाख़िल होती तो अपने (बा'ज़) कपड़े उतार लेती (या'नी जो ग़ैरों के सामने सत्र पोशी के लिये ज़रूरी हैं) और अपने दिल में कहती कि यहां तो सिर्फ़ मेरे शोहर और मेरे वालिद हैं फिर जब हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वहां मदफ़ून हुए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़या की वज्ह से ख़ुदा की क़सम ! मैं वहां नहीं गई मगर अच्छी त़रह़ अपने ऊपर कपड़ों को लपेट कर।

(مسند احمد، مسند عائشه رضی الله عنها، ۱۰/۴۵۷، الحدیث:۲۶۴۰۸)

शर्हे ह़दीस

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان "**मिरआतुल मनाजीह़**" जिल्द **2** सफ़ह़ा **527** पर ज़िक्र कर्दा ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुए फ़रमाते हैं : "या'नी जब तक मेरे हुजरे में **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) मदफ़ून रहे तब तक तो मैं सर खोले या ढके हर त़रह़ हुजरे शरीफ़ में चली जाती थी क्यूं कि न ख़ावन्द से ह़िजाब होता है न वालिद से जब से ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) मेरे हुजरे में दफ़्न हो गए तब से मैं बिग़ैर चादर ओढ़े और पर्दे का पूरा एहतिमाम किये बिग़ैर हुजरे

www.dawateislami.net

शरीफ़ में न गई कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से शर्मो ह़या करती हूं। इस ह़दीस से बहुत मसाइल मा'लूम हो सकते हैं।

एक येह कि मय्यित का बा'दे वफ़ात भी एह़तिराम चाहिये। फ़ु-क़हा फ़रमाते हैं कि मय्यित का ऐसा ही एह़तिराम करे जैसा कि उस की ज़िन्दगी में करता था। **दूसरे** येह कि बुज़ुर्गों की क़ुबूर का भी एह़तिराम और इन से भी शर्मो ह़या चाहिये। **तीसरे** येह कि मय्यित क़ब्र के अन्दर से बाहर वालों को देखता और इन्हें जानता पहचानता है। देखो ! ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से आइशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) उन की वफ़ात के बा'द शर्मो ह़या फ़रमा रही हैं अगर आप बाहर की कोई चीज़ न देखते तो इस ह़या फ़रमाने के क्या मा'ना ? **चौथे** येह कि क़ब्र की मिट्टी तख़्ते वग़ैरा तो मय्यित की आंखों के लिये ह़िजाब नहीं बन सकते मगर ज़ाइर (या'नी ज़ियारत करने वाला) के जिस्म का लिबास उन के लिये आड़ है लिहाज़ा मय्यित को ज़ाइर (ज़ियारत करने वाला) नंगा नहीं दिखाई देता वरना ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का चादर ओढ़ कर वहां जाने के क्या मा'ना थे, येह क़ानूने क़ुदरत है। लिहाज़ा ह़दीस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि जब ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) क़ब्र के अन्दर से ज़ाइर को देख रहे हैं तो ज़ाइर के कपड़ों के अन्दर का जिस्म भी उन्हें नज़र आ रहा है।"

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा ह़दीसे पाक से हमें येह दो बातें भी मा'लूम हुईं :

﴿1﴾...... ग़ैर मह़रम से पर्दा ﴿2﴾...... ह़या

ग़ैर मह़रम से पर्दा क्यूं ज़रूरी है ?

चूंकि नाम ही से वाज़ेह़ है कि औ़रत को औ़रत इस लिये कहते हैं कि येह छुपाने की चीज़ है जैसा कि अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی से सुवाल हुवा कि औ़रत के लफ़्ज़ी मा'ना क्या हैं ? **इस** के जवाब में फ़रमाया : औ़रत के लुग़वी मा'ना हैं : "छुपाने की चीज़।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "औ़रत" "औ़रत" (या'नी छुपाने की चीज़) है जब वोह निकलती है तो उसे शैत़ान झांक कर देखता है (या'नी उसे देखना शैत़ानी काम है)। (سُنَنُ التِّرمِذِی، کتاب الرضاع، ۱۸-باب، ص۳۰۴، الحدیث:۱۱۷۳)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आयाते तृय्यिबा व अहादीसे मुबा-रका में औरतों को गै़र महरम से पर्दा करने की सख़्त ताकीद बयान फ़रमाई गई है, चुनान्चे पारह **22**, **सू-रतुल अहज़ाब**, आयत नम्बर **33** में पर्दे के हुक्म पर मुश्तमिल ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे नूरबार है :

وَقَرْنَ فِىْ بُیُوْتِكُنَّ وَ لَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِیَّةِ الْاُوْلٰى
(پ۲۲، الاحزاب:۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी ।

ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस के तहत फ़रमाते हैं : "अगली जाहिलिय्यत से मुराद क़ब्ले इस्लाम का ज़माना है, उस ज़माने में औरतें इतराती निकलती थीं, अपनी ज़ीनत व महासिन का इज़्हार करती थीं कि गै़र मर्द देखें । लिबास ऐसे पहनती थीं जिन से जिस्म के आ'ज़ा अच्छी तरह न ढकें ।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 22, सू-रतुल अहज़ाब, तहतल आयह : 33, स. 780)

अफ़्सोस ! मौजूदा दौर में भी ज़मानए जाहिलिय्यत वाली बे पर्दगी पाई जा रही है । यक़ीनन जैसे उस ज़माने में पर्दा ज़रूरी था वैसा ही अब भी ज़रूरी है ।

मुद्दते ज़मानए जाहिलिय्यत

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان "**तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान**" में मज़्कूरा आयए मुबा-रका के तहत फ़रमाते हैं : "**काश !** इस आयत से मौजूदा मुस्लिम औरतें इब्रत पकड़ें । येह औरतें उन **उम्महातुल मुअमिनीन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ से बढ़ कर नहीं । साहिबे रूहुल बयान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने फ़रमाया कि हज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام व तूफ़ाने नूह के दरमियान का ज़माना जाहिलिय्यते ऊला कहलाता है जो बारह सो बहत्तर **(1272)** साल है और सय्यिदुना ईसा عَلَیْهِ السَّلَام और हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरमियाने ज़माना जाहिलिय्यते उख़्रा है जो तक़रीबन छ सो **(600)** बरस है । "**وَاللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم"

(**تفسیر رُوحُ البیان، سورۃُ الاحزاب، تحت الآیۃ:۳۳، ۷/۱۷۱**، तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पारह : 22, अल अहज़ाब : तहतल आयह : 33, स. 507)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बे पर्दगी का वबाल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 397 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़्ह़ा 4 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बे पर्दगी के वबाल के बारे में सुवालन जवाबन तह़रीर फ़रमाते हैं :

सुवाल : बे पर्दगी का वबाल क्या है ?

जवाब : औ़रत की बे पर्दगी मूजिबे ग़ज़बे इलाही और सबबे तबाही है। इस सुवाल का जवाब पारह 18 सूरए नूर की आयत नम्बर 31 के इस ह़िस्से की तफ़्सीर में मुला-ह़ज़ा हो, चुनान्चे इर्शादे इलाही तआ़ला है :

وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ (پ۱۸، النور:۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुवा सिंगार।

बयान कर्दा आयते मुबा-रका के तह़्त मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "या'नी औ़रतें घर के अन्दर चलने फिरने में भी पाउं इस क़दर आहिस्ता रखें कि इन के ज़ेवर की झन्कार न सुनी जाए।"

मस्अला : इसी लिये चाहिये कि औ़रतें बाजेदार झांझन न पहनें। ह़दीस शरीफ़ में है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस क़ौम की दुआ़ नहीं क़बूल फ़रमाता जिन की औ़रतें झांझन पहनती हों।" (تفسیراتِ احمدیه، ص٥٦٥)

इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अ़-दमे क़बूले दुआ़ (या'नी दुआ़ क़बूल न होने) का सबब है तो ख़ास औ़रत की (अपनी) आवाज़ (का बिला इजाज़ते शर-ई ग़ैर मर्दों तक पहुंचना) और इस की बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़ज़बे इलाही होगी, पर्दे की त़रफ़ से बे परवाई तबाही का सबब है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 18, सू-रतुन्नूर, तह़्तल आयह : 31, स. 656)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! औ़रत के लिये पर्दा बहुत ज़रूरी चीज़ है और बे पर्दगी बहुत ही नुक़्सान देह, ह़दीस शरीफ़ में है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "औ़रत पर्दे में रहने की चीज़ है जिस वक़्त वोह बाहर निकलती है तो शैत़ान उस को झांक झांक कर देखता है।" (سُنَنُ التِّرْمِذِی، کتاب الرضاع، ١٨-باب، ص٣٠٤، الحدیث:١١٧٣)

www.dawateislami.net

और इर्शाद फ़रमाया : "जब भी कोई मर्द किसी औ़रत के साथ तन्हाई में होता है तो उन दोनों के दरमियान तीसरा शैत़ान होता है।"

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، کتاب الرضاع، باب ماجاء فی کراھیة الدخول...الخ، ص٣٠٤،الحدیث:١١٧١)

झांझन से मुराद कौन सा ज़ेवर है ?

सुवाल : ह़दीस में जिस बाजेदार झांझन पहनने की मुमा-न-अ़त की गई इस से कौन सा ज़ेवर मुराद है ?

जवाब : इस से घुंगरू वाला ज़ेवर मुराद है। ऐसे ज़ेवर पहनने वालियों से मु-तअ़ल्लिक़ एक ह़दीस में इर्शाद होता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ झांजन की आवाज़ को ऐसे ही ना पसन्द फ़रमाता है जिस त़रह़ ग़िना (गाने) को ना पसन्द फ़रमाता है और इसे पहनने वाली का ह़श्र वैसा ही करेगा जैसा कि मज़ामीर वालों का होगा और मल्ऊ़ना (या'नी ला'नती) औ़रत ही आवाज़ वाली झांझन पहनती है।

(کنزالعُمَّال، کتاب النکاح، الباب السادس فی ترھیبات وترغیبات وتختص بالنساء، الجزء١٦، ١٦٤/٨، الحدیث:٤٥٠٦٣)

हर घुंगरू के साथ शैत़ान होता है

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم फ़रमाते हैं कि हमारे यहां की लौंडी ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) की लड़की को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास लाई और उस के पाउं में घुंघरू थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उन्हें काट दिया और फ़रमाया : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि हर घुंघरू के साथ शैत़ान होता है।

(سنن ابی داؤد، کتاب الخاتم، باب ما جاء فی الجلاجل، ص٦٦٢، الحدیث:٤٢٣٠)

झांज वाले घर में फ़िरिश्ते नहीं आते

ह़ज़रते सय्यि-दतुना बुनाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि वोह उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास थीं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की ख़िदमत में एक बच्ची को लाया गया और उसे आवाज़ देने वाले झांझन पहनाए हुए थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बोलीं कि इसे मेरे पास हरगिज़ न लाओ मगर इस सूरत में कि इस के झांझन तोड़ दिये जाएं और फ़रमाया : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि **उस घर में फ़िरिश्ते नहीं आते जिस में झांझ हो।**

(المرجعُ السّابق، الحدیث:٤٢٣١)

www.dawateislami.net

मज़्कूरा ह़दीस में "**जरस**" का लफ़्ज़ इस्ति'माल हुवा, इस की तह़क़ीक़ करते हुए **मुफ़स्सिरे शहीर**, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "**अजरास** जम्अ़ **जरस** की ब मा'ना जलाजल या'नी घुंगरू और इस जैसी आवाज़ देने वाली चीज़, ऊंट के गले के घुंगरों और बाज़ (नामी परिन्दे) के पाउं के छल्लों को भी अजरास या जलाजल कहते हैं। हमारे हिन्दूस्तान में भी पहले औ़रतों में झांजन का रवाज था।" इसी ह़दीसे पाक में झांझन तोड़ देने का ज़िक्र भी हुवा, इस का त़रीक़ा बयान करते हुए मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस त़रह़ (तोड़ दें) कि इन के अन्दर के कंकर निकाल दिये जाएं या इस त़रह़ कि उस के घुंगरू अलग कर दिये जाएं या इस त़रह़ कि ख़ुद झांझन ही तोड़ दिये जाएं ग़-रज़े कि इन में आवाज़ न रहे।" (مراۃ المناجیح، باب الخاتم، ۶/۱۳۵، ۱۳۶)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आप के बा पर्दा रहने के मज़ीद वाक़िआ़त

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये म-दनी माह़ोल ज़रूरी है, वरना आ़रिज़ी त़ौर पर जज़्बा पैदा होता भी है तो अच्छी सोहबत के फ़ुक़्दान (या'नी कमी) के सबब इस्तिक़ामत नहीं मिल पाती। अपना म-दनी ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये **आइये !** उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की मज़ीद बा पर्दा रहने की एह़तियातें मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और बा पर्दा रहने का अ़ज़्मे मुसम्मम कीजिये।

आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا पर्दे का बहुत ज़ियादा एहतिमाम फ़रमातीं, आयते ह़िजाब के बा'द तो पर्दा ताकीदी फ़र्ज़ हो गया था।

चुनान्चे एक मर्तबा उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ख़िदमते सारापा ग़ैरत में उन के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बेटी ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ह़ाज़िर हुईं उन्हों ने बारीक दुपट्टा ओढ़ रखा था, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने उस दुपट्टे को फाड़ दिया और उन्हें मोटा दुपट्टा उढ़ा दिया।

(موطا امام مالك، كتاب اللباس، باب ما يكره للنساء لبسه من الثياب، ص ٤٨٥، الحديث:١٧٣٩)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी उस दुपट्टे को फाड़ कर दो रुमाल बना दिये ताकि ओढ़ने के क़ाबिल न रहे, रुमाल के काम आवे लिहाज़ा इस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि आप ने येह माल ज़ाएअ़ क्यूं फ़रमा दिया। मज़ीद फ़रमाते हैं : येह है अ़-मली तब्लीग़ और बच्चियों की सह़ीह़

www.dawateislami.net

तरबिय्यतो ता'लीम, उस दुपट्टे से सर के बाल चमक रहे थे सित्र ह़ासिल न था इस लिये येह अ़मल फ़रमाया। (مرآۃ المناجیح، کتاب اللباس، الفصل الثالث، ۶/۱۲۴)

पर्दे की एह़तियात् ! سُبْحٰنَ اللہ !

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू कुऐ़स** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की ज़ौजा ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बचपन में दूध पिलाया था, लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू कुऐ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के रज़ा-ई वालिद और अबू कुऐ़स के भाई अफ़्लह़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के रज़ा-ई चचा हुए। जब पर्दे से मु-तअ़ल्लिक़ आयाते मुक़द्दसा नाज़िल हुईं और अफ़्लह़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास आना चाहा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पर्दे की एह़तियात् के पेशे नज़र मन्अ़ फ़रमा दिया, चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में है कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "ह़िजाब का हुक्म नाज़िल होने के बा'द अबू कुऐ़स के भाई अफ़्लह़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने मुझ से घर आने की इजाज़त त़लब की। मैं ने कहा : मैं उस वक़्त तक इजाज़त नहीं दूंगी जब तक मैं इस के मु-तअ़ल्लिक़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त ह़ासिल न कर लूं क्यूं कि अबू कुऐ़स के भाई (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने मुझे दूध नहीं पिलाया अलबत्ता मुझे अबू कुऐ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की बीवी ने दूध पिलाया है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे घर तशरीफ़ लाए तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अबू कुऐ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के भाई अफ़्लह़ ने मुझ से अन्दर आने की इजाज़त मांगी तो मैं ने उस को घर में आने की इजाज़त देने से इन्कार कर दिया ह़त्ता कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस को घर में आने की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाएं। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! तुझे अपने चचा को इजाज़त देने से किस ने रोका ? मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस शख़्स ने मुझे दूध नहीं पिलाया, मुझे तो अबू कुऐ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की बीवी ने दूध पिलाया है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस को इजाज़त दीजिये, वोह तुम्हारा चचा है।"

(صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب قوله: اِنْ تُبْدُوْا شَیْئًا اَوْ تُخْفُوْهُ ...الخ، ص۱۲۱۹، الحدیث:۴۷۹۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

क्या पर्दा तरक़्क़ी में रुकावट है ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! سُبْحٰنَ اللّٰه ! उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا किस क़दर पर्दे की एह़तियात़ करती थीं कि अपने रज़ा-ई चचा अफ़्लह़ से भी पर्दा कर लिया इस रिवायत से मेरी वोह बहनें नसीह़त ह़ासिल करें जो ना मह़रमों से पर्दा नहीं करतीं। आज अक्सर अफ़राद आज़्माइशों में मुब्तला हैं कोई बीमार है, तो कोई क़र्ज़दार। कोई घरेलू ना चाक़ियों का शिकार है, तो कोई तंगदस्तो बे रोज़गार। कोई औलाद का त़लब गार है, तो कोई ना फ़रमान औलाद की वज्ह से बेज़ार। मुसल्मान बे पर्दगी के सबब तनज़्ज़ुली के अ़मीक़ गढ़े में गिरते चले जा रहे हैं, येह बे पर्दगी का वबाल नहीं तो और क्या है ? यक़ीनन बे पर्दगी तरक़्क़ी में रुकावट है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **397** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा **152** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ इसी क़िस्म के एक सुवाल का जवाब देते हुए हमें अस्लाफ़ की याद दिलाते हैं :

सुवाल : बा'ज़ लोग कहते हैं कि कुफ़्फ़ार बहुत आगे निकल चुके हैं, पर्दे पर सख़्ती मुसल्मानों की तरक़्क़ी में रुकावट है !

जवाब : मुसल्मानों की तरक़्क़ी में पर्दा नहीं दर ह़क़ीक़त बे पर्दगी रुकावट बनी हुई है। जी हां ! जब तक मुसल्मानों में शर्मो ह़या और पर्दे का दौर दौरा रहा तब तक वोह फ़ुतूह़ात पर फ़ुतूह़ात करते चले गए यहां तक कि दुन्या के बे शुमार ममालिक पर परचमे इस्लाम लहराने लगा। पर्दा नशीन माओं ने बड़े बड़े बहादुर जरनेल व सिपह सालार, अ़ज़ीम हुक्मरान, उ़-लमाए रब्बानिय्यीन और औलियाए कामिलीन को जनम दिया, तमाम उम्महातुल मुअमिनीन व जुम्ला सह़ाबिय्याते सय्यिदुल मुर-सलीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ बा पर्दा थीं ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا की वालिदए माजिदा ख़ातूने जन्नत सय्यि-दतुना फ़ात़िमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बा पर्दा थीं, सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَکۡرَم की वालिदए मोह़-त-रमा सय्यि-दतुना उम्मुल ख़ैर फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बा पर्दा थीं। अल ग़रज़ जब तक पर्दा क़ाइम था और इ़फ़्फ़त मआब ख़्वातीन चादर और चार दीवारी के अन्दर थीं, मुसल्मान ख़ूब तरक़्क़ी की मनाज़िल त़ै करता रहा और कुफ़्फ़ार पर ग़ालिब रहा। जब से कुफ़्फ़ारे मक्कार के ज़ेरे असर आ कर मुसल्मानों ने बे पर्दगी का सिल्सिला शुरूअ़ किया है, मुसल्सल तनज़्ज़ुल के गहरे गढ़े में गिरते चले जा रहे हैं, कल तक जो कुफ़्फ़ारे बद अन्जाम मुसल्मान के नाम से लरज़ा बर अन्दाम थे आज वोह मुसल्मानों की बे पर्दगियों और बद अ़-मलियों के बाइ़स ग़ालिब आ चुके हैं, इस्लामी ममालिक पर बा क़ाइ़दा जारिह़ाना ह़म्ले हो रहे हैं और ज़ालिमाना क़ब्ज़े किये जा रहे हैं मगर मुसल्मान है कि होश के

www.dawateislami.net

नाख़ुन नहीं लेता।

आह ! आज का नादान मुसल्मान **T.V., V.C.R** और **INTERNET** पर फ़िल्में डिरामे चला कर, बेहूदा फ़िल्मी गीत गुनगुना कर, शादियों में नाचरंग की महफ़िलें जमा कर, काफ़िरों की नक़्क़ाली में दाढ़ी मुंडा कर, कुफ़्फ़ार जैसा बे शरमाना लिबास बदन पर चढ़ा कर, स्कूटर के पीछे बे पर्दा बेगम को बिठा कर, बे ह़या बीवी को मेकअप करवा कर मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाह में ले जा कर, अपनी औलाद को दुन्यवी ता'लीम की ख़ातिर कुफ़्फ़ार के ममालिक में काफ़िरों के सिपुर्द करवा कर न जाने किस क़िस्म की तरक़्क़ी का मु-तलाशी है ! (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 152, ता 154)

वोह क़ौम जो कल तक खेलती थी शमशीरों के साथ
सिनेमा देखती है आज वोह हमशीरों के साथ

(المرجع السابق، ص١٥٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बच्चे का पहला मक्तब मां की गोद है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! जब तक माएं बा पर्दा थीं अह़कामे शरइय्या की पासदारी करने वाली थीं तो उन के बत़नों से बहादुर जरनेल व सिपह सालार, अ़ज़ीम हुक्मरान, उ़-लमाए रब्बानिय्यीन और औलियाए कामिलीन ने जनम लिया और जब से बे पर्दगी का दौर दौरा हुवा, फ़ह़्ह़ाशी और उ़रयानी ने ज़ोर पकड़ा इस माहोल ने मुसल्मानों की सोचों को बदल कर रख दिया, मज़्हबी नज़र आने वाले लोग भी बे पर्दगी के वबाल में मुब्तला हैं यक़ीनन औलाद की अच्छी तरबिय्यत बेह़द ज़रूरी है और औलाद की तरबिय्यत का पहला मक्तब मां की गोद है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **397** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''पर्दे के बारे में सुवाल जवाब''** सफ़ह़ा **136** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सुवालन जवाबन फ़रमाते हैं :

सुवाल : एक इस्लामी बहन के लिये इल्मे दीन के ह़ुसूल का बुन्यादी ज़रीआ़ कौन सा है ?

जवाब : ज़रूरत की क़दर इल्मे दीन ह़ासिल करना यक़ीनन हर मुसल्मान मर्द औ़रत पर फ़र्ज़ है, जैसा कि ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया : ''طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ या'नी इल्म का त़लब करना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है।'' (سنن ابن ماجه، المقدّمة، باب فضل العلماء والحث على طلب العلم، ص٤٩، الحديث:٢٢٤)

लिहाज़ा इस के लिये सअ़्य (या'नी कोशिश) करना लाज़िमी है। ह़ुसूले इल्म के मुख़्तलिफ़ ज़राएअ़ में से एक ज़रीआ़ वालिदैन भी हैं, बच्चे का पहला मक्तब **''मां की गोद''** है। मां बाप के लिये ज़रूरी है कि अपनी औलाद की सह़ीह़ इस्लामी तरबिय्यत करें।

www.dawateislami.net

इस ज़िम्न में **दो फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा कीजिये :

﴾1﴿...... अपनी औलाद को तीन बातें सिखाओ : (1)...... अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत (2)...... अहले बैत की मह़ब्बत और (3)...... क़िराअते क़ुरआन।

(جمع الجوامع، قسم الاقوال حرف الهمزة ، الهمزة مع الدال، ۱/۱۲۶، الحديث:۷۸۲)

﴾2﴿...... अपनी औलाद से नेक सुलूक करो और इन्हें आदाबे ज़िन्दगी सिखाओ।

(سُنَنِ اِبنِ ماجه، كتاب الادب، باب بر الوالد والاحسان الى البنات، ص ۵۹۱، الحديث:۳۶۷۱)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इन दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मा'लूम हुवा कि हम सब को चाहिये कि अपने घर वालों पर इन्फ़िरादी कोशिश करते रहें बल्कि अ़वाम के मुक़ाबले में घर वालों पर ज़ियादा तवज्जोह दें ख़ुसूसन वालिद को चाहिये कि ख़ुद भी आ'माले सालिह़ा बजा लाए और अपने बच्चों और उन की अम्मी को भी इस्लाह़ के म-दनी फूल फ़राहम करता रहे।

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला पारह **28**, **सू-रतुत्तह़रीम**, आयत नम्बर **6** में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ (پ۲۸، التحريم:۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पत्थर हैं।

अहले ख़ाना को दोज़ख़ से कैसे बचाएं ?

इस आयते मुबा-रका के तह़त **"तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में है : **"अल्लाह तआ़ला** और उस के रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर के, इबादतें बजा ला कर, गुनाहों से बाज़ रह कर घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमा-न-अ़त कर के और इन्हें इ़ल्म व अदब सिखा कर (अपनी जानों को जहन्नम से बचाओ)।"

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 28, सू-रतुत्तह़रीम, तह़्तल आयह : 6, स. 1037)

आ'ज़ाए जिस्मानी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे जिस्म के आ'ज़ा म-सलन आंख, कान, ज़बान, दिल और पाउं वग़ैरा जो आज हर अच्छे बुरे काम में हमारे मुआ़विन हैं, किसी भी नेकी के काम पर ह़ौसला अफ़्ज़ाई या गुनाह के इरतिकाब पर मलामत करने की बजाए बिल्कुल ख़ामोश रहते हुए हमें अपने तअस्सुरात से मुकम्मल त़ौर पर "मह़रूम" रखते हैं। लेकिन बरोज़े क़ियामत येही आ'ज़ा हमारे आ'माल पर गवाह होंगे कि हम इन्हें किन कामों में इस्ति'माल करते रहे हैं, जैसा कि सूरए बनी इस्राईल में इर्शाद होता है :

www.dawateislami.net

إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا (پ۱۵، بنی اسراءیل:۳۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक कान और आंख और दिल इन सब से सुवाल होना है।

इस आयते मुबा-रका के तहत "**तफ़्सीरे क़ुरतुबी**" में है कि "या'नी इन में से हर एक से इस के इस्ति'माल के बारे में सुवाल होगा, चुनान्चे दिल से पूछा जाएगा कि इस दिल में क्या ख़याल आया और इस बारे में क्या ए'तिक़ाद रखा जब कि आंख और कान से पूछा जाएगा कि इस के ज़रीए क्या देखा और क्या सुना।" (تفسیر قرطبی، سورۃ الاسراء، تحت الآیۃ:۳۶، ۱۶۱/۵)

जब कि अ़ल्लामा सय्यिद महमूद आलोसी बग़दादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی "**तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी**" में इसी आयते मुबा-रका के तहत लिखते हैं : "येह आयत इस बात पर दलील है कि आदमी के दिल के अफ़्आ़ल पर भी इस की पकड़ होगी म-सलन किसी गुनाह का पुख़्ता इरादा कर लेना और दिल का मुख़्तलिफ़ बीमारियों म-सलन कीना, ह़सद और ख़ुद पसन्दी वग़ैरा में मुब्तला हो जाना, **हां ! उ़-लमा** ने इस बात की तसरीह़ फ़रमाई कि दिल में किसी गुनाह के बारे में मह़ज़ सोचने पर पकड़ न होगी जब कि उस के करने का पुख़्ता इरादा न रखता हो।"
(تفسیر رُوحُ المعانی، بنی اسرائیل، تحت الآیۃ:۳۶، جزء ۱۵، ص۷۵)

जब कि सूरए नूर में इर्शाद फ़रमाया :

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (پ۱۸، النور:۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन उन पर गवाही देंगी उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पाउं जो करते थे।

अ़ल्लामा आलोसी बग़दादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयते मुबा-रका के तहत लिखते हैं : "मज़्कूरा आ'ज़ा की गवाही का मत़लब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी क़ुदरते कामिला से इन्हें बोलने की क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमाएगा, फिर इन में से हर एक उ़ज़्व उस शख़्स के बारे में गवाही देगा कि वोह इन से क्या काम लेता रहा है।" (المرجع السّابق، سورۃ النور، تحت الآیۃ:۲۴، ۱۸/۱۲۹)

बरोज़े क़ियामत आ'ज़ा की गवाही देंगे

"क़ियामत के दिन एक शख़्स को बारगाहे ख़ुदा वन्दी में लाया जाएगा और उसे उस का आ'माल नामा दिया जाएगा तो वोह उस में कसीर गुनाह पाएगा। वोह अ़र्ज़ करेगा : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तो येह गुनाह किये ही नहीं ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "मेरे पास इस के मज़्बूत़ गवाह हैं।" वोह बन्दा अपने दाएं बाएं मुड़ कर देखेगा लेकिन किसी गवाह को मौजूद न पाएगा और कहेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! वोह गवाह कहां हैं ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के आ'ज़ा को गवाही देने का हुक्म देगा। कान कहेंगे : "हां ! हम ने (ह़राम) सुना और हम इस पर गवाह हैं।" आंखें कहेंगी : "हां ! हम ने (ह़राम) देखा।" ज़बान कहेगी : "हां ! मैं ने (ह़राम) बोला

www.dawateislami.net

था।'' इसी त़रह़ हाथ और पाउं कहेंगे : ''हां ! हम (ह़राम की त़रफ़) बढ़े थे।'' शर्मगाह पुकारेगी : ''हां ! मैं ने ज़िना किया था।'' और वोह बन्दा येह सब सुन कर ह़ैरान रह जाएगा।''

(دُرّۃ الناصحین، مجلس من سورۃ الحشر: یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ ......الخ، فی بیان البکاء، ص۲۶۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

''बा ह़या'' के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से सय्यि-दतुना आ़इशा की ह़या के मु-तअ़ल्लिक़ 5 अह़ादीसे मुबा-रका

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आ़लिमा, मुफ़्तिया, मुज्तहिदा होने के साथ साथ बहुत ज़ियादा बा अ़मल और अह़कामे शर-अ़ की पासदारी करने वाली थीं और बहुत ज़ियादा बा ह़या थीं।

आइये ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ह़या के मु-तअ़ल्लिक़ 5 अह़ादीसे मुबा-रका सुनिये और अ़ह्द कीजिये कि आयिन्दा हभ भी बा पर्दा रहेंगी :

﴾1﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं : हमारे पास से सुवारों के क़ाफ़िले गुज़रते थे और हम रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ालते एह़राम में थीं, जब वोह हमारे सामने आते तो हम में से हर एक अपनी चादर को अपने सर से लटका कर अपने चेहरे पर कर लेती और जब वोह (लोग) गुज़र जाते तो हम अपने चेहरे खोल लेतीं। (سنن اَبی دَاوٗد ،کتاب المناسک، باب فی المحرمۃ تغطی وجھھا، ص۲۹۷، الحدیث:۱۸۳۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! एह़राम की ह़ालत कि जिस में चेहरे से कपड़ा मस **(TOUCH)** करना मन्अ़ है, इस ह़ालत में भी उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने चेहरे को ग़ैर मर्दों से छुपाने का एहतिमाम फ़रमाती थीं। **याद रखिये !** एह़राम में चेहरे पर कपड़ा मस करना ह़राम है लिहाज़ा वोह इस एह़तियात़ के साथ चेहरा छुपाती थीं कि कपड़ा चेहरे से मस न हो। यहां येह बात भी याद रखने के क़ाबिल है कि उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ اَجْمَعِیْن आ़म ह़ालात में भी अपने चेहरे को छुपातीं और सख़्त पर्दा करती थीं जभी तो ह़दीसे पाक में ह़ालते एह़राम में चेहरा न छुपाने का हुक्म दिया गया, चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**وَلَا تَنْتَقِبِ الْمَرْاَۃُ الْمُحْرِمَۃُ وَلَا تَلْبَسِ الْقُفَّازَیْن** तरजमा : **ह़ालते एह़राम में कोई औ़रत न चेहरे पर निक़ाब ले और न ही दस्ताने पहने।''**

(صحیح البُخاری، کتاب جزاء الصید، باب ما ینھی من الطیب ...الخ، ص۴۹۰، الحدیث:۱۸۳۸)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हालते एहराम में मुंह छुपाना औरतों को भी हराम है ना महरम के आगे कोई पंखा (या गत्ता) वग़ैरा मुंह से बचा हुवा सामने रखे।

(बहारे शरीअत, एहराम का बयान, एहराम में मर्द व औरत का फ़र्क़, हिस्सा : 6, जि. 1, स. 1083)

नीज़ इस्लामी बहन पी केप वाला निक़ाब भी पहन सकती है मगर येह एहतियात ज़रूरी है कि चेहरे से मस **(Touch)** न हो। इस में येह अन्देशा रहेगा कि तेज़ हवा चले और निक़ाब चेहरे से चिपक जाए या बे तवज्जोही में पसीना वग़ैरा इसी निक़ाब से पोंछने लगे, लिहाज़ा सख़्त एहतियात रखनी होगी। (रफ़ीक़ुल ह-रमैन, स. 85)

दौराने तवाफ़ भी पर्दा फ़रमातीं

﴾2﴿...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मर्दों से अलग हो कर तवाफ़ करती थीं एक औरत ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अ़र्ज़ की : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! चलिये, ह-जरे अस्वद को बोसा दे लें। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने खुद जाने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया : तुम जाओ। पस अज़्वाजे मुतहहरात रात को इस तरह निकलतीं कि पहचानी न जाती थीं और मर्दों के साथ तवाफ़ करतीं, लेकिन जब बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल होना चाहतीं तो बाहर खड़ी रहतीं हत्ता कि मर्दों को (ख़ानए का'बा से बाहर) निकाल दिया जाता।

(صحیح البُخارِی، کتاب الحج، باب طواف النساء مع الرجال، ص٤٤٤، الحدیث:١٦١٨، ملتقطًا)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह-जरे अस्वद जन्नत का वोह खुश नसीब पथ्थर है जिसे हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यक़ीनन चूमा है। अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **"रफ़ीक़ुल ह-रमैन"** में इर्शाद फ़रमाते हैं : अगर मुम्किन हो तो ह-जरे अस्वद शरीफ़ पर दोनों हथेलियां और इन के बीच में मुंह रख कर यूं बोसा दीजिये(1) कि आवाज़ पैदा न हो तीन बार ऐसा ही कीजिये।

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! झूम जाइये कि आप के लब उस मुबारक जगह लग रहे हैं जहां यक़ीनन मदीने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लबहाए मुबा-रका लगे हैं। मचल जाइये...... तड़प उठिये...... और हो सके तो आंसूओं को बहने दीजिये।

---

(1)...... ह-जरे अस्वद को कब और किस वक़्त बोसा देना चाहिये ? जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 351 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब **"रफ़ीक़ुल ह-रमैन"** सफ़्हा 94, 95 मुला-हज़ा फ़रमाइये। (इल्मिय्या)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं कि हमारे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़-जरे अस्वद पर लबहाए मुबा-रका रख कर रोते रहे फिर इल्तिफ़ात फ़रमाया (या'नी तवज्जोह फ़रमाई) तो क्या देखते हैं कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ भी रो रहे हैं। इर्शाद फ़रमाया : ऐ उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) ! येह रोने और आंसू बहाने का ही मक़ाम है। (ابن ماجه، كتاب المناسك، باب استلام الحجر، ص٤٧٧، الحديث:٢٩٤٥)

रोने वाली आंखें मांगो रोना सब का काम नहीं
ज़िक्रे मह़ब्बत आ़म है लेकिन सोज़े मह़ब्बत आ़म नहीं

इस बात का ख़याल रखिये कि लोगों को आप के धक्के न लगें कि येह क़ुव्वत के मुज़ा-हरे की नहीं, आ़जिज़ी और मिस्कीनी के इज़्हार की जगह है, हुजूम के सबब अगर बोसा मुयस्सर न आ सके तो न औरों को ईज़ा दें न ख़ुद दबें कुचलें बल्कि हाथ या लकड़ी से ह़-जरे अस्वद को छू कर उसे चूम लीजिये येह भी न बन पड़े तो हाथों का इशारा कर के अपने हाथों को चूम लीजिये येही क्या कम है कि मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक मुंह रखने की जगह पर आप की निगाहें पड़ रही हैं। (रफ़ीक़ुल ह़-रमैन, स. 95 ता 96)

नाबीना से भी पर्दा

﴾3﴿...... त़बक़ातुल कुब्रा में इब्ने सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ आ'मा (नाबीना सह़ाबी) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि "मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने मुझ से पर्दा किया तो मैं ने अ़र्ज़ की : आप मुझ से पर्दा करती हैं ह़ालां कि मैं आप को देख नहीं सकता ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : मैं तो आप को देख सकती हूं।"
(طبقاتِ ابنِ سعد، ذكر ازواج رسول الله، عائشه،١٠/ ٦٨)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का पर्दे का येह एहतिमाम सरकारे अबद क़रार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान पर अ़मल के नतीजे में है कि एक दफ़्आ़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी दो अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا को एक नाबीना सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से पर्दा करने का हुक्म फ़रमाया था जैसा कि तिरमिज़ी शरीफ़ में है, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि वोह और ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا दोनों हुज़ूर عَلَیۡہِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर थीं कि ना गहां इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ आ गए, येह उस वक़्त की बात है जब कि पर्दे की आयत नाज़िल हो चुकी थी तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : तुम दोनों उन से पर्दा करो। तो मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या वोह नाबीना नहीं हैं ? वोह तो हमें देखते नहीं, न हमें पहचानते हैं तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम दोनों भी नाबीना हो, क्या तुम दोनों इन्हें देख नहीं रही हो ?

(سُنَنُ التِّرمِذِی، کتاب الادب، باب ما جاء فی احتجاب النساء من الرجال، ص ٦٥٠، الحدیث:٢٧٧٨)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़-सनैने करीमैन से भी पर्दा

﴾4﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ह़ज़रते ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से पर्दा किया करती थीं तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के लिये ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को देखना ह़लाल है। (طبقاتِ ابنِ سعد، ذکر من کان یصلح له الدخول علی ازواج النبی، ١٧٠/١٠)

﴾5﴿...... एक रिवायत में है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ह़ज़राते ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से पर्दा किया करती थीं तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : इन दोनों का बारगाहे आ़इशा में ह़ाज़िर होना जाइज़ है। (ایضاً، ذکر ازواج رسول اللّٰه، عائشه، ٧٢/١٠)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़या ईमान से है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अभी आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا कितनी ज़ियादा बा ह़या और बा पर्दा थीं कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने ह़ालते एह़राम व त़वाफ़ में भी पर्दे का दामन न छोड़ा जिस में चेहरे पर कपड़ा मस करना मन्अ़ है बल्कि अपने नवासे ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से भी पर्दा किया ऐसा क्यूं न करतीं कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बा ह़या और बा पर्दा थीं, चुनान्चे ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**اَلْحَیَاءُ مِنَ الْاِیْمَان**" या'नी ह़या ईमान से है।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان عدد شعب الایمان ...الخ، ص٣٩، الحدیث:٣٦)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : शर्मो ह़या ईमान का रुक्ने आ'ला है। दुन्या वालों से ह़या दुन्यावी बुराइयों से रोक देती है और दीन वालों से ह़या दीनी बुराइयों से रोक देती है। **अल्लाह** रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰله وسلّم से शर्मो ह़या तमाम बद अ़क़ीदगियों, बद अ़-मलियों से बचा लेती

www.dawateislami.net

है। ईमान की इमारत इसी शर्मो ह़या पर क़ाइम है। दरख़्ते ईमान की जड़ मोमिन के दिल में रहती है (जब कि) इस की शाख़ें जन्नत में हैं। (مرآۃ المناجیح،کتاب الاداب،باب الرفق والحیاء...الخ،۶/۶۴۱)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 64 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल बयान "**बा ह़या नौ जवान**" सफ़्ह़ा 14 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ मज़्कूरा ह़दीसे पाक नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : या'नी जिस त़रह़ ईमान, मोमिन को कुफ़्र के इरतिकाब से रोकता है इसी त़रह़ ह़या बा ह़या को ना फ़रमानियों से बचाती है। यूं मजाज़न इसे "ईमान" से ता'बीर फ़रमाया गया। इस की मज़ीद वज़ाह़त व ताईद ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की इस रिवायत से होती है कि "बेशक ह़या और ईमान दोनों आपस में मिले हुए हैं तो जब एक उठ जाए तो दूसरा भी उठा लिया जाता है।" (المستدرك للحاكم، كتاب الايمان، ٢٧ـ اذا زنى العبد خرج منه الايمان، ١٧٦/١، الحديث:٦٦)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़या की अक़्साम

फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "ह़या की दो क़िस्में हैं : (1)...... लोगों के मुआ़-मले में ह़या (2)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़-मले में ह़या। लोगों के मुआ़-मले में ह़या करने का मत़लब येह है कि तू अपनी नज़र को ह़राम कर्दा अश्या से बचाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़-मले में ह़या करने से मुराद येह है कि तू उस की ने'मत को पहचाने और उस की ना फ़रमानी करने से ह़या करे।" (تنبیه الغافلین، باب الحیاء، ص٢٧٣)

फ़ित़री और शर-ई ह़या

फ़ित़री व शर-ई ए'तिबार से भी ह़या की तक़्सीम की गई है। फ़ित़री ह़या वोह है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर जान में पैदा फ़रमाया है और येह पैदाइशी त़ौर पर हर शख़्स में होती है और शर-ई ह़या येह है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों और अपनी कोताहियों पर ग़ौर कर के नादिम व शरमिन्दा हो और इस शरमिन्दगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की बिना पर आयिन्दा गुनाहों से बचने और नेकियां करने की कोशिश करे।

ह़ज़रते मुल्ला अ़ली बिन सुल्त़ान क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने नक़्ल फ़रमाया : "ह़या एक ऐसा ख़ुल्क़ है जो बुरे काम छोड़ने पर उभारे और ह़क़दार के ह़क़ में कमी करने से रोके।"

(مرقاة المفاتیح، کتاب الاداب، باب الرفق والحیاء وحسن الخلق، ٢٦٨/٩، تحت الحدیث:٥٠٧١)

www.dawateislami.net

ह़या में तमाम इस्लामी अह़काम पोशीदा हैं

ह़या पर इस्लाम का मदार है और इस की तौजीह (या'नी वज्ह) येह है कि इन्सान के अफ़्आ़ल दो त़रह़ के हैं : (1).... जिन कामों से ह़या करता है (2).... जिन से ह़या नहीं करता। **पहली क़िस्म** ह़राम व मक्रूह को शामिल है और इन का तर्क मश्रूअ़ (या'नी मुवाफ़िक़े शर-अ़) है। **दूसरी क़िस्म** वाजिब, मुस्तह़ब और मुबाह़ को शामिल है, इन में से पहले दो का करना मश्रूअ़ और तीसरे का करना जाइज़ है। यूं येह ह़दीसे मुबा-रका "**जब तू ह़या न करे तो जो चाहे कर।**" इन पांचों अह़काम को शामिल है।

(مرقاة المفاتیح، کتاب الاداب، باب الرفق والحیاء وحسن الخلق، ۹/۲۷۰، تحت الحدیث:۵۰۷۲)

ह़या के अह़काम

ह़या कभी वाजिब व फ़र्ज़ होती है जैसे किसी ना जाइज़ व ह़राम के इरतिकाब से ह़या, कभी मन्दूब (मुस्तह़ब) जैसे मक्रूहे (तन्ज़ीही) से बचने में ह़या, कभी मुबाह़ (या'नी करना न करना यक्सां) जैसे किसी मुबाहे़ शर-ई के करने से ह़या। (نزھۃ القاری، کتاب الایمان، ۱/۳۳۴)

ह़या का माह़ोल से तअ़ल्लुक़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़या की नश्वो नमा में माह़ोल और तरबिय्यत का बहुत अ़मल दख़्ल है। ह़यादार माह़ोल मुयस्सर आने की सूरत में ह़या को ख़ूब निखार मिलता है जब कि बे ह़या लोगों की सोह़बत क़ल्बो निगाह की पाकीज़गी सल्ब कर के बे शर्म कर देती है और बन्दा बे शुमार ग़ैर अख़्लाक़ी और ना जाइज़ कामों में मुब्तला हो जाता है इस लिये कि ह़या ही तो थी जो बुराइयों और गुनाहों से रोकती थी। जब ह़या ही न रही तो अब बुराई से कौन रोके ? बहुत से लोग बदनामी के ख़ौफ़ से शरमा कर बुराइयां नहीं करते मगर जिन्हें नेकनामी व बदनामी की परवाह नहीं होती ऐसे बे ह़या लोग हर गुनाह कर गुज़रते, अख़्लाक़ियात की ह़ुदूद तोड़ कर बद अख़्लाक़ी के मैदान में उतर आते और इन्सानियत से गिरे हुए काम करने में भी नंगो आ़र मह़सूस नहीं करते।

ख़ुल्क़े इस्लाम

इस्लाम में ह़या को बहुत अहम्मिय्यत दी गई है, चुनान्चे ह़दीस शरीफ़ में है : "**बेशक हर दीन का एक ख़ुल्क़ है और इस्लाम का ख़ुल्क़ ह़या है।**"

(سنن ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الحياء، ص٦٧٩، الحديث:٤١٨١)

www.dawateislami.net

या'नी हर उम्मत की कोई न कोई ख़ास ख़स्लत होती है जो दीगर ख़स्लतों पर ग़ालिब होती है और इस्लाम की वोह ख़स्लत ह़या है। इस लिये कि ह़या एक ऐसा ख़ुल्क़ है जो अख़्लाक़ी अच्छाइयों की तक्मील और ईमान की मज़्बूती का बाइस और इस की अ़लामात में से है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"ईमान के 70 से ज़ाइद शो'बे (अ़लामात) हैं और ह़या ईमान का एक शो'बा है।"** (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان عدد شعب الایمان ...الخ، ص۳۹، الحدیث: ۳۵)

ह़या ख़ैर ही ख़ैर है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"ह़या सिर्फ़ ख़ैर (या'नी भलाई) ही लाती है।"**

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان عدد شعب الایمان...الخ، ص۳۹، الحدیث:۳۷)

वस्वसा : यहां येह वस्वसा आ सकता है कि बा'ज़ अवक़ात ह़या इन्सान को ह़क़ बात कहने, शर-ई हुक्म दरयाफ़्त करने, नेकी की दा'वत देने और इन्फ़िरादी कोशिश करने वग़ैरा म-दनी कामों से रोक कर उसे भलाई से मह़रूम कर देती है तो फिर येह सिर्फ़ भलाई तो न लाई !

इलाजे वस्वसा : इस का इ़लाज येह है कि ह़दीसे पाक में ह़या के शर-ई मा'ना हैं : **"ऐ़ब लगाए जाने के ख़ौफ़ से झेंपना (या'नी शरमाना)।"** इस से मुराद "वोह वस्फ़ है जो उन चीज़ों से रोक दे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और मख़्लूक़ के नज़्दीक ना पसन्दीदा हों।" और ह़याए शर-ई कभी भी नेकियों से न रोकेगी बल्कि उन पर मज़ीद उभारेगी। अबू दावूद शरीफ़ में है : "ह़या सब की सब ख़ैर (या'नी भलाई) है।" (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الحیاء، ص۷۵۵، الحدیث:۴۷۹۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दूल्हा लड़कियों के झुरमट में

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! जवान लड़की अब चादर और चार दीवारी से निकल कर मख़्लूत़ ता'लीम की नुहूसत में गिरिफ़्तार, **"बॉय फ्रेन्ड"** के चक्कर में फंस गई, इसे जब तक चादर और चार दीवारी में रहने की सआ़दत ह़ासिल थी वोह शरमीली थी और अब भी जो चादर व चार दीवार में होगी वोह اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बा ह़या ही होगी। **अफ़्सोस !** ह़ालात

www.dawateislami.net

बिल्कुल बदल चुके हैं, अब तो अक्सर कुंवारी लड़कियां शादियों में ख़ूब नाचतीं और मेहंदी व माइयों की रस्मों वग़ैरा में बे बाकाना बे हयाई के मुज़ा-हरे करती हैं, बा'ज़ क़ौमों में येह भी रवाज है कि दूल्हा निकाह़ के बा'द रुख़्सती से क़ब्ल ना मह़रमात कि जिन से पर्दा ज़रूरी है, उन जवान लड़कियों के झुरमट में जाता है और वोह दूल्हा के साथ खींचातानी व हंसी मज़ाक़ करती हैं येह सरासर ना जाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **अल ग़रज़ !** आज की फ़ेशन एबल व बे पर्दा लड़कियां अफ़्आल व अक़्वाल हर लिहाज़ से चादरे ह़या को तार तार कर रही हैं।

ग़ैरत रुख़्सत हो गई

शर-ई मस्अला है कि "अगर निकाह़ का वकील कुंवारी लड़की से ब वक़्ते निकाह़ इजाज़त ले और वोह (शरमा कर) ख़ामोश रहे तो येह इज़्न माना जाएगा।"

(دُرِّمُختار، کتاب النکاح، باب الولی، ٤/١٥٥،١٥٦)

मा'लूम हुवा कि पहले दौर की लड़कियां ऐसा करती होंगी जभी तो हमारे फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने येह मस्अला तह़रीर फ़रमाया। मगर अब तो लड़कियां अपने मुंह से "**शादी शादी**" कहतीं बल्कि ना मह़रमों के सामने भी शादी के तज़्किरे करते हुए नहीं शरमातीं। आप ख़ुद ही बताइये कि वोह मुन्ना या मुन्नी जो मां बाप के पहलू में बैठ कर **T.V.** और **V.C.R** वग़ैरा पर फ़िल्में डिरामे, रक़्सो सुरूद के ह़यासोज़ मनाज़िर और मर्दों और औ़रतों के गन्दे गन्दे नख़्रे देखेंगे क्या उन में शर्मो ह़या पैदा होगी ? क्या उन के बारे में येह उम्मीद की जा सकती है कि वोह बड़े हो कर मुआ़-शरे के बा ह़या व बा किरदार अफ़राद बनेंगे।

नाज़ुक शीशियां

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "सह़ीह़ ह़दीस से साबित है कि लड़कियों को सूरए यूसुफ़ शरीफ़ का तरजमा न पढ़ाया जाए कि इस में मक्रे ज़नान (या'नी औ़रतों के धोका देने) का ज़िक्र फ़रमाया है कि नाज़ुक शीशियां ज़रा सी ठेस से टूट जाएंगी।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 455 मुलख़्ख़सन)

बेटी को पहले ही से संभालिये......

जिन को सूरए यूसुफ़ की तफ़्सीर पढ़ने की मुमा-न-अ़त है **सद करोड़ अफ़्सोस !** आज कल वोही लड़कियां रूमानी नाविल, ग़ैर अख़्लाक़ी अफ़्साने और इ़श्क़िया व फ़िस्क़िया मज़ामीन ख़ूब पढ़ती हैं और बा'ज़ तो लिखती भी हैं, बेहूदा ग़ज़लें और गाने सुनती और गाती

www.dawateislami.net

हैं। टी.वी, वी.सी.आर वग़ैरा पर फ़िल्में डिरामे और न जाने क्या क्या देखती हैं (और जिन की ह़या बिल्कुल रुख़्सत हो वोह) इन में काम भी करती हैं। फ़िल्में डिरामे इश्क़िया मनाज़िर से पुर होते हैं। मां बाप अपनी औलाद को पहले से नहीं संभालते और फिर जब कोई लड़की अपनी मरज़ी से किसी के साथ "**मन्सूब**" हो जाती है तो अब मां बाप सर पकड़ कर रोते हैं। जो बाप लड़की को कॉलेज भेजते हैं, फ़िल्में डिरामे देखने से नहीं रोकते ग़ालिबन उन की येह दुन्यवी सज़ा होती है, शायद बाज़ी हाथ से निकल चुकी अब उस की ख़्वाहिश में आप का रुकावट डालना ख़ुदकुशी या क़त्लो ग़ारत गरी की नौबत भी ला सकता है!

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوْا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत से मह़रूम

जो लोग बा वुजूदे क़ुदरत अपनी औरतों और मह़ारिम को बे पर्दगी से मन्अ़ न करें वोह **दय्यूस** हैं, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "ثَلَاثَةٌ قَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَنَّةَ مُدْمِنُ الْخَمْرِ وَالْعَاقُّ وَالدَّيُّوْثُ الَّذِىْ يُقِرُّ فِىْ اَهْلِهِ الْخَبَثَ" या'नी तीन शख़्स हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत ह़राम फ़रमा दी है : **एक** तो वोह शख़्स जो हमेशा शराब पिये, **दूसरा** वोह जो अपने मां बाप की ना फ़रमानी करे और **तीसरा** वोह दय्यूस (या'नी बे ह़या) कि जो अपने घर वालों में बे ग़ैरती के कामों को बर क़रार रखे।"

(مُسنَدِ اِمام اَحمَد بن حَنبَل، مسند عبد الله بن عمر بن خطاب، ٤٢٨/٣، الحديث:٦٢٥٧)

दय्यूस किसे कहते हैं ?

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ "वोह दय्यूस (या'नी बे ह़या) कि जो अपने घर वालों में बे ग़ैरती के कामों को बर क़रार रखे" के तह़त फ़रमाते हैं : बा'ज़ शारिह़ीन ने फ़रमाया कि यहां **ख़बस** से मुराद ज़िना और अस्बाबे ज़िना हैं या'नी जो अपनी बीवी बच्चों के ज़िना या बे ह़याई, बे पर्दगी, अज्नबी मर्दों से इख़्तिलात़, बाज़ारों में ज़ीनत से फिरना, बे ह़याई के गाने नाच वग़ैरा देख कर बा वुजूद क़ुदरत के न रोके वोह बे ह़या दय्यूस है। (مراۃ المناجیح، کتاب الحدود، باب بیان الخمر......الخ، ۵/۳۳۷)

मा'लूम हुवा कि बा वुजूदे क़ुदरत अपनी ज़ौजा, मां, बहनों और जवान बेटियों वग़ैरा को गलियों, बाज़ारों, शॉपिंग सेन्टरों, मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में बे पर्दा घूमने फिरने, अज्नबी पड़ोसियों,

www.dawateislami.net

ना महरम रिश्तेदारों, ग़ैर महरम मुलाज़िमों, चोकीदारों, ड्राइवरों से बे तकल्लुफ़ी और बे पर्दगी से मन्अ़ न करने वाले सख़्त अहमक़, बे हया, दय्यूस, जन्नत से महरूम और जहन्नम के हक़दार हैं।

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "दय्यूस सख़्त अख़्बस फ़ासिक़ (है) और फ़ासिक़े मो'लिन के पीछे नमाज़ मक्रूहे तहरीमी, इसे इमाम बनाना हलाल नहीं और इस के पीछे नमाज़ पढ़नी गुनाह और पढ़ी तो फेरना वाजिब ।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 6, स. 583) अगर मर्द अपनी हैसिय्यत के मुताबिक़ मन्अ़ करता है मगर वोह नहीं मानतीं तो इस सूरत में उस पर न कोई इल्ज़ाम और न वोह दय्यूस ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

औरत की मज़ार पर हाज़िरी

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने औरतों को मज़ारात पर जाने से भी मन्अ़ फ़रमाया, चुनान्चे औरतों को मज़ारात पर जाने से मन्अ़ करते हुए **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **397** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़हा **204** पर **अमीरे अहले सुन्नत**, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

सुवाल : इस्लामी बहनें क़ब्रिस्तान या मज़ाराते औलिया पर जा सकती हैं या नहीं ?

जवाब : औरतों के लिये बा'ज़ उ़-लमा ने ज़ियारते क़ुबूर को जाइज़ बताया **"दुर्रे मुख़्तार"** में येही क़ौल इख़्तियार किया, मगर अ़ज़ीज़ों की क़ुबूर पर जाएंगी तो जज़अ़ व फ़ज़अ़ (या'नी रोना पीटना) करेंगी लिहाज़ा मम्नूअ़ है और सालिहीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن) की क़ुबूर पर ब-र-कत के लिये जाएं तो बूढ़ियों के लिये हरज नहीं और जवानों के लिये मम्नूअ़ ।

(رَدُّ الْمُحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی زیارۃ القبور، ۱۷۸/۳)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : और अस्लम (या'नी सलामती का रास्ता) येह है कि औरतें मुत्लक़न मन्अ़ की जाएं कि अपनों की क़ुबूर की ज़ियारत में तो वोही जज़अ़ व फ़ज़अ़ (या'नी रोना पीटना) है और सालिहीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن) की क़ुबूर पर या ता'ज़ीम में हद से गुज़र जाएंगी या बे अ-दबी करेंगी तो औरतों में येह दोनों बातें कसरत से पाई जाती हैं ।

(बहारे शरीअ़त, क़ब्र व दफ़्न का बयान, हिस्सा : 4, जि. 1, स. 849)

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने औरतों को मज़ारात पर जाने की जा बजा

www.dawateislami.net

मुमा-न-अ़त फ़रमाई। चुनान्चे, एक मक़ाम पर फ़रमाते हैं : इमाम क़ाज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से इस्तिफ़्ता (सुवाल) हुवा कि **औ़रतों का मक़ाबिर को जाना जाइज़ है या नहीं ?** फ़रमाया : ऐसी जगह जवाज़ व अ़-दमे जवाज़ (या'नी जाइज़ व ना जाइज़ का) नहीं पूछते, येह पूछो कि इस में औ़रत पर कितनी ला'नत पड़ती है ? जब घर से क़ुबूर की त़रफ़ चलने का इरादा करती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्तों की ला'नत होती है जब घर से बाहर निकलती है सब त़रफ़ों से शैत़ान उसे घेर लेते हैं, जब क़ब्र तक पहुंचती है मय्यित की रूह़ उस पर ला'नत करती है जब वापस आती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत में होती है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 557)

औ़रत की रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िरी

सुवाल : इस्लामी बहन मह़बूबे रब्बे अक्बर, मदीने के ताजवर, शहन्शाहे बह़्रो बर, हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुनव्वर पर भी ह़ाज़िरी के लिये जा सकती है या नहीं ?

जवाब : सिवाए रौज़ए अन्वर के किसी और मज़ार पर जाने की इजाज़त नहीं। वहां की ह़ाज़िरी अलबत्ता सुन्नते जलीला अ़ज़ीमा क़रीब ब वाजिब (या'नी वाजिब के क़रीब) है और क़ुरआने अ़ज़ीम ने इसे गुनाहों की मुआ़फ़ी का अ़ज़ीम ज़रीआ़ बताया, चुनान्चे पारह **5**, **सू-रतुन्निसाअ** की आयत नम्बर **64** में इर्शाद होता है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾
(پ٥، النساء:٦٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेह्रबान पाएं।

ख़ुद ह़दीसे पाक में इर्शाद हुवा : **''जो मेरी क़ब्र की ज़ियारत करे उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब।''** (سُنَنِ دارِ قُطنی، کتاب الحج، باب المواقیت، ۲/۲۱۷، الحدیث:۲۶۶۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **''जिस ने ह़ज किया और मेरी ज़ियारत न की उस ने मुझ पर जफ़ा की।''** (کنزُ العمال، کتاب الحج والعمرة، زیارة قبر النبی صلی اللہ علیہ وسلم من الاکمال، ج۳، ۵/۵۲، الحدیث:۱۲۳۶۵)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه औ़रतों की ह़ाज़िरिये क़ुबूर की मुमा-न-अ़त की वुजूहात बयान करते हुए फ़रमाते हैं : क़ुबूरे अक़्रिबा पर ख़ुसूसन बह़ाले क़ुर्बे अ़हदे ममात तज्दीदे हुज़्न लाज़िमे निसा है, और मज़ाराते औलिया पर ह़ाज़िरी में इह़्दश्शना-अ़तैन का अन्देशा या तर्के अदब या अदब में इफ़्राते ना जाइज़, तो सबीले इत़्लाक़

www.dawateislami.net

मन्अ़ है व लिहाज़ा ग़ुनिय्या में कराहत पर जज़्म फ़रमाया अलबत्ता ह़ाज़िरी व ख़ाक बोसिये आस्ताने अ़र्श निशान सरकारे आ'ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आ'ज़मुल मन्दूबात बल्कि क़रीबे वाजिबात है, इस से न रोकेंगे और ता'दीले अदब सिखाएंगे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 538)

या'नी बेशक ह़ाज़िरिये बारगाहे अक़्दस वाजिब के क़रीब है, इस में क़बूले तौबा और दौलते शफ़ाअ़त ह़ासिल होना भी है नीज़ इस में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ مَعَاذَاللہ जफ़ा (या'नी ज़ुल्म) से बचना भी है। येह अ़ज़ीम अहम उमूर ऐसे हैं जिन्हों ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सारे ग़ुलामों और सारी कनीज़ों पर ख़ाक बोसिये आस्ताने अ़र्श निशान लाज़िम कर दी ब ख़िलाफ़ दीगर क़ुबूर व मज़ारात कि वहां ऐसी ताकीदें नहीं और फ़साद के एह़तिमालात (इम्कानात) मौजूद कि अगर अ़ज़ीज़ों की क़ब्रें हैं तो औरतें बे सब्री करेंगी और औलिया के मज़ार पर या तो बे तमीज़ी या बे अ-दबी करेंगी या जहालत से ता'ज़ीम में ज़ियादती जैसा कि मा'लूम व मुशाहद (या'नी देखीभाली बात) है, लिहाज़ा इन के लिये सलामती वाला त़रीक़ा येही है कि वोह मज़ाराते औलिया व क़ुबूर की ज़ियारत से बचें।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औ़रत पर अपने नफ़्स के आदाब

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ **63** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**आदाबे दीन**" सफ़ह़ा **48** पर **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि "औ़रत को चाहिये कि हमेशा अपने घर की चार दीवारी में गोशा नशीन रहे, (बिला ज़रूरत) छत पर बार बार न चढ़े, अपनी गुफ़्त-गू पर पड़ोसियों को आगाह न करे (या'नी इतनी आवाज़ में गुफ़्त-गू करे कि इस की आवाज़ चार दीवारी से बाहर न जाए), बिला ज़रूरत पड़ोसियों के पास आया जाया न करे, जब इस का शोहर उस की त़रफ़ देखे तो उसे ख़ुश करे, शोहर की ग़ैर मौजू-दगी में उस की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करे, घर से न निकले, **हां !** (ज़रूरतन) अगर किसी काम से निकलना पड़े तो बा पर्दा हो कर निकले, ऐसे रास्ते और जगह से गुज़रे जहां ज़ियादा हुजूम और आ-मदो रफ़्त न हो, अपनी ग़ुरबत वग़ैरा को छुपाए बल्कि जानने वाले के सामने भी अपने आप को अज्नबी ज़ाहिर करे, अपनी तमाम तर कोशिश नफ़्स की इस्लाह़ और घरेलू मुआ़-मलात की दुरुस्ती में सर्फ़ करे, नमाज़, रोज़े की पाबन्दी करे, अपने उ़यूब पर नज़र रखे, दीनी मुआ़-मले में ख़ूब ग़ौरो तफ़क्कुर करे, ख़ामोशी की आ़दत बनाए, निगाहें नीची रखे, अपने दिल में रब्बे जब्बार عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ पैदा करे, कसरत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे, अपने शोहर की फ़रमां बरदार रहे, उसे रिज़्क़े ह़लाल कमाने की

www.dawateislami.net

तरग़ीब दिलाए, तहाइफ़ वग़ैरा की ज़ियादा फ़रमाइश न करे, शर्मो ह़या को लाज़िम पकड़े, बद ज़बानी व फ़ोह़श कलामी न करे, सब्रो शुक्र करे, अपने नफ़्स के मुआ़-मले में ईसार करे, अपनी ह़ालत और ख़ूराक के मुआ़-मले में ख़ुद को तसल्ली दे, जब शोहर का दोस्त घर में आने की इजाज़त चाहे और शोहर घर में मौजूद न हो तो उसे घर में आने की इजाज़त न दे और अपने नफ़्स और शोहर से ग़ैरत करते हुए उस से कस्रते कलाम न करे।" (مجموعه رسائلِ امام غزالی، رساله اَدَب فی الدین، ص٤١٣)

15 दिन के बा'द जब क़ब्र खुली......

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मेरा म-दनी मश्वरा है कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार हो जाएगा। **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कतों के क्या कहने ! यक़ीनन अच्छी सोह़बत रंग ला कर रहती है। ज़िन्दगी अपनी जगह पर मगर बा'ज़ अम्वात भी क़ाबिले रश्क हुवा करती हैं, ऐसी ही एक क़ाबिले रश्क मौत का तज़्किरा मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और रश्क कीजिये, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **397** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा **107** पर मेरे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ एक म-दनी बहार नक़्ल फ़रमाते हैं : अ़त्तारआबाद (जेकबआबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि मेरी अम्मीजान ग़ालिबन **2004** सि.ई. में क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या सिल्सिले में बैअ़त हो कर अ़त्तारिय्या बनीं। **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पन्ज वक़्ता नमाज़ की पाबन्दी के साथ साथ नवाफ़िल की अदाएगी का भी मा'मूल बन गया। **17** स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र **1430 सि.हि., 13** फ़रवरी **2009 सि.ई.** की सुब्ह़ अम्मीजान ने मुझे नमाज़े फ़ज्र के लिये बेदार किया और ख़ुद नमाज़े फ़ज्र पढ़ने में मश्ग़ूल हो गईं। मैं नमाज़ पढ़ कर लौटा तो वोह अभी मुसल्ले ही पर थीं। कुछ देर बा'द उन्हों ने दोबारा वुज़ू किया और नमाज़े इशराक़ की निय्यत बांध ली। जब पहली रक्अ़त में सज्दा किया तो सर न उठाया। घर वाले समझे कि शायद अम्मीजान को दौराने नमाज़ नींद आ गई है, जब बेदार करने की ग़रज़ से उन्हें हिलाया जुलाया तो वोह एक त़रफ़ लुढ़क गईं, घबरा कर देखा तो उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी ! اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ। यूं लगता है कि मेरी अम्मीजान को शहन्शाहे बग़दाद ह़ुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की निस्बत और **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी काम आ गई। ख़ुश क़िस्मती कि ऐन सज्दे की ह़ालत में

www.dawateislami.net

उन्हों ने दाइये अजल को **लब्बैक** कहा। मज़ीद करम बालाए करम येह हुवा कि इन्तिक़ाल के बा'द उन का चेहरा भी बहुत नूरानी हो गया था। इन्तिक़ाल के तक़रीबन **15** रोज़ के बा'द या'नी **2** रबीउ़न्नूर शरीफ़ **1430 सि.हि. (28** फ़रवरी **2009** ई. **)** बरोज़ हफ़्ता उन की क़ब्र की सिल गिर गई और क़ब्र में मिट्टी भर गई। दुरुस्ती के लिये जूं ही क़ब्र खोली गई तो हर त़रफ़ गुलाब के फूलों की ख़ुश्बू फैल गई ! नीज़ येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देख कर हम ख़ुशी के मारे झूम उठे कि अम्मीजान का कफ़न व बदन सलामत था। जब क़ब्र से मिट्टी निकाल ली गई तो मेरे भाई ने अम्मीजान के क़दमों को छुवा तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन का जिस्म ज़िन्दा इन्सानों की त़रह़ नर्म था, मेरे अब्बूजान का बयान है कि जब मैं ने चेहरे की त़रफ़ से कपड़ा हटा कर देखा तो चेहरा मज़ीद नूरानी हो चुका था।

इस्लामी भाई का मज़ीद बयान है **:** हैरत अंगेज़ बात येह थी कि जो सिलें क़ब्र में गिरी थीं, अम्मीजान का जिस्म उन की चोट से मह़फ़ूज़ रहा था वोह यूं कि उन का मुबारक व तरो ताज़ा लाशा क़ब्र की दीवार की सम्त खिसका हुवा था जैसे वोह ख़ुद उस त़रफ़ हुई हों या किसी ने कर दिया हो ह़ालां कि तदफ़ीन के वक़्त उन को क़ब्र के बीच में लिटाया गया था ! (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 107 ता 109)

दहन मैला नहीं होता बदन मैला नहीं होता
ख़ुदा के पाक बन्दों का कफ़न मैला नहीं होता

(المرجع السابق،ص۱۰۹)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने मश्हूरे ज़माना ना'तिया कलाम **''वसाइले बख़्शिश''** में यूं दुआ़ गो हैं **:**

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम   सारे जहां में मच जाए धूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा   या अल्लाह ! मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 109)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़सीन व अ़क़्लमन्द औलाद के लिये

ह़ामिला अगर ब कसरत ख़रबूज़ा खाए तो **औलाद ह़सीन** और सिह़्ह़त मन्द पैदा होगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ और अगर ह़ामिला ''लोबिया'' (जो कि एक मश्हूर सब्ज़ी है) कसरत से खाए तो औलाद अ़क़्लमन्द पैदा हो। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (घरेलू इलाज, स. 104)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾8﴿...... सय्यि-दतुना आइशा का ज़ोह्दो क़नाअत

दुरूदे पाक बाइसे कुर्बे इलाही है

''अल क़ौलुल बदीअ़'' में है : **''अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि मैं ने तेरे **10,000** कान बनाए ह़त्ता कि तूने मेरा कलाम सुना और **10,000** ज़बानें बनाईं ह़त्ता कि तूने मुझे जवाब दिया, तू मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब और मेरे सब से ज़ियादा क़रीब उस वक़्त होता है जब तू मेरा ज़िक्र करता है और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ता है।''

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة علی رسول اللّٰہ...الخ، ص۱۳۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

40 साल पहले जन्नत में दाख़िला

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **743** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बनाम **''जन्नत में ले जाने वाले आ'माल''** सफ़ह़ा **671** पर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी :

''اَللّٰھُمَّ اَحْیِنِیْ مِسْکِیْنًا وَّاَمِتْنِیْ مِسْکِیْنًا وَّاحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَۃِ الْمَسَاکِیْنِ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ'' तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मिस्कीनी की ज़िन्दगी और मिस्कीनी की मौत अ़त़ा फ़रमा और क़ियामत के दिन मिस्कीनों के साथ उठा।'' तो उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : ''ऐसा क्यूं, **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''क्यूं कि **येह लोग अग़्निया से चालीस साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे,** ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! मिस्कीन को ख़ाली हाथ न लौटाओ अगर्चे खजूर के एक हिस्से के साथ हो, ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! मसाकीन से मह़ब्बत करो और इन को अपना मुक़र्रब बनाओ तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन तुम्हें अपना मुक़र्रब बना लेगा।''

(جامع الترمذی، کتاب الزھد، باب ما جاء أن فقراء المھاجرین یدخلون الجنة...الخ، ص٥٦٢، الحدیث:۲۳۵۲)

www.dawateislami.net

मसाकीन के साथ महब्बत करने की तरग़ीब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अभी आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मसाकीन से किस क़दर महब्बत थी और आप को न सिर्फ़ ख़ुद महब्बत थी बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मसाकीन के साथ महब्बत करने की तरग़ीब भी दिलाते थे, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि हम भी मसाकीन और कमज़ोर लोगों को नफ़रत की निगाह से न देखें बल्कि इन के साथ महब्बत करें और नर्म लहजा इख़्तियार करें क्यूं कि जो जिस के साथ महब्बत करेगा उस का ह़श्र उसी के साथ होगा। अगर हम सिर्फ़ मालदारों के साथ महब्बत करते रहे और मसाकीन को नज़र अन्दाज़ कर दिया तो हमें सरकारे आ़लीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने ग़ैब निशान से सबक़ ह़ासिल करना चाहिये कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : **"बेशक मुहाजिरीन फु-क़रा क़ियामत के दिन अग़्निया से चालीस साल पहले जन्नत में जाएंगे।"**

(صحیح مسلم، کتاب الزھد والرقاق، ص١١٣٩، الحدیث:٢٩٧٩)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़ोह्द की ता'रीफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **417** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"एह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा"** सफ़ह़ा **329** में ज़ोह्द की ता'रीफ़ के ह़वाले से मज़्कूर है कि ज़ोह्द की ह़क़ीक़त येह है कि **किसी चीज़ से ए'राज़ कर के उस के ग़ैर की त़रफ़ फिरना,** पस जो शख़्स फ़ुज़ूल दुन्या को छोड़ दे और उस की बजाए आख़िरत की त़रफ़ राग़िब हो तो वोह शख़्स दुन्या में ज़ाहिद है। और ज़ाहिदे कामिल वोह है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ से बे रग़्बत हो जाए।

(لُبَابُ الاحیاء، الباب الرابع والثلاثون فی الفقر والزھد، الشطر الثانی الزھد، ص٢٩٣)

सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा का कमाल द-रजे का ज़ोह्द

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا में कमाल द-रजे का ज़ोह्द था **आइये !** अब मैं आप के सामने उन के ज़ोह्द का ऐसा वाक़िआ़ पेश करती हूं कि जिस से हमें भी ज़ोह्द इख़्तियार करने का म-दनी ज़ेह्न मिलेगा, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले बे मिसाल,

www.dawateislami.net

बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सात दीनार उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास रखे हुए थे, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मरज़ लाह़िक़ हुवा तो इर्शाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! येह दीनार ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के पास ले जाओ। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ग़शी त़ारी हो गई और इसी ह़ालत ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मश्ग़ूल कर दिया, (हर बार इफ़ाक़ा मह़सूस होने पर) हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें येही हुक्म फ़रमाते और हर बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ग़शी त़ारी हो जाती और येह ह़ालत ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मश्ग़ूल कर देती ह़त्ता कि रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह दीनार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की त़रफ़ भेज ही दिये, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने दीनार स-दक़ा कर दिये। पीर की रात हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मौत की सख़्ती में गुज़ारी और (चराग़ जलाने के लिये) उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने आस पास की औ़रतों में किसी औ़रत की त़रफ़ किसी को चराग़ दे कर पैग़ाम भेजा कि अपने घी के बरतन में से थोड़ा सा घी हदिय्यतन हमारे चराग़ में डाल दीजिये क्यूं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आ़लमे नज़्अ़ में हैं।

(المعجم الکبیر، سہل بن سعد، یعقوب بن عبد الرّحمٰن الزھری، ۳/۵۳۵، الحدیث:۵۸۵۷)

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं इन के ख़ाली हाथ में

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 103)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुन्या फ़ानी है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ज़ोह्द का आ़लम कि जो शाफ़ेए रोज़े शुमार, दो जहान के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से मह़बूब ज़ौजा हैं मगर सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के वक़्त उन के पास चराग़ जलाने के लिये घी तक मौजूद न था और हमारी कई इस्लामी बहनें अपने पीछे बे बहा दौलते दुन्या छोड़ कर जाती हैं **याद रखिये !** दुन्या फ़ानी है, दुन्या ह़क़ीर है लिहाज़ा हमें चाहिये कि इस फ़ानी दुन्या में उन मुबारक हस्तियों की त़रह़ ज़िन्दगियां गुज़ारें।

www.dawateislami.net

दुन्या की मज़म्मत पर चन्द आयाते मुबा-रका

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने ह़मीद, बुरहाने रशीद में जा बजा मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में दुन्या की मज़म्मत फ़रमाई । चन्द आयात मुला-ह़ज़ा कीजिये :

﴾1﴿...... وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّ لَعِبٌ ؕ وَ اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۴﴾ (پ۲۱، العنکبوت:۶۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेलकूद और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वोही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते ।

﴾2﴿...... قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۫ (پ۵، النساء:۷۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो कि दुन्या का बरत्ना थोड़ा है और डर वालों के लिये आख़िरत अच्छी ।

﴾3﴿...... وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۲۰﴾ (پ۲۷، الحدید:۲۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और दुन्या का जीना तो नहीं मगर धोके का माल ।

दुन्या की मज़म्मत पर चन्द अह़ादीसे मुबा-रका

(1)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ फ़रमाई : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ज़िन्दगी तो सिर्फ़ आख़िरत की है पस तू मुहाजिरीन और अन्सार को नेक बना दे ।"

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ आए हैं : "तू मुहाजिरीन व अन्सार की बख़्शिश फ़रमा दे ।"

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب ما جاء فی الرقاق...الخ، ص۱۵۸۰، الحدیث:(۱۴)۶۴۱۳)

मौत के लिये तय्यारी कर ले

(2)...... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे कन्धे पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : "كُنْ فِی الدُّنْیَا کَاَنَّکَ غَرِیْبٌ اَوْ عَابِرُ سَبِیْلٍ या'नी दुन्या में इस त़रह़ रहो गोया कि तुम मुसाफ़िर हो या रह-गुज़र ।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते थे : "जब तू शाम करे तो सुब्ह़ का इन्तिज़ार मत कर और जब सुब्ह़ करे तो शाम का मुन्तज़िर न रह और ह़ालते सिह़्ह़त में बीमारी के लिये और ज़िन्दगी में मौत के लिये तय्यारी कर ले ।"

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب قول النبی کن فی الدنیا کانک غریب ...الخ، ص۱۵۸۰، الحدیث:۶۴۱۶)

(3)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे

www.dawateislami.net

मुजस्सम, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स का उ़ज़्र ज़ाइल कर देता है जिस को लम्बी उ़म्र दी ह़त्ता कि उसे **60** साल तक पहुंचा दिया।" (صحيح البخاری، كتاب الرقاق، باب من بلغ ستين سنة...الخ، ص١٥٨١، الحديث:٦٤١٩)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह लम्बी उम्मीदें तुम्हें नेकी के काम करने से हरगिज़ ग़फ़्लत में न डालें,...... येह दुन्या जिस में हम ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, आख़िरत की खेती है,...... हम पर लाज़िम है कि अपनी उ़म्र भलाई के कामों में सर्फ़ करें क्यूं कि हर नए दिन, दुन्या हम से दूर होती जा रही है और आख़िरत हमारे क़रीब आ रही है,...... आज अ़मल का मौक़अ़ है और कोई ह़िसाब नहीं लेकिन कल सिर्फ़ ह़िसाब होगा और अ़मल का मौक़अ़ न मिलेगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुन्या की मज़म्मत पर इमाम शाफ़ेई के चन्द अश्आ़र

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی ने दुन्या की मज़म्मत बयान करते हुए फ़रमाया :

وَمَنْ يَذُقِ الدُّنْيَا فَاِنِّیْ طَعِمْتُهَا ... وَسِيْقَ اِلَیَّ عَذْبُهَا وَعَذَابُهَا

فَلَمْ اَرَهَا اِلَّا غُرُوْرًا وَّبَاطِلًا ... كَمَا لَاحَ مِنْ اُفُقِ الْفَلَاةِ سَرَابُهَا

وَمَا هِیَ اِلَّا جِيْفَةٌ مُّسْتَحِيْلَةٌ ... عَلَيْهَا كِلَابٌ هَمُّهُنَّ اجْتِذَابُهَا

فَاِنْ تَجْتَنِبْهَا عِشْتَ سِلْمًا لِاَهْلِهَا ... وَاِنْ تَجْتَذِبْهَا نَاهَشَتْكَ كِلَابُهَا

(الزهد وقصر الامل،ص٦٢)

तरजमा : (1)...... और कौन है जो दुन्या को चखे पस मैं ने उसे चखा तो उस की मिठास और तक्लीफ़ें मेरी त़रफ़ बढ़ा दी गईं।

(2)...... मैं ने इसे मु-तकब्बिर और नाह़क़ पाया जैसे रैत के टीले पर उस का सराब चमक्ता है।

(3)...... येह दुन्या एक सड़े हुए मुर्दार की त़रह़ है जिस पर कुत्तों को छोड़ दिया जाता है जिन का काम नोचना और फाड़ खाना है।

(4)...... अगर तू इस दुन्या से बच कर रहे तो दुन्या वालों को अम्न देने वाली ज़िन्दगी गुज़ारेगा और अगर इसे लेने की कोशिश करे तो इस के कुत्ते तुझे नोच डालेंगे।

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नुमूने मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से येह भी देखा है तूने जो आबाद थे वोह मकां अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जन्नत में हुज़ूर के साथ रहने की तमन्ना

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **59** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''उम्महातुल मुअमिनीन''** सफ़ह़ा **34** पर है **:** मरवी है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया **: या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** मेरे लिये दुआ़ फ़रमाएं कि ह़क़ तआ़ला मुझे जन्नत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात में रखे। सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** अगर तुम इस रुत्बे की तमन्ना करती हो तो कल के लिये खाना बचा कर न रखो। और किसी कपड़े को जब तक उस में पैवन्द लग सकता है बेकार न समझो। सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस वसिय्यत व नसीह़त पर इस क़दर कारबन्द रहीं कि कभी आज का खाना कल के लिये बचा कर न रखा। (مدارج النبوت، باب دُوُم دردکر ازواج مطہرات، ۲/۴۷۲)

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इर्शाद फ़रमाया **:** ''अगर तुम (आख़िरत में) मेरे साथ मिलने का इरादा रखती हो तो तेरे लिये दुन्या से इतना ही काफ़ी है जितना एक मुसाफ़िर का तोशा होता है, अग़्निया के साथ बैठने से बचती रहो और कपड़े को उस वक़्त तक पुराना न समझो जब तक उस में पैवन्द न लगा लो।'' (جامع الترمذی، کتاب اللباس، باب ما جاء فی ترقیع الثوب، ص۴۴۴، الحدیث:۱۷۸۰)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अभी आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नत में अपनी मइय्यत के इतने बड़े मर्तबे को इन चीज़ों के साथ ख़ास किया कि दुन्या में **तवक्कुल अ़लल्लाह** और अमीरों से दूर रहने का हुक्म फ़रमाया और इस बात को वाज़ेह़ किया कि जब तक कपड़े में पैवन्द लगने की सलाहिय्यत मौजूद हो उस को बेकार न समझो। **आइये !** अब ईसार और **तवक्कुल अ़लल्लाह** के बारे में कुछ मुला-ह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे

भूका शेर

ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गन्ज बख़्श अ़ली हिज्वेरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं **:** ''मैं ने शैख़ अह़मद ह़म्मादी सरख़्सी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से उन की **तौबा** का सबब पूछा तो कहने लगे **:** ''एक बार मैं अपने ऊंटों को ले कर ''सरख़्स'' से रवाना हुवा। दौराने सफ़र जंगल में एक **भूके शेर** ने मेरा एक ऊंट ज़ख़्मी कर के गिरा दिया और फिर बुलन्द टीले पर चढ़ कर डकारने लगा, उस की आवाज़ सुनते ही बहुत सारे दरिन्दे इकठ्ठे हो गए। शेर नीचे उतरा और उस ने उसी ज़ख़्मी

www.dawateislami.net

ऊंट को चीरा फाड़ा मगर ख़ुद कुछ न खाया बल्कि दोबारा टीले पर जा बैठा, जम्अ़ शुदा दरिन्दे ऊंट पर टूट पड़े और खा कर चलते बने, बाक़ी मांदा गोश्त खाने के लिये शेर क़रीब आया कि एक **लंगड़ी लोमड़ी** दूर से आती दिखाई दी, शेर वापस अपनी जगह चला गया। लोमड़ी ह़स्बे ज़रूरत खा कर जब जा चुकी तब शेर ने उस गोश्त में से थोड़ा सा खाया। मैं दूर से येह सब देख रहा था, अचानक शेर ने मेरा रुख़ किया और ब ज़बाने फ़सीह़ बोला : **''अह़मद ! एक लुक़्मे का ईसार तो कुत्तों का काम है मर्दाने राहे ह़क़ तो अपनी जान भी क़ुरबान कर दिया करते हैं।''** मैं ने इस अनोखे वाक़िए़ से मु-तअस्सिर हो कर तमाम गुनाहों से तौबा की और दुन्या से कनारा कश हो कर अपने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से लौ लगा ली।'' (كشف المحجوب(فارسی)، ص٢٣٨ تا٢٣٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمين بجاہِ النَّبيِّ الْاَمين صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुर्ग़ी का तवक्कुल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! भूके शेर ने अपना शिकार दूसरे जानवरों पर ईसार कर के भूक बरदाश्त करने की बेहतरीन मिसाल क़ाइम की और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से उस ने कितनी ज़बर दस्त नसीह़त की, कि ''एक लुक़्मे का ईसार तो कुत्तों का काम है इन्सान को चाहिये कि अपनी जान तक क़ुरबान कर दे।'' मगर **आह !** हम जैसे बे अ़मल मुसल्मान एक लुक़्मे का ईसार तो क्या करेंगे, जिस से बन पड़ता है वोह दूसरों के मुंह से भी लुक़्मा छीन लेता है बल्कि एक लुक़्मे की ख़ातिर बा'ज़ अवक़ात क़त्लो ग़ारत गरी तक से नहीं चूकते। ढेरों ढेर ग़िज़ाएं मौजूद होने के बा वुजूद एक एक **''टुकड़े''** की ख़ातिर फ़साद बरपा करते फिरते हैं। कहा जाता है, ''सिर्फ़ **3** ज़ी रूह़ ऐसे हैं जो ग़िज़ाओं का ज़ख़ीरा करते हैं **: (1)**......(हम जैसे गुनहगार) इन्सान **(2)**......चूहा और **(3)**......च्यूंटी।''

इन के इलावा कोई भी ह़ैवान दूसरे वक़्त के लिये बचा कर नहीं रखता, आप ने **मुर्ग़ी का तवक्कुल** देखा होगा, उस को पानी का पियाला दिया जाता है तो पी चुकने के बा'द पियाले के कनारे पर पाउं रख कर उस को उलट देती है, उसे अपने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर कामिल भरोसा होता है कि अभी पिलाया है तो प्यास लगने पर दोबारा भी पिलाएगा और लुत़्फ़ की बात येह है कि उस को पिलाने की ख़िदमत भी इन्सान से ली जाती है। हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों का तवक्कुल

www.dawateislami.net

बे मिसाल होता है। तवक्कुल की एक ता'रीफ़ येह भी है कि "**सिर्फ़ अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की इनायत पर भरोसा करना और जो कुछ लोगों के पास है उस से मायूस हो जाना।**" (الرِّسَالَةُ القُشَيرِيّة، باب التوكل، ص٢٠٦)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मज़्कूरा बयान से कोई येह न समझ बैठे कि अब सब कामकाज और मुला-ज़मत व कारोबार छोड़ कर **अल्लाह रब्बे लम यज़ल** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल कर के बैठ जाएं और बस अब रिज़्क़ हाथ बांध कर हमारे सामने ह़ाज़िर हो जाएगा, अगर्चे **अल्लाहु रब्बुल अर्दे वस्समावात** عَزَّوَجَلَّ इस पर क़ादिर है लेकिन निज़ामे क़ुदरत है कि इन्सान ह़-र-कत करे उस में ब-र-कत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खजूर और पानी पर गुज़ारा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन से फ़रमाया : ऐ भान्जे ! हम दो माह में तीन चांद देखते और हुज़ूर सरापा नूर, शाहे ग़यूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घरों में आग नहीं जलती थी। उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : आप की गु-ज़रे अवक़ात कैसे होती थी ? फ़रमाया : (हमारी गु-ज़रे अवक़ात) दो सियाह चीज़ों या'नी खजूर और पानी पर होती थी। सिवाए इस के कि कुछ अन्सार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पड़ोसी थे। उन की कुछ दूध वाली ऊंटनियां थीं और वोह उन का दूध सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भिजवा दिया करते थे और सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह दूध हमें पिला दिया करते थे।

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب کیف کان عیش النبی صلی اللہ علیہ وسلم......الخ، ص١٥٨٩، الحدیث:٦٤٥٩)

साबिक़ा ह़दीसे पाक में ज़िक्र हुवा कि हम दो माह में तीन चांद देखते थे तो इस के बारे में इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि तीसरे चांद से मुराद तीसरे महीने का चांद है जो दो महीनों के मुकम्मल होने पर दिखाई देता है और उस के नज़र आते ही तीसरा महीना शुरूअ़ हो जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लगातार तीन चांद यूं गुज़र जाते कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घर में आग नहीं जलती थी न रोटी पकाने के लिये न हंडिया के लिये।

(فتح الباری شرح صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب کیف کان عیش النبی صلی اللہ علیہ وسلم......الخ، ٣٥٤/١١، تحت الحدیث:٦٤٥٩)

www.dawateislami.net

अगर हम चाहते तो पेट भर कर खा लेते

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस का येह मत़लब हरगिज़ नहीं कि आक़ाए कौनो मकां, सरवरे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सैर हो कर खाना चाहते थे और खाना न मिलता था बल्कि हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खुद फ़क़्र को तरजीह़ देते हुए इख़्तियार फ़रमाया। चुनान्चे **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि अगर हम चाहते तो पेट भर कर खा लेते मगर मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी ज़ात पर दूसरों को तरजीह़ देते थे। **(شُعَبُ الایمان، باب فی حُبِّ النبی علیہ السلام، فصل فی زهد و صبره، ۱۷۳/۲، الحدیث:۱٤٦٩)**

आ़लम की भरें हर दम झोली ख़ुद खाएं फ़क़त़ जव की रोटी
वोह शान अ़त़ा व सख़ावत की येह ज़ोह्दो क़नाअ़त क्या कहना

(जन्नती ज़ेवर, स. 639)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बयान करते हैं : फ़ख़्रे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के घर वालों पर चराग़ रोशन किये बिग़ैर और (चूल्हे में) आग जलाए बिग़ैर कई कई माह गुज़र जाते थे। अगर ज़ैतून का तेल मिल जाता (जिस से चराग़ रोशन किये जाते थे) तो (बदन या सर पर) मल लेते और चरबी मिल जाती तो उसे खा लेते।

(مُسْنَدِ اَبِی یَعْلٰی، شهر بن حوشب، عن ابی هريرة، ۸۱/۵، الحدیث:٦٤٧١)

कम खाने से इ़बादत में ज़ौक़

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बहुत कम खाना खाती थीं और कम खाने का एक फ़ाएदा येह भी है कि इस से इ़बादत में ज़ौक़ पैदा होता है आईये ! अब मैं आप को कम खाने की कुछ ब-रकात और ज़ियादा खाने के चन्द नुक़्सानात बताती हूं। चुनान्चे,

चार बातों की नसीह़त

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : मैं कोहे लुबनान में कई औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की सोह़बत में रहा। उन में से हर एक ने मुझे येही वसिय्यत की कि जब लोगों में जाओ तो इन चार बातों की नसीह़त करना :

(1)...... जो **पेट भर** कर खाएगा उसे इ़बादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी।

www.dawateislami.net

(2)...... जो **ज़ियादा सोएगा** उस की उ़म्र में ब-र-कत न होगी।

(3)...... जो सिर्फ़ लोगों की ख़ुशनूदी चाहे वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की उम्मीद न रखे।

(4)...... जो **ग़ीबत** और **फ़ुज़ूल गोई** ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा।

(مِنهاج العابدین، فصل فی رعایۃ الاعضاء الاربعۃ...الخ، ص ۲۲۸)

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही ! बुरी आ़दतें भी छुड़ा या इलाही !
ज़बान और आंखों का क़ुफ़्ले मदीना अ़ता हो पए मुस्त़फ़ा या इलाही !
मुझे ग़ीबतो चुग़्लियो बद गुमानी की आफ़ात से तू बचा या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 79, 80)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ीबत से सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम की नफ़रत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुल्त़ानुल आ़रिफ़ीन, मुक़र्रबे रब्बुल आ़-लमीन ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَعْظَم की बयान कर्दा चौथी नसीह़त भी इन्तिहाई तश्वीश नाक है कि जो ग़ीबत और फ़ुज़ूल गोई ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा। आह ! शायद लाखों मुसल्मानों में कोई होगा जो आज ग़ीबत व फ़ुज़ूल गोई से बचने का ज़ेह्न रखता हो। हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल वली ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम बल्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ग़ीबत और फ़ुज़ूल गोई से बचने का पुख़्ता म-दनी ज़ेह्न रखते थे, चुनान्चे

ग़ीबत करने वालों को सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम की नसीह़त

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **505** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"ग़ीबत की तबाह कारियां"** सफ़ह़ा **278** पर है **:** ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم **ग़ीबत** करने वाले की सर-ज़निश करते (या'नी डांट पिलाते) हुए फ़रमाते हैं **: ऐ झूटे इन्सान !** तू अपने दोस्तों को तो दुन्या का ह़क़ीर माल देने से **बुख़्ल** करता रहा मगर आख़िरत का माल (या'नी नेकियों का ख़ज़ाना) तूने अपने दुश्मनों पर लुटा दिया ! न तेरा दुन्यवी **बुख़्ल** क़ाबिले क़ुबूल न **ग़ीबतें** कर कर के नेकियां लुटाने वाली सख़ावत मक़्बूल। (تَنبِیہُ الغافِلِین، باب الغیبۃ، ص ۹۱)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम को ग़ीबत सुनने का सदमा

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم कहीं खाने की दा'वत पर तशरीफ़ ले गए, जब बैठे तो लोगों ने (आपस में) कहा कि फ़ुलां शख़्स अभी तक नहीं आया। उन में से एक शख़्स बोला : वोह तो **मोटा आदमी** है। (इस पर हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم अपने आप को मलामत करते हुए फ़रमाने लगे : **अफ़्सोस !**) मैं अपने पेट की वज्ह से ऐसे खाने की दा'वत पर गया जहां एक मुसलमान की **ग़ीबत** हो रही है। येह कह कर वहां से वापस तशरीफ़ ले गए और (इस सदमे से) **3** दिन तक खाना न खाया। (المرجع السابق، ص٩٢)

हो अख़्लाक़ अच्छा हो किरदार सुथरा मुझे मुत्तक़ी तू बना या इलाही !
ग़ुसीले मिज़ाज और तमस्ख़ुर की ख़स्लत से अ़त्तार को तू बचा या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 86)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

3 दिन तक भूक ही काफ़ूर

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वलिय्ये रब्बुल इ़ज़्ज़त हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ग़ीबत से किस क़दर नफ़रत करते थे कि एक दफ़्आ़ कहीं कानों में ग़ीबत के अख़्लाक़ सोज़ अल्फ़ाज़ पड़ गए तो इसी एह़सासे ज़ियां (या'नी नुक़्सान के एह़सास) में **3** दिन तक भूक ही काफ़ूर (या'नी ज़ाइल) हो गई। ह़याते इब्राहीम बिन अदहम का येह रोशन पहलू हमें दर्स दे रहा है कि जिस त़रह़ ग़ीबत करना ना जाइज़ है इसी त़रह़ ग़ीबत सुनना भी ना जाइज़ है, जिस से रुकना और दूसरों को रोकने की मक़्दूर भर कोशिश करना लाज़िम है। इस की एक आसान सूरत तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहना और **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की त़रफ़ से जारी कर्दा कुतुबो रसाइल और **V.C.D.s** को आ़म करना और **म-दनी चेनल** देखते रहना है।

www.dawateislami.net

ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **दा'वते इस्लामी** ने दीगर अख़्लाक़ी बुराइयों के साथ साथ ग़ीबत जैसे मोहलिक तरीन गुनाह के ख़िलाफ़ बा क़ाइदा ए'लाने जंग किया हुवा है और येह ना'रा बुलन्द किया है :

हम तो ग़ीबत करें न सुनें

ग़ीबत के ख़िलाफ़ जंग...... जारी रहेगी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

सुनूं न फ़ोहूश कलामी न ग़ीबतो चुग़ली — तेरी पसन्द की बातें फ़क़त सुना या रब !
करें न तंग ख़यालाते बद कभी, कर दे — शुऊरो फ़िक्र को पाकीज़गी अ़ता या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! — صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ — اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! — صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

खाने में ज़ियादती ज़ौक़े इबादत में कमी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह ह़क़ीक़त है कि डट कर खाने से पेट भारी हो जाता, आ'ज़ा ढीले पड़ जाते और बदन सुस्त हो जाता है और इबादात में दिल जम्ई नसीब नहीं होती, इस का तजरिबा **र-मज़ानुल मुबारक** की **तरावीह़** में बहुत सों को होता होगा क्यूं कि **''फ़ूड कल्चर''** का दौर है, दसियों क़िस्म की ग़िज़ाएं ठूंस ठूंस कर पेट में भर दी जाती हैं, नती-जतन फिर कबाब समोसे और पकोड़े वग़ैरा पेट में ''गुटर गूं'' करते, ठन्डे में ठन्डा पानी, मज़ेदार शरबत और खट्टी चीज़ों के बे तह़ाशा इस्ति'माल के सबब खांसने, खन्कारने और डकारने से आज कल मस्जिदें गूंज रही होती हैं ! नीज़ अगर किसी एक को खांसी आती है तो ग़ालिबन नफ़्सियाती त़ौर पर दूसरे को भी आने लगती है और यूं खांसी के शोर में इज़ाफ़ा होता चला जाता है। येह हमारी खाने की ह़ालत है और दूसरी त़रफ़ म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक भूक है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ''रह़मते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी भी लगातार दो दिन तक सैर हो कर ''जव'' की रोटी नहीं खाई, यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم विसाले ज़ाहिरी फ़रमा गए।'' **(جامع الترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی معیشۃ النبی واھلہ، ص٥٦٢، الحدیث:٢٣٥٧)**

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वान पर खाना नहीं खाया और न ही कभी चपाती (या'नी पतली रोटी) खाई यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने विसाले ज़ाहिरी फ़रमाया।"

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب فضل الفقر، ص۱۵۸۷، الحدیث: ٦٤٥٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! टेबल कुरसी पर खाना अगर्चे गुनाह नहीं मगर सुन्नत भी नहीं। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **"बहारे शरीअ़त"** हि़स्सा **16** में फ़रमाते हैं : ख़्वान, तिपाई (या मेज़) की त़रह़ ऊंची चीज़ होती है जिस पर उ-मरा के यहां खाना चुना जाता है। ताकि खाते वक़्त झुकना न पड़े उस पर खाना खाना मु-तकब्बिरीन का त़रीक़ा था जिस त़रह़ बा'ज़ लोग इस ज़माने में मेज़ (या'नी टेबल) पर खाते हैं, छोटी छोटी पियालियों में खाना उ-मरा का त़रीक़ा है इन के यहां मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने छोटे छोटे बरतनों में रखे जाते हैं।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, जि. 3, स. 369)

कभी जव की मोटी रोटी तो कभी खजूर पानी
तेरा ऐसा सादा खाना म-दनी मदीने वाले !

(वसाइले बख़्शिश, स. 285)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हज़रते आ़इशा को ज़ोह्द का आ'ला द-रजा ह़ासिल था

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا दुन्या से ए'राज़ और इबादत के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करने की वज्ह से ज़ोह्द के आ'ला द-रजात पर फ़ाइज़ हो चुकी थीं, जैसा कि इमाम **अबू नुऐ़म** अस्बहानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "सय्यि-दतुना (आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) दुन्या को ना पसन्द करने वाली और उस की रंगीनियों से बे ख़बर और अपनी मह़बूब चीज़ के खो जाने पर रोने वाली थीं।"

(حلیۃ الاولیاء عائشۃ زوج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ٢/٥٤)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते आ़इशा का ज़ोहदाना लिबास

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पुराने कपड़ों की आ़दी होने की वज्ह से उन्हें छोड़ना पसन्द नहीं करती थीं। (الطبقات الکبری لابن سعد، ذکر ازواج رسول الله، ۷۲/۱۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक आने वाला उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास आया आप अपना निक़ाब सी रही थीं उस ने कहा : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मालो दौलत की फ़िरावानी नहीं फ़रमा दी ? फ़रमाया : छोड़ो (इन बातों को), वोह नए कपड़ों का ह़क़दार नहीं जो पुराने कपड़े इस्ति'माल न करे। (الطبقات الکبریٰ، ذکر ازواج رسول الله، ۷۲/۱۰)

ह़ज़रते सय्यि-दतुना शम्सिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि वोह उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास गईं आप के जिस्म पर कुरता, दुपट्टा और निक़ाब था येह कपड़े अ़स्फ़र में रंगे हुए थे। (الطبقات الکبریٰ، ذکر ازواج رسول الله، ۶۹/۱۰، ملتقطًا)

इस में से खाओ येह तुम्हारी रोटी से बेहतर है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तक उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से येह रिवायत पहुंची है कि एक मिस्कीन ने उन से कुछ मांगा उस वक़्त वोह रोज़ादार थीं उन के हुजरए मुक़द्दसा में सिर्फ़ एक रोटी थी उन्हों ने अपनी लौंडी से फ़रमाया : "येह रोटी इस मिस्कीन को दे दो।" उस लौंडी ने अ़र्ज़ की : "उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! आप रोज़ा किस से इफ़्तार करेंगी ?" उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ने फ़रमाया : "येह रोटी इस मिस्कीन को दे दो।" लौंडी ने कहा : मैं ने वोह रोटी मिस्कीन को दे दी जब शाम हुई तो हमें किसी घर वालों या किसी शख़्स ने हदिय्या भेजा जो हमें बकरी और रोटी भेजा करता था। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मुझे बुलाया और फ़रमाया : "इस में से खाओ, येह तुम्हारी रोटी (टिक्या) से बेहतर है।" (مؤطا امام مالک، کتاب الصدقة، باب الترغیب فی الصدقة، ص۵۲۴، الحدیث:۱۹۲۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

रोटी के बदले पकी हुई बकरी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) को ज़ोहद का कैसा जज़्बा अ़ता फ़रमाया कि अपने खाने के लिये एक रोटी के सिवा कुछ नहीं और ख़ुद भी रोज़े से हैं इस के बा वुजूद मिस्कीन को ख़ाली हाथ न लौटाया। यक़ीनन दीगर ख़ूबियों के साथ साथ उन का ज़ोहद भी मिसाली था। येह भी **याद रखिये** कि राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने से माल में कमी नहीं होती बल्कि इज़ाफ़ा होता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी राह में ख़र्च किये हुए माल से बेहतर माल अ़ता फ़रमाता है जैसा कि आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में रोटी स-दक़ा की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस के बदले में पकी हुई बकरी भेज दी। राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का हुक्म तो ख़ुद ख़ुदाए रह़मान ने अपनी किताबे आ़लीशान में जा बजा दिया है। राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने की बहुत ज़ियादा ब-र-कतें और फ़ज़ाइल हैं और राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने से दुन्या में इज़ाफ़ा होता है और आख़िरत में बहुत बड़ा अज्रो सवाब मिलता है। राहे ख़ुदा में ख़र्च करना बहुत बड़ी सआ़दत है। क़ुरआने पाक में जा बजा इस की तरग़ीब और फ़ज़ाइल मौजूद हैं। चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

مَثَلُ الَّذِیۡنَ یُنۡفِقُوۡنَ اَمۡوَالَہُمۡ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ کَمَثَلِ حَبَّۃٍ اَنۡۢبَتَتۡ سَبۡعَ سَنَابِلَ فِیۡ کُلِّ سُنۡۢبُلَۃٍ مِّائَۃُ حَبَّۃٍ ؕ وَاللّٰہُ یُضٰعِفُ لِمَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰہُ وَاسِعٌ عَلِیۡمٌ ﴿۲۶۱﴾
(پ۳، البقرۃ:۲۶۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन की कहावत जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़रह़ जिस ने उगाईं सात बालें हर बाल में सो दाने और **अल्लाह** इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है।

(इस आयते मुबा-रका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़र्च करने वालों की ता'रीफ़ फ़रमाई है।) ख़्वाह ख़र्च करना वाजिब हो या नफ़्ल तमाम अब्वाबे ख़ैर को आ़म है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 3, सू-रतुल ब-क़रह, तह़तल आयह : 261)

मज़ीद इर्शादे आ़लीशान है :

اَلَّذِیۡنَ یُنۡفِقُوۡنَ اَمۡوَالَہُمۡ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ ثُمَّ لَا یُتۡبِعُوۡنَ مَاۤ اَنۡفَقُوۡا مَنًّا وَّلَاۤ اَذًی ۙ لَّہُمۡ اَجۡرُہُمۡ عِنۡدَ رَبِّہِمۡ ۚ وَلَا خَوۡفٌ عَلَیۡہِمۡ وَلَا ہُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ﴿۲۶۲﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۶۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।

(इस आयते मुबा-रका में भी ख़र्च करने वालों को सवाब के ह़ुसूल और ख़ौफ़ व ह़ुज़्न के दूर होने की बिशारत दी।) एह़सान रखना तो येह कि देने के बा'द दूसरों के सामने इज़्हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये और उस को मुकद्दर करें और तक्लीफ़ देना येह कि उस को आ़र

www.dawateislami.net

दिलाएं कि तू नादार था मुफ़्लिस था मजबूर था निकम्मा था हम ने तेरी ख़बर गीरी की या और त़रह़ दबाव दें येह मम्नूअ़ फ़रमाया गया। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह : 3, अल ब-क़रह, तह़्तल आयह : 262)

लिहाज़ा स-दक़ा करने वाले को चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और उख़्रवी सवाब के ह़ुसूल के लिये ख़र्च करे न कि एह़सान जतलाने, इस के इ़वज़ उस से ख़िदमत लेने और अपने काम निकलवाने के लिये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़ोहद की फ़ज़ीलत पर आयात व अह़ादीस

ज़ोह्द की फ़ज़ीलत पर कई आयात और अह़ादीस दलालत करती हैं, चुनान्चे ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَی الْاَرْضِ زِیْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَیُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا (پ۱۵، الکھف:۷) ......(1)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ इस पर है कि उन्हें आज़्माएं उन में किस के काम बेहतर हैं।

मज़ीद इर्शाद फ़रमाया :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِیْ حَرْثِهٖ ۚ وَ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَ مَا لَهٗ فِی الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ (پ۲۵، الشوری:۲۰) ......(2)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस के लिये उस की खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे उस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं।

दुन्या तो इसी क़दर आएगी

शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : ''जिस शख़्स को दुन्या ही की फ़िक्र हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के काम मुन्तशिर कर देता है और उस की तंगदस्ती उस के सामने कर देता है और दुन्या तो इसी क़दर आएगी जो उस की तक़्दीर में लिखी हुई है और जिस की निय्यत आख़िरत की हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के काम दुरुस्त फ़रमा देता है और उस के दिल में दुन्या से बे रग़्बती डाल देता है नीज़ उस के पास दुन्या ज़लील हो कर आती है।'' (سنن ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الهم بالدنيا، ص٦٦٨، الحديث:٤١٠٥)

जिसे ज़ोह्द दिया गया उसे ह़िक्मत दी गई

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे अ़ज़ीम है : ''जब तुम किसी शख़्स को दुन्या से बे रग़्बत और कम गुफ़्तार पाओ तो उस के क़रीब हो जाओ क्यूं कि उसे ह़िक्मत अ़त़ा की गई है।'' (سنن ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الزهد فی الدنيا، ص٦٦٧، الحديث:٤١٠١)

www.dawateislami.net

ज़ोह्द की ब-र-कत

हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द साइदी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक शख़्स सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी ऐसे अ़मल की त़रफ़ रहनुमाई कीजिये कि जब मैं वोह अ़मल करूं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और लोग मुझ से मह़ब्बत करने लगें ।" तो सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम दुन्या में ज़ोह्द इख़्तियार करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम से मह़ब्बत करेगा और लोगों के पास जो कुछ है उस से ज़ोह्द इख़्तियार करो वोह तुम से मह़ब्बत करेंगे ।

(سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الزهد فى الدنيا، ص٦٦٧، الحديث:٤١٠٢)

ईमान की ह़क़ीक़त

हज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जब बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : "मैं सच्चा मोमिन हूं ।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हारे ईमान की ह़क़ीक़त क्या है ?" उन्हों अ़र्ज़ की : "मैं ने अपने नफ़्स को दुन्या से अ़ला-ह़दा कर दिया है, मैं रात को जाग कर ख़ुदा की इ़बादत करता हूं और दिन को भूका रहता हूं और गोया मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श को देख रहा हूं, मैं जन्नती लोगों को देख रहा हूं जो आपस में मुलाक़ात कर रहे हैं और दोज़ख़ियों के शोर की आवाज़ सुन रहा हूं ।" आप صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम ने (ईमान की ह़क़ीक़त को) पहचान लिया, पस इस को लाज़िम पकड़ना । (फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाया) येह ऐसा बन्दा है जिस के दिल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नूरे ईमान से मुनव्वर कर दिया ।"

(الزهد الكبير للبيهقى،باب االورع والتقوى ، ان لكل شىء حقيقة فما حقيقة ذالك ، الجزء الثانى، ص٣٥٥، الحديث:٩٧٣، مفهومًا)

ज़ोह्द के ज़रीए़ नजात पा गए

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि इस उम्मत के अगले लोग यक़ीन और ज़ोह्द की वज्ह से नजात पा गए और इस उम्मत के पिछले लोग बख़ीली और (लम्बी) उम्मीद की वज्ह से हलाक होंगे । (موسوعة ابن ابى الدنيا، كتاب اليقين، ١٩/١، الحديث:٣)

www.dawateislami.net

मुक़र्रबीने बारगाहे इलाही

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "दुन्या में ज़ोह्दो तक़्वा इख़्तियार करने वाले लोग, कल (बरोज़े क़ियामत) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब में होंगे।"

(الجامع الصغیر، فصل فی المحلی بأل من هذا الحرف، حرف الجیم، ص۲۱۹، الحدیث:۳۵۹۷)

बकरी का तोह़फ़ा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं एक रात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के घर से एक शख़्स ने एक बकरी हमें बतौरे तोह़फ़ा पेश की, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : **अल्लाह** की क़सम ! मैं ने उस को पकड़ लिया और हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को काट कर टुकड़े किये या हुज़ूर عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم ने उस को पकड़ा और मैं ने उस के टुकड़े किये। रावी फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! क्या येह सब कुछ चराग़ की रोशनी में था ? तो आप (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ने फ़रमाया : अगर हमारे पास चराग़ का तेल होता तो हम उस तेल को खा न लेते।

(المعجم الاوسط، باب النون، من اسمه نعمان، ۳۰۹/۶، الحدیث:۸۸۷۲، ملتقطًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़नाअ़त की ता'रीफ़

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "थोड़ी सी चीज़ पर ही सब्र करने को क़नाअ़त कहा जाता है। जो खाना मुयस्सर हो उस पर साबिरो शाकिर रहना क़नाअ़त है।"

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان علاج الحرص والطمع ...الخ، ۸۲/۳)

ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! अपने आप को आग से बचाओ !

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है, ताजदारे रिसालत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से फ़रमाया : **"ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! आग से बचो, अगर्चे खजूर के एक टुकड़े के ज़रीए, येह भूके के**

www.dawateislami.net

लिये सैरी के बराबर है।" (مسند احمد، مسند عائشه رضی الله عنها، ۱۳۸/۱۰، الحدیث:۲۵۲۳۶)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरकार عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को जहन्नम की आग से बचने की किस क़दर तरग़ीब दिला रहे हैं। यक़ीनन जहन्नम का अ़ज़ाब बहुत दर्दनाक है आइये ! अब मैं आप को मुख़्तसरन जहन्नम के बारे में बताती हूं कि जहन्नम क्या है और इस में आग का अ़ज़ाब और दूसरे अ़ज़ाब किस त़रह़ दिये जाएंगे।

जहन्नम क्या है ?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने काफ़िरों, मुश्रिकों, मुनाफ़िक़ों और दूसरे मुजरिमों और गुनाहगारों को अ़ज़ाब और सज़ा देने के लिये आख़िरत में जो एक निहायत ही ख़ौफ़नाक और भयानक मक़ाम तय्यार कर रखा है उस का नाम "**जहन्नम**" है और इस को उर्दू में "**दोज़ख़**" भी कहते हैं।

जहन्नम कहां है ?

एक क़ौल येह है कि "**दोज़ख़**" सातवीं ज़मीन के नीचे है।

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب الاهوال، ان البحر هو جهنم، ۸۱۸/۵، تحت الحدیث:۸۸۰۰)

जहन्नम के त़बक़ात

ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ﴿۴۴﴾ (پ۱۴، الحجر:۴۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस के सात दरवाज़े हैं हर दरवाज़े के लिये उन में से एक ह़िस्सा बटा हुवा है।

इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि जहन्नम के 7 त़बक़ात हैं जिन के नाम येह हैं :

(1)...... **जहन्नम** (2)...... **लज़ा** (3)...... **हु-त़मह** (4)...... **सईर** (5)...... **सक़र** (6)...... **जह़ीम** (7)...... **हावियह।**

पूरी आयत का ख़ुलासा येह है कि शैत़ान की पैरवी करने वाले भी सात ह़िस्सों में मुन्क़सिम हैं उन में से हर एक के लिये जहन्नम का एक त़बक़ा मुअ़य्यन है।

(حاشية الصاوی علی الجلالین، پ۱۴، الحجر، تحت الایة:۴۴، ۱۰۴۹/۲)

www.dawateislami.net

जहन्नम की ख़ौफ़नाक शक्ल

ह़दीस शरीफ़ में है कि जहन्नम क़ियामत के दिन लाई जाएगी उस की सत्तर हज़ार लगामें होंगी और हर लगाम को सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते खींचते होंगे।

(صحیح مسلم، کتاب الجنۃ وصفۃ نعیمھا واھلھا، باب فی شدۃ حر نار جھنم......الخ، ص۱۰۹۲، الحدیث:۲۸۴۲)

जहन्नम का दारोग़ा

जहन्नम के दारोग़ा का नाम ह़ज़रते "**मालिक**" عَلَیْہِ السَّلَام है। येह फ़िरिश्तों में से हैं इन ही के ज़ेरे एहतिमाम दोज़ख़ियों को हर क़िस्म का अ़ज़ाब दिया जाएगा।

अ़ज़ाबे जहन्नम की चन्द सूरतें

जहन्नम में दोज़ख़ियों को त़रह़ त़रह़ के ख़ौफ़नाक और भयानक अ़ज़ाब में मुब्तला किया जाएगा। उन अ़ज़ाबों की क़िस्मों और उन की कैफ़िय्यतों को ख़ुदा वन्दे अ़ल्लामुल ग़ुयूब के सिवा कोई नहीं जानता। जहन्नम में दी जाने वाली सज़ाओं को दुन्या में कोई सोच भी नहीं सकता। अ़ज़ाब की चन्द सूरतें हैं जिन का ह़दीसों में तज़्किरा आया है उन में से बा'ज़ येह हैं :

आग का अ़ज़ाब

दोज़ख़ियों को जहन्नम की आग में बार बार जलाया जाएगा जब वोह जल भुन कर कोएला हो जाएंगे तो फिर दोबारा उन को नए गोश्त और नए चमड़े के साथ ज़िन्दा किया जाएगा और फिर उन को आग में जलाया जाएगा येह अ़ज़ाब बार बार होता रहेगा। जहन्नम की आग की गरमी का येह आ़लम है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक हज़ार बरस तक जहन्नम की आग को भड़काया गया यहां तक कि वोह सुर्ख़ हो गई, फिर एक हज़ार बरस तक भड़काई गई यहां तक कि वोह सफ़ेद हो गई, फिर (तीसरी बार) एक हज़ार बरस तक भड़काई गई ह़त्ता कि वोह काले रंग की हो गई तो वोह निहायत तारीक सियाह रंग की है।"

(سنن الترمذی، کتاب صفۃ جھنم،۸- باب منہ، ص۶۱۰، الحدیث:۲۵۹۱)

एक दूसरी ह़दीस में है कि जहन्नम की (आग की गरमी) दुन्या की आग (की गरमी) से उन्हत्तर **(69)** द-रजे ज़ियादा है। (صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق، باب صفۃ النار وانھا مخلوقۃ، ص۸۳۵، الحدیث:۳۲۶۵)

www.dawateislami.net

आग का पहाड़

एक **दूसरी ह़दीस** में येह भी है कि जहन्नम का एक सऊ़द नामी पहाड़ है (जिस की बुलन्दी **70** बरस की राह है) उस पर काफ़िर **70** साल तक चढ़ता रहेगा, फिर उस से इतने ही अ़र्से तक गिरता रहेगा इसी त़रह़ हमेशा अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा।

(سنن الترمذی، کتاب صفة جهنم، باب ما جاء فی صفة قعر جهنم، ص۶۰۷، الحدیث:۲۵۷۶)

ह़दीसे पाक में येह भी आया है कि दोज़ख़ी जहन्नम की आग में झुलस कर ऐसे मस्ख़ हो जाएंगे कि ऊपर का होंट सुकड़ कर आधे सर तक पहुंच जाएगा और इसी त़रह़ निचला होंट लटक कर नाफ़ तक पहुंच जाएगा।

(سنن الترمذی، کتاب صفة جهنم، باب ما جاء فی صفة طعام اهل النار، ص ۶۰۹، الحدیث:۲۵۸۷)

येह भी रिवायत है कि जहन्नम में एक तन्नूर है जो अन्दर से बहुत चौड़ा और ऊपर से बहुत कम चौड़ा है उस में ज़िनाकार औ़रतों और मर्दों को डाल दिया जाएगा तो आग के शो'लों में वोह सब जलते हुए तन्नूर के मुंह तक ऊपर आ जाएंगे फिर एक दम वोह शो'ले बुझ जाएंगे तो वोह सब ऊपर से नीचे तन्नूर की गहराई में गिर पड़ेंगे।

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز، ۹۳-باب، ص۳۸۶، الحدیث:۱۳۸۶، مُلَخَّصًا)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰه اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़नाअ़त की फ़ज़ीलत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़नाअ़त के बहुत ज़ियादा फ़ज़ाइलो ब-रकात हैं, चुनान्चे **साहिबे मरविय्याते कसीरा** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : एक दिन **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

"**یَا اَبَاهُرَیْرَةَ! اِذَا اشْتَدَّ کَلْبُ الْجُوْعِ فَعَلَیْکَ بِرَغِیْفٍ وَجَرٍّ مِّنْ مَّاءِ الْقَرَاحِ**" तरजमा : ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! जब भूक बहुत सख़्त हो जाए तो तेरे लिये एक रोटी और ख़ालिस पानी का एक पियाला काफ़ी है।" दूसरी रिवायत के आख़िर में येह अल्फ़ाज़ हैं, **فَعَلَی الدُّنْیَا وَاَهْلِهَا الدِّمَارُ** या'नी दुन्या और अहले दुन्या पर राख डालो (या'नी इसे छोड़ दो)।

(شُعَبُ الایمان للبیهقی، باب فی الزهد وقصر الامل، ۲۹۵/۷، الحدیث:۱۰۳۶۶، ملتقطًا)

www.dawateislami.net

दूसरी रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! जब तुम्हें सख़्त भूक लगे तो एक रोटी और पानी के एक पियाले पर गुज़ारा करो और कह दो कि **दुन्या और अहले दुन्या पर मेरी त़रफ़ से राख हो ।''** (اَلْکَامِل فِی ضُعَفَاءِ الرِّجَال، ۱۸۳/۸)

कान धर के सुन ! न बनना तू ह़रीसे मालो ज़र !

कर क़नाअ़त इख़्तियार ऐ भाई थोड़े रिज़्क़ पर

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तीन खजूरें

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ''मेरे पास एक मिस्कीन औ़रत अपनी दो बच्चियों को उठाए हुए आई तो मैं ने उन्हें तीन खजूरें दीं । उस औ़रत ने दोनों बेटियों को एक एक खजूर दी और एक खुद खाने के इरादे से अपने मुंह की त़रफ़ ले जाना ही चाहती थी कि उस की दोनों बेटियों ने तीसरी खजूर भी मांग ली तो उस औ़रत ने अपनी खजूर भी दो ह़िस्सों में बांट कर अपनी बच्चियों को दे दी । मुझे उस का येह अ़मल बहुत पसन्द आया और मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने इस बात का तज़्किरा किया तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस औ़रत के इस अ़मल के सबब उस पर जन्नत वाजिब कर दी है ।'' या (येह फ़रमाया :) ''इस अ़मल की वज्ह से उस औ़रत को जहन्नम से आज़ाद कर दिया है ।''

(صحیح مسلم، کتاب البر و الصلة، باب فضل الاحسان الی البنات، ص۱۰۱۴، الحدیث:۲۶۳۰)

मेरा रोने को जी चाहता है

ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, तो उन्हों ने मेरे लिये खाना मंगवाया और फ़रमाने लगीं : ''मैं जब कभी पेट भर कर खा लेती हूं तो मेरा रोने को जी चाहता है, फिर मैं रोने लगती हूं ।'' मैं ने अ़र्ज़ किया : क्यूं ? फ़रमाया : ''मुझे मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वोह ह़ालत याद आती है, जिस पर दुन्या से मुफ़ा-रक़त (या'नी जुदाई) फ़रमाई कि कभी भी दिन में दो मर्तबा रोटी और गोश्त से पेट भरने की नौबत न आई ।''

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، کتاب الزھد، باب ما جاء فی معیشة النبی واھله، ص۵۶۲، الحدیث:۲۳۵۶)

www.dawateislami.net

आइशा सिद्दीक़ा रोती थीं नबी की भूक पर
हाए ! भरते हैं ग़िज़ाएं हम शिकम में ठूंस कर

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 652)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ऐ आ़इशा ! आ़जिज़ी इख़्तियार करो

शफ़ीए रोजे़ शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! आ़जिज़ी अपनाओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़जिज़ी करने वालों को पसन्द और तकब्बुर करने वालों को ना पसन्द करता है।"

(كنز العمال، كتاب الخلافة مع الامارة، الباب الثانى فى الامارة، فصل فى القضاء والترهيب، الهديه، الجزالخامس، ٣٢٧/٣، الحديث:١٤٤٧٨)

सुल्त़ाने विलायत का आ़लमे क़नाअ़त

मख़्दूमुल औलिया, सुल्त़ानुल अस्फ़िया हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श अ़ली हज्वेरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम बिन मन्सूर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر की शाने फ़क्रो क़नाअ़त और इब्लीसी (या'नी शैत़ानी) ह़म्लों से ह़िफ़ाज़त के मु-तअ़ल्लिक़ एक वाक़िआ़ नक़्ल फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَکْرَم का बयान है : मैं जंगल में मसरूफ़े इबादत था कि एक बूढ़ा शख़्स ज़ाहिर हुवा और कहने लगा : **"ऐ इब्राहीम (** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَرِیْم **) ! तुम्हें मा'लूम है येह कौन सी जगह है ? और तुम्हारे पास ज़ादे राह भी नहीं।"** आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ब अ़त़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ समझ गया कि येह बूढ़ा, शैत़ान है। शैत़ान की बात पर कान धरने के बजाए मैं ने अपने पास मौजूद **4** दिरहम भी फेंक दिये जो मैं ने कूफ़ा में एक ज़म्बील (या'नी टोकरी) बेच कर ह़ासिल किये थे और पुख़्ता निय्यत की, कि हर मील की मसाफ़त पर **400** रक्अ़त नफ़्ल अदा करूंगा। **4** साल तक मुसल्सल सह़राओं और जंगलों में मसरूफ़े इबादत रहा। बिग़ैर किसी मशक़्क़त व कुल्फ़त के मेरे लिये रिज़्क़ का इन्तिज़ाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जनाब से होता रहा। इसी अ़र्से में एक बार **नबिय्युल्लाह**, रहबरे औलिया ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़ियारत की सआ़दत भी मुयस्सर आई, आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मुझे अपनी सोह़बते फ़ैज़ असर से नवाज़ा और इस्मे आ'ज़म का दर्स दिया। इस के बा'द मेरा दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और **ज़िक्रुल्लाह** के सिवा हर शै से बेगाना हो गया।

(كشف المحجوب(فارسی)، باب الحادی عشر فی ذکر ائمتهم من تبع التابعين الی یومنا، ص١٣٤-١٣٥)

www.dawateislami.net

आंखों में वोह है सर में वोह दिल में वोह है जिगर में वोह
सम्अ़ में वोह है बसर में वोह त़ब्अ़ में वोह है फ़िक्र में वोह

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ اٰمَـنَّـا بِرَسُوْلِ اللّٰـهِ

(सामाने बख़्शिश, स. 19)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

औलियाए रह़मान मह़फ़ूज़ अज़ शैत़ान

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बक़ौले शख़्से (या'नी किसी का क़ौल है) : "शैत़ान ने हर आन इन्सान को नुक़्सान पहुंचाने की ठान रखी है। जैसा कि ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक में शैत़ान का क़ौल बयान फ़रमाया (कि शैत़ान बोला) :

لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۙ﴿۳۹﴾ (پ۱۴، الحجر:۳۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मैं इन्हें ज़मीन में भुलावे दूंगा और ज़रूर मैं इन सब को बे राह करूंगा।

मगर जिस ख़ुश नसीब मुसल्मान को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता है अपनी अमान अ़त़ा फ़रमा देता है।" आप ने इस वाक़िए में मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि सुल्त़ाने विलायत, चरागे़ हिदायत ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने जब बादशाहत छोड़ कर राहे इ़बादतो रियाज़त इख़्तियार की तो दुश्मने ईमानो दीन इब्लीसे लईन ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर ह़र्बा आज़्माई की लेकिन उसे मुंह की खानी पड़ी क्यूं कि ब फ़रमाने क़ुरआन, औलियाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ लग़्ज़िश व मक्रे शैत़ान से अमान में रहते हैं। **जैसा कि** पारह **14**, **सू-रतुल ह़िज्र** आयत नम्बर **42** में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शैत़ान मरदूद से फ़रमाया :

اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ (پ۱۴، الحجر:۴۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मेरे बन्दों पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं।

मुझे औलिया की मह़ब्बत अ़त़ा कर
तू दीवाना कर ग़ौस का या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

थोड़े से जव

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم विसाले ज़ाहिरी फ़रमा गए और हमारे पास कोई ऐसी चीज़ न थी

www.dawateislami.net

जिसे कोई जानदार खा सके मगर थोड़े से जव मेरी कुठया (या'नी ग़ल्ला रखने के मिट्टी के बड़े बरतन) में थे, मैं एक मुद्दत तक उस से खाती रही फिर मैं ने उन को माप लिया तो वोह ख़त्म हो गए।" (صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب فضل الفقر، ص۱۵۸۷، الحدیث:٦٤٥١)

किसी का मोह़ताज न हो

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّافِع ख़ुश्क रोटी को पानी के साथ तर कर के खाते और फ़रमाते : **"जो शख़्स इस पर क़नाअ़त करता है वोह किसी का मोह़ताज नहीं होता।"** (اِحیاءُ عُلوم الدِّین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان ذم الحرص والطمع ...الخ، ۲۹۵/۳)

क़नाअ़त की ता'लीम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने किफ़ायत निशान है : "दो का खाना तीन को और तीन का खाना चार को काफ़ी है।"

(صحیح البخاری، کتاب الاطعمة، باب طعام الواحد یکفی الاثنین، ص۱۳۸۲، الحدیث:٥٣٩٢)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان इस ह़दीसे मुबारक के तह़्त फ़रमाते हैं : "अगर खाना थोड़ा हो खाने वाले ज़ियादा तो उन्हें चाहिये कि दो आदमिय्यों के खाने पर तीन आदमी और तीन आदमिय्यों के खाने पर चार आदमी गुज़ारा कर लें अगर्चे पेट तो न भरेगा मगर इतना खा लेने से ज़ो'फ़ (या'नी कमज़ोर पन) भी न होगा, इ़बादात बख़ूबी अदा हो सकेंगी। इस फ़रमाने आ़ली में क़नाअ़त व मुरुव्वत की आ'ला ता'लीम है।"

(مرآۃ المناجیح، کتاب الاطعمۃ، ۱۲/٦)

रहें सब शाद घर वाले शहा थोड़ी सी रोज़ी पर
अ़ता हो दौलते सब्रो क़नाअ़त या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 186)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जहां क़नाअ़त के बे शुमार फ़ज़ाइलो ब-रकात हैं वहां क़नाअ़त न करने और माल की मह़ब्बत में मुब्तला रहने की मज़म्मत भी वारिद है, चुनान्चे

हुब्बे मालो दौलत की मज़म्मत

हुब्बे मालो दौलत की मज़म्मत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इन दो फ़रामीन से वाज़ेह़ है :

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۹﴾ (پ۲۸، المنٰفقون:۹) ﴾1﴿

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें **अल्लाह** के ज़िक्र से गाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वोही लोग नुक़्सान में हैं।

اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ (پ۲۸، التغابن:۱۵) ﴾2﴿

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं।

सरकारे मदीना, राह़तो क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "**حُبُّ الْمَالِ وَالشَّرَفِ يُنْبِتَانِ النِّفَاقَ كَمَا يُنْبِتُ الْمَاءُ الْبَقْلَ**" तरजमा : माल और शरफ़ (या'नी बड़ाई) की मह़ब्बत दिल में इस त़रह़ मुना-फ़क़त पैदा करती हैं जैसे पानी सब्ज़ी उगाता है।"

(احیاءُ عُلومِ الدِّین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان ذم الحرص والطمع...الخ، ۲۸۶/۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्‌ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक दुन्या (की ह़ैसिय्यत) मच्छर के पर के बराबर भी होती तो वोह इस दुन्या से किसी काफ़िर को पानी का एक घूंट भी पीने को न देता।"

(جامع الترمذی، کتاب الزهد، باب ماجاء فی هوان الدنیا......الخ، ص۵۵۶، الحدیث: ۲۳۲۰)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जब दुन्या की येह वक़्अ़त है तो सोचिये दुन्या के माल की क्या वक़्अ़त होगी **आइये !** इस बारे में मज़ीद मुला-ह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिये जाएं तो वोह इस क़दर नुक़्सान नहीं करते जितना नुक़्सान मुसल्मान आदमी के दीन में माल और मन्सब की ह़िर्स से होता है।" (جامع الترمذی، کتاب الزهد، ۴۳-باب، ص۵۶۵، الحدیث: ۲۳۷۶)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : "**هَلَكَ الْمُكْثِرُوْنَ اِلَّا مَنْ قَالَ هٰكَذَا وَهٰكَذَا وَهٰكَذَا وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ**" : तरजमा : ज़ियादा माल वाले हलाक हो गए सिवाए उस के जिस ने (अपना माल) इस त़रह़, इस त़रह़ और इस त़रह़ किया (या'नी स-दक़ा व ख़ैरात किया) और ऐसे लोग बहुत कम हैं।" (مسند احمد، مسند ابی هریرة، ۲۴۶/۴، الحدیث: ۸۳۰۶)

तीन दीनार बाक़ी हैं

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **561** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़ह़ा **255** पर आ'ला ह़ज़रत, इमामे

www.dawateislami.net

अहले सुन्नत शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : (नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) बादशाहे दो आ़लम हैं, तमाम जहां मिल्क है मगर कम्बल ओढ़ते और मताए़ दुन्या से ख़ाली हाथ रखते हैं। एक बार नमाज़ की इक़ामत हो गई, (नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तक्बीरे तह़रीमा फ़रमाना चाहते हैं कि दफ़्अ़तन (या'नी अचानक) सह़ाबा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) को इर्शाद हुवा : ''عَلٰى رِسْلِكُمْ'' अपनी जगह ठहरे रहो।'' काशानए अक़्दस में तशरीफ़ ले गए फिर बरआमद हुए और इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे याद आया कि आज तीन दीनार बाक़ी हैं मैं डरा कि रात गुज़रे और वोह बाक़ी रहें लिहाज़ा जा कर उन्हें तसद्दुक़ (या'नी स-दक़ा) फ़रमा आया।''

बन्दए बारगाह अ़र्ज़ करता है :

कुल जहां मिल्क और जव की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम
मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं इन के ख़ाली हाथ में

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 103, 304)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुन्या त़ालिबे दीन के पीछे भागती है

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : ''त़ालिबे दुन्या दीन से मह़रूम रह जाता है मगर त़ालिबे दीन बि फ़ज़्लिही तआ़ला दीन भी पा लेता है और दुन्या उस के पीछे भागती है।'' (तफ़्सीरे नईमी, पारह : 2, अल ब-क़रह, तह़्तल आयह : 200, जि. 2, स. 318, मुल्तक़ित़न)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ पारह **2**, **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर **200** ता **202** में इर्शाद फ़रमाता है :

فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ (پ۲، البقرة: ۲۰۰ تا ۲۰۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कोई आदमी यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुन्या में दे और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं और कोई यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा ऐसों को उन की कमाई से भाग है और **अल्लाह** जल्द ह़िसाब करने वाला है।

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی ज़िक्र कर्दा आयाते मुबा-रका के तह़्त "**तफ़्सीरे नईमी**" में फ़रमाते हैं : "बा'ज़ कम हिम्मत सिर्फ़ दुन्या मांगते हुए आते हैं और कहते हैं कि ख़ुदाया ! हमें दुन्या ही में जो कुछ देना है दे दे उन की येह दुआ़ क़बूल हो या न हो और वोह दुन्यवी ने'मतें पाएं या न पाएं आख़िरत से तो मह़रूम हो ही गए, उन के लिये वहां कोई ह़िस्सा न रहा, चाहिये कि बड़े दरबार में बड़ी चीज़ मांगो।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "हवस से दुन्या बढ़ नहीं जाती और क़नाअ़त से घटती नहीं।"

(तफ़्सीरे नईमी, पारह : 2, सू-रतुल ब-क़रह, तह़्तल आयह : 200, 202, जि. 2, स. 316, 321)

फ़िक्रे दुन्या से दूर और फ़िक्रे आख़िरत में मश्ग़ूल सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का एक रूह़ानी व वज्दानी वाक़िआ़ मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे,

दुश्वार गुज़ार घाटी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ एक रोज़ अपने अह़बाब में तशरीफ़ फ़रमा थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ज़ौजए मोह़-त-रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا आईं और कहने लगीं, आप यहां लोगों में तशरीफ़ फ़रमा हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! घर में मुठ्ठी भर भी आटा नहीं। उन्हों ने जवाब दिया : हमारे सामने एक निहायत **दुश्वार गुज़ार घाटी** है जिस से हलके सामान वालों के सिवा कोई नजात नहीं पाएगा। येह सुन कर वोह बख़ुशी वापस चली गईं।

(رَوض الرِّیاحِین، الفصل الاوّل من المقدمة فی شیءٍ من فضائل الاولیاء والصلحین ...الخ، ص۱۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शिक्वा नहीं करना चाहिये !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ किस क़दर क़नाअ़त पसन्द थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की अहलियए मोह़-त-रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا भी कैसी इत़ाअ़त गुज़ार थीं कि घर में खाने के लिय कुछ न होने के बा वुजूद ह़ज़रत का ख़ौफ़े ख़ुदा से मम्लू (या'नी भरपूर) जुम्ला सुन कर ब-त़ीबे ख़ात़िर (ख़ुशी ख़ुशी) वापस लौट गईं। तंगदस्तियों और घरेलू परेशानियों से घबरा कर शिक्वा शिकायत करने की बजाए हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ करना चाहिये और उस की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये। **ज़हे नसीब !** तवक्कुल की दौलते बे पायां से मालामाल हो जाएं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा व तवक्कुल

www.dawateislami.net

करने वालों के लिये ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ढारस निशान है :

وَمَنۡ یَّتَوَکَّلۡ عَلَی اللّٰہِ فَہُوَ حَسۡبُہٗ ؕ (پ۲۸، الطّلاق:۳) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है।

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی "**तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबा-रका فَہُوَ حَسۡبُہٗ ؕ (तो वोह उसे काफ़ी है) के तह़त फ़रमाते हैं : दुन्या में भी, आख़िरत में भी और जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काफ़ी हो, उसे दूसरे दरवाज़े पर जाने की ज़रूरत नहीं होती, बल्कि दूसरे उस के दरवाज़े पर आते हैं।

मज़ीद फ़रमाते हैं : "**तुम तवक्कुल करो या न करो मिलेगा वोही जो मुक़द्दर है तो तवक्कुल छोड़ कर सवाब से मह़रूम क्यूं होते हो ?**"

ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते
नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

(उ़यूनुल ह़िकायात, ह़िस्सा : 2, स. 180)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ुसूले क़नाअ़त का त़रीक़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़नाअ़त कैसे इख़्तियार की जाए इस सिल्सिले में **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **417** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**एह़्याउल उ़लूम का ख़ुलासा**" सफ़ह़ा **265** पर **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی फ़रमाते हैं : क़नाअ़त तीन चीज़ों से मुरक्कब है : (1)...... **अ़मल** (2)...... **सब्र और** (3)...... **इ़ल्म।**

۞...... **पहली चीज़** अ़मल है या'नी मईशत में ए'तिदाल और ख़र्च में किफ़ायत इख़्तियार करना। जो शख़्स क़नाअ़त में बुज़ुर्गी चाहता है उसे चाहिये कि कम ख़र्च करे। ह़दीसे पाक में इर्शाद है : "**اَلتَّدۡبِیۡرُ نِصۡفُ الۡمَعِیۡشَۃِ तरजमा :** तदबीर से काम लेना निस्फ़ मईशत है।"

(فردوس الاخبار للدیلمی، ۱/۳۰۷، الحدیث:۲۲۴۰)

۞...... **दूसरी चीज़** ख़्वाहिशात कम करना है ताकि वोह किसी दूसरे ह़ाल में भी ह़ाजत की वज्ह से परेशान न हो।

۞...... **तीसरी** येह कि वोह इस बात को जान ले कि क़नाअ़त में इ़ज़्ज़त और सुवाल करने से बचत है जब कि त़मअ़ में ज़िल्लत ही ज़िल्लत है, पस इस त़रह़ फ़िक्रे मदीना करते हुए इस (ह़िर्स) से जान छुड़ा ले। **(لُبَابُ الْاِحْیَاء، الباب السابع والعشرون فی ذم حُبِّ المال وذم البخل، بیان علاج الحرص والطمع...الخ، ص۲۳۸)**

www.dawateislami.net

न दौलत दे न सरवत दे मुझे बस येह सआ़दत दे
तेरे क़दमों में मर जाऊं मैं रो रो कर मदीने में

(वसाइले बख़्शिश, स. 406)

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन बुज़ुर्गों की पाकीज़ा सिफ़ात के सदक़े हमें भी दुन्या की महब्बत से ख़लासी अ़ता फ़रमा, दूसरों के सामने दस्ते सुवाल दराज़ करने से महफ़ूज़ रख, क़नाअ़त व सब्रो शुक्र की ने'मत अ़ता फ़रमा, हमें ज़माने में अपने इलावा किसी का मोहताज न कर, सिर्फ़ अपना ही मोहताज रख और दुन्या की हि़र्स व महब्बत से हमारी हि़फ़ाज़त फ़रमा। हमारे दिलों में अपनी और अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत रासिख़ फ़रमा, ग़मे माल में नहीं बल्कि ग़मे मुस्त़फ़ा में रोने वाली आंखें अ़ता फ़रमा, हमें मालो दौलत नहीं चाहिये, हम तो तेरी दाइमी रिज़ा के ही त़लब गार हैं। ऐ हमारे पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हम से हमेशा के लिये राज़ी हो जा और हमें हर ह़ाल में अपनी रिज़ा पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें क़नाअ़त की दौलत नसीब फ़रमा और दूसरों की मोहताजी से बचा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

तेरे ग़म में काश ! अ़त्तार रहे हर घड़ी गिरिफ़्तार
ग़मे माल से बचाना म-दनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 288)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपने अन्दर ज़ोह्दो क़नाअ़त का जज़्बा बेदार करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी है बस हर इस्लामी बहन अपना येह म-दनी ज़ेह्न बना ले कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये अपने मह़ारिम को **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करवाना है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुन्नतों भरी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहेंगी तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ब-र-कतें और सआ़दतें ही सआ़दतें पाएंगी। एक मुबल्लिग़े **दा'वते इस्लामी** ने **दा'वते इस्लामी** में अपनी शुमूलिय्यत के जो अस्बाब बयान किये वोह सुनने से तअ़ल्लुक़ रखते हैं, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द अव्वल, सफ़्ह़ा **224** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उस के जज़्बात अपने अल्फ़ाज़ में बयान करते हुए नक़्ल फ़रमाते हैं :

मैं दा'वते इस्लामी में कैसे आया !

मन्डन गढ़ ज़िलअ़ रतना गरी महाराष्ट्र (हिन्द) के एक इस्लामी भाई ने बताया कि **2002 सि.ई.** की बात है, मैं बुरे दोस्तों की सोह़बत के बाइस **गुन्डा गेंग** में शामिल हो गया। लोगों को मारना पीटना और गालियां बकना मेरा मा'मूल था, जान बूझ कर झगड़े मोल लेता, जो नया फ़ेशन आता सब से पहले मैं अपनाता, दिन में कई बार कपड़े तब्दील करता सिवाए जीन्स (Jeans) के दूसरी पेन्ट न पहनता, आवारा दोस्तों के साथ घूम फिर कर रात गए घर लौटता और दिन चढ़े तक सोता रहता। वालिद साहि़ब का इन्तिक़ाल हो चुका था, बेवा मां समझाती तो مَعَاذَالله ज़बान दराज़ी करता था। एक मर्तबा **दा'वते इस्लामी** के किसी बा इमामा इस्लामी भाई ने मुलाक़ात पर एक रिसाला **जिन्नात का बादशाह** (मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) तोह़फ़े में दिया, पढ़ा तो अच्छा लगा। **र-मज़ानुल मुबारक** में एक दिन किसी मस्जिद में जाने की सआ़दत मिली तो इत्तिफ़ाक़ से एक सब्ज़ सब्ज़ इमामे और सफ़ेद लिबास में मल्बूस सन्जीदा नौ जवान पर नज़र पड़ी मा'लूम हुवा येह यहां **मो'तकिफ़** हैं। उन्हों ने **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत** दिया तो मैं बैठ गया। बा'दे दर्स उन्हों ने मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कतें बताईं। उन इस्लामी भाई का लिबास इस क़दर सादा था कि बा'ज़ जगह पैवन्द तक लगे हुए थे, जब उन के लिये घर से खाना आया तो वोह भी बिल्कुल सादा था ! मैं उन की **सा-दगी** से बहुत ज़ियादा मु-तअस्सिर हुवा मुझे उन से मह़ब्बत हो गई, मैं उन से मुलाक़ात के लिये आने जाने लगा। इत्तिफ़ाक़ से ईदुल फ़ित्र के बा'द उन इस्लामी भाई का निकाह़ था। येह बेचारे ग़रीब व तंगदस्त थे मगर हैरत की बात येह थी कि उन्हों ने इस बात का मुझे ज़रा भी एह़सास नहीं होने दिया और न ही किसी क़िस्म की माली इमदाद के लिये सुवाल किया। मैं और ज़ियादा मु-तअस्सिर हुवा कि مَاشَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** का **म-दनी माह़ोल** कितना प्यारा है और इस के वाबस्तगान किस क़दर सादा और खुद्दार हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मह़ब्बत मेरे दिल में घर करती चली गई ह़त्ता कि मैं ने **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह **8** दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया। मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई, क़ल्ब में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं ने गुनाहों से सच्ची तौबा कर के अपनी ज़ात को **दा'वते इस्लामी** के ह़वाले कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मुझ पर वोह म-दनी रंग चढ़ा कि आज कल मैं अ़लाक़ाई मुशा-वरत के **ख़ादिम** (निगरान) की हैसिय्यत से अपने अ़लाक़े में **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों की धूमें मचा रहा हूं।

www.dawateislami.net

अ़त़ाए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ोल

अ़त़ाए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ोल है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा म-दनी माह़ोल
ब फ़ैज़ाने अह़मद रज़ा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह फूले फलेगा सदा म-दनी माह़ोल
अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा तुम आ जाओ देगा सिखा म-दनी माह़ोल
बुरी सोह़बतों से कनारा कशी कर के अच्छों के पास आ के पा म-दनी माह़ोल
तनज़्ज़ुल के गहरे गढ़े में थे उन की तरक़्क़ी का बाइ़स बना म-दनी माह़ोल
तुम्हें लुत़्फ़ आ जाएगा जिन्दगी का क़रीब आ के देखो ज़रा म-दनी माह़ोल
नबी की मह़ब्बत में रोने का अन्दाज़ चले आओ सिखलाएगा म-दनी माह़ोल
तू नरमी को अपनाना झगड़े मिटाना रहेगा सदा ख़ुशनुमा म-दनी माह़ोल
तू ग़ुस्से झिड़क्ने से बचना वगर्ना येह बदनाम होगा तेरा म-दनी माह़ोल
जो कोई "मजालिस[(1)]" का होगा वफ़ादार उसी को ही रास आएगा म-दनी माह़ोल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ तुम अपनाए रख्खो सदा म-दनी माह़ोल

बहुत सख़्त पछताओगे याद रख्खो
न अ़त्त़ार तुम छोड़ना म-दनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 406)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1)...... यहां दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के मुख़्तलिफ़ शो'बाजात की "मजालिस" मुराद हैं।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾9﴿...... सय्यि-दतुना आ़इशा को नसीह़तें

एक लाख बन्दों की शफ़ाअ़त

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **"फ़तावा र-ज़विय्या" जिल्द 23, सफ़ह़ा 122** पर नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल मवाहिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते थे कि मैं ने ख़्वाब में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि "क़ियामत के दिन तुम एक लाख बन्दों की शफ़ाअ़त करोगे।" मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं कैसे इस क़ाबिल हुवा ? इर्शाद फ़रमाया : **"इस लिये कि तुम मुझ पर दुरूद पढ़ कर उस का सवाब मुझे नज़्र कर देते हो।"** (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 122/123)

सवाब नज़्र करने का त़रीक़ा येह है कि पढ़ते वक़्त सवाब नज़्र करने की दिल में निय्यत कर ले या पढ़ने से क़ब्ल या बा'द ज़बान से भी कह ले कि इस **दुरूद शरीफ़** का सवाब जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़्र करता हूं। (अनमोल हीरे, स. 2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मसाकीन से मह़ब्बत का दर्स

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **743** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़ह़ा **671** पर इमाम मुह़म्मद श-रफ़ुद्दीन अ़ब्दुल मुअमिन दिम्यात़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी :

"**اَللّٰھُمَّ اَحْیِنِیْ مِسْکِیْنًا وَّاَمِتْنِیْ مِسْکِیْنًا وَّاحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَةِ الْمَسَاکِیْنِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ**" तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मिस्कीनी की ज़िन्दगी और मिस्कीनी की मौत़ अ़त़ा फ़रमा और क़ियामत के दिन मिस्कीनों के साथ उठा।" तो उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : "ऐसा क्यूं, **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ?" फ़रमाया : "क्यूं कि येह लोग अग़्निया से चालीस **(40)** साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! मिस्कीन को ख़ाली

www.dawateislami.net

हाथ न लौटाओ अगर्चे खजूर का आधा या बा'ज़ ह़िस्सा ही दे दिया करो, ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! मसाकीन से मह़ब्बत करो और उन का क़ुर्ब इख़्तियार करो ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत तुम्हें अपना क़ुर्ब अ़त़ा फ़रमाए।"

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، کتاب الزھد، باب ما جاء ان فقراء المھاجرین یدخلون الجنة ...الخ، ص٥٦٢، الحدیث:٢٣٥٢)

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त "मिस्कीन" की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : यहां मसाकीन से मुराद दिल के मसाकीन हैं जिन के दिलों में तकब्बुर न हो, नरमी और तवाज़ोअ़ हो, **मु-तवाज़ेअ़ बादशाह भी मिस्कीन है और मु-तकब्बिर फ़क़ीर मिस्कीन नहीं।** लिहाज़ा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ अगर्चे माल से ग़नी हैं मगर दिल से मिस्कीन व मु-तवाज़ेअ़ हैं जब ह़ुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के पास बहुत दौलत आई तब भी ह़ुज़ूर दिल के मु-तवाज़ेअ़ रहे, लिहाज़ा ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह दुआ़ क़बूल हुई।

मज़ीद फ़रमाते हैं : येह मसाकीन की इन्तिहाई अ़-ज़मत कि ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह न फ़रमाया कि मसाकीन को मेरे ज़ुमरे, मेरे गुरौह में उठा बल्कि फ़रमाया कि मुझे मसाकीन के ज़ुमरे में उठा। मत़लब येह है कि क़ियामत में मसाकीन की एक जमाअ़त हो, उन में, मैं भी एक हूं अगर्चे ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस जमाअ़त के इमाम हैं मगर अपने को उन में से एक क़रार देना उन की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई है। ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान इन्तिहाई तवाज़ोअ़ के लिये है।

और ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को मिस्कीन को वापस न लौटाने की जो नसीह़त फ़रमाई है इस के तह़्त मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : (इस से मुराद येह है कि) जब कोई मिस्कीन सुवाल करने आए तो जो मुयस्सर हो उसे दे दो न हो तो उस से अच्छी बात कह दो।

(مراۃ المناجیح، کتاب الرقاق، باب فضل الفقراء، ٧/٦٨، ملتقطا)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'लीमात व नसाएह़ की आईना दार थीं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हर नसीह़त पर अ़मल करती थीं। मज़्कूरा फ़रमाने मुस्त़फ़ा पर अ़मल करते हुए मसाकीन पर भी बहुत नवाज़िशात फ़रमातीं और जो मुयस्सर होता उस को देने में पसो पेश न करतीं चुनान्चे एक बार उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا अंगूर खा रही थीं कि कोई साइल आया, आप के पास सिर्फ़ एक दाना अंगूर बचा

www.dawateislami.net

था, आप ने वोह ही पेश कर दिया साइल नाराज़ हो गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने येह आयत तिलावत की :

فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَیْرًا یَّرَهٗ ﴿۷﴾ (پ۳۰،الزلزال:۷) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा।

और फ़रमाया : अंगूर तो ज़र्रे से बड़ा है (या'नी जब ज़र्रा भर भलाई करने का अज्र देखेगा तो अंगूर में तो बहुत सारे ज़र्रात हैं लिहाज़ा इस का अज्र क्यूं न देखेगा)।

(مرقاة المفاتيح، كتاب الرقاق، باب فضل الفقراء......الخ، ۹/۴۳۲، تحت الحديث:۵۲۴۴)

बयान के आग़ाज़ में बयान कर्दा "**तिरमिज़ी शरीफ़**" की रिवायत के तह़्त मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی मज़ीद फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि दुन्या में जो शख़्स मसाकीन **औलियाउल्लाह** से क़रीब होगा कल क़ियामत में ख़ुदा से क़रीब होगा। मौलाना (रूम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَيُّوْم) फ़रमाते हैं :

ہَر کِہ خواہد ہم نشینی با خدا
اُو نشیند در حضورِ اَولیاء

या'नी जो कोई ख़ुदा तआ़ला की हम-नशीनी का त़लब गार है उसे चाहिये कि उस के औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की सोह़बत में बैठे। (مراٰۃ المناجیح،کتاب الرقاق،باب فضل الفقراء،۷/۲۹)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस रिवायत से मसाकीन की फ़ज़ीलत वाज़ेह़ होती है कि सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद अपने लिये मसाकीन के साथ उठाए जाने की दुआ़ फ़रमाई मज़ीद इन को येह बिशारत अ़त़ा फ़रमाई कि येह क़ियामत वाले दिन अग़्निया से **40** साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे और फिर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا को फु-क़रा से मह़ब्बत और इन से क़ुर्बत इख़्तियार करने की नसीह़त फ़रमाई और येह भी फ़रमाया कि उन को ख़ाली हाथ न लौटाया जाए। लेकिन **याद रखिये !** येह हुक्म पेशावर **(Professinal)** भिकारियों का नहीं जिन का काम ही भीक मांगना है, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ **32** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**पुर असरार भिकारी**" सफ़्ह़ा **13** पर अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : "बत़ौरे पेशा भीक मांगना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है जो बिला इजाज़ते शर-ई सुवाल करता है वोह जहन्नम की आग अपने लिये त़लब करता है और इस त़रह़ जितनी रक़म ज़ियादा ह़ासिल करेगा इतना ही नार का ज़ियादा ह़क़दार होगा।"

www.dawateislami.net

इस ज़िम्न में 4 अहादीसे मुबा-रका मुला-हज़ा फ़रमाइये :

बिला इजाज़ते शर-ई मांगने के अ़ज़ाब पर मुश्तमिल 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿...... जो शख़्स लोगों से सुवाल करे, हालां कि न उसे फ़ाक़ा पहुंचा, न इतने बाल बच्चे हैं जिन की ताक़त नहीं रखता तो क़ियामत के दिन इस तरह आएगा कि उस के मुंह पर गोश्त न होगा।

(شُعَبُ الایمان، باب فی الزکاۃ ، فصل فی الاستعفاف عن المسئلۃ ، ۳/۲۷۴، الحدیث:۳۵۲۶)

﴾2﴿...... जो शख़्स बिग़ैर मोहताजी के सुवाल करता है गोया वोह अंगारा खाता है।

(المعجم الکبیر للطبرانی، باب الحاء، حبشی بن جنادہ السلولی،۴/۲۰۰، الحدیث:۳۴۲۶)

﴾3﴿...... जो माल बढ़ाने के लिये सुवाल करता है वोह अंगारे का सुवाल करता है तो चाहे ज़ियादा मांगे या कम का सुवाल करे। (صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب کراھۃ المسألۃ للناس، ص۳۷۲، الحدیث:۱۰۴۱)

﴾4﴿...... जो शख़्स लोगों से इस लिये सुवाल करे कि अपने माल को बढ़ाए तो वोह (माल) जहन्नम का गर्म पथ्थर है अब जो चाहे कमी करे और जो चाहे ज़ियादा करे।

(الاحسان فی تقریب صحیح ابن حبان، کتاب الزکاۃ، باب المسألۃ والاخذ......الخ، ذکر الزجر عن سؤال المرء یرید التکثیر...الخ، ص۹۴۶، الحدیث:۳۳۹۱)

पेशावर भिकारियों को देने का हुक्म

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अभी आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया कि बिग़ैर हाजत सुवाल करने का कितना सख़्त अ़ज़ाब है। बद क़िस्मती से आज कल एक बहुत बड़ी ता'दाद दिन रात इस गुनाह के इरतिकाब में मसरूफ़ है ऐसे लोगों को येह जानते हुए कि येह पेशावर फ़क़ीर हैं, भीक देना भी हराम है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ **48** सफ़हात पर मुश्तमिल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के तहरीरी म-दनी मुज़ा-करे **''बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिक्मत''** सफ़्हा **36** पर मन्क़ूल है : मेरे आक़ा, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से पेशावर गदा-गरों (भिकारियों) के बारे में सुवाल किया गया तो इर्शाद फ़रमाया : ''जो अपनी ज़रूरिय्याते शरइय्या के लाइक़ माल रखता है या इस के कस्ब पर क़ादिर है उसे सुवाल हराम और जो इस माल से आगाह हो उसे देना हराम, और लेने और देने वाला दोनों गुनहगार व मुब्तलाए आसाम (या'नी गुनाहों में मुब्तला हुए)।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 307)

www.dawateislami.net

गदा-गरी की मौजूदा सूरते हाल

दा 'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **1250** सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल, सफ़्हा **940** पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : आज कल एक आ़म बला येह फैली हुई है कि अच्छे ख़ासे तन्दुरुस्त चाहें तो कमा कर औरों को खिलाएं, मगर उन्हों ने अपने वुजूद को बेकार क़रार दे रखा है, कौन मेह़नत करे, मुसीबत झेले, बे मशक़्क़त जो मिल जाए तो तक्लीफ़ क्यूं बरदाश्त करे। ना जाइज़ त़ौर पर सुवाल करते और भीक मांग कर पेट भरते हैं और बहुतेरे ऐसे हैं कि मज़दूरी तो मज़दूरी, छोटी मोटी तिजारत को नंगो आ़र (शर्म व ज़िल्लत का काम) ख़याल करते और भीक मांगना कि ह़क़ीक़तन ऐसों के लिये बे इ़ज़्ज़ती व बे ग़ैरती है, मायए इ़ज़्ज़त जानते हैं और बहुतों ने तो भीक मांगना अपना पेशा ही बना रखा है, घर में हज़ारों रुपै हैं, सूद का लैन दैन करते, ज़िराअ़त वग़ैरा करते हैं मगर भीक मांगना नहीं छोड़ते, उन से कहा जाता है तो जवाब देते हैं कि येह हमारा पेशा है **वाह साहि़ब वाह !** क्या हम अपना पेशा छोड़ दें ! ह़ालां कि **ऐसों को सुवाल ह़राम है और जिसे उन की ह़ालत मा 'लूम हो, उसे जाइज़ नहीं कि उन को दे।** (बहारे शरीअ़त, सुवाल किसे ह़लाल है और किसे नहीं, जि. 1, स. 940)

रिज़ा पर रब की राज़ी हैं तुम्हारे हम भिकारी हैं
हमारी आख़िरत बेहतर बना दो या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश, स. 552)

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب!　　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हु़ज़ूर से मुलाक़ात

हु़स्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम (आख़िरत में) मुझ से मिलने का इरादा रखती हो तो (1)...... तुम्हारे लिये दुन्या से इस की मिस्ल काफ़ी है जितना एक मुसाफ़िर का तोशा होता है, (2)...... अग़्निया के साथ बैठने से बचती रहो और (3)...... कपड़े को उस वक़्त तक पुराना न समझो जब तक उस में पैवन्द न लगा लो।

(سُنَنُ الترمذی، کتاب اللباس، باب ما جاء فی ترقیع الثوب، ص٤٤٤، الحدیث:١٧٨٠)

शारेहे़ मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی **"मिरआतुल मनाजीह़"** में इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : (मिलने से मुराद येह है कि)

www.dawateislami.net

दुन्या व आख़िरत में अच्छी त़रह़ मिलना, कामिल त़ौर पर मेरे साथ रहना, जिस की वज्ह से मैं तुम से बहुत ख़ुश रहूं तो येह अ़मल करना। (और मुसाफ़िर के तोशे से मुराद येह है कि) थोड़ी दुन्या पर क़नाअ़त करो जैसे मुसाफ़िर रास्ता त़ै करते हुए थोड़ा सामान रखता है, बहुत सामान को बोझ और वबाल समझता है। (और इस फ़रमाने आ़ली में या तो) मालदारों से ग़ाफ़िल और मु-तकब्बिर मालदार मुराद हैं या वोह सूरत मुराद है जब मालदारों के पास बैठने से ना शुक्री का जज़्बा पैदा हो कि येह तो इतना बड़ा मालदार है मैं ग़रीब हूं वरना ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बड़े दौलत मन्द थे (ह़ालां कि) इन की सोह़बत कीमिया (या'नी निहायत मुफ़ीद) थी। येह (या'नी इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा कि "कपड़े को उस वक़्त तक पुराना न समझो जब तक उस में पैवन्द न लगा लो" में) इन्तिहाई क़नाअ़त की ता'लीम है कि पैवन्द वाले कपड़े पहनने में आ़र न हो।

(مرآۃ المناجیح، کتاب اللباس، ۶/۱۰۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को देखा जब कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ख़ली-फ़तुल मुस्लिमीन थे कि आप के शानए मुबारक के दरमियान ऊपर नीचे तीन पैवन्द एक जगह पर लगे थे कि पैवन्द गल गया तो और लगा लिया। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में ख़ुत़्बा दिया उस वक़्त आप के तहबन्द शरीफ़ में **12** पैवन्द थे।

(شرح المقاصد، کتاب اللباس، باب ترقیع الثوب والبذاذة......الخ، ۱۲/۴۵، تحت الحدیث:۳۱۱۵)

मक़्सद येह है कि पैवन्द वाले कपड़े पहनने में आ़र नहीं होनी चाहिये। लिहाज़ा येह ह़दीस उन अह़ादीस के ख़िलाफ़ नहीं जहां इर्शाद है कि रब की ने'मत का असर तुम पर ज़ाहिर हो या फ़रमाया कि नया कपड़ा पाओ तो पुराना ख़ैरात कर दो। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दराज़ गोश (या'नी गधे) की सुवारी फ़रमा लेते थे। अपना ना'लैने पाक ख़ुद सी लेते थे। अपनी क़मीस में पैवन्द लगा लेते थे और फ़रमाते थे कि जो मेरी सुन्नत से नफ़रत करे वोह मेरी जमाअ़त से नहीं।

(تاریخ مدینة دمشق، حرف الف، باب ذکر تواضعه لربه ورحمته لامته......الخ، ۴/۷۷)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! सरकारे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को नसीहत फ़रमाते हुए दुन्या में एक मुसाफ़िर की सी ज़िन्दगी बसर करने का हुक्म फ़रमाया और साथ ही साथ मालदारों की सोह़बत से मन्अ़ फ़रमा दिया नीज़ आ़जिज़ी का दर्स देते हुए पुराने कपड़ों को पैवन्द लगा कर पहनने का भी हुक्म फ़रमाया। यहां पर मालदारों से मुराद दुन्यादार मालदार हैं जिन के दिन रात

www.dawateislami.net

ग़फ़्लत में गुज़र रहे हैं वरना अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, सहाबए किराम, ताबिईने इज़ाम और दीगर औलियाए किराम عَلَيْهِمُ الرَّحْمَةُ وَالرِّضْوَان में बहुत सारे अफ़राद ऐसे गुज़रे हैं जिन को **अल्लाह तबा-र-क व तआला** ने दीनी ब-र-कतों से मालामाल फ़रमाने के साथ साथ दुन्यवी मालो मनाल से भी ख़ूब नवाज़ा था इन ह़ज़रात की दुन्या भी दीन हो जाती है क्यूं कि जो दुन्या दीन कमाने का ज़रीआ़ हो वोह भी दीन है, माल वोही होता है येही माल जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी नेक बन्दे के पास हो जिस से वोह उमूरे दीनिया में मदद ह़ासिल करे तो बाइ़से नजात और जब येही माल किसी दुन्यादार के पास हो जो इसे ऐ़शो इ़शरत में ख़र्च करे तो बाइ़से हलाकत। मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं : **''दिल दुन्या में रखो मगर दिल में दुन्या न रखो वरना हलाक हो जाओगे, कश्ती दरिया में रहे तो ख़ैर है लेकिन अगर दरिया कश्ती में आ जाए तो हलाकत है।''** (مراۃ المناجیح، کتاب فضائل القران، باب ثواب التسبیح والتحمید۔۔۔الخ، ۳/۳۴۷، تحت الحدیث:۲۳۴۴)

येही वज्ह है कि इन ह़ज़रात का दुन्यवी अश्या त़लब करना भी कारे सवाब होता है लेकिन दुन्यादार इ़बादत भी करता है तो रियाकारी वग़ैरा त़रह़ त़रह़ के गुनाहों के बाइ़स उस की इ़बादत भी दुन्या बन जाती है, लिहाज़ा नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की सोह़बत से मन्अ़ फ़रमा दिया कि इन की सोह़बत में उठने बैठने से दिल में शहवात और लह्वो लअ़ब की मह़ब्बत और दीन के मुआ़-मले में ग़फ़्लत व सुस्ती पैदा होती है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ली बिन सुल्त़ान मुह़म्मद क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى **''मिरक़ातुल मफ़ातीह़''** में नक़्ल फ़रमाते हैं '' **لَا تَنْظُرُوْا اِلٰى اَرْبَابِ الدُّنْيَا فَاِنَّ بَرِيْقَ اَمْوَالِ الْاَغْنِيَاءِ يَذْهَبُ بِرُوْنَقِ حَلَاوَةِ الْفُقَرَاءِ** या'नी दुन्यादारों की त़रफ़ न देखो कि मालदारों के मालों की चमक दमक को फ़ु-क़रा की ह़लावत की आबो ताब ले जाती है।'' **(مرقاة المفاتيح، كتاب اللباس، ٧/٢٢٠)**

न हों अश्क बरबाद दुन्या के ग़म में — मुह़म्मद के ग़म में रुला या इलाही !
अ़त़ा कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत — न नज़्दीक आए रिया या इलाही !
मुझे औलिया की मह़ब्बत अ़त़ा कर — तू दीवाना कर ग़ौस का या इलाही !
मैं यादे नबी में रहूं गुम हमेशा — मुझे इन के ग़म में घुला या इलाही !
ख़ुदाया अजल आ के सर पर खड़ी है — दिखा जल्वए मुस्त़फ़ा या इलाही !
मेरी लाश से सांप बिच्छू न लिपटें — करम बहरे अह़मद रज़ा या इलाही !
तू अ़त्त़ार को सब्ज़ गुम्बद के साए
में कर दे शहादत अ़त़ा या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सरकार की दुन्या से बे रग़बती

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ने हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बे शुमार इख़्तियारात से नवाज़ा इस के बा वुजूद आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्यवी मालो दौलत से बे रग़बती इख़्तियार फ़रमाई, चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : हमारे पास एक पर्दा था जिस में परिन्दों की तस्वीरें थीं जब कोई शख़्स घर में दाख़िल होता तो वोह उस को सामने पाता तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : इस को यहां से हटा दो कि मैं जब भी घर में दाख़िल होता हूं तो इस को देख कर मुझे दुन्या याद आती है।

(صحيح مسلم، كتاب اللباس والزينة، باب تحريم تصوير صورة الحيوان ...الخ، ص٨٣٨، الحديث:٢١٠٧)

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : (उस पर्दे को देख कर दुन्या याद आने की वज्ह येह है कि) ऐसे नक़्शीं (या'नी नक़्शो निगार वाले) पर्दे अमीरों के हां होते हैं, जिस से उन की अमीरी ज़ाहिर होती है (लिहाज़ा इर्शाद फ़रमाया कि) येह पर्दा देख कर हम को दौलत मन्दी याद आती है इस लिये येह मेरे सामने से हटा दिया जावे, रब तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ (پ١٦، طٰه:١٣١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ सुनने वाले अपनी आंखें न फैला उस की त़रफ़ जो हम ने काफ़िरों के जोड़ों को बरत्ने के लिये दी है जीती दुन्या की ताज़गी।

येह फ़रमाने आ़ली इस आयते करीमा पर अ़मल है, ख़ुलासा येह कि हमारे घर में तकल्लुफ़ शान की चीज़ें न रहें। **(مراٰة المناجیح، کتاب الرقاق، الفصل الثالث، ۷/۵۳)**

मुझ को दुन्या की दौलत न ज़र चाहिये　　शाहे कौसर की मीठी नज़र चाहिये
आ़शिक़ाने नबी के है दिल की सदा　　सब्ज़ गुम्बद के साए में घर चाहिये
रात दिन इ़श्क़ में तेरे तड़पा करूं　　या नबी ! ऐसा सोज़े जिगर चाहिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 289)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस रिवायत से किसी के ज़ेह्न में येह वस्वसा न आए कि तस्वीरों वाला पर्दा लगाना जाइज़ है और जहां तक इस रिवायत का तअ़ल्लुक़ है तो इस की वज़ाह़त करते हुए शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इर्शाद फ़रमाते हैं : या तो उस वक़्त तक तस्वीर ह़राम न हुई थी, या वोह तस्वीरें बहुत छोटी थीं, जो दूर से नज़र न आती थीं, इस लिये हटाई न गईं, लिहाज़ा इस ह़दीस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि जानदार की तस्वीर रखना तो ह़राम है फिर सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पर्दे में क्यूं थीं। (مراۃ المناجیح، کتاب الرقاق، الفصل الثالث، ۵۳/۷)

आ़जिज़ी इख़्तियार करने की नसीह़त

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आ़जिज़ी व इन्किसारी हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत है और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरों को भी इस की तल्क़ीन फ़रमाई, चुनान्चे शफ़ीए़ रोज़े शुमार, बि इज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! आ़जिज़ी अपनाओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़जिज़ी करने वालों से मह़ब्बत फ़रमाता और तकब्बुर करने वालों को ना पसन्द करता है।"

(کنزالعمال، کتاب الخلافۃ مع الامارۃ، باب الھدیۃ، ۳۲۷/۳۰، الحدیث:۱۴۴۷۸)

"आ़जिज़ी" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से आ़जिज़ी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

मा'लूम हुवा जो इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रिज़ाए इलाही के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करते हैं वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब हैं, लिहाज़ा **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** अपने इन मह़बूब बन्दों को बड़े बड़े बुलन्द द-रजात अ़त़ा फ़रमाता है, चुनान्चे इस ज़िम्न में पांच **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** ज़िक्र किये जाते हैं :

﴾1﴿.... जब बन्दा आ़जिज़ी इख़्तियार करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का (द-रजा) सातवें आस्मान तक बुलन्द फ़रमा देता है।

(مکارم الاخلاق للخرائطی، جماع ابواب الرفق بالمملوکین، باب ما یستحب من التواضع فی المجلس وغیرھا، ۱۷۱۷/۲، الحدیث:۲۹۷)

﴾2﴿.... जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक द-रजा तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे एक द-रजा बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है यहां तक कि उसे **इल्लिय्यीन** में पहुंचा देता है।

(صحیح ابن حبان، کتاب الحظر والاباحۃ، باب تواضع و الکبر والعجب، ذکر الاخبار عن وضع اللہ جل وعلا...الخ، ص۱۵۱۷، الحدیث:۵۶۷۸)

www.dawateislami.net

﴾3﴿.... जो अपने मुसल्मान भाई के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है और जो इस पर बुलन्दी चाहता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे पस्ती में डाल देता है।

(المعجم الاوسط، باب الميم، من اسمه محمد، ٥/٣٩٠، الحديث:٧٧١١)

﴾4﴿.... तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो और मिस्कीनों के साथ बैठा करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बड़े मर्तबे वाले बन्दे बन जाओगे और तकब्बुर से भी बरी हो जाओगे।

(حلية الاولياء، عبد العزيز بن ابی رواد، ٢١٣/٨، الحديث:١١٩١٥)

﴾5﴿.... हर शख़्स के सर में एक लगाम होती है जिसे एक फ़िरिश्ता थामे होता है अगर वोह तवाज़ोअ़ से काम ले तो फ़िरिश्ते से कहा जाता है : इस की क़द्र बुलन्द कर दो और जब वोह तकब्बुर करता है तो फ़िरिश्ते से कहा जाता है : इस की क़द्रो मन्ज़िलत को पस्त कर दो।

(المعجم الكبير، يوسف بن مهران عن ابن عباس، ١٣٥/٦، الحديث:١٢٧٦٥)

सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा और तवाज़ोअ़

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'लीम का ही नतीजा था कि आप के गुलामों ने इस मुबारक सुन्नत को अपनाया और न सिर्फ़ ख़ुद इस पर अ़मल पैरा हुए बल्कि दूसरों को भी इस पर अ़मल करने की तरग़ीब दिलाई, चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने एक मर्तबा (आ़जिज़ी व इन्किसारी की ता'लीम देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : ''लोग अफ़्ज़ल इबादत तवाज़ोअ़ से ग़ाफ़िल हैं।''

(شُعَبُ الايمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی التواضع......الخ، ٢٧٨/٦، الحديث:٨١٤٨)

आ़जिज़ी ज़रीअ़ए फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد इर्शाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जूदी पहाड़ को सफ़ीनए नूह़ के साथ ख़ास फ़रमाया क्यूं कि येह दूसरों से ज़ियादा इज्ज़ का इज़्हार करता था और ह़िरा पहाड़ को अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इबादत के साथ इस लिये ख़ास फ़रमाया क्यूं कि येह दूसरे पहाड़ों से ज़ियादा तवाज़ोअ़ करता था और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे अत़्हर को इस लिये दीगर मख़्लूक़ से मुमताज़ फ़रमाया क्यूं कि येह आ़जिज़ी व इन्किसारी में इन पर फ़ौक़िय्यत रखता था।

(الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الرابعة: الكبر والعجب والخيلاء، ١٤٠/١)

नरमी इख़्तियार करने की नसीह़त

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नरमी के बे शुमार फ़वाइद हैं हमारी शरीअ़त भी हमें

www.dawateislami.net

गुफ़्त–गू, लैन दैन और तब्लीग़ वग़ैरा के सिल्सिले में नरमी की ता'लीम फ़रमाती है, चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि–दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से फ़रमाया : "ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! नरमी इख़्तियार करो कि जिन घर वालों से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ भलाई का इरादा फ़रमाता है नरमी के दरवाज़े की त़रफ़ उन की रहनुमाई फ़रमाता है।"

(مسند احمد، مسند عائشه رضی الله عنها، ۲۰۴/۱۰، الحدیث:۲۵۴۷۱)

नरमी ज़ीनत देती है

एक और मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यि–दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : "ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ रफ़ीक़ (नरमी फ़रमाने वाला) है और नरमी को पसन्द फ़रमाता है और नरमी पर वोह कुछ अ़ता फ़रमाता है जो सख़्ती और इस के सिवा किसी चीज़ पर अ़ता नहीं फ़रमाता।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب فضل الرفق، ص۱۰۰۳، الحدیث:۲۵۹۳)

हर मुआ़–मले में नरमी पसन्दीदा है

एक मर्तबा यहूदियों के एक गुरौह ने नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर होने की इजाज़त त़लब की, (इजाज़त मिलने के बा'द) उन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा : "**اَلسَّامُ عَلَیْکُمْ**" या'नी तुम पर मौत हो।" तो उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि–दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जवाब दिया : "**بَلْ عَلَیْکُمُ السَّامُ وَاللَّعْنَةُ**" बल्कि तुम पर मौत और ला'नत हो।" (येह जवाब सुन कर) सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हर मुआ़–मले में नरमी को पसन्द फ़रमाता है। हज़रते सय्यि–दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ने नहीं सुना कि उन्हों ने क्या कहा था ?" सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने "**وَعَلَیْکُمْ**" कहा है (मुराद येह है कि उन्हों ने जो कहा था कि "तुम पर मौत हो" उस के जवाब में, मैं ने "**وَعَلَیْکُمْ**" ही कहा है जिस का मत़लब है तुम पर हो)।

(صحیح مسلم، کتاب السلام، باب النهی عن ابتداء اهل الکتاب بالسلام...الخ، ص۸۵۷، الحدیث:۲۱۶۵)

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : उम्मुल मुअमिनीन **सय्यि–दतुना** आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का येह

www.dawateislami.net

ग़ज़ब व गुस्सा हुज़ूर की वालिहाना महब्बत की बिना पर था कि तुम ने महबूब को येह क्यूं कहा।

मज़ीद फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आ'ला अख़्लाक़ की ता'लीम दी वोह भी मेहमान कुफ़्फ़ार के साथ वरना हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मनों पर सख़्ती करना इबादत है हुज़ूर मेहमान कुफ़्फ़ार की ख़ातिर तवाज़ोअ़ करते थे लिहाज़ा इस ह़दीस से येह धोका न दिया जाए कि हुज़ूर के दुश्मनों पर नरमी करनी चाहिये। (مراۃ المناجیح، کتاب الاداب، باب السلام، ۶/۳۱۹-۳۲۰)

कुफ़्फ़ार को सलाम करने का हुक्म

ज़िक्र कर्दा रिवायत में यहूदियों को सलाम करने और जवाब देने का ज़िक्र हुवा, ज़िम्नन येह भी मुला-ह़ज़ा फ़रमाती जाइये कि कुफ़्फ़ार को सलाम नहीं कर सकते। जैसा कि सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **"फ़तावा आ़लमगीरी"** के ह़वाले से बयान फ़रमाते हैं : कुफ़्फ़ार को सलाम न करे और वोह सलाम करें तो जवाब दे सकता है मगर जवाब में सिर्फ़ عَلَیْکُمْ कहे अगर ऐसी जगह गुज़रना हो जहां मुस्लिम व काफ़िर दोनों हों तो اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ कहे और मुसल्मानों पर सलाम का इरादा करे और येह हो सकता है कि اَلسَّلَامُ عَلٰی مَنِ اتَّبَعَ الْھُدٰی कहे। (बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, जि. 3, स. 461)

सदरुश्शरीअ़ह عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعُلٰی मज़ीद फ़रमाते हैं : काफ़िर को अगर ह़ाजत की वज्ह से सलाम किया, म-सलन सलाम न करने में उस से अन्देशा है तो ह़रज नहीं और ब क़स्दे ता'ज़ीम काफ़िर को हरगिज़ हरगिज़ सलाम न करे कि काफ़िर की ता'ज़ीम कुफ़्र है। (المرجع السّابق، ص۴۶۲)

वस्वसा : इस ह़दीस शरीफ़ में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर मुआ़-मले में नरमी को पसन्द फरामता है फिर येह कहां से ख़ास हो गया कि फ़ुलां जगह नरमी करनी है फ़ुलां जगह सख़्ती ?

इलाजे वस्वसा : इस ह़दीस शरीफ़ का येह मफ़्हूम नहीं कि हर किसी से, हर वक़्त, हर मुआ़-मले में नरमी ही बरत्नी चाहिये, जैसा कि **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** क़ुरआने ह़कीम में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ اغْلُظْ عَلَيْهِمْ (پ۱۰، التوبۃ:۷۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) जिहाद फ़रमाओ काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर और उन पर सख़्ती करो।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन जरीर त़बरी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا से नक़्ल फ़रमाते हैं : इस आयत में **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** ने अपने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार से

www.dawateislami.net

तलवार के ज़रीए और मुनाफ़िक़ीन से सख़्त कलामी के ज़रीए जिहाद करने का हुक्म दिया है।
(تفسیر الطبری، الجزء العاشر، سورۃ التوبۃ، تحت الآیۃ:۷۳، ۶/۴۲۰)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی इस आयते मुबा-रका के तहत फ़रमाते हैं : इस्लामी तहज़ीब येह है कि कुफ़्फ़ार को तब्लीग़ नर्म अल्फ़ाज़ अच्छे लहजे से करो मगर जो तुम को बहकाना चाहें या इस्लाम के दुश्मन हों उन पर ख़ूब सख़्ती करो ताकि तुम्हारी सख़्ती से उन की हिम्मत टूट जावे। बहुत दफ़्आ़ जुरअत मन्दाना कलाम से बहुत काम निकल जाते हैं।

(तफ़्सीरे नईमी, पारह : 10, सू-रतुत्तौबह, तह़तल आयह : 73, जि. 10, स. 471)

एक मक़ाम पर **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के अख़्लाक़े ह़-सना को बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाता है :

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ (پ۲۶، الفتح:۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुहम्मद **अल्लाह** के रसूल हैं और इन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल।

सदरुल अफ़ाज़िल हाफ़िज़ सय्यिद मुफ़्ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی इस आयते करीमा की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : (और वोह कुफ़्फ़ार पर ऐसे सख़्त थे) जैसा कि शेर शिकार पर और सहाबए किराम (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) का तशद्दुद कुफ़्फ़ार के साथ इस हद पर था कि वोह लिहाज़ रखते थे कि इन का बदन किसी काफ़िर के बदन से न छू जाए और इन के कपड़े से किसी काफ़िर का कपड़ा न लगने पाए। और एक दूसरे पर महब्बत व मेहरबानी करने वाले ऐसे कि जैसे बाप बेटे में हो और येह महब्बत इस हद तक पहुंच गई कि जब एक मोमिन दूसरे मोमिन को देखे तो फ़र्ते महब्बत से मुसा-फ़हा व मुआ़-नक़ा करे।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 26, सू-रतुल फ़त्ह, तह़तल आयह : 29, स. 946)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा कि जैसे नरमी करना अख़्लाक़े ह़-सना में से है इसी तरह बा'ज़ अवक़ात सख़्ती बरत्ना भी अख़्लाक़े ह़-सना में शामिल है।

बाक़ी रहा इस फ़रमाने आ़ली का मफ़्हूम तो ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली बिन सुल्तान मुहम्मद क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی इस की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं : या'नी तमाम मुआ़-मलात में जहां जहां मुम्किन हो (या'नी जहां जहां शरीअ़त ने नरमी की इजाज़त दी हो वहां) **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** नरमी को पसन्द फ़रमाता है। (مرقاۃ المفاتیح، کتاب الاداب، باب السلام، ۸/۴۶۲، الحدیث: ۴۶۳۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ग़ीबत की नुहूसत

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा : "आप को सफ़िय्या (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) से येह है कि वोह ऐसी ऐसी है या'नी पस्ता क़द ।" तो फ़रमाया : "तुम ने ऐसी बात कही है कि अगर इस को समुन्दर के पानी से मिला दिया जाए तो उसे रंगीन कर दे ।"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی الغیبۃ، ص٧٦٤، الحدیث:٤٨٧٥)

शारेहे मिश्कात हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : (इस से मुराद येह है कि) जनाबे सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ने अपना बालिश्त दिखा कर फ़रमाया कि सफ़िय्या (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) इतनी बड़ी हैं या'नी मेरे बालिश्त की बराबर । येह अर्ज़ व मा'रूज़ उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या बिन्ते हुय्य (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) के पसे पुश्त हुई इस लिये इसे ग़ीबत कहा गया । मा'लूम हुवा कि ग़ीबत इशारे से भी हो जाती है । (ज़िक्र कर्दा फ़रमाने मुस्तफ़ा से मुराद येह है कि) ब ज़ाहिर येह बात छोटी सी मा'लूम होती है मगर इतनी बड़ी है कि अगर इस रंगत को पुड़िया की शक्ल दे दी जावे और इसे समुन्दर में घोल दिया जावे तो सारे समुन्दर को रंगीन कर दे तो येह तुम्हारे दिल को यक़ीनन गदला कर देगी तुम्हारे नेक आ'माल का रंग भी बिगाड़ देगी इस से तौबा करो और आयिन्दा कभी किसी की ग़ीबत न करो । इस हदीस से दो मस्अले मा'लूम हुए, **एक** येह कि हज़राते सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان गुनाहों से मा'सूम नहीं, मा'सूम या फ़िरिश्ते हैं या हज़राते अम्बियाए किराम, येह हज़रात आदिल हैं कि गुनाह पर जमते नहीं, तौबा कर लेते हैं । **दूसरे** येह कि ग़ीबत हक़्क़ुल अब्द जब है जब कि इस की ख़बर उस को पहुंच जावे जिस की ग़ीबत की गई वरना **हक़्क़ुल्लाह** है कि तौबा से मुआफ़ हो जाती है । देखो ! हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को जनाबे सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मुआफ़ी मांगने का हुक्म न दिया । (مرٰاۃ المناجیح، کتاب الاداب، باب حفظ اللسان والغیبۃ والشتم، ۶/۴۷۲)

इशारे से भी ग़ीबत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस से मा'लूम हुवा कि ग़ीबत सिर्फ़ ज़बान से ही नहीं होती बल्कि इशारे किनाए से भी हो सकती है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअत"** जिल्द सिवुम, सफ़हा 536 पर सदरुश्शरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद

www.dawateislami.net

अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इर्शाद फ़रमाते हैं : "ग़ीबत जिस त़रह़ ज़बान से होती है फ़े'ल से भी होती है। सराह़त के साथ बुराई की जाए या ता'रीज़ व किनाया के साथ हो सब सूरतें ह़राम हैं, बुराई को जिस नोइय्यत से समझाएगा सब ग़ीबत में दाख़िल है। ता'रीज़ की येह सूरत है कि किसी के ज़िक्र करते वक़्त येह कहा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ऐसा नहीं जिस का येह मत़लब हुवा कि वोह ऐसा है किसी की बुराई लिख दी येह भी ग़ीबत है, सर वग़ैरा की ह़-र-कत भी ग़ीबत हो सकती है म-सलन किसी की ख़ूबियों का तज़्किरा था उस ने सर के इशारे से येह बताना चाहा कि उस में जो कुछ बुराइयां हैं उन से तुम वाक़िफ़ नहीं, होंटों और आंखों और भवों और ज़बान या हाथ के इशारे से भी ग़ीबत हो सकती है। एक ह़दीस में है : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : एक औरत हमारे पास आई, जब वोह चली गई तो मैं ने हाथ के इशारे से बताया कि वोह ठिगनी है। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया कि "तुम ने उस की ग़ीबत की।" (الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحضر والاباحة، فصل فی البیع، ٦٧٦/٩)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ीबत की तबाह कारियां बहुत ज़ियादा हैं **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **505** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"ग़ीबत की तबाह कारियां"** सफ़्ह़ा **26** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **ग़ीबत की तबाह कारियां** ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं : "बहुत सारे परहेज़ गार नज़र आने वाले लोग भी बिला तकल्लुफ़ ग़ीबत सुनते, सुनाते, मुस्कुराते और ताईद में सर हिलाते नज़र आते हैं, चूंकि ग़ीबत बहुत ज़ियादा आ़म है इस लिये उ़मूमन किसी की इस त़रफ़ तवज्जोह ही नहीं होती कि ग़ीबत करने वाला नेक परहेज़ गार नहीं बल्कि फ़ासिक़ व गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार होता है।"

क़ुरआन व ह़दीस और अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين से मुन्तख़ब कर्दा **"ग़ीबत की 20 तबाह कारियों"** पर एक सर-सरी नज़र डालिये, **शायद !** ख़ाइफ़ीन के बदन में झुरझुरी की लहर दौड़ जाए ! जिगर थाम कर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

❁ ग़ीबत ईमान को काट कर रख देती है ❁ ग़ीबत बुरे ख़ातिमे का सबब है ❁ ब कसरत ग़ीबत करने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती ❁ ग़ीबत से नमाज़ रोज़े की नूरानिय्यत चली जाती है ❁ ग़ीबत से नेकियां बरबाद होती हैं ❁ ग़ीबत नेकियां जला देती है ❁ ग़ीबत करने वाला तौबा कर भी ले तब भी सब से आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा, अल ग़रज़ ग़ीबत गुनाहे कबीरा, क़त़्ई ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ❁ ग़ीबत ज़िना से सख़्त तर है ❁ मुसल्मान की ग़ीबत करने वाला सूद से भी बड़े गुनाह में गिरिफ़्तार है ❁ ग़ीबत को अगर समुन्दर में डाल

www.dawateislami.net

दिया जाए तो सारा समुन्दर बदबूदार हो जाए ❁ ग़ीबत करने वाले को जहन्नम में मुर्दार खाना पड़ेगा ❁ ग़ीबत मुर्दा भाई का गोश्त खाने के मु-तरादिफ़ है ❁ ग़ीबत करने वाला अ़ज़ाबे क़ब्र में गिरिफ़्तार होगा ❁ ग़ीबत करने वाला तांबे के नाखुनों से अपने चेहरे और सीने को बार बार छील रहा था ❁ ग़ीबत करने वाले को उस के पहलूओं से गोश्त काट काट कर खिलाया जा रहा था ❁ ग़ीबत करने वाला क़ियामत में कुत्ते की शक्ल में उठेगा ❁ ग़ीबत करने वाला जहन्नम का बन्दर होगा ❁ ग़ीबत करने वाले को दोज़ख़ में खुद अपना ही गोश्त खाना पड़ेगा ❁ ग़ीबत करने वाला जहन्नम के खौलते हुए पानी और आग के दरमियान मौत मांगता दौड़ रहा होगा और उस से जहन्नमी भी बेज़ार होंगे ❁ ग़ीबत करने वाला सब से पहले जहन्नम में जाएगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُالله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हमेशा जन्नत का दरवाज़ा खट-खटाती रहो

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को भूक की ता'लीम देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "हमेशा जन्नत का दरवाज़ा खट-खटाती रहो।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "किस चीज़ के साथ ?" इर्शाद फ़रमाया : "भूक के साथ।" (لُبَابُ الْاَحْيَاء، الباب السادس فی اسرار الصیام، ص۷۸)

भूक के फ़वाइद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पेट भर कर खाना खाना जाइज़ है लेकिन अपने पेट को ह़राम और शुबुहात से बचाते हुए ह़लाल ग़िज़ा भी भूक से कम खाने में दीन व दुन्या के बे शुमार फ़वाइद हैं। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा **675** पर भूक के **10** फ़वाइद ज़िक्र किये गए हैं :

(1).... दिल की सफ़ाई (2).... रिक़्क़ते क़ल्बी (3).... मसाकीन की भूक का एह़सास (4).... आख़िरत की भूक व प्यास की याद (5).... गुनाहों की रग़बत में कमी (6).... नींद में कमी (7)...... इबादत में आसानी (8).... थोड़ी रोज़ी में किफ़ायत (9).... तन्दुरुस्ती (10).... बचा हुवा ख़ैरात करने का जज़्बा। (احیاء علوم الدین، کتاب کسر الشھوتین، بیان فوائد الجوع وآفات الشبع،۳/۱۰۵تا۱۱۰، مختصرًا)

www.dawateislami.net

बुज़ुर्गों का सरमाया

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين फ़रमाते हैं : "اَلْجُوْعُ رَأْسُ مَالِنَا" या'नी भूक हमारा बेहतरीन सरमाया है।" इस से मुराद येह है कि हमें जो वुस्अ़त, सलामती, इ़बादत, ह़लावत और इ़ल्मे नाफ़ेअ़ ह़ासिल होता है येह **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** के लिये भूक और इस पर सब्र करने के सबब ह़ासिल होता है।

(منهاج العابدين، العقبة الثالثةوهى عقبة العوائق، فصل فى رعاية الاعضاء الاربعة العين واللسان...الخ،ص٢٢٩)

भूक सरमाया बने मेरा ख़ुदाए ज़ुल जलाल !
अज़ तुफ़ैले मुस्त़फ़ा कर भूक से मुझ को निहाल

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 675)

याद रखिये ! जिस त़रह़ भूके रहने और भूक से कम खाना खाने के दीनी व दुन्यवी कसीर फ़वाइद हैं इसी त़रह़ इस के बर अ़क्स अगर ख़ूब शिकम सैर हो कर (या'नी पेट भर कर) खाना खाया जाए तो इस की भी कसीर आफ़ात हैं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِى शिकम सैरी की आफ़ात ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं : पेट भर कर खाने में **6** आफ़तें हैं :

(1)...... मुनाजात की ह़लावत से मह़रूमी (2)...... इ़ल्मो ह़िक्मत की ह़िफ़ाज़त में मुश्किलात (3)...... मख़्लूक़ पर शफ़्क़त से दूरी। क्यूं कि शिकम सैर समझता है सभी का पेट भरा हुवा है यूं मिस्कीनों और भूकों की हमदर्दी कम हो जाती है। (4)...... इ़बादत बोझ मह़सूस होने लगती है। (5)...... ख़्वाहिशात का हुजूम होता है और (6)...... नमाज़ी मसाजिद की त़रफ़ जा रहे होते हैं और ज़ियादा खाने वाले बैतुल ख़ला के चक्कर लगा रहे होते हैं।

(احياء العلوم، كتاب كسر الشهوتين ، بيان فوائد الجوع وافات الشبع، ١٠٨/٣)

शैत़ान की गुज़र गाहों को तंग करो

इन्ही फ़वाइद व नुक़्सानात के पेशे नज़र नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भूक को पसन्द फ़रमाया और इस की ताकीद भी फ़रमाई, चुनान्चे एक मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से इर्शाद फ़रमाया : "भूक से शैत़ान की गुज़र गाहों को तंग करो।"

(لباب الاحياء، الباب الثانى والعشرون فى رياضة النفس، بيان شروط الارادة، ص٢٠٠)

www.dawateislami.net

इसराफ़ से बचो......!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रोज़ाना **एक मर्तबा खाना सुन्नत** है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सुब्ह़ खाना खा लेते तो शाम को न खाते और अगर शाम को तनावुल फ़रमा लेते तो सुब्ह़ न खाते।

(حلیۃ الاولیاء، ذکر طبقۃ من تابعی المدینۃ، عطاء بن ابی رباح، ۳۷۰/۳، الحدیث:۴۳۰۹)

हमारे हां उ़मूमन दिन में तीन मर्तबा खाने का मा'मूल है अगर्चे येह गुनाह नहीं मगर सुन्नत भी नहीं। (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 655, 656, मुल्तक़ित़न)

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तो तक़्वा की ता'लीम देते हुए दिन में दो मर्तबा खाने से भी मन्अ़ फ़रमाया। चुनान्चे, एक दफ़्आ़ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इर्शाद फ़रमाया : **اِیَّاکِ وَالْاِسْرَافَ فَاِنَّ اَکْلَتَیْنِ فِیْ یَوْمٍ مِنَ السَّرَفِ** तरजमा : इसराफ़ से बचो, दिन में दो बार खाना इसराफ़ (ह़द से तजावुज़ करना) है।

(لباب الاحیاء، الباب الثالث والعشرون فی کسر الشھوتین، بیان طریق الریاضۃ فی کسر شھوۃ البطن، ص۲۰۶)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! नबिय्ये रह़मत, ताजदारे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शानो अ़-ज़मत पर हमारी जान क़ुरबान ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भूक से वालिहाना मह़ब्बत थी, **काश !** आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल करते हुए हमें भी भूका रहने और शिद्दते भूक के सबब सुन्नत की निय्यत से पेट पर पथ्थर बांधने की सआ़दत नसीब हो जाए।

आप भूके रहें और पेट पे पथ्थर बांधें
ने'मतों के दें हमें ख़्वान मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 306)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हंडिया में कद्दू ज़ियादा डालने की नसीह़त

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''जब तुम हांडी पकाओ तो उस में कद्दू ज़ियादा डालो क्यूं कि येह ग़मगीन दिल के लिये बाइसे तक़्वियत है।''** **(فیض القدیر شرح جامع الصغیر، حرف الکاف، باب کان، ۲۶۳/۵، تحت الحدیث:۶۹۹۴)**

www.dawateislami.net

सरकार का पसन्दीदा खाना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरकारे आली वक़ार, दो आलम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **"कद्दू शरीफ़"** बहुत पसन्द था। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی नक़्ल फ़रमाते हैं : नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कद्दू पसन्द फ़रमाते थे और इर्शाद फ़रमाते : "येह मेरे भाई यूनुस (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) का दरख़्त है।"

(فتح الباری شرح صحیح البخاری، کتاب الاطعمة، باب من تتبع حوالی القصعة...الخ، ۶۵۱/۹، تحت الحدیث:۵۳۷۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को फ़रमाते हुए सुना कि एक दरज़ी ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को खाने की दा'वत दी जो ख़ुद उस ने तय्यार की थी (ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा :) मैं भी रसूलूल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ गया (बारगाहे मुस्त़फ़ा में शोरबा पेश किया गया जिस में कद्दू और गोश्त के टुकड़े थे) मैं ने देखा रसूले अकरम, ताजदारे अ़-रबो अ़जम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **पियाले के इर्द गिर्द से कद्दू तलाश किया।** ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **"उस दिन स मैं ने कद्दू को पसन्द करना शुरूअ़ कर दिया।"**

(صحیح البخاری ،کتاب الاطعمة ، باب من تتبع حوالی القصعة مع صاحبه ...الخ ، ص۱۳۷۹، الحدیث:۵۳۷۹)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का नबिय्ये रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत का कैसा निराला अन्दाज़ था कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मह़बूब अश्या को भी मह़बूब जानते और दूसरों को भी इन से मह़ब्बत की तरग़ीब दिलाते थे।

कद्दू शरीफ़ के चन्द त़िब्बी फ़वाइद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! त़िब्बी ए'तिबार से भी कद्दू को इस्ति'माल करने के बहुत फ़वाइद हैं, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़बूआ़ **47** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल तह़रीरी म-दनी मुज़ा-करे **"वुज़ू के बारे में वस्वसे और उन का इलाज"** सफ़ह़ा **43** पर मन्क़ूल है : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान सफ़्फ़ौरी शाफ़ेई़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **नुज़्हतुन्नुफ़ूसि वल अफ़्कार** में है कि इस के तर पत्तों से कुल्ली की जाए तो सर दर्द ह़ार (गर्म) के लिये नाफ़ेअ़ है। अगर इसे ख़ुश्क कर के जलाया जाए और सिर्के में

www.dawateislami.net

मिला कर बरस (सफ़ेद कोढ़) पर लगाया जाए तो उसे दूर कर देता है। अगर सिर्के के साथ मिला कर ककड़ी की त़रह़ इस का शोरबा बनाया जाए तो बुख़ार में मुफ़ीद है, इस का रोग़न (तेल) बारिद, रत़ब (ठन्डा और तर) है। इसी त़रह़ माले ख़ोलिया (पागल पन) और बरसाम (सीने का दर्द या छाती की सूजन) के लिये भी फ़ाएदा मन्द है। अगर थोड़ा सा सिर्का मिला कर ख़्वाह सर में मला जाए या नाक में टपकाया जाए और दर्दे सर ह़ार को पीने और नाक में टपकाने से नफ़्अ़ होता है और बदन की हर क़िस्म की गरमी के लिये नफ़्अ़ बख़्श है।"

तरकीब : कद्दू को छील कर उस का अ़रक़ निचोड़ लिया जाए, चार ह़िस्सा येह अ़रक़ और एक ह़िस्सा मीठा तेल मिला कर नर्म आंच पर पकाया जाए। (نزهة المجالس، باب فی العدل، ۱۳۹/۲)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गोश्त वग़ैरा पकाते वक़्त उस में चन्द क़तले कद्दू शरीफ़ के डालने की आ़दत बना लेनी चाहिये। क़तले बहुत छोटे छोटे डालें या पीस कर डालें, बड़े क़तले डालने में भी मुज़ा-यक़ा नहीं। गोश्त के साथ कद्दू शरीफ़ पकाने में एक ख़ूबी येह भी है कि इस की ठन्डक, गोश्त की गरमी को दूर कर के इस को मो'तदिल कर देती है। कद्दू शरीफ़ वग़ैरा छिलके समेत पकाएं।

क़ुरआने पाक में कद्दू शरीफ़ का ज़िक्र

कद्दू शरीफ़ का ज़िक्र क़ुरआने मजीद में भी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह **23**, **सू-रतुस्साफ़्फ़ात**, आयत **146** में इर्शाद फ़रमाता है :

وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ (پ۲۳، الصّٰفّٰت:۱۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उस पर कद्दू का पेड़ उगाया।

अ़जीब मो'जिज़ा

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى अपनी तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "जब ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मछली के पेट से बाहर **80** रोज़ या **3** रोज या **7** रोज़ या **40** रोज़ बा'द मैदान पर तशरीफ़ लाए तो मछली के पेट में रहने के बाइ़स आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ऐसे नह़ीफ़ व ज़ईफ़ और नाज़ुक हो गए जैसा बच्चा पैदाइश के वक़्त होता है। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के जिस्म की खाल नर्म हो गई थी और बदन पर कोई बाल बाक़ी न रहा था, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने साया करने मख्खियों से मह़फ़ूज़ रखने के लिये आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर कद्दू शरीफ़ का पेड़ उगा दिया ह़ालां कि कद्दू की बेल होती है जो ज़मीन पर फैलती है मगर येह आप

www.dawateislami.net

عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा था कि येह कद्दू का दरख़्त क़द वाले दरख़्तों की त़रह़ शाख़ रखता था और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उस के बड़े बड़े पत्तों के नीचे आराम फ़रमाते थे, ब हुक्मे इलाही रोज़ाना एक बकरी आती और अपना थन ह़ज़रत के दहाने मुबारक में दे कर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को सुब्ह़ व शाम दूध पिला जाती यहां तक कि जिस्मे मुबारक की जिल्द शरीफ़ या'नी खाल मज़्बूत़ हुई और अपने मौक़अ़ से बाल जमे और जिस्म में तुवानाई आई।"

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 23, सू-रतुस्साफ़्फ़ात, तह़्तल आयह : 146, स. 835)

अच्छी चीज़ का एह़तिराम करो

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मकाने आलीशान में तशरीफ़ लाए, रोटी का टुकड़ा पड़ा हुवा देखा, उस को ले कर पोंछा फिर खा लिया और फ़रमाया : "ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)! **इ़ज़्ज़त दार (अच्छी) चीज़ का एह़तिराम करो कि येह चीज़ (या'नी रोटी) जब किसी क़ौम से भागी है तो लौट कर नहीं आई।"** **(سنن ابن ماجه، كتاب الاطعمة، باب النهى عن القاء الطعام، ص٥٤٠، الحديث:٣٣٥٣)**

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रोटी के गिरे हुए टुकड़े उठा कर खाना हु़ज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत है, जैसा कि आप ने इस ह़दीस शरीफ़ में मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रोटी का गिरा हुवा टुकड़ा उठा कर साफ़ कर के तनावुल फ़रमाया और फिर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को इस का एह़तिराम करने की नसीह़त फ़रमाई। खाने के गिरे हुए अज्ज़ा उठा कर खाने के बहुत फ़ज़ाइल हैं, इस ज़िम्न में **3** फ़ज़ाइल मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

"नबी" के तीन हु़रूफ़ की निस्बत से गिरे हुए दाने खा लेने के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 3 फ़रामीन

﴾1﴿...... खाने के दौरान अगर कोई दाना या लुक़्मा वग़ैरा गिर जाए तो उठा कर पोंछ कर खा लीजिये कि मग़्फ़िरत की बिशारत है। ह़दीसे पाक में है : **जो दस्तर ख़्वान से गिरी हुई चीज़ उठा कर खा ले उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी।** **(الجامع الصّغير، حرف الهمزة، ص٨٨، الحديث:١٤٢٦)**

﴾2﴿...... ह़दीसे पाक में है : **जो खाने के गिरे हुए टुकड़े उठा कर खाए वोह फ़राख़ी (या'नी ख़ुशह़ाली) की ज़िन्दगी गुज़ारता है और उस की औलाद और औलाद की औलाद में कम अ़क़्ली से ह़िफ़ाज़त रहती है।**

(كنز العمّال، كتاب المعيشة والعادات، الفصل الاوّل فى آداب الاكل، الجزء١٥، ١١١/٨، الحديث:٤٠٨١٥)

www.dawateislami.net

﴾3﴿...... **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल फ़रमाते हैं : रोटी के टुकड़ों और रेज़ों को चुन लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ुशह़ाली नसीब होगी । बच्चे सह़ीह़ो सलामत और बे ऐ़ब होंगे और वोह टुकड़े हूरों का ह़क़ मेह्‌र बनेंगे ।
(کیمیائے سعادت، رکنِ دوم در معاملات، اصل اوّل، اما آداب بعد از طعام آنست، ص ۱۰٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़कात अदा न करने का गुनाह

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! फ़र्ज़ होने के बा वुजूद ज़कात अदा न करना भी जहन्नम में दाख़िले का एक सबब है जैसा कि मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के हाथ में चांदी की बड़ी बड़ी अंगूठियां देखीं तो दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ आ़इशा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) ! येह क्या है ? (सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं :) मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने येह इस लिये बनवाई हैं ताकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये बनाव सिंघार करूं । तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम इस की ज़कात अदा करती हो ? (सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने फ़रमाया) मैं ने अ़र्ज़ की : ''नहीं ।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह तुम्हें जहन्नम के लिये काफ़ी हैं ।''
(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب الکنز ما هو وزکاۃ الحلی، ص ۲٥٤، الحدیث: ۱٥٦٥)

ज़ेवरात पर भी ज़कात है

इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि औ़रतों के ज़ेवरात पर भी ज़कात फ़र्ज़ है, बा'ज़ औ़रतें समझती हैं कि इस्ति'माल वाले ज़ेवरात पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं वोह भी ग़ौर कर लें कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने जो अंगूठियां पहनी हुई थीं सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की भी ज़कात देने का हुक्म फ़रमाया, पता चला कि ज़ेवरात ख़्वाह इस्ति'माल के हों ख़्वाह वैसे ही पड़े हुए हों शराइत़ पाए जाने की सूरत में बहर ह़ाल ज़कात फ़र्ज़ होगी, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1250** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **903** पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : ''सोना चांदी जब कि ब क़दरे निसाब हों तो उन की ज़कात चालीसवां ह़िस्सा है ख़्वाह वैसे ही हों या इन के सिक्के जैसे रुपै अशरफ़ियां या इन की कोई चीज़

www.dawateislami.net

बनी हुई ख़्वाह उस का इस्ति'माल जाइज़ हो जैसे औ़रत के लिये ज़ेवर।"

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आग से बचो अगर्चे खजूर के बा'ज़ हिस्से के ज़रीए़ हो !

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को स-दके़ की तरग़ीब दिलाते हुए इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! अपने आप को आग से बचाओ अगर्चे एक खजूर के बा'ज़ हिस्से के ज़रीए़ से और येह भूके पेट में इतनी जगह घेरती है जितनी कि शिकम सैर के।"

(مسند احمد، مسند عائشة رضی اللّٰه عنها، ۱۰/۱۳۸، الحدیث:۲۵۲۳٦)

स-दक़ा बुरी मौत से बचाता है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जहन्नम से बचाने और जन्नत में ले जाने वाले आ'माल में से एक अ़मल स-दक़ा भी है येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को बुझाता और बुरी मौत से बचाता और जन्नत में दाख़िले का सबब है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : स-दक़ा खु़दा عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को बुझा देता और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है।

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، کتاب الزکاة، باب ماجاء فی فضل الصدقة، ص۱۸۹، الحدیث:٦٦٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो मुसल्मान किसी नंगे मुसल्मान को कपड़ा पहना दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को जन्नत का सब्ज़ लिबास पहनाएगा और जो मुसल्मान किसी भूके मुसल्मान को खाना खिलाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को जन्नत के फल खिलाएगा और जो मुसल्मान किसी प्यासे मुसल्मान को पानी पिलाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को मोहर वाली पाक व साफ़ शराब पिलाएगा।"

(سُنَن ابی داؤد، کتاب الزکاة، باب فی فضل سقی الماء، ص ۲۷٤، الحدیث:۱٦۸۲)

गिन गिन कर स-दक़ा करने की मुमा-न-अ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अबी उमामा सह्ल बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हम और मुहाजिरीन व अन्सार का एक गुरौह मस्जिद में बैठे हुए थे तो हम ने एक शख़्स को ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास इजाज़त लेने के लिये भेजा फिर हम आप

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास हाज़िर हुए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : एक मर्तबा मेरे पास एक साइल आया उस वक़्त **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी मेरे पास मौजूद थे मैं ने उस साइल को कोई शै देने के लिये कहा फिर मैं ने उस शै को त़लब किया और उस को देखा तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम येह चाहती हो कि तुम्हारे घर से कोई भी चीज़ तुम्हारे इ़ल्म के बिग़ैर न तो घर में दाख़िल हो और न ही ख़ारिज हो ? फ़रमाती हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **مَهْلًا**, ठहरो, ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! गिन गिन कर न दो वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी बिला ह़िसाब न देगा ।

(سنن النسائی، کتاب الزکاۃ، باب الاحصاء فی الصدقۃ،ص٤١٩، الحدیث:٢٥٤٦)

उम्मुल मुअमिनीन को दीनार स-दक़ा करने का हुक्म दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **सात** दीनार उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास रखवाए थे, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मरज़ लाह़िक़ हुवा तो इर्शाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! येह दीनार ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के पास ले जाओ । फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ग़शी त़ारी हो गई और इसी ह़ालत ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मश्ग़ूल कर दिया, (हर बार इफ़ाक़ा मह़सूस होने पर) हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें येही हुक्म फ़रमाते और हर बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ग़शी त़ारी हो जाती और येह ह़ालत ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मश्ग़ूल कर देती ह़त्ता कि रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह दीनार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की त़रफ़ भेज ही दिये, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने दीनार स-दक़ा कर दिये । पीर की रात हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मौत की सख़्ती में गुज़ारी और (चराग़ जलाने के लिये) उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने किसी को चराग़ दे कर आस पास की औ़रतों में किसी औ़रत की त़रफ़ पैग़ाम भेजा कि अपने घी के बरतन में से थोड़ा सा घी हदिय्यतन हमारे चराग़ में डाल दीजिये क्यूं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आ़लमे नज़्अ़ में हैं ।

(المعجم الکبیر، سہل بن سعد، یعقوب بن عبد الرَّحمٰن الزہری، ٣/٥٣٥، الحدیث:٥٨٥٧)

www.dawateislami.net

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं इन के ख़ाली हाथ में

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 103)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

किन चीज़ों से मन्अ़ करना जाइज़ नहीं

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन सी चीज़ है जिस से मन्अ़ करना जाइज़ नहीं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "पानी, नमक और आग।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि फिर मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस पानी से न रोकने की ह़िक्मत तो हम समझ गए नमक और आग में क्या ह़िक्मत है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ हुमैरा (बारगाहे रिसालत से अ़ता फ़रमाया गया लक़ब) ! जिस ने किसी को आग दी गोया उस ने उस आग में पकने वाला तमाम खाना स-दक़ा किया और जिस ने किसी को नमक दिया गोया उस ने उस नमक से (ज़ाएक़े दार) बनने वाला तमाम खाना स-दक़ा किया और जिस ने किसी मुसल्मान को ऐसी जगह पानी का घूंट पिलाया जहां पानी मौजूद था तो गोया उस ने एक ग़ुलाम आज़ाद किया और जिस ने किसी मुसल्मान को ऐसी जगह पानी पिलाया जहां पानी मौजूद न था तो गोया उस ने उसे ज़िन्दा कर दिया।"

(سنن ابن ماجه ، كتاب الرهون ، باب المسلمون شركاء فی ثلاث، ص٣٩٦، الحديث:٢٤٧٤)

पड़ोसी के बच्चों का ख़याल

एक मर्तबा ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को एक दूसरे से मह़ब्बत बढ़ाने का दर्स देते हुए इर्शाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! पड़ोसी का बच्चा आ जाए तो उस के हाथ में कुछ रख दो कि इस से मह़ब्बत बढ़ेगी। (جمع الجوامع، حرف الياء، ٩/١٦٦، الحديث:٢٧٩٦٥)

पड़ोसी के ह़ुक़ूक़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपने पड़ोसियों के साथ ह़ुस्ने अख़्लाक़ से पेश आना और इन के ह़ुक़ूक़ अदा करना भी **जन्नत** में ले जाने वाला अ़मल है, अह़ादीस में इस की बहुत ताकीद आई है एक जगह शहन्शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो वोह अपने पड़ोसी को तक्लीफ़ न दे।" (صحيح البخاری، كتاب الادب ، باب من كان يؤمن بالله واليوم الاخر فلا يؤذ جاره، ص١٥٠٠، الحديث:٦٠١٨)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम्हें मा'लूम है कि पड़ोसी का क्या ह़क़ है ? (1)...... अगर तुम से मदद मांगे तो उस की मदद करो (2)...... अगर तुम से क़र्ज़ मांगे तो क़र्ज़ दो (3)...... अगर वोह ग़रीब हो तो उस का ख़याल रखो (4)...... बीमार हो तो उस की इ़यादत करो (5)...... मर जाए तो जनाज़े के साथ जाओ (6)...... अगर उसे भलाई पहुंचे तो उस में ख़ुश हो (7)...... उसे मुसीबत पहुंचने पर उस की ता'ज़ियत करो (8)...... अपना मकान इतना ऊंचा न बनाओ कि उस की हवा रोक दो, मगर उस की इजाज़त से (9)...... अगर फल ख़रीद कर लाओ तो उसे हदिय्यतन भेजो, न भेज सको तो ख़ुफ़्या तौर पर फल लाओ। तुम्हारे बच्चे फल ले कर बाहर न निकलें ताकि पड़ोसी के बच्चे इस से नाराज़ न हों (10)...... अपनी हांडी के ग़ुबार से उस को तक्लीफ़ न दो या उस में से उसे कुछ दे दो। क्या तुम जानते हो पड़ोसी का क्या ह़क़ है ? क़सम उस की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है ! पड़ोसी के हुक़ूक़ वोही अदा कर सकता है जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़्म फ़रमाए।"

(مکارم الاخلاق، جماع ابواب الطرائق المحمودۃ والاخلاق المرضیۃ، باب ما جاء فی حفظ الجار وحسن مجاورتہ من الفضل، الجزء الثانی، ۱/۴۳۸، الحدیث: ۲۵۰، ملتقطًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सफ़रे मदीना की सआ़दत मिल गई

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इ़ल्मे दीन की ब-र-कतें लूटने नीज़ अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करने का म-दनी ज़ेह्न पाने के लिये आप भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल से मुन्सलिक हो जाइये اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **दा'वते इस्लामी** के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** की भी क्या ख़ूब बहारें हैं कि इन में की जाने वाली दुआ़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से क़बूल फ़रमाता है। चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) के शह्र कहरोड़ पका की एक इस्लामी बहन (उ़म्र तक़रीबन **55** साल) के बयान का ख़ुलासा है कि मैं **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में पाबन्दी से ह़ाज़िरी से मह़रूम थी। **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाआ़त में क़बूले दुआ़ के वाक़िआ़त अगर्चे सुन रखे थे मगर मेरा ए'तिक़ाद यूं मज़ीद पुख़्ता हुवा कि मैं **3** साल तक सफ़रे मदीना के लिये फ़ॉर्म जम्अ़ करवाती रही लेकिन ह़ाज़िरी की कोई सूरत न बन पाई। अब की बार फ़ोर्म जम्अ़ करवाया तो मैं ने यूं दुआ़ मांगी **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** मैं **दा'वते इस्लामी** के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में मुसलसल **12** हफ़्ते अव्वल ता आख़िर शिर्कत करूंगी, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे सफ़रे मदीना की सआ़दत से नवाज़ दे।

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! अभी **12** हफ़्ते पूरे न हुए थे कि मुझ पर बाबे करम खुल गया और मुझे मदीने का बुलावा आ गया, मैं ख़ुशी ख़ुशी सफ़रे मदीना पर रवाना हो गई। हाज़िरिये मदीना से वापसी पर मैं ने **12 हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में अव्वल ता आख़िर शिर्कत की निय्यत पर अ़मल भी किया। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ता दमे तह़रीर हर हफ़्ते पाबन्दी से **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की सआ़दत पाती हूं। (इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 280)

हम ग़रीबों को रौज़े पे बुलवाइये

राहे त़यबा का ज़ादे सफ़र चाहिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 289)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

✪===✪===✪===✪===✪===✪

घरेलू झगड़ों का इलाज

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हर शख़्स घर में दाख़िल होते वक़्त पूरी بِسۡمِ اللّٰہ (या'नी بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم) पढ़ कर दाहना क़दम पहले दरवाज़े में दाख़िल करे, फिर घर वालों को **सलाम** करता हुवा घर में आए, अगर (घर में) कोई न हो तो **اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ** कह दे। बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया कि अव्वल दिन में जब पहली बार दाख़िल होते तो بِسۡمِ اللّٰہ और قُلۡ ھُوَ اللّٰہ पढ़ लेते हैं कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है (या'नी झगड़ा नहीं होता) और रिज़्क़ में **ब-र-कत** भी। **(مِراۃ المناجیح، کتاب الاطعمۃ، الفصل الاوّل، ۹/۶)**

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾10﴿...... महबूबए महबूबे ख़ुदा

रहमतों की बरसात

शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, महबूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा कमाल है : जब लोग एक मजलिस में जम्अ़ हो कर मुझ पर दुरूद पढ़ते हैं तो आस्मानों से फ़िरिश्ते उस मजलिस के इर्द गिर्द जम्अ़ हो जाते हैं उन के हाथों में चांदी की क़लमें होती हैं वोह हर एक के मुंह से कहा हुवा दुरूद लिखते जाते हैं साथ ही वोह अहले मजलिस को ज़ियादा से ज़ियादा दुरूद पढ़ने की तल्क़ीन भी करते जाते हैं जूंही मजलिस ख़त्म होती है वोह आस्मानों की त़रफ़ परवाज़ कर जाते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की बारिशें अहले मजलिस पर बरसती हैं जब तक येह लोग दुन्यवी बात न करें उस वक़्त तक उन की दुआ़ क़बूल होती रहती है।

(शिफ़ाउल क़ुलूब (मुतर्जम), स. 181)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़बीबए ह़बीबे ख़ुदा

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़बीबए **रसूलुल्लाह** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हैं। (اَلْاِصَابَۃ فی تمییز الصحابۃ، کتاب النساء، حرف العین المھملۃ، عائشۃ بنت ابی بکر، ۲۰۹/۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़रीब बिन हुमैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बारे में बदगोई की तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ओ गाली दिये हुए बदकार ! ख़ामोश रह, क्या तू **अल्लाह** के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़बीबा पर बदगोई करता है ? वोह तो **जन्नत** में भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजा हैं। (حِلْیَۃُ الْاَوْلِیَاء، عائشۃ زوج رسول اللہ، ۵۵/۲، الرقم:۱۴۶۰)

www.dawateislami.net

हबीबए हबीबे ख़ुदा की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : आइशा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की फ़ज़ीलत (तमाम) औरतों पर ऐसी है कि जैसे सरीद की फ़ज़ीलत (तमाम) खानों पर है।

(مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ما ذکر فی عائشة، ۵۲۷/۷، الحدیث:۲)

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुहम्मद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि महबूबए महबूबे ख़ुदा हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे अज़्वाजे मुतहहरात पर **10** वुजूहात की बदौलत फ़ज़ीलत हासिल है। पूछा गया : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! वोह (**10** वुजूहात) क्या हैं ? फ़रमाया : **(1)......** नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सिवा किसी कुंवारी औरत से निकाह नहीं किया **(2)......** मेरे सिवा किसी ऐसी ख़ातून से निकाह नहीं किया कि जिस के मां बाप दोनों मुहाजिर हों **(3)...... अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आस्मान से मेरी बराअत उतारी **(4)......** आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास हज़रते जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) आस्मान से एक रेशमी कपड़े में मेरी तस्वीर लाए और फ़रमाया : इन से निकाह कर लीजिये येह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अहलिया हैं **(5)......** मैं और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक ही बरतन से नहाया करते थे और मेरे सिवा अपनी किसी और बीवी के साथ येह (अमल) नहीं किया करते थे। **(6)......** हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ रहे होते थे और मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे सोई रहती थी। उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में से कोई भी हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस करीमाना महब्बत से सरफ़राज़ नहीं हुई। **(7)......** आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे साथ होते तो वह्य आ जाया करती थी और अगर किसी और बीवी के साथ होते तो वह्य नहीं आया करती थी **(8)......** आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात मेरे गले और सीने के दरमियान हुई **(9)......** आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस रात फ़ौत हुए जिस में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए थे **(10)......** आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे हुजरे में दफ़्न हुए। (الطبقات الکبرٰی لابن سعد، ذکر ازواج رسول اللہ، باب عائشہ ۶۳/۱۰۰)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से किस क़दर महब्बत थी कि महब्बत की वज्ह से आप इन को तमाम औरतों पर फ़ज़ीलत देते हैं और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ एक ही बरतन में इकट्ठे गुस्ल फ़रमाना आप की वफ़ात का हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के हुजरे में इन के गले और सीने के दरमियान होना येह सब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से बे पनाह महब्बत का नतीजा है।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यि-दतुना आइशा को जिब्रीले अमीन का सलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू स-लमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत करते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने उन्हें बताया कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से इर्शाद फ़रमाया : जिब्राईल (عَلَیۡہِ السَّلَام) तुम्हें सलाम कह रहे हैं। तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ने وَعَلَیۡہِ السَّلَامُ وَرَحۡمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ कहा। **(مصنف ابن ابی شیبة ، کتاب الفضائل ، ما ذکر فی عائشة، ٥٢٩/٧ ، الحدیث: ١٢)**

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि **नबिय्ये करीम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ! येह जिब्राईल (عَلَیۡہِ السَّلَام) तुम्हें सलाम कह रहे हैं। फ़रमाती हैं : मैं ने कहा : **وَعَلَیۡہِ السَّلَام وَرَحۡمَۃُ اللّٰہ** या'नी उन पर भी सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो। और अ़र्ज़ की : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह देखते हैं जो मैं नहीं देख पाती। **(صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب فی فضائل عائشة، ص٩٥٢ ، الحدیث: ٢٤٤٧)**

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی **"मिरआतुल मनाजीह़"** में इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते जिब्राईल (عَلَیۡہِ السَّلَام) को देखते थे और बा वुजूद येह कि ह़ज़रते जिब्राईल (عَلَیۡہِ السَّلَام) मेरे घर में बल्कि मेरे बिस्तर में मेरे पास ही हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आते थे मगर मैं उन्हें न देखती थी नूर को देखने के लिये नूर की आंखें चाहिएं। इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि जब कोई किसी का सलाम पहुंचाए तो अगर्चे येह कहना अफ़्ज़ल है कि **عَلَیۡکَ وَعَلَیۡہِ السَّلَام** मगर येह कहना भी दुरुस्त है **وَعَلَیۡہِ السَّلَام**।

(مرآۃ المناجیح، کتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبی، ٨/٤٩٧)

इन के बिस्तर में वह़ी आए रसूलुल्लाह पर
और सलामे ख़ादिमाना भी करें रूहुल अमीं

(दीवाने सालिक अज़ ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی, स. 31)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नूरानिय्यते मुस्तफ़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस रिवायत से हमें इस बात का इ़ल्म होता है कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नूर भी हैं, **आइये !** अब नूरानिय्यते मुस्त़फ़ा के बारे में जानती हैं, चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ﴿۴۵﴾ وَّ دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿۴۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب: ۴۵، ۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िर नाज़िर और ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता और **अल्लाह** की त़रफ़ उस के हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आफ़्ताब ।

क़ुरआन शरीफ़ ने सूरज को भी दूसरी जगह سِرَاجًا مُّنِيْرًا फ़रमाया है क्यूं कि वोह चमक्ता भी है और चमकाता भी है और चांद तारे वग़ैरा को नूर भी बनाता है कि वोह सब सूरज ही से जग-मगाते हैं इसी त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी سِرَاجًا مُّنِيْرًا फ़रमाया कि हुज़ूर ख़ुद चमक रहे हैं और सह़ाबए किराम व औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن को नूर बना रहे हैं कि वोह सब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही से जगमगा रहे हैं ।

एक जगह इर्शाद फ़रमाया :

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ اللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸﴾ (پ۲۸، الصّف: ۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : चाहते हैं कि **अल्लाह** का नूर अपने मूंहों से बुझा दें और **अल्लाह** को अपना नूर पूरा करना, पड़े बुरा मानें काफ़िर ।

एक दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया :

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ يَاْبَى اللّٰهُ اِلَّاۤ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ (پ۱۰، التوبة: ۳۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : चाहते हैं कि **अल्लाह** का नूर अपने मुंह से बुझा दें और **अल्लाह** न मानेगा मगर अपने नूर का पूरा करना ।

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ (پ۶، المائدة: ۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से एक नूर आया और रोशन किताब ।

www.dawateislami.net

''قَدۡ جَآءَكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ نُوۡرٌ'' की तफ़्सीर

जम्हूर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस आयते मुबा-रका में मज़्कूर लफ़्ज़े नूर से हुज़ूर की ज़ात मुराद ली है, चुनान्चे **तफ़्सीरे जलालैन** शरीफ़ में इस आयते मुबा-रका ﴿ قَدۡ جَآءَكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ نُوۡرٌ ﴾ के तहत फ़रमाया : **هُوَالنَّبِيُّ صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** वोह नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।

(تفسير جلالين، سورة المائدة، تحت الآية:١٥، ص٩٧)

हि़स्सी व मा'नवी नूरे न-बवी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हि़स्सी व मा'नवी तौ़र पर नूर बनाया, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना आ़रिफ़ **बिल्लाह** अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद सावी मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى **''तफ़्सीरे जलालैन''** के ह़ाशिये में इस की तशरीह़ यूं फ़रमाते हैं : **''سُمِّيَ نُوْرًا لِاَنَّهٗ يُنَوِّرُ الْبَصَائِرَ وَيَهْدِيْهَا لِلرَّشَادِ وَلِاَنَّهٗ اَصْلُ كُلِّ نُوْرٍ حِسِّيٍّ وَّ مَعْنَوِيٍّ''** तरजमा : इस आयते मुबा-रका में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नूर इस लिये कहा गया है कि आप लोगों के कुलूब और उ़क़ूल को रोशन करते हैं और राहे रास्त की त़रफ़ लोगों की रहनुमाई करते हैं और इस लिये कि आप हर हि़स्सी व मा'नवी नूर की अस्ल हैं।''

(حاشية الصاوى، سورة المائدة، تحت الآية:١٥، ١٠٣/١)

तफ़्सीरे मदारिक में है कि नूर से हुज़ूर सय्यिदे आ़लम ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुराद हैं क्यूं कि आप के साथ हिदायत ह़ासिल की जाती है, जैसा कि (कुरआने मजीद में) आप को (سِرَاجًا مُّنِيْرًا) या'नी चमकता हुवा आफ़्ताब कहा गया है।

(تفسير مدارك التنزيل، الجزء٦ ، المائدة ، تحت الآية:١٥، ٤٣٦/١)

अ़ल्लामा सय्यिद आलौसी ह़-नफ़ी बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : **قَدۡ جَآءَكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ نُوۡرٌ عَظِيْمٌ وَهُوَ نُوْرُ الْاَنْوَارِ وَالنَّبِيُّ الْمُخْتَارُ صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم وَاِلٰى هٰذَا ذَهَبَ قَتَادَةُ وَاخْتَارَهُ الزُّجَاجُ** **(तरजमा) :** बेशक तुम्हारे पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से एक नूर आया या'नी अ़ज़ीम नूर जो तमाम अन्वार का नूर है और वोह नबिय्ये मुख़्तार हैं क़तादा का मौक़िफ़ भी येही है और ज़ुजाज ने इसी को इख़्तियार किया।

चन्द सुतूर के बा'द फ़रमाते हैं,

''وَلَا يَبْعُدُ عِنْدِىْ اَنْ يُّرَادَ بِالنُّوْرِ وَالْكِتَابِ الْمُبِيْنِ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم'' तरजमा : और मेरे नज़्दीक येह भी बईद नहीं कि नूर और किताबे मुबीन दोनों से मुराद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हों।''

(تفسير رُوحُ المعانى، الجزء السادس، سورة المائدة، تحت الآية:١٥، ص٩٧)

www.dawateislami.net

तफ़्सीरे रूहुल बयान शरीफ़ में है,

وَقِيْلَ الْمُرَادُ بِالْاَوَّلِ هُوَ الرَّسُوْلُ صلّى الله تعالىٰ عليه واله وسلّم وَبِالثَّانِىْ الْقُرْاٰنُ या'नी एक क़ौल येह है कि नूर से मुराद रसूले पाक और किताबे मुबीन से मुराद कुरआने पाक है।

(تفسیرِ رُوحِ البیان، سورۃ المائدۃ، تحت الاٰیۃ:۱۵، ۲/۳۷۵)

"**तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान**" में है : मुल्ला अ़ली क़ारी ने शर्हे शिफ़ा में फ़रमाया कि "نُوْرٌ" और "كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ" दोनों हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही हैं, हुज़ूर **अल्लाह** का नूर इस त़रह़ हैं कि आप ज़ाते बारी से पहले फ़ैज़ पाने वाले और आप के ज़रीए़ से दूसरे लोग फ़ैज़ लेने वाले हैं। येह भी पता लगा कि कोई नूरे मुह़म्मदी को बुझा नहीं सकता क्यूं कि येह **अल्लाह** का नूर हैं जैसे चांद सूरज। नीज़ इस की कोई पैमाइश नहीं कर सकता जैसे समुन्दर का पानी और हवा। येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर के बिग़ैर कुरआन की समझ ना मुम्किन है क्यूं कि बिग़ैर नूर किताब नहीं पढ़ी जा सकती कुरआन के नुक़ूश छूने के लिये ज़रूरी है कि पानी से जिस्म का ग़ुस्ल किया जाए और कुरआन के असरार छूने के लिये ज़रूरी है कि मदीनए त़य्यिबा के पानी से दिल का ग़ुस्ल किया जाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पारह : 6, सू-रतुल माइदह, तह़्तल आयह : 15, स. 133)

मख़्लूक़ में सब से पहले कौन पैदा हुवा

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है फ़रमाते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप हुज़ूर पर कुरबान मुझे बता दीजिये कि सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क्या चीज़ बनाई ? इर्शाद फ़रमाया : ऐ जाबिर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! बेशक बिल यक़ीन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम मख़्लूक़ात से पहले तेरे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नूर अपने नूर से पैदा फ़रमाया, वोह नूर कुदरते इलाही से जहां ख़ुदा ने चाहा सैर करता रहा। उस वक़्त लौह़, क़लम, जन्नत, दोज़ख़, फ़िरिश्ते, आस्मान, ज़मीन, सूरज, चांद, जिन्न, इन्सान कुछ न था फिर जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ को पैदा करना चाहा तो उस नूर के चार ह़िस्से फ़रमाए, पहले से क़लम, दूसरे से लौह़, तीसरे से अ़र्श बनाया, फिर चौथे ह़िस्से के चार ह़िस्से किये, पहले से ह़ामिलीने अ़र्श (या'नी अ़र्श को उठाने वाले फ़िरिश्ते), दूसरे से कुरसी, तीसरे से बाक़ी मलाएका पैदा किये। फिर चौथे ह़िस्से के चार ह़िस्से फ़रमाए, पहले से आस्मान, दूसरे से ज़मीनें, तीसरे से बिहिश्त व दोज़ख़ बनाए। फिर चौथे ह़िस्से के चार ह़िस्से फ़रमाए, पहले ह़िस्से से मुअमिनीन के देखने का नूर पैदा किया। दूसरे ह़िस्से से इन के दिल का नूर पैदा किया और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त है, तीसरे ह़िस्से से इन की उन्सिय्यत का नूर पैदा किया और वोह तौह़ीद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई

www.dawateislami.net

इबादत के लाइक़ नहीं और मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।

(كشف الخفاء ومزيل الالباس، حرف الهمزة مع الواو، ١/٢٣٧، تحت الحديث:٨٢٦)

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने क्या ख़ूब फ़रमाया :

वोह जो न थे तो कुछ न था वोह जो न हों तो कुछ न हो

जान हैं वोह जहान की जान है तो जहान है

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 178)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्म शरीफ़ की नूरानिय्यत हि़स्सी भी थी कि सहा़बए किराम और अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने इसी नूरानिय्यत का अपनी आंखों से मुशा-हदा किया, चुनान्चे

पसीनए जबीन ने मुझे ह़ैरान कर दिया

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि एक दफ़्आ़ **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने ना'लैने मुबारक में पैवन्द लगा रहे थे जब कि मैं चरखा़ कात रही थी। मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेह्रए पुरनूर को देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक पेशानी से पसीना बह रहा था और उस पसीने से नूर चमक रहा था आप फ़रमाती हैं : मैं ह़ैरान हुई। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ निगाहे (करम) उठा कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : किस बात पर ह़ैरान हो ? ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ देखा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस पेशानी के पसीने और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पसीनए मुबारक से निकलते हुए नूर ने मुझे ह़ैरान कर दिया है। (इस पर) हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी त़रफ़ उठे और मेरी दोनों आंखों के दरमियान बोसा दिया और इर्शाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे तुम मुझ से इतना मसरूर नहीं हुई जितना मैं तुम से मसरूर हुवा।

(حلية الاولياء، عائشة زوج رسول الله، ٢/٥٦، الحديث:١٤٦٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जिस से मैं महब्बत करता हूं तुम भी उस से महब्बत करो

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! जिस से मैं महब्बत करता हूं क्या तुम उस से महब्बत नहीं करोगी ? सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** क्यूं नहीं (या'नी मैं ज़रूर महब्बत करूंगी) । इस पर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तो इस (आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) से महब्बत करो ।

(صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب فی فضائل عائشۃ، ص ۹۵۰، الحدیث:۲۴۴۲)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! महब्बत की ज़ियादती तो देखिये कि सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद तो ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से महब्बत करते ही हैं साथ ही ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को भी अपनी प्यारी ज़ौजा से महब्बत का हुक्म फ़रमा रहे हैं इस में हमारे लिये महब्बत भरा म-दनी फूल येह है कि हम भी अपनी अम्मीजान से महब्बत व अ़क़ीदत का दम भरें ।

हम को अम्मी आ़इशा से प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यि-दतुना आ़इशा का नाज़ो नियाज़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को महबूबे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ गुफ़्त-गू करने की बहुत कुदरत थी और वोह जो चाहतीं बिला झिजक अ़र्ज़ कर देती थीं और येह उस कुर्ब व महब्बत की वज्ह से था जो उन के माबैन थी । (مدارج النبوت(فارسی)، قسم پنجم، باب دوم ذکر اُمّہات المؤمنین، ۴۷۱/۲)

दो बाज़ू वाला घोड़ा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि एक दिन **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए । मैं अपनी गुड़ियां घर के एक दरीचे में रख कर उस पर पर्दा डाले रखती थी । सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी थे । उन्हों ने दरीचे के पर्दे को उठाया और गुड़ियां हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दिखाईं । हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : येह सब क्या हैं ? मैं ने अ़र्ज़

www.dawateislami.net

किया : मेरी बेटियां (या'नी मेरी गुड़ियां) हैं, इन गुड़ियों में एक घोड़ा मुला-हज़ा फ़रमाया जिस के दो बाज़ू थे । इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या घोड़ों के भी बाज़ू होते हैं ? मैं ने अ़र्ज़ किया : क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नहीं सुना कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام के घोड़े थे और उन के बाज़ू थे । हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस पर इतना तबस्सुम फ़रमाया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दाढ़ें ज़ाहिर हो गईं । (المرجع السابق)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा आ़लिमा ज़ाहिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बचपन में ही मा'लूम था कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के घोड़ों के बाज़ू भी थे ।

इस से वाज़ेह़ तौ़र पर ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इ़ल्मी फ़ज़ीलत ज़ाहिर होती है और इस बारगाहे आ़लिया की जलालते इ़ल्मी का क्या आ़लम होगा जहां सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी अपने इ़ल्मी इश्कालात का ह़ल पाते, इ़ल्मी मनाफ़ेअ़ उठाते और इस का इक़रार करते नज़र आते हैं । **आइये !** कुछ इस बारे में भी मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

अकाबिर सह़ाबए किराम मसाइल पूछते थे

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इ़ल्म का मर्तबा इस बात से भी वाज़ेह़ होता है कि अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप से मसाइल पूछते थे, जैसा कि अ़ता़ बिन अबी रबाह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा कि आप तमाम लोगों से बढ़ कर फ़क़ीहा थीं और आ़म्मतुन्नास में क़ियास के ए'तिबार से सब से अच्छी राय वाली थीं ।

(اسد الغابة فی معرفة الصحابة، حرف العين، عائشة بنت ابی بكر الصديق، ۱۸۹/۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) फ़रमाते हैं : **''मैं ने सय्यि-दतुना आ़इशा (** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **) से बढ़ कर कोई फ़क़ीहा, इ़ल्मे त़िब में माहिर और इ़ल्मे शे'र में कामिल न जाना ।''** (الاصابة فی تمييز الصحابة، كتاب النساء، حرف العين المهملة، عائشة بنت ابی بكر الصديق، ۲۰۸/۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम गुरौहे सह़ाबा को जब कोई ह़दीस समझने में मुश्किल पेश आती तो हम उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछते और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास ही उस का जवाब पाते । (سنن الترمذی، ابواب المناقب، باب فضل عائشة، ص۸۷۳، الحديث:۳۸۸۲)

www.dawateislami.net

आप का इल्मो फ़िक़्ह तह़क़ीक़े क़ुरआनो ह़दीस

देख कर हैरान हैं सारे सह़ाबा ताबिई

(दीवाने सालिक, स. 32)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इ़ल्म की बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत है, तमाम ज़ी मर्तबा लोग नूरे इ़ल्म से मुनव्वर थे। ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام को ही देख लीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आदम عَلَيْهِ السَّلَام के इ़ल्म को ज़ाहिर फ़रमा कर फ़िरिश्तों को ला जवाब कर दिया।

क्यूं फ़िरिश्तों पर फ़ज़ीलत दी थी आदम को सुनो !

इ़ल्म ही ने कर दिया था आप का पल्ला गिरां

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आइये ! क़ुरआन व सुन्नत की रोशनी में इ़ल्म के चन्द फ़ज़ाइल मुला-ह़ज़ा कीजिये।

"आ़लिम" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से फ़ज़ीलते इ़ल्म से मु-तअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾...... شَهِدَ اللهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ (پ۳، اٰل عمرٰن:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर।

फ़ज़ीलत व शराफ़त और अ़-ज़-मतो कमाल के लिये येही काफ़ी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किस त़रह़ अपनी पाक ज़ात से आग़ाज़ फ़रमाया फिर दूसरे नम्बर पर मलाएका और तीसरे पर इ़ल्म वालों का ज़िक्र फ़रमाया।

﴿2﴾...... يَرْفَعِ اللهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ (پ۲۸، المجادلة:۱۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इ़ल्म दिया गया द-रजे बुलन्द फ़रमाएगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : उ़-लमा के आ़म मुअमिनीन से **700** द-रजे ज़ियादा हैं, हर दो द-रजों के दरमियान **500** साल की मसाफ़त है। (احیاء العلوم، کتاب العلم، الباب الاوّل فی فضل العلم والتعلیم...الخ، فضیلة العلم، ۱/۱۵)

www.dawateislami.net

قَالَ الَّذِیْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ یَّرْتَدَّ اِلَیْكَ طَرْفُكَ ......﴿3﴾ (پ۱۹، النمل:۴۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस ने अ़र्ज़ की जिस के पास किताब का इ़ल्म था कि मैं उसे हुज़ूर में ह़ाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले।

इस में तम्बीह है कि इ़ल्म की त़ाक़त से वोह इस पर क़ादिर हुवा (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام के वज़ीर ह़ज़रते सय्यिदुना आसिफ़ बिन बरख़िया عَلَیْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعُلٰی त़ाक़ते इ़ल्म से पलक झपकने में तख़्त लाने पर क़ादिर हुए)। (احیاء العلوم، کتاب العلم، الباب الاوّل فی فضل العلم والتعلیم...الخ، فضیلة العلم، ۱/۱۵)

وَقَالَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَیْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَیْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ......﴿4﴾ (پ۲۰، القصص:۸۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बोले वोह जिन्हें इ़ल्म दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी **अल्लाह** का सवाब बेहतर है उस के लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे।

इस आयते मुबा-रका में बयान फ़रमाया कि क़द्रे आख़िरत की अ़-ज़मत इ़ल्म से मा'लूम होती है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"आइशा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से फ़ज़ीलते इ़ल्म पर मुश्तमिल 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴿1﴾..... आ़लिम ज़मीन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अमीन है।

(فردوس الاخبار للدیلمی، باب العین، فصل العالم، الحدیث:۴۰۳۶، ۲/۱۰۱)

﴿2﴾..... **बेशक उ़-लमा** अम्बिया के वारिस हैं।

(سنن ابی داود، کتاب العلم، باب الحث علی طلب العلم، ص۵۷۸، الحدیث:۳۶۴۱)

पता चला कि जिस त़रह़ नुबुव्वत से बढ़ कर कोई मर्तबा नहीं यूंही नुबुव्वत की विरासत से बढ़ कर कोई अ़-ज़मत नहीं।

﴿3﴾..... लोगों में सब से ज़ियादा इ़बादत गुज़ार वोह आ़लिम है कि जब उस की ज़रूरत पड़े तो अपने इ़ल्म से नफ़्अ़ दे और जब उस से बे नियाज़ी बरती जाए तो ख़ुद उस इ़ल्म के साथ नफ़्अ़ पहुंचाए जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे दिया है। (شعب الایمان للبیهقی، باب فی طلب العلم، فصل فی فضل العلم وشرفه، ۲/۲۶۸، الحدیث:۱۷۲۰)

﴿4﴾..... ईमान बे लिबास है, इस का लिबास तक़्वा, इस की ज़ीनत ह़या, इस का माल दीन की समझ और इस का फल इ़ल्म है।

(فردوس الاخبار للدیلمی، باب الالف، فصل فی اِنّی،ذکر اخبار جآء ت عن النبی......الخ، ۱/۱۴۹، الحدیث:۳۸۰)

﴿5﴾..... क़ियामत के दिन तीन क़िस्म के लोग शफ़ाअ़त करेंगे : **अम्बिया, फिर उ़-लमा फिर शु-हदा।**

(سنن ابن ماجه، کتاب الزهد، باب ذکر الشفاعة، ص۷۰۰، الحدیث:۴۳۱۳)

www.dawateislami.net

पता चला कि ज़ियादा अ़-ज़मत वाला मर्तबा वोह है जिस का ज़िक्र मर्तबए नुबुव्वत के साथ मिला हुवा है और येह मर्तबए शहादत से बढ़ कर है अगर्चे शहादत की फ़ज़ीलत में भी बहुत अह़ादीस हैं **आइये ! देखिये !** इल्म के क़द्रदानों को क्या सिला मिलता है, चुनान्चे

इल्म के क़द्रदानों का सिला

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **412** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**उ़यूनुल ह़िकायात**" ह़िस्सए अव्वल सफ़्ह़ा **405** पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुसैन बिन शम्ऊ़न رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, मुझे अह़मद बिन सुलैमान क़त़ीई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने बताया : "एक मर्तबा मैं बहुत ज़ियादा मोह़ताज हो गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ह़र्बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के पास अपनी कैफ़िय्यत बयान करने चला गया। उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : "इस मुआ़-मले में तेरा दिल तंग नहीं होना चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ैब से मदद फ़रमाने वाला है। एक मर्तबा मैं भी इतना मोह़ताज हो गया था कि नौबत फ़ाक़ों तक पहुंच गई थी। मेरी ज़ौजा ने मुझ से कहा : "हम दोनों तो सब्र कर लेंगे मगर हमारे इन दो बच्चों का क्या बनेगा ? अपनी किताबों में से कोई किताब ही ले आओ ताकि उसे बेच कर या किसी के पास रह्न रख कर हम बच्चों के लिये खाने का बन्दो बस्त कर लें।" मुझे अपनी दीनी किताबों से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत थी इस लिये मैं ने कहा : "इन बच्चों के लिये कोई चीज़ उधार ले लो और मुझे आज के दिन और रात की मोहलत दो।"

मेरे घर की दहलीज़ पर एक कमरा था जिस में मेरी किताबें थीं, मैं वहीं बैठ कर (किताबों का) मुत़ा-लआ़ और तह़रीरी काम करता था। उस रात भी मैं उसी कमरे में था कि किसी ने दरवाज़ा खट-खटाया। मैं ने पूछा : "कौन है ?" उस ने कहा : "तुम्हारा पड़ोसी हूं।" मैं ने कहा : "अन्दर आ जाओ।" उस ने कहा : "पहले चराग़ बुझाओ तब मैं दाख़िल होउंगा।" मैं ने चराग़ पर बरतन औंधा कर दिया और कहा : "आ जाओ।" वोह अन्दर आया और मेरे पास कोई शै छोड़ कर चला गया। मैं ने चराग़ से बरतन हटाया तो क्या देखता हूं कि एक निहायत क़ीमती रुमाल है उस में अन्वाओ़ अक़्साम के खाने और **500** दिरहम हैं। मैं ने अपनी बीवी को बुला कर कहा : "बच्चों को जगाओ ताकि वोह खाना खा लें।" दूसरे दिन हम पर जितना क़र्ज़ था वोह उन दराहिम से अदा कर दिया। और ख़ुरासान से ह़ाजियों के क़ाफ़िलों की आमद का वक़्त आ गया था लिहाज़ा अगली रात मैं अपने घर के दरवाज़े पर बैठ गया। क्या देखता हूं कि एक सारबान साज़ो सामान लदे दो ऊंट लिये आ रहा है और इब्राहीम ह़र्बी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى) के घर के मु-तअ़ल्लिक़

www.dawateislami.net

पूछ रहा है। यहां तक कि वोह मेरे पास पहुंचा तो मैं ने कहा : ''मैं ही इब्राहीम ह़र्बी (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی) हूं।'' चुनान्चे उस शख़्स ने ऊंटों से सामान उतारा और कहने लगा : ''येह दोनों ऊंट ख़ुरासान के एक शख़्स ने आप के लिये भेजे हैं।'' मैं ने पूछा : ''वोह नेक शख़्स कौन है ?'' कहने लगा : ''उस ने मुझ से क़सम ली थी कि मैं उस के मु-तअ़ल्लिक़ किसी को न बताऊं लिहाज़ा मैं आप को उस का नाम नहीं बता सकता।'' (عیون الحکایات، الحکایة العاشرة بعد المائتین، ص۲۰۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ह़र्बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی कैसे आ़शिक़े इ़ल्म थे कि शदीद ह़ाजत के बा वुजूद अपनी दीनी किताबें न बेचीं और न ही किसी के पास रह्न रखना गवारा कीं। आज हम अपना मुह़ा-सबा करें कि हमें दीनी किताबों से कितनी मह़ब्बत है, हज़ारों में से शायद ही कोई हो जिस के अन्दर दीनी कुतुब **(Literature)** पढ़ने का जज़्बा हो, क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीमात सीखने की किस को फ़िक्र है, हर एक त़रह़ त़रह़ की ख़ुराफ़ात से भरपूर लिट्रेचर पढ़ने, बेहूदा फ़िल्मी प्रोग्राम देखने सुनने, केबल और इन्टरनेट पर तफ़रीह़ के नाम पर दुन्या व आख़िरत को बरबाद करने में लगा हुवा है दीनी किताबों से बेज़ारी का येह आ़लम है कि बहुत से लोग अपने घर में दीनी किताबों की मौजू-दगी भी गवारा नहीं करते, अगर घर में कुछ ऐसी किताबें हों तो मुक़द्दस अवराक़ में डाल देते या क़ुरआने पाक के शहीद अवराक़ के साथ दरिया में ठन्डा कर देते हैं। ज़िक्र कर्दा वाक़िए में येह म-दनी फूल भी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ह़र्बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने अपनी उम्मीद सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात में रखी फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भी तवक्कुल पर कैसा अ़ज़ीम इन्आ़म अ़त़ा फ़रमाया कि इन की परेशानी काफ़ूर करने के लिये ऐसे मोह़सिनीन को भेजा जो अपनी नेकियां छुपाने के लिये ऐसी अनोखी तरकीबें बनाते हैं कि देखने सुनने वाला ह़ैरान रह जाता है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मह़ब्बत भरा अन्दाज़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने इ़ल्म के फ़ज़ाइल मुला-ह़ज़ा फ़रमाए, **आइये !** अब ह़बीबे ख़ुदा और ह़बीबए ह़बीबे ख़ुदा के मह़ब्बत भरे सफ़र की एक रिवायत मुला-ह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا इर्शाद फ़रमाती हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ (मक़ामे हुर से) वापस आ रहे थे और मैं एक ऊंट पर

www.dawateislami.net

सुवार थी जो दूसरे ऊंटों में आख़िर में था मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आवाज़ मुबारक सुनी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''وَا عَرُوْسَاہُ : हाए ! मेरी दुल्हन ।''**

(مسند احمد، مسند السیدۃ عائشۃ رضی اللہ عنہا، ۱۰/۵۸۴، الحدیث:۲۶۸۶۶، ملتقطًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुझे हुज़ूर के पास पहुंचाया गया

हज़रते सय्यि-दतुना अ़तिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि ''नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ के लिये पैग़ाम भेजा जब कि आप कम उ़म्र बच्ची थीं ।'' ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बोले : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या बन्दा अपनी भतीजी से निकाह़ कर सकता है ? फ़रमाया : तुम मेरे दीनी भाई हो । फिर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तक़रीबन **50** दिरहम के ख़ानगी सामान पर सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निकाह़ करा दिया । फिर (ब वक़्ते रुख़्सती) सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास उन की दाया आईं जब कि वोह बच्चों में खेल रही थीं और उन का हाथ थाम कर घर ले गईं और उन्हें दुल्हन बना कर पर्दे की चादर के साथ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पहुंचा दिया गया ।

(الطبقات الکبرٰی لابن سعد، ذکر ازواج رسول اللہ، عائشۃ بنت ابی بکر، ۱۰/۵۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सरकार का सय्यि-दतुना आइशा को मनाना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस क़दर महब्बत थी कि जब ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ुश होतीं तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी ख़ुश होते थे और अगर सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا किसी बात से नाराज़ हो जातीं तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन को मनाते भी थे, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक दिन सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए इस ह़ाल में कि सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ बुलन्द आवाज़ से बातें कर रही थीं, तो ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह कहते हुए सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रफ़ बढ़े

www.dawateislami.net

कि ऐ उम्मे रूमान की बेटी ! क्या तू **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अपनी आवाज़ को बुलन्द करती है । तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दरमियान में ह़ाइल हो गए । जब ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ वहां से चले गए तो ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को मनाते हुए फ़रमाया : क्या तुम ने न देखा कि मैं तुम्हारे और उन (ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) के दरमियान ह़ाइल हो गया । रावी फ़रमाते हैं : फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ाज़िर हुए तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को बहुत ख़ुश पाया ।

(مسند احمد، مسند الکوفیین، حدیث نعمان بن بشیر، ۴۹۴/۷، الحدیث:۱۸۸۹۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मैं तुम्हारी रिज़ा मन्दी व नाराज़ी को जानता हूं

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मुझ से **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं जानता हूं जब तुम मुझ से राज़ी रहती हो और जब तुम ख़फ़ा होती हो । मैं ने पूछा : आप कैसे पहचानते हैं ? फ़रमाया : जब तुम मुझ से ख़ुश रहती हो तो कहती हो : मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब की क़सम ! और जब नाराज़ होती हो तो कहती हो : इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने अ़र्ज़ किया : हां ! येही बात है, **वल्लाह, या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं सिर्फ़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम ही छोड़ती हूं ।

(صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب غیرة لنساء ووجدھن، ص۱۳۴۳، الحدیث:۵۲۲۸)

मत़लब येह है कि इस ह़ाल में सिर्फ़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम नहीं लेती । लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद मेरे दिल में और मेरी जान आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में मुस्तग़रक़ है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत फ़रमाया करते थे, चुनान्चे

www.dawateislami.net

मख्खन मिली खजूर से भी ज़ियादा महबूब

हज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक शब सरवरे काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात भर चलते रहे फिर ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : "**देखो !** तुम मुझे मख्खन मिली खजूर से भी ज़ियादा मह़बूब हो ।" (الطبقات الکبرٰی لابن سعد، ذکر آزواج رسولُ اللّٰہ، عائشه بنت ابی بکر، ۷۸/۱۰)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस क़दर मह़ब्बत थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के झूटे को भी पसन्द फ़रमाते थे और जहां से आप हड्डी से गोश्त खातीं सरकारे वाला तबार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी उसी जगह से गोश्त नोश फ़रमाते थे । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं हड्डी से (दांतों के साथ) गोश्त उतारती थी ह़ालां कि मैं ह़ाएज़ा होती और वोह हड्डी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पेश कर देती तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपना दहन मुबारक उसी जगह रखते जिस जगह मैं ने रखा था और मैं (पियाले में) पानी पी कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को (पियाला) देती तो आप (पियाले में) उसी जगह अपना लब मुबारक रखते (या'नी पानी नोश फ़रमाते) जहां से मैं ने पिया होता ।

(سنن ابی داود، کتاب الطھارۃ، با ب فی مواکلة الحائض ومجامعتھا، ص٥٤، الحدیث:٢٥٩)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ख़ुश करने के लिये उन के साथ कभी कभार खेला भी करते थे । चुनान्चे,

दौड़ का मुक़ाबला

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सफ़र में थी, आप फ़रमाती हैं : मैं ने पैदल दौड़ने में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मुक़ाबला किया मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आगे निकल गई फिर जब मेरे बदन पर गोश्त चढ़ आया (या'नी मैं भारी हो गई) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ फिर दौड़ी इस दफ़्आ़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से आगे

www.dawateislami.net

निकल गए तो आप ने फ़रमाया : येह तुम्हारे उस (दिन) आगे निकल जाने का बदला है।

(سنن ابی داود، کتاب الجھاد، باب فی السبق علی الرجل، ص ٤١١، الحدیث:٢٥٧٨)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ ह़द द-रजा ख़ुश ख़ुल्क़ी और ह़ुस्ने मुआ़-शरत और बे तकल्लुफ़ी की ख़ूब सूरत मिसाल है और इस में उम्मत के लिये अपने अपने घरों में ह़ुस्ने मुआ़-शरत पैदा करने का अ़ज़ीम दर्स भी मौजूद है।

बीबी आ़इशा के ईसाले सवाब की ह़िकायत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **389** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नक़्ल फ़रमाते हैं : इमामे रब्बानी ह़ज़रते मुजद्दिद अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं : पहले अगर मैं कभी खाना पकाता तो उस का सवाब ह़ुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم व **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم व ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ाति़-मतुज़्ज़हरा व ह़जराते ह़-सनैने करीमैन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की अरवाह़े मुक़द्दसा के लिये ही ख़ास ईसाले सवाब करता था और उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ का नाम शामिल न करता था। एक रात ख़्वाब में देखा कि जनाबे रिसालत मआब, मह़बूबे ख़ुदाए तव्वाब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं। मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में सलाम अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी जानिब मु-तवज्जेह न हुए और चेह्‌रए अन्वर दूसरी जानिब फेर लिया और मुझ से फ़रमाया : "मैं आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के घर खाना खाता हूं, जिस किसी ने मुझे खाना भेजना हो वोह आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के घर भेजा करे।" उस वक़्त मुझे मा'लूम हुवा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तवज्जोह न फ़रमाने का सबब येह था कि मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को शरीके त़आ़म (या'नी ईसाले सवाब) न करता था। इस के बा'द से मैं ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बल्कि तमाम उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ को बल्कि सब अहले बैत को शरीक किया करता हूं और तमाम अहले बैत को अपने लिये वसीला बनाता हूं। (مکتوبات امام ربّانی (فارسی)، دفتر دُوُم، حصّہ اوّل، ٥٩/٢)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस हिकायत से मा'लूम हुवा कि जिन को ईसाले सवाब किया जाता है उन को पहुंच जाता है येह भी पता चला कि ईसाले सवाब महदूद बुज़ुर्गों को करने के बजाए सभी को कर देना चाहिये । हम जितनों को भी ईसाले सवाब करेंगे सभी को बराबर बराबर ही पहुंचेगा और हमारे सवाब में भी कोई कमी न होगी । येह भी पता चला कि हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से **बेहद** उन्सिय्यत रखते हैं । हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : आप को तमाम लोगों में सब से ज़ियादा महबूब कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : आइशा (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا) । मैं ने अ़र्ज़ की : मर्दों में ? इर्शाद फ़रमाया : इन के वालिद (या'नी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ) ।

(صحيح البخاری، كتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی ﷺ لو كنت متخذاً خليلاً، ۲/۵۱۹، الحديث: ۳۶۶۲، ملتقطًا)

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी — उस हरीमे बराअत पे लाखों सलाम
या'नी है सूरए नूर जिन की गवाह — उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 311)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आइये ! अब ईसाले सवाब के बारे में कुछ मुला-हज़ा कीजिये ।

ईसाले सवाब का इन्तिज़ार !

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है, मुर्दे का हाल क़ब्र में डूबते हुए हैरान शख़्स की मानिन्द है कि वोह (शिद्दत से) इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ इस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह **दुन्या व मा फ़ीहा** (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़मीन वालों की दुआ़ओं से क़ब्र वालों को पहाड़ों की मानिन्द (सवाब) अ़ता फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) मुर्दों के लिये **"दुआ़ए मग़्फ़िरत करना है ।"**

(شُعَبُ الْاِيمان، باب فی بر الوالدين، فصل فی حفظ حق الوالدين بعد موتهما، ۶/۲۰۳، الحديث: ۷۹۰۵)

www.dawateislami.net

दुआए मग़्फ़िरत की फ़ज़ीलत

रिवायत में है कि जो कोई तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के लिये दुआए मग़्फ़िरत करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर मोमिन मर्द व औरत के इवज़ एक नेकी लिख देता है।

(مجمع الزوائد، کتاب التوبة، باب الاستغفار للمؤمنين والمؤمنات، ۲۵۵/۱۰، الحديث: ۱۷۵۹۸)

अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्ख़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! झूम जाइये ! अरबों, खरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्ख़ा हाथ आ गया ! ज़ाहिर है इस वक़्त रूए ज़मीन पर करोड़ों मुसल्मान मौजूद हैं और करोड़ों बल्कि अरबों दुन्या से चल बसे हैं। अगर हम सारी उम्मत की मग़्फ़िरत के लिये दुआ करेंगी तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमें अरबों, खरबों नेकियों का ख़ज़ाना मिल जाएगा। अपने लिये और तमाम मुअमिनीन व मुअमिनात के लिये दुआ ऐसे की जा सकती है। (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ लें) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ढेरों नेकियां हाथ आएंगी।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَلِکُلِّ مُؤْمِنٍ وَّمُؤْمِنَةٍ या'नी ऐ **अल्लाह** मेरी और हर मोमिन व मोमिना की मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

नोट : मज़्कूरा दुआ को अ-रबी या उर्दू या दोनों ज़बानों में और हो सके तो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द भी पढ़ने की आदत बना लीजिये।

बे सबब बख़्श दे न पूछ अमल
नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब

(ज़ौक़े ना'त, स. 62)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उम्मे सा'द के लिये कूंआं

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उबादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उम्मे सा'द इन्तिक़ाल कर गई हैं (मैं उन की तरफ़ से स-दक़ा करना चाहता हूं) कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल रहेगा ? सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**पानी।**" चुनान्चे उन्हों ने एक कूंआं खुदवाया और कहा : "येह उम्मे सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के लिये है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاة، باب فی فضل سقی الماء، ص۲۷۴، الحدیث:۱۶۸۱)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का कहना कि येह कूंआं उम्मे सा'द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا के लिये है । इस के मा'ना येह हैं कि येह कूंआं सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मां के ईसाले सवाब के लिये है । इस से येह भी मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों का गाय या बकरे वग़ैरा को बुज़ुर्गों की त़रफ़ मन्सूब करना म-सलन येह कहना कि "येह सय्यिदुना ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बकरा है ।" इस में कोई ह़रज नहीं कि इस से मुराद भी येही है कि येह बकरा ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ईसाले सवाब के लिये है । और क़ुरबानी के जानवर को भी तो लोग एक दूसरे ही की त़रफ़ मन्सूब करते हैं । म-सलन कोई अपनी क़ुरबानी की गाय के लिये चला आ रहा हो और अगर आप उस से पूछें कि किस की गाय है ? तो उस ने येही जवाब देना है : "**मेरी गाय है**" जब येह कहने वाले पर ए'तिराज़ नहीं तो "**ग़ौसे पाक का बकरा**" कहने वाले पर भी कोई ए'तिराज़ नहीं हो सकता । ह़क़ीक़त में हर शै का मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है और क़ुरबानी की गाय हो या ग़ौसे पाक का बकरा, हर ज़बीह़ा के ज़ब्ह़ के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिया जाता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वस्वसों से नजात अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मैं कल कहां रहूंगा ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि जब **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने म-रज़े वफ़ात में थे तो अपनी अज़्वाज (की बारी पर उन के) यहां तशरीफ़ ले जाया करते थे और ह़ज़रते आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के घर जाने की ख़्वाहिश करते हुए इर्शाद फ़रमाते : मैं कल कहां रहूंगा ? मैं कल कहां रहूंगा ? उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : जब मेरी बारी का दिन आता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो जाते ।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، باب فضل عائشۃ، ص۹۵۲، الحدیث:۳۷۷٤)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़बीबे ख़ुदा को अपनी मह़बूबा सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस क़दर मह़ब्बत थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने म-रज़ुल मौत में दूसरी अज़्वाज के बारी वाले दिनों में बार बार येह ही पूछते थे कि मैं कल कहां रहूंगा ? मैं कल कहां रहूंगा ? या'नी मैं आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के पास कब जाऊंगा और जब बाक़ी अज़्वाज ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह सूरते ह़ाल देखी तो उन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ह़ुजरे में ही क़ियाम करने

www.dawateislami.net

की इजाज़त दे दी और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने ज़ाहिरी विसाल तक जितने दिन भी इस दुन्या में जल्वा अफ़्रोज़ रहे ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुजरे ही में मुक़ीम रहे और इस से ज़ियादा महब्बत और क्या हो सकती है कि विसाले ज़ाहिरी के वक़्त भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुजरे में थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सरे अक़्दस सय्यि-दतुना आ़इशा के सीने पर था और इसी ह़ालत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़ाहिरी विसाल हुवा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आरामे जाने नबी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू मुलैका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दरबान ह़ज़रते सय्यिदुना ज़क्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बयान फ़रमाया : "जब उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا काशानए अक़्दस पर आए और अन्दर आने की इजाज़त त़लब की।" मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भतीजे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सिरहाने (खड़े) थे। मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आप के पास आने की इजाज़त त़लब कर रहे हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आप के पास आना चाहते हैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "**अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को न आने दो।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ की : "ऐ फूफीजान ! ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आप के नेक बेटों में से हैं, वोह आप को सलाम कहने और आप को अल वदाअ़ कहने आए हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "अच्छा अगर तुम्हारी येही मरज़ी है तो इजाज़त दे दो।" मैं ने उन्हें अन्दर बुला लिया।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए तो सलाम किया और बैठ गए और अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ख़ुश ख़बरी हो।" उम्मुल

www.dawateislami.net

मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : "किस बात पर खुश ख़बरी ?" अर्ज़ की : "जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इस दुन्या से रुख़्सत होंगी तो फ़ौरन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की मुलाक़ात आक़ाए दो जहां, मालिके कौनो मकां, रहमते आ-लमिय्यां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان से होगी (जो दुन्या से रुख़्सत हो चुके हैं) और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا तो हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी अज़्वाजे मुतहहरात رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِنَّ में सब से ज़ियादा महबूब थीं। (आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا तो तय्यिबा व ताहिरा हैं) और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पाकीज़ा चीज़ ही से महब्बत करते थे। और अब्वाअ की रात आप का हार गुम हो गया था तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे ढूंडने के लिये उसी मक़ाम में सुब्ह तक ठहरे रहे सहाबए किराम भी (आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ) ठहरे रहे उन के पास पानी नहीं था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आयते तयम्मुम नाज़िल फ़रमाई :

فَلَمۡ تَجِدُوۡا مَآءً فَتَیَمَّمُوۡا صَعِیۡدًا طَیِّبًا (پ۵، النساء:۴۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो।

(आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की तो बड़ी शान है) आप के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस उम्मत के लिये तयम्मुम की रुख़्सत का ए'लान फ़रमाया है (तोहमत के वक़्त) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने (तहारत व पाकीज़गी के बयान पर मुश्तमिल ब सूरते कुरआनी आयात) आप की बराअत नाज़िल फ़रमाई जिन्हें हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیۡہِ السَّلَام ले कर आए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मसाजिद में से कोई मस्जिद ऐसी नहीं जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया जाता हो मगर दिन रात के अवक़ात में इन (आप की तहारत व पाकीज़गी के बयान पर मुश्तमिल आयात) की तिलावत की जाती है।"

येह सुन कर उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा तय्यिबा ताहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ **अब्दुल्लाह** बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ! मेरी ता'रीफ़ न करो, क़सम है मुझे मेरे उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! मैं तो पसन्द करती हूं कि मैं **नस्यन मन्सिय्यन** (भूली बिसरी) हो जाती।"

(الطبقات الکبریٰ لابن سعد، ذکر ازواج رسول اللّٰہ، عائشه بنت ابی بکر، ۱۰/۷٤)

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी उस हरीमे बराअत पे लाखों सलाम
या'नी है सूरए नूर जिन की गवाह उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 311)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

विसाल के वक़्त लुआ़ब एक हो गया

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती थीं : बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ने'मतों में से मुझ पर येह भी है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल मेरे घर में और मेरी बारी में, मेरे सीने और गले के दरमियान हुवा, और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मेरे और इन के लुआ़ब को इन के विसाल के वक़्त जम्अ़ फ़रमाया, अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मेरे पास आए, उन के हाथ में मिस्वाक थी, और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ पर टेक लगाए हुए थे, तो मैं ने हुज़ूर عَلَیۡہِ اَفۡضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسۡلِیۡم को देखा कि मिस्वाक की त़रफ़ देख रहे हैं, मैं जानती थी कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिस्वाक को पसन्द फ़रमाते हैं, मैं ने पूछा : आप के लिये मिस्वाक ले लूं ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरे अन्वर से इशारा फ़रमाया कि हां ! मैं ने मिस्वाक ली मिस्वाक सख़्त थी मैं ने अ़र्ज़ की : इसे नर्म कर दूं ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सर से इशारा फ़रमाया कि हां ! तो मैं ने (अपने मुंह से चबा कर) उसे नर्म कर दिया (इस त़रह़ मेरा और सरवरे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लुआ़ब जम्अ़ हो गया) ।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاته، ص۱۱۰۳، الحدیث:۴۴۴۹)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मिस्वाक से किस क़दर महब्बत थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी के इख़्तिताम पर जो अ़मल किया वोह मिस्वाक थी ।

आइये ! अब कुछ मिस्वाक के फ़ज़ाइलो ब-रकात के बारे में जानने की कोशिश करती हैं ताकि इस वज्ह से हमारे अन्दर मिस्वाक करने का म-दनी जज़्बा पैदा हो, चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मिस्वाक मुंह की त़हारत और रब عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा का सबब है।" त़-बरानी शरीफ़ की रिवायत में येह भी है कि मिस्वाक से निगाह रोशन (या'नी बीनाई में तरक़्क़ी) होती है ।

(سنن النسائی، کتاب الطهارة، باب الترغیب فی السواك، ص ۱۰، الحدیث:۵. المعجم الاوسط، حرف المیم، من اسمه محمد، ۳۲۸/۵، الحدیث:۷۴۹۶)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मिस्वाक के साथ नमाज़ पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक के नमाज़ पढ़ने से **70 गुना** अफ़्ज़ल है।" **(مسند احمد، مسند عائشه رضی الله عنها، ۶۴۶/۱۰، الحدیث:۲۷۰۹۴)**

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मिस्वाक किया करो क्यूं कि मिस्वाक मुंह की त़हारत और रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का सबब है, जब भी जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام मेरे पास आए तो उन्हों ने मुझे मिस्वाक करने की वसिय्यत की यहां तक कि मुझे अन्देशा हुवा कि कहीं येह मुझ पर और मेरी उम्मत पर फ़र्ज़ न हो जाए और अगर मुझे अपनी उम्मत के मशक़्क़त में पड़ने का ख़ौफ़ न होता तो मैं इन पर मिस्वाक फ़र्ज़ कर देता और बेशक मैं इस क़दर मिस्वाक करता हूं कि मुझे मसूढ़े ज़ख़्मी हो जाने का ख़दशा पैदा हो जाता है।"

(سنن ابن ماجه، كتاب الطهارة، باب السّواك ، ص ٦٠ ، الحديث:٢٨٩)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुझे जन्नत में आइशा दिखाई गई !

हज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मुझे ख़बर दी गई कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे जन्नत में आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) दिखाई गई ताकि मुझ पर मौत आसान हो जाए गोया मैं उस के दोनों हाथ देख रहा हूं।

(الطبقات الكبرٰى لابن سعد، ذكر ازواج رسول الله، عائشة بنت ابى بكر، ٦٥/١٠)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! सरकारे अ-रबो अ़जम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस क़दर प्यार था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नज़्अ़ के वक़्त भी ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को न भूले और मज़ीद आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इर्शाद कि मुझे जन्नत में आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) दिखाई गई ताकि मुझ पर मौत आसान हो जाए तो येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ ख़ास महब्बत पर दलालत है। इस रिवायत से हमें दर्स ह़ासिल करना चाहिये और ऐसे आ'माल करने चाहिएं कि जिन की ब-र-कत से हम मौत की सख़्ती से मह़फ़ूज़ रहें।

सकराते मौत का बयान

आइये ! अब कुछ सकराते मौत के बारे में मुला-ह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे, "**एह़याउल उ़लूम**" में है कि सकराते मौत की ह़क़ीक़ी तक्लीफ़ सिर्फ़ वोही शख़्स जान सकता है जिस ने उसे चखा हो और जिस ने उसे नहीं चखा वोह उन तकालीफ़ पर क़ियास कर के उसे जान सकता है जो उसे पहुंची हों या ह़ालते नज़्अ़ में लोगों के अह़वाल के साथ सख़्ती पर इस्तिद्लाल कर के जान

www.dawateislami.net

सकता है जिस सख़्ती में वोह मुब्तला होते हैं। क़ियास की सूरत येह है कि जिस उ़ज़्व में जान हो वोह तक्लीफ़ मह़सूस करता है तो रूह़ को इस का एह़सास होता है पस जब किसी उ़ज़्व को ज़ख़्म पहुंचता है या वोह जल जाता है तो उस से रूह़ मु-तअस्सिर होती है तो जिस क़दर वोह रूह़ में सरायत करता है उसी क़दर अज़िय्यत मह़सूस होती है और चूंकि दर्द गोश्त, ख़ून और तमाम अज्ज़ा में तक़्सीम हो जाता है इस लिये रूह़ को सिर्फ़ बा'ज़ तक्लीफ़ पहुंचती है और अगर तक्लीफ़ सिर्फ़ रूह़ को हो और बाक़ी किसी उ़ज़्व को न हो तो येह तक्लीफ़ किस क़दर होगी और नज़्अ़ वोह दर्द है जो सिर्फ़ रूह़ पर उतरता है और इन्सान के तमाम आ'ज़ा को घेर लेता है ह़त्ता कि बदन में रूह़ के जितने अज्ज़ा हैं उन सब को दर्द मह़सूस होता है। अगर किसी शख़्स को कांटा चुभ जाए तो इस से पहुंचने वाला दर्द रूह़ के सिर्फ़ उस ह़िस्से को पहुंचता है जो कांटा चुभने वाले ह़िस्से से मिली हुई है और जलने का असर इस लिये ज़ियादा होता है कि आग के अज्ज़ा बदन के तमाम अज्ज़ा में घुस जाते हैं तो जलने वाले उ़ज़्व का कोई ह़िस्सा ज़ाहिरी हो या बात़िनी आग से मह़फ़ूज़ नहीं रहता लिहाज़ा रूह़ानी अज्ज़ा जो गोश्त के तमाम अज्ज़ा में फैले हुए हैं इसे मह़सूस करते हैं लेकिन ज़ख़्म सिर्फ़ उसी जगह को पहुंचता है जिस तक लोहा (या'नी काटने वाला आला वग़ैरा) पहुंचता है इस लिये जलने की तक्लीफ़ ज़ख़्म से कम होती है जब किसी शख़्स को मारा जाए तो वोह मदद भी मांग सकता और चीख़ भी सकता है क्यूं कि उस के दिल और ज़बान में त़ाक़त मौजूद होती है और मौत की सख़्ती में दर्द के बा वुजूद चीख़ो पुकार की आवाज़ नहीं निकलती, क्यूं कि इस की तक्लीफ़ दिल पर ग़ालिब आ जाती और तमाम आ'ज़ा का इह़ात़ा कर लेती है तो इस से हर उ़ज़्व की क़ुव्वत ख़त्म हो जाती है, यहां तक कि मदद त़लब करने की क़ुव्वत भी बाक़ी नहीं रहती।

(احياء علوم الدين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الباب الثالث فى سكرات الموت...الخ، ٤/٥٥٨-٥٥٩، ملتقطًا)

मौत की सख़्ती अ़क़्ल को भी ढांप लेती है और परेशान कर देती है, ज़बान को गूंगा कर देती और आ'ज़ा को कमज़ोर कर देती है। मौत के वक़्त इन्सान चाहता है कि रोए, चिल्लाए और मदद त़लब कर के सुकून ह़ासिल करे लेकिन वोह ऐसा नहीं कर सकता और अगर कुछ क़ुव्वत बाक़ी रहती है तो रूह़ के निकलते वक़्त उस के ह़ल्क़ और सीने से ग़र-ग़राहट की आवाज़ सुनाई देती है, उस का रंग बदल कर मटियाला हो जाता है, यहां तक कि उस से मिट्टी का रंग ज़ाहिर होता है जो इस की अस्ल फ़ित़रत है और रूह़ को उस की तमाम रगों से खींच लिया जाता है, फिर दरजा ब दरजा हर उ़ज़्व में मौत वाक़ेअ़ होती है, पहले उस के क़दम ठन्डे पड़ते हैं फिर पिंडलियां फिर रानें। और हर उ़ज़्व में सख़्ती के बा'द सख़्ती और परेशानी पर परेशानी पैदा होती है ह़त्ता कि गले तक नौबत पहुंचती है उस वक़्त उस की नज़र दुन्या वालों से फिर जाती है और उस पर तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाता है और उस पर ह़सरत व नदामत छा जाती है। (المرجع السابق، ملتقطًا)

www.dawateislami.net

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वाला शान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे की तौबा क़बूल फ़रमाता है जब तक ग़र-ग़रा (मौत) की कैफ़िय्यत पैदा न हो।" (جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی فضل التوبة والاستغفار۔۔۔الخ، ص۸۰۹، الحدیث:۳۵۳۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है, नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मौत, इस की तक्लीफ़ और इस के गले में अटक्ने का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "येह तलवार की **300** ज़र्बों के बराबर है।"

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، الخوف من الله ، ۴۵۳/۵ ، الحدیث:۱۹۲)

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने वालिदे गिरामी से रिवायत करते हैं : "जब मोमिन का कोई द-रजा बाक़ी रह जाता है जिस तक वोह अ़मल के ज़रीए नहीं पहुंच सकता, तो उस पर मौत सख़्त कर दी जाती है, ताकि वोह मौत के सख़्तियों और तक्लीफ़ों के बदले जन्नत में अपना द-रजा ह़ासिल कर ले और जब काफ़िर का कोई अच्छा काम हो जिस का बदला उसे न दिया गया हो, तो उस पर मौत को आसान कर दिया जाता है ताकि वोह अपने अ़-मले ख़ैर का इ़वज़ ह़ासिल कर ले, फिर उसे जहन्नम की त़रफ़ भेज दिया जाता है।"

(احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعده ، الباب الثالث فی سکرات الموت۔۔۔الخ ،۵۶۰/۴)

गोया मेरी रूह़ सूई के नाके से निकल रही है

किसी बुज़ुर्ग के बारे में मन्क़ूल है कि वोह अक्सर म-रज़ुल मौत में मुब्तला लोगों के पास जा कर पूछते : "तुम मौत को कैसा पाते हो ?" जब वोह ख़ुद बीमार हुए तो पूछा गया : आप (मौत को) किस त़रह़ पाते हैं ? तो फ़रमाया : "यूं मह़सूस होता है कि आस्मान ज़मीन से आ मिले हैं और गोया मेरी रूह़ सूई के नाके से निकल रही है।" (المرجع السابق، ص۵۶۱)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अचानक मौत के बारे में सुवाल किया तो ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**رَاحَةٌ لِّلْمُؤْمِنِ وَاَخْذَةُ اَسَفٍ لِلْفَاجِرِ**" तरजमा : अचानक मौत मोमिन के लिये राह़त और फ़ाजिर के लिये अफ़्सोस का बाइ़स है।"

(مسند احمد، مسند السیدة عائشة رضی الله تعالٰی عنها، ۲۸۶/۱۰، الحدیث:۲۵۷۸۴)

www.dawateislami.net

मौत के फ़िरिश्ते की शक्ल देख कर दिल पर ख़ौफ़ त़ारी होना

मौत के फ़िरिश्ते की शक्ल देखना और दिल पर इस का ख़ौफ़ त़ारी होना भी किसी मुसीबत से कम नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बारे में मरवी है, इन्हों ने **म-लकुल मौत** ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया : "क्या तुम मुझे वोह सूरत दिखा सकते हो जिस में किसी गुनहगार की रूह़ क़ब्ज़ करते हो ?" **म-लकुल मौत** عَلَیْہِ السَّلَام ने जवाब दिया : "आप नहीं देख सकेंगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : क्यूं नहीं (मैं देख सकता हूं)। तो फिर म-लकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने आप को अपना चेहरा दूसरी त़रफ़ करने का कहा। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने चेहरा दूसरी त़रफ़ फेरा, फिर मु-तवज्जेह हुए तो एक सियाह फ़ाम शख़्स को देखा जिस के बाल खड़े हैं, कपड़े सियाह हैं, उस से बदबू आ रही है और उस के मुंह और नथनों से आग और धुवां निकल रहा है (येह देख कर) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर बेहोशी त़ारी हो गई, फिर इफ़ाक़ा हुवा तो **म-लकुल मौत** عَلَیْہِ السَّلَام अपनी पहली सूरत पर आ चुके थे। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ **म-लकुल मौत** عَلَیْہِ السَّلَام ! गुनहगार आदमी को मौत के वक़्त तुम्हारी सूरत देख लेना ही काफ़ी है।" (احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، الباب الثالث فی سکرات الموت...الخ، ٥٦٢/٤)

गुनाहगार का जहन्नम में अपना मक़ाम देखना

गुनाहगारों को जहन्नम में उन का मक़ाम दिखाना और मुशा-हदा से पहले उन को ख़ौफ़ दिलाना भी बहुत बड़ी मुसबीत है, क्यूं कि मरने वाले की रूह़ उस वक़्त तक नहीं निकलती जब तक वोह **म-लकुल मौत** عَلَیْہِ السَّلَام से इन दोनों में से एक कलिमा न सुन ले : **(1)**...... ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! तुझे जहन्नम की ख़बर दी जाती है और **(2)**...... ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली ! तुझे जन्नत मुबारक हो। अहले अ़क़्ल का ख़ौफ़ इसी वज्ह से था।

(احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، الباب الثالث فی سکرات الموت...الخ، ٥٦٣/٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुर्दा अपना ठिकाना देख लेता है

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है : "तुम में से कोई हरगिज़ दुन्या से नहीं जाता जब तक कि उसे मा'लूम न हो जाए कि उस का मक़ाम कहां है और जब तक वोह जन्नत या जहन्नम में अपना ठिकाना न देख ले।" और एक दूसरी रिवायत में है कि "कोई शख़्स उस वक़्त तक दुन्या से नहीं जाता जब तक वोह येह न जान ले कि वोह

www.dawateislami.net

जन्नती है या दोज़ख़ी ।"

(الموسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، مقام المیت فی الجنة اَم فی النار، ٥/٤٩٤، الحدیث:٣٠٣۔ احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، الباب الثالث فی سکرات الموت ۔۔الخ، ٥٦٣/٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें महबूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महबूब ज़ौजा सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के सदक़े सकरात मौत में आसानी अ़ता फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सरकारे मदीना का दीदार नसीब हो गया

प्यारी इस्लामी बहनो ! महबूबे ख़ुदा और महबूबए महबूबे ख़ुदा की ग़ुलामी पर इस्तिक़ामत पाने के लिये आप भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहें और अपने अ़लाक़े में होने वाले इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाती रहें, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल की भी ख़ूब बहारें हैं, हुसूले ब-र-कत के लिये एक म-दनी बहार गोश गुज़ार करती हूं, चुनान्चे **पंजाब** (पाकिस्तान) के शह्र गुलज़ारे तय्यबा (सरगोधा) की मुक़ीम इस्लामी बहन की तहरीर का ख़ुलासा है कि **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले मेरी अ़-मली हालत इन्तिहाई अब्तर थी । मॉडर्न सहेलियों की सोहबत के बाइस मैं **फ़ेशन की पुतली** और **मख़्लूत़ तफ़्रीह़ गाहों** की बेहद मतवाली थी مَعَاذَاللّٰہ न नमाज़ पढ़ती न ही रोज़े रखती और बुरक़अ़ से तो कोसों दूर भागती थी । बस **T.V.** और **V.C.R** होता और मैं । ख़ुदसर इतनी थी कि अपने सामने किसी की चलने नहीं देती थी । उन दिनों मैं कॉलेज में फ़र्स्ट इयर की त़ालिबा थी । एक रोज़ मुझे किसी ने **मक-त-बतुल मदीना** के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान की केसिट बनाम "**वुज़ू और साइन्स**" तोहफ़े में दी, बयान मा'लूमाती और ख़ासा दिलचस्प था । इस बयान से मु-तअस्सिर हो कर मैं ने अ़लाक़े में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के **इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में जाना शुरूअ़ कर दिया । **म-दनी माहोल** का नूर मेरी तारीक ज़िन्दगी को मुनव्वर करने लगा । वक़्त गुज़रने के साथ साथ اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं अपनी बुरी आ़दतों से तौबा करने में काम्याब हो गई । **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने की ब-र-कत से कुछ ही अ़र्से में **म-दनी बुरक़अ़** पहनने लगी । मेरे घर वाले, रिश्तेदार और मेरी सहेलियां इस ह़ैरत अंगेज़ तब्दीली पर बहुत ह़ैरान थे ! उन्हें येह सब ख़्वाब लग रहा था मगर येह सो फ़ीसद ह़क़ीक़त थी । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! अब मैं अपने घर में **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स देती हूं, दीगर इस्लामी बहनों के साथ मिल कर **म-दनी काम** करने की सआ़दत से भी बहरा मन्द होती हूं । रोज़ाना "**फ़िक्रे**

www.dawateislami.net

मदीना" के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** के रिसाले के ख़ाने पुर कर के हर माह जम्अ़ करवाना मेरा मा'मूल है। एक रोज़ मुझ पर **रब** عَزَّوَجَلَّ का ऐसा करम हुवा कि मैं जितना भी शुक्र करूं कम, कम और कम है। हुवा यूं कि एक रात मैं सोई तो मेरी क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी। मैं ने ख़्वाब में देखा कि **दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** हो रहा है मैं जिस जगह बैठी हूं वहां खिड़की से ठन्डी ठन्डी हवा आ रही है, मैं बे साख़्ता खिड़की से बाहर की त़रफ़ देखती हूं तो आस्मान पर बादल नज़र आते हैं। मैं बे इख़्तियार येह सलाम पढ़ना शुरूअ़ कर देती हूं **:**

ऐ सबा मुस्त़फ़ा से कह देना
ग़म के मारे सलाम कहते हैं

अचानक मेरे सामने एक ह़सीनो जमील और नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग सफ़ेद लिबास में मल्बूस सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सरे मुबारक पर सजाए मुस्कुराते हुए तशरीफ़ ले आए मैं अभी नज़ारे ही में गुम थी कि किसी की आवाज़ सुनाई दी **: "येह हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **हैं।"** फिर मेरी आंख खुल गई। मैं अपनी सआ़दतों की इस मे'राज पर शिद्दते जज़्बात से रोने लगी। दिल चाहता था कि आंखें बन्द करूं और बार बार वोही मन्ज़र देखूं। अब भी हर रात इसी उम्मीद पर दुरूदे पाक पढ़ते पढ़ते सोती हूं कि **काश !** मेरे भाग दोबारा जाग उठें।

क्या ख़बर आज की शब दीद का अरमां निकले
अपनी आंखों को अ़क़ीदत से बिछाए रखिये !

(इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 275)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾11﴿...... सय्यि-दतुना आइशा की इन्फ़िरादिय्यत

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरा ख़ुशी से चमक रहा था। चुनान्चे मैं ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने आज से पहले आप को इतना ज़ियादा ख़ुश और हश्शाश बश्शाश नहीं देखा (इस ख़ुशी की क्या वज्ह है) ? नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं क्यूं न ख़ुश और हश्शाश बश्शाश होउं ह़ालां कि अभी अभी जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) मेरे पास से गए हैं और उन्हों ने मुझ से कहा है : ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जो उम्मती भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस के बदले उस के लिये दस नेकियां लिखेगा, उस के दस गुनाह मिटाएगा और दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और फ़िरिश्ता उस पर इसी त़रह़ दुरूद भेजेगा जिस त़रह़ उस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजा। मैं ने दरयाफ़्त किया : ऐ जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) ! वोह फ़िरिश्ता कैसा है ? अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप की पैदाइश से बि'सत तक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाया है, आप का कोई भी उम्मती आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजता है तो वोह फ़िरिश्ता कहता है : और तुझ पर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो।

(المعجم الکبیر، باب الزای من اسمه زید، زید بن سهل، ۳/ ۲۲۹، الحدیث: ۴۵۸۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यि-दतुना आइशा के फ़ज़ाइलो मनाक़िब

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا रब عَزَّوَجَلَّ का तोह़फ़ा हैं जो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़त़ा हुई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के फ़ज़ाइलो मनाक़िब रैत के ज़र्रों और आस्मान के तारों की त़रह़ बे शुमार हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सय्यि-दतुना

www.dawateislami.net

आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को बहुत से ऐसे खुसूसी फ़ज़ाइल अता फ़रमाए जिन की बदौलत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا दीगर तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ में मुमताज़ थीं बल्कि बा'ज़ खुसूसिय्यात तो ऐसी हैं जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के इलावा किसी को अता न हुईं। यहां पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की **41** खुसूसिय्यात की जाती हैं :

सय्यि-दतुना आइशा की 41 खुसूसिय्यात

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इर्शाद फ़रमाया करती थीं कि मुझे तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात पर ऐसी **10** फ़ज़ीलतें हासिल हैं जो दूसरी अज़्वाजे मुतह्हरात को हासिल नहीं हुईं :

《1》...... सय्यि-दतुना आइशा के सिवा किसी कुंवारी औरत से निकाह नहीं फ़रमाया

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ने मेरे सिवा किसी दूसरी कुंवारी औरत से निकाह नहीं फ़रमाया।** चुनान्चे, मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिस वक़्त हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से निकाह फ़रमाया उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की उम्र मुबारक **7** साल थी और रुख़्सती के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की उम्र **9** साल थी, जैसा कि **"मुस्लिम शरीफ़"** की रिवायत में खुद हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से निकाह फ़रमाया जब वोह **7** साल की लड़की थीं और रुख़्सत हुईं जब वोह **9** बरस की लड़की थीं, उन के खिलोने उन के साथ थे और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें छोड़ कर वफ़ात पाई जब वोह **18** साल की थीं।

(صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب تزویج الاب البکر الصغیرة، ص۵۲۹، الحدیث:۱۴۲۲)

ब वक़्ते निकाह सय्यि-दतुना आइशा की उम्र

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इस हदीस शरीफ़ के तहत फ़रमाते हैं : (जब **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) से निकाह फ़रमाया उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا छ6 साल की हो कर सातवें साल में दाख़िल हो चुकी थीं, लिहाज़ा येह रिवायत उन अहादीस के ख़िलाफ़ नहीं जिन में आप की उम्र उस वक़्त **छ6** साल की मज़्कूर है।

www.dawateislami.net

मज़ीद फ़रमाते हैं : ग़ालिब येह है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उस वक़्त (या'नी ब वक़्ते रुख़्सती) बालिग़ हो चुकी थीं। लड़की के बुलूग़ की कम अज़ कम उ़म्र **नव** बरस है और अगर क़रीबे बुलूग़ भी हो तब भी रुख़्सती हो सकती है। (مراۃ المناجیح، کتاب النکاح، باب الولی فی النکاح واستئذان المرأۃ، ۵/۲۶-۲۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को श-रफ़े ज़ौजिय्यत से नवाज़ने में बहुत सी ह़िक्मतें मुज़्मर हैं, ब वक़्ते निकाह़ उ़म्र के लिह़ाज़ से अगर्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कमसिन थीं लेकिन ज़हानत व फ़त़ानत और पाकबाज़ी के लिह़ाज़ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मक़ाम बहुत बड़ा था, और मह़बूबे रह़मान, मालिके कौनो मकान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी निगाहे नुबुव्वत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا में वोह तमाम ख़ूबियां मुला-ह़ज़ा फ़रमाते थे जो दीन की एक मुअ़ल्लिमा व मुबल्लिग़ा के अन्दर होनी चाहिये थीं, चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इ़ल्मी मक़ामो मर्तबा न सिर्फ़ उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में सब से बुलन्द था बल्कि कई अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी पेचीदा मसाइल के ह़ल के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रफ़ रुजूअ़ करते थे मज़ीद येह कि कई अह़कामात के नुज़ूल का सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ज़ाते बा ब-रकात बनी, चुनान्चे तयम्मुम की इजाज़त होना उम्मते मुह़म्मदिय्यह عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़ुसूसिय्यत है और उम्मत को येह ने'मत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बाइ़स मिली नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमा कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने मुख़्लिस सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को श-रफ़े मुसा-हरत से नवाज़ा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2)...... मां बाप दोनों मुहाजिर

मेरे सिवा अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से कोई भी ऐसी नहीं जिस के मां बाप दोनों मुहाजिर हों, चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तो आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हिजरत की जिस का वाक़िआ़ मश्हूरो मा'रूफ़ है फिर मदीनए मुनव्वरह زَادَہَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में क़ियाम पज़ीर होने के बा'द अपने अहलो इयाल को भी मदीनए मुनव्वरह बुला लिया तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे रूमान

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہا ने भी मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई जैसा कि हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہا फ़रमाती हैं : जब **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीना शरीफ़ की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई तो हमें और अपनी शहज़ादियों رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہُنَّ को पीछे छोड़ दिया फिर जब मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में क़ियाम पज़ीर हो गए तो ज़ैद बिन ह़ारिसा, इन के साथ अबू राफ़ेअ़ और अबू बक्र **अ़ब्दुल्लाह** बिन उरैक़त़ رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن को मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا भेजा और **अ़ब्दुल्लाह** बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہُ को ख़त़ लिखा कि वोह उम्मे रूमान और अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہُما को सुवार कर के मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا की त़रफ़ भेज दें, इत्तिफ़ाक़ से वोह सब ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہُ से मिल गए वोह भी हिजरत का इरादा किये हुए थे, चुनान्चे फिर येह सब लोग इकठ्ठे सफ़र पर निकले। **(الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، فصل فیمن عرف بالکنیۃ من النساء، حرف الراء أمّ رومان، ۸/۴۴۰)**

﴾3﴿...... आस्मान से पाक दामनी की गवाही

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **ने मेरी बराअत और पाक दामनी का बयान आस्मान से नाज़िल फ़रमाया।**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चार मक़्बूल बन्दों की चार त़रीक़ों से बराअत बयान फ़रमाई :

(1)...... ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की बराअत एक दूध पीते बच्चे से। **(پ۱۲، یوسف:۲۶)**

(2)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की बराअत एक पथ्थर के ज़रीए जो आप عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के कपड़े ले उड़ा। (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 791)

(3)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہا की बराअत आप के फ़रज़न्द ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की क़ब्ल अज़ वक़्त गोयाई के ज़रीए **(پ۱۶، مریم:۳۰)**

(4)...... **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہا पर जब तोहमत जोड़ी गई तो उन की पाक दामनी की गवाही ख़ुद रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने दी। **(پ۱۸، النور:۱۱تا۲۶)**

अगर वोह चाहता तो एक एक दरख़्त और पथ्थर से गवाही दिलवाता। मगर मन्ज़ूर हुवा कि अपने मह़बूब की मह़बूबा (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہا) की त़हारत व पाकी पर ख़ुद गवाही दें और इन की इ़ज़्ज़त व इम्तियाज़ बढ़ाएं।

www.dawateislami.net

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी — उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम
या'नी है सूरए नूर जिन की गवाह — उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 311)

दी गवाही आप की इ़फ़्फ़त की सूरए नूर ने — मद्ह़ करता है तेरी इ़स्मत की क़ुरआने मुबीं
आयए तत़्हीर में है उन की पाकी का बयां — हैं येह बीबी त़ाहिरा शोहर इमामुत्त़ाहिरीं

(दीवाने सालिक, स. 31)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿.... सय्यिदह आ़इशा को क़ब्ल अज़ निकाह़ तीन दफ़्आ़ ख़्वाब में देखा

निकाह़ से क़ब्ल ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **ने एक रेशमी कपड़े में मेरी सूरत ला कर ह़ुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **को दिखला दी थी और आप तीन रातें ख़्वाब में मुझे देखते रहे,** चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : ''मुझ से **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने तुम्हें ख़्वाब में देखा तुम्हें फ़िरिश्ता रेशमी टुकड़े में लाता था। मुझ से कहता था कि येह तुम्हारी बीवी हैं। मैं ने तुम्हारे रुख़ से कपड़ा हटाया तो तुम थीं। मैं ने कहा : अगर येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है तो इसे पूरा फ़रमाएगा।''

(صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب النظر الی المرأۃ قبل التزویج، ص ۱۳۲۰، الحدیث:۵۱۲۵)

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुए फ़रमाते हैं : कभी तो ख़्वाब में ह़ुज़ूर पर जनाबे आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا रेशमी टुकड़े में पेश की जाती थीं कभी ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की हथेली पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की सूरत नक़्श की जाती थी इन दोनों वाक़िओ़ं का ज़िक्र अह़ादीस में है या'नी ह़ज़रते आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا), रब तआ़ला की त़रफ़ से आप की ज़ौजिय्यत के लिये मुन्तख़ब हैं येह आप के लिये रब तआ़ला का तोह़फ़ा हैं समझ लो कि रब का तोह़फ़ा किस शान का होगा !

ख़याल रहे कि यहां (इस ह़दीस में मज़्कूर लफ़्ज़) ''**اِنْ یَّکُ**'' (या'नी अगर येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है) शक के लिये नहीं जैसे बादशाह कहे कि अगर मैं बादशाह हूं तो तुझ को येह इन्आ़म दूंगा चूंकि येह ख़्वाब रब तआ़ला की त़रफ़ से है लिहाज़ा हो के रहेगी। ख़याल रहे कि नबी

www.dawateislami.net

का ख़्वाब वह्य होती है ख़्वाह ज़ुहूरे नुबुव्वत के बा'द हो या पहले, देखो ! हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सज्दा वाली ख़्वाब आप की नुबुव्वत से पहले थी मगर "वह्ये मनामी" थी।
(مراۃ المناجیح، کتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبی، ۸/۴۹۸)

《5》...... एक ही बरतन के पानी से ग़ुस्ल

मैं और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **एक ही बरतन में से पानी ले ले कर ग़ुस्ल किया करते थे येह शरफ़ मेरे सिवा अज़्वाजे मुतह्हरात** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ **में से किसी को भी नसीब नहीं हुवा,** ख़ुद फ़रमाती हैं कि मैं और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बरतन से ग़ुस्ल किया करते थे जो मेरे और आप के सामने होता। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ पर जल्दी फ़रमाते ह़त्ता कि मैं कहती : मेरे लिये भी छोड़िये, मेरे लिये भी छोड़िये।
(صحیح مسلم، کتاب الحیض، باب القدر المستحب من الماء فی غسل الجنابۃ...الخ، ص۱۳۳، الحدیث:۳۲۱)

《6》...... नमाज़े मुस्त़फ़ा और आरामे आइशा

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **नमाज़े तहज्जुद पढ़ते थे और मैं आप के आगे सोई रहती थी। उम्महातुल मुअमिनीन में से कोई भी हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की इस करीमाना मह़ब्बत से सरफ़राज़ नहीं हुई।**

हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से ही रिवायत है फ़रमाती हैं कि मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने सोई होती थी और मेरे पाउं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़िब्ले की जानिब होते। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सज्दा फ़रमाते तो मुझे दबा देते मैं अपने पाउं समेट लेती और जब खड़े होते तो मैं पाउं फैला देती।
(صحیح البخاری، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی الفراش، ص۱۷۰، الحدیث:۳۸۲)

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी जब तक हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तहज्जुद का क़ियाम व रुकूअ़ फ़रमाते मैं इत़्मीनान से पाउं फैलाए सोई रहती और जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सज्दे का वक़्त होता तो मुझे इशारा कर देते जब मैं पाउं समेटती तब सज्दे के लिये जगह बनती और आप सज्दा करते।

मज़ीद फ़रमाते हैं : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا क़िब्ले की त़रफ़ पाउं नहीं फैलाती थीं कि वोह मन्अ़ है बल्कि आप के पाउं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने क़िब्ले की त़रफ़ होते थे। इस

www.dawateislami.net

हदीस से तीन मस्अले मा'लूम हुए :

(1)...... नमाज़ में थोड़ा अमल जाइज़ है। (2)...... औरत को छूना वुज़ू नहीं तोड़ता अगर्चे बिग़ैर आड़ के हो क्यूं कि यहां आड़ की क़ैद नहीं आई। (3)...... औरत का नमाज़ी के आगे होना नमाज़ ख़राब नहीं करता। (مراۃ المناجیح، کتاب الصلاۃ، سترہ کا بیان،۲/۹)

﴾7﴿...... लिहाफ़े आइशा में नुज़ूले वह्य

मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **के साथ एक लिहाफ़ में सोती रहती थी और आप पर ख़ुदा की वह्य नाज़िल हुवा करती थी येह वोह ए'ज़ाज़े ख़ुदा वन्दी है जो मेरे सिवा हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की किसी ज़ौजए मुतह्हरा को हासिल नहीं हुवा,** जैसा कि एक हदीस शरीफ़ में ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब मैं किसी बीवी के बिस्तर में होता हूं तो मुझ पर वह्य नहीं आती सिवाए आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) के (या'नी जब मैं आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) के बिस्तर में होता हूं तब भी मुझ पर वह्य नाज़िल हो जाती है)।

(صحیحُ البخاری، کتاب الھبة وفضلها والتحريض عليها، باب من اهدى الٰى صاحبه وتحرى ...الخ، ص٦٦٤، الحديث:٢٥٨١)

उन के बिस्तर में वह्य आए रसूलुल्लाह पर
और सलामे ख़ादिमाना भी करें रूहुल अमीं

(दीवाने सालिक, स. 31)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾8, 9﴿...... हुज़ूर का विसाले ज़ाहिरी

वफ़ाते अक़्दस के वक़्त मैं हुज़ूर को अपनी गोद में लिये हुए बैठी थी और आप का सरे अन्वर मेरे सीने और हल्क़ के दरमियान था और इसी हालत में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **का विसाल हुवा।**

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ने मेरी बारी के दिन वफ़ात पाई, चुनान्चे** बुख़ारी शरीफ़ में उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से ही मरवी है फ़रमाती हैं : मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जो ने'मतें हैं उन में से येह भी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे घर, मेरे दिन, मेरे गले और सीने के दरमियान वफ़ात पाई।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاته، ص١١٠٣، الحديث:٤٤٤٩)

www.dawateislami.net

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : वफ़ात शरीफ़ के वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते उम्मुल मुअमिनीन आइशा सिद्दीक़ा के सीने पर तक्या लगाए थे उस वक़्त आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का सीना अ़र्शे आ'ज़म से अफ़्ज़ल था।

जिन का पहलू हो नबी की आख़िरी आराम गाह
जिन के हुजरे में क़ियामत तक नबी हैं जा गुज़ीं

(दीवाने सालिक, स. 31)

मज़्कूरा हदीसे पाक की अगली इबारत के तहत मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : येह उम्मुल मुअमिनीन पर रब तआ़ला का दूसरा एहसाने अ़ज़ीम है कि आख़िरी फ़ैज़ हुज़ूरे अन्वर का इन्हें इस त़रह़ नसीब हुवा। उस वक़्त आप (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) वोह इबादत कर रही थीं जो अ़र्श व फ़र्श में किसी को मुयस्सर न थी। (मिरआतुल मनाजीह, हुज़ूर की वफ़ात का बयान, जि. 8, स. 288)

﴾10﴿...... हुज़ूर का रौज़ा हुज्रए आइशा में

हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की क़ब्रे अन्वर ख़ास मेरे घर में बनी।** बुख़ारी शरीफ़ में उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है, फ़रमाती हैं : हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने म-रज़े विसाल में मेरी बारी में देर का एहसास कर के इस तरह कोफ़्त का इज़्हार फ़रमाते थे : आज मैं कहां हूं, कल मैं कहां रहूंगा। जब मेरी बारी का दिन हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें इस हाल में उठाया कि मेरे सीने और गले के दरमियान थे और मेरे घर में दफ़्न हुए।

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب ما جاء فی قبر النبی ...الخ، ص۳۸۸، الحدیث:۱۳۸۹)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस हदीस शरीफ़ से उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की एक और ख़ुसूसिय्यत भी इयां होती है कि सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की बारी में देर का एहसास फ़रमा कर कोफ़्त का इज़्हार फ़रमाते थे हत्ता कि बार बार इस्तिफ़्सार फ़रमाया करते कि आज मैं कहां हूं और कल कहां होउंगा। शारेहे बुख़ारी मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस हदीस शरीफ़ के तहत फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के साथ कितनी महब्बत थी। इस से हज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की अ़-ज़मत का अन्दाज़ा लगाएं कि वोह

www.dawateislami.net

महबूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महबूब हैं इस लिये जो बद नसीब ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से अदावत रखे ह़क़ीक़त में वोह महबूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दुश्मन है। (نزہۃ القاری، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی قبر النبی ۔۔۔ الخ، ۲/۸۷۹)

आख़िरी आराम गाहे मुस्त़फ़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **862** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"सीरते मुस्त़फ़ा"** सफ़ह़ा **551** पर शैख़ुल ह़दीस अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तदफ़ीन का वाक़िआ़ बयान करते हुए नक़्ल फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِین में येह इख़्तिलाफ़ रूनुमा हुवा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कहां दफ़्न किया जाए कुछ लोगों ने कहा कि मस्जिदे न-बवी में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मदफ़न होना चाहिये और कुछ ने येह राय दी कि आप को सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِین के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करना चाहिये। इस मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि हर नबी अपनी वफ़ात के बा'द उसी जगह दफ़्न किया जाता है जिस जगह उस की वफ़ात हुई हो। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि इस ह़दीस को सुन कर लोगों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिछोने को उठाया और उसी जगह (हुज्रए आइशा) में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्र तय्यार की और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसी में मदफ़ून हुए। (سنن ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ذكر وفاته ودفنه، ص ٢٦١، الحديث:١٦٢٨)

आप के दौलत कदे में दौलते दारैन है
इस ज़मीं पर फिर न क्यूं क़ुरबान हो अ़र्शे बरीं

(दीवाने सालिक, स. 31)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾11, 12﴿...... लुआ़बे आइशा लुआ़बे मुस्त़फ़ा से मिला

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ने आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا **की नर्म की हुई मिस्वाक इस्ति'माल फ़रमाई और अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने सय्यि-दतुना आइशा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا **और हुज़ूरे अन्वर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **के लुआ़ब को जम्अ़ फ़रमाया,** चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जो मुझ पर ने'मतें हैं उन में से येह भी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लुआ़ब और हुज़ूरे अक़्दस

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लुआ़ब को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के वक़्त जम्अ़ फ़रमाया इस त़रह़ कि मेरे पास अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا आए उन के हाथ में मिस्वाक थी और मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तक्या दिये बैठी थी मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की त़रफ़ देख रहे हैं। मैं जानती थी कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मिस्वाक चाहते हैं, चुनान्चे मैं ने अ़र्ज़ की : क्या मैं इसे आप के लिये ले लूं ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सर से इशारा फ़रमाया कि हां। लिहाज़ा मैं ने उसे ले लिया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मिस्वाक सख़्त हुई। मैं ने अ़र्ज़ की : क्या इसे आप के लिये नर्म कर दूं ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सरे मुबारक से इशारा फ़रमाया कि हां। चुनान्चे मैं ने नर्म कर दी। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे (अपने दांतों पर) फेरा और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने एक बरतन था जिस में पानी था। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दोनों हाथ पानी में डाल कर मुंह पर फेरने लगे और फ़रमाते थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, बेशक मौत की बहुत सख़्तियां हैं। फिर अपना हाथ खड़ा किया फिर फ़रमाने लगे कि ऊपर वाले साथियों में। ह़त्ता कि जान शरीफ़ क़ब्ज़ कर ली गई और आप का दस्ते मुबारक झुक गया।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاته، ص۱۱۰۳، الحدیث:۴۴۴۹، ملتقطًا)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़दीस शरीफ़ से उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की इन्तिहाई फ़ज़ीलत का इज़्हार होता है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की चबाई हुई मिस्वाक को इस्ति'माल फ़रमाया और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का लुआ़ब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लुआ़बे मुक़द्दस के साथ मिला। इस में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत और शरफ़ ह़ासिल हुवा, चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीस शरीफ़ के तह़त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि जैसे हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की नज़र से नज़र मिलना, हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के हाथ से हाथ मिलना, हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के क़दम से किसी का सर मिलना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बड़ी ने'मत है। यूंही हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लुआ़ब से लुआ़ब मिलना भी उस की बड़ी ने'मत बल्कि येह आख़िरी ने'मत और ख़ास कर उसी आख़िरी वक़्त में जब कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ज़ाहिरी फ़ुयूज़ ब ज़ाहिर ख़त्म हो रहे थे सिर्फ़ ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ही को नसीब हुई। (मिरआतुल मनाजीह़, हुज़ूर की वफ़ात का बयान, जि. 8, स. 288)

www.dawateislami.net

हयात शरीफ़ की आख़िरी साअ़ात में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नक़ाहत बहुत ज़ियादा थी इसी वज्ह से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मिस्वाक सख़्त हुई और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस को चबा कर नर्म न कर सके, लिहाज़ा सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने नर्म कर के दी फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को अपने दन्दाने मुबारक पर फेरा।

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि मक़्बूलीने बारगाह पर येह कमज़ोरी ब-दनी होती है रूहानी नहीं, रूह इन की बहुत क़वी होती है लिहाज़ा येह ए'तिराज़ नहीं कि जब वोह ख़ुद इतने कमज़ोर हो जाते हैं तो बा'दे वफ़ात किसी की मदद क्या करेंगे। **(المرجع السابق)**

हुज़ूर पर आलमे नज़्अ़ की सख़्तियों की हिक्मत

हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर जो आलमे नज़्अ़ की सख़्तियां हुईं उस की हिक्मत बयान करते हुए मुफ़्ती साहिब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर येह सख़्ती सारी उम्मत के लिये तस्कीने ख़ातिर का बाइस है कि कोई शख़्स इस सख़्ती से घबरा न जावे, अपने नबी की सकरात को पेशे नज़र रखे हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की हर अदा बेचैन दिलों का चैन है। इस मौक़अ़ पर "**لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ**" फ़रमाना भी तस्कीने दिल के लिये है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से चैन आता है, **اَلَا بِذِکْرِ اللّٰہِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ﴿۲۸﴾ (پ۱۳، الرعد:۲۸)** (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है।)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दे बा'ज़ हालात में दुन्यवी बातें नहीं कर सकते मगर **ज़िक्रुल्लाह** करते हैं जैसे (हज़रते सय्यिदुना) ज़-करिय्या عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक मौक़अ़ पर तीन दिन तक किसी से कलाम न कर सके मगर **ज़िक्रुल्लाह** करते रहे। इसी तरह हुज़ूरे अन्वर ने उस वक़्त मिस्वाक ज़बान से न मांगी मगर येह ज़िक्र के अल्फ़ाज़ ज़बान से अदा किये।

(मिरआतुल मनाजीह, हुज़ूर की वफ़ात का बयान, जि. 8, स. 289)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औरतों के लिये मिस्वाक का हुक्म

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ग्यारहवीं इन्फ़िरादिय्यत में मज़्कूर हदीसे पाक में इस बात का भी तज़्किरा है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मिस्वाक चबा कर नर्म कर के सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दी फिर आप

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को अपने दन्दाने मुबारक पर फेरा इस्लामी बहनों के लिये मिस्वाक करने का हुक्म बयान करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان एक सुवाल के जवाब में फ़रमाते हैं : इन के लिये उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सुन्नत है लेकिन अगर वोह न करें तो ह़रज नहीं । इन के दांत और मसूढ़े ब निस्बत मर्दों के कमज़ोर होते हैं मिस्सी (एक क़िस्म का मन्जन) काफ़ी है ।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हि़स्सए सिवुम, स. 357)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा फ़ज़ाइल उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वोह **12** फ़ज़ाइल हैं जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ुद बयान फ़रमाया करती थीं और इन के बाइस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दीगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ पर इम्तियाज़ी शान ह़ासिल थी इन के इलावा मुख़्तलिफ़ रिवायात में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की और बहुत सी ख़ुसूसिय्यात का ज़िक्र मिलता है जिन में से बा'ज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ख़ुद बयान फ़रमाईं, चुनान्चे एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन सफ़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और इन के साथ एक और शख़्स उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुए तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन में से किसी एक से कहा : ऐ फुलां ! क्या तुम ने ह़दीसे ह़फ़्सा सुनी है ? उन्हों ने कहा : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! जी हां ! तो **अ़ब्दुल्लाह** बिन सफ़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! वोह ह़दीस क्या है ? फ़रमाया : मेरे ऐसे **9** ख़साइल हैं जो मुझ से पहले किसी औ़रत को अ़त़ा नहीं हुए मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो ह़ज़रते सय्यि-दतुना मरयम बिन्ते इमरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अ़त़ा फ़रमाया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं येह बात दीगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के मुक़ाबले में अपने ऊपर फ़ख़्र करने के लिये नहीं कहती ।

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन सफ़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! वोह ख़साइल क्या हैं ? फ़रमाया : **(1, 2)**...... फ़िरिश्ता **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास मेरी तस्वीर लाया तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से निकाह़ फ़रमाया दरआं ह़ाल येह कि मेरी उ़म्र **7** साल थी **(3)**...... और जब **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मेरी रुख़्सती हुई उस वक़्त मेरी उ़म्र **9** साल थी **(4)**...... **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब मुझ से निकाह़ फ़रमाया उस वक़्त मैं कुंवारी थी और दीगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात को येह ख़ुसूसिय्यत ह़ासिल नहीं हुई । **(5)**...... **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर

www.dawateislami.net

इस हाल में भी वह्य आती थी कि मैं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक ही लिहाफ़ में होते थे। **(6)**...... मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा महबूब थी। **(7)**...... मेरे बारे में कुरआने पाक की आयात नाज़िल हुई दरआं हाल येह कि इस मुआ-मले में उम्मत हलाकत के क़रीब थी। **(8)**...... मैं ने जिब्रील عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को देखा और मेरे सिवा अज़्वाजे मुतहहरात में से किसी ने जिब्रील عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को नहीं देखा। **(9)**...... **आप** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रूहे मुबारक मेरे घर में क़ब्ज़ फ़रमाई गई उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास फ़िरिश्तों के और मेरे इलावा कोई और न था।

(المستدرک علی الصحیحین للحاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب ذکر تسع خلال عائشۃ...الخ، ۱۲/۵، الحدیث: ۶۷۹۰)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस रिवायत से उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की मज़ीद दर्जे ज़ैल ख़ुसूसिय्यात भी ज़ाहिर व बाहिर होती हैं :

﴾13﴿...... हबीबए हबीबे ख़ुदा

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **से सब से ज़ियादा महब्बत फ़रमाते थे। दा'वते इस्लामी** के इशाअती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ 60 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **"उम्महातुल मुअमिनीन"** सफ़हा 26 पर है : हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के आ'ज़म फ़ज़ाइलो मनाक़िब में से इन से हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बहुत ज़ियादा महब्बत फ़रमाना भी है। हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि एक दफ़आ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने ना'लैने मुबारक में पैवन्द लगा रहे थे जब कि मैं चरख़ा कात रही थी। मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए पुरनूर को देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक पेशानी से पसीना बह रहा था और उस पसीने से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की (नूरानी) पेशानी चमक रही थी आप फ़रमाती हैं मैं हैरान हुई। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी तरफ़ निगाहे करम उठा कर फ़रमाया : किस बात पर हैरान हो ? सय्यिदह फ़रमाती हैं, मैं ने अर्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ देखा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस पेशानी के पसीने और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पसीनए मुबारक से निकलते हुए नूर ने मुझे हैरान कर दिया है (इस पर) हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी तरफ़ उठे और मेरी दोनों आंखों के दरमियान बोसा दिया और इर्शाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे तुम मुझ से इतनी मसरूर नहीं हुई जितना मैं तुम से मसरूर हुवा।

(حلية الاولياء، عائشة زوج رسول الله، ٢/٥٦، الحديث:١٤٦٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक दफ़्अ़ा मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **اَیُّ النَّاسِ اَحَبُّ اِلَیْکَ** लोगों में आप को ज़ियादा प्यारा कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : ''आ़इशा।'' (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

(صحيح البخارى، كتاب فضائل اصحاب النبى، باب قول النبى لوكنت متخذا خليلاً، ص٩٢٩، الحديث:٣٦٦٢)

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीस शरीफ़ की शर्ह़ में तह़रीर फ़रमाते हैं : मह़ब्बत की बहुत क़िस्में हैं : एक मह़ब्बत आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से ज़ियादा है दूसरी क़िस्म की मह़ब्बत ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से ज़ियादा। लिहाज़ा येह ह़दीस इस ह़दीस के ख़िलाफ़ नहीं कि इस सुवाल के जवाब में फ़रमाया : मुझे बहुत प्यारी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं और मर्दों में उन के ख़ावन्द।

(مراٰۃ المناجیح، کتاب المناقب، باب مناقب ابی بکر، ٨/٣٥٠)

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर शअ़बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मेरे पास एक आदमी आया उस ने मुझ से कहा : मेरे नज़्दीक तमाम उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ, ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से ज़ियादा मह़बूब हैं। मैं ने कहा : तूने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुख़ा-लफ़त की क्यूं कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा मह़बूब थीं।

(المستدرك على الصحيحين للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، باب افضل الرجال ابوبكر وافضل النساء عائشة، ٥/١٦، الحديث:٦٨٠٢)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात से ज़ियादा मह़बूब थीं और चन्द अज़्वाज में मह़ब्बत में बराबरी वाजिब भी नहीं और न ही येह मुम्किन है, चुनान्चे हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जिस का मैं मालिक हूं उस में, मैं अ़द्ल करता हूं उस बारे में मुझ से मुआ-ख़ज़ा न फ़रमाना जिस का मैं मालिक नहीं।

(نزہۃ القاری، کتاب الھبۃ وفضلھا، باب قبول الھدیۃ، ٣/٧٥٥)

www.dawateislami.net

﴾14﴿...... ह़याते ज़ाहिरी के आख़िरी लम्ह़ात की क़ुर्बत

नबिय्ये अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की ह़यात शरीफ़ के आख़िरी लम्ह़ात में फ़िरिश्तों और सय्यि-दतुना आ़इशा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **के सिवा हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के पास और कोई न था ।**

﴾15﴿...... जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **की ज़ियारत की ।** चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ियारत करने का वाक़िआ़ ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाती हैं : मैं ने जिब्रील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपने इस हुजरे में खड़े हुए देखा और **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन से सरगोशी फ़रमा रहे थे, फिर जब नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अन्दर तशरीफ़ लाए तो मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कौन हैं ? फ़रमाया : तुम इन को किस के साथ तश्बीह देती हो ? अ़र्ज़ की : दिह़या कल्बी के साथ । इर्शाद फ़रमाया : तुम ने ख़ैरे कसीर देखी, येह जिब्रील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام थे ।

फ़रमाती हैं कि मैं थोड़ी ही देर ठहरी थी ह़त्ता कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ! येह जिब्रील तुम्हें सलाम कहते हैं । फ़रमाती हैं कि मैं ने कहा : "**وَعَلَيْهِ السَّلَامُ جَزَاهُ اللّٰهُ مِنْ دَخِيْلٍ خَيْرًا**" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन को राज़दार की त़रफ़ से जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए ।"

(المستدرك على الصحيحين للحاكم ، كتاب معرفة الصحابة، رؤية عائشة جبريل وسلامه عليها، ٥/٩، الحديث:٦٧٨٢)

﴾16﴿...... जिब्रीले अमीन का सलाम कहना

ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **ने आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **को सलाम कहा ।**

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस रिवायत से उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की एक और ख़ुसूसिय्यत मा'लूम हुई कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को सलाम कहा ।

www.dawateislami.net

अ़र्श से जिस पे तस्लीम नाज़िल हुई
उस सराए सलामत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 310)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

और एक रिवायत में मज़ीद इन दो खु़सूसिय्यात का ज़िक्र भी है :

﴾17﴿...... वालिद लोगों में सब से ज़ियादा मह़बूब

मेरे वालिद आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **को सब से ज़ियादा मह़बूब थे ।** जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को लोगों में से सब से ज़ियादा मह़बूब कौन है ? फ़रमाया : आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) । अ़र्ज़ की गई : हमारी मुराद आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मुत़ह्हरा नहीं है । फ़रमाया : तो अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ।

(المستدرک علی الصحیحین للحاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب افضل الرجال ابوبکر وافضل النساء عائشۃ، ۴/۱۵، الحدیث:۶۷۹۹)

मयका व सुसराल आ'ला आप खु़द हैं बेहतरीं — आप सिद्दीक़ा, पिदर सिद्दीक़ और शोहर नबी
सब तो हैं मोमिन मगर हैं आप उम्मुल मुअमिनीं — क्यूं न हो रुत्बा तुम्हारा अहले ईमां में बड़ा

(दीवाने सालिक, स. 31)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾18﴿.... हु़ज़ूर की ह़याते ज़ाहिरी के आख़िरी अय्याम में तीमार दारी

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ने मेरे घर में म-रज़ुल मौत के अय्याम गुज़ारे और मैं ने आप की तीमार दारी की ।** चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से ही रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने म-रज़े वफ़ात शरीफ़ में पूछते थे कि कल मैं कहां होउंगा ? कल मैं कहां होउंगा ? (रावी कहते हैं कि) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के (बारी के) दिन को पसन्द फ़रमा रहे थे, लिहाज़ा तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इजाज़त दे दी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जहां चाहें रहें फिर आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास रहे ह़त्ता कि इन्हीं के पास विसाल फ़रमाया ।

(صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب اذا استأذن الرجل نساءہٗ فی ان یمرض...الخ، ص۱۳۴۱، الحدیث:۵۲۱۷)

www.dawateislami.net

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : येह है हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का अ़दलो इन्साफ़, जब इतना (अ़द्ल) करे तो चन्द बीवियां रखे, आज मुसल्मानों ने **4** बीवियों की इजाज़त की आयत तो पढ़ ली, अ़द्ल की आयत से आंखें बन्द कर ली हैं आज जिस क़दर ज़ुल्म मुसल्मान अपनी बीवियों पर कर रहे हैं इस की मिसाल नहीं मिलती, नबी की ता'लीम क्या है और उम्मत का अ़मल क्या ? (مراٰۃ المناجیح،کتاب النکاح،باب القسم،۸۲/۵)

"**तफ़्सीरे क़ुरतुबी**" पारह **18**, सूरए नूर की आयत नम्बर **26** के तह़त उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ही की एक रिवायत में मज़ीद दर्जे ज़ैल ख़ुसूसिय्यात का ज़िक्र है :

《19》...... हुज्रए मुबा-रका फ़िरिश्तों के झुरमट में

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह पहले बयान किया जा चुका है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर ख़ास ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुज्रए मुबा-रका में है और ह़दीस शरीफ़ में है कि रोज़ाना **70** हज़ार फ़िरिश्ते उतरते हैं और हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मरक़द मुबारक को घेर लेते हैं, लिहाज़ा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को येह फ़ज़ीलत व ख़ुसूसिय्यत भी ह़ासिल हुई कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुज्रए मुबा-रका को फ़िरिश्ते घेरे रहते हैं, चुनान्चे एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए सब ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र किया तो जनाबे का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बोले हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उतरते हैं ह़त्ता कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर को घेर लेते हैं अपने परों को बिछा देते हैं और रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहते हैं ह़त्ता कि जब शाम पाते हैं तो वोह चढ़ जाते हैं और फिर इन की मिस्ल (या'नी सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते) उतरते हैं वोह भी इसी त़रह़ करते हैं ह़त्ता कि जब ज़मीन खुलेगी तो हुज़ूर **70** हज़ार फ़िरिश्तों के झुरमट में निकलेंगे जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को (रब तआ़ला तक) पहुंचाएंगे।

(سنن الدارمی، المقدمۃ، باب ما أکرم اللّٰہ تعالٰی نبیہ صلّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم بعد موتہ، ص۵۹، الحدیث:۹۵)

www.dawateislami.net

सत्तर हज़ार सुब्ह हैं सत्तर हज़ार शाम
यूं बन्दगिये ज़ुल्फ़ो रुख़ आठों पहर की है

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 220)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीस शरीफ़ के तहत लिखते हैं : ख़याल रहे कि हमेशा सारे फ़िरिश्ते ही हुज़ूर पर दुरूद भेजते हैं (जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :) **اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ** (پ۲۲، الاحزاب:۵۶) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर) मगर येह **70** हज़ार फ़िरिश्ते वोह हैं जिन को उम्र में एक बार हाज़िरिये दरबार की इजाज़त होती है येह हज़रात हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ब-र-कत हासिल करने को हाज़िरी देते हैं। (مرآۃ المناجیح، کتاب الفضائل والشمائل، باب الکرامات، ۸/۲۸۲)

जो एक बार आए दोबारा न आएंगे — रुख़्सत ही बारगाह से बस इस क़दर की है
मा'सूमों को है उम्र में सिर्फ़ एक बार बार — आसी पड़े रहें तो सिला उम्र भर की है
छाए मलाएका हैं लगातार है दुरूद — बदले हैं पहरे बदली में बारिश दुरर की है

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 219 ता 221)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾20﴿...... ख़लीफ़ा और सिद्दीक़ की बेटी

मैं नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिद्दीक़ की बेटी हूं।

﴾21﴿...... तय्यिब के पास तय्यिबा पैदा की गई

मैं तय्यिबा पैदा की गई और तय्यिब के पास पैदा की गई हूं।

(تفسیرِ قرطبی، سورۃ النور، تحت الآیۃ:۲۶، ۶/۳۰۱۶)

﴾22﴿...... मग़्फ़िरत और रिज़्क़े करीम का वा'दा

मुझ से मग़्फ़िरत और रिज़्क़े करीम का वा'दा फ़रमाया गया।

जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۲۶﴾
(پ۱۸، النور:۲۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : गन्दियां गन्दों के लिये और गन्दे गन्दियों के लिये और सुथरियां सुथरों के लिये और सुथरे सुथरियों के लिये वोह पाक हैं उन बातों से जो येह कह रहे हैं उन के लिये बख़्शिश और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है।

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ाफ़िज़ सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयते मुबा-रका के तह़त फ़रमाते हैं : इस आयत से ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का कमाले फ़ज़्लो शरफ़ साबित हुवा कि वोह त़य्यिबा और पाक पैदा की गई और कुरआने करीम में उन की पाकी का बयान फ़रमाया गया और उन्हें मग़्फ़िरत और रिज़्क़े करीम का वा'दा दिया गया। (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 18, सू-रतुन्नूर, तह़्तल आयह : 26, स. 654)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : आयत का मक़्सद येह है कि कोई मेह़रबान बाप अपनी औलाद का निकाह़ बुरी औ़रत से नहीं करता ख़ूब देखभाल कर तह़क़ीक़ात कर के निकाह़ करता है तो मैं मेह़रबान रब अपने मह़बूबे अत़्हर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का निकाह़ किसी बुरी औ़रत से कैसे कराता। अच्छों के लिये अच्छी और बुरों के लिये बुरी औ़रतें मौज़ूं हैं। या येह मत़लब है कि ख़बीस लोग, ख़बीस ख़स्लतें और अच्छे लोग अच्छी ख़स्लतें इख़्तियार करते हैं, तो मुसल्मानों की मां और सुल्त़ाने अम्बिया की ज़ौजा, सिद्दीक़े अक्बर की नूरे चश्म ह़ज़रत (सय्यि-दतुना आ़इशा) सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) किसी बुरे काम का इरादा भी कैसे कर सकती हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पारह : 18, सू-रतुन्नूर, तह़्तल आयह : 26, स. 424)

शम्ए ताबाने अ़र्श आस्ताने नबी — ग़म गुसारे नबी तब्अ़ दाने नबी
राह़ते क़ल्बो रूह़े रवाने नबी — बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी
उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम

(शर्हे कलामे रज़ा, से 1059)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मज़ीद ख़ुसूसिय्यात

﴾23﴿...... तहाइफ़ की कसरत

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا **की बारी में तहाइफ़ की कसरत होती,** चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि लोग अपने तोहफ़ों के लिये हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के दिन की जुस्त-जू करते थे इस से वोह लोग **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मरज़ी चाहते थे। (صحیح البخاری، کتاب الهبة وفضلها......الخ، باب قبول الهدية،ص٦٦٣، الحديث:٢٥٧٤)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : लोग जानते थे कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को जनाबे आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से महब्बत है इन के ज़रीए से जो तोहफ़ा हमारा हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) तक पहुंचेगा वोह हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बारगाह में ज़ियादा क़बूल होगा। अब भी मुसल्मानों को चाहिये कि जो ईसाले सवाब हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बारगाह में हाज़िर करें हज़रते आइशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) का वासिता ज़रूर इख़्तियार करें इन का नाम ज़रूर लिया करें। (مرأة المناجيح، كتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبى، ٤٩٨/٨)

शारेहे बुख़ारी मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی तहरीर फ़रमाते हैं : किसी की ख़ुशी के मौक़अ़ पर उसे हदिय्या पेश करना मुस्तहसन है।

(نزہۃ القاری، کتاب الھبۃ وفضلھا، باب قبول الھدیۃ، ٧٥٥/٣)

﴾24﴿...... दुन्या व आख़िरत में हुज़ूर की ज़ौजा

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا **को दुन्या व आख़िरत में हुज़ूरे अक्दस** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की ज़ौजा होने की बिशारत है,** चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सब्ज़ रेशमी कपड़े में उन की तस्वीर ले कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : येह दुन्या व आख़िरत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजा हैं।

(سنن الترمذی، ابواب المناقب عن رسول الله، باب فضل عائشة، ص٨٧٢، الحديث:٣٨٧٩)

www.dawateislami.net

﴾25﴿...... तमाम औरतों पर बुज़ुर्गी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا **की बुज़ुर्गी तमाम औरतों पर ऐसे है जैसे सरीद की तमाम खानों पर।** रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मर्दों में तो बहुत कामिल हुए, औ़रतों में सिवा फ़िरऔ़न की बीवी आसिया और मरयम बिन्ते इमरान के कोई कामिला न हुईं और जनाबे आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की बुज़ुर्गी सारी औ़रतों पर ऐसी है जैसे सरीद की बुज़ुर्गी तमाम खानों पर।

(صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب قول اللّٰہ تعالی: وَضَرَبَ اللّٰہُ مَثَلًا لِّلَّذِیۡنَ اٰمَنُوا امۡرَاَتَ فِرۡعَوۡنَ، ص۸۷٤، الحدیث:۳٤۱۱)

ह़ज़रते आ़इशा को सरीद से मुशा-बहत देने की वज्ह

शारेहे़ मिश्कात ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ली बिन सुल्त़ान मुह़म्मद क़ारी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی ज़िक्र कर्दा ह़दीस शरीफ़ के तह़्त अ़ल्लामा तोरपशती عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی से नक़्ल फ़रमाते हैं : कहा गया है : हु़ज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को सरीद से इस लिये तश्बीह दी क्यूं कि येह अ़रब के खानों में से अफ़्ज़ल खाना है और अहले अ़रब शिकम सैरी के मुआ़-मले में इस को सब से बेहतरीन खाना ख़याल करते थे। और कहा गया है कि अहले अ़रब उस सरीद को बहुत सराहते थे जिस को गोश्त के साथ पकाया गया होता और मरवी है : "**سَیِّدُ الطَّعَامِ اللَّحۡمُ**" या'नी खानों का सरदार गोश्त है।" ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को तमाम औ़रतों पर फ़ज़ीलत दी गई है जैसे गोश्त को तमाम खानों पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है।

इस में राज़ येह है कि गोश्त में बनाया हुवा सरीद ग़िज़ाइय्यत, लज़्ज़त और क़ुव्वत को जामेअ़ होता है, खाने में आसान होता है चबाने में मेह़नत कम करनी पड़ती है और खाने की नाली से तेज़ी से गुज़र जाता है, चुनान्चे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस के साथ मिसाल बयान फ़रमाई ताकि येह बात ज़ाहिर हो जाए कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को अच्छी सूरत व सीरत और शीरीं गुफ़्तार के साथ साथ फ़सीह़ लह्जा, उ़म्दा फ़ित़री सलाहि़य्यत, सन्जीदा राय और मज़्बूत़ व मुस्तह़्कम अ़क़्ल ख़ूबियां भी अ़त़ा की गई हैं, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ह़क़्क़े ज़ौजिय्यत, गुफ़्त-गू, मानूस होने और तवज्जोह का ज़ियादा ह़क़ रखती हैं और तुम्हें येही बात काफ़ी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से वोह वोह कुछ समझ जाती थीं जो दीगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात न समझ पाती थीं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से वोह अह़ादीस रिवायत करती हैं जिन की

www.dawateislami.net

मिस्ल मर्दों में से किसी ने रिवायत नहीं की।

(مرقاۃ المفاتیح ، کتاب احوال القیامۃ وبدء الخلق، باب بدء الخلق وذکر الانبیاء، ۱۰/۴۰۲، تحت الحدیث: ۵۷۲۴، ملتقطًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾26﴿...... सय्यि-दतुना आ़इशा और नुज़ूले आयते तयम्मुम

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا **के बाइस तयम्मुम का हुक्म उतरा। अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَ اِنۡ كُنۡتُمۡ مَّرۡضٰۤى اَوۡ عَلٰى سَفَرٍ اَوۡ جَآءَ اَحَدٌ مِّنۡكُمۡ مِّنَ الۡغَآئِطِ اَوۡ لٰمَسۡتُمُ النِّسَآءَ فَلَمۡ تَجِدُوۡا مَآءً فَتَيَمَّمُوۡا صَعِيۡدًا طَيِّبًا فَامۡسَحُوۡا بِوُجُوۡهِكُمۡ وَاَيۡدِيۡكُمۡ‌ؕ (پ۵، النساء:۴۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में या तुम में से कोई क़ज़ाए ह़ाजत से आया या तुम ने औ़रतों को छुवा और पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुंह और हाथों का मस्ह़ करो।

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ाफ़िज़ सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡہَادِی इस आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़ में जब लश्करे इस्लाम शब को एक बयाबान में उतरा जहां पानी न था और सुब्ह़ वहां से कूच करने का इरादा था वहां उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का हार गुम हो गया उस की तलाश के लिये सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वहां इक़ामत फ़रमाई सुब्ह़ हुई तो पानी न था **अल्लाह तआ़ला** ने आयते तयम्मुम नाज़िल फ़रमाई। उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने कहा कि ऐ आले अबू बक्र ! येह तुम्हारी पहली ही ब-र-कत नहीं है। या'नी तुम्हारी ब-र-कत से मुसल्मानों को बहुत आसानियां हुईं और बहुत फ़वाइद पहुंचे फिर ऊंट उठाया गया तो उस के नीचे हार मिला। हार गुम होने और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के न बताने में बहुत ह़िक्मतें हैं। ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के हार की वज्ह से क़ियाम उन की फ़ज़ीलतो मन्ज़िलत का मुश्इर (या'नी ख़बर देता) है। "सह़ाबा का जुस्त-जू फ़रमाना" इस में हिदायत है कि हुज़ूर की अज़्वाज की ख़िदमत मुअमिनीन की सआ़दत है और फिर हुक्मे तयम्मुम होना मा'लूम होता है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाज की ख़िदमत का ऐसा सिला है जिस से क़ियामत तक मुसल्मान मुन्तफ़ेअ़ होते रहेंगे। سُبۡحٰنَ اللّٰہ" (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 5, अन्निसाअ, तह़्तल आयह : 43, स. 167)

www.dawateislami.net

﴾27﴿...... सय्यिदह आ़इशा के हां दो रातें क़ियाम

सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **के हां दो रातें क़ियाम फ़रमाया करते थे,** जैसा कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से ही रिवायत है फ़रमाती हैं कि जब उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बूढ़ी हो गईं तो बोलीं : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने अपनी बारी का दिन सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दे दिया, चुनान्चे फिर रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये दो दिन मुक़र्रर फ़रमाए एक उन का अपना दूसरा ह़ज़रते सय्यि-दतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का।

(صحیح مسلم، کتاب الرضاع، باب جواز ھبتھا نوبتھا لضرتھا، ص۵۵۲، الحدیث:۱۴۶۳)

﴾28﴿...... सय्यिदह आ़इशा की फ़क़ीहाना शान

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **फ़क़ीहा व मुज्तहिदा थीं।** "**उ़म्दतुल क़ारी**" में है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अकाबिर फ़ु-क़हा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से थीं। (عُمْدَۃُ القاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی الی رسول اللہ، ۱/ ۳۸، تحت الحدیث: ۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन अबी रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सब लोगों से ज़ियादा फ़क़ीहा और आ़म लोगों से ज़ियादा अच्छी राय रखती थीं। (اسد الغابۃ، حرف العین، عائشۃ بنت ابی بکر الصّدیق، ۷/۱۸۹)

اَفْقَہُ نِسَاءِ الْاُمَّۃ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शम्सुद्दीन अबू **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद ज़हबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बारे में इर्शाद फ़रमाते हैं : "**اَفْقَہُ نِسَاءِ الْاُمَّۃِ عَلَی الْاِطْلَاقِ**" या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मुत़्लक़न उम्मत की तमाम औ़रतों से ज़ियादा फ़क़ीहा हैं। (سیر اعلام النبلاء، عائشۃ ام المؤمنین، ۲/۱۳۵)

मुश्किल कुशाई के लिये बारगाहे आ़इशा में ह़ाज़िरी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब पर जब भी कोई बात पेचीदा होती है तो हम उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस बारे में सुवाल करते हैं और आप

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के पास उस का इल्म पाते हैं।

(سنن الترمذی ، ابواب المناقب عن رسول اللہ ﷺ، با ب فضل عائشۃ رضی اللہ عنہا، ص۸۷۳، الحدیث:۳۸۸۲)

एक दक़ीक़ मस्अले का ह़ल

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی इस ह़दीस शरीफ़ की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : अज़् आदम ता ईं दम (या'नी अब तक) कोई बीबी ऐसी आ़लिमा फ़क़ीहा पैदा न हुई, जैसी जनाबे आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا हुईं। आप उ़लूमे क़ुरआनिया, उ़लूमे ह़दीस की जामेअ़ थीं, बड़ी मुह़द्दिसा, बड़ी फ़क़ीहा। सिर्फ़ एक मिसाल पेश करता हूं, किसी ने अ़र्ज़ किया कि ऐ उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ! क़ुरआन से मा'लूम होता है कि ह़ज व उ़म्रह में सफ़ा व मर्वह की सअ़्य वाजिब नहीं सिर्फ़ जाइज़ है। क्यूं कि रब ने फ़रमाया : فَلَا جُنَاحَ عَلَیۡہِ اَنۡ یَّطَّوَّفَ بِہِمَا ؕ (پ۲، البقرۃ:۱۵۸) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** इस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे) कि इन के सअ़्य में गुनाह नहीं। आप ने जवाब दिया अगर येह सअ़्य वाजिब न होती तो यूं इर्शाद होता, فَلَا جُنَاحَ عَلَیۡہِ اَنۡ لَّا یَطَّوَّفَ بِھِمَا (या'नी उस पर कुछ गुनाह नहीं जो इन दोनों के फेरे न करे।)

देखो ! इस एक जवाब में उसूले फ़िक़्ह का कितना दक़ीक़ मस्अला ह़ल फ़रमा दिया कि वाजिब की पहचान येह है कि उस के करने में सवाब न करने में गुनाह, जाइज़ की पहचान येह है कि उस के न करने में गुनाह न हो यहां आयते करीमा में पहली बात फ़रमाई गई है।

(مراٰۃ المناجیح، کتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبی، ۸/۵۰۵)

आप का इल्मो फ़िक़ह तह़क़ीक़े क़ुरआनो ह़दीस
देख कर हैरान हैं सारे स़ह़ाबा ताबिईं

(दीवाने सालिक, स. 32)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

29...... सय्यिदह आ़इशा की फ़सीह़ाना शान

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا **निहायत फ़सीह़ ज़बान बोलती थीं,** जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा बिन त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से ज़ियादा फ़सीह़ किसी को नहीं देखा।

(سنن الترمذی، ابواب المناقب عن رسول اللہ صَلَّی اللّٰہ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم، باب فضل عائشۃ رضی اللہ عنہا، ص۸۷۳، الحدیث:۳۸۸۳)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہا इलावा क़ुरआनो ह़दीस व फ़िक़्ह के आ़लिम होने के बड़ी शाइ़रा, इ़ल्मे अन्साब में बड़ी कामिल फ़साह़तो बलाग़त में बे मिसाल आ़लिमा थीं क्यूं न होतीं कि मह़बूबए मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन थीं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ की लख़्ते जिगर नूरे नज़र थीं हम सब की बाइ़से नाज़ क़ाबिले फ़ख़्र उम्मे मोह़-त-रमा जिन के गीत क़ुरआन गाता है।

(مراٰۃ المناجیح، کتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبی، ۸/۵۰۵)

﴾30, 31﴿...... इ़ल्मे फ़राइज़ और इ़ल्मे ति़ब की माहिर

आप رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہا इ़ल्मुल फ़राइज़ और इ़ल्मे ति़ब की भी माहिर थीं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہا से ज़ियादा इ़ल्मे फ़िक़्ह, ति़ब और शे'र को जानने वाला किसी को नहीं देखा।

(اسد الغابۃ، حرف العین، عائشۃ بنت ابی بکر الصِّدِّیق، ۷/۱۸۹)

﴾32﴿...... सह़ाबए किराम का रुजूअ़

सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को जब कोई मुश्किल मस्अला दरपेश होता तो आप رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہا की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाते।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अकाबिरीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी इ़ल्मुल फ़राइज़ के बारे में आप رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہا से सुवाल किया करते थे, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ से पूछा गया : क्या उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہا इ़ल्मुल फ़राइज़ को अच्छी त़रह़ जानती थीं ? फ़रमाया : जी हां, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अकाबिर व बुज़ुर्ग तरीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को देखा है कि वोह आप رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہا से फ़राइज़ के बारे में पूछा करते थे।

(مصنف ابن ابی شیبۃ ، کتاب الفرائض، ماقالوا فی تعلیم الفرائض، ۷/۳۲٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि जब मीरास के किसी मस्अले में लोगों का इख़्तिलाफ़ हो जाता तो वोह उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہا के पास आ जाते और आप رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہا उन को उस के बारे में बता देतीं।

(مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الفرائض، ما قالوا فی تعلیم الفرائض، ۷/۳۲۵)

www.dawateislami.net

﴾33﴿...... सब से ज़ियादा रिवायत करने वाली

उन 6 सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان में से थीं जिन्हों ने सब से ज़ियादा अहादीस रिवायत की।

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا उन छ6 सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان में से थीं जिन्हों ने दीगर तमाम सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से ज़ियादा रिवायात ज़िक्र कीं। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا ने **2210** अहादीस रिवायत की हैं जिन में से **174** अहादीस को हज़राते इमाम बुख़ारी व मुस्लिम رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡهِمَا दोनों ने ज़िक्र किया है और **54** अहादीस सिर्फ़ इमाम बुख़ारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡبَارِی ने और **58** अहादीस सिर्फ़ इमाम मुस्लिम رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने ज़िक्र की हैं।

(عمدة القاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدءُ الوحی الٰی رسول اللّٰہ، ۳۸/۱، تحت الحدیث:۲)

﴾34﴿...... दो तिहाई दीन आइशा से हासिल करो

नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا के बारे में सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان को इर्शाद फ़रमाया : तुम अपना दो तिहाई दीन इस हुमैरा (या'नी हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا) से हासिल करो।

(التفسیر الکبیر، الجزء الثانی والثلاثون، سورة القدر، تحت الآیة:۳، ۲۳۲/۱۱)

﴾35﴿...... हुजरए मुबा-रका में तीन चांद

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने ख़्वाब में देखा गोया कि मेरे हुजरे में तीन चांद गिरे मैं ने अपना ख़्वाब (अपने वालिद) हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ से बयान किया जब हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم विसाले ज़ाहिरी के बा'द हुजरए आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا) में जल्वा फ़रमा हुए तो हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने फ़रमाया : येह तुम्हारे चांदों में से पहला चांद है और येह चांद सब से बेहतर है (या'नी येह तुम्हारे ख़्वाब की ता'बीर है)।

(المستدرک علی الصحیحین للحاکم، کتاب تعبیر الرؤیا، رؤیا عائشة ثلاثة اقمار...الخ، ۵/ ۵۶۳، الحدیث:۸۲۵۳)

फिर इसी हुजरे में हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व हज़रते उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا की तदफ़ीन की गई।

(الطبقات الکبیر لابن سعد، ذکر موضع قبر رسول اللّٰہ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم، ۲۵۶/۲)

जब **उम्मुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا ने एक

www.dawateislami.net

ख़्वाब देखा था कि इन के हुज्रए मुबा-रका में आस्मान से तीन चांद उतरे हैं इस ख़्वाब की ता'बीर येह क़रार पाई कि वोह तीन चांद हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हैं जो कि हुज्रए आइशा में जल्वा फ़रमा हैं और इस में सय्यि-दतुना को जो फ़ज़ीलत हासिल है दीगर अज़्वाजे मुतह्हरात को नहीं क्यूं कि आप का हुज्रए मुबा-रका दूल्हाए काएनात और इन के दो मुक़द्दस वज़ीरों की आराम गाह है। (فیوض الباری،۹/۱۷۱،بتصرّفٍ قلیل)

हुज्रए आइशा और मद्फ़ने सिद्दीक़े अक्बर

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی नक़्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जनाज़ए मुबा-रका को जब रौज़ए अन्वर के सामने रखा गया और निदा की गई : **اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! अबू बक्र दरवाज़े पर है। (येह अ़र्ज़ करते ही) **दरवाज़ा** (ख़ुद बख़ुद) खुल गया और क़ब्रे मुबारक से ग़ैबी आवाज़ आई اُدْخِلُوا الْحَبِیْبَ اِلَی الْحَبِیْبِ या'नी महबूब को महबूब से मिला दो।

(التفسیر الکبیر، الجزء الحادی والعشرون، الکھف، تحت الآیات:۹-۱۲، ۷/۴۳۳)

तेरे क़दमों में जो हैं ग़ैर का मुंह क्या देखें
कौन नज़रों पे चढ़े देख के तल्वा तेरा

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 16)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हुज्रए आइशा और मद्फ़ने फ़ारूक़े आ'ज़म

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : जब मैं फ़ौत हो जाऊं तो मेरे जनाज़े को उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दरे दौलत पर पेश करना और सलाम अ़र्ज़ कर के कहना : उमर बिन ख़त्ताब (दफ़्न होने की) इजाज़त तलब करता है, अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इजाज़त दें तो मुझे अन्दर दफ़्न करना अगर इजाज़त न दें तो मुझे मुसल्मानों के क़ब्रिस्तान में ले जाना। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन्हें वहां दफ़्न करने की इजाज़त दे दी।

(اسد الغابة فی معرفة الصحابة، باب العین والمیم، عمر بن خطاب مقتله رضی الله عنه، ۴/۱۶۴،بتغیرٍ قلیلٍ)

महबूबे रब्बे अ़र्श है इस सब्ज़ क़ुब्बा में
पहलू में जल्वा गाह अ़तीक़ो उमर की है

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 219)

www.dawateislami.net

﴾36﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का मदफ़न

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने बाप से और वोह आप के दादा से रिवायत करते हैं कि तौरात शरीफ़ में ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिफ़त मज़्कूर है और उस में येह भी लिखा हुवा है कि "**ईसा बिन मरयम** عَلَيْهِ السَّلَام" सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ दफ़्न किये जाएंगे। अबू मौदूद फ़रमाते हैं कि हुज्रए मुबा-रका में एक क़ब्र की जगह बाक़ी है।

(سُنَنُ الترمذی، ابواب المناقب، باب ما جاء فی فضل النبی، ص۸۲۷، الحدیث:۳۶۲۶)

﴾37﴿...... हुज्रए सय्यि-दतुना आइशा की रिफ़्अ़त व बुलन्दी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ब-र-कत से उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुज्रए मुबा-रका की ज़मीन का वोह ह़िस्सा जो ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अक़्दस से मिला हुवा है वोह तमाम जगहों ह़त्ता कि का'बए मुअ़ज़्ज़मा और अ़र्शे आ'ला से भी अफ़्ज़ल है।

(حاشیة ابن عابدین، کتاب الحج، مطلب فی تفضیل قبرہ المکرم، ۶۲/۴)

मे'राज का समां है कहां पहुंचे ज़ाइरो — कुरसी से ऊंची कुरसी इसी पाक दर की है
क़ब्रे अन्वर कहिये या क़स्रे मुअ़ल्ला नूर का — चर्ख़े अत़्लस या कोई सादा सा क़ुब्बा नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 217, 247)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾38﴿...... जन्नत की क्यारी

क़ब्रे अन्वर से मिम्बर तक का ह़िस्सा जन्नत का बाग़ है, चुनान्चे ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मेरे घर और मिम्बर के दरमियान की जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मिम्बर मेरे ह़ौज़ पर है।

(صحیح البخاری، کتاب فضل الصلاۃ فی مسجد مکۃ والمدینۃ، باب فضل مابین القبروالمنبر، ص۳۴۲، الحدیث:۱۱۹۶)

फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस

www.dawateislami.net

हदीसे पाक के तहूत फ़रमाते हैं : इस पर इज्माअ है कि हदीस में "بَيْتِيْ" से मुराद बैते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا है। इस लिये कि दूसरी इसी मा'ना की हदीस में बजाए "بَيْتِيْ" के "قَبْرِىْ" है। जुम्हूर मुहद्दिसीन इस पर हैं कि येह हदीस अपने ज़ाहिर पर है और मुराद येह है कि येह मुक़द्दस हिस्सा बि ऐनिही जन्नत में जाएगा। दूसरी तावील येह है कि इतना हिस्सा जन्नत का टुकड़ा है, वहां से आया है जैसे ह-जरे अस्वद। तीसरी तौजीह येह है कि इस हिस्से में इबादत करनी दुख़ूले जन्नत का सबब है। येह भी बा'ज़ शराह ने फ़रमाया कि येह फ़िलहाल जन्नत का हिस्सा है मगर दुन्या में रहने की वज्ह से इस में वोह ख़वास व लवाज़िम नहीं जो जन्नत के हैं म-सलन गरमी सर्दी न होना, भूका प्यासा न होना वग़ैरा वग़ैरा।

येह (या'नी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान "**मेरा मिम्बर मेरे हौज़ पर है**") भी अपने ज़ाहिर पर है या'नी बि ऐनिही येही मुक़द्दस मिम्बर हौज़े कौसर पर नस्ब होगा। एक तौजीह येह भी की गई है कि मिम्बरे अक़्दस की ज़ियारत वहां नमाज़ व इबादत हौज़े कौसर से सैराब होने का ख़ास सबब है। हौज़ से मुराद हौज़े कौसर है। एक मतलब येह भी हो सकता है कि जहां आज येह मिम्बरे अक़्दस है यहीं क़ियामत के दिन हौज़े कौसर रहेगा। इस लिये कि एक हदीस में है कि महशर सर ज़मीने शाम पर क़ाइम होगा। ज़ाहिर है कि शाम जैसे छोटे से मुल्क में तमाम अव्वलीन व आख़िरीन समा नहीं सकते। इस लिये इस हदीस का मतलब येह हुवा कि महशर का मर्कज़ी मक़ाम शाम होगा ख़लाइक़ का फैलाव जहां तक हो इस तक़्दीर पर इस का इम्कान है कि हौज़े कौसर की जा-ए वुक़ूअ मदीनए तय्यिबा हो।

मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : इस हदीस से उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की अज़ीम फ़ज़ीलत साबित हुई, वोह इस तरह कि तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात के हुजराते मुक़द्दसा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ही घर थे मगर इस हदीस में ख़ास हज़रते सय्यि-दतुना सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के हुज्रए मुबा-रका को بَيْتِيْ फ़रमाया तो जिस तरह का'बए मुक़द्दसा को **बैतुल्लाह** कहने में इस की बरतरी व अ-ज़मत का इज़्हार है इसी तरह हुज्रए आइशा को "بَيْتِيْ" कहने में इस की दीगर बुयूत पर अफ़्ज़लिय्यत और बर-तरी ज़ाहिर करना मक़्सूद है और येह हज़रते सय्यि-दतुना उम्मुल मुअमिनीन की अ-ज़मत व फ़ज़ीलत को मुस्तल्ज़म (या'नी लाज़िम) है। इस मज़्मून की एक हदीस में "بَيْتِيْ", दूसरी में "قَبْرِىْ" दलील है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'लूम था कि मैं कहां दफ़्न होउंगा। और येह दलील है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ैब जानते थे नीज़ "مِنْبَرِىْ عَلٰى حَوْضِىْ" में भी ग़ैब की ख़बर है। (نزہۃ القاری، کتاب التہجد، ۲/۷۱۶، ۷۱۷)

www.dawateislami.net

﴾39﴿...... बिला झिजक मा'रूज़ात पेश करना

जो चाहतीं बिला झिजक सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की बारगाह में अ़र्ज़ कर देतीं,** चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **60** सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब **''उम्महातुल मुअमिनीन''** सफ़्हा **28** पर मन्कूल है : सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को महबूबे काएनात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ गुफ़्त-गू करने की बहुत कुदरत थी और वोह जो चाहतीं बिला झिजक अ़र्ज़ कर देती थीं और येह उस कुर्ब व महब्बत की वज्ह से था जो इन के माबैन थी । **सय्यि-दतुना** आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है, आप फ़रमाती हैं कि एक दिन **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए । मैं अपनी गुड़ियां घर के एक दरीचे में रख कर उस पर पर्दा डाले रखती थी । सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ हज़रते सय्यिदुना जै़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ भी थे । उन्होंने दरीचे के पर्दे को उठाया और गुड़ियां हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दिखाईं । हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : येह सब क्या हैं ? मैं ने अ़र्ज़ किया : मेरी बेटियां (मेरी गुड़ियां) हैं, उन गुड़ियों में एक घोड़ा मुला-हज़ा फ़रमाया जिस के दो बाज़ू थे । फ़रमाया : क्या घोड़ों के भी बाज़ू होते हैं ? मैं ने अ़र्ज़ किया : क्या आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नहीं सुना कि हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के घोड़े थे और उन के बाज़ू थे । हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस पर इतना तबस्सुम फ़रमाया कि आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दाढ़ें ज़ाहिर हो गईं । (مدارج النبوت، قسم پنجم، باب دُوُم، درذکر ازواج مطہرات، ۲/۴۷۱)

एक मर्तबा हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : कोई शख़्स जन्नत में दाख़िल न होगा मगर हक़ तआ़ला की रह़मत और उस के फ़ज़्ल से । सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**!** क्या आप भी जन्नत में दाख़िल न होंगे मगर ख़ुदा की रह़मत से ? फ़रमाया : हां ! मैं भी दाख़िल न होउंगा मगर येह कि मुझे हक़ तआ़ला ने अपनी रह़मत में छुपा लिया है । **(ایضاً، ۲/۴۷۲)**

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक दिन नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक्दस में ह़ाज़िर हुए दरआं ह़ाल येह कि सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ बुलन्द आवाज़ से बातें कर रही थीं, तो ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ येह कहते हुए सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की त़रफ़ बढ़े कि ऐ उम्मे रूमान की बेटी ! क्या तू **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

पर अपनी आवाज़ को बुलन्द करती है । तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दरमियान में हाइल हो गए । जब हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वहां से चले गए तो हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मनाते हुए फ़रमाया : क्या तुम ने न देखा कि मैं तुम्हारे और उन (या'नी अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के दरमियान हाइल हो गया । रावी फ़रमाते हैं : फिर जब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हाज़िर हुए तो सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से महज़ूज़ होते हुए पाया ।

(مسند احمد، مسند الکوفیین، حدیث النعمان بن بشیر، ۷/۴۹۴، الحدیث: ۱۸۸۹۱)

हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मुझ से **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं जानता हूं जब तुम मुझ से राज़ी रहती हो और जब तुम ख़फ़ा रहती हो । मैं ने पूछा : आप कैसे पहचानते हैं ? फ़रमाया : जब तुम मुझ से खुश रहती हो तो कहती हो मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! और जब नाराज़ रहती हो तो कहती हो : इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने अ़र्ज़ किया : हां ! येही बात है **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं सिर्फ़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम ही छोड़ती हूं ।

(صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب غیرۃ النساء ووجدھن، ص۱۳۴۳، الحدیث: ۵۲۲۸)

मत़लब येह है कि इस हाल में सिर्फ़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम नहीं लेती । लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की याद मेरे दिल में और मेरी जान आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत में मुस्तग़रक़ है ।

नाज़ बरदारी तुम्हारी क्यूं न फ़रमावे ख़ुदा
नाज़नीने हक़ नबी हैं तुम नबी की नाज़नीं

(दीवाने सालिक, स. 32)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾40﴿...... सय्यिदह आइशा की तदबीर से क़ह़त़ दूर हुवा

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **की तदबीर से मुसल्मानों से क़ह़त़ दूर हुवा,** चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू जौज़ा औस बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मदीने के लोग सख़्त क़ह़त़ ज़दा हो गए तो उन्हों ने **हज़रते सय्यि-दतुना** आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को शिकायत की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्र की त़रफ़ ग़ौर करो

www.dawateislami.net

उस से एक ताक़ आस्मान की तरफ़ बना दो हत्ता कि क़ब्रे अन्वर और आस्मान के दरमियान छत न रहे लोगों ने ऐसा किया तो हम पर ख़ूब बारिश बरसाई गई हत्ता कि चारा उग गया और ऊंट मोटे हो गए हत्ता कि चरबी से उन की कोखें फूल गईं तो उस साल का नाम ''عامُ الفتق या'नी ख़ूब बारिश वाला साल'' रखा गया। (سنن الدارمی، المقدمۃ، باب ما اکرم اللہ......الخ، ص۵۸، الحدیث:۹۳)

क़ब्रे अन्वर को ज़ाहिर करने में हिक्मत

शारेहे मिश्कात अ़ल्लामा शैख़ अ़ली बिन सुल्तान मुहम्मद क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर पर आस्मान की तरफ़ ताक़ बनाने के बारे में कहा गया है कि जब आस्मान आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर को देखेगा तो उस के रोने की वज्ह से वादी पानी से भर जाएगी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ (پ۲۵، الدخان:۲۹) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए।

इस फ़रमान में कुफ़्फ़ार के हाल की ख़बर है (कि इन पर आस्मान व ज़मीन नहीं रोते) तो नेक लोगों की निस्बत मुआ-मला इस के उलट होगा कि इन पर आस्मान व ज़मीन रोएंगे (इसी वज्ह से उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने क़ब्रे अन्वर के ऊपर आस्मान की तरफ़ खिड़की खोलने का हुक्म फ़रमाया। سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! कुरआने पाक के मआनी की येह पहचान आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ही हिस्सा था)

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب الفضائل والشمائل، باب الکرامات، ۹۶/۱۱، تحت الحدیث:۵۹۵۰)

आरिफ़ बिल्लाह, शैख़े मुहक़्क़िक़, मुहद्दिसे जलील हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : हिजाब दूर करने का मक़्सद क़ब्रे अन्वर से त़-लबे शफ़ाअ़त है, क्यूं कि ज़ाहिरी हयात में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से त़-लबे बारिश की दुआ़ की जाती थी जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर्दा फ़रमा गए तो सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने क़ब्रे अन्वर से त़-लबे शफ़ाअ़त के बारे में कहा ताकि बारिश हो जाए। दर हक़ीक़त येह भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस से ही शफ़ाअ़त की त़लब है, कश्फ़े क़ब्र बतौरे मुबा-लग़ा था। (اشعۃ اللمعات(مترجم)، کتاب الفضائل والشمائل، باب الکرامات، ۳۳۵/۷)

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ली बिन सुल्तान मुहम्मद क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : आस्मान की तरफ़ रुख़ करने के साथ गोया हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़र्ज़ व मत़लूब पेश करने से किनाया है और येही दुआ़ का क़िब्ला और ज़ईफ़ों के रिज़्क़ की जगह है।

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب الفضائل والشمائل، باب الکرامات، ۹۶/۱۱)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए : एक येह कि वफ़ात याफ़्ता बुज़ुर्गों के वसीले से दुआएं करना जाइज़ है। दूसरे येह कि इन के तबर्रुकात के वसीले से दुआएं करना जाइज़ बल्कि सुन्नते सह़ाबा है। तीसरे येह कि बुज़ुर्गों की क़ब्रें बि इज़्ने इलाही दाफ़ेउ़ल बला और मुश्किल कुशा हैं यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़मीस दाफ़ेउ़ल बला थी कि इस की ब-र-कत से या'क़ूब عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की आंखें रोशन हो गईं। अय्यूब عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पाउं का धोवन शिफ़ा था।

मज़ीद फ़रमाते हैं : क़ब्रे अन्वर की ब-र-कत से बारिश न तो बहुत ज़ियादा हुई जो खेतियां बरबाद करे न बहुत थोड़ी जो काफ़ी न हो न बे वक़्त हुई बल्कि बर वक़्त हुई और ब क़दरे ज़रूरत हुई जो बे ज़रर बल्कि निहायत मुफ़ीद हुई। येह वाक़िआ़ ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की करामत ज़ाहिर कर रहा है। (مراٰۃ المناجیح، باب الکرامات، ۸/۲۷۷)

﴾41﴿...... सरे अन्वर में कंघी करतीं

रसूले पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की ह़ालते ए'तिकाफ़ में आप** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का सरे अक़्दस धोतीं और कंघी करतीं,** चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ालते ए'तिकाफ़ में अपना सरे अक़्दस (मेरे हुजरे में) निकाल देते तो मैं उस को धो दिया करती थी। (صحیح البخاری، کتاب الاعتکاف، باب غسل المعتکف، ص ۵۳۱، الحدیث: ۲۰۳۱)

एक दूसरी रिवायत में है : आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे अक़्दस में कंघी किया करती थीं इस ह़ाल में कि आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में **मो'तकिफ़** होते थे और सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا अपने हुजरे में होती थीं और हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना सरे मुबारक आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की त़रफ़ बढ़ा देते।

(صحیح البخاری، کتاب الاعتکاف، باب المعتکف یدخل رأسه البیت للغسل، ص ۵۳۴، الحدیث: ۲۰۴۶، ملتقطًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बेटी की इस्लाह़ का राज़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इ़ल्मे दीन की ब-र-कतें ह़ासिल करने, अ़मल का जज़्बा पाने, फ़ैज़ाने आइशा सिद्दीक़ा से ह़िस्सा पाने, ख़ुद को गुनाहों से बचाने और नेकी की दा'वत का जज़्बा पाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, इस के हफ़्तावार होने वाले इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इन सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत कर के दुआ़ करने वालियों की दुआ़ओं को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो रह़मत से क़बूल फ़रमाता है, चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) के एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मेरी बेटी फ़िल्मों, डिरामों और बे पर्दगियों वग़ैरा गुनाहों की आलू-दगियों में अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ों को बरबाद कर रही थी, मैं इस की ह़-र-कतों से बेह़द परेशान थी, बारहा समझाती मगर वोह एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकाल देती اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मैं **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करती थी और इज्तिमाअ़ में मांगी जाने वाली दुआ़ओं की क़बूलिय्यत के वाक़िआ़त भी सुना करती थी, चुनान्चे एक मर्तबा मैं ने **दा'वते इस्लामी** के तह़त होने वाले ग्यारहवीं शरीफ़ के इज्तिमाएअ़ ज़िक्रो ना'त में अपनी बेटी की इस्लाह़ के लिये गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगी। मेरी ख़्वाहिश थी कि मेरी बेटी भी **दा'वते इस्लामी** की मुबल्लिग़ा बने। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मेरी दुआ़ क़बूल हुई और मेरी बेटी किसी न किसी त़रह़ इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक होने पर रिज़ा मन्द हो गई। इस ने जब शिर्कत की तो इतनी मु-तअस्सिर हुई कि बस **दा'वते इस्लामी** ही की हो कर रह गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! तरक़्क़ी की मन्ज़िलें त़ै करते करते (ता दमे तह़रीर) मेरी बेटी ह़ल्क़ा ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमतों में मश्ग़ूल है। (इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 281)

गिर पड़ के यहां पहुंचा मर मर के इसे पाया
छूटे न इलाही अब संगे दरे जानाना

(सामाने बख़्शिश, स. 115)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में रह़मतें क्यूं नाज़िल न होंगी कि इन आ़शिक़ाने रसूल और आक़ा की दीवानियों में न जाने कितने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام होते और वलिय्यात होती होंगी। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत **"फ़तावा र-ज़विय्या"** जिल्द **24**, सफ़ह़ा **184** पर फ़रमाते हैं **:** जमाअ़त में ब-र-कत है और दुआ़ए मज्मए़ मुस्लिमीन अक़रब ब क़बूल (या'नी मुसल्मानों के मज्मअ़ में दुआ़ मांगना क़बूलिय्यत के क़रीब तर है)। उ़-लमा फ़रमाते हैं **:** जहां **40** मुसल्मान सालेह़ (या'नी नेक मुसल्मान) जम्अ़ होते हैं उन में से एक **वलिय्युल्लाह** ज़रूर होता है।

"तैसीर शर्ह़े जामेउ़स्सग़ीर" में है कहा गया है कि चालीस के अ़दद में ह़िक्मत येह है कि येह ता'दाद कभी पूरी नहीं होती मगर येह कि इन में एक **वलिय्युल्लाह** ज़रूर होता है।

(التیسیر بشرح الجامع الصغیر، حرف الھمزۃ، ۱۰/۱)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बयान ﴾12﴿...... सय्यि-दतुना आइशा की नेकी की दा'वत

अम्बिया के अज्साम को खाना ज़मीन पर ह़राम है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **862** सफ़ह़ात पर मुशतमिल किताब "**सीरते मुस्त़फ़ा**" सफ़ह़ा **645** पर शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى तह़रीर फ़रमाते हैं : ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : कि तुम्हारे दिनों में सब से अफ़्ज़ल दिन जुमुआ़ का दिन है। लिहाज़ा इस दिन मुझ पर ब कसरत दुरूद पढ़ा करो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद शरीफ़ मेरे ह़ुज़ूर पेश किया जाता है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब क़ब्र शरीफ़ में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जिस्मे मुबारक बिखर कर पुरानी हड्डियों की सूरत में हो जाएगा तो हम लोगों का दुरूद शरीफ़ कैसे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में पेश हुवा करेगा ? तो ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्मों को ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، ص۲۴۹، الحدیث:۱۵۳۱)

तू ज़िन्दा है वल्लाह ! तू ज़िन्दा है वल्लाह !
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 158)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शहन्शाहे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने मह़बूबिय्यत का क्या कहना ? जो कोई भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक का नज़राना पेश करता है उस का दुरूद ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में पेश कर दिया जाता है। नीज़ इस ह़दीस शरीफ़ से येह भी मा'लूम हुवा कि तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुक़द्दस अज्साम इन की मुबारक क़ब्रों में सलामत रहते हैं और **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर इन के जिस्मों को खाना ह़राम फ़रमा दिया है। जब दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह शान है तो फिर सय्यिदुल अम्बिया व इमामुल

www.dawateislami.net

अम्बिया صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस जिस्मे अन्वर को ज़मीन कैसे खा सकती है ? इस लिये तमाम उ़-लमाए उम्मत व औलियाए उम्मत का येही अ़क़ीदा है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी क़ब्रे अत़्हर में ज़िन्दा हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से बड़े बड़े तसर्रुफ़ात फ़रमाते रहते हैं और अपनी खुदादाद व पैग़म्बराना कुव्वतों और मो'जिज़ाना त़ाक़तों से अपनी उम्मत की मुश्किल कुशाई और इन की फ़रियाद रसी फ़रमाते रहते हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बारीक दुपट्टा फाड़ दिया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **397** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा **214** पर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नक़्ल फ़रमाते हैं : एक मर्तबा उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की खि़दमते सरापा ग़ैरत में (इन के भाई) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बेटी सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ाज़िर हुईं उन्हों ने बारीक दुपट्टा ओढ़ रखा था, ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उस दुपट्टे को फाड़ दिया और उन्हें मोटा दुपट्टा उढ़ा दिया।

(مؤطا امام مالک، کتاب اللباس، باب ما یکرہ للنساء لبسہ ...الخ ، الجزءُ الثانی، ص ۹۱۳، الحدیث: ٦)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त इर्शाद फ़रमाते हैं : या'नी उस दुपट्टे को फाड़ कर रुमाल बना दिये ताकि ओढ़ने के क़ाबिल न रहे, रुमाल के काम आवे लिहाज़ा इस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि आप ने येह माल ज़ाएअ़ क्यूं फ़रमा दिया। **मज़ीद** फ़रमाते हैं : येह है अ़-मली तब्लीग़ और बच्चियों की सह़ीह़ तरबिय्यतो ता'लीम, उस दुपट्टे से सर के बाल चमक रहे थे, सत्र ह़ासिल न था इस लिये येह अ़मल फ़रमाया। (مراۃ المناجیح، کتاب اللباس، ۶/۱۲۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"सत्रे औरत" क्या है ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **397** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा **12** पर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास**

www.dawateislami.net

अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ सत्रे औ़रत की वज़ाहत करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : सत्र के लुग़वी मा'ना हैं : छुपाना, ढांपना। जिन आ'ज़ा का छुपाना ज़रूरी है उन को औ़रत कहते हैं और मज्मूई तौ़र पर छुपाने के इस अ़मल को "सत्रे औ़रत" (या'नी पोशीदा आ'ज़ा का छुपाना) कहते हैं। हमारे उ़र्फ़ में उन मख़्सूस आ'ज़ा को भी सत्र कहते हैं जिन का छुपाया जाना ज़रूरी है।

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 12)

औ़रतों के लिये पर्दे के चन्द अह़काम

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! औ़रत का हर अज्नबी बालिग़ मर्द से पर्दा है। जो मह़रम न हो वोह अज्नबी होता है, मह़रम से मुराद वोह मर्द हैं जिन से हमेशा के लिये निकाह़ ह़राम हो।

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 44)

आइये ! अब औ़रतों के पर्दे से मु-तअ़ल्लिक़ चन्द अह़काम मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे आज़ाद औ़रतों (ग़ुलाम व लौंडी का दौर ख़त्म हुवा आज कल तमाम औ़रतें आज़ाद हैं) के लिये सारा बदन औ़रत (या'नी छुपाने की जगह) है। सिवा मुंह की टिक्ली और हथेलियों और पाउं के तल्वों के, सर के लटक्ते हुए बाल और गरदन और कलाइयां भी औ़रत (या'नी छुपाने की चीज़) हैं (और) इन का छुपाना भी फ़र्ज़ है। बा'ज़ उ़-लमा ने पुश्ते दस्त (या'नी हथेली की पीठ) और (पाउं के) तल्वों को औ़रत (या'नी छुपाने की चीज़) में दाख़िल नहीं किया।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, जि. 1, स. 481, 484)

और औ़रत को औ़रत का नाफ़ के नीचे से ले कर घुटनों समेत का ह़िस्सा देखने की इजाज़त नहीं। चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : औ़रत का औ़रत को देखना, इस का वोही ह़ुक्म है जो मर्द को मर्द की त़रफ़ नज़र करने का है या'नी नाफ़ के नीचे से घुटने तक नहीं देख सकती बाक़ी आ'ज़ा की त़रफ़ नज़र कर सकती है बशर्ते़ कि शह्वत का अन्देशा न हो। औ़रत सालिह़ा (या'नी नेक बीबी) को येह चाहिये कि अपने को बदकार (या'नी ज़ानिया व फ़ाह़िशा) औ़रत के देखने से बचाए या'नी उस के सामने दुपट्टा वग़ैरा न उतारे क्यूं कि वोह उसे देख कर मर्दों के सामने उस की शक्लो सूरत का ज़िक्र करेगी। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, जि. 3, स. 443)

बारीक दुपट्टे में नमाज़ का ह़ुक्म

इतना बारीक दुपट्टा जिस से बाल की सियाही (या'नी कालक) चमके, औ़रत ने ओढ़ कर नमाज़ पढ़ी, न होगी। जब तक उस पर कोई ऐसी चीज़ न ओढ़े जिस से बाल वग़ैरा का रंग छुप जाए।

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 16)

www.dawateislami.net

बारीक कपड़ों से सरकार की ना गवारी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ऐसा बारीक लिबास जिस से जिस्म की रंगत ज़ाहिर हो ह़राम और **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم की नाराज़ी का बाइस है, चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا से मरवी है : ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में बारीक लिबास पहन कर ह़ाज़िर हुईं तो शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से चेह्रए अन्वर फेर लिया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने चेहरे और हथेलियों की त़रफ़ इशारा करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ऐ अस्मा (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا) ! औ़रत जब ह़ैज़ (या'नी माहवारी) की उ़म्र को पहुंच जाए तो उस के लिये दुरुस्त नहीं कि उस की इन दो चीज़ों (या'नी आ'ज़ा) के इ़लावा कुछ देखा जाए।

(سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فیما تبدی المرأة من زینتها، ص٦٤٥، الحدیث:٤١٠٤)

बारीक दुपट्टे से सरकार का मन्अ़ फ़रमाना

ह़ज़रते सय्यिदुना दिह़या बिन ख़लीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा रह़मत में एक मर्तबा मिस्र का बना हुवा सफ़ेद कपड़ा लाया गया सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से एक कपड़ा मुझे अ़ता किया और इर्शाद फ़रमाया : इस के दो टुकड़े कर के एक से अपनी क़मीस बना ले और दूसरा अपनी बीवी को दे देना जिस से वोह अपना दुपट्टा बना ले। रावी कहते हैं जब मैं चलने लगा तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे इस बात की ताकीद की, कि अपनी बीवी को कहना कि इस के नीचे दूसरा कपड़ा लगा ले ताकि दुपट्टे के नीचे कुछ नज़र न आए।

(سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی لبس القباطی للنساء، ص٦٤٧، الحدیث:٤١١٦)

बारीक लिबास पहनने की वईद में 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जहन्नमियों की दो क़िस्में ऐसी हैं जिन को मैं ने (इस ज़माने में) नहीं देखा : (1)...... ऐसे लोग जिन के पास गाय की दुमों जैसे कोड़े होंगे, उन से वोह लोगों को मारते होंगे और (2)...... वोह औ़रतें जो

www.dawateislami.net

लिबास पहनने के बा वुजूद उ़र्यां होंगी, वोह राहे ह़क़ से हटाने वाली और ख़ुद भी राहे ह़क़ से भटकी हुई होंगी, उन के सर बुख़्ती ऊंटों की कोहानों की त़रह़ एक जानिब झुके हुए होंगे, वोह न जन्नत में दाख़िल होंगी और न ही जन्नत की ख़ुश्बू सूंघ सकेंगी ह़ालां कि जन्नत की ख़ुश्बू इतनी इतनी मसाफ़त से आएगी।'' (صحیح مسلم، کتاب اللباس والزینة، باب النساء الکاسیات العاریات...الخ، ص۸۴٦، الحدیث:۲۱۲۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़दीस शरीफ़ की वज़ाह़त

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **853** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल''** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **505** पर इस ह़दीस शरीफ़ की वज़ाह़त करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ुल इस्लाम इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इर्शाद फ़रमाते हैं : इस ह़दीसे पाक में औ़रतों के लिबास में मल्बूस होने से मुराद येह है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होंगी, जब कि बे लिबास होने से मुराद येह है कि वोह ने'मतों का शुक्र अदा नहीं करेंगी, या इस से मुराद येह है कि ज़ाहिर त़ौर पर तो लिबास ज़ैबे तन करेंगी मगर ह़क़ीक़तन बे लिबास होंगी, वोह इस त़रह़ कि वोह ऐसा बारीक लिबास पहनेंगी जिन से उन का बदन झलकेगा, राहे ह़क़ से भटकने से मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त से रू गर्दानी और फ़राइज़ व वाजिबात की अदाएगी और इन की ह़िफ़ाज़त से मुंह फेरना है और राहे ह़क़ से हटाने से मुराद येह है कि वोह दूसरी औ़रतों को अपने मज़्मूम फ़े'ल की त़रफ़ बुलाएंगी। या राहे ह़क़ से हटने से मुराद मटक मटक कर चलना है और राहे ह़क़ से हटाने से मुराद कन्धों को झटक कर दूसरों को अपनी त़रफ़ माइल करना है या फिर राहे ह़क़ से हटने से मुराद बाज़ारी औ़रतों की त़रह़ अपने बाल कंघी से संवारना है और राहे ह़क़ से हटाने से मुराद बाज़ारी औ़रतों की मिस्ल दूसरों के बाल संवारना (या'नी हेर स्टाइल बनाना) है और औ़रतों के सरों के बुख़्ती ऊंटों की कोहानों की त़रह़ होने से मुराद येह है कि वोह अपने सर पर कोई कपड़ा या पट्टी लपेट कर उसे बुलन्द कर के इतराएंगी। (الزواجر، الکبیرة الثامنة بعد المأة، ۲۹۷/۱)

﴾2﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत के आख़िर में कुछ लोग ऐसे होंगे कि जो ज़ीनों पर सुवार होंगे उन की मिसाल उन लोगों की त़रह़ होगी जो ख़ुद तो मसाजिद के दरवाज़ों पर पड़ाव डाले होंगे लेकिन उन की

www.dawateislami.net

औ़रतें (इतना बारीक) लिबास पहने होंगी कि बे लिबास (मा'लूम) होंगी, उन के सर कमज़ोर बुख़्ती ऊंटों के कोहानों की त़रह़ होंगे, उन औ़रतों पर तुम भी ला'नत भेजो क्यूं कि उन पर ला'नत की गई है, अगर तुम्हारे बा'द कोई उम्मत होती तो तुम्हारी औ़रतें उस उम्मत की इसी त़रह़ ख़िदमत करतीं जिस त़रह़ तुम से पहली उम्मतों की औ़रतों ने तुम्हारी ख़िदमत की है।

(صحیح ابن حبّان، کتاب الحظر والاباحة، باب ذکر الاخبار عن وصف النساء اللاتی...الخ، ص١٥٣٥، الحدیث:٥٧٥٣)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मज़्कू-रतुस्सद्र (या'नी शुरूअ़ में ज़िक्र कर्दा) रिवायत में ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़फ़्सा बिन्ते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने चूंकि बारीक दुपट्टा पहना हुवा था जिस से सत्र का फ़ाएदा ह़ासिल नहीं हो रहा था इस लिये उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने **"اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَر"** करते हुए वोह बारीक दुपट्टा फाड़ कर दो रुमाल बना दिये ताकि येह रुमाल किसी और काम आ जाएं और उन को मोटा कपड़ा उढ़ा दिया।

हर इस्लामी बहन को अपनी त़ाक़त व क़ुव्वत के मुत़ाबिक़ नेकी की दा'वत ज़रूर देनी चाहिये, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **743** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़ह़ा **595** पर इमाम मुह़म्मद श-रफ़ुद्दीन अ़ब्दुल मुअमिन बिन ख़लफ़ दिम्याती़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कि "(तुम में से) कोई जब किसी बुराई को देखे तो उसे चाहिये कि बुराई को अपने हाथ से बदल दे और जो अपने हाथ से बदलने की इस्तित़ाअ़त न रखे उसे चाहिये कि अपनी ज़बान से बदल दे और जो अपनी ज़बान से बदलने की भी इस्तित़ाअ़त न रखे उसे चाहिये कि अपने दिल में बुरा जाने और येह कमज़ोर तरीन ईमान की अ़लामत है।"

(سنن النسائی، کتاب الایمان وشرائعه، تفاضل اهل الایمان، ص٨٠٢، الحدیث:٥٠١٨، ملتقطاً)

यहां पर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا चूंकि बुराई को हाथ से बदलने पर क़ादिर थीं इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उस को हाथ से तब्दील फ़रमा दिया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बेहतरीन उम्मत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना वोह अ़ज़ीमुश्शान फ़रीज़ा है जिस के सबब **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ ने इस उम्मत को सब उम्मतों से अफ़्ज़ल क़रार दिया है, चुनान्चे पारह **4 सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर **110** में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ط (پ٤، ال عمران: ١١٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस आयते करीमा की तफ़्सीर करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : उम्मते मुह़म्मदिय्यह عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल होने का सबब येह है कि येह उम्मत नेकी का हुक्म करती और बुराई से मन्अ़ करती है।

(التفسیر الکبیر، الجزء الثامن، سورۃ اٰلِ عمران، تحت الآیۃ: ١١٠، ٣/٣٢٦، ملخّصًا)

अ़मल का हो जज़्बा अ़ता या इलाही !
गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 84)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"नेकी की दा'वत" के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 7 फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾...... **जिहादे फ़ी सबीलिल्लाह** के मुक़ाबले में तमाम नेक आ'माल ऐसे हैं जैसे गहरे समुन्दर में थूक और **जिहादे फ़ी सबीलिल्लाह** समेत तमाम नेक आ'माल "اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر" के मुक़ाबले में ऐसे हैं जैसे गहरे समुन्दर में थूक।

(احیاء علوم الدین، کتاب الامر بالمعروف والنھی عن المنکر، الباب الاوّل فی وجوب الامر بالمعروف...الخ، ٢/٣٧٩)

﴿2﴾...... **एक मर्तबा** आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या मुश्रिकीन से जंग के बिग़ैर भी जिहाद है ? **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हां, ऐ अबू बक्र (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! ज़मीन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ ऐसे मुजाहिदीन भी हैं जो शु-हदा से अफ़्ज़ल हैं, वोह मुजाहिदीन ज़िन्दा हैं उन को रिज़्क़ दिया जाता है और वोह ज़मीन में चलते फिरते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मला-इ-कए समा (या'नी आस्मान के फ़िरिश्तों) के सामने उन पर फ़ख़्र फ़रमाता है और उन के लिये जन्नत को सजाया जाता है।

www.dawateislami.net

अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह कौन लोग हैं ? फ़रमाया : येह वोह लोग हैं जो नेकी का हुक्म करते हैं और बुराई से मन्अ़ करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मह़ब्बत और उसी की रिज़ा के लिये अ़दावत करते हैं ।

फिर हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! उन में से एक बन्दा ऐसे बालाख़ाने में होगा जो शु-हदा के बालाख़ानों से भी ऊपर होगा उन में से एक बालाख़ाने के याक़ूत और सब्ज़ ज़मुर्द के तीन लाख दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़े पर एक नूर होगा । और उन में से एक शख़्स तीन लाख हूरों से निकाह़ करेगा जिन की निगाहें किसी और त़रफ़ नहीं उठेंगी जब भी वोह किसी एक हूर की त़रफ़ तवज्जोह करेगा और उस की त़रफ़ नज़र करेगा तो वोह कहेगी : क्या तुम्हें फ़ुलां फ़ुलां दिन याद है जिस में तुम ने नेकी का हुक्म दिया था और बुराई से मन्अ़ किया था ? जब भी वोह उन में से किसी की त़रफ़ देखेगा तो वोह उस को ऐसा मक़ाम याद दिलाएगी जिस में उस ने नेकी का हुक्म दिया होगा और बुराई से मन्अ़ किया होगा ।

(احیاء علوم الدین، کتاب الامربالمعروف والنھی عن المنکر، الباب الاوّل فی وجوب الامربالمعروف...الخ، ۲ /۳۸۲)

﴿3﴾...... साह़िबे क़ुरआने मुबीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मर्तबा मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा फ़रमा थे कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! लोगों में सब से अच्छा कौन है ? फ़रमाया : लोगों में से वोह शख़्स सब से अच्छा है जो कसरत से क़ुरआने करीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तक़ी हो, सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो और सब से ज़ियादा सिलए रेह़्मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करने वाला हो ।

(مسند امام احمد، من مسند القبائل ، حدیثِ درّۃ بنت ابی لھب، ۱۱/۲۹۰، الحدیث:۲۸۱۹۶)

﴿4﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसे लोगों के बारे में ख़बर न दूं जो न अम्बिया (عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) हैं न शु-हदा, बरोज़े क़ियामत अम्बिया عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और शु-हदा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां उन के मक़ाम को देख कर रश्क करेंगे, वोह लोग नूर के मिम्बरों पर होंगे । सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ की : वोह कौन लोग हैं ? फ़रमाया : येह वोह लोग हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का महबूब (या'नी प्यारा) और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उन बन्दों का महबूब बना देते हैं और वोह ज़मीन पर (लोगों को) नसीहतें करते जाते हैं। रावी फ़रमाते हैं, हम ने अ़र्ज़ की : वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बन्दों का महबूब तो बनाते हैं मगर बन्दों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महबूब किस त़रह़ बनाते हैं ? फ़रमाया : वोह लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महबूब (या'नी पसन्दीदा) बातों का हुक्म देते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना पसन्दीदा बातों से मन्अ़ करते हैं, पस जब लोग उन की इत़ाअ़त करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपना महबूब बना लेता है। **(شُعَبُ الایمان، باب فی محبة الله عزوجل، ۱/۳٦۷، الحدیث:٤٠٩)**

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **616** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **"नेकी की दा'वत"** सफ़्हा **204** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द इर्शाद फ़रमाते हैं : देखा आप ने ! **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने वालों की भी कैसी बुलन्दो बाला शानें हैं, बरोज़े क़ियामत उन पर रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ का इन्आ़मो इक्राम देख कर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और शु-हदाए इ़ज़ाम भी रश्क करेंगे, इस अ़-ज़-मतो शान का सबब क्या होगा ? येही कि वोह **नेकी की दा'वत** और बदी की मुमा-न-अ़त के ज़रीए़ लोगों को बा अ़मल बना कर उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महबूब बनाते होंगे। जब वोह दूसरों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महबूब बनाते होंगे तो ख़ुद क्यूं न महबूब होंगे !

अल्लाह का महबूब बने जो तुम्हें चाहे
उस का तो बयां ही नहीं कुछ तुम जिसे चाहो

(ज़ौक़े ना'त, स. 147)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿...... जो हिदायत की त़रफ़ बुलाए उसे उस की हिदायत की पैरवी करने वालों के अज्र के बराबर अज्र मिलेगा और इस से उन के अपने अज्र से कुछ कम न होगा। और जो गुमराही की त़रफ़ बुलाए तो उस पर तमाम पैरवी करने वाले गुमराहों के बराबर गुनाह होगा और उन के गुनाह में कुछ कमी नहीं आएगी। **(صحیح مسلم، کتاب العِلْم، باب من سن سنة حسنة...الخ، ص۱۰۳۲، الحدیث: ۲٦۷٤)**

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : येह हुक्म नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इन के सदक़े से तमाम सह़ाबा, आइम्मए मुज्तहिदीन, उ़-लमाए मु-तक़द्दिमीन व मु-तअख़्ख़िरीन सब को शामिल है म-सलन अगर किसी की तब्लीग़

www.dawateislami.net

से एक लाख नमाज़ी बनें तो उस मुबल्लिग़ को हर वक़्त एक लाख नमाज़ों का सवाब होगा और उन नमाज़ियों को अपनी अपनी नमाज़ों का सवाब, इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सवाब मख़्लूक़ के अन्दाज़े से वरा है।

रब तआला عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَ اِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿۳﴾ (پ۲۹، القلم:۳) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़रूर तुम्हारे लिये बे इन्तिहा सवाब है।

ऐसे ही वोह मुसन्निफ़ीन जिन की किताबों से लोग हिदायत पा रहे हैं क़ियामत तक लाखों का सवाब उन्हें पहुंचता रहेगा, येह ह़दीस इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं :

وَ اَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿۳۹﴾ (پ۲۷، النجم:۳۹) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और येह कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश।

क्यूं कि येह सवाबों की ज़ियादती उस के अ़मले तब्लीग़ का नतीजा है। **मज़ीद फ़रमाते है :** इस में गुमराहियों के मूजिदीन मुबल्लिग़ीन (या'नी गुमराही ईजाद करने और गुमराही दूसरों को पहुंचाने वाले) सब शामिल हैं ता क़ियामत इन को हर वक़्त लाखों गुनाह पहुंचते रहेंगे।

(مراٰۃ المناجیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام، ۱/۱۶۰)

﴾6﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इन्सान के हर उ़ज़्व पर जिस पर कुदरते इलाही का निशान हो, रोज़ाना एक स-दक़ा है। लोगों में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें जो बातें बताई हैं येह उन में से सब से ज़ियादा सख़्त है। इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना स-दक़ा है और कमज़ोर की बात को बरदाश्त करना भी स-दक़ा है और तुम्हारा रास्ते से गन्दगी हटा देना स-दक़ा है और तुम्हारा नमाज़ के लिये चलने में हर क़दम स-दक़ा है।

(الترغيب والترهيب، كتاب الادب، الترغيب فى اماطة الاذى عن الطريق، ص۹٤۱، الحديث:٦)

﴾7﴿...... आदमी को **360** जोड़ों पर पैदा किया गया है तो जिस ने اَللّٰهُ اَكْبَر, اَلْحَمْدُ لِلّٰه, لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه, سُبْحٰنَ اللّٰه और **اَسْتَغْفِرُ اللّٰه** कहा और मुसल्मानों के रास्ते से पथ्थर, कांटा या हड्डी हटा दी और नेकी का हुक्म दिया और बुराई से मन्अ़ किया और येह काम **360** मर्तबा किये तो वोह उस दिन इस ह़ाल में चलेगा कि उस ने अपने आप को जहन्नम से बचा लिया होगा।

(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب بيان ان اسم الصدقة...الخ، ص۳٦۲، الحديث:۱۰۰۷)

जो भी नेकी की दा'वत पे बांधे कमर
उस पे चश्मे करम या शहे बह़रो बर

(वसाइले बख़्शिश, स. 631)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी का मोहताज नहीं

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर चीज़ पर क़ादिर है, वोह हरगिज़ हरगिज़ किसी का मोह़ताज नहीं, उस ने अपनी कुदरते कामिला से इस दुन्या को बनाया, इसे त़रह़ त़रह़ से सजाया और फिर इस में इन्सानों को बसाया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों की हिदायत के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन रुसुल व अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मब्ऊ़स फ़रमाया (या'नी भेजा)। वोह अगर चाहे तो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बिग़ैर भी बिगड़े हुए इन्सानों की इस्लाह़ कर सकता है लेकिन उस की मशिय्यत (या'नी मरज़ी) कुछ इस त़रह़ है कि मेरे बन्दे **नेकी की दा'वत** दें, मेरी राह में मशक़्क़तें झेलें और मेरी बारगाहे आ़ली से द-रजाते रफ़ीआ़ (या'नी बुलन्द द-रजे) ह़ासिल करें। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने रसूलों और नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **नेकी की दा'वत** के लिये दुन्या में भेजता रहा और आख़िर में अपने प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मब्ऊ़स फ़रमाया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सिल्सिलए नुबुव्वत ख़त्म फ़रमाया। फिर येह अ़ज़ीमुश्शान मन्सब अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत के सिपुर्द किया कि खुद ही आपस में एक दूसरे की इस्लाह़ करते रहें और नेकी की दा'वत के इस अहम फ़रीज़े को सर अन्जाम दें। यूं रहती दुन्या तक हर मुसल्मान अपनी अपनी जगह मुबल्लिग़ है ख़्वाह वोह किसी भी शो'बे से तअ़ल्लुक़ रखता हो, या'नी आ़लिम हो या इमामे मस्जिद, पीर हो या मुरीद, ताजिर हो या मुलाज़िम, अफ़्सर हो या मज़दूर, ह़ाकिम हो या मह़कूम, **अल ग़रज़ !** जहां जहां वोह रहता हो, कामकाज करता हो अपनी सलाहि़य्यत के मुताबिक़ अपने गिर्दो पेश के माह़ोल को सुन्नतों के सांचे में ढालने के लिये कोशां रहे और **नेकी की दा'वत** का म-दनी काम जारी रखे। (नेकी की दा'वत, स. 28)

मैं मुबल्लिग़ बनूं सुन्नतों का ख़ूब चरचा करूं सुन्नतों का
या ख़ुदा दर्स दूं सुन्नतों का हो करम बहरे ख़ाके मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 322)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बुराई से मन्अ़ करना ज़रूरी है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने की ज़रूरत व अहम्मिय्यत बहुत ज़ियादा है हरगिज़ येह ख़याल नहीं करना चाहिये कि अगर इस्लामी बहन बुराई का इरतिकाब करती है तो हमें इस का क्या नुक़्सान उस का अ़मल उस के साथ है क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात गुनाहों की नुहूसत ऐसी आ़म होती है कि सभी को अपनी लपेट में ले लेती है जैसा

www.dawateislami.net

कि यारे ग़ार व मज़ार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम येह आयत पढ़ते हो,

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا عَلَیْكُمْ اَنْفُسَكُمْۚ لَا یَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَیْتُمْؕ (پ۷، المائدة:۱۰۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो।

(या'नी तुम इस आयत से येह समझते होगे कि जब हम ख़ुद हिदायत पर हैं तो गुमराह की गुमराही हमारे लिये मुज़िर नहीं हम को मन्अ़ करने की ज़रूरत नहीं लेकिन) मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि जब लोग किसी ज़ालिम को (ज़ुल्म करता) देखेंगे और उस के हाथ नहीं रोकेंगे तो क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब को उस के अ़ज़ाब में शामिल कर देगा।" (سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء فی نزول العذاب...الخ، ص۵۲۳، الحدیث:۲۱۶۸)

हर त़रफ़ नेकी की दा'वत आ़म हो
नेक हो उम्मत ऐ नानाए ह़ुसैन !

(वसाइले बख़्शिश, स. 167)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुराई से रोकने के ज़रूरी होने की वज़ाह़त ब ज़रीअ़ए मिसाल

बुराई का इरतिकाब करने वालों को बुराई से मन्अ़ करने और नेकी का हुक्म देने की अहम्मिय्यत व ज़रूरत को ह़दीस शरीफ़ में एक मिसाल के ज़रीए़ बहुत अह़सन अन्दाज़ में बयान किया गया है, चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **फ़रमाने मुश्कबार** है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद में सुस्ती करने वाले और उन में मुब्तला होने वाले की मिसाल उन लोगों जैसी है जिन्हों ने कश्ती में क़ुरआ़ अन्दाज़ी की, तो बा'ज़ के ह़िस्से में नीचे वाला ह़िस्सा आया और बा'ज़ के ह़िस्से में ऊपर वाला। पस नीचे वालों को पानी के लिये ऊपर वालों के पास जाना होता था, उन्हों ने इस से तक्लीफ़ मह़सूस की तो एक शख़्स ने कुल्हाड़ी ली और कश्ती के निचले ह़िस्से में सूराख़ करने लगा, तो ऊपर वाले उस के पास आए और कहा कि तुझे क्या हो गया है ? कहा कि तुम्हें मेरी वज्ह से तक्लीफ़ होती थी और पानी के बिग़ैर गुज़ारा नहीं। अब अगर उन्हों ने उस का हाथ पकड़ लिया तो

www.dawateislami.net

उसे बचा लिया और खुद भी बच जाएंगे और अगर उसे छोड़े रखा तो उसे हलाक करेंगे और अपनी जानों को भी हलाक करेंगे। (صحیح البخاری، کتاب الشھادات، باب القرعة فی المشکلات، ص۶۹۲، الحدیث:۲۶۸۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अम्र बिल मा'रूफ़ कब वाजिब है ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नेकी की दा'वत की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं बा'ज़ अवक़ात **नेकी की दा'वत** देना वाजिब होता है जैसा कि ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुश्शरीअह हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस के वाजिब होने की सूरत बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : अगर ग़ालिब गुमान येह है कि येह उन से कहेगा तो वोह इस की बात मान लेंगे और बुरी बात से बाज़ आ जाएंगे, तो अम्र बिल मा'रूफ़ वाजिब है इस को बाज़ रहना जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, امر بالمعروف ونہی عن المنکر का बयान, हिस्सा : 16, जि. 3, स. 615)

म-दनी इल्तिजा : नेकी की दा'वत के बारे में मज़ीद अह़काम व फ़ज़ाइल जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَه की मायए नाज़ तालीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द **2** के बाब **"नेकी की दा'वत"** (हिस़्सए अव्वल) का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला बे नियाज़ है कहीं ऐसा न हो कि वाजिब होने के बा वुजूद **नेकी की दा'वत** न देने और बुराई से मन्अ़ न करने की वज्ह से हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब में गिरिफ़्तार हो जाएं। चुनान्चे पारह **6 सू-रतुल माइदह** की आयत नम्बर **79** में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

كَانُوْا لَا یَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ ﴿۷۹﴾ (پ۶، المائدة:۷۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे।

बुराई से रोकने पर क़ादिर होने के बा वुजूद न रोकना

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़म लोगों के गुनाहों की वज्ह से ख़ास लोगों को अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता ह़त्ता कि उन में कोई बुराई देखी जाए और वोह उस को रोकने पर क़ादिर होने के बा वुजूद उस को न रोके।" (तो फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को भी अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा देता है)

(احیاء علوم الدین، کتاب الامر بالمعروف ونھی عن المنکر، الباب الاوّل فی وجوب الامربالمعروف...الخ، ۳۸۰/۲)

www.dawateislami.net

नेक शख़्स भी अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **616** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"नेकी की दा'वत"** सफ़ह़ा **464** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : फ़ी ज़माना मुसल्मानों की एक भारी ता'दाद रूह़ानी व जिस्मानी और समाजी व मुआ़शी वग़ैरा त़रह़ त़रह़ की परेशानियों का शिकार है, कहीं **नेकी की दा'वत** के तर्क के सबब तो येह ह़ाल नहीं ? आप ख़ुद परहेज़ गार और नेकूकार ही सही मगर दूसरों को **नेकी की दा'वत** नहीं देते और बा वुजूदे क़ुदरत गुनाहों से नहीं रोकते, आ़म मुसल्मानों बल्कि अपने घर वालों को बुराइयों में मुब्तला देख कर जी में कुढ़ते तक नहीं तो इस ह़दीसे मुबा-रका को बार बार पढ़िये, सुनिये और ख़ुद को अ़ज़ाबे इलाही से डरा कर **नेकी की दा'वत** पर कमर बस्ता हो जाइये, चुनान्चे सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म फ़रमाया : फ़ुलां शह्‌र को उस के रहने वालों समेत ज़ेरो ज़बर कर दो, ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! उन लोगों में तेरा एक फ़ुलां नेक बन्दा भी है जिस ने पलक झपकने की मिक़्दार भी तेरी ना फ़रमानी नहीं की।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : **اَقْلِبْهَا عَلَيْهِمْ فَاِنَّ وَجْهَهٗ لَمْ يَتَمَعَّرْ فِيَّ سَاعَةً قَطُّ** या'नी शह्‌र उन पर उलट दो क्यूं कि उस का चेहरा मेरी ना फ़रमानियां देख कर कभी मु-तग़य्यर न हुवा।

(شعب الایمان، باب فی الامر بالمعروف والنھی عن المنکر، ٦ /٩٧، الحدیث:٧٥٩٥)

इस ह़दीसे पाक के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : इस ह़दीस शरीफ़ से वाज़ेह़ होता है कि जहां आ'माले सालिह़ा (या'नी नेकियों) से तअ़ल्लुक़ और बुराइयों से इज्तिनाब (या'नी परहेज़) ज़रूरी है वहां दीनो मिल्लत के ख़िलाफ़ साज़िशों और मुसल्मानों पर ज़ुल्मो सितम नीज़ मुआ़-श-रती बिगाड़ की वज्ह से परेशान होना भी ईमान का तक़ाज़ा है। जो लोग **अल्लाह तआ़ला** की रिज़ा जूई की ख़ात़िर मुआ़-श-रती बुराइयों के इज़ाले (या'नी ख़ातिमे) के लिये कोशां नहीं रहते और अ़-दमे त़ाक़त (क़ुव्वत न होने) की सूरत में इस पर परेशान भी नहीं होते उन का तक़्वा किस काम का ! लिहाज़ा अपनी इस्लाह़ और इ़बादते ख़ुदा वन्दी में मश्ग़ूलिय्यत के साथ साथ मुल्को मिल्लत और मुसल्मानाने आ़लम की ज़बूं ह़ाली के ख़ातिमे और मुआ़-शरे को ग़ैर शर-ई ह़-रकातो स-कनात से पाक करने के लिये कोशां रहना हम सब की ज़िम्मेदारी है। (مراۃ المناجیح، کتاب الاداب، باب الامر بالمعروف، ٦/٥١٦)

www.dawateislami.net

नेक लोगों की हलाकत का सबब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जो खुद नेकियों की ह़रीस होती हैं, पाबन्दिये वक़्त के साथ नमाज़ें भी पढ़ती हैं, मगर बे पर्दा मोडर्न सहेलियों की सोहबतों से कनारा कशी करने के बजाए महूज़ ह़ज़्ज़े नफ़्स की ख़ातिर (या'नी मज़े लेने के लिये) उन की बैठकों की रौनक़ बनतीं उन की ग़ैर मोहतात़ और गुनाहों भरी बातों में अगर्चे चुप रहती मगर दिल ही दिल में लुत्फ़ अन्दोज़ होती हैं, ज़ाहिर है नफ़्स को मज़ा न आता होता तो ऐसियों के साथ क्यूं दोस्तियां निभातीं ! अब जो रिवायत पेश की जा रही है वोह ऐसियों के लिये ताज़ियानए इब्रत (या'नी नसीहत व इब्रत का चाबुक) है, चुनान्चे मन्क़ूल है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना यूशअ़ बिन नून عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर वह्य भेजी कि आप की क़ौम के एक लाख आदमी अ़ज़ाब से हलाक किये जाएंगे जिन में चालीस हज़ार नेक हैं और साठ हज़ार बद । आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : या रब عَزَّوَجَلَّ ! बद किरदारों की हलाकत की वज्ह तो ज़ाहिर है लेकिन नेक लोगों को क्यूं हलाक किया जा रहा है ? इर्शाद फ़रमाया : नेक लोग भी उन बद किरदारों में दाख़िल हैं कि उन के साथ खाते और पीते हैं और येह लोग मेरी नाराज़ी के सबब (उन बदकारों से) नाराज़ नहीं होते ।

(شُعَبُ الایمان، باب فی مباعدۃ الکفار والمفسدین ، فصل فی مجانبۃ الظلم ، ۷/ ۵۳ ، الرقم:۹۴۲۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी बहनों को ह़म्माम में जाने की मुमा-न-अ़त

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **853** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल''** जिल्द **1**, सफ़्ह़ा **421** पर शैख़ुल इस्लाम इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़िम्स या शाम की कुछ औ़रतें उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुईं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन से पूछा : क्या तुम वोही हो जिन की औ़रतें ह़म्माम में जाती हैं ? मैं ने ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है : जो औ़रत अपने शोहर के घर के इलावा अपने कपड़े उतारती हैं वोह अपने और अपने रब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान का पर्दा फाड़ डालती है ।

(جامع الترمذی، کتاب الأدب، باب ما جاء فی دخول الحمام، ص۶۵۴، الحدیث:۲۸۰۳)

www.dawateislami.net

सरकार का सय्यि-दतुना आ़इशा को नेकी की दा'वत फ़रमाना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नेकी की दा'वत देना तमाम अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام और हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबा-रका भी है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **301** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"आंसूओं का दरिया"** सफ़ह़ा **257** पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की त़रफ़ इशारा कर के उन्हें पस्ता क़द कहा तो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ! तुम ने उस की ग़ीबत कर दी । अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या उन का क़द छोटा नहीं ? फ़रमाया : तूने उस की सब से बुरी चीज़ का तज़्किरा किया । (بحرُ الدُّموع، ص۱۸۸)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए, आप ने मेरे हाथ में चांदी के कंगन देखे तो दरयाफ़्त फ़रमाया : येह क्या है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ज़ीनत इख़्तियार करती हूं । तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम इस की ज़कात अदा करती हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं या जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे । तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : येह तुम्हें जहन्नम के लिये काफ़ी हैं । (سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب الکنز ما ھو ...الخ، ص۲۵۴، الحدیث:۱۵۶۵)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ! अपने आप को आग से बचाओ अगर्चे खजूर के एक टुकड़े के ज़रीए हो । (مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب الحث علی الصدقۃ،۳/ ۲۰۸، الحدیث:۴۵۸۲)

सय्यि-दतुना आ़इशा का फ़रमाने मुस्त़फ़ा पर अ़मल

येही वज्ह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ब क़दरे इस्तित़ाअ़त स-दक़ा व ख़ैरात करती रहती थीं और उस माल के कम होने से कोई आ़र मह़सूस न फ़रमाती थीं, चुनान्चे एक दफ़्आ़ एक

www.dawateislami.net

मिस्कीन ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से खाने का सुवाल किया । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के सामने कुछ अंगूर रखे हुए थे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने किसी से फ़रमाया कि इन में से एक दाना उठा कर उसे दे दो । वोह हैरानी के आलम में आप की तरफ़ देखने लगा तो उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : क्या तुम तअज्जुब करते हो ? येह तो देखो कि इस दाने में कितने ज़र्रात हैं ।

(المؤطا للامام مالک، کتاب الصدقة، باب الترغیب فی الصدقة، الجزء الثانی، ص۹۹۵، الحدیث:٦)

रहे जिस में इश्क़े हबीबे ख़ुदा
वोह दिल वोह जिगर और वोह सर चाहिये

(दीवाने सालिक, स. 40)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सहाबए किराम व सहाबिय्यात رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُم اَجۡمَعِیۡن जो सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर हर अदा और हर हर सुन्नत को दीवाना वार अपनाया करते थे इस मुआ-मले में भी उन्हों ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत की इत्तिबाअ करते हुए नेकी की दा'वत की ख़ूब धूमें मचाईं इस्लामी बहनों की तरग़ीब व तह़रीस के लिये बतौरे नुमूना उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की **नेकी की दा'वत** के चन्द वाक़िआत पेश किये जाते हैं, चुनान्चे

सय्यि-दतुना आइशा की नेकी की दा'वत के चन्द वाक़िआत

﴾1﴿...... रात की नमाज़ तर्क न करो :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अबू क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मुझ से उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : रात के क़ियाम (या'नी तहज्जुद) को तर्क न किया करो क्यूं कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इसे तर्क न फ़रमाया करते थे और जब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बीमार होते या थके हुए होते तो इसे बैठ कर अदा फ़रमा लिया करते ।

(صحیح ابن خزیمة، کتاب الصلاة، باب استحباب صلاة اللیل قاعدًا...الخ، ص۲٦۵ الحدیث:۱۱۳۷)

﴾2﴿...... नफ़्ली रोज़े की तरग़ीब :

हज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि इन्हों ने अ-रफ़ा के दिन उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की ख़िदमत में हाज़िर हो

www.dawateislami.net

कर अ़र्ज़ किया मुझे पीने के लिये कुछ दीजिये। तो उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : ऐ लड़के ! इसे शहद पिलाओ। फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ मसरूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! तुम ने रोज़ा नहीं रखा ? तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : नहीं ! मुझे ख़ौफ़ हुवा कि कहीं आज ईदुल अज़्ह़ा का दिन न हो। तो उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : अ़-रफ़ा तो वोह दिन है जिस दिन ह़ाकिमे इस्लाम किसी को अमीरे ह़ज मुक़र्रर करे और क़ुरबानी का दिन वोह है जिस दिन ह़ाकिमे इस्लाम क़ुरबानी करे। फिर फ़रमाया : ऐ मसरूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! क्या तुम ने नहीं सुना कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़-रफ़ा के रोज़े को एक हज़ार दिन के बराबर फ़रमाते थे।

(المعجم الاوسط، من اسمه محمد، ٥/١٢٧، الحديث:٦٨٠٢)

एक और रिवायत में है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाया करते थे कि अ़-रफ़ा का रोज़ा एक हज़ार दिन के रोज़ों की त़रह़ है।

(شعب الايمان ، باب فى الصيام ، تخصيص يوم عرفة بالذكر ٣/٣٥٧، الحديث:٣٧٦٤)

3...... मुसल्मान को मुसीबत पहुंचने पर हंसने से मन्अ़ करना :

क़ुरैश के कुछ नौ जवान हंसते हुए उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उस वक़्त मिना में तशरीफ़ फ़रमा थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पूछा कि तुम क्यूं हंस रहे हो ? अ़र्ज़ किया : फ़ुलां शख़्स ख़ैमे की रस्सी में अटक कर गिर गया (इस ज़ोर से गिरा) कि क़रीब था कि उस की गरदन टूट जाती या आंख ज़ाएअ़ हो जाती। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "मत हंसो ! मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि जिस मुसल्मान को कोई कांटा चुभता है या इस से भी कम जो तक्लीफ़ होती है उस के इवज़ में उस का एक द-रजा बुलन्द कर दिया जाता और एक गुनाह मिटा दिया जाता है।"

(صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب ثواب المؤمن فيمايصيبه...الخ ،ص٩٩٨، الحديث :٢٥٧٢)

बशर को सब्र नहीं वरना येह मसल सच है
कि चुप की दाद ग़फ़ूरुर्रह़ीम देता है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़ुरैश के नौ जवान चूंकि किसी शख़्स के ख़ैमे की रस्सी में अटक कर गिरने पर हंस रहे थे जो कि उस शख़्स की तह़क़ीर व दिल आज़ारी का सबब था इस पर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन्हें हंसने से मन्अ़ फ़रमा दिया और साथ ही मुसल्मान को मुसीबत पहुंचने पर उस के द-रजात की बुलन्दी और

www.dawateislami.net

गुनाहों की मुआफ़ी के सिल्सिले में सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे बा क़रीना भी सुना दिया।

《4》...... मय्यित को अज़िय्यत देने से मन्अ़ फ़रमाना :

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक औ़रत की मय्यित को देखा कि उस के सर में ज़ोर ज़ोर से कंघी की जाती है फ़रमाया : तुम किस लिये अपनी मय्यित की पेशानी खींचते हो ? (مصنف عبد الرزاق، کتاب الجنائز، باب شعر المیت واظفارہ، ۳/۲۷۵، الحدیث: ۶۲۵۸)

मय्यित को भी तक्लीफ़ होती है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस त़रह़ किसी ज़िन्दा शख़्स को तक्लीफ़ पहुंचाना ह़राम है इसी त़रह़ मय्यित को भी तक्लीफ़ पहुंचाना ह़राम है जैसा कि हम बे कसों के ग़म गुसार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने राह़त निशान है : मय्यित की हड्डियां तोड़ना ज़िन्दा की हड्डियां तोड़ने की त़रह़ है।

(سنن ابی داؤد، کتاب الجنائز، باب فی الحفاریجد العظم......الخ، ص۵۱۶، الحدیث:۳۲۰۷)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जैसे वोह (ज़िन्दा की हड्डियां तोड़ना) ह़राम है ऐसे ही येह (मय्यित की हड्डियां तोड़ना भी) ह़राम, इब्ने अबी शैबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से रिवायत की, कि मोमिन को बा'दे मौत ईज़ा देना ऐसा है जैसे उसे ज़िन्दगी में सताना। (مصنف ابن ابی شیبۃ ، کتاب الجنائز ، باب ما قالوا فی سب الموتی ...الخ، ۳/ ۲۴۵، الحدیث :۶)

मुफ़्ती साह़िब عَلَیْہِ الرَّحْمَہ मज़ीद फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि मुसल्मान मुर्दे का पोस्ट मार्टम (Post-Mortem) करना या उसे मुर्दाख़ाना रख कर उस की खाल उतारना, उस के पुर्ज़े उड़ा देना, अ़र्से तक दफ़्न न करना सख़्त मम्नूअ़ है। (مراۃ المناجیح، کتاب الجنائز، باب دفن المیت،۲/۴۹۶)

इसी वज्ह से जब उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने औ़रत की मय्यित को मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि उस के सर में ज़ोर ज़ोर से कंघी की जा रही है तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन्हें **नेकी की दा'वत** देते हुए मय्यित को अज़िय्यत पहुंचाने से मन्अ़ फ़रमा दिया।

www.dawateislami.net

﴾5﴿...... मौत को याद करने की तरग़ीब :

एक औ़रत ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) का ज़िक्र किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इर्शाद फ़रमाया : मौत को कसरत से याद किया कर तेरा दिल नर्म हो जाएगा। जब उस औ़रत ने ऐसा किया तो उस का दिल नर्म हो गया पस उस ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का शुक्रिया अदा किया। (الروض الفائق، المجلس الثالث فی ذکر الموت وزیارۃ القبور...الخ، ص۲۳)

फूंक दे जो मेरी ख़ुशियों का नशेमन आक़ा
चाक दिल, चाक जिगर सोज़िशे सीना दे दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 370)

﴾6﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी का वबाल :

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को मक्तूब लिखा : जो बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी का कोई अ़मल करता है तो उस की ता'रीफ़ करने वाले लोग उस की मज़म्मत करने लगते हैं। (الزھد لابن مبارک، باب الاخلاص والنیۃ، ص ۹۵، الحدیث: ۲۰۰)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़ाबिले रश्क हैं वोह इस्लामी बहनें जो अपनी सिह़ह़त व फ़राग़त को ग़नीमत जानते हुए अपने शबो रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी में गुज़ारती हैं और जिन के शबो रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में गुज़रते हैं फिर भी वोह लोगों की निगाहों में मुअ़ज़्ज़ज़ हैं उन को इस धोके में नहीं रहना चाहिये कि उन की येह इ़ज़्ज़त दाइमी है, चुनान्चे इमाम इब्ने ह़जर मक्की عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : इस बात से डरो कि मुअमिनीन के दिल तुम से नफ़रत करने लगें और तुम्हें इस बात का शुऊ़र भी न हो। इसी से मिलता जुलता एक फ़रमाने ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का भी है आप **عَلَیۡہِ الرَّحۡمَہ** फ़रमाते हैं : जो बन्दा तन्हाई में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुअमिनीन के दिलों में उस की नाराज़ी इस त़रह़ डाल देता है कि उसे इस का शुऊ़र भी नहीं होता। (الزواجر، مقدمۃ المؤلف، خاتمۃ فی تحریر من جملۃ المعاصی، ۱/ ۲۸)

﴾7﴿...... मोमिन, मोमिन का भाई है :

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی **"एह़याउल उ़लूम"** जिल्द **2**, सफ़ह़ा **233** पर नक़्ल फ़रमाते हैं : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : मोमिन, मोमिन का भाई है न उसे लूटता है और न उस से तकल्लुफ़ करता है।

(احیاءُالعلوم، کتاب آداب الالفة والاخوة،الباب الثانی فی حقوق الاخوة والصحبة، ۲/۲۳۳)

सच्चा मुसलमान

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! एक कामिलुल ईमान और सच्चे मुसलमान की सिफ़ात में येह बात भी है कि वोह दूसरे मुसल्मानों को तक्लीफ़ पहुंचाने से इज्तिनाब करता है, चुनान्चे सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : (सच्चा) मुसलमान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसल्मान मह़फ़ूज़ रहें और (सच्चा) मोमिन वोह है जिस से लोग अपने ख़ून और माल में मुत़्मइन रहें।

(سنن الترمذی، کتاب الایمان، باب ما جاء فی ان المسلم من سلم ...الخ، ص ۲۱۹، الحدیث:۲۶۲۷)

इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : (ज़बान और हाथ से दूसरे मुसल्मानों के मह़फ़ूज़ रहने से मुराद येह है) कि न किसी को बिला वज्ह मारे पीटे न उन की चुग़ली और ग़ीबत करे।

और ह़दीस शरीफ़ के फ़रमान "सच्चा मोमिन वोह है जिस से लोग अपने ख़ून और माल में मुत़्मइन रहें" के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी उस का बरताव ऐसा अच्छा हो कि लोगों को क़ुदरती त़ौर पर उस की त़रफ़ से इत़्मीनान हो कि येह न हमारे माल मारेगा न तक्लीफ़ देगा येह इत़्मीनान मुस्लिमीन **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की बड़ी ने'मत है। इसी लिये बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि किसी की क़ुव्वते ईमानी जांचने के लिये उस के पड़ोसियों और दोस्तों से पूछो। (مراٰۃ المناجیح، کتاب الایمان، ۱/۵۴)

इन रिवायात से मा'लूम हुवा कि हमारा प्यारा दीन हमें एह़तिरामे मुस्लिम का दर्स देता है और एह़तिरामे मुस्लिम का तक़ाज़ा येह है कि हर ह़ाल में हर मुसल्मान के तमाम ह़ुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखा जाए और बिला इजाज़ते शर-ई किसी भी मुसल्मान की दिल शि-कनी न की जाए। हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी भी किसी मुसल्मान का दिल न दुखाया न किसी पर त़न्ज़ किया, न किसी का मज़ाक़ उड़ाया न किसी को धुत्कारा, न कभी किसी की बे इ़ज़्ज़ती की बल्कि हर एक को सीने से लगाया बल्कि

लगाते हैं उस को भी सीने से आक़ा
जो होता नहीं मुंह लगाने के क़ाबिल

www.dawateislami.net

मज़्कूरा रिवायत में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا **नेकी की दा'वत** देते हुए मुसल्मानों के माल व जान की ह़िफ़ाज़त का दर्स इर्शाद फ़रमा रही हैं।

﴾8﴿...... झांज वाले घर में फ़िरिश्ते नहीं आते :

ह़ज़रते सय्यि-दतुना बुनाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि वोह **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास थीं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की ख़िदमत में एक बच्ची लाई गई जिस पर **झांझन** थे जो आवाज़ कर रहे थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बोलीं कि इसे मेरे पास हरगिज़ न लाओ मगर इस सूरत में कि इस के **झांजन** तोड़ दिये जाएं और फ़रमाती हैं : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि उस घर में फ़िरिश्ते नहीं आते जिस में **झांज** हो। (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد، کتاب الخاتم، باب ماجاء فی الجلاجل، ص٦٦٢، الحديث:٤٢٣١)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : झांजन एक क़िस्म का बाजा है और जहां बाजा हो वहां फ़िरिश्तए रह़मत नहीं होता शैत़ान होता है। मज़ीद फ़रमाते हैं : फ़िरिश्तों से मुराद रह़मत के फ़िरिश्ते हैं जो ख़ुसूसी त़ौर पर मुसल्मानों के घरों में आते जाते रहते हैं या वहां ही मुक़ीम रहते हैं। ख़ुसूसन उन घरों में जहां तिलावते क़ुरआन का ज़िक्रे ख़ैर रहता है। (مراۃ المناجیح، کتاب اللباس، باب الخاتم، ١٣٦/٦)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मज़्कूरा रिवायात से उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का जज़्बए **नेकी की दा'वत** का पता चलता है कि किसी वक़्त और किसी जगह भी **नेकी की दा'वत** का मौक़अ़ मिलता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ज़रूर उस पर अ़मल फ़रमातीं। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की पाक सीरत पर अ़मल करते हुए हमें भी अपना येह म-दनी ज़ेह्न बनाना चाहिये कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ। अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये म-दनी माह़ोल ज़रूरी है, वरना आ़रिज़ी त़ौर पर जज़्बा पैदा होता भी है तो अच्छी सोह़बत के फ़ुक़्दान (या'नी कमी) के सबब इस्तिक़ामत नहीं मिल पाती। अपना म-दनी ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। سُبۡحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और म-दनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब बहारें और ब-र-कतें हैं। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे माहोल में रचने बसने की ब-र-कत से मु-तअ़द्दद इस्लामी बहनों को शर-ई पर्दा करने की सआ़दत नसीब हो गई, ऐसी ही एक बहार मुला-ह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे

www.dawateislami.net

बे पर्दगी से तौबा

पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के तह़रीरी बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं **दा'वते इस्लामी** के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले **T.V** पर फ़िल्में डिरामे देखने की आ़दी थी, बाज़ार वग़ैरा जाने के लिये बे पर्दा ही निकल खड़ी होती, नमाज़ भी नहीं पढ़ती थी। यूं मेरे सुब्ह़ व शाम ग़फ़्लत व मा'सियत में बसर हो रहे थे। एक बार किसी ने मुझे **मक-त-बतुल मदीना** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात के केसिट दिये, मैं ने उन्हें सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो गई। उन बयानात की ब-र-कत से मुझे ख़ौफ़े ख़ुदा की दौलत नसीब हुई, इ़श्क़े रसूल का जज़्बा मिला और मैं नमाज़ी बन गई, मैं ने अपने तमाम गुनाहों बिल ख़ुसूस बे पर्दगी से पक्की तौबा कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! म-दनी बुरक़अ़ मेरे लिबास का ह़िस्सा बन गया। वोह बे लगाम ज़बान जो पहले गाने गुन-गुनाने में मसरूफ़ रहती थी अब اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ना'ते मुस्त़फ़ा सुनाने लगी। ता दमे तह़रीर **दा'वते इस्लामी** की ज़ैली मुशा-वरत की ख़ादिमा के त़ौर पर सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल कर रही हूं। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 31)

कटी है ग़फ़्लतों में ज़िन्दगानी न जाने ह़श्र में क्या फ़ैसला हो
इलाही ! हूं बहुत कमज़ोर बन्दा न दुन्या में न उ़क़्बा में सज़ा हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 165)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! **मक-त-बतुल मदीना** की जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनना, सुनाना किस क़दर मुफ़ीद हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! कई ख़ुश नसीब इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रोज़ाना कम अज़ कम एक सुन्नतों भरा बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं और जो साह़िबे ह़ैसिय्यत होते हैं वोह तक़्सीम भी करते हैं आप भी हर माह या कम अज़ कम हर साल रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ में लंगरे रसाइल तक़्सीम करने की निय्यत फ़रमाइये और ह़स्बे तौफ़ीक़ इस में सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें और रसाइल वग़ैरा बांटिये कि येह भी स-दक़ा है और राहे ख़ुदा में स-दक़ा व ख़ैरात के क्या कहने ! ह़ुज़ूर सरापा नूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे पुरनूर है : "मुसल्मान का स-दक़ा उ़म्र में ज़ियादती करता और बुरी मौत को दफ़अ़ करता है। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की वज्ह से तकब्बुर व फ़ख़्र को दूर फ़रमा देता है।" **(المعجم الکبیر للطبرانی، باب العین، عمرو بن عوف ملحة المزنی، ٤٤٠/٦، الحدیث:١٣٥٠٨)**

मैं सब दौलत रहे ह़क़ में लुटा दूं
ख़ुदा ऐसा मुझे जज़्बा अ़त़ा हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 165)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾13﴿...... सय्यि-दतुना आ़इशा की उमूरे ख़ानादारी

दुरूदे पाक ज़रीअ़ए शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है : ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **अल्लाह तआ़ला** के इज़्न से अ़र्श के क़रीब एक वसीअ़ जगह में ठहराया जाएगा। आप عَلَیْہِ السَّلَام पर दो सब्ज़ रंग के कपड़े होंगे गोया कि आप लम्बे खजूर के दरख़्त की त़रह़ होंगे। आप अपनी औलाद में से जन्नत की त़रफ़ चल कर जाने वाले को देख रहें होंगे और उसे भी देख रहे होंगे जो जहन्नम की त़रफ़ जा रहा होगा ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام इसी ह़ाल पर होंगे कि अचानक आप عَلَیْہِ السَّلَام की नज़र हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत के एक आदमी पर पड़ेगी जिसे जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जा रहा होगा। तो ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام आवाज़ देंगे : **या अह़मद या अह़मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जवाब देंगे : **لَبَّیْکَ یَا اَبَا الْبَشَر** (ऐ अबुल बशर ! मैं ह़ाज़िर हूं) तो फिर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام कहेंगे : येह आप की उम्मत का आदमी है, इसे जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जा रहा है। (सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :) पस मैं अपनी चादर को मज़्बूत़ करते हुए तेज़ी से मलाएका के पीछे चलूंगा और येह कहूंगा : ऐ मेरे रब (عَزَّوَجَلَّ) के क़ासिदो ! ठहर जाओ। तो वोह जवाब देंगे : हम वोह ग़ज़ब नाक और त़ाक़त वर हैं कि **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** हमें जो हुक्म इर्शाद फ़रमाए हम उस की ना फ़रमानी नहीं करते और वोही कुछ करते हैं जिस का हमें हुक्म दिया जाता है। जब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ना उम्मीद हो जाएंगे तो अपनी रीशे मुबारक को अपने बाएं हाथ से पकड़ेंगे और अ़र्शे इलाही की त़रफ़ मु-तवज्जेह होंगे और येह अ़र्ज़ करेंगे, **''یَا رَبِّ قَدْ وَعَدْتَنِیْ اَنْ لَّا تُخْزِیَنِیْ فِیْ اُمَّتِیْ''** (ऐ मेरे रब ! तूने मुझ से वा'दा फ़रमाया था कि तू मुझे मेरी उम्मत के बारे में ग़मज़दा नहीं करेगा ?) तो अ़र्श की त़रफ़ से येह निदा आएगी : मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की इत़ाअ़त करो और उस आदमी को उस के मक़ाम की त़रफ़ वापस लौटा दो। तो फिर मैं अपने इज़ार बांधने की जगह से पौरों की मिस्ल एक काग़ज़ का पुरज़ा निकालूंगा और उसे तराज़ू के दाएं पलड़े में डाल दूंगा और येह कहूंगा بِسْمِ اللّٰہ (**अल्लाह** के नाम के साथ) तो

www.dawateislami.net

उस के सबब नेकियां बदियों के मुक़ाबले में भारी हो जाएंगी। चुनान्चे येह आवाज़ लगाई जाएगी : येह सआ़दत मन्द हो गया और इस का दादा भी खुश बख़्त है और इस का तराज़ू भारी हो गया, तुम इसे जन्नत की त़रफ़ ले चलो। तो फिर वोह शख़्स कहेगा : ऐ मेरे रब के क़ासिदो ! ठहर जाओ यहां तक कि मैं इस अ़ब्दे करीम के बारे में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा कर लूं तो फिर वोह कहेगा : मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों आप का चेहरा कितना ह़सीन है और आप के अख़्लाक़ कितने ख़ूब सूरत हैं आप कौन हैं ? आप ने मेरे गुनाहों को मेरे लिये कम कर दिया है। तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाएंगे मैं तेरा नबी मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हूं और येह तेरा वोह दुरूदे पाक है जो तू मुझ पर पढ़ा करता था और मैं तुझ पर आसानी कर रहा हूं जिस का तू ज़ियादा ह़ाजत मन्द है। (الدر المنثور، سورة الاعراف، آيتان٨-٩، الجزء السادس، ٦/٣٢٧)

गर न तुम अहले कबाइर की शफ़ाअ़त करते पूछता कौन जहन्नम के सज़ावारों को
ज़ाते पाके शहे लौलाक ह़बीबे यज़्दां क्या वसीला है शफ़ाअ़त का गुनाहगारों को

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यि-दतुना आ़इशा का मुख़्तसर तआ़रुफ़

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की मां का नाम "उम्मे रूमान" है इन का निकाह़ ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़ब्ले हिजरत मक्कए मुकर्रमा में हुवा था लेकिन काशानए नुबुव्वत में येह मदीनए मुनव्वरह के अन्दर शव्वाल 2 सि.हि. में आईं। येह ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़बूबा और बहुत ही चहीती बीवी हैं।
(المواهب اللدنية، المقصد الثانى فى اسمائه ......الخ، الفصل الثالث فى ذكر ازواجه الطاهرات......الخ، عائشة ، ٢/ ٨١-٨٢. ملتقطًا)

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के बारे में ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : "ऐ उम्मे स-लमा ! मुझे आ़इशा के बारे में ईज़ा मत दो, खुदा की क़सम ! किसी बीवी के लिह़ाफ़ में मेरे ऊपर वह़्य नहीं उतरी सिवाए इस के (जब मेरे साथ बिस्तरे नुबुव्वत पर सोती रहती हैं तो इस ह़ालत में भी मुझ पर वह़्य उतरती रहती है)।"
(صحيح البخارى، كتاب فضائل اصحاب النبى، باب فضل عائشة رضى الله عنها، ص٩٥٢ ، الحديث:٣٧٧٥)

उन के बिस्तर में वह़ी आए रसूलुल्लाह पर
और सलामे ख़ादिमाना भी करें रूह़ुल अमीं

(दीवाने सालिक, स. 31)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **679** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''जन्नती ज़ेवर''** सफ़ह़ा **483** पर शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی तह़रीर फ़रमाते हैं : फ़िक़्ह व ह़दीस के उ़लूम में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बीबियों के दरमियान उन का द-रजा बहुत ऊंचा है बड़े बड़े सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان उन से मसाइल पूछा करते थे इ़बादत में उन का येह आ़लम था कि नमाज़े तहज्जुद की बेह़द पाबन्द थीं और नफ़्ली रोज़े भी बहुत ज़ियादा रखती थीं सख़ावत और स-दक़ातो ख़ैरात के मुआ़-मले में भी हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब बीबियों में ख़ास त़ौर पर बहुत मुमताज़ थीं ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे दुर्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कहती हैं कि एक मर्तबा कहीं से एक लाख दिरहम उन के पास आए आप ने उसी वक़्त उन सब दिरहमों को ख़ैरात कर दिया उस दिन वोह रोज़ादार थीं मैं ने अ़र्ज़ किया कि आप ने सब दिरहमों को बांट दिया और एक दिरहम भी आप ने बाक़ी नहीं रखा कि उस से आप गोश्त ख़रीद कर रोज़ा इफ़्त़ार करतीं तो आप ने फ़रमाया कि अगर तुम ने पहले कहा होता तो मैं एक दिरहम का गोश्त मंगा लेती।

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی **''मिरआतुल मनाजीह़''** में फ़रमाते हैं : आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) फ़क़ीहा, फ़सीह़ा, ह़दीस की ह़ाफ़िज़ा, क़ुरआन की बेहतरीन मुफ़स्सिरा थीं, हु़ज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के सीने पर वफ़ात पाई और आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के हु़जरे में दफ़्न हुए जब आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) को तोहमत लगाई गई तो आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की बरिय्यत में **19** आयात उतरीं :

या'नी है सूरए नूर जिन की गवाह

उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 311)

आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) से **2210** अह़ादीस मरवी हैं, आप ने **17** र-मज़ान मंगल की शब **57** हिजरी में **53** साल की उ़म्र पा कर ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़मानए इमारत में वफ़ात पाई, ह़ज़रते अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हैं। **(مراٰۃ المناجیح، کتاب الایمان، باب القدر، ۱/۹۵)**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर में अगर्चे ख़ादिमा मौजूद थी लेकिन फिर भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا घर का कामकाज ख़ुद किया करतीं, चुनान्चे

www.dawateislami.net

अपना निक़ाब ख़ुद सी रही थीं

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की बारगाह में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا अपना निक़ाब सी रही हैं। उस ने कहा : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भलाई (या'नी मालो दौलत) की कसरत नहीं फ़रमा दी ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इर्शाद फ़रमाया : तुम हमें छोड़ो ! वोह नए कपड़े का ह़क़दार नहीं जो पुराने कपड़े इस्ति'माल न करे। (الطبقات الکبریٰ لابن سعد، ذکر ازواج رسول الله، باب عائشة، ۷۲/۱۰)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का इस फ़रमाने आ़ली पर अ़मल है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को नसीह़त करते हुए फ़रमाया था : "وَلَا تَسْتَخْلِقِیْ حَتّٰی تُرَقِّعِیْہِ तरजमा : और किसी कपड़े को पुराना न समझो ह़त्ता कि उसे पैवन्द लगा लो।"

(سنن الترمذی، کتاب اللباس، باب ما جاء فی ترقیع الثوب، ص۴۴۴، الحدیث:۱۷۸۰، ملتقطًا)

इस ह़दीसे पाक में इन्तिहाई क़नाअ़त की ता'लीम है कि पैवन्द वाले कपड़े पहनने में आ़र मह़सूस नहीं करनी चाहिये। इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा पर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का कैसा अ़मल था, आइये ! मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) को देखा जब कि आप **ख़ली-फ़तुल मुस्लिमीन** थे कि आप के कपड़ों में ऊपर तले तीन पैवन्द एक जगह पर लगे थे कि पैवन्द गल गया तो और लगा लिया ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में ख़ुत़्बा दिया उस वक़्त आप के तहबन्द शरीफ़ में 12 पैवन्द थे। (مرقاۃ المفاتیح، کتاب اللباس، الفصل الثانی، ۲۲۰/۸، تحت الحدیث:۴۳۴۴، مُلَخَّصًا)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : मक़्सद येही है कि पैवन्द वाले कपड़े के पहनने में आ़र न होनी चाहिये। लिहाज़ा येह ह़दीस उन अह़ादीस के ख़िलाफ़ नहीं जहां इर्शाद है कि रब की ने'मत का असर तुम पर ज़ाहिर हो या फ़रमाया कि नया कपड़ा पाओ तो पुराना ख़ैरात कर दो। **इब्ने अ़साकिर** ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गधे की सुवारी फ़रमा लेते थे, अपना ना'लैने पाक ख़ुद सी लेते थे, अपने क़मीस में पैवन्द लगा लेते थे और पहन लेते थे और फ़रमाते थे कि जो मेरी सुन्नत से नफ़रत करे वोह मेरी जमाअ़त से नहीं।

(تاریخ مدینة دمشق، حرف الف من اسمه محمد، باب ذکر تواضعه لربه ورحمته......الخ، ۷۷/۴، الحدیث:۹۰۱. مرآۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب اللباس، ۱۰۸/۶)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुन्नत की बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत है। आइये ! अब सुन्नत की फ़ज़ीलत व अहम्मिय्यत के बारे में कुछ मुला-ह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे

www.dawateislami.net

सुन्नत की अहम्मिय्यत

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करना दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयों के हुसूल का ज़रीआ़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''مَنْ اَحْيَا سُنَّتِىْ فَقَدْ اَحَبَّنِىْ وَمَنْ اَحَبَّنِىْ كَانَ مَعِىَ فِى الْجَنَّةِ** या'नी जिस ने मेरी सुन्नत को ज़िन्दा किया उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।'' **(المعجم الاوسط، باب الياء، من اسمه يعقوب، ٦/٤٧١، الحديث:٩٤٣٩)**

100 शहीदों का सवाब

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे रूह़ परवर है : **''مَنْ تَمَسَّكَ بِسُنَّتِىْ عِنْدَ فَسَادِ اُمَّتِىْ فَلَهٗ اَجْرُ مِائَةِ شَهِيْدٍ** या'नी फ़सादे उम्मत के वक़्त जो शख़्स मेरी सुन्नत पर अ़मल करेगा उसे **100** शहीदों का सवाब अ़त़ा होगा।'' **(الزهد الكبير للبيهقى، فصل فى العزلة والخمول، ص١١٨، الحديث:٢٠٧)**

देता हूं तुझे वासित़ा मैं प्यारे नबी का उम्मत को ख़ुदाया रहे सुन्नत पे चला दे
अ़त्तार से मह़बूब की सुन्नत की ले ख़िदमत डंका येह तेरे दीन का दुन्या में बजा दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 100)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ऐसे नाज़ुक ह़ालात में कि जब दुन्या भर में गुनाहों की यलग़ार, ज़रा-इए़ इब्लाग़ में फ़ह़्ह़ाशी की भरमार और फ़ेशन परस्ती की फिटकार मुसल्मानों की अक्सरिय्यत को बे अ़मल बना चुकी है, नीज़ इल्मे दीन से बे रग़बती और हर ख़ासो आ़म का रुज्ह़ान सिर्फ़ और सिर्फ़ दुन्यावी ता'लीम की त़रफ़ होने और दीनी मसाइल से अ़-दमे वाक़िफ़िय्यत की बिना पर हर सम्त जहालत के बादल मंडला रहे हैं, हमें अपनी ज़िन्दगी सुन्नतों के सांचे में ढालने की कोशिश करनी चाहिये और इस के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता होना बेह़द मुफ़ीद है। आप की तरग़ीब के लिये एक म-दनी बहार पेश की जाती है, चुनान्चे

शराबी की तौबा

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े खारादर के मुक़ीम इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : हमारे अ़लाक़े में एक इन्तिहाई **बद किरदार शख़्स** रिहाइश पज़ीर था। वोह अपनी ह़-र-कतों की वज्ह से बहुत **बदनाम** था, लोग उसे बहुत **समझाते** मगर उस के कानों पर जूं तक न रैंगती। दीगर बुराइयों के साथ साथ दिन रात **शराब** के नशे में बद मस्त रहा करता। उस

www.dawateislami.net

के शबो रोज़ बहूरे गुनाह में गोता ज़नी करते गुज़र रहे थे कि एक दिन किसी इस्लामी भाई ने उसे **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दी। उस की ख़ुश नसीबी कि वोह इज्तिमाअ़ में शरीक हो गया। जूंही इज्तिमाअ़ में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का **सुन्नतों भरा बयान** शुरूअ़ हुवा वोह सरापा इश्तियाक़ बन गया। जब रिक़्क़त अंगेज़ बयान की तासीर कानों के रास्ते उस के दिल में उतरी तो वहां से **नदामत के चश्मे** फूट निकले जो आंखों के रास्ते आंसूओं की सूरत में बहने लगे। **ख़ौफ़े ख़ुदा** के सबब उस पर इतनी रिक़्क़त त़ारी हुई कि बयान के ख़त्म हो जाने के बा'द भी वोह बहुत देर तक सर झुकाए ज़ारो क़ित़ार **रोता** रहा। फिर उस ने शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथ पर बैअ़त हो कर हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ग़ुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लिया। उस ने अपने साबिक़ा **गुनाहों से तौबा** कर के शराब को हमेशा के लिये तर्क करने का इरादा कर लिया। अचानक शराब छोड़ने की वज्ह से उस की **त़बीअ़त** शदीद ख़राब हो गई, किसी ने मश्वरा भी दिया कि शराब यक-दम नहीं छोड़ी जा सकती लिहाज़ा फ़िलह़ाल थोड़ी बहुत पी लिया करो, थोड़ा सुकून मिल जाएगा फिर कम करते करते छोड़ देना, लेकिन उस ने शराब पीने से **साफ़ इन्कार** कर दिया और तक्लीफ़ें उठा कर शराब से **छुटकारा** पा ही लिया। पांचों **नमाज़ें** मस्जिद में जमाअ़त के साथ पढ़ने को अपना मा'मूल बना लिया और चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ **दाढ़ी शरीफ़** भी सजा ली। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल ने उस इस्लामी भाई की ज़िन्दगी बदल कर रख दी। दिन भर सुन्नत के मुत़ाबिक़ **सफ़ेद लिबास** में मल्बूस नज़र आते, हफ़्ते में एक दिन अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शरीक होते। **दा'वते इस्लामी** का **म-दनी काम** करने की ब-र-कत से उन्हें ऐसी मिलन-सारी नसीब हुई कि जो कोई उन से मिलता, उन का **गिरवीदा** हो जाता।

एक दिन अचानक उन की त़बीअ़त ख़राब हो गई उन्हें हस्पताल में दाख़िल करवा दिया गया, कस्रते क़ै व इस्हाल (दस्त) की वज्ह से निढाल हो गए। उन की ह़ालत देख कर येही मह़सूस होता था कि शायद अब **सिह़्ह़त याब** न हो सकें। शाम के वक़्त अचानक बुलन्द आवाज़ से **कलिमए त़य्यिबा** "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه" पढ़ा और उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से **परवाज़** कर गई। जब इन्तिक़ाल की ख़बर अ़लाक़े में पहुंची तो उन से मह़ब्बत रखने वाला हर इस्लामी भाई उदास और **मग़्मूम** दिखाई देने लगा। उस मुबल्लिग़े **दा'वते इस्लामी** के जनाज़े में कसीर इस्लामी भाई शरीक हुए। उन की नमाज़े जनाज़ा उन के पीरो मुर्शिद, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी**

www.dawateislami.net

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने पढ़ाई । इस्लामी भाई **मुरीद के जनाज़े पर मुर्शिद की आमद** पर फ़र्ते रश्क से अश्कबार हो गए । (हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की 425 हिकायात, स. 469)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ है कि हमें सुन्नतों की महब्बत अता फ़रमाए । यक़ीनन **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं लिहाज़ा हर दम **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता रहिये ।

आइये ! अब **दा'वते इस्लामी** के म-दनी मराकिज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में सुन्नतों की बहारों के बारे में एक कलाम मुला-हज़ा फ़रमाइये :

सुन्नत की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में

सुन्नत की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में
रहमत की घटा छाई फ़ैज़ाने मदीना में
इस शहर के आए हैं बाहर से भी आए हैं
सरकार के शैदाई फ़ैज़ाने मदीना में
दाढ़ी है इमामे हैं ज़ुल्फ़ों की बहारें हैं
शैतान को शर्म आई फ़ैज़ाने मदीना में
लम्हाते मुसर्रत हैं दीवाने बड़े ख़ुश हैं
क्यूं झूमे न हर भाई फ़ैज़ाने मदीना में
सुन्नत की बहारों का कुछ ऐसा समां छाया
फ़ेशन को हया आई फ़ैज़ाने मदीना में
उल्फ़त के उख़ुव्वत के क्या ख़ूब मनाज़िर हैं
गोया हैं सगे भाई फ़ैज़ाने मदीना में
वोह लोग ही आते हैं और फ़ैज़ उठाते हैं
तक़्दीर जिन्हें लाई फ़ैज़ाने मदीना में
अपने हों या बेगाने यूं मिलते हैं दीवाने
जैसे हों शनासाई फ़ैज़ाने मदीना में
दर्द अपने दिलों में जो इस्लाम का रखते हैं
है उन की पज़ीराई फ़ैज़ाने मदीना में
अल्लाह करम कर दे तू बख़्श दे इन सब को
मौजूद हैं जो भाई फ़ैज़ाने मदीना में
सुन्नत का लिये जज़्बा आए जो यहां उस की
है हौसला अफ़्ज़ाई फ़ैज़ाने मदीना में
इब्लीसे ख़सीस सुन ले अब ख़ैर नहीं तेरी
शामत तेरी है आई फ़ैज़ाने मदीना में
फ़ैज़ाने मदीना में फ़ैज़ाने मदीना है
फ़ैज़ान है आक़ाई फ़ैज़ाने मदीना में
फ़ैज़ाने मदीना ही है दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ान है मौलाई फ़ैज़ाने मदीना में
मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
हर लब पे दुआ आई फ़ैज़ाने मदीना में
आक़ा हो करम सब पर बुलवाओ मदीने में
आए हैं तमन्नाई फ़ैज़ाने मदीना में
सरकार अता कर दो ग़म सब को मदीने का
जितने हैं यहा भाई फ़ैज़ाने मदीना में
क़िस्मत का सिकन्दर है ज़ोरों पे मुक़द्दर है
जिस ने भी जगह पाई फ़ैज़ाने मदीना में

आज आक़ा के दीवाने क्या मस्त हैं मस्ताने
अत्तार है ईद आई फ़ैज़ाने मदीना में

(वसाइले बख़्शिश, स. 632)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

पुराना लिबास ईमान से है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दीने इस्लाम अपने मानने वाले हर मर्द व ज़न को सा-दगी अपनाने की तरग़ीब देता और ना जाइज़ ज़राएअ़ से ज़ीनत ह़ासिल करने से मन्अ़ करता है। सा-दगी में इ़ज़्ज़त व बचत है। **फ़ेशन** की ख़ाति़र रोज़ रोज़ नए लिबास पहनने वालियां, ज़रा फ़ेशन तब्दील हुवा या लिबास थोड़ा पुराना हुवा या कहीं से मा'मूली सा फटा तो **पैवन्द-कारी** कर के उस को पहनने में आ़र (या'नी ऐब) मह़सूस करने वालियां इस रिवायत को बार बार पढ़ें : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि मह़बूबे रब्बुल इ़बाद, क़रारे हर क़ल्बे नाशाद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : ''اَلَا تَسۡمَعُوۡنَ اَلَا تَسۡمَعُوۡنَ اِنَّ الۡبَذَاذَۃَ مِنَ الۡاِیۡمَانِ اِنَّ الۡبَذَاذَۃَ مِنَ الۡاِیۡمَانِ'' तरजमा : क्या तुम सुनते नहीं ? क्या तुम सुनते नहीं ? कि कपड़े का पुराना होना ईमान से है, बेशक कपड़े का पुराना होना ईमान से है।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الترجل ، ص۶۵۳، الحدیث:۴۱۶۱)

इस रिवायत के तह़त ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : **''ज़ीनत का तर्क करना अहले ईमान के अख़्लाक़ में से है।''**

(اَشِعَّۃُ اللَّمۡعَات(مترجم)، لباس کا بیان ، ۵۷۶/۵)

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی **''मिरआतुल मनाजीह़''** में इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ''इस का मत़लब है कि मा'मूली लिबास फटे पुराने कपड़े पहनने से शर्म व आ़र न होना कभी पहन भी लेना मोमिन मुत्तक़ी की अ़लामत है, हमेशा आ'ला द-रजे के लिबास पहनने का आ़दी बन जाना कि मा'मूली लिबास पहनते शर्म आए त़रीक़ा मु-तकब्बिरीन का है। यहां ईमान से मुराद कमाले ईमान है।''

(مراۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب اللباس، ۱۰۹/۶)

वल्वला सुन्नते मह़बूब का दे दे मालिक
आह ! फ़ेशन पे मुसल्मान मरा जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 128)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

उम्मते मुस्लिमा की तनज़्ज़ुली का एक सबब

आ'ला द-रजे का लिबास, नित नए फ़ेशन की बिना पर बार बार सिलवाना एक तो अख़्राजात में बे जा इज़ाफ़े का सबब है और दूसरा येह कि नित नए फ़ेशन में बे हयाई भी ज़ियादा से ज़ियादा होती है आज मुसल्मान औरतों की हालत ऐसी है कि सर शर्म से झुक जाता है अब तो पर्दे का तसव्वुर ही नहीं रहा बे पर्दगी को जदीद तहज़ीब ख़याल किया जाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसल्मानों को अक़्ले सलीम अता फ़रमाए।

वोह क़ौम जो कल तक खेलती थी शमशीरों के साथ
सिनेमा देखती है आज वोह हमशीरों के साथ

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 154)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बे पर्दगी की होलनाक सज़ा

हज़रते सय्यिदुना इमाम शहाबुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद बिन हजर मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی हदीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : "मे'राज की रात, सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो बा'ज़ औरतों के अज़ाबात के होलनाक मनाज़िर मुला-हज़ा फ़रमाए, उन में येह भी था कि एक औरत बालों से लटकी हुई थी और उस का दिमाग़ खौल रहा था, सरकारे आली मर्तबत, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा शफ़्क़त में अर्ज़ की गई कि येह औरत अपने बालों को ग़ैर मर्दों से नहीं छुपाती थी।"

(الزّواجرُ عن اقترافِ الكبائر، الكبيرة : ٢٨٠، ٨٦/٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मरने से पहले संभल जाना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कहीं हमारे फ़ेशन हमें तबाह न कर दें, हमारी बे पर्दगी हमें जहन्नम में न धकेल दे, मरने से पहले संभल जाना चाहिये और पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा कर लेनी चाहिये, ग़ैर मर्दों से अपने बाल न छुपाने की वज्ह से बालों से लटकाए जाने का अज़ाब आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया, इस्लामी बहनों को ग़ैर मर्दों से अपने बाल छुपाना भी ज़रूरी है यहां तक कि कंघी से निकलने वाले बालों को भी ऐसी जगह फेंकना मम्नूअ़ है जहां पर अज्नबी मर्दों की नज़र पड़े, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **1197** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द **3** हिस्सा **16** सफ़हा **449** पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी

www.dawateislami.net

عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **"औ़रतों** को लाज़िम है कि कंघा करने में या सर धोने में जो बाल निकलें उन्हें कहीं छुपा दें कि उन पर अज्नबी (या'नी ग़ैर मर्दों) की नज़र न पड़े।"

सुन्नतों का हो अ़ता दर्द मुसल्मानों को
दूर फ़ेशन की हो भरमार रसूले अ़-रबी

(वसाइले बख़्शिश, स. 326)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ना जाइज़ फ़ेशन करने वालियों के अ़ज़ाब का मुशा-हदा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **480** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **"बयानाते अ़त्तारिय्या"** हिस्सए अव्वल के रिसाले **"क़ब्र का इम्तिहान"** सफ़हा **30** पर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़े गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(मे'राज की रात) मैं ने एक बदबूदार गढ़ा देखा जिस में शोरो ग़ोग़ा बरपा था (या'नी चीख़ो पुकार बुलन्द थी), मैं ने कहा : येह क्या है ? तो जिब्राईले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) ने अ़र्ज़ की : "येह वोह औ़रतें हैं जो ना जाइज़ अश्या से ज़ीनत ह़ासिल करती थीं।"

(تاریخ بغداد، ذکر من اسمہ محمد واسم ابیہ ابراھیم، ۳۲۰: محمد بن ابراھیم بن عبد الحمید ابوبکر الحلوانی، ۲/۲۸۷)

तू अंग्रेज़ी फ़ेशन से हर दम बचा कर मुझे सुन्नतों पर चला या इलाही !
मुसल्मां बाज़ आ जाएं शहा ! फ़ेशन परस्ती से करम कर दो बनें पाबन्दे सुन्नत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश, स. 80, 148)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औ़रतों के ना जाइज़ फ़ेशन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रेशम, सोना, मेहंदी वग़ैरा का इस्ति'माल औ़रत के लिये जाइज़ है। **हां !** ज़ीनत व फ़ेशन की बा'ज़ ऐसी सूरतें भी हैं जो औ़रतों के लिये भी मन्अ़ हैं, जैसे इन्सानी बालों की चोटी बना कर अपने बालों में गूंधना, अब्रू के बाल नोचना, रैती से दांत रगड़ना वग़ैरा जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **1197** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द **3**, ह़िस्सा **16**, सफ़हा **596** पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इन्सान के बालों की चोटी बना कर औ़रत अपने बालों में गूंधे येह ह़राम है। ह़दीस में इस पर

www.dawateislami.net

ला'नत आई बल्कि उस पर भी ला'नत जिस ने किसी दूसरी औ़रत के सर में ऐसी चोटी गूंधी और अगर वोह बाल जिस की चोटी बनाई गई ख़ुद उसी औ़रत के हैं जिस के सर में जोड़ी गई जब भी ना जाइज़ और अगर ऊन या सियाह धागे की चोटी बना कर लगाए तो इस की मुमा-न-अ़त नहीं। सियाह कपड़े का मूबाफ़[(1)] बनाना जाइज़ है और कलावा[(2)] में तो अस्लन ह़रज नहीं कि येह बिल्कुल मुमताज़ होता है। इस त़रह़ गूदने वाली और गुदवाने वाली या रैती से दांत रैत कर ख़ूब सूरत करने वाली या दूसरी औ़रत के दांत रैतने वाली या मोचने[(3)] से अब्रू के बालों को नोच कर ख़ूब सूरत बनाने वाली और जिस ने दूसरी के बाल नोचे इन सब पर ह़दीस में ला'नत आई है।

(الدر المختار، كتاب الحظر والاباحة، فصل فى النظر والمس، ٩ / ٦١٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वोह इस्लामी बहनें जो शर-ई ह़ुदूद व क़ुयूद को बालाए त़ाक़ रख कर आए दिन फ़ेशन के नित नए ढंग और ज़ैबो ज़ीनत के नए रंग अपनाने में इस क़दर जी जान से मगन रहती हैं कि फ़र्ज़ पर्दा तक को مَعَاذَالله बोझ मह़सूस करने लग जाती हैं। उन के तसव्वुराते बद में चादर और चार दीवारी किसी अहम्मिय्यत की ह़ामिल नहीं होती। ऐसी ख़्वातीन का आइडियल अज़्वाजे मुस्त़फ़ा व बनाते मुस्त़फ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ नहीं बल्कि कुफ़्फ़ारे ना-बकार की चाल ढाल और फ़िरंगी तहज़ीब होती है। फ़ेशन परस्ती और बे पर्दगी की इस बेहू-दगी का अन्जाम क्या होता है? इस से हर ज़ी शुऊ़र बा ख़बर होगा। और इस जदीद साइन्सी दौर में मीडिया (ज़रा-इए़ इब्लाग़) की वुस्अ़तों ने हर दूसरे शख़्स को मा'लूमात का ह़रीस बना दिया है, आज हम अपने इर्द गिर्द, अड़ोस पड़ोस, मह़ल्ले और गाउं, शह्‌र और मुल्क बल्कि सारी दुन्या की **मा'लूमात** ह़ासिल करने का शौक़ तो रखते हैं कि फ़ुलां मुल्क में इलेक्शन हुए तो किस सियासी पार्टी को अक्सरिय्यत ह़ासिल हुई! फ़ुलां मैच कौन सी टीम जीती! फ़ुलां जगह ज़ल्ज़ला या तूफ़ान आया तो कितने लोग हलाक हुए! फ़ुलां मुल्क का सद्र या फ़ुलां सूबे का गवर्नर कौन है! वग़ैरा वग़ैरा मगर अफ़्सोस इस के मुक़ाबले में हमारी दीनी मा'लूमात उ़मूमन सत़ह़ी नौइय्यत की होती हैं फिर उन में से दुरुस्त कितनी होती हैं? कोई साह़िबे इ़ल्म हमारा इम्तिह़ान ले तो पता चले। **याद रखिये!** दुन्यवी मा'लूमात की कसरत पर हमें आख़िरत में कोई जज़ा मिलेगी न कम होने पर कोई सज़ा! अलबत्ता ब क़दरे

(1)...... बालों में धागा लगा कर इन्हें दराज़ करना मूबाफ़ कहलाता है। (2)...... कच्चा सूत, जो तक्ले पर लगा हुवा हो और तक्ला चर्ख़े की उस आहनी सलाख़ को कहते हैं जिस पर कातते वक़्त लच्छी बनती जाती है। (3)...... मोचना : या'नी बाल उखाड़ने का आला।

www.dawateislami.net

ज़रूरत दीनी मा'लूमात न होना नुक़्साने आख़िरत का बाइस है क्यूं कि इस जहाने फ़ानी (या'नी दुन्या) में की गई नेकियां जहाने आख़िरत की आबाद-कारी जब कि गुनाह उख़्रवी बरबादी का सबब हैं और नेकियों और गुनाहों की पहचान के लिये इल्मे दीन का होना बहुत ज़रूरी है। मिसाल के तौर पर जहन्नम में ले जाने वाले गुनाहों में से एक तकब्बुर भी है जिस का इल्म सीखना **फ़र्ज़** है, चुनान्चे **आ'ला हज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना **शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द **23** सफ़हा **624** पर लिखते हैं **:** **"मुहर्रमाते बातिनिय्या** (या'नी बातिनी मम्नूआत म-सलन) **तकब्बुर** व **रिया** व **उज्ब** व **हसद** वग़ैरहा और उन के मुआ-लजात (या'नी इलाज) कि इन का इल्म (या'नी जानना) भी हर मुसल्मान पर अहम **फ़राइज़ से है।"** (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 624)

इस लिये हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को चाहिये कि पहले **तकब्बुर** की ता'रीफ़, तबाह कारियां, अक़्साम, अस्बाब, अलामात और इलाज वग़ैरा के बारे में मुकम्मल मा'लूमात हासिल कर के दियानत दारी के साथ अपना **मुहा-सबा** करे फिर अगर इस **बातिनी गुनाह** में गिरिफ़्तार होने का एहसास हो तो हाथों हाथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में **तौबा** करे और **इलाज** के लिये भरपूर कोशिशें शुरूअ कर दे।

तकब्बुर किसे कहते हैं ?

ख़ुद को अफ़्ज़ल, दूसरों को हक़ीर जानने का नाम तकब्बुर है। चुनान्चे रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** **"اَلْكِبْرُ بَطَرُ الْحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ"** या'नी तकब्बुर हक़ बात का इन्कार करने और लोगों को हक़ीर जानने का नाम है।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانہ، ص٥٤، الحدیث:٩١)

इमाम रागिब इस्फ़हानी लिखते हैं **:** **ذٰلِکَ اَنْ يَّرَى الْاِنْسَانُ نَفْسَهٗ اَكْبَرَ مِنْ غَيْرِهٖ** **या'नी तकब्बुर येह है कि इन्सान अपने आप को दूसरों से अफ़्ज़ल समझे।** **(مفرداتُ القرآن، کتاب الکاف، کبر، ص٤٢١)** जिस के दिल में तकब्बुर पाया जाए उसे "मु-तकब्बिर" कहते हैं।

तकब्बुर से बचने की फ़ज़ीलत

मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे बा ब-र-कत है **:** "जो शख़्स **तकब्बुर**, ख़ियानत और दैन (या'नी क़र्ज़ वग़ैरा) से बरी हो कर मरेगा वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा।" **(جامع الترمذی، کتاب السیر، باب ما جاء فی الغلول، ص٤٠٣، الحدیث:١٥٧٢)**

www.dawateislami.net

कौन सा तकब्बुर कुफ़्र है ?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के मुक़ाबले में तकब्बुर करना कुफ़्र है,** जैसे फ़िरऔन का **तकब्बुर** कि उस ने कहा था :

اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿۲۴﴾ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ﴿۲۵﴾ (پ۳۰، النّٰزعٰت:۲۴،۲۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मैं तुम्हारा सब से ऊंचा रब हूं तो **अल्लाह** ने उसे दुन्या व आख़िरत दोनों के अ़ज़ाब में पकड़ा।

"یَاقَهَّارُ" के छ⁶ हुरूफ़ की निस्बत से तकब्बुर के 6 नुक़्सानात

इस बातिनी गुनाह के कसीर दुन्यवी व उख़रवी नुक़्सानात हैं, जिन में से **6** येह हैं :

﴾1﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ना पसन्दीदा बन्दा :

रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ **तकब्बुर** करने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता जैसा कि सूरए **नह्ल** में इर्शाद होता है :

اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِیْنَ ﴿۲۳﴾ (پ۱۴، النحل:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह मग़रूर को पसन्द नहीं फ़रमाता।

शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मु-तकब्बिरीन (या'नी मग़रूरों) और इतराने वालों पर ग़ज़ब फ़रमाता है।"

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، حرف الکاف، الکبر والخیلاء، الجزءُ الثالث، ۲/ ۲۱۰، الحدیث:۷۷۲۷)

﴾2﴿...... म-दनी आक़ा का मु-तकब्बिरीन से इज़्हारे नफ़रत :

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "बेशक क़ियामत के दिन मेरे नज़्दीक सब से पसन्दीदा और सब से ज़ियादा क़रीब वोह लोग होंगे जो तुम में से अख़्लाक़ में सब से ज़ियादा अच्छे होंगे और क़ियामत के दिन मेरे नज़्दीक सब से क़ाबिले नफ़रत और मेरी मजलिस से दूर वोह लोग होंगे जो बहुत बातें करने वाले, लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले और **मु-तफ़ैहिक़** हैं।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ज़ियादा बातूनी और लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वालों को तो हम ने जान लिया मगर येह **मु-तफ़ैहिक़** कौन हैं ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**तकब्बुर** करने वाले।"

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی معالی الاخلاق، ص۴۸۸، الحدیث:۲۰۱۸)

www.dawateislami.net

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम !
कि जिस को तूने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《3》...... बद तरीन शख़्स :

तकब्बुर करने वाले को बद तरीन शख़्स क़रार दिया गया है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि हम दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक जनाज़े में शरीक थे कि आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बद तरीन बन्दे के बारे में न बताऊं ? वोह बद अख़्लाक़, **मु-तकब्बिर** है, क्या मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सब से बेहतरीन बन्दे के बारे में न बताऊं ? वोह कमज़ोर और ज़ईफ़ समझा जाने वाला, बोसीदा कपड़ों वाला अगर वोह किसी बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाए ।"

(مسند امام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حدیث حذیفه بن الیمان، ۹/۵٤۰، الحدیث:۲٤۱۰۱)

《4》...... क़ियामत में रुस्वाई :

तकब्बुर करने वालों को क़ियामत के दिन ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना होगा, चुनान्चे दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे रूह़ परवर है : "क़ियामत के दिन **मु-तकब्बिरीन** को इन्सानी शक्लों में च्यूंटियों की मानिन्द उठाया जाएगा, हर जानिब से उन पर ज़िल्लत त़ारी होगी, उन्हें जहन्नम के "**बौलस**" नामी क़ैदख़ाने की त़रफ़ हांका जाएगा और बहुत बड़ी आग उन्हें अपनी लपेट में ले कर उन पर ग़ालिब आ जाएगी, उन्हें "**त़ी-नतुल ख़ब्बाल** या'नी जहन्नमियों के ज़ख़्मों की पीप" निचोड़ कर पिलाई जाएगी ।"

(جامع الترمذی، ابواب صفة القیامة،باب -٤٤، ص ۵۹۰، الحدیث:۲٤۹۲)

《5》...... दूरी में इज़ाफ़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : बन्दा जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुख़ालिफ़ चलता रहता है तो वोह हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूरी में इज़ाफ़ा करता रहता है । (احیاءُ علومِ الدِّین، کتاب ذم الکبر والعجب، بیان اخلاق المتواضعین...الخ، ۳/٤۳٤)

www.dawateislami.net

《6》...... जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस के दिल में राई के दाने जितना (या'नी थोड़ा सा) भी **तकब्बुर** होगा वोह जन्नत में दाख़िल न होगा।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانہ، ص٥٤، الحدیث:١٤٨(٩١)، ملتقطًا)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی लिखते हैं : जन्नत में दाख़िल न होने से मुराद येह है कि **तकब्बुर** के साथ कोई जन्नत में दाख़िल न होगा बल्कि **तकब्बुर** और हर बुरी ख़स्लत से अ़ज़ाब भुगत्ने के ज़रीए या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के अ़फ़्वो करम से पाको साफ़ हो कर जन्नत में दाख़िल होगा। (مرقاۃ المفاتیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب الاداب، باب الغَضَب والکبر، ٩/٢٩٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मु-तकब्बिर जन्नत में नहीं जाएगा

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस शख़्स के दिल में ज़र्रा बराबर भी **तकब्बुर** हो वोह जन्नत में नहीं जाएगा।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : यक़ीनन आदमी पसन्द करता है कि उस का लिबास और जूते अच्छे हों। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "اِنَّ اللّٰـہَ جَمِیْلٌ یُحِبُّ الْجَمَالَ الْکِبْرُ بَطَرُ الْحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ **तरजमा :** बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जमील है, जमाल को पसन्द फ़रमाता है। **तकब्बुर** येह है कि ह़क़ बात का इन्कार और लोगों को ह़क़ीर व ज़लील समझा जाए।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانہ، ص٥٤، الحدیث:١٤٧(٩١))

मुफ़स्सिरे शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ "**तकब्बुर** ह़क़ को झुटलाना, लोगों को ज़लील समझना है" के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी मु-तकब्बिर वोह है जो किसी मा'मूली इन्सान की ह़क़ बात को इस लिये झुटलाए कि येह (मा'मूली) आदमी के मुंह से निकली है और मसाकीन को ज़लील समझे।

(مراۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب الاداب، تکبر کا بیان، ٦/ ٦٥٨)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सय्यि-दतुना आ़इशा जंग के हथियार दुरुस्त करतीं

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا न सिर्फ़ घर के काम किया करतीं बल्कि आप दूसरे काम भी सर अन्जाम देती थीं जैसे **जंग के हथियार** दुरुस्त करतीं, चुनान्चे एक दफ़्अ़ा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (लोगों को जंग के) सामान की तय्यारी का हुक्म दिया और **अपने घर वालों** से भी सामान की तय्यारी का फ़रमा दिया । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी बेटी सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास आए और देखा कि वोह **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'ज़ सामान को उलट पलट रही थीं तो आप ने दरयाफ़्त किया : क्या हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम सब को सामान की तय्यारी करने का हुक्म दिया है ? अ़र्ज़ किया : "जी हां ।" फिर आप ने पूछा : क्या तुम्हें कुछ मा'लूम है कि कहां का इरादा है ? सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : "**वल्लाह !** मुझे मा'लूम नहीं ।"

(السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، مغازی الرسول، ذکر الاسباب الموجبۃ المیسر الی مکۃ......الخ، الاستعداد لفتح مکۃ، الجزءُ الرابع، ۲۲/۲، ملتقطًا)

सय्यि-दतुना आ़इशा कुरबानी के जानवर के हार बनातीं

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कुरबानी के हार बना कर सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में पेश किया करती थीं, चुनान्चे मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो ऊंट कुरबानी के लिये भेजते उस का हार सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ुद अपने हाथों से बनातीं और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देतीं और हुज़ूर सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हार कुरबानी के जानवर को पहना देते, जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ में है : ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : كَانَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم یُھْدِی مِنَ الْمَدِیْنَۃِ فَاَفْتِلُ قَلَائِدَ ھَدْیِہٖ या'नी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीने से कुरबानी का जानवर भेजते तो मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कुरबानी के जानवर के हार अपने हाथ से बटती थी । (صحیح البخاری، کتاب الحج، باب فتل القلائد للبدن والبقر، ص ٤٦٠، الحدیث:١٦٩٨)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत की ख़ातिर (नफ़्ली) रोज़ा भी न रखती थीं, चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मुझ पर र-मज़ान के क़ज़ा रोज़े होते थे और मैं सिवाए शा'बान के इन को अदा करने की ताक़त नहीं रखती थी हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मश्ग़ूल होने की वज्ह से । (صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب قضاء رمضان فی شعبان، ص٤١٣، الحدیث:١١٤٦)

www.dawateislami.net

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی "**मिरआतुल मनाजीह**" में इस हदीसे पाक के आख़िरी जुम्ले के तहत फ़रमाते हैं : "इस जुम्ले का मत़लब है कि दस माह में हर वक़्त हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिये तय्यार रहती थी कि न मा'लूम हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे किस वक़्त श-रफ़े कुरबत इनायत फ़रमाएं इस लिये रोज़ा क़ज़ा न करती थी, मा'लूम हो रहा है कि उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا) इन दस माह में नफ़्ली रोज़े भी न रखती थीं जब फ़र्ज़ क़ज़ा न कर सकती थीं तो नफ़्ल का सुवाल ही पैदा नहीं होता।"

हदीसे पाक से अख़्ज़ होने वाले म-दनी फूल

इस हदीसे पाक से मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत दीगर इबादात से अफ़्ज़ल है देखो ! सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत के लिये नफ़्ली रोज़े न रखती थीं, हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द अक्सर रोज़ादार रहती थीं और उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا) को हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बता देने से मा'लूम था कि मैं हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौजू-दगी में वफ़ात न पाऊंगी। अगर आप को अपनी वफ़ात का हर दम ख़त़रा रहता तो आप पर क़ज़ा बहुत जल्द करना ज़रूरी होता, जैसे कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज फ़र्ज़ होने पर पहले साल हज न किया, क्यूं कि आप को अपनी ज़िन्दगी का यक़ीन था, हम पर फ़र्ज़ होते ही कर लेना ज़रूरी है, ताख़ीर गुनाह है, चौथे येह कि एक साल के र-मज़ान की क़ज़ा दूसरे र-मज़ान आने से पहले ज़रूर कर लेना चाहिये शा'बान में ज़रूरी कर ले। (مراۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب الصوم، باب القضاء، ۱۷۵/۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द कसरत से नफ़्ली रोज़े रखा करती थीं, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا की पैरवी करते हुए हमें भी **र-मज़ानुल मुबारक** के फ़र्ज़ रोज़ों के साथ साथ नफ़्ली रोज़े भी ज़रूर रखने चाहिएं।

याद रखिये ! शादी शुदा इस्लामी बहन को शोहर की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ली रोज़ा रखने की इजाज़त नहीं चुनान्चे "**फ़तावा शामी**" में है : "शोहर की इजाज़त के बिग़ैर बीवी नफ़्ल रोज़ा नहीं रख सकती।" (حاشية ابن عابدين، كتاب الصوم، فصل فى العوارض، ۴۷۷/۳)

www.dawateislami.net

सय्यि-दतुना आ़इशा का रोज़ा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बेह़द सख़ी थीं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा कि सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने **70,000 दराहिम** राहे ख़ुदा में तक़्सीम कर दिये ह़ालां कि उन की क़मीस मुबारक में पैवन्द लगा हुवा था और एक दफ़्आ़ ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने उन की ख़िदमत में **एक लाख दराहिम** भेजे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने वोह सब दिरहम एक ही रोज़ में राहे ख़ुदा में तक़्सीम कर दिये और उस रोज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ुद रोज़े से थीं। शाम के वक़्त बांदी ने अ़र्ज़ की : क्या ही अच्छा होता कि एक दिरहम रोटी के लिये रख लेतीं। तो फ़रमाया : "मुझे याद नहीं रहा, याद रहता तो बचा लेती।"

(مدارج النبوت، قسم پنجم، باب دوم درذکر اُمّہات المومنین، ۴۷۳/۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने वुस्अ़त के बा वुजूद अपनी ज़िन्दगी निहायत सादा और ज़ाहिदाना गुज़ार दी और जो दौलत भी ह़ाज़िर हुई राहे ख़ुदा में तक़्सीम फ़रमा दी यहां तक कि **लाख दराहिम** आए तो वोह भी लुटा दिये और रोज़ा इफ़्तार करने के लिये भी कोई एहतिमाम न फ़रमाया और एक हम हैं कि अगर कभी **नफ़्ल रोज़ा** रख भी लें तो हमें **इफ़्तार** के वक़्त हमा अक़्साम के फल, कबाब, समोसे, ठन्डा ठन्डा शरबत और न जाने क्या क्या चाहिये। बहर ह़ाल हमें उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के नक़्शे क़दम पर चलना चाहिये और दौलत से इस क़दर मह़ब्बत न रखनी चाहिये कि राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के मुआ़-मले में दिल तंग हो।

आज के पुर फ़ितन दौर में हुब्बे दुन्या से पीछा छुड़ाने और आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी बेह़द मुफ़ीद है **आइये !** अब आप के सामने एक बिगड़े हुए नौ जवान का वाक़िआ़ पेश किया जाता है जो म-दनी क़ाफ़िले के **आ़शिक़ाने रसूल** की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा तो उस की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया ! चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **1431** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ तह़रीर फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

आ़शिक़ाने रसूल से मुलाक़ात की ब-रकात

शहरे क़ुसूर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक नौ जवान इस्लामी भाई की तह़रीर **बित्तसर्रुफ़** पेश करता हूं : मैं उन दिनों मेट्रिक का त़ालिबे इल्म था, बुरी सोह़बत के बाइस गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहा था, मिज़ाज बेह़द ग़ुसीला था और बद तमीज़ी की नौबत इस ह़द तक पहुंच चुकी थी कि वालिद कुजा दादा और दादी के सामने भी क़ैंची की त़रह़ ज़बान चलाता था। एक रोज़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का एक म-दनी क़ाफ़िला हमारे मह़ल्ले की मस्जिद में ह़ाज़िर हुवा, ख़ुदा का करना ऐसा हुवा कि मैं **आ़शिक़ाने रसूल** से मुलाक़ात के लिये पहुंच गया। एक बा इमामा इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे **दर्स** में शिर्कत की दा'वत पेश की, मैं उन के साथ बैठ गया। उन्हों ने दर्स के बा'द मुझे बताया कि चन्द ही रोज़ बा'द **मदीनतुल औलिया** मुलतान शरीफ़ में **दा'वते इस्लामी का तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** हो रहा है आप भी शिर्कत कर लीजिये। उन के दर्स ने मुझ पर बहुत अच्छा असर किया था लिहाज़ा मैं इन्कार न कर सका। यहां तक कि मैं इज्तिमाअ़ (मुलतान) में ह़ाज़िर हो गया। वहां की रौनक़ें और ब-र-कतें देख कर मैं ह़ैरान रह गया, वहां होने वाले आख़िरी बयान **''गाने बाजे की होल नाकियां''** सुन कर थर्रा उठा और आंखों से आंसू जारी हो गए। मैं गुनाहों से तौबा कर के उठा और **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गया। मेरी म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से हमारे घर वालों ने इत़्मीनान का सांस लिया, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कत से मुझ जैसे बिगड़े हुए बद अख़्लाक़ नौ जवान में म-दनी इन्क़िलाब की वज्ह से मु-तअस्सिर हो कर मेरे बड़े भाई ने भी दाढ़ी रखने के साथ साथ इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया। मेरी एक ही बहन है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ उस ने भी **म-दनी बुरक़अ़** पहन लिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! घर का हर फ़र्द सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का मुरीद हो गया। और मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा करम फ़रमाया कि मैं ने क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करने की सआ़दत ह़ासिल कर ली और दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) में दाख़िला ले लिया और येह बयान देते वक़्त **द-र-जए सालिसा** या'नी तीसरी क्लास में पहुंच चुका हूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के तअ़ल्लुक़ से **अ़लाक़ाई क़ाफ़िला ज़िम्मादार** हूं। मेरी निय्यत है कि اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** 1427 सि.हि. से यक मुश्त **12 माह के लिये म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करूंगा।

www.dawateislami.net

दिल पे गर ज़ंग हो, सारा घर तंग हो होगा सब का भला, क़ाफ़िले में चलो
ऐसा फ़ैज़ान हो, हिफ़्ज़ कुरआन हो कर के हिम्मत ज़रा, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 617)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यि-दतुना आ़इशा जव शरीफ़ ख़ुद पीसतीं

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا घर में ख़ादिमा के होते हुए आटा ख़ुद पीसा करतीं और ख़ुद ही गूंध कर ख़ुद रोटियां पकाती थीं, चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि "एक रात ऐसा हुवा कि मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये जव पीसे और उस की रोटी पका कर रख दी और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इन्तिज़ार करने लगी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाएं तो मैं रोटी पेश करूं।"

(ماخوذ از الادب المفرد، باب لایؤذی جارہ ، ص ٤٨ ، الحدیث:١٢٠)

हंडिया में कद्दू ज़ियादा डालो !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! जब हंडिया पकाओ तो उस में कद्दू ज़ियादा डालो क्यूं कि येह ग़मगीन दिलों को तक़्वियत देता है।" **(کتاب الفوائد الشھیر الغیلانیات، باب فی اکل النبی ﷺ القرع، ٧٠١/٢، الحدیث:٩٥٧)**

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अब कद्दू शरीफ़ के बारे में कुछ मुला-ह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान सफ़्फ़ौरी शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : **नुज़्हतुन्नुफ़ूसि वल अफ़्कार** में है कि इस के तर पत्तों से कुल्ली की जाए तो सर दर्द ह़ार (गर्म) के लिये नाफ़ेअ़ है। अगर इसे ख़ुश्क कर के जलाया जाए और सिर्के में मिला कर बरस (सफ़ेद कोढ़) पर लगाया जाए तो उसे दूर कर देता है। अगर सिर्के के साथ मिला कर ककड़ी की त़रह़ इस का शोरबा बनाया जाए तो बुख़ार में मुफ़ीद है, इस का रोग़न (तेल) बारिद, रत़्ब (ठन्डा और तर) है। इसी त़रह़ माले ख़ोलिया (पागल पन) और बरसाम (सीने का दर्द या छाती की सूजन) के लिये भी फ़ाएदा मन्द है। अगर थोड़ा सा सिर्का मिला कर ख़्वाह सर में मला जाए या नाक में टपकाया जाए और दर्दे सर ह़ार को पीने और नाक में टपकाने से नफ़अ़ होता है और बदन की हर क़िस्म की गरमी के लिये नफ़अ़ बख़्श है।" **(نُزْھَةُ الْمَجَالِس، باب فی العدل، ١٣٩/٢)**

www.dawateislami.net

गोश्त में कद्दू शरीफ़ डालें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गोश्त वगै़रा पकाते वक़्त उस में चन्द क़तले कद्दू शरीफ़ के डालने की आ़दत बना लेनी चाहिये। क़तले बहुत छोटे छोटे डालें या पीस कर डालें, बड़े क़तले डालने में भी मुज़ा-यक़ा नहीं। गोश्त के साथ कद्दू शरीफ़ पकाने में एक ख़ूबी येह भी है कि इस की ठन्डक, गोश्त की गरमी को दूर कर के इस को मो'तदिल कर देती है। कद्दू शरीफ़ वगै़रा छिलके समेत पकाएं।

कुरआने पाक में कद्दू शरीफ़ का ज़िक्र

सुवाल : सुना है कद्दू शरीफ़ का ज़िक्र कुरआने पाक में भी है, किस मक़ाम पर ?
जवाब : जी हां ! कद्दू शरीफ़ का ज़िक्र कुरआने मजीद में भी है, ख़ालिक़े काएनात पारह **23**, **सू-रतुस्साफ़्फ़ात**, आयत **146** में इर्शाद फ़रमाता है :

وَ اَنْۢبَتْنَا عَلَیْهِ شَجَرَةً مِّنْ یَّقْطِیْنٍ(۱۴۶) (پ۲۳،الصّٰفّٰت:۱۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उस पर कद्दू का पेड़ उगाया।

अ़जीब मो'जिज़ा

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीर** ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में नक़्ल फ़रमाते हैं : "जब ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मछली के पेट से बाहर **80** रोज़ या **3** रोज़ या **7** रोज़ या **40** रोज़ बा'द मैदान पर तशरीफ़ लाए तो मछली के पेट में रहने के बाइस आप عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ऐसे नहीफ़ व ज़ईफ़ और नाज़ुक हो गए जैसा बच्चा पैदाइश के वक़्त होता है। आप عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्म की खाल नर्म हो गई थी और बदन पर कोई बाल बाक़ी न रहा था, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने साया करने और मख्खियों से मह़फ़ूज़ रखने के लिये आप عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर कद्दू शरीफ़ का पेड़ उगा दिया ह़ालां कि कद्दू की बेल होती है जो ज़मीन पर फैलती है मगर येह आप عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा था कि येह कद्दू का दरख़्त क़द वाले दरख़्तों की त़रह़ शाख़ रखता था और आप عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उस के बड़े बड़े पत्तों के नीचे आराम फ़रमाते थे, ब हुक्मे इलाही रोज़ाना एक बकरी आती और अपना थन आप عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दहन मुबारक में दे कर आप عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को सुब्ह़ व शाम दूध पिला जाती यहां तक कि जिस्मे मुबारक की जिल्द शरीफ़ या'नी खाल मज़्बूत़ हुई और अपने मौक़अ़ से बाल जमे और जिस्म में तुवानाई आई।"

(माख़ूज़ अज़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 23, सू-रतुस्साफ़्फ़ात, तह़्तल आयह : 145, 146, स. 835)

www.dawateislami.net

इसे पथ्थर पर तेज़ कर लो

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया : सींग वाला मेंढा लाया जाए जो सियाही में चलता, सियाही में देखता और सियाही में बैठता हो (या'नी उस के पाउं, पेट और आंखें सियाह हों)। वोह (कुरबानी के लिये) ह़ाज़िर किया गया हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने उसे नाश्ता कराया फिर फ़रमाया : "ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! छुरी लाओ।" फिर फ़रमाया : इसे पथ्थर पर तेज़ कर लो। तो मैं ने वैसे ही किया फिर हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने छुरी ली और मेंढे को पकड़ कर उसे लिटाया और ज़ब्ह़ किया और फ़रमाया : "بِسْمِ اللّٰہِ اَللّٰھُمَّ تَقَبَّلْ مِنْ مُّحَمَّدٍ، وَاٰلِ مُحَمَّدٍ، وَمِنْ اُمَّۃِ مُحَمَّدٍ" तरजमा : इलाही ! तू इस को मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से और इन की आल और उम्मत की त़रफ़ से क़बूल फ़रमा।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الضحایا، باب ما یستحب من الضحایا، ص٤٤٧، الحدیث:٢٧٩٢)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपने घर का कामकाज अपने हाथों से करना अज़्वाजे मुत़ह्हरात, सह़ाबिय्यात और जिगर गोशए ताजदारे रिसालत, ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन, उम्मुल ह़-सनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सुन्नते मुबा-रका है। इस्लामी बहनें अपने काम ख़ुद करेंगी तो उन का घर ख़ुशियों का गहवारा बन जाएगा। अपने बच्चों के अब्बू के सोंपे हुए काम भी करें और अपनी सास के सोंपे हुए काम भी करें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपनी शहज़ादी को ब वक़्ते निकाह़ इसी त़रह़ की नसीह़तों पर मुश्तमिल म-दनी गुलदस्ता अ़त़ा फ़रमाया, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 86 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**सुन्नते निकाह़**" सफ़ह़ा 48 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं :

घर को ख़ुशियों का गहवारा बनाने और आख़िरत संवारने के लिये "अ़त्तार" की त़रफ़ से "बिन्ते अ़त्तार" के लिये 12 म-दनी फूल

﴾1﴿.... **शोहर** की त़रफ़ से मिलने वाला हर हुक्म जो ख़िलाफ़े शर-अ़ न हो, बजा लाना ज़रूरी है।
﴾2﴿.... **अपने** शोहर और सास का खड़े हो कर इस्तिक़्बाल कीजिये और खड़े हो कर ही रुख़्सत भी कीजिये।

www.dawateislami.net

﴾3﴿.... **दिन** में कम अज़ कम एक बार (मुम्किन हो तो) सास की **दस्त बोसी** कीजिये।

﴾4﴿.... **अपनी** सास और सुसर का वालिदैन की त़रह़ **इक्राम** कीजिये। इन की आवाज़ के सामने अपनी **आवाज़ पस्त** रखिये। इन के और अपने शोहर के सामने **"जी जनाब" से** बात कीजिये।

﴾5﴿.... **शोहर** ज़रूरतन सज़ा देने का मजाज़ है।(1) ऐसा हो तो **सब्रो तहम्मुल** का मुज़ा-हरा कीजिये, गुस्सा कर के या ज़बान दराज़ी कर के घर से रूठ कर आ जाने की सूरत में **आप पर "मयके" के दरवाज़े बन्द हैं।**

बहारे शरीअ़त में है : "बीबी नमाज़ न पढ़े तो शोहर उस को मार सकता है इसी त़रह़ तर्के ज़ीनत पर भी मार सकता है और (बिला इजाज़त) घर से बाहर निकल जाने पर भी मार सकता है।" (बहारे शरीअ़त, मु-तफ़र्रिक़ात, हिस्सा : 16, जि. 3, स. 655)

﴾6﴿.... **हां !** बिग़ैर रूठे **शोहर की इजाज़त** की सूरत में जब चाहें मयके आ सकती हैं।

﴾7﴿.... **अपने** मयके की कोताहियां शोहर को बता कर ग़ीबत के **गुनाहे कबीरा** में न ख़ुद मुब्तला हों न अपने शोहर को **"सुनने"** के गुनाहे कबीरा में मुलव्वस करें।

﴾8﴿.... **अपनी** "बे अ़-मली" या "ला इल्मी" को ढांपने के लिये इस त़रह़ कह देना कि **"मुझे तो वालिदैन ने येह नहीं सिखाया"** सख़्त ह़माक़त है।

﴾9﴿.... **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 7 से **"नान न-फ़क़े का बयान"**, **"ज़ौजैन के हुक़ूक़"** वग़ैरा का मुत़ा-लआ़ कर लीजिये।

﴾10﴿.... **अपने** लिये किसी क़िस्म का **"सुवाल"** अपने शोहर से कर के उन पर बोझ मत बनना। **हां !** अगर वोह मुक़र्रर कर्दा हुक़ूक़ अदा न करें तो मांग सकती हैं।

﴾11﴿.... **मेहमान** की ख़िदमत सआ़दत समझ कर करना, उस के अख़्राजात के मुआ़-मले में शोहर पर बे जा बोझ मत डालना। **अपने वालिद से त़लब कर लेना।** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मायूसी नहीं होगी और अगर वोह ख़ुशदिली से रिज़ा मन्द हों तो उन की सआ़दत मन्दी होगी।

﴾12﴿.... **शोहर** की इजाज़त के बिग़ैर हरगिज़ घर से न निकलें। **(3, स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र**

---

(1)...... मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی **सू-रतुन्निसाअ**, आयत नम्बर **34** के तह़त लिखते हैं : रब तआ़ला ने यहां इन (या'नी बीवियों) की इस्लाह़ की तीन सूरतें बयान फ़रमाईं : (1)...... नसीह़त करना (2)...... बायकाट करना (3)...... मारना। (मज़ीद लिखते हैं :) ना फ़रमानी पर बीवी को ख़ावन्द मार सकता है मगर इस्लाह़ की मार मारे न कि ईज़ा (या'नी तक्लीफ़ देने) की मार जैसे शागिर्द को उस्ताद या औलाद को मां बाप इस्लाह़ के लिये मारते हैं। बिला क़ुसूर बीवी को मारना सख़्त मम्नूअ़ है जिस की पकड़ रब (عَزَّوَجَلَّ) के हां ज़रूर होगी। (तफ़्सीरे नईमी, पारह : 5, सू-रतुन्निसाअ, तह़तल आयह : 34, जि. 5, स. 67)

www.dawateislami.net

1418 सि.हि.) (इस्लामी बहनों को चाहें तो तोह़फ़े में इस तह़रीर की फ़ोटो कॉपी दे सकती हैं)।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मैं सरकार के बालों में मांग निकालती थी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अम्मी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सरकार के बालों में कंघी भी किया करती थीं, चुनान्चे **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब ए'तिकाफ़ करते तो मस्जिद में रहते हुए मेरी त़रफ़ अपना सर झुका देते, मैं कंघी कर देती और बजुज़ ह़ाजते इन्सानी घर में तशरीफ़ न लाते। (مسلم شریف، کتاب الحیض، باب جواز غسل الحائض راس زوجھا...الخ، ص ۱۲۷، الحدیث:۲۹۷)

या'नी हु़ज़ूरे अन्वर के हुजरे का दरवाज़ा मस्जिद में था तो ब ह़ालते ए'तिकाफ़ आप मस्जिद में रहते और सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا घर में, हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में बैठे हुए सरे मुबारक हुजरे में कर देते, उम्मुल मुअमिनीन कंघी कर देती थीं। **शारेह़े मिश्कात**, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی **"मिरआतुल मनाजीह़"** में इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि इस ह़दीस से बहुत से मसाइल मा'लूम हुए **: एक** येह कि **मो'तकिफ़** का अपने बा'ज़ आ'ज़ा मस्जिद से निकाल देना जाइज़ है येह मस्जिद से निकलना नहीं कहा जाता। **इसी त़रह़** ह़ाएज़ा औ़रत का अपने बा'ज़ आ'ज़ा मस्जिद में दाख़िल कर देना जाइज़ है। **तीसरे** येह कि कंघी वग़ैरा मस्जिद में न करना बेहतर है कि इस से बाल मस्जिद में गिरेंगे उड़ेंगे। **चौथे** येह कि जो काम मस्जिद में रह कर किये या कराए जा सकते हैं उन के लिये मो'तकिफ़ मस्जिद से न निकले। **"ह़ाजते इन्सानी"** से मुराद सिर्फ़ पेशाब पाख़ाना है क्यूं कि हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एह़तिलाम से मह़फ़ूज़ हैं फु-क़हा सिर्फ़ चार कामों के लिये मो'तकिफ़ को मस्जिद से निकलने की इजाज़त देते हैं पेशाब, पाख़ाना, गु़स्ले जनाबत और नमाज़े जुमुआ़ अगर उस मस्जिद में जुमुआ़ न होता हो और उस पर जुमुआ़ फ़र्ज़ हो, गु़स्ले जुमुआ़ के मु-तअ़ल्लिक़ रिवायत न मिली, ह़ज़रते शैख़ ने यहां **"अशिअ़्-अ़तुल्लम्आ़त"** में फ़रमाया कि मो'तकिफ़ गु़स्ले नफ़्ल के लिये भी मस्जिद से निकल सकता है, (साह़िबे) मिरक़ात ने फ़रमाया कि अगर मस्जिद में रहते हुए किसी टप वग़ैरा में इस त़रह़ गु़स्ल करे कि मस्जिद में मुस्ता'मल पानी बिल्कुल न गिरे तो वहां ही करे गु़स्ल ख़ाने में न जाए।

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکوۃ المصابیح، کتاب الصوم، باب الاعتکاف، ۳/۲۱۴)

www.dawateislami.net

मांग निकालने का सुन्नत त़रीक़ा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि जब मैं इरादा करती कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सर में मांग निकालूं तो मैं आप की मांग (आप के दरमियान) सर से चीरती थी और आप की पेशानी (के बाल) दो आंखों के दरमियान छोड़ती। (سنن ابی داؤد، کتاب الترجل، باب ما جاء فی الفرق، ص٦٥٧، الحدیث:٤١٨٩)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : येह ही सुन्नत है कि सर के बाल बिखरे न रहें, इन में कंघी की जावे बालों के दो ह़िस्से किये जावें और मांग बीच सर में नाक के ऊपर से सीधी निकाली जावे अब फ़ेशन परस्त मर्द व औ़रतें एक त़रफ़ से मांग निकालते हैं या'नी टेढ़ी मांग ख़िलाफ़े सुन्नत है। **"आप की पेशानी के बाल दो आंखों के दरमियान छोड़ती।"** इस जुम्ले के, शारिह़ीन ने कई मा'ना किये हैं ज़ाहिर येह है कि येह कलाम पहले कलाम का ततिम्मा (या'नी उसे मुकम्मल करने वाला) है। **"یافوخ"** कहते हैं वस्त़े सर या'नी खोपड़ी को। मत़लब येह है कि मैं ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाल शरीफ़ के दो ह़िस्से करती थी एक ह़िस्सा दाहनी जानिब दूसरा ह़िस्सा बाईं जानिब और पेशानी के ऊपर से येह मांग शुरूअ़ करती थी और खोपड़ी शरीफ़ से उसे गुज़ारती थी पूरी मांग बीच सर में होती थी सीधी जाती थी येह ही मा'ना बहुत मौज़ूं हैं। (مراۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب اللباس، باب الترجل، ٦ / ١٤٢)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कपड़े अपने हाथ से धोती थीं। चुनान्चे फ़रमाती हैं : एक दफ़्आ़ ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ा कर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह (आप के लिबास पर) ख़ून का दाग़ है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के आस पास के कपड़े को पकड़ कर गुलाम के हाथ मेरे पास भेज दिया और फ़रमाया : इस को धो कर ख़ुश्क करो और फिर इसे मेरी त़रफ़ भेज दो। चुनान्चे मैं ने (पानी का) बरतन मंगा कर उसे धो डाला फिर ख़ुश्क कर के ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ भेज दिया फिर जब ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस घर तशरीफ़ लाए तो वोही चादर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऊपर लिये हुए थे।

(سنن ابوداؤد، کتاب الطھارۃ، باب الاعادۃ من النجاسۃ تکون فی الثوب، ص٧٦، الحدیث:٣٨٨، مفھومًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हुक़ूक़े ज़ौजैन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! घर को चलाने और **ख़ुशियों का गहवारा** बनाने में मियां बीवी का बहुत किरदार है अगर दोनों अपनी अपनी ज़िम्मेदारियां अदा करें तो घर **ख़ुशियों का गहवारा** बन सकता है मियां बीवी के दरमियान हर एक के दूसरे पर बहुत से हुक़ूक़ वाजिब हैं उन में जो अपने हुक़ूक़ अदा न करेगा अपने गुनाह में गिरिफ़्तार होगा, अगर बीवी या शोहर में से एक हक़ अदा न करे तो दूसरा उसे दलील बना कर उस के हक़ की अदाएगी को नहीं छोड़ सकता। **याद रखिये !** शोहर के हुक़ूक़ औ़रत पर ब कसरत हैं और शोहर के हुक़ूक़ की अदाएगी औ़रत पर बहुत ज़रूरी है। औ़रत पर सब से बड़ा हक़ शोहर का है ह़त्ता कि मां बाप से भी ज़ियादा। मर्द पर सब से बड़ा हक़ मां का है या'नी ज़ौजा का हक़ इस से कम बल्कि बाप से भी कम। येह इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी।

जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो जा !

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, आप फ़रमाते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **اَلْـمَرْأَۃُ اِذَا صَلَّتْ خَمْسَھَا وَصَامَتْ شَھْرَھَا وَاَحْصَنَتْ فَرْجَھَا وَاَطَاعَتْ بَعْلَھَا فَلْتَدْخُلْ مِنْ اَیِّ اَبْـوَابِ الْـجَنَّۃِ شَـاءَتْ** या'नी औ़रत जब अपनी पांचों नमाज़ों को पढ़े और र-मज़ान के महीने का रोज़ा रखे और अपनी शर्मगाह को पाक दामन रखे और अपने शोहर की फ़रमां बरदारी करे तो वोह औ़रत जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए।

(حلیة الاولیاء وطبقات الاصفیاء، ذکر طوائف من النساك والعباد،الربیع بن صبیح، ٦/٣٣٦، الحدیث:٨٨٣٠)

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی "**मिरआतुल मनाजीह़**" में इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : यहां ख़ुसूसिय्यत से औ़रत का ज़िक्र इस लिये है कि आगे ख़ावन्द की इत़ाअ़त का भी ज़िक्र आ रहा है जो सिर्फ़ औ़रत पर फ़र्ज़ है, नमाज़ों से मुराद पाकी के ज़माने की नमाज़ें हैं, रोज़ों से मुराद र-मज़ान के रोज़े हैं अदा या क़ज़ा कि नापाकी की ह़ालत में औ़रत रोज़े अदा नहीं कर सकती, क़ज़ा करेगी। ह़दीसे पाक के इस इर्शाद "अपनी शर्मगाह को पाक दामन रखे" के तह़त फ़रमाते हैं : इस त़रह़ कि ज़िना और अस्बाबे ज़िना से बचे बे पर्दगी गाना नाचना वग़ैरा ह़राम काम के अस्बाब भी ह़राम हैं जैसे फ़र्ज़ के अस्बाब व शराइत़, फ़र्ज़ नमाज़ की वज्ह से वुज़ू वग़ैरा भी फ़र्ज़ है। और "अपने शोहर की फ़रमां बरदारी करे" के तह़त फ़रमाते हैं : कि उस का हर जाइज़ हुक्म माने बशर्ते कि क़ादिर हो। नीज़ "तो वोह औ़रत जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए" के तह़त फ़रमाते हैं : चूंकि इस सालिह़ा बीबी ने हर क़िस्म की इ़बादात की हैं इस लिये इसे हर क़िस्म के दरवाज़े से जन्नत में जाने की इजाज़त है, जन्नत के बहुत दरवाज़े हैं हर दरवाज़ा ख़ास इ़बादत वाले के लिये है। (مراۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب النکاح، باب عشرۃ النساء وما لکل واحد من الحقوق، ٥/٩٦-٩٧)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! ''**जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए**'' की ने'मत पाने के लिये बे पर्दगी और ह़राम कामों से दूर रहना ज़रूरी है। **आइये !** अब हम बे पर्दगी और ह़राम कामों की वईदात के बारे में कुछ मुला-ह़ज़ा करती हैं ताकि हम गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर सह़ीह़ मा'नों में मुसल्मान बन जाएं और हमारा ह़राम कामों जैसे गाने बाजे वग़ैरा से दूर रहने का म-दनी ज़ेह्न बन जाए, चुनान्चे

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّ تَصْدِيَةً (پ۹، الانفال:۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और का'बे के पास उन की नमाज़ नहीं मगर सीटी और ताली।

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''**مُكَآءً**'' मुंह से सीटी बजाना और ''**تَصْدِيَةً**'' ताली बजाना और गाना है और फ़रमाते हैं कि ज़मानए जाहिलिय्यत में जब ईद का दिन होता तो (काफ़िर) लोग मसाजिद (या'नी इबादत गाहों) में गाने गाते और सीटियां बजाया करते थे तो **अल्लाह तबा-र-क व तआला** ने उन के इस फ़े'ल की मज़म्मत फ़रमाई और उन को दर्दनाक अ़ज़ाब की वईद सुनाई। **(قرۃ العیون مع الروض الفائق، الباب العاشر فی النھی عن المزامیر والمغانی، ص۴۰۵)**

शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''बाजा बजाने वाले और सुनने वाले दोनों मल्ऊ़न हैं, तो जिस ने दुन्या में गाने बाजे सुने वोह जन्नत में ख़ुश करने वाली आवाज़ों को सुनने से हमेशा मह़रूम रहेगा, मगर येह कि वोह तौबा कर ले (और इर्शाद फ़रमाया :) ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की आवाज़ (अल्लाह तआ़ला की ह़म्द व पाकी पर मुश्तमिल ख़ुश इल्ह़ानी में) नव सो **(900)** मज़ामीर की आवाज़ों के बराबर होगी जिस दिन **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** का दीदार होगा उस दिन वोह अपनी आवाज़ सुनाएंगे लिहाज़ा उस ख़ुश कुन आवाज़ के लिये इस दुन्यावी आवाज़ को सुनना तर्क कर दो।''

(قرّۃُ العیون ملحق الروض الفائق، الباب العاشر فی النھی عن المزامیر والمغانی، ص۴۰۵)

क़ब्रिस्तान की ख़ौफ़नाक आवाज़

मन्क़ूल है, **क़बीले** के एक आदमी ने अपने बेटे की शादी की और इस सिल्सिले में एक मह़फ़िले लह्वो लअ़ब क़ाइम की उन लोगों के मकानात क़ब्रों के क़रीब थे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब रात को येह लोग लह्वो लअ़ब में मश्ग़ूल थे कि क़ब्रिस्तान का सन्नाटा चीरती हुई एक गरज दार आवाज़ गूंज उठी जिस ने उन्हें ख़ौफ़ज़दा कर दिया (वोह **ख़ौफ़नाक आवाज़** इन दो अ़-रबी अश्आ़र पर मुश्तमिल थी :)

www.dawateislami.net

يَـا اَهْلَ لَـذَّةِ لَهْـوٍ لَّا تَـدُوْمُ لَهُمْ اِنَّ الْـمَـنَـايَـا تَبِيْـدُ اللَّهْـوَ وَاللَّعِبَا
كَـمْ مَـنْ رَاَيْـنَـاهُ مَسْرُوْرًا بِلَذَّتِـهٖ اَمْسٰـى فَـرِيْـدًا مِّـنَ الْاَهْلِيْنَ مُغْتَرِبًا

या'नी ऐ ना पाएदार नाचरंग की लज़्ज़तों में मुन्हमिक होने वालो ! मौत तमाम खेलकूद को ख़त्म कर देती है। बहुत से ऐसे लोग हम ने देखे जो मसर्रतों और लज़्ज़तों में ग़ाफ़िल थे, मौत ने उन्हें अपने अहलो इयाल से जुदा कर दिया !

रावी कहते हैं : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! चन्द ही दिनों के बा'द दूल्हा का इन्तिक़ाल हो गया। (الموسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الهواتف، باب هواتف القبور، ۴۵۹/۲، الرقم:۴۸)

आह ! मौत की आंधी आई और ठठ्ठा मस्ख़रियों, धमा चोकड़ियों, संगीत की मस्हूर कुन धुनों, चुटकुलों और क़हक़हों, शादमानियों और मसर्रतों, **मचलते** अरमानों और ख़ुशी की तमाम राहत सामानियों को उड़ा कर ले गई। दूल्हा मियां मौत के घाट उतर गए और ख़ुशियों भरा घर देखते ही देखते मातम कदा बन गया।

तू ख़ुशी के फूल लेगा कब तलक ?
तू यहां ज़िन्दा रहेगा कब तलक ?

(वसाइले बख़्शिश, स. 664)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस हिकायत को सुन कर शादियों में बेहूदा फंक्शन बरपा करने वालों और उन में शरीक हो कर गाने बाजे की धुनों पर ख़ुशी के ना'रे बुलन्द करने वालों की आंखें खुल जानी चाहिएं। आइये ! इसी से मिलता जुलता एक और इब्रत नाक वाक़िआ आप के गोश गुज़ार करूं, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ **48** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला **"गाने बाजे की होल नाकियां"** सफ़ह़ा **4** पर है :

बद नसीब दूल्हा

कहते हैं, पाकिस्तान के सूबए पंजाब में एक नौ जवान की शादी के सिल्सिले में रात को फ़ंक्शन हो रहा था। क्या पड़ोसनें और क्या ख़ानदान की औ़रतें, सब ने शर्मो ह़या की चादर उतार डाली थी और फ़िल्मी गीत की धुनों पर ख़ूब तूफ़ाने बद तमीज़ी बरपा था। इतने में मां के पास आ कर दूल्हा कहता है, मां मेरी प्यारी मां ! कल मेरी शादी है, ख़ुशी का मौक़अ़ है, मेरी ख़्वाहिश है तू भी नाच, मां चौंक कर बोली : अरे बेटा : येह तो छोकरियों (या'नी लड़कियों) का काम है मैं अब

www.dawateislami.net

इस उ़म्र में कहां नाचूंगी ! लेकिन बेटे ने बाज़ू थाम कर मां को ब इसरार खींचा और रिंग में उतार दिया। हर त़रफ़ हंसी का फ़व्वारा उबल पड़ा, त़ब्ले पर थाप पड़ी और बुढ़ी मां भी बे तुके अन्दाज़ में हाथ पैर हिलाते हुए नाचने के अन्दाज़ में अपने बे ढंगे फ़न का मुज़ा-हरा करने लगी। इस त़रह़ रात गए तक उधम बाज़ी होती रही, आख़िर कार थक हार कर सब सो गए। दिन निकल आया, आज शादी है, बेंड बाजों के साथ बारात जाने वाली है, घर का कोई फ़र्द दूल्हा मियां को जगाने उन के कमरे में आया। आवाज़ें दीं मगर दूल्हा मियां उठ नहीं रहे। ओहो ! ऐसी भी क्या थकन है, बारात तय्यार है और दूल्हे मियां की नींद ही पूरी नहीं हो चुकती ! येह कह कर आने वाले ने दूल्हा को जब ज़ोर से हिलाया तो उस के मुंह से चीख़ निकल गई, घर के लोग दौड़े दौड़े आए। आह ! **बद नसीब दूल्हा** रात भर नाचने और अपनी मां को नचवाने के बा'द मौत से हम-आग़ोश हो चुका था। चीख़ो पुकार मच गई, ख़ुशियों भरा घर यक-दम मातम कदा बन गया, अभी कुछ ही देर पहले जहां हंसी के फ़व्वारे उबल रहे थे वहां आंसूओं के धारे बह निकले, अभी जहां क़ह्क़हों का ज़ोर था वहां अब वावेला का शोर है, ख़ुशियों और शाद-कामियों का गला घोंट दिया गया, हर शख़्स तस्वीरे ग़म बना हुवा है, ग़स्साल ने आ कर नहलाया, कफ़्नाया, आहो फ़ुग़ां के शोर में लोगों ने **बद नसीब दूल्हा** का जनाज़ा उठाया। काफ़ूर की ग़मगीन ख़ुश्बू ने फ़ज़ा को मज़ीद सोग-वार बना दिया। फूलों से सजी हुई कार में सुवार होने के बजाए, गुलों के अम्बार से लदे हुए जनाज़े के पिंजरे में लैटा हुवा **बद नसीब दूल्हा** लोगों के कन्धों पर सुवार हो कर वीरान क़ब्रिस्तान की त़रफ़ बढ़ा चला जा रहा है, आह ! **बद नसीब दूल्हा** को ख़ुश्बूओं से महक्ते हुए, बिजली के क़ुमक़ुमों से दमक्ते हुए हुजरए अ़रूसी के बजाए कीड़े मकोड़ों से उभरती हुई तंगो तारीक क़ब्र में उतार दिया गया।

तू ख़ुशी के फूल लेगा कब तलक ?
तू यहां ज़िन्दा रहेगा कब तलक ?

(वसाइले बख़्शिश, स. 664)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! येह ख़ुशियां आ़रिज़ी हैं, मौत यक़ीनी है। जिस ने यहां ख़ुशियों का गन्ज पाया उसे मौत का रन्ज ज़रूर मिला। आप ग़ौर करें कि अगर ग़ैर मर्दों को ब शह्वत देखने के सबब ख़्वाह वोह फूफा, ख़ालू, बहनोई, देवर व जेठ, चचाज़ाद, तायाज़ाद, ख़ालाज़ाद और फूफीज़ाद ही क्यूं न हो, अख़्बारात में मर्दों की तसावीर देखने के सबब और केबल और **INTERNET** पर फ़िल्में डिरामे देखने या **T.V.** पर ख़बरें सुनाने वाले ग़ैर मर्दों की तस्वीरों को देखने के सबब अगर इन की आंखों में कीलें ठोंक दी गईं तो क्या करेंगी !

www.dawateislami.net

फ़िल्म बीं की आंख में मह़शर में आग आह ! भर जाएगी तू फ़िल्मों से भाग
बेंड बाजों से तू कोसों दूर भाग वरना दोज़ख़ की तुझे खाएगी आग
मत बजाओ भाइयो ! तुम तालियां इस त़रह़ की छोड़ दो नादानियां
कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 667, 669)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हुज़ूर के लिये नबीज़ तय्यार करतीं

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا रब के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये अपने हाथों से नबीज़ तय्यार किया करती थीं, चुनान्चे सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि हम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये एक मश्कीज़े में नबीज़ बनाते थे जिस का दहाना बांध दिया जाता और उस में कुछ सूराख़ होते, सुब्ह़ नबीज़ बनाते तो वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शाम को पीते और शाम को नबीज़ बनाते तो सुब्ह़ को पीते।

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب اباحۃ النبیذ الذی ...الخ، ص۷۹۹، الحدیث:۲۰۰۵)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ज़िक्र कर्दा ह़दीसे पाक के जुम्ले "हम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये एक मश्कीज़े में नबीज़ बनाते थे" के तह़त लिखते हैं : या'नी हम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये खजूर या किशमिश का नबीज़ तय्यार करते थे कि शाम को खजूरें भिगो देते थे। और "उस में कुछ सूराख़ होते" के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी उस मश्कीज़े के दो मुंह थे। एक ऊपर वाला जिस से पानी वग़ैरा भरा जाता था। दूसरा नीचे वाला जिस से पानी वग़ैरा निकाला जाता था। (ह़दीसे पाक में मज़्कूर लफ़्ज़) "عزلاء" हर मुंह को कहा जाता है। यहां नीचे वाला मुराद है क्यूं कि ऊपर वाले मुंह का ज़िक्र तो अलग हो चुका। नीज़ "सुब्ह़ नबीज़ बनाते तो शाम को और शाम को बनाते तो सुब्ह़ को पीते" के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी सुब्ह़ के भिगोए हुए छुवारों का पानी हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) दो पहर के बा'द से शाम तक पी लेते थे और शाम के भिगोए हुए छुवारे सुब्ह़ को पी लेते थे। ज़ियादा देर न लगाई जाती थी। (مراۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب الاطعمہ، باب النقیع والانبذۃ، ۸۲/۶)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا सुब्ह़ व शाम अपने शोहरे नामदार, हम बे कसों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व ख़िदमत गुज़ारी के लिये तय्यार रहती थीं। **जान लीजिये !** जो अपने शोहर की

www.dawateislami.net

फ़रमां बरदार होगी वोह ही काम्याब होगी **आइये !** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये कि शोहर की इत़ाअ़त के क्या फ़वाइदो स-मरात हैं, चुनान्चे

शोहर की इत़ाअ़त पर इन्आ़मे ख़ुदा वन्दी

ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाती हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''اَیُّمَا امۡرَاَۃٍ بَاتَتۡ وَزَوۡجُھَا عَنۡھَا رَاضٍ دَخَلَتِ الۡجَنَّۃَ''** तरजमा : जिस औ़रत ने इस ह़ाल में रात गुज़ारी कि उस का ख़ाविन्द उस से राज़ी था तो वोह औ़रत जन्नत में दाख़िल होगी ।'' (سنن ابی داؤد، کتاب الرضاع، باب ما جاء فی حق الزوج علی المرأۃ، ص۳۰۲، الحدیث:۱۱۶۱)

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی **''मिरआतुल मनाजीह़''** में इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : यहां ख़ाविन्द से मुराद मुसल्मान आ़लिम मुत्तक़ी ख़ाविन्द है । येह क़ुयूद बहुत ही मुनासिब है, बा'ज़ बे दीन ख़ाविन्द तो औ़रत की नमाज़ से नाराज़ होते हैं इस के गाने बजाने, सिनेमा जाने, बे पर्दा फिरने से राज़ी होते हैं येह रिज़ा बे ईमानी है । (مراٰۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح ،کتاب النکاح،باب عشرۃ النساء،۵/۹۷)

शोहर की इत़ाअ़त बड़ा फ़र्ज़ है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **244** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बिहिश्त की कुन्जियां''** सफ़ह़ा **188** पर शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی तह़रीर फ़रमाते हैं : औ़रत पर **हुक़ूक़ुल्लाह** के फ़राइज़ के इ़लावा शोहर की इत़ाअ़त का भी एक बड़ा फ़र्ज़ है । औ़रत अगर **हुक़ूक़ुल्लाह** के फ़राइज़ को अदा कर के अपने शोहर की ख़िदमत व इत़ाअ़त का फ़रीज़ा भी अदा करे और मरते वक़्त उस का शोहर उस से ख़ुश रहे तो वोह औ़रत जन्नती है ।

शोहर के हुक़ूक़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **679** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''जन्नती ज़ेवर''** सफ़ह़ा **49** पर ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی तह़रीर फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह तआ़ला** ने शोहरों को बीवियों पर ह़ाकिम बनाया है और बहुत बड़ी बुज़ुर्गी दी है इस लिये हर औ़रत पर फ़र्ज़ है कि वोह अपने शोहर का हुक्म माने और ख़ुशी ख़ुशी अपने शोहर के हर हुक्म की ताबेअ़ दारी करे क्यूं कि **अल्लाह तआ़ला** ने शोहर का बहुत बड़ा ह़क़ बनाया है **याद रखो कि** अपने शोहर को राज़ी व ख़ुश रखना बहुत बड़ी इ़बादत है और शोहर को नाख़ुश और नाराज़ रखना बहुत बड़ा गुनाह है ।''

www.dawateislami.net

"शोहर के हुक़ूक़" के दस हुरूफ़ की निस्बत से शोहर की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 10 फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿.... अगर किसी बशर का बशर को सज्दा करना जाइज़ होता तो मैं औरत को हुक्म देता कि जब उस का शोहर उस के पास आए तो औरत उसे सज्दा करे।

(المستدرک، کتاب البر والصلة، حق الزوج علی الزوجة، ۵/۲۳۹، الحدیث:۷۴۰۴)

﴾2﴿.... अगर आदमी का आदमी के लिये सज्दा करना दुरुस्त होता तो मैं औरत को हुक्म देता कि अपने शोहर को सज्दा करे कि उस का इस के ज़िम्मे बहुत बड़ा हक़ है, क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर क़दम से सर तक शोहर के तमाम जिस्म में ज़ख़्म हों जिन से पीप और कच-लहू (या'नी पीप मिला ख़ून) बहता हो फिर औरत उसे चाटे तो हक़्क़े शोहर अदा न किया।

(مسند احمد، مسند انس بن مالک، ۵/۴۴۵، الحدیث:۱۲۹۴۹)

﴾3﴿.... जब मर्द अपनी बीवी को अपने बिस्तर की त़रफ़ बुलाए तो औरत इन्कार कर दे और मर्द इस ह़ाल में रात गुज़ारे कि वोह औरत से नाराज़ हो तो सुब्ह़ तक उस औरत पर फ़िरिश्ते ला'नत भेजते रहते हैं। (صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق، باب اذا قال احدکم آمین والملائکة فی السماء...الخ، ص۸۲۹، الحدیث:۳۲۳۷) और दूसरी रिवायत में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस (औरत) से नाराज़ रहता है यहां तक कि शोहर उस से राज़ी हो जाए। (صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب تحریم امتناعها من فراش زوجها، ص۵۳۹، الحدیث:۱۴۳۶)

﴾4﴿.... जब भी औरत अपने शोहर को दुन्या में ईज़ा देती है तो उस मर्द की जन्नत की हूरों से तअ़ल्लुक़ रखने वाली बीवी कहती है : ख़ुदा तुझे ग़ारत करे, इसे ईज़ा न दे येह तो तेरे पास मेहमान है, अ़न्क़रीब तुझ से जुदा हो कर हमारे पास आएगा। (جامع الترمذی، کتاب الرضاع، ۱۹-باب، ص۳۰۵، الحدیث:۱۱۷۴)

﴾5﴿.... अगर मैं किसी को हुक्म देने वाला होता कि वोह किसी को सज्दा करे तो मैं ज़रूर औरत को हुक्म देता कि वोह अपने शोहर को सज्दा करे।

(جامع الترمذی، کتاب الرضاع، باب ما جاء فی حق الزوج علی المرأة، ص۳۰۱، الحدیث:۱۱۵۹)

﴾6﴿.... तीन शख़्स ऐसे हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता न ही उन की कोई नेकी बुलन्द होती है (उन में से एक वोह औरत है) जिस से उस का शोहर नाराज़ हो यहां तक कि शोहर उस से राज़ी हो जाए। (صحیح ابن خزیمة، کتاب الصلاة، باب نفی قبول الصلاة المرأة الغاضبة لزوجها......الخ، ص۲۱۵، الحدیث:۹۴۰)

﴾7﴿.... जब कोई मर्द अपनी बीवी को अपनी ह़ाजत के लिये बुलाए तो वोह औरत उस के पास आ जाए अगर्चे तन्दूर के पास बैठी हो। (جامع الترمذی، کتاب الرضاع، باب ما جاء فی حق الزوج علی المرأة، ص۳۰۲، الحدیث:۱۱۶۰)

www.dawateislami.net

हदीस शरीफ़ का मत़लब येह है कि औरत चाहे कितने भी ज़रूरी काम में मशगूल हो मगर शोहर के बुलाने पर सब काम छोड़ कर शोहर की ख़िदमत में हाज़िर हो जाए।

﴾8﴿.... अगर शोहर अपनी औरत को येह हुक्म दे कि वोह (पथ्थर उठा कर) सुर्ख़ रंग के पहाड़ से सियाह पहाड़ पर ले जाए या सियाह पहाड़ से सुर्ख़ पहाड़ पर ले जाए तो औरत को अपने शोहर का येह हुक्म भी बजा लाना चाहिये। (سنن ابن ماجه ، كتاب النكاح ، باب حق الزوج على المراة ،ص٢٩٧، الحديث:١٨٥٢)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : येह फ़रमाने मुबारक मुबा-लगे के तौर पर है, सियाह व सफ़ेद पहाड़ क़रीब क़रीब नहीं होते बल्कि दूर दूर होते हैं मक़्सद येह है कि अगर ख़ावन्द (शरीअत के दाएरे में रह कर) मुश्किल से मुश्किल काम का भी हुक्म दे तब भी बीवी उसे करे, काले पहाड़ का पथ्थर सफ़ेद पहाड़ पर पहुंचाना सख़्त मुश्किल है कि भारी बोझ ले कर सफ़र करना है।

(مراٰة المناجيح شرح مشكاة المصابيح، كتاب النكاح، باب عشرة النساء، ١٠٦/٥)

﴾9﴿.... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं, मैं ने रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अर्ज़ की : "औरत पर सब से ज़ियादा हक़ किस का है ?" इर्शाद फ़रमाया : शोहर का। मैं ने अर्ज़ की : मर्द पर सब से ज़ियादा हक़ किस का है ? फ़रमाया : मां का।

(السنن الكبرىٰ للنسائى، كتاب عشرة النساء، باب حق الرجل على المرأة، ٢٥٣/٨، الحديث:٩١٠٣)

﴾10﴿.... हदीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने के बा'द मोमिन के लिये नेक बीवी की जुस्त-जू बेहतर है कि जब शोहर उस को किसी बात का हुक्म दे तो वोह उस की बात माने जब उस की त़रफ़ देखे तो वोह शोहर को खुश कर दे और अगर शोहर किसी बात की क़सम खा ले तो वोह उस क़सम को पूरा कर दे और अगर शोहर ग़ाइब रहे तो वोह अपनी ज़ात और शोहर के माल में हिफ़ाज़त और ख़ैर ख़्वाही का किरदार अदा करती रहे।

(سنن ابن ماجه، كتاب النكاح، باب افضل النساء، ص٢٩٨، الحديث:١٨٥٧)

मज़्कूरा अहादीस से मिलती जुलती रिवायात नक़्ल करने के बा'द शैख़ुल हदीस हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی **"जन्नती ज़ेवर"** सफ़्हा **50** पर तहरीर फ़रमाते हैं : प्यारी बहनो ! इन हदीसों से सबक़ मिलता है कि शोहर का बहुत बड़ा हक़ है और हर औरत पर अपने शोहर का हक़ अदा करना फ़र्ज़ है शोहर के हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं उन में से नीचे

www.dawateislami.net

लिखे हुए चन्द हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा क़ाबिले लिहाज़ हैं : **(1)**.... औरत बिग़ैर अपने शोहर की इजाज़त के घर से बाहर कहीं न जाए न अपने रिश्तेदारों के घर न किसी दूसरे के घर। **(2)**.... शोहर की ग़ैर मौजू-दगी में औरत पर फ़र्ज़ है कि शोहर के मकान और माल व सामान की हिफ़ाज़त करे और बिग़ैर शोहर की इजाज़त किसी को भी न मकान में आने दे न शोहर की छोटी बड़ी चीज़ किसी को दे। **(3)**.... शोहर का मकान और माल व सामान येह सब शोहर की अमानतें हैं और बीवी इन सब चीज़ों की अमीन है अगर औरत ने अपने शोहर की किसी चीज़ को जान बूझ कर बरबाद कर दिया तो औरत पर अमानत में ख़ियानत करने का गुनाह लाज़िम होगा और इस पर ख़ुदा का बहुत बड़ा अज़ाब होगा। **(4)**.... औरत हरगिज़ हरगिज़ कोई ऐसा काम न करे जो शोहर को ना पसन्द हो। **(5)**.... बच्चों की निगह दाश्त, इन की तरबिय्यत और परवरिश ख़ुसूसन शोहर की ग़ैर मौजू-दगी में औरत के लिये बहुत बड़ा फ़रीज़ा है। **(6)**.... औरत को लाज़िम है कि मकान और अपने बदन और कपड़ों की सफ़ाई सुथराई का ख़ास तौर पर ध्यान रखे। फूहड़ मैली कुचैली न बनी रहे बल्कि बनाव सिंघार से रहा करे ताकि शोहर उस को देख कर ख़ुश हो जाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुज़ूर के मेहमानों की ख़िदमत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई मेहमान आ जाता तो उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا मेहमान नवाज़ी फ़रमाती थीं।

जैसा कि हज़रते सय्यिदुना तिख़्फ़ा बिन क़ैस ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो कि अस्हाबे सुफ़्फ़ा में से थे, बयान करते हैं कि एक दिन हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम से इर्शाद फ़रमाया : "हमारे साथ आइशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) के घर की तरफ़ चलो।" चुनान्चे हम चले गए तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) से फ़रमाया : "ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! हम को कुछ खिलाओ।" सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا चूनी (या'नी दाल के बुरादे) का पका हुवा खाना लाईं। हम ने वोह खा लिया फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! हम को कुछ खिलाओ।" चुनान्चे आप क़ुताह (नामी छोटे से परिन्दे) की मिस्ल हीसा (खजूर, सत्तू, पनीर से तय्यार किया हुवा मख़्सूस खाना) ले कर आईं पस वोह भी हम ने खा लिया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! हम को कुछ पिलाओ। तो एक बड़े पियाले में दूध हाज़िर

www.dawateislami.net

किया हम ने उसे पिया, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! हम को कुछ पिलाओ ।" चुनान्चे एक और छोटा सा पियाला ले कर आई हम ने वोह भी पी लिया । (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الرجل ینبطح......الخ، ص۷۸۷، الحدیث: ۵۰۴۰، ملتقطًا)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ह़ालात का मुत़ा-लआ़ करने से पता चलता है कि आप घरेलू कामकाज भी संभालतीं, रोज़ाना ब कसरत इ़बादत भी करतीं और ह़दीस व फ़िक़्ह में महारत भी ह़ासिल करतीं । येह इस बात की दलील है कि आप आराम पसन्द और खेलकूद में ज़िन्दगी बसर करने वाली नहीं थीं बल्कि दिन रात का कोई लम्ह़ा ज़ाएअ़ न करती थीं और दिन रात घर के कामकाज या इ़बादत या शोहर की ख़िदमत या इ़ल्म ह़ासिल करने में मसरूफ़ रहा करती थीं । سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ज़िन्दगी नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के निकाह़ में होने की ब-र-कत से कितनी मुक़द्दस, किस क़दर पाकीज़ा और किस द-रजा नूरानी थी ।

काश ! हमारी ज़िन्दगी में भी उम्मुल मुअमिनीन (सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की ज़िन्दगी की चमक दमक या हलकी सी भी झलक होती तो हमारी ज़िन्दगी जन्नत का नमूना बन जाती और हमारी गोद में ऐसे बच्चे और बच्चियां परवरिश पाते जिन की इस्लामी शान और ज़ाहिदाना ज़िन्दगी की अ़-ज़मत को देख कर आस्मानों के फ़िरिश्ते दुआ़ करते और जन्नत की ह़ूरें हमारे लिये "आमीन" कहतीं ।

मगर **हाए अफ़्सोस !** हमें तो अच्छा खाना खाने, अच्छा लिबास पहनने, बनाव सिंगार कर के पलंग पर दिन रात लैटने, फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने से इतनी फ़ुरसत ही कहां कि हम उम्मुल मुअमिनीन (सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के नक़्शे क़दम पर चलें । ख़ुदा वन्दे करीम हिदायत अ़त़ा फ़रमाए । **काश !** इस्लामी बहनें इन मुख़्लिसाना नसीह़तों पर अ़मल कर के अपनी ज़िन्दगी को इस्लामी सांचे में ढाल लें और उम्मुल मुअमिनीन (सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की सच्ची ग़ुलाम बन कर दोनों जहां में सुर्ख़-रू हो जाएं ।

घरेलू काम करना सह़ाबिय्यात की सुन्नत है

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम की अज़्वाजे मोह़-त-रमात चक्की से आटा पीसतीं, खाना पकातीं, बिस्तर बिछातीं, अपने शोहरों के लिये खाना ला कर रखतीं और दीगर अन्वाअ़ की ख़िदमत सर अन्जाम देती थीं ।

www.dawateislami.net

सय्यि-दतुना आ़इशा हुज़ूर को ख़ुश्बू लगातीं

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मैं मौजूद ख़ुश्बूओं में से सब से उ़म्दा ख़ुश्बू नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को लगाती ह़त्ता कि मैं आप के सर और दाढ़ी में ख़ुश्बू की चमक पाती।

(صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب الطیب فی الراس ولحیته، ص۱٤٨٤، الحدیث:۵۹۲۳)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی ज़िक्र कर्दा ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुश्बू बहुत ही पसन्द थी इस लिये अज़्वाजे मुत़ह्हरात ख़ुसूसन उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ख़ुश्बू तय्यार किया करती थीं ह़त्ता कि एह़राम खोलते वक़्त भी ख़ुश्बू तय्यार की गई थी। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सरे मुबारक और दाढ़ी शरीफ़ में ख़ुश्बू लगाते थे और वोह ख़ुश्बू इस क़दर ज़ियादा होती थी कि बालों में उस की चमक देखी जाती थी। येह चमक ख़ुश्बू का रंग न था चमक थी चमक तो पानी की भी मह़सूस हो जाती है लिहाज़ा येह ह़दीस इस के ख़िलाफ़ नहीं कि मर्दों की ख़ुश्बू बिग़ैर रंग वाली चाहिये कि वहां रंग से मुराद ज़ीनत वाला रंग है इस की मुमा-न-अ़त है।

(مراۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب اللباس، باب الترجل، ۱۵۶/۶)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़जिज़ी थी कि अगर कोई कपड़ा फट जाता तो उसे सी लेते, अपने जूते मरम्मत फ़रमा लेते, अपनी बकरी का दूध ख़ुद दोह लेते और अपने ज़ाती कामकाज वग़ैरा ख़ुद कर लिया करते थे, चुनान्चे

हमारे रसूल कामकाज में मश्ग़ूल रहते

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : **کَانَ یَکُوۡنُ فِیۡ مَھۡنَۃِ اَھۡلِہٖ** या'नी नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने घर में कामकाज में मश्ग़ूल रहते या'नी घर वालों का काम करते थे। (صَحِیۡحُ الۡبُخَارِی، کتاب الاذان، باب من کان فی اھله فاقیمت الصلاۃ فخرج، ص۲۲۹، الحدیث:۶۷۶)

अपने कपड़े ख़ुद सी लेते

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 97 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"तकब्बुर"** सफ़ह़ा 79 पर है : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना

www.dawateislami.net

आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाती हैं : ''सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने कपड़े ख़ुद सी लेते और अपने ना'लैने मुबारक गांठते और वोह सारे काम करते जो मर्द अपने घरों में करते हैं।''

(صحیح ابن حبان، کتاب الحظر والاباحۃ، باب التواضع والکبر والعجب،ذکر ما یجب علی المرء......الخ، ص۱۵۱۷،الحدیث:۵۶۷۷)

घरेलू कामकाज के बारे में चन्द म-दनी फूल

.... इस्लामी बहनें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा की ख़ातिर घर का कामकाज ख़ुद किया करें।

.... ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की सुन्नत को अदा करने की निय्यत कीजिये اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ूब अज्रो सवाब ह़ासिल होगा, यक़ीनन इस्लामी बहनों के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की इत्तिबाअ़ में अ़ज़ीम अज्रो सवाब है।

.... घर में भाई, बहनों और मां बाप की मन्ज़ूरे नज़र बन जाएंगी।

.... पहले से ही काम करने की आ़दत पड़ेगी तो शादी के बा'द घर संभालना आसान होगा और घर अम्न का गहवारा बन जाएगा, बहुत से नादान वालिदैन अपनी बच्चियों को काम नहीं करने देते नती-जतन उन्हें खाना पकाने, बरतन धोने, कपड़े धोने, कपड़े सीने की तरबिय्यत नहीं होती और शादी के बा'द आज़्माइश होती है।

.... शादी शुदा हैं तो शोहर, नन्द और सास के दिलों में जगह पैदा हो जाएगी।

अपने शोहर की इत़ाअ़त से न ग़फ़्लत करना तू
ह़श्र में पछताएगी ऐ म-दनी बेटी वरना तू

(वसाइले बख़्शिश, स. 662)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने इस ह़याते मुस्तआ़र को अपने अ़ज़ीम शोहर और अ़ज़ीम बाप की पैरवी करते हुए गुज़ारा। अगर हम भी आ़मिलए क़ुरआन और सुन्नतों की पैकर बनना चाहती हैं तो हमें भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होना होगा **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में **वक़्तन फ़ वक़्तन** ईमान अफ़रोज़ म-दनी बहारों का ज़ुहूर होता रहता है **आइये !** एक म-दनी बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

www.dawateislami.net

म-दनी मुन्ना सिह्हत याब हो गया

बाबुल मदीना (कराची) की एक ज़िम्मेदार इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि **2005 सि.ई.** में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा 'वते इस्लामी** के बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** (सह़राए मदीना टोल प्लाज़ा सुपर हाइवे रोड बाबुल मदीना कराची) में आख़िरी दिन होने वाली ख़ुसूसी निशस्त की टेलीफ़ोन के ज़रीए इस्लामी बहनों में रिले **(RILAY)** की तरकीब थी। चुनान्चे हम अपने अ़लाक़े की इस्लामी बहनों में इस की दा'वत आ़म करने में मसरूफ़ थीं। इज्तिमाअ़ के आख़िरी दिन अ़लस्सुब्ह़ हम चन्द इस्लामी बहनें घर घर जा कर इज्तिमाअ़ में शिर्कत की तरग़ीब दिला रही थीं इसी दौरान हमारी मुलाक़ात एक निहायत दुख्यारी इस्लामी बहन से हुई, उन्हों ने ग़मगीन लहजे में कहा : मेरे बच्चे की **त़बीअ़त** ख़राब है, डॉक्टरों ने उस की रिपोर्ट देख कर किसी **मोहलिक बीमारी** का ख़दशा ज़ाहिर किया है, आप दुआ़ कीजियेगा कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे बेटे को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाए।" हम ने उस परेशान ह़ाल इस्लामी बहन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की ब-र-कतें सुना कर शिर्कत की दा'वत पेश की। चुनान्चे वोह हाथों हाथ हमारे साथ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की आख़िरी निशस्त में शरीक हो गईं। इज्तिमाअ़ में होने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ के दौरान उन्हों ने अपने बेटे की सिह्हत याबी की दुआ़ मांगी। चन्द रोज़ बा'द वोह इस्लामी बहन **दा 'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में भी तशरीफ़ लाईं और इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर उन्हों ने ज़िम्मादार इस्लामी बहन को बताया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा 'वते इस्लामी** के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की ख़ुसूसी निशस्त में शिर्कत की मुझे ऐसी ब-र-कतें नसीब हुईं कि जब मैं ने अपने मुन्ने का दोबारा मेडीकल टेस्ट करवाया तो हैरत अंगेज़ तौ़र पर रिपोर्ट्स बिल्कुल सह़ीह़ आईं और अब मेरा म-दनी मुन्ना मुकम्मल तौ़र पर **सिह्हत याब** हो चुका है। मेरे मुन्ने की अचानक सिह्हत याबी ने डॉक्टरों को भी हैरत में मुब्तला कर दिया है!

(इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 283)

वल्लाह वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे
इतना भी तो हो कोई जो आह करे दिल से

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 143)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾14﴿.... सहाबए किराम सय्यि-दतुना आइशा से आक़ा की बातें पूछते

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : जो बन्दा मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ता है जब तक वोह मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता रहता है फ़िरिश्ते उस पर दुरूद भेजते रहते हैं अब चाहे वोह बन्दा कम पढ़े या ज़ियादा।

(مسند امام احمد، مسند المكيين، حديث عامر بن ربيعة، ٦/٤٢٩، الحديث:١٦٠٩٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सहाबए किराम की बे क़रारी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **274** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**सहाबए किराम का इश्क़े रसूल**" सफ़हा **24** पर है : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا बयान फ़रमाती हैं कि एक शख़्स ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप यक़ीनन मेरे नज़्दीक मेरी जान, मेरे अहल और मेरी औलाद से भी ज़ियादा मह़बूब हैं, जिस वक़्त आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم याद आ जाते हैं तो जब तक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर आप को देख न लूं क़रार नहीं आता, लेकिन इस दुन्या से रुख़्सत होने के बा'द जन्नत में दाख़िल हो कर आप अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ बुलन्द मक़ाम में होंगे और मैं नीचे द-रजे में होने के सबब येह अन्देशा करता हूं कि कहीं आप को न देख सकूं। (येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे) इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام येह आयत ले कर ह़ाज़िर हुए :

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَ الصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾ (پ٥، النساء:٦٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग और येह क्या ही अच्छे साथी हैं।

(حلية الاولياء، ابراهيم بن يزيد النخعي، ٤/٢٦٧، الحديث:٥٥١٦)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना ज़ैद का इश्क़े रसूल

सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان एक लम्हा के लिये भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बेचैन देखना गवारा न करते, चुनान्चे जब कुफ़्फ़ारे मक्का ने हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन दसिना رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ को (क़ैद कर लिया और) क़त्ल करने के लिये हुदूदे ह़रम से बाहर ले गए तो अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब (जो अभी इस्लाम न लाए थे) ने उन से पूछा : ऐ ज़ैद (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ) ! मैं तुम को खुदा की क़सम दे कर पूछता हूं क्या तुम पसन्द कर सकते हो कि इस वक़्त हमारे पास तुम्हारी जगह **मुहम्मद** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हों और हम उन को क़त्ल करें और तुम (आराम व सुकून से) अपने अह्ल में रहो । हज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ ने जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तो येह भी पसन्द नहीं करता कि इस वक़्त मेरे हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जहां कहीं भी हों उन को एक कांटा भी चुभे और मैं आराम व सुकून से अपने अह्ल में रहूं । येह सुन कर अबू सुफ़्यान ने कहा : मैं ने ऐसा कहीं नहीं देखा कि किसी से ऐसी महब्बत की जाती हो, जैसी महब्बत **मुहम्मद** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से उन के अस्हाब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُم करते हैं ।

(الشفاء، الباب الثانی فی لزوم محبته، فصل فیما رُوِی عن السلف والائمة...الخ، الجزء الثانی، ص ٢١)

सय्यि-दतुना फ़ातिमा बिन्ते क़ैस का इश्क़े रसूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सहाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن ने अपनी ज़ाती हैसिय्यत बिल्कुल फ़ना कर दी थी और अपनी ज़ात और अपनी आल औलाद को **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़वाले कर दिया था, इश्क़ की इस बाज़ी में सह़ाबिय्यात भी किसी से पीछे न थीं वोह भी बढ़ चढ़ कर क़ौल व फ़े'ल से अपने इश्क़ का इज़्हार फ़रमातीं चुनान्चे **"सु-नने नसाई"** में है कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ातिमा बिन्ते क़ैस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا जो अव्वलीन मुहाजिरीन में से थीं, फ़रमाती हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان में से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ (जो निहायत दौलत मन्द थे) ने मुझे पैग़ामे निकाह़ दिया, जब कि शहन्शाहे कौनो मकां, नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ से मेरा निकाह़ करने का इरादा फ़रमाया, (जिन की फ़ज़ीलत के बारे में) मुझे पता चला कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुझे दोस्त रखता है उसे चाहिये कि उसामा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ को दोस्त रखे । जब **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से गुफ़्त-गू फ़रमाई तो मैं ने अ़र्ज़ की : मेरा मुआ-मला

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथ में है आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस से चाहें मेरा निकाह़ फ़रमा दें । (سنن النسائی، کتاب النکاح، الخطبة فی النکاح، ص٥٢٧ ، الحدیث:٣٢٣٤، ملخصًا)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का इ़श्क़े रसूल मुला-ह़ज़ा फ़रमाया इसी इ़श्क़े कामिल के तुफ़ैल सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को दुन्या में इख़्तियार व इक़्तिदार और उख़रवी इ़ज़्ज़तो वक़ार ह़ासिल हुवा । येह उन के इ़श्क़ का कमाल और जज़्बए इत्तिबाए़ सुन्नत था कि मुश्किल से मुश्किल घड़ी और कठिन से कठिन वक़्त में भी इन्हें सुल्त़ाने जहां, मह़बूबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत से इन्ह़िराफ़ गवारा न था क्यूं कि सच्चा मुह़िब अपने मह़बूब की हर हर अदा को अदा करता है, चुनान्चे किसी शाइ़र का क़ौल है :

لَوْكَانَ حُبُّكَ صَادِقًا لَاَطَعْتَهٗ　　اِنَّ الْمُحِبَّ لِمَنْ يُّحِبُّ مُطِيْعٗ

या'नी अगर तेरी मह़ब्बत में सदाक़त होती तो तू ज़रूर उस की इत़ाअ़त करता क्यूं कि मुह़िब तो अपने मह़बूब की बात माना करता है । (بحر الدموع، مقدمة المؤلف، ص١٥)

लिहाज़ा वोह हर हर मन्ज़िल में मह़बूब आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नक़्शे पा को मश्अ़ले राह बनाने और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात पर अ़मल पैरा होने के लिये एक दूसरे से ख़ुसूसन उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़, मह़बूबए मह़बूबे ख़ुदा ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से हु़ज़ूर ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अदाओं के बारे में पूछते और ऐसा क्यूं न होता कि ख़ुद सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के बारे में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को ता'लीम देते हुए इर्शाद फ़रमाया : **''خُذُوْا ثُلُثَیْ دِيْنِكُمْ مِنْ هٰذِهِ الْحُمَيْرَاءِ''** या'नी तुम अपना दो तिहाई दीन इस हु़मैरा (या'नी ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) से ह़ासिल करो ।'' (التفسیر الکبیر، الجزء الثانی والثلاثون، سورة القدر، تحت الآیة:٣، ١١/٢٣٢)

ज़ेरे नज़र बयान में ह़बीबए ह़बीबे ख़ुदा, सिद्दीक़ए काएनात उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के इस दरख़्शां पहलू को वाज़ेह़ करते हुए बा'ज़ उन रिवायात व वाक़िआ़त को ज़िक्र किया जाएगा जिन में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मह़बूबे रब्बे दावर, ख़ल्क़ के रहबर, साक़िये कौसर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नक़्शे पा को दलीले राह बनाने के लिये उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी अदाओं के बारे में सुवाल किया करते थे, चुनान्चे

www.dawateislami.net

हुज़ूर की सब से अनोखी चीज़

हज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : एक दिन मैं और हज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में हाज़िर हुए, हमारे और उन के दरमियान पर्दा था, उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पूछा : ऐ उ़बैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! तुम्हें हमारे पास आने से किस चीज़ ने रोका है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान ने : **''زُرْ غِبًّا تَزْدَدْ حُبًّا''** या'नी एक दिन छोड़ कर मिलो, महब्बत में इज़ाफ़ा होगा।''

(صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب التوبۃ،ذکرالبیان بأن المرء علیہ......الخ، ص۲۷۹،الحدیث:۶۲۰)

फिर हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : आप हमें **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कोई अनोखी बात बताइये, जो आप ने देखी हो। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रोने लगीं और फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हर मुआ-मला अ़जीब था, एक रात आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे साथ आराम फ़रमा रहे थे, यहां तक कि आप के जिस्म के साथ मेरा जिस्म मस हुवा, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे अपने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करने दो। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मश्कीज़े की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए, उस से वुज़ू फ़रमाया, फिर खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने लगे और इस क़दर रोए कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दाढ़ी मुबारक तर हो गई, फिर सज्दा किया यहां तक कि ज़मीन तर हो गई, इस के बा'द पहलू पर आराम फ़रमा हो गए ह़त्ता कि ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ाज़िर हो कर नमाज़े फ़ज्र की इत्तिलाअ़ दी और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप क्यूं रो रहे हैं ? ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सबब आप के अगलों पिछलों के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये हैं। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! तुझ पर अफ़्सोस ! मैं क्यूं न रोऊं, आज रात मुझ पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई है :

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾ (پ۴،اٰل عمرٰن:۱۹۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं अ़क़्ल मन्दों के लिये।

फिर फ़रमाया : उस शख़्स के लिये ख़राबी है जो इस आयते करीमा को पढ़े लेकिन इस में ग़ौरो फ़िक्र न करे।

(لباب الاحیاء، الباب التاسع والثلاثون فی التفکر، ص۳۳۵)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ा-ई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡوَالِی से पूछा गया कि इस आयते मुबा-रका में इन्तिहाई ग़ौरो फ़िक्र क्या है ? तो उन्हों ने फ़रमाया : इस को पढ़ा और समझा जाए।
(المرجع السّابق)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़क़्ल मन्द कौन ?

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی इस आयते करीमा के तह़त फ़रमाते हैं : **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की बारगाह में ख़ालिस अ़क़्ल वाले वोह नहीं जो दुन्या ख़ूब कमा लें बल्कि उ़-क़ला वोह हैं जो खड़े बैठे लैटे हर ह़ाल में ज़बानी, दिली, अरकानी त़ौर पर **अल्लाह तआ़ला** को याद करें, कभी उस से ग़ाफ़िल न रहें और ब-दनी इ़बादत या'नी ज़िक्र के साथ दिली इ़बादत या'नी ग़ौरो फ़िक्र भी करते रहें कि आस्मान व ज़मीन और इन की मख़्लूक़ात में तफ़क्कुर कर के रब तआ़ला की क़ुदरतें व ह़िक्मतें मा'लूम करें जिस से इन का ईमान और भी पुख़्ता हो जाए, येह सब कुछ सोच कर अ़र्ज़ करें कि ऐ हमारे पालने वाले ! तूने इन में से कोई चीज़ बे फ़ाएदा न पैदा फ़रमाई, हर चीज़ में करोड़ों ह़िक्मतें हैं, हम इक़रार करते हैं कि तू समझ में आने और तमाम उ़यूब से पाक है, ऐ मौला ! हम मोमिन हैं अपना करम फ़रमा हमें दोज़ख़ की आग से बचा ले।

मज़ीद फ़रमाते हैं : इस आयत से चन्द फ़ाएदे ह़ासिल हुए :

(1).... रात व दिन की आ-मदो रफ़्त, ज़ियादती, कमी बता रही है कि क़ौमों का भी येही ह़ाल है कि कभी किसी क़ौम को उ़रूज है कभी किसी को, इस उ़रूज पर तकब्बुर व ग़ुरूर न चाहिये बल्कि जहां तक हो सके उ़रूज के ज़माने में कुछ नेकियां कमा लेनी चाहिएं।

उतरते चांद ढलती चांदनी जो हो सके कर ले
अंधेरा पाख आता है येह दो दिन की उजाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 182)

(2).... आ़क़िल (अ़क़्ल मन्द) वोह है जो अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह** तआ़ला की याद में गुज़ारे, अगर्चे दुन्या ज़ियादा न कमाए।

(3).... फ़िक्र या'नी ग़ौरो ख़ौज़ **अल्लाह तआ़ला** की ज़ात में हरगिज़ न करो कि येह कुफ़्र तक पहुंचा देती है, उस की मख़्लूक़ में फ़िक्र आ'ला द-रजे की फ़िक्र है। अपनी बे कसी, बे बसी व गुनहगारी सोचना **अल्लाह तआ़ला** की क़ुदरते सत्तारी में ग़ौर करना इ़बादत है।

(4).... कोई मख़्लूक़ अ़बस (फ़ुज़ूल) नहीं अच्छी हो या बुरी, पाक हो या नापाक उस की पैदाइश में लाखों ह़िक्मतें हैं अगर्चे शै ख़ुद बुरी हो।

(तफ़्सीरे नईमी, पारह : 4, सूरए आले इमरान, तह़्तल आयह : 190, जि. 4, स. 468, 469, मुल्तक़ित़न)

www.dawateislami.net

आस्मान को देख कर ग़ौरो फ़िक्र न करने वाला महरूम

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू **अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन उ़मर बिन हुसैन क़ु-रशी राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयते करीमा की तफ़्सीर में एक ह़िकायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल में से एक शख़्स ने जब **30** साल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की तो उस पर एक बादल ने साया किया तो एक और नौ जवान ने अपने आ़लमे जवानी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की लेकिन उस पर बादल ने साया नहीं किया तो उस की मां ने उस से कहा : शायद ! इस मुद्दत में तुझ से कोई गुनाह सरज़द हुवा है ? उस ने जवाब दिया : मुझे याद नहीं पड़ता (कि मैं ने इस मुद्दत में कोई गुनाह किया हो) । तो उस की मां ने कहा : शायद तूने कभी आस्मान की त़रफ़ देखा हो और उस में ग़ौरो फ़िक्र न किया हो । उस ने जवाब दिया : जी हां । तो उस की मां ने कहा : येही वज्ह है कि बादल (तुझ पर साया करने के लिये) नहीं आया । (التفسير الكبير، الجزءُ التاسع، سورة اٰل عمران، تحت الآية:۱۹۰، ۳/۴۵۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आयात (या'नी निशानियों) को देख कर उन में ग़ौरो फ़िक्र न करना बाइसे महरूमी है, जैसा कि इस वाक़िए से मा'लूम हुवा और इस के बर अ़क्स जो शख़्स अ़जाइबाते क़ुदरत में ग़ौरो फ़िक्र करता है तो येह ग़ौरो फ़िक्र करना उस के लिये कसीर अज्रो सवाब का मूजिब बन जाता है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ फ़क़ीह अबू लैस नस्र बिन मुह़म्मद समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं कि बा'ज़ रिवायतों में आया है कि जिस ने सितारों को देखा और उन के अ़जाइबात और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत में तफ़क्कुर कर के दर्जे ज़ैल आयत पढ़ी तो उस के नामए आ'माल में आस्मान के सितारों की ता'दाद के बराबर नेकियां लिखी जाएंगी (वोह आयत येह है) :

رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾ (پ۴، اٰل عمرٰن:۱۹۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे तूने येह बेकार न बनाया पाकी है तुझे तो हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले । (تنبيه الغافلين، باب التفكر، ص۳۲۶)

किन चीज़ों में ग़ौरो फ़िक्र किया जाए और किन में नहीं ?

हज़रते सय्यिदुना शैख़ फ़क़ीह अबू लैस नस्र बिन मुह़म्मद समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى मज़ीद फ़रमाते हैं : जब कोई इन्सान ग़ौरो फ़िक्र की फ़ज़ीलत पाने का इरादा करे तो उस को पांच चीज़ों में ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये :

www.dawateislami.net

(1).... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में। **(2)**.... ज़ाहिरी व बातिनी ने'मतों में। **(3)**.... सवाब में। **(4)**.... अ़क़्ल में। **(5)**.... अपने ऊपर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एह़सान और अपनी ना शुक्री में ग़ौरो फ़िक्र करे।

﴾1﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में ग़ौरो फ़िक्र :

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के आस्मान व ज़मीन को पैदा करने, सूरज को मशरिक़ से तुलूअ़ करने और मग़रिब में ग़ुरूब करने, दिन रात के आने जाने और ख़ुद इसे पैदा करने के सिल्सिले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत में ग़ौरो फ़िक्र करे जब बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में ग़ौरो फ़िक्र करेगा तो इस से यक़ीन व मा'रिफ़त में इज़ाफ़ा होगा।

﴾2﴿...... ज़ाहिरी व बातिनी ने'मतों में ग़ौरो फ़िक्र :

जब बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ाहिरी व बातिनी ने'मतों में ग़ौरो फ़िक्र करेगा तो मह़ब्बते इलाही को चाहेगा।

﴾3﴿...... सवाब में ग़ौरो फ़िक्र करना :

येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने औलिया के लिये जन्नत में जो (सवाब) तय्यार कर रखा है उस में ग़ौरो फ़िक्र करे क्यूं कि इस के सवाब में ग़ौरो फ़िक्र करने से इस की रग़बत, इस को त़लब करने के सिल्सिले में कोशिश और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करने की क़ुव्वत में इज़ाफ़ा होगा।

﴾4﴿...... अ़ज़ाब में ग़ौरो फ़िक्र करना :

येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने दुश्मनों के लिये जहन्नम में जो अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है उस में ग़ौरो फ़िक्र करे क्यूं कि इस में ग़ौरो फ़िक्र करने से डर में इज़ाफ़ा होगा और गुनाहों को छोड़ने की क़ुव्वत ह़ासिल होगी।

﴾5﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एह़सानात में ग़ौरो फ़िक्र :

अपने ऊपर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एह़सान के बारे में इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करे कि उस ने मेरे गुनाहों पर पर्दा डाल रखा है और मुझ पर अ़ज़ाब नहीं फ़रमाया बल्कि तौबा की त़रफ़ बुलाया है। और अपने नफ़्स की जफ़ाओं के बारे में इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करे कि इस ने कैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात को तर्क कर दिया है और उस की ना फ़रमानियों का इरतिकाब किया है इन बातों में ग़ौरो फ़िक्र करने से ह़या व नदामत में इज़ाफ़ा होता है।

www.dawateislami.net

जब बन्दा इन पांच बातों में ग़ौरो फ़िक्र करेगा तब वोह शख़्स उन लोगों में से होगा जिन के बारे में नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''تَفَكُّرُ سَاعَةٍ خَيْرٌ مِّنْ عِبَادَةِ سَنَةٍ'' या'नी घड़ी भर के लिये ग़ौरो फ़िक्र करना एक साल की इबादत से बेहतर है।'' और इन के इलावा दीगर चीज़ों में ग़ौरो फ़िक्र न करे कि इन के इलावा जो कुछ है, वोह वस्वसा है। (كشف الخفاء، حرف المثناة الفوقية، ١/٢٧٨، الحديث:١٠٠٢۔ تنبيه الغافلين، باب التفكُّر، ص٣٢٧)

गुज़श्ता ह़दीसे पाक से मिलती जुलती एक रिवायत येह भी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे अ़ज़ीम है : ''فِكْرَةُ سَاعَةٍ خَيْرٌ مِّنْ عِبَادَةِ سِتِّيْنَ سَنَةٍ'' या'नी घड़ी भर के लिये ग़ौरो फ़िक्र करना साठ साल की इबादत से बेहतर है।''

(كتاب العظمة، فضل المتفكر فى آيات الله، ما ذكر من الفضل فى المتفكر فى ذلك، ص٣٣، الحديث:٤٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ुज़ूर के अख़्लाक़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **417** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**एह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा**'' सफ़ह़ा **180** पर मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन हश्शाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और नबिय्ये अकरम, रसूले मुह़तशम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो उन्हों ने फ़रमाया : क्या तुम क़ुरआन नहीं पढ़ते ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां ! पढ़ता हूं। आप ने फ़रमाया : ''**रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अख़्लाक़ क़ुरआन है।''

(صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب جامع صلاة الليل ...الخ، ص٢٧٠، الحديث:٧٤٦)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی अपनी मायए नाज़ तस्नीफ़ ''**एह़याउल उ़लूम**'' में इर्शाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया और इस के ज़रीए़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अदब सिखाया इसी वज्ह से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ क़ुरआन हुवा। (احياء علوم الدين، كتاب آداب المعيشة واخلاق النبوة، بيان تاديب الله تعالٰى حبيبه...الخ، ٢/٤٣٨)

www.dawateislami.net

ऐ अल्लाह ! मुझे बुरे अख़्लाक़ से दूर रख....!

मज़ीद फ़रमाते हैं : हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारगाहे इलाही में बहुत तज़र्रोअ़ व आ़जिज़ी फ़रमाया करते थे और हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महासिने आदाब व मकारिमे अख़्लाक़ का सुवाल किया करते थे।

(احیاء علوم الدین، کتاب آداب المعیشۃ واخلاق النبوۃ، بیان تادیبِ اللہ تعالٰی حبیبہ...الخ، ۲/۴۳۷)

चुनान्चे नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी दुआ़ में अ़र्ज़ किया करते थे '' : اَللّٰهُمَّ اَحْسَنْتَ خَلْقِىْ فَاَحْسِنْ خُلُقِىْ'' या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तूने मेरी सूरत अच्छी की मेरी सीरत को भी अच्छा कर दे।'' (مسند احمد، مسند عبد اللہ بن مسعود، ۲/۵۴۵، الحدیث: ۳۹۰۰) और येह भी अ़र्ज़ करते '' : اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنِىْ مُنْكَرَاتِ الْاَخْلَاقِ'' तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे बुरे अख़्लाक़ से दूर रख।''

(الاحسان فی تقریب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، ذکر ما یستحب للمرء ان یسال اللہ جلا وعلا......الخ، ص۳۶۳، الحدیث: ۹۶۰، ملتقطًا)

रब्बे रहीम عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमान ﴿ اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ﴾(پ۲۴، المؤمن: ۶۰) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा) को पूरा करते हुए अपने महबूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ को क़बूल फ़रमाया।

(احیاء علوم الدین، کتاب آداب المعیشۃ واخلاق النبوۃ، بیان تادیبِ اللہ تعالٰی حبیبہ...الخ، ۲/۴۳۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अपने महबूब को आ'ला अख़्लाक़ ता'लीम फ़रमाने की 4 मिसालें

चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने महबूब को आ'ला अख़्लाक़ की ता'लीम देते हुए इर्शाद फ़रमाता है :

﴿1﴾ خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۱۹۹﴾ (پ۹، الاعراف: ۱۹۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।

﴿2﴾ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۳﴾ (پ۶، المائدۃ: ۱۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो इन्हें मुआ़फ़ कर दो और इन से दर गुज़र करो बेशक एह़सान वाले **अल्लाह** को महबूब हैं।

﴿3﴾ اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآئِ ذِی الْقُرْبٰى وَیَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْیِ ۚ (پ۱۴، النحل: ۹۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी और रिश्तेदारों के देने का और मन्अ़ फ़रमाता है बे ह़याई और बुरी बात और सरकशी से।

www.dawateislami.net

وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۷﴾ (پ۲۱، لقمٰن:۱۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो उफ़्ताद (मुसीबत) तुझ पर पड़े उस पर सब्र कर बेशक येह हिम्मत के काम हैं ।

फिर जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ की तक्मील फ़रमा दी तो इस पर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'रीफ़ करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿۴﴾ (پ۲۹، القلم:۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है ।

(احیاء العلوم، کتاب آداب المعیشۃ واخلاق النبوۃ، بیان تادیب اللہ تعالٰی حبیبہ...الخ، ۲/۴۳۸-۴۳۹)

अख़्लाक़े मुस्त़फ़ा के मु-तअ़ल्लिक़ मज़ीद फ़रामीने आ़इशा

﴾1﴿..... साहिबे मे'राज का अख़्लाक़ :

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि उन्हों ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से दो जहां के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ के बारे में सुवाल किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अख़्लाक़ क़ुरआन था आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस की रिज़ा से राज़ी होते और उस की नाराज़ी से नाराज़ होते थे ।

(شعب الایمان، باب فی حب النبی، فصل فی خَلْقِهٖ وخُلُقِهٖ، ۲/۱۵۴، الحدیث:۱۴۲۸)

﴾2﴿..... सब से ज़ियादा ह़सीन अख़्लाक़ वाले :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ उ़क़ैली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ के बारे में सुवाल किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अख़्लाक़ के ए'तिबार से तमाम लोगों से ज़ियादा ह़सीन थे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अख़्लाक़ क़ुरआन था ।

(تفسیر الدر المنثور، سورۃ القلم، تحت الآیۃ:۴، ۱۴/۶۲۲)

www.dawateislami.net

﴿3﴾..... मुआफ़ और दर गुज़र करने वाले :

हज़रते सय्यिदुना अबू **अ़ब्दुल्लाह** जदली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ के बारे में सुवाल किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न बुरी बात करते थे, न फ़ोहूश गो थे, न बाज़ारों में शोर करते थे और न ही बुराई का बदला बुराई से देते थे बल्कि मुआफ़ और दर गुज़र फ़रमाते थे।

(دلائل النبوة للبيهقى، باب ذكر اخبار رويت فى شمائله واخلاقه...الخ، ١/٣١٥)

﴿4﴾..... पर्दा नशीन दोशीज़ाओं से ज़ियादा ह़या :

हज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब बिन्ते यज़ीद बिन वसक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि जब मैं उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास मौजूद थी उस वक़्त (मुल्के) शाम की औरतें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास हाज़िर हुईं तो उन्हों ने कहा : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! हमें रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ के बारे में बताइये। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ कुरआन था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर्दा नशीन दोशीज़ाओं से भी ज़ियादा ह़या वाले थे। **(تفسير الدر المنثور، سورة القلم، تحت الآية:٤، ١٤/٦٢٣)**

अच्छे अख़्लाक़ वाला हुज़ूर का मह़बूब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जैसा कि आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि हुज़ूर ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुल्के अ़ज़ीम के मालिक होने के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बुरे अख़्लाक़ से बचाए जाने और हुस्ने अख़्लाक़ अ़ता किये जाने की दुआ़ किया करते थे लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस मुबारक सुन्नत पर अ़मल करते हुए हमें भी बारगाहे इलाही में हुस्ने अख़्लाक़ की दुआ़ करनी चाहिये। हुस्ने अख़्लाक़ की फ़ज़ीलत के लिये येही बात काफ़ी है कि मह़बूबे रब्बे अक्बर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अच्छे अख़्लाक़ वाले और नर्म ख़ू को बरोज़े क़ियामत अपना सब से ज़ियादा मह़बूब और अपनी मजलिस में सब से ज़ियादा क़रीब होने की बिशारत अ़ता फ़रमाई है, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **इमामुन्नबिय्यीन, जनाबे**

www.dawateislami.net

रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बरोज़े महशर तुम में मेरे नज़्दीक सब से ज़ियादा महबूब और मेरी मजलिस में सब से ज़ियादा क़रीब वोह लोग होंगे जो तुम में अच्छे अख़्लाक़ वाले होंगे और क़ियामत के दिन मेरे नज़्दीक तुम में से सब से ज़ियादा क़ाबिले नफ़रत और मेरी मजलिस से ज़ियादा दूर वोह लोग होंगे जो ज़ियादा बातें करने वाले, मज़ाक़ उड़ाने वाले और तकब्बुर करने वाले होंगे। (سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی معالی الاخلاق، ص۴۸۸، الحدیث:۲۰۱۸، ملتقطًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰه اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अज़्वाजे मुतह्हरात से हुज़ूर का हुस्ने अख़्लाक़

हज़रते सय्यि-दतुना अम्रह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से पूछा कि जब रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिर्फ़ अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात में होते थे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ कैसे थे ? उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे सरताज, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हारे मर्दों में से एक मर्द की तरह ही थे मगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाले, अख़्लाक़ के ए'तिबार से सब से अच्छे और बहुत ज़ियादा मुस्कुराने वाले थे।

(تاریخ مدینة دمشق، حرف الف من اسمه احمد، باب صفة الخلقه ومعرفة الخلقة، ۳۸۳/۳)

तबस्सुम नबिय्ये मुकर्रम की आदते करीमा थी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस हदीस शरीफ़ में मुस्कुराने का ज़िक्र है इस के मु-तअल्लिक़ मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि मुस्कुराना अच्छी चीज़ है और क़हक़हा बुरी चीज़। "तबस्सुम" रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आदते करीमा थी। (مراٰۃ المناجیح، کتاب الرقاق، ۱۴/۷)

जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 303)

www.dawateislami.net

क़ह्क़हा शैत़ान की त़रफ़ से है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ह्क़हा की मज़म्मत बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ''وَالْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطٰنِ، وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللّٰهِ या'नी क़ह्क़हा शैत़ान की त़रफ़ से है और मुस्कुराना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزهد، باب ما جاء فی فضل الزهد والورع، ۱۰/۳۸۴، الحدیث:۱۸۱۲۷)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अ़ल्लामा मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : ''क़ह्क़हा से मुराद आवाज़ के साथ हंसना है, शैत़ान इसे पसन्द करता और इस पर उभारता है। जब कि तबस्सुम से मुराद बिग़ैर आवाज़ के थोड़ी मिक़्दार में हंसना है।''

(فیض القدیر، حرف القاف، فصل فی المحلی بأل من هذا الحرف، ۴/۷۰۶، تحت الحدیث:۶۱۹۶)

ज़ियादा हंसी दिल को मुर्दा कर देती है

मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : **ज़ियादा हंसने से बचते रहो क्यूं कि येह दिल को मुर्दा करता और चेहरे के नूर को ख़त्म कर देता है।**

(الترغیب والترهیب، کتاب الادب، الترغیب فی الصمت الاعن خیر، ص۹۱۰، الحدیث:۲۷)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ **43** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला ''**वसाया इमामे आ'ज़म**'' सफ़्ह़ा **14** पर इमामुल अइम्मा, सिराजुल उम्मह इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ वसिय्यत करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : **ज़ियादा हंसने से बचना कि इस से दिल मुर्दा हो जाता है।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सन्जी-दगी इख़्तियार कीजिये

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **51** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**एह़सासे ज़िम्मादारी**'' सफ़्ह़ा **37** पर है : सन्जी-दगी को अपने मिज़ाज का ह़िस्सा बना लीजिये और मज़ाक़ मस्ख़री की आ़दत पालने से परहेज़ कीजिये। लेकिन याद रहे कि रोनी सूरत बनाए रखने का नाम सन्जी-दगी नहीं और न ही ब क़दरे ज़रूरत गुफ़्त-गू करना या कभी कभार मिज़ाह़ कर लेना और मुस्कुराना सन्जी-दगी के मुनाफ़ी है। हां ! कसरते मिज़ाह़ और

www.dawateislami.net

ज़ियादा हंसने से परहेज़ करें कि इस से वक़ार जाता रहता है जैसा कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जो शख़्स ज़ियादा हंसता है, उस का दब-दबा और रो'ब चला जाता है और जो आदमी (ब कसरत) मिज़ाह़ करता है वोह दूसरों की नज़रों में गिर जाता है।" (احیاءُ علوم الدِّین، کتاب آفات اللسان، الآفۃ العاشرۃ المزاح، ۳/۱۵۸)

मिज़ाह़ भी ऐसा होना चाहिये कि जिस की वज्ह से किसी गुनाह का इरतिकाब न करना पड़े म-सलन किसी का दिल दुखा बैठना या झूट बोलना वग़ैरा जैसा कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स कोई ऐसी (झूटी) बात कहता है जिस से उस का सिर्फ़ येह मक़्सद होता है कि वोह लोगों को हंसाए, तो वोह शख़्स इस की वज्ह से आस्मान (व ज़मीन के दरमियानी फ़ासिले) से भी दूर तक (जहन्नम में) गिरता है।"

(مجمعُ الزوائد، کتابُ الادب، باب فیما یجتنب من الکلام، ۸/ ۱۱۹، الحدیث:۱۳۱۴۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हु़ज़ूर घर में क्या अ़मल फ़रमाते थे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा कि नबिय्ये अकरम, रसूले मुह़्तशम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने घर में क्या करते थे ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : घर के कामकाज में मश्ग़ूल रहते या'नी घर वालों का काम करते रहते फिर जब नमाज़ का वक़्त आ जाता तो नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते।

(صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب من کان فی حاجۃ اھلہ فاقیمت الصلاۃ فخرج، ص۲۲۹، الحدیث:۶۷۶)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीस शरीफ़ के तह़त फ़रमाते हैं : मा'लूम होता है कि येह ह़ज़रात हु़ज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बैरूनी और अन्दरूनी ज़िन्दगी के ह़ाफ़िज़ होना चाहते थे और उम्मत तक पहुंचाना चाहते थे इस लिये बैरूनी ज़िन्दगी शरीफ़ सह़ाबए किराम से पूछते थे और अन्दरूनी ज़िन्दगी अज़्वाजे पाक (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) से, ख़ुसूसन उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) से।

www.dawateislami.net

मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अपने घर के किसी काम में तकल्लुफ़ नहीं करते थे। बकरी दोह लेते, अपने कपड़े धो लेते थे, फटे कपड़े, फटी ना'लैन शरीफ़ में पैवन्द लगा लेते थे। जब नमाज़े जमाअ़त का वक़्त आता तो सारे काम छोड़ देते, घरबार से मुंह मोड़ लेते जैसे किसी को जानते ही नहीं और मस्जिद तशरीफ़ ले जाते, येह ही सुन्नत है, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ऐसी ज़िन्दगी नसीब फ़रमाए।

(اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

(مراۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب الفضائل والشمائل، باب فی اخلاقہ وشمائلہ، ۸/۷۴، ملتقطاً)

अपने कपड़े ख़ुद धो लेना　　ख़ाक के बिस्तर पर सो लेना
सादा सादा नेक तबीअ़त　　صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अम्बिया का त़र्ज़े अ़मल

शैख़े मुहक़्क़िक़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : (इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि) अहले ख़ाना की ख़िदमत करना अम्बिया व मुर-सलीन और सालिह़ीन का त़रीक़ा है।

(اشعة اللمعات شرح المشكاة(مترجم)، كتاب الفضائل والشمائل، باب فى اخلاقه وشمائله، ١٨٦/٧)

सरकार के घरेलू मुआ़-मलात के मु-तअ़ल्लिक़ सय्यिदह आ़इशा की मज़ीद 2 रिवायात

﴾1﴿...... जूता शरीफ़ ख़ुद सी लेते :

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا से सुवाल किया कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में क्या करते थे ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : मक्की म-दनी सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपना जूता शरीफ़ ख़ुद सी लेते और (घर में) ऐसे ही अ़मल करते जैसे कोई शख़्स अपने घर में करता है। (الادب المفرد، باب ما يعمل الرجل فى بيته، ص١٦٤، الحديث:٥٣٩)

www.dawateislami.net

﴾2﴿...... अपने कपड़े को ख़ुद सी लेते :

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने ना'लैन और लिबास मुबारक ख़ुद सी लेते और घर में इस त़रह़ काम करते जैसे तुम में से कोई अपने घर में काम करता है।

(مسند احمد، مسند السیدۃ عائشۃ، ۱۰/۳۶۴، الحدیث:۲۶۰۸۳)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस अ़मल शरीफ़ से दो मस्अले मा'लूम हुए : **एक** येह कि पैवन्द वाला कपड़ा और पैवन्द लगा हुवा जूता पहनने में आ़र न करे, येह सुन्नते **रसूलुल्लाह** है صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم। **दूसरा** येह कि अपना काम अपने हाथ से करने में भी शर्म न करे दूसरे का ह़ाजत मन्द न रहे मगर येह दोनों अ़मल बुख़्ल की बिना पर न हों बल्कि तवाज़ोअ़ इन्किसार के लिये हों। लिहाज़ा येह ह़दीस इस फ़रमाने आ़ली के ख़िलाफ़ नहीं कि जब नया कपड़ा या नया जूता पाओ तो पुराना ख़ैरात कर दो कि वहां सख़ावत की ता'लीम है और यहां तवाज़ोअ़ की।

इस ह़दीसे पाक से येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ित़री त़ौर पर हर काम जानते हैं, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) सल्त़नत करना, मुक़द्दमे में फ़ैसला करना भी जानते हैं और कपड़े सीना, जूते में पैवन्द लगाने से भी वाक़िफ़ हैं। येह सब कुछ किसी से सीखा नहीं, रब के हां से सीखे सिखाए तशरीफ़ लाए। हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने कोई कमाल किसी मख़्लूक़ से नहीं सीखा। (مراۃ المناجیح، کتاب الفضائل والشمائل، باب فی اخلاقہ وشمائلہ، ۸/۷۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हुज़ूर का मह़बूब अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कौन सा अ़मल ज़ियादा प्यारा था ? फ़रमाया : हमेशा का। मैं ने कहा कि (रात में) किस वक़्त उठते थे ? फ़रमाया जब मुर्ग़ की अज़ान सुनते थे।

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب القصد والمداومۃ علی العَمَل، ص ۱۵۸۹، الحدیث:۶۴۶۱)

www.dawateislami.net

इस्तिक़ामत हज़ार करामत से अफ़्ज़ल है

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان नक़्ल फ़रमाते हैं : दूसरी रिवायत में आया कि प्यारा अ़मल वोह है जो हमेशा हो अगर्चे थोड़ा हो, हमेशगी दीन व दुन्या की काम्याबी का ज़रीआ़ है, **इस्तिक़ामत हज़ार करामत से अफ़्ज़ल है**, इतना काम शुरूअ़ करो जो निभा सको। (مراٰۃ المناجیح، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ اللیل، ۲/۲۴۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक पसन्दीदा अ़मल

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाया करते थे : जितने आ'माल की तुम्हें त़ाक़त है इतने ले लो, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नहीं उक्ताता ह़त्ता कि तुम उक्ता जाओ और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक पसन्दीदा अ़मल वोह है जिस पर उस का करने वाला हमेशगी इख़्तियार करे अगर्चे वोह थोड़ा हो।

(صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب صیام النبی فی غیر رمضان ...الخ، ص٤١٨، الحدیث:١١٥٦)

दाइमी अ़मल के फ़वाइद

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1124** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''एह़याउल उ़लूम''** जिल्द **1**, सफ़ह़ा **1043** पर **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : इन्सानों की तमाम अक़्साम के ह़क़ में वज़ाइफ़ में अस्ल चीज़ इन पर हमेशगी इख़्तियार करना है क्यूं कि इन का मक़्सद येह है कि बात़िनी सिफ़ात तब्दील हो जाएं और आ'माल अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा त़ौर पर बहुत कम असर करते हैं बल्कि उन के असर करने का एह़सास ही नहीं होता, असर सिर्फ़ मज्मूए़ पर मुरत्तब होता है लिहाज़ा एक अ़मल पर कोई असर मह़सूस नहीं होता तो जब उस के पीछे दूसरा और तीसरा अ़मल नहीं लाएगा तो पहला असर मिट जाएगा। येह उस फ़क़ीह की त़रह़ होगा जिस का इरादा येह है कि वोह फ़क़ीहुन्नफ़्स हो, वोह फ़क़ीहुन्नफ़्स उसी वक़्त होगा जब कसरत के साथ तक्रार करे अगर वोह एक रात तक्रार करने में ख़ूब मुबा-लग़ा करे और फिर एक महीना या एक हफ़्ता तक तक्रार न करे, फिर उस की त़रफ़ लौटे और एक रात तक्रार में ख़ूब मुबा-लग़ा करे तो उस का कोई असर नहीं होगा और अगर इतनी मिक़्दार को पै दर पै रातों पर तक़्सीम कर दे तो इस का असर ज़रूर होगा।

www.dawateislami.net

इसी राज़ की त़रफ़ इशारा करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''اَحَبُّ الْاَعْمَالِ اِلَی اللّٰہِ تَعَالٰی اَدْوَمُهَا وَاِنْ قَلَّ'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल वोह है जो हमेशा हो अगर्चे क़लील हो।''

(صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب فضيلة العَمَل الدائم ...الخ، ص٢٨٣، الحديث: ٧٨٣)

(احياء العلوم، كتاب ترتيب الاوراد وتفصيل احياء الليل، الباب الاوّل فى فضيلة الاوراد وترتيبها واحكامها، ٤٦٤/١)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब कोई अ़मल करते तो उसे बर क़रार रखते (या'नी हमेशा करते)। (صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين، باب فضيلة العَمَل الدائم ...الخ، ص٢٧١، الحديث:٧٤٦)

इसी वज्ह से हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता हो फिर सुस्ती के बाइ़स इसे तर्क कर दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ हो जाता है।''

(طبقات الشافعية، الطبقة الخامسة، كتاب اسرار الصلٰوة، احاديث صلوات يوم الجمعة وليلها، ٢٩٨/٦)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हुज़ूर का बा'दे अ़स्र नमाज़े नफ़्ल पढ़ना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बा'दे अ़स्र दो रक्अ़तें पढ़ते हुए देख कर पूछा : येह क्या है ? उन्हों ने कहा : मुझे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने ख़बर दी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बा'दे अ़स्र दो रक्अ़तें पढ़ा करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि फिर मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास ह़ाज़िर हुवा और उन से इस बारे में पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया कि उन्हों (या'नी इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ने सच कहा। मैं ने कहा : मैं गवाही देता हूं कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : अ़स्र के बा'द कोई नमाज़ नहीं ह़त्ता कि सूरज ग़ुरूब हो जाए और फ़ज्र के बा'द कोई नमाज़ नहीं ह़त्ता कि सूरज तुलूअ़ हो जाए (और जहां तक **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बा'दे अ़स्र दो रक्अ़तें पढ़ने का मुआ-मला है) ''فَرَسُوْلُ اللّٰہِ یَفْعَلُ مَا اُمِرَ وَنَحْنُ نَفْعَلُ مَا اُمِرْنَا'' या'नी **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह अ़मल फ़रमाते थे जिस का उन्हें हुक्म दिया गया और हम वोह करेंगे जिस का हमें हुक्म दिया गया है।''

(مصنّف عبد الرزاق، كتاب الصلٰوة، باب الساعة التى يكره فيها الصلٰوة، ٢٨٥/٢، الحديث:٣٩٧٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नमाज़े अ़स्र के बा'द नफ़्ल पढ़ना हुज़ूर का ख़ास्सा है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बा'दे अ़स्र दो रक्अ़तें नफ़्ल पढ़ना सरकारे वाला तबार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ास्सा है जैसा कि इसी रिवायत में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के फ़रमान से मा'लूम हुवा जैसा कि **मुफ़स्सिरे शहीर**, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : एक बार हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वफ़्दे अ़ब्दुल क़ैस को तब्लीग़ करने की वज्ह से ज़ोह्‌र की दो रक्अ़तें न पढ़ सके थे फिर वोह रक्अ़तें अ़स्र के बा'द क़ज़ा कीं लेकिन त़रीक़ा हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह है कि जब कोई नेकी एक बार कर लेते हैं तो फिर हमेशा ही करते हैं, इस लिये इस के बा'द हमेशा ही पढ़ते रहे। ख़याल रहे कि सुन्नते ज़ोह्‌र की क़ज़ा करना भी हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यत है फिर बा'दे अ़स्र पढ़ना और फिर हमेशा पढ़ना हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यतें ही हैं हमें इस से मन्अ़ किया गया है जैसे रोज़ए विसाल कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रखते थे हमें मन्अ़ फ़रमाया। चुनान्चे त़ह़ावी (عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی) ने इस ह़दीस के साथ येह भी ज़िक्र किया कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम भी क़ज़ा कर लिया करें ? फ़रमाया : नहीं। (مرآۃ المناجیح، کتاب الصلاۃ، باب اوقات النھی، ۲/۱۶۳)

ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे मूसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से बा'दे अ़स्र दो रक्अ़तें पढ़ने के बारे में सुवाल किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : जब भी **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी बारी के दिन तशरीफ़ लाते तो बा'दे अ़स्र दो रक्अ़तें पढ़ा करते थे।

(مسند امام احمد بن حنبل، مسند عائشة، ۱۰/ ۲۱۷، الحدیث:۲۵۵۲۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हु़ज़ूर की ज़ोह्‌र के बा'द वाली सुन्नतें क़ज़ा होने का वाक़िआ़

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : एक बार मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे घर में तशरीफ़ फ़रमा थे जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़े ज़ोह्‌र के लिये वुज़ू फ़रमाया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास बहुत सारे मुहाजिरीन जम्अ़ थे शाहे बनी आदम, रसूले मुह़तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

एक शख़्स को स-दक़ात की वुसूल याबी के लिये रवाना फ़रमाया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को देर में मुब्तला पाया इसी दौरान दरवाज़े पर दस्तक हुई आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ले गए और नमाज़े ज़ोहर पढ़ाई फिर रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हो गए और वोह माल तक़्सीम फ़रमाने लगे जो वोह शख़्स लाया था ह़त्ता कि अ़स्र के वक़्त फ़ारिग़ हुए। ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख कर नमाज़ की इक़ामत कही और हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़स्र की नमाज़ पढ़ाई फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे घर में दाख़िल हुए और दो रक्अ़तें पढ़ीं। मैं ने उन (दो रक्अ़तें पढ़ने) के बारे में पूछा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : येह वोह दो रक्अ़तें हैं जिन को मैं ज़ोहर के बा'द पढ़ा करता था आज मश्ग़ूलिय्यत ने (इन से) मेरी तवज्जोह हटा दी लिहाज़ा मैं ने बा'दे अ़स्र उन दो रक्अ़तों को पढ़ा और मैं ने इस बात को ना पसन्द किया कि मैं इन्हें मस्जिद में अदा करूं इस ह़ाल में कि लोग मुझे देखें लिहाज़ा मैं ने इन्हें तुम्हारे पास आ कर पढ़ा।

(كنز العمال، كتاب الصلاة، فصل فی مفسدات الصلاة......الخ، الوقت المكروه، الجزء الثامن، ٤/٨٩، الحديث:٢٢٤٨٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक सुवाल और उस का जवाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हो सकता है किसी के ज़ेह्न में **सुवाल** आए कि क्या कोई शख़्स हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मुह़्तशम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी करते हुए इस त़रीक़े पर अ़मल कर सकता है ह़ालां कि अ़स्र की नमाज़ के बा'द नफ़्ल नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं......?

इस का **जवाब** येह है कि इस वक़्त में नमाज़ के मक्रूह होने के जो अस्बाब हैं कि **(1)**...... सूरज की इ़बादत करने वालों की मुशा-बहत। **(2)**...... शैत़ान का सींग ज़ाहिर होने के वक़्त सज्दा करना। **(3)**...... उक्ता जाने के ख़ौफ़ से इ़बादत से कुछ देर आराम करना। **येह तीनों** अस्बाब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ में साबित नहीं लिहाज़ा आप पर दूसरों को क़ियास नहीं किया जा सकता। इस पर दलील आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह मुबारक फ़े'ल है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन दो रक्अ़तों को अपने घर में अदा फ़रमाया करते थे कि कहीं कोई शख़्स पैरवी न करे (जैसा कि ऊपर ज़िक्र की गई रिवायत से मा'लूम हुवा।)

(احياء علوم الدين، كتاب ترتيب الاوراد وتفصيل احياء الليل، الباب الاول فی فضيلة الاوراد وترتيبها واحكامها، ١/٤٦٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

घर में दाख़िले के बा'द पहला काम

हज़रते सय्यिदुना शुरैह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा कि ह़बीबे ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब घर में तशरीफ़ लाते तो पहले क्या काम करते थे ? फ़रमाया : **"मिस्वाक ।"** (صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب السواك، ص١١٤، الحديث:٢٥٣)

मिस्वाक शरीफ़ के फ़वाइद

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **"मिरआतुल मनाजीह़"** में इस ह़दीस शरीफ़ के तह़त फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि मिस्वाक वुज़ू के इलावा भी करनी चाहिये । **"मिरक़ात"** वग़ैरा में है कि मिस्वाक के **70** फ़ाएदे हैं । जिन में से एक येह है कि इस से मरते वक़्त कलिमा नसीब होता है, येह पाएरिया (या'नी दांतों की एक बीमारी) से मह़फ़ूज़ रखती है, गन्दा दहनी दूर करती है, दांतों व मे'दे को क़वी करती है, आंखों में रोशनी देती है । (مرآۃ المناجیح، کتاب الطہارت، باب السواک، ۱/۲۷۵)

अम्बियाए किराम की 10 सुन्नतें

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि **रसूलुल्लाह** سُبْحٰنَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : **10** चीज़ें फ़ित़रत से हैं : (1)...... मूंछ काटना (2)...... दाढ़ी बढ़ाना (3)...... मिस्वाक (4)...... नाक में पानी लेना (5)...... नाख़ुन काटना (6)...... पौरे धोना (7)...... बग़ल के बाल उखेड़ना (8)...... ज़ेरे नाफ़ बाल मूंडना और (9)...... पानी ख़र्च करना या'नी इस्तिन्जा करना । रावी कहते हैं कि मैं दसवीं बात भूल गया मुम्किन है कुल्ली हो । (صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب خصال الفطرة، ص١١٦، الحديث:٢٦١)

इस्लामी बहनों का मिस्वाक करना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मिस्वाक करना इस्लामी बहनों के लिये उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सुन्नत है जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **561** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत"** सफ़ह़ा **357** पर शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत, मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن का मल्फ़ूज़ शरीफ़ ज़िक्र फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

अर्ज़ : औरतों के लिये मिस्वाक कैसी है ?

इर्शाद : इन के लिये उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की सुन्नत है लेकिन अगर वोह न करें तो ह़रज नहीं। इन के दांत और मसूढ़े ब निस्बत मर्दों के कमज़ोर होते हैं, मिस्सी (या'नी एक क़िस्म का मन्जन) काफ़ी है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हि़स्सए सिवुम, स. 357)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हु़ज़ूर का बिस्तर मुबारक

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا अपने वालिद से रिवायत करते हैं वोह फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से सुवाल किया कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बिस्तर मुबारक कैसा था ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इर्शाद फ़रमाया : टाट का एक कम्बल था मैं उस को मोड़ कर दो तहें बना देती और दो जहां के ताजदार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस पर आराम फ़रमाते। एक रात मैं ने कहा : अगर मैं इस की चार तहें कर दूं तो येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ज़ियादा आराम देह होगा लिहाज़ा मैं ने उस की चार तहें बना दीं। जब सुब्ह़ हुई तो सय्यिदुल मुर-सलीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : (आज रात) तुम ने मेरे लिये क्या बिछाया था ? फ़रमाती हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बिस्तर ही था हां ! मैं ने उस की चार तहें बना दी थीं, मैं ने कहा कि येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ज़ियादा आराम देह होगा। तो दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इस को पहली ह़ालत पर ही लौटा दो क्यूं कि इस के नर्म व गुदाज़ पन ने मुझे मेरी रात की नमाज़ से रोके रखा।

(الوفا باحوال المصطفٰی ،ابواب آلات بیته ، الباب الرابع فی ذکر فراشه، ص۱۳۳)

بوریا ممنونِ خوابِ راحتش
تاجِ کسریٰ زیرِ پائے امّتش

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 25)

या'नी सय्यिदुल अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आराम देह नींद से चटाई एह़सान मन्द है ह़ालां कि किस्रा बादशाह का ताज आप की उम्मत के पाउं तले है।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हुज़ूर की दुन्या से बे रग़बती

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब को कुल काएनात का मालिको मुख़्तार बनाया है फिर भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या से इस क़दर बे रग़बत थे कि अपने लिये नर्मो गुदाज़ और आराम देह बिस्तर भी गवारा न फ़रमाते थे, दो आ़लम के दाता, हम ग़रीबों के मल्जा व मावा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़जिज़ी व इन्किसारी और दुन्या से बे रग़बती का येह आ़लम था कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बयान फ़रमाते हैं : एक मर्तबा नबिय्ये मुख़्तार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक चटाई पर सोए हुए थे फिर इस ह़ाल में उठे कि चटाई का निशान आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पहलू पर मौजूद था हम ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये बिस्तर बिछा दें (तो मुनासिब होगा) । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे दुन्या से क्या तअ़ल्लुक़ ? मेरी मिसाल दुन्या में उस सुवार की सी है जो एक दरख़्त के नीचे साया ले फिर चला जाए और दरख़्त को छोड़ जाए । (سنن الترمذی، کتاب الزھد، ٤٤-باب ، ص٥٦٦، الحدیث:٢٣٧٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सय्यिदुल अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुन्या से शाने बे रग़बती मुला-ह़ज़ा फ़रमाई आज हम जैसे ग़ुलाम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम पर ऐ़श कर रहे हैं और हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद दुन्या में एक मुसाफ़िर की सी ज़िन्दगी गुज़ारी । मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی मज़्कूरा फ़रमाने आ़लीशान के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : या'नी जैसे येह सुवार इतनी देर आराम के लिये अपना बिस्तर वग़ैरा नहीं खोलता, बल्कि ज़मीन पर ही लैट कर धूप ढल जाने पर चल देता है, ऐसे ही हमारा ह़ाल है कि हम कौनैन के मालिक हैं, मगर अपने लिये कुछ नहीं रखते । लिहाज़ा ह़दीस का मत़लब येह नहीं कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पर्दा फ़रमाने के बा'द दुन्या को और अपनी उम्मत को छोड़ दिया, इन सब से बे तअ़ल्लुक़ हो गए, अगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम को छोड़ दें तो हम हलाक हो जाएं, सूरज दुन्या को छोड़ दे, तो दुन्या अंधेरी हो जावे, रूह़ बदन को छोड़ दे तो बदन मर जावे, जड़ दरख़्त को छोड़ दे तो दरख़्त सूख जावे, अगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या को छोड़ दें तो कोई **अल्लाह, अल्लाह** कहने वाला न रहे । (مراٰۃ المناجیح، کتاب الرقاق، ٧/٢٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बारगाहे ख़ुदा में दुआए मुस्तफ़ा

हज़रते सय्यिदुना फ़र्वह बिन नौफ़िल अश्जई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ के बारे में सुवाल किया तो सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इर्शाद फ़रमाया : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते : "اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ شَرِّ مَا عَمِلۡتُ وَمِنۡ شَرِّ مَا لَمۡ اَعۡمَلۡ" या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! जो अ़मल मैं ने किये और जो नहीं किये उन के शर से तेरी पनाह लेता हूं।"

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء والتوبۃ والاستغفار، باب التعوذ من شر ما عَمِل ومن شر ما لم یعمل، ص۱۰۴۵، الحدیث:۲۷۱۶)

हुज़ूर अक्सर अवक़ात कौन सी दुआ फ़रमाते ?

एक दूसरी रिवायत में इस त़रह़ है कि इब्ने यसाफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से पूछा कि सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी वफ़ात शरीफ़ से पहले ज़ियादा तर कौन सी दुआ किया करते थे ? उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर अवक़ात येह दुआ किया करते थे : "اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ شَرِّ مَا عَمِلۡتُ وَمِنۡ شَرِّ مَا لَمۡ اَعۡمَلۡ" या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! जो अ़मल मैं ने किये और जो नहीं किये उन के शर से तेरी पनाह लेता हूं।"

(سنن النسائی، کتاب الاستعاذۃ، باب الاستعاذۃ من شر ما عَمِل وذکر الاختلاف...الخ، ص۸۷۶، الحدیث:۵۵۳۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अपने लिये दुआए मग़्फ़िरत करना ता'लीमे उम्मत के लिये था वरना आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर गुनाह से मा'सूम हैं, चुनान्चे मज़्कूरा ह़दीसे पाक के तह़्त हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡھَادِی नक़्ल फ़रमाते हैं : अ़ल्लामा त़िय्यिबी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : इस दुआ में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस चीज़ से पनाह त़लब की है जिस से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मा'सूम हैं और येह अ़मल इस लिये फ़रमाया ताकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़, अ़-ज़-मते ख़ुदा वन्दी के इक़रार और उस की त़रफ़ मोहताज होने को लाज़िम पकड़े रहें नीज़ येह कि इस अ़मल में आप की पैरवी की जाए और आप लोगों को दुआ का त़रीक़ा सिखा दें।

(فیض القدیر شرح جامع الصغیر، حرف الھمزۃ، ۲/۱۳۶، تحت الحدیث:۱۴۶۵، ملخّصًا)

www.dawateislami.net

हज़रते अ़ल्लामा अ़ली बिन सुल्त़ान अल मा'रूफ़ मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : सब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नुबुव्वत से पहले व बा'द गुनाहे सग़ीरा व कबीरा सब से मा'सूम हैं। (مأخوذ از مرقاة المفاتيح، كتاب الايمان، باب الايمان بالقدر، الفصل الاول، ١/٢٤٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रात में किस चीज़ से इब्तिदा फ़रमाते ?

हज़रते सय्यिदुना शरीक़ हौ-ज़नी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा मैं ने उन से दरयाफ़्त किया कि नबिय्ये अकरम, रसूले मुह़्तशम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब रात में जागते थे तो इब्तिदा किस चीज़ से फ़रमाते थे ? फ़रमाया : तुम ने मुझ से वोह चीज़ पूछी जो तुम से पहले मुझ से किसी ने न पूछी मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब रात में जागते तो दस बार **اَللهُ اَكْبَر**, दस बार **اَلْحَمْدُ لِلّٰه**, दस बार **سُبْحٰنَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ**, दस बार **سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْس**, दस बार **اَسْتَغْفِرُ الله** और दस बार **لَا اِلٰهَ اِلَّا الله** पढ़ते फिर दस बार कहते : "**اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ ضِيْقِ الدُّنْيَا وَضِيْقِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ**" या'नी ऐ मेरे **अल्लाह** ! मैं दुन्या व क़ियामत की तंगी से तेरी पनाह मांगता हूं।" फिर (इस के बा'द) नमाज़ शुरूअ़ फ़रमाते।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب ما یقول اذا اصبح، ص٧٩٥، الحديث:٥٠٨٥)

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त "**मिरआतुल मनाजीह़**" में फ़रमाते हैं : इस सुवाल से सह़ाबए किराम (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) का इश्क़े रसूल ज़ाहिर होता है कि वोह ह़ज़रात आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की सारी अन्दरूनी व बैरूनी ज़िन्दगी मा'लूम कर के उस को नक़्ल करना चाहते थे।

मज़ीद फ़रमाते हैं कि (नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या और क़ियामत की तंगी से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब की है तो) दुन्या की तंगी में यहां की आफ़तें, बीमारी और क़र्ज़ की मुसीबतें वग़ैरा सब दाख़िल हैं और क़ियामत की तंगी में वहां की धूप और गरमी, ह़िसाब में नाकामी वग़ैरा शामिल है, येह कुल **70** कलिमात हुए क़ुरबान जाऊं इस सोने और जागने पर। (مرآة المناجيح، کتاب الصلاة، باب مايقول اذا قام من الليل، ٢/٢٥١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हुज़ूर की रात की नमाज़

हज़रते सय्यिदुना अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا से दरयाफ़्त किया कि सरवरे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रात की नमाज़ कैसी थी ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : सय्यिदुल मुर-सलीन, **रह़मतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात के शुरूअ़ हिस्से में सोते थे और आख़िरी हिस्से में उठ कर नमाज़ पढ़ते फिर अपने बिस्तर की त़रफ़ लौट आते और जब मुअज़्ज़िन अज़ान कहता तो नबिय्ये अकरम, रसूले मुह़्तशम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठ खड़े होते अगर ह़ाजत होती तो गु़स्ल फ़रमाते वरना वुज़ू फ़रमा कर (नमाज़ के लिये) चले जाते । (صحیح البخاری، کتاب التھجد، باب من نام اول اللیل ...الخ، ص۳۳۲، الحدیث:۱۱٤٦)

हुज़ूर रात को किस चीज़ से नमाज़ शुरूअ़ फ़रमाते ?

हज़रते सय्यिदुना अबू स-लमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا से पूछा कि नबिय्ये अकरम, रसूले मुह़्तशम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब रात को उठते तो किस चीज़ से नमाज़ शुरूअ़ फ़रमाते ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : सय्याहे़ अफ़्लाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब रात को उठा करते तो इस त़रह़ नमाज़ शुरूअ़ फ़रमाते : ‘‘اَللّٰھُمَّ رَبَّ جِبْرَائِیْلَ، وَمِیْکَائِیْلَ، وَاِسْرَافِیْلَ، فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ، عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّھَادَۃِ، اَنْتَ تَحْکُمُ بَیْنَ عِبَادِکَ فِیْمَا کَانُوْا فِیْہِ یَخْتَلِفُوْنَ، اِھْدِنِیْ لِمَا اخْتُلِفَ فِیْہِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِکَ، اِنَّکَ تَھْدِیْ مَنْ تَشَاءُ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ या’नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! ऐ जिब्राईल, मीकाईल और इस्राफ़ील (عَلَیْہِمُ السَّلَام) के रब عَزَّ وَجَلَّ ! ऐ आस्मानों और ज़मीन को पैदा करने वाले ! ग़ैब व शहादत को जानने वाले ! तू ही अपने बन्दों में उन उमूर में फ़ैसला फ़रमाता है जिन में वोह इख़्तिलाफ़ करते हैं, ऐसे इख़्तिलाफ़ी उमूर जिन में ह़क़ से इख़्तिलाफ़ किया गया हो तू अपने इज़्न से मुझे हिदायत अ़ता फ़रमाना बेशक तू जिसे चाहता है सिरात़े मुस्तक़ीम की त़रफ़ हिदायत अ़ता फ़रमाता है ।’’

(صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب الدعاء فی صلاۃ اللیل وقیامہ، ص ۲۸۰، الحدیث: ۷۷۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हुज़ूर का म-रज़े वफ़ात शरीफ़

हज़रते सय्यिदुना **उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि मैं ने मह़बूबए मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا से सुवाल किया : ऐ अम्मीजान (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا) ! मुझे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के

www.dawateislami.net

महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मरज़ के बारे में बताइये। उन्हों ने फ़रमाया : सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जब मरज़ शुरूअ़ हुवा तो हम आप के सांस लेने को किशमिश खाने वाले की सांस लेने के मुशाबेह क़रार देने लगे, आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ के पास जाते लेकिन जब मरज़ ज़ियादा हुवा तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे पास रहने की बक़िय्या अज़्वाजे मुतह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ से इजाज़त ले ली। (سنن ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ما جاء في ذكر مرض رسول الله، ص٢٥٩، الحديث:١٦١٨)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर का कफ़ने रसूल के मु-तअ़ल्लिक़ पूछना

हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने (अपनी वफ़ात से चन्द घन्टे पेशतर अपनी साहिब ज़ादी सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से) दरयाफ़्त किया कि तुम लोगों ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कितने कपड़ों में कफ़न दिया ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात शरीफ़ किस दिन हुई ? (صحيح البخاري، كتاب الجنائز، باب موت يوم الاثنين، ص٣٨٧، الحديث:١٣٨٧، ملتقطًا)

इस सुवाल की वज्ह येह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आरज़ू थी कि कफ़न व यौमे वफ़ात में हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुवा-फ़क़त हो। हयात में हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ था ही वोह ममात में भी आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की इत्तिबाअ़ चाहते थे।

अल्लाह अल्लाह येह शौक़े इत्तिबाअ़
क्यूं न हो सिद्दीक़े अक्बर थे

(सहाबए किराम का इश्क़े रसूल, स. 67)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अबू स-लमा का कफ़ने मुस्तफ़ा के मु-तअ़ल्लिक़ पूछना

हज़रते सय्यिदुना अबू स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मुतह्हरा उम्मुल मुअमिनीन, सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़, हज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से पूछा कि सरकारे अक़्दस, शफ़ीए रोज़े महशर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कितने कपड़ों में कफ़न दिया गया ? उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इर्शाद फ़रमाया : तीन

www.dawateislami.net

सहूली[1] कपड़ों में। (صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب فی کفن المیت، ص۳۳۸، الحدیث:۹۴۱)

सय्यि-दतुना आ़इशा हु़ज़ूर को कौन सी ख़ुश्बू लगातीं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से सुवाल किया कि सरकारे मदीना, साहिबे मुअ़त्तरो मुअम्बर पसीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब एह़राम बांधना चाहते तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कौन सी ख़ुश्बू लगाया करती थीं ? उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : सब से उ़म्दा ख़ुश्बू।

(صحیح مسلم، کتاب الحج، باب الطیب للمحرم عند الاحرام، ص۴۳۶، الحدیث:۱۱۸۹)

हु़ज़ूर को ख़ुश्बू मह़बूब थी

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दुन्या की तीन चीजें पसन्द थीं : (1)...... खाना (2)...... औ़रतें (बीवियां) और (3)...... ख़ुश्बू।

(مسند امام احمد، مسند عائشۃ رضی اللہ عنہا، ۱۰/۱۲۱، الحدیث:۲۵۱۷۴، ملتقطًا)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی इस ह़दीस शरीफ़ के तह़त फ़रमाते हैं : इन तीन चीज़ों से मह़ब्बत सुन्नत है अपनी बीवी से मह़ब्बत तक़्वा की अस्ल है जो शख़्स अपनी बीवी से मह़ब्बत नहीं करता वोह बदकार हो जाता है, ख़ुश्बू का तअ़ल्लुक़ रूह़ानिय्यत से है जिस क़दर रूह़ानिय्यत क़वी होगी उसी क़दर ख़ुश्बू भी प्यारी होगी अब भी देखा गया है कि मक़्बूल बन्दों को ख़ुश्बू प्यारी होती है।

(مراۃ المناجیح، کتاب الرقاق، باب فضل الفقراء، ۷/۸۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली बिन सुल्त़ान मुह़म्मद क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی **''मिरक़ातुल मफ़ातीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़''** में इस ह़दीस शरीफ़ की शर्ह़ करते हुए तह़रीर फ़रमाते हैं : मह़बूबे ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को खाने से इस लिये मह़ब्बत थी ताकि इस से बदन की ह़िफ़ाज़त और दीनी मुआ़-मलात के सिल्सिले में क़ुव्वत ह़ासिल हो, बीवियों से इस लिये मह़ब्बत थी ताकि ख़सीस वस्वसों से पाकीज़ा दिल की ह़िफ़ाज़त रहे और दिमाग़ की तक़्वियत के लिये ख़ुश्बू से **मह़ब्बत** थी कि बा'ज़ हु-कमा के नज़्दीक दिमाग़ अ़क़्ल का मक़ाम है। (مرقاۃ المفاتیح، کتاب الرقاق، باب فضل الفقراء ......الخ، ۹/۴۴۷، تحت الحدیث:۵۲۶۰)

(1)...... येह ''सहूल'' की त़रफ़ मन्सूब है और ''सहूल'' यमन के एक गाउं का नाम है। (معجم البلدان، ص۱۸۴)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यिदुल अम्बिया-इ वल मुर-सलीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बे शुमार मो'जिज़ात में से एक मो'जिज़ा येह भी है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे अत़्हर और पसीनए मुबारक से ख़ुश्बू महक्ती रहती थी जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने कोई मुश्क व अ़म्बर ऐसा न सूंघा जो सरकारे मदीना, साहि़बे मुअ़त्त़रो मुअ़म्बर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महक से ज़ियादा ख़ुश्बूदार हो। (صحيح مسلم، كتاب الفضائل، باب طيب رائحة النبی ...الخ، ص ۹۱۲، الحديث: ۲۳۳۰)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त फ़रमाते हैं : येह ख़ुश्बू ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के जिस्मे अत़्हर से हर वक़्त महक्ती थी बहुत तेज़ थी और दूर दूर तक पहुंचती थी ह़त्ता कि गली से गुज़रते तो घरों वाले अन्दरूने ख़ाना मह़सूस कर लेते थे फिर येह ख़ुश्बू बहुत देर तक फैली रहती थी कि जिस गली से गुज़र जाते बा'द में बहुत देर तक वोह गली महकी रहती थी कि बा'द में आने वाले पहचान लेते कि यहां से ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) गुज़र गए हैं,

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत قُدِّسَ سِرُّہٗ फ़रमाते हैं :

भीनी ख़ुश्बू से महक जाती हैं गलियां वल्लाह !
कैसे फूलों में बसाए हैं तुम्हारे गेसू

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 120)

बल्कि अब भी रौज़ए अत़्हर पर ख़ुसूसन मुवा-जहा शरीफ़ जहां खड़े हो कर सलाम पढ़ा जाता है कभी कभी निहायत नफ़ीस ख़ुश्बू मह़सूस होती है बुज़ुर्गाने दीन फ़रमाते हैं कि कभी किसी को अपने घर में ख़ुसूसन तहज्जुद के वक़्त ग़ैबी ख़ुश्बू मह़सूस होती है उस वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये येह ख़याल करे कि यहां से ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुज़रे हैं बा'ज़ लोगों की वफ़ात के वक़्त ऐसी ख़ुश्बू मह़सूस होती है समझो ह़ुज़ूर तशरीफ़ लाए हुए हैं इस मय्यित को लेने आए हैं। (مراٰۃ المناجیح، کتاب الفضائل والشمائل باب اسماء النبی وصفاتہ، ۸/۵۲)

अ़म्बर ज़मीं अ़बीर हवा मुश्के तर ग़ुबार — अदना सी येह शनाख़्त तेरी रह गुज़र की है
गुज़रे जिस राह से वोह सय्यिदे वाला हो कर — रह गई सारी ज़मीं अ़म्बरे सारा हो कर

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 225, 70)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

इस्लामी बहनें कौन सी ख़ुश्बू लगाएं ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़याल रहे कि औ़रतों को ऐसी ख़ुश्बू इस्ति'माल कर के बाहर निकलना मन्अ़ है जिस से महक आती हो, ह़दीस शरीफ़ में नबिय्ये अकरम, रसूले मुह़्तशम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मर्दों की ख़ुश्बू वोह है जिस की महक ज़ाहिर हो रंगत छुपी रहे और औ़रतों की ख़ुश्बू वोह है जिस का रंग ज़ाहिर हो महक छुपी हुई हो । (سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء فی الطیب الرجال والنساء، ص٦٥٢، الحدیث:٢٧٨٧)

इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त **"मिरक़ातुल मफ़ातीह़"** में है : (इस ह़दीस शरीफ़ का मत़लब येह है कि) जब औ़रत बाहर निकलने का इरादा करे तो उस वक़्त उस की ख़ुश्बू ऐसी ही होनी चाहिये जब वोह अपने शोहर के पास हो तो जो ख़ुश्बू चाहे लगा ले । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : हर आंख ज़ानिया है, जब कोई औ़रत ख़ुश्बू लगा कर किसी मजलिस के पास से गुज़रे तो वोह ऐसी ऐसी है या'नी ज़ानिया है ।

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب اللباس، باب الترجل، ٢٨٧/٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُالله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या हुज़ूर को बुढ़ापा आया ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से पूछा कि क्या सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुढ़ापा आया था ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सफ़ेदी के साथ ऐ़ब ज़दा नहीं किया ।

(المستدرک علی الصحیحین للحاکم، کتاب تواریخ المتقدمین من الانبیاء والمرسلین، ذکر خضاب رسول الله بالحناء، ٥٠٧/٣، الحدیث:٤٢٦٠)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से अ़र्ज़ की गई कि शाहे आदम व बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बुढ़ापे का क्या ह़ाल था ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को

www.dawateislami.net

सफ़ेदी के साथ ऐब नहीं लगाया हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे अक़्दस में सिर्फ़ **17** या **18** (बाल सफ़ेद) थे। (المرجع السابق، الحدیث:٤٢٦١)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हुज़ूर के कितने बाल मुबारक सफ़ेद थे ?

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सफ़ेद बालों के मु-तअ़ल्लिक़ तीन रिवायात हैं : (1)...... **14** बाल शरीफ़ सफ़ेद थे। (2)...... **17** थे। (3)...... **20** थे। हो सकता है कि अव्वलन **14** बाल शरीफ़ सफ़ेद हुए हों फिर आख़िर में **17** सर मुबारक में और **3** दाढ़ी शरीफ़ में, कुल **20**। लिहाज़ा तीनों रिवायात दुरुस्त हैं। (مراٰۃ المناجیح،کتاب اللباس،٦/١١٥)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़िल्में डिरामे देखने से तौबा कर ली

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल की ब-र-कतों से लाखों लाख इस्लामी बहनें सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न हैं, इस महके महके म-दनी माहोल की ब-र-कत से कसीर इस्लामी बहनों को गुनाहों से सच्ची तौबा कर के अपनी ज़िन्दगी को **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के अहकामात के मुताबिक़ गुज़ारने की तौफ़ीक़ मिली, चुनान्चे दीगर इस्लामी बहनों की तरग़ीब व तहरीस के लिये एक ऐसी इस्लामी बहन का वाक़िआ पेश किया जाता है जिन्हों ने **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की और उस सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से अपने गुनाहों से तौबा कर के अपनी ज़िन्दगी शफ़ीउ़ल मुज्निबीन, **रहमतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुताबिक़ गुज़ारनी शुरूअ़ कर दी, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ **32** सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाले **"मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ?"** सफ़्हा **7** पर है : बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि चन्द बरस पहले तक मैं बे पर्दगी, फ़ेशन परस्ती, बाल कटवाने और फ़ोटो बनवाने जैसी बुराइयों की दलदल में फंसी हुई थी। गाने सुनने और फ़िल्में देखने की तो इस क़दर रसिया थी कि जब तक **2** फ़िल्में न देख लेती

www.dawateislami.net

सोती नहीं थी। मेरे चचाजान जो **दा'वते इस्लामी** के मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्ता हैं, मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश करते और इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक होने की तरग़ीब दिया करते। बिल आख़िर उन की इन्फ़िरादी कोशिश रंग लाई और मैं **1998** सि.ई. में **दा'वते इस्लामी** के सालाना बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ के मौक़अ़ पर आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में इस्लामी बहनों की निशस्त में शरीक हुई। उस इज्तिमाअ़ का रूह़ परवर मन्ज़र आज भी मुझे याद है। पुरसोज़ बयान, **ज़िक्रुल्लाह** की सदाओं और भीगी आंखों से की जाने वाली इज्तिमाई दुआ़ ने मुझ पर रिक़्क़त त़ारी कर दी, मेरे बदन का रुवां रुवां ख़ौफ़े ख़ुदा से कांप उठा, मैं ने अपने गुनाहों से तौबा की और आयिन्दा फ़िल्में डिरामे न देखने का पुख़्ता इरादा कर लिया। इज्तिमाअ़ से वापसी पर जब मैं ने अपने अ़ज़्म का इज़्हार घर वालों पर किया तो उन्हें मेरी बात पर यक़ीन नहीं आ रहा था कि रोज़ाना **2** फ़िल्में देखने वाली लड़की टीवी से क्यूंकर दूर रह सकेगी, मगर मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा था। इत्तिफ़ाक़ देखिये कि उसी दिन किसी ने टीवी ऑन किया तो उस की पिक्चर ट्यूब भक से उड़ गई और **T.V** ख़राब हो गया। इस से मेरे इरादे को मज़ीद तक़्वियत (या'नी मज़्बूती) मिली और मुझे फ़िल्में डिरामे देखने से बचने पर इस्तिक़ामत नसीब हो गई। ता दमे तह़रीर तक़रीबन **8** साल हो चुके हैं, मैं ने कभी भूल कर भी टीवी की त़रफ़ नज़र नहीं की और न ही येह टीवी दोबारा हमारे घर में डेरा जमा सका है। ता दमे तह़रीर मुझे **"ह़ल्क़ा मुशा-वरत"** और इस्लामी बहनों की **"मजलिसे राबित़ा"** की ख़ादिमा (या'नी निगरान) की ह़ैसिय्यत से **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम करने की सआ़दत ह़ासिल है।

ऐ बीमारे इस्यां तू आ जा यहां पर   गुनाहों की देगा दवा म-दनी माह़ोल
अ़ताए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ोल   है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा म-दनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 603, 604)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ैज़ के दर्द का इलाज

25 ग्राम गुड़ और गाजर के बीज **15** ग्राम दो गिलास पानी में उबालिये जब आधा गिलास रह जाए तो छान कर पी लीजिये। अगर ह़ैज़ दर्द से आता हो तो उस के अय्याम में बिग़ैर दर्द के आने लगेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (घरेलू इलाज, स. 102)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

बयान ﴾15﴿...... सय्यि-दतुना आइशा ब हैसिय्यते मुफ़स्सिरा

दुरूदे पाक बाइसे नजात

‘‘**सआ-दतुद्दारैन**’’ में है : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्दुल ह़िकम عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَافِی को देख कर पूछा : ‘‘مَافَعَلَ اللّٰہُ بِکَ’’ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ?’’ फ़रमाया : मुझ पर रह़्म फ़रमाया और बख़्श दिया मुझे जन्नत की त़रफ़ रुख़्सत किया गया जैसे दुल्हन को रुख़्सत किया जाता है और मुझ पर ने'मतें यूं निछावर की गईं जैसे दूल्हा पर निछावर करते हैं। मैं ने पूछा : आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह मक़ाम किस सबब से पाया ? फ़रमाया : मेरी किताब ‘‘**अर्रिसालह**’’ में जो दुरूदे पाक लिखा है उस के सबब से। मैं ने पूछा : वोह किस त़रह़ है ? फ़रमाया : वोह यूं है : ‘‘صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَعَدَدَ مَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ’’ **तरजमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर आप का ज़िक्र करने वालों और आप के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहने वालों की ता'दाद के बराबर दुरूद नाज़िल फ़रमाए।’’ सुब्ह़ मैं ने किताब ‘‘**अर्रिसालह**’’ को देखा तो वोही दुरूदे पाक लिखा हुवा था जैसे मैं ने ख़्वाब में मुला-ह़ज़ा किया था।

(سَعَادَةُ الدَّارَيْن، الباب الرابع فیما ورد من لطائف المرائی والحکایات...الخ، ص١٣٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तफ़्सीर की ता'रीफ़

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْحَنَّان तफ़्सीर की ता'रीफ़ यूं बयान फ़रमाते हैं : तफ़्सीर के **लफ़्ज़ी मा'ना** ‘‘खोलना’’ हैं। **मुह़ा-वरा** में तफ़्सीर येह है कि कलाम करने वाले का मक़्सद इस त़रह़ बयान करना जिस में कोई शक व शुबा बाक़ी न रहे और **मुफ़स्सिरीन की इस्तिलाह़** में तफ़्सीर येह है कि कुरआने पाक के

www.dawateislami.net

वोह अह़्वाल बयान करना जिन में अ़क़्ल को दख़्ल नहीं बल्कि नक़्ल की ज़रूरत हो जैसे आयात का शाने नुज़ूल या उन का नासिख़ और मन्सूख़ होना वग़ैरा । (लिहाज़ा अगर कोई शख़्स बिग़ैर ह़वालए नक़्ल अपनी राय से कह दे कि फ़ुलां आयत मन्सूख़ है या फ़ुलां आयत का येह शाने नुज़ूल है तो मो'तबर नहीं) (माख़ूज़ अज़ तफ़्सीरे नईमी, जि. 1, स. 38)

तफ़्सीर बिर्राय का हुक्म

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़ुरआने मुक़द्दस की तफ़्सीर बिर्राय (या'नी बिग़ैर नक़्ल के अपनी राय से तफ़्सीर) करना ह़राम, ह़राम, अशद ह़राम है, चुनान्चे मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़िब्रुल उम्मह ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا बयान फ़रमाते हैं कि सुल्त़ाने बह़रो बर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "مَنۡ قَالَ فِی الۡقُرۡاٰنِ بِرَاۡیِہٖ فَلۡیَتَبَوَّاۡ مَقۡعَدَہٗ مِنَ النَّار या'नी जिस ने क़ुरआने पाक में अपनी राय से कुछ कहा उस को चाहिये कि अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले ।"

(جَامِعُ التِّرۡمِذِی، کتاب تفسیر القران، باب ما جاء فی الذی یفسر القرآن برأیه، ص٦٨٥، الحدیث:٢٩٥١)

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "مَنۡ قَالَ فِی الۡقُرۡاٰنِ بِرَاۡیِہٖ فَاَصَابَ فَقَدۡ اَخۡطَاَ या'नी जो क़ुरआने पाक में अपनी राय से कुछ कहे फिर ठीक भी कह दे तब भी ख़त़ा कर गया ।" (المرجع السّابق، الحدیث:٢٩٥٢)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इन अह़ादीस के तह़्त फ़रमाते हैं : (पहली ह़दीस शरीफ़ से येह पता चला कि) क़ुरआने पाक की तफ़्सीर बिर्राय करने वाला जहन्नमी है, ख़याल रहे कि क़ुरआन की बा'ज़ चीज़ें नक़्ल पर मौक़ूफ़ हैं जैसे शाने नुज़ूल, नासिख़ मन्सूख़, तज्वीद के क़वाइद । इन्हें राय से बयान करना ह़राम है, वोही यहां मुराद है और बा'ज़ चीज़ें शर-ई अ़क़्ल से भी मा'लूम हो सकती हैं जैसे आयात के इल्मी निकात अच्छी और सह़ीह़ तावीलें, पैदा होने वाले ए'तिराज़ात के जवाबात वग़ैरा इन में नक़्ल लाज़िम नहीं ग़-रज़े कि क़ुरआन की तफ़्सीर बिर्राय ह़राम है और तावील बिर्राय उ़-लमाए दीन के लिये बाइसे सवाब ।

(नीज़ दूसरी ह़दीस शरीफ़ के तह़्त फ़रमाया :) या'नी अगर आ़लिम क़ुरआन की, राय से तफ़्सीर करे या जाहिल राय से तावील करे और इत्तिफ़ाक़न वोह तफ़्सीर व तावील दुरुस्त हो तब भी वोह दोनों गुनहगार होंगे क्यूं कि इन्हों ने ना जाइज़ काम किया और मुम्किन है कि आयिन्दा इस पर दिलेर हो कर ग़-लत़ी भी कर जाएं, उ़-लमा फ़रमाते हैं कि तफ़्सीरे क़ुरआन के लिये आ़लिम

www.dawateislami.net

को **पन्दरह** इल्मों में पूरी महारत चाहिये तब वोह कुरआन को हाथ लगाए ऐसा आ़लिम अगर तावीले कुरआन में ग़-लती भी करे तब भी सवाब पाएगा, मुज्तहिद की ख़त़ा पर एक सवाब है और सिह़्ह़त पर दो। (مراٰۃ المناجیح، کتاب العلم، ۱/۲۰۸)

तफ़्सीरे कुरआन के मुआ़-मले में सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर का ख़ौफ़े ख़ुदा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सह़ाबए किराम व सह़ाबिय्यात رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर हर अदा को ह़िर्ज़े जां बनाते थे, इन्हें सुन्नत से ज़रा भी इन्ह़िराफ़ गवारा न था ऐसा कब हो सकता था कि वोह कुरआने पाक की तफ़्सीर के मुआ़-मले में इन इब्रत आमोज़ फ़रामीन को पसे पुश्त डाल देते बल्कि इन नुफ़ूसे कुदसिय्या पर ख़ौफ़े ख़ुदा का ऐसा ग़-लबा था कि किसी भी आयत का मा'ना बयान करने से सख़्त घबराते थे ह़ालां कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शबो रोज़ इन ह़ज़रात के सामने थे, इन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुरआने पाक नाज़िल होते मुला-ह़ज़ा किया था, फिर भी ख़ौफ़े ख़ुदा का किस क़दर ग़-लबा था ? चुनान्चे

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **719** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर**" सफ़ह़ा **479** पर "**तारीख़ुल ख़ु-लफ़ा**" के ह़वाले से मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अबू क़ासिम बग़वी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत किया है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से किसी आयत के बारे में पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "कौन सी ज़मीन मुझे जगह देगी या कौन सा आस्मान मुझे साया देगा जब मैं **किताबुल्लाह** की तफ़्सीर में वोह कहूं जो **अल्लाह तआ़ला** की मन्शा के ख़िलाफ़ हो।" (تَارِیخُ الْخُلَفَاء، ابوبکر الصدیق، فصل فیما ورد عن الصدیق من تفسیر القراٰن، ص۶۰)

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस फ़रमान से आज कल के उन जाहिल अ़-रबी दानों को सबक़ लेना चाहिये जो कुरआने पाक की तफ़्सीर बिर्राय कर के लोगों को गुमराह करते और नारे जहन्नम के ह़क़दार बनते और बनाते हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सय्यि-दतुना आइशा के बा'ज़ फ़ज़ाइल

बहर हाल महबूबए महबूबे रब्बुल आ-लमीन, सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़, उम्मुल मुअमिनीन, अफ़्क़हु निसाइल उम्मह हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वोह महबूब ज़ौजए मुतहहरा हैं कि तमाम अज़्वाजे मुतहहरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ में सिर्फ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के बिस्तर में सरकारे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह्य नाज़िल होती थी।

(صَحِیۡحُ الۡبُخَارِی، کتاب الھبة وفضلھا ......الخ، باب من اھدی الی صاحبه ...الخ، ص٦٦٤، الحدیث:٢٥٨١)

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के गले और सीने के दरमियान विसाल फ़रमाया।

(صَحِیۡحُ الۡبُخَارِی، کتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاته، ص١١٠٣، الحدیث:٤٤٤٩)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا अकाबिरीन फ़ु-क़हा सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان में से थीं।

(عُمۡدَةُ الۡقَارِی، کتاب بدءُ الوحی، بیان کیف کان بدء الوحی، ١/٣٨)

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : हम अस्हाबे रसूल पर जब कोई बात पेचीदा हो जाती तो हम हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से सुवाल करते तो आप के पास उस का इल्म पा लेते।

(جَامِعُ التِّرۡمِذِی، ابواب المناقب عن رسول اللّٰه صلی اللّٰہ علیہ وسلم، باب فضل عائشة رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا، ص٨٧٣، الحدیث:٣٨٨٢)

ऐसा क्यूं न होता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के बारे में खुद नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को इर्शाद फ़रमाया : "तुम अपना दो तिहाई दीन इस हुमैरा (या'नी सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) से हासिल करो।"

(التَّفۡسِیۡر الکَبِیۡر، الجزءُ الثانی والثلاثون، سورة القدر، تحت الآیة:٣، ١١/٢٣٢)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के बे शुमार फ़ज़ाइल में से एक फ़ज़ीलत येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا आयाते कुरआनिया के मआनी व मफ़ाहीम को खूब अच्छी तरह समझती थीं अगर किसी आयत का मा'ना समझ में न आता तो इस सिल्सिले में बार बार नबिय्ये अकरम, शफ़ीए मुअज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त कर के समझ लेतीं, चुनान्चे

बार बार पूछ कर बात समझ लेतीं

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मेरे सरताज, साहिबे मे'राज, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस

www.dawateislami.net

किसी से भी हिसाब लिया जाएगा वोह हलाक हो जाएगा। मैं ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे आप पर फ़िदा करे, क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह नहीं फ़रमाता :

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِیَمِیْنِهٖۙ(۷) فَسَوْفَ یُحَاسَبُ حِسَابًا یَّسِیْرًاۙ(۸) (پ ۳۰، الانشقاق:۷،۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जो अपना नामए आ'माल दहने हाथ में दिया जाए उस से अ़न्क़रीब सहल हिसाब लिया जाएगा।

इर्शाद फ़रमाया : येह पेश करना है, उन के आ'माल उन पर पेश किये जाएंगे मगर जिस से जांच कर (रत्ती रत्ती का) हिसाब लिया जाएगा वोह हलाक हो जाएगा।

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب التفسیر، باب: فَسَوْفَ یُحَاسَبُ حِسَابًا یَّسِیْرًا ، ص۱۲۷٤، الحدیث:٤۹۳۹)

फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द, शारेहे बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा **मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **"नुज़्हतुल क़ारी शर्हे़ सही़हुल बुख़ारी"** में इस ह़दीस शरीफ़ की शर्ह़ करते हुए तह़रीर फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इर्शाद का मत़लब येह है कि **حِسَابِ یَسِیْر** से मुराद येह है कि उस के आ'माल उस के सामने पेश कर दिये जाएंगे और उस से कुछ पूछगछ न होगी कि तूने येह क्यूं किया और तूने येह क्यूं नहीं किया ? ऐसे शख़्स को बख़्श दिया जाएगा। लेकिन हिसाब के वक़्त जिस से पूछगछ होगी येह तूने क्यूं नहीं किया और येह क्यूं किया ? (वोह हलाक हो जाएगा।) (نزہۃ القاری، کتاب التفسیر، ۵/۲۴۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़दीस शरीफ़ से उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہَا की फ़ज़ीलत का भी पता चलता है कि आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہَا को कुरआने पाक की आयात के मत़ालिब व मसाइल समझने और तह़क़ीक़ करने का किस क़दर जज़्बा था कि इस सिल्सिले में बार बार सरकारे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त करतीं फिर अगर आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान ब ज़ाहिर किसी आयत के ख़िलाफ़ मा'लूम होता तो उसे बारगाहे रिसालत में बयान करतीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **सय्यि-दतुना** आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہَا को उन के तसल्ली बख़्श जवाबात इर्शाद फ़रमाते।

मज़्कूरा आयात की दूसरी तफ़्सीर

ऊपर ज़िक्र की गई आयाते कुरआनिया की तफ़्सीर में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना

www.dawateislami.net

आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का एक फ़रमान येह भी है कि "वोह शख़्स (जिस के आ'माल उस के सामने पेश किये जाएंगे और उस से उन के बारे में पूछगछ न होगी वोह) अपने गुनाहों को पहचानेगा फिर उस के गुनाहों को मुआफ़ कर दिया जाएगा।" (تَفسِیر دُرِّ مَنثُور، سورۃ الانشقاق، تحت الآیۃ:۸، ۱۵/۳۱۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

यतीम के माल से खाना

क़ुरआने मुक़द्दस की तफ़्सीर के सिल्सिले में भी उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से कई एक रिवायात आई हैं जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमान :

وَمَنۡ کَانَ غَنِیًّا فَلۡیَسۡتَعۡفِفۡ ۚ وَمَنۡ کَانَ فَقِیۡرًا فَلۡیَاۡکُلۡ بِالۡمَعۡرُوۡفِ ؕ (پ۴، النساء:۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जिसे ह़ाजत न हो वोह बचता रहे और जो ह़ाजत मन्द हो वोह ब क़दरे मुनासिब खाए।

की तफ़्सीर में उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का फ़रमान है कि येह आयत यतीम के सर परस्त के बारे में नाज़िल हुई है कि "जब वोह मोह़ताज हो तो उस के माल से ब क़दरे मुनासिब ले।" (صَحِیح مُسلِم، کتاب التفسیر، ص۱۱۵۳، الحدیث:۳۰۱۹)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा आयते मुबा-रका में अमीर वली को यतीम के माल से बचने का हुक्म दिया गया है जब कि फ़क़ीर वली को यतीम के माल से ब क़दरे ज़रूरत लेने की इजाज़त दी गई है। येह तो ह़क़ के तौर पर माले यतीम में से लेने का बयान हुवा मगर माले यतीम नाह़क़ खाना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। क़ुरआन व ह़दीस में सरा-ह़तन यतीमों का माल नाह़क़ खाने वालों को अ़ज़ाबे इलाही से डराया गया है, चुनान्चे

"यतीम" के चार हुरूफ़ की निस्बत से माले यतीम नाह़क़ खाने की वईदात पर मुश्तमिल 4 रिवायात

﴾1﴿.... **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो ख़त़ हज़रते **सय्यिदुना अ़म्र बिन ह़ज़्म** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को दे कर अहले यमन की त़रफ़ भेजा उस में लिखा था : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक क़ियामत के दिन सब से बड़े गुनाह येह हैं : (1).... शिर्क करना। (2).... मोमिन को नाह़क़ क़त्ल करना। (3).... जंग के दिन मैदाने जिहाद से भागना। (4).... वालिदैन की ना फ़रमानी करना। (5).... पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना।

www.dawateislami.net

(6).... जादू सीखना। (7).... सूद खाना और (8).... यतीम का माल खाना।

(اَلْاِحْسَـــان فِـی تَقْرِیْبِ صَحِیْح اِبْنِ حَبَّان، کتاب التاریخ، باب کتب النبی، ذکر کتبة المصطفٰی کتابه الی اهل الیمن، ص۱۷۴۴، الحدیث:۶۵۵۹)

﴾2﴿...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ बरोज़े क़ियामत कुछ लोगों को उन की क़ब्रों से उठाएगा जिन के मूंहों से आग भड़क रही होगी। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने नहीं देखा कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْیَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا یَاْكُلُوْنَ فِیْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَ سَیَصْلَوْنَ سَعِیْرًا ﴿۱۰﴾

(پ۴، النساء:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं और कोई दम जाता है कि भड़क्ते धड़े (भड़क्ती आग) में जाएंगे।

(مُسْنَدِ اَبِیْ یَعْلَی الْمُوْصِلی، حدیث ابی برزه اسلمی عن النبی، ۵/۴۰۵، الحدیث:۷۴۳۷)

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : मैं ने मे'राज की रात ऐसी क़ौम देखी जिन के होंट ऊंटों के होंटों की त़रह़ थे और उन पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर था जो उन के होंटों को पकड़ता फिर उन के मूंहों में आग के पथ्थर डालता जो उन के नीचे से निकल जाते। मैं ने पूछा : ऐ जिब्रईल (عَلَیْهِ السَّلَام) ! येह कौन लोग हैं ? तो उन्हों ने बताया : येह वोह लोग हैं जो यतीमों का माल ज़ुल्म से खाते थे। (تَفْسِیْرِ قُرْطبی، سورة النساء، تحت الآیة:۱۰، ۳/۳۴)

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सदी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه से मन्क़ूल है : जब कोई आदमी यतीम का माल ज़ुल्म करते हुए खाएगा उसे क़ियामत के रोज़ यूं उठाया जाएगा कि आग का शो'ला उस के मुंह, उस के कानों, उस की नाक और उस की आंखों से निकल रहा होगा जो भी उसे देखेगा वोह पहचान लेगा कि येह यतीम का माल खाने वाला है। (تفسیرِ درِّ منثور، سورة النساء، تحت الآیة:۱۰، ۲/۴۵۱)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **853** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" जिल्द **1** सफ़हा **795** पर शैखुल इस्लाम, शहाबुद्दीन **इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की** शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَافِی यतीम का माल नाहक़ खाने के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : येह भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام के कलाम का ज़ाहिर इस बात पर दलालत करता है कि कम या ज़ियादा माल खाने में कोई फ़र्क़ नहीं अगर्चे एक दाना ही हो।

www.dawateislami.net

अगर यतीम का कम माल खाने को कबीरा न क़रार दिया जाए तो येह ज़ियादा खाने की त़रफ़ ले जाता है क्यूं कि उसे मन्अ़ करने वाला कोई नहीं क्यूं कि वोह यतीम के तमाम माल का वाली है, लिहाज़ा कम लेने पर भी कबीरा गुनाह होने का हुक्म मु-तअ़य्यन होगा।
(اَلزَّوَاجِر عَنِ اقْتِرَافِ الْکَبَائِر، باب الحجر، الکبیرۃ الثامنۃ بعد المائتین اکل مال الیتیم، ۱/۴۸۵، ملتقطًا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

किन के दिल डर रहे हैं ?

महबूबए महबूबे ख़ुदा, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस आयए मुबा-रका के बारे में पूछा :

وَالَّذِیْنَ یُؤْتُوْنَ مَاۤ اٰتَوْا وَّ قُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ
(پ۱۸، المؤمنون:۶۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो देते हैं जो कुछ दें और उन के दिल डर रहे हैं।

सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने (बारगाहे रिसालत में) अ़र्ज़ की : क्या येह वोह लोग हैं जो शराब पीते हैं और चोरी करते हैं ? शाहे आदम व बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ बिन्ते सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! नहीं, बल्कि येह वोह लोग हैं जो रोज़ा रखते, नमाज़ पढ़ते और स-दक़ा करते हैं और उन्हें अपने इन नेक आ'माल के क़बूल न किये जाने का डर है, येह लोग भलाई में जल्दी करते हैं और येही सब से पहले उसे पहुंचें।
(جَامِعُ التِّرْمِذِی، کتاب تفسیر القراٰن، باب ومن سورۃ المؤمنین، ص۷۳۳، الحدیث:۳۱۷۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

एक आयत की तफ़्सीर

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ मेरे भान्जे ! मेरे सरताज, साहि़बे मे'राज, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बारी में हमारे पास क़ियाम फ़रमा होने के ए'तिबार से हम में से बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत न देते थे और बहुत कम ही कोई दिन होता था मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम तमाम के पास तशरीफ़ लाते और मस किये बिग़ैर हर ज़ौजा के क़रीब जाते यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस ज़ौजा के पास पहुंच जाते जिस का दिन होता और उस के पास रात गुज़ारते।

www.dawateislami.net

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना सौदा बिन्ते ज़मआ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا जब उ़म्र रसीदा हो गईं और ख़ौफ़ खाने लगीं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन्हें जुदा कर देंगे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** मेरा दिन आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) के लिये है। तो नबिय्ये अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे क़बूल फ़रमा लिया।

सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि हम कहा करते हैं कि इसी बारे में या इस (मस्अले) के मुशाबेह जिस को ख़याल किया जाता था उस के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई है **:**

وَ اِنِ امۡرَاَۃٌ خَافَتۡ مِنۡۢ بَعۡلِہَا نُشُوۡزًا اَوۡ اِعۡرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَیۡہِمَاۤ اَنۡ یُّصۡلِحَا بَیۡنَہُمَا صُلۡحًا ؕ وَ الصُّلۡحُ خَیۡرٌ ؕ وَ اُحۡضِرَتِ الۡاَنۡفُسُ الشُّحَّ ؕ وَ اِنۡ تُحۡسِنُوۡا وَ تَتَّقُوۡا فَاِنَّ اللّٰہَ کَانَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِیۡرًا ﴿۱۲۸﴾ (پ۵، النساء:۱۲۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर कोई औ़रत अपने शोहर की ज़ियादती या बे रग़बती का अन्देशा करे तो उन पर गुनाह नहीं कि आपस में सुल्ह़ कर लें और सुल्ह़ ख़ूब है और दिल लालच के फन्दे में हैं और अगर तुम नेकी और परहेज़ गारी करो तो **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

(سُنَن اَبی دَاوٗد، کتاب النکاح، باب فی القسم بین النساء، ص ۳۴۰، الحدیث:۲۱۳۵)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ऊपर ज़िक्र की गई आयते मुबा-रका के बारे में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا एक और मक़ाम पर फ़रमाती हैं **:** येह आयत उस औ़रत के मु-तअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई थी जो किसी मर्द के निकाह़ में एक लम्बे अ़र्से तक रही हो फिर वोह उस को त़लाक़ देने का इरादा करे और वोह औ़रत कहे मुझे त़लाक़ मत दो, मुझे अपने पास रखो और मेरी त़रफ़ से तुम को दूसरे निकाह़ की इजाज़त है, पस येह आयत नाज़िल हुई। (صَحِیۡح مُسۡلِم، کتاب التفسیر، ص۱۱۵۳، الحدیث:۳۰۲۱)

आयते त़लाक़ का शाने नुज़ूल

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बयान फ़रमाती हैं **:** (पहले ऐसा होता था कि) आदमी अपनी बीवी को जितनी चाहता था त़लाक़ दे देता था वोह औ़रत फिर भी उस की बीवी रहती थी वोह जब चाहता था उस की इ़द्दत के दौरान उस से रुजूअ़ कर लिया करता अगर्चे उस ने उसे **100** मर्तबा या इस से भी ज़ियादा त़लाक़ दी हो यहां तक कि

www.dawateislami.net

एक शख़्स ने अपनी बीवी से कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! न तो मैं तुम्हें त़लाक़ दूंगा कि तुम मुझ से अलग हो जाओ और न ही मैं तुम्हें अपने साथ रखूंगा। वोह ख़ातून बोली : वोह कैसे ? उस आदमी ने कहा : मैं तुम्हें त़लाक़ दूंगा, जब तुम्हारी इद्दत ख़त्म होने वाली होगी तो तुम से रुजूअ़ कर लिया करूंगा वोह औ़रत गई और सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई, और येह बात बताई आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ख़ामोश रहीं जब रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो उन को (इस बारे में) बताया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी ख़ामोश रहे, यहां तक कि कु़रआने मुक़द्दस (का येह हुक्म) नाज़िल हुवा :

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ۪ فَاِمۡسَاكٌۢ بِمَعۡرُوۡفٍ اَوۡ تَسۡرِيۡحٌۢ بِاِحۡسَانٍ ؕ (پ۲، البقرۃ:۲۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह त़लाक़ दो बार तक है फिर भलाई के साथ रोक लेना है या निकूई (अच्छे सुलूक) से साथ छोड़ देना है।

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا बयान फ़रमाती हैं : इस के बा'द लोगों में से जिस ने त़लाक़ देना होती या न देना होती उस ने नए त़रीक़े से त़लाक़ देना इख़्तियार किया। (جَامِعُ التِّرۡمِذِی، کتاب الطلاق واللعان، باب ما جاء فی طلاق المعتوہ، ص۳۱۱، الحدیث:۱۱۹۲)

मुसीबत का सवाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सह़ाबए किराम व सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से दीगर इ़ल्मी सुवालात के इ़लावा कु़रआने पाक की तफ़्सीर के बारे में भी पूछा करते थे, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **743** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़ह़ा **615** पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **श-रफ़ुद्दीन अ़ब्दुल मुअमिन** बिन ख़लफ़ दिम्याती़ عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यि-दतुना उमैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाती हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से इन आयात के बारे में पूछा :

وَاِنۡ تُبۡدُوۡا مَا فِیۡۤ اَنۡفُسِكُمۡ اَوۡ تُخۡفُوۡهُ يُحَاسِبۡكُمۡ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغۡفِرُ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝ (پ۳، البقرۃ:۲۸۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम ज़ाहिर करो जो कुछ तुम्हारे जी में है या छुपाओ **अल्लाह** तुम से उस का ह़िसाब लेगा तो जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है।

और......

www.dawateislami.net

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَبِهٖ ۙ (پ٥، النساء:١٢٣) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा।

तो उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "जब से मैं ने नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह सुवाल किया है मुझ से किसी ने इस के बारे में नहीं पूछा, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (मेरे सुवाल के जवाब में) फ़रमाया था : "ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दे से मुबा-यआ़ (या'नी मुआ़-हदा) है, इसे जो बुख़ार हो, मुसीबत पहुंचे या कांटा चुभे यहां तक कि वोह जो पोंची अपनी पोटली में रखे और उसे न पाए तो उस के लिये बेचैन हो जाए फिर उसे अपने पहलू में पा ले, यहां तक कि मोमिन अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे सुर्ख़ सोना भट्टी से निकलता है।"

(اَلتَّرْغِیْب وَالتَّرْھِیْب، کتاب الجنائز الترغیب فی الصبر سیما لمن۔۔۔الخ، ص ١٠٧٠، الحدیث:٦٢)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सफ़ा व मर्वह की सअ़्य का हुक्म

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अ़र्ज़ की : मेरा ख़याल है कि अगर कोई शख़्स सफ़ा व मर्वह के फेरे न करे तो उस पर कुछ गुनाह नहीं, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्यूं ? मैं ने अ़र्ज़ की : क्यूं कि **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** ने इर्शाद फ़रमाया है :

اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآىٕرِ اللّٰهِۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَیْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِ اَنْ یَّطَّوَّفَ بِهِمَاؕ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَیْرًاۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِیْمٌ ۝١٥٨ (پ٢، البقرة:١٥٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सफ़ा और मर्वह **अल्लाह** के निशानों से हैं तो जो इस घर का ह़ज या उ़म्रह करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे और जो कोई भली बात अपनी त़रफ़ से करे तो **अल्लाह** नेकी का सिला देने वाला ख़बरदार है।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स का ह़ज व उ़म्रह मुकम्मल नहीं फ़रमाता जिस ने सफ़ा व मर्वह के फेरे नहीं किये और अगर ऐसे होता जैसे तुम कहते हो (या'नी येह सअ़्य वाजिब न होती) तो यूं इर्शाद होता : "**فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِ اَنْ لَّا یَطَّوَّفَ بِهِمَا** या'नी इस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे न करे।"

क्या तुम जानते हो कि येह आयत किन के बारे में है ? ज़मानए जाहिलिय्यत में अन्सार समुन्दर के कनारे पर वाक़ेअ़ दो बुतों के लिये एह़राम बांधा करते थे जिन को **(1)**...... असाफ़ और

www.dawateislami.net

(2)...... नाएला कहा जाता था, इस के बा'द आ कर सफ़ा व मर्वह के दरमियान सअ्य करते इस के बा'द हल्क़ करते फिर जब इस्लाम आया तो ज़मानए जाहिलिय्यत के इस काम की वज्ह से उन्हों ने सफ़ा व मर्वह के दरमियान सअ्य करने को ना पसन्द किया।

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि फिर **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई तो उन्हों ने सफ़ा व मर्वह की सअ्य की। (صَحِیْح مُسْلِم، کتاب الحج، باب بیان ان السعی بین الصفا والمروۃ...الخ، ص۴۷۵، الحدیث:۱۲۷۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उसूले फ़िक़्ह के एक दक़ीक़ मस्अले का हल

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत **हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان "**मिरआतुल मनाजीह**" में इर्शाद फ़रमाते हैं : देखो ! इस एक जवाब में उसूले फ़िक़्ह का कितना दक़ीक़ (पेचीदा) मस्अला हल फ़रमा दिया कि वाजिब की पहचान येह है कि इस के करने में सवाब (और) न करने में गुनाह (हो), जाइज़ की पहचान येह है कि इस के न करने में गुनाह न हो। यहां आयत में पहली बात फ़रमाई गई है। (مراٰۃ المناجیح، کتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبی، ۸/۵۰۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किस क़सम पर पकड़ नहीं फ़रमाता

हज़रते सय्यिदुना अता رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना **उ़बैद बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास हाज़िर हुवा तो हज़रते सय्यिदुना **उ़बैद बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अ़र्ज़ की : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

لَا یُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِیْۤ اَیْمَانِكُمْ (پ۲، البقرۃ:۲۲۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता उन क़समों में जो बे इरादा ज़बान से निकल जाए।

(इस से मुराद कौन सी क़समें हैं ?) उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : इन से मुराद येह क़समें हैं (जैसे तुम में से कोई शख़्स कहता है) **لَا وَاللّٰہ : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! नहीं। "**بَلٰی وَاللّٰہِ**" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! क्यूं नहीं। (वग़ैरा) येह उन क़समों में से नहीं जिन को तुम पुख़्ता करते हो। (تَفْسِیْرِ طَبَرِی، سورۃ البقرۃ، تحت الآیۃ:۲۲۵، ۲/۴۱۷، الحدیث:۴۳۸۲)

www.dawateislami.net

क़सम की अक़्साम

मुफ़स्सिरे शहीर, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा **सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی ऊपर बयान की गई आयते मुक़द्दसा के तह़्त क़सम की अक़्साम बयान करते हुए फ़रमाते हैं : क़सम तीन त़रह़ की होती है :

﴾1﴿...... लग़्व ﴾2﴿...... ग़मूस ﴾3﴿...... मुन्अ़क़िदा

(1)...... लग़्व येह है कि गुज़रे हुए अम्र पर अपने ख़्याल में सह़ीह़ जान कर क़सम खाए और दर ह़क़ीक़त वोह उस के ख़िलाफ़ हो, **येह मुआ़फ़ है और इस पर कफ़्फ़ारा नहीं । (2)...... ग़मूस** येह है कि किसी गुज़रे हुए अम्र पर दानिस्ता झूटी क़सम खाए **इस में गुनहगार होगा । (3)...... मुन्अ़क़िदा** येह है कि किसी आयिन्दा अम्र पर क़स्द कर के क़सम खाए **इस क़सम को अगर तोड़ेगा तो गुनहगार भी है और कफ़्फ़ारा भी लाज़िम ।**

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 2, अल ब-क़रह, तह़्तल आयह : 225, स. 76)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बिला ज़रूरत क़सम खाते रहना भी मन्अ़ है फिर झूटी क़सम खाने का किस क़दर होलनाक अन्जाम होगा, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **301** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"आंसूओं का दरिया"** सफ़ह़ा **289** पर ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली** जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : बहुत ज़ियादा क़समें उठाने की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का सामना करने से बचो, क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ (پ۲، البقرة:۲۲٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** को अपनी क़समों का निशाना न बना लो ।

झूटी क़सम की सज़ा

इस्राईलियात में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : **या रब** عَزَّوَجَلَّ **!** जो तेरे नाम की झूटी क़सम उठाए उस की सज़ा क्या है ? फ़रमाया : मैं उस की ज़बान को आग के दो अंगारों के दरमियान पाट दूंगा । अ़र्ज़ किया : **या रब** عَزَّوَجَلَّ **!** जो झूटी क़सम के ज़रीए़ किसी मुसल्मान का माल लूट ले उस की सज़ा क्या है ? फ़रमाया : मैं जन्नत से उस का ह़िस्सा काट दूंगा । (بحر الدموع، الفصل الثانی والثلاثون تحریم الربا والسرقة والخیانة وشرب الخمر، ص۲۱۳)

www.dawateislami.net

अ-ज़-मते ख़ुदा वन्दी से ना वाक़िफ़

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़त्तर है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस बात का इज़्न दिया है कि मैं एक ऐसे (फ़िरिश्ते ब सूरते) मुर्ग़ का ज़िक्र करूं जिस के क़दम सब से निचली ज़मीन में गड़े हुए हैं और उस की गरदन अ़र्शे इलाही के साथ मुत्तसिल है, वोह अ़र्ज़ करता है : तू पाक है, तू कितना अ़ज़ीम है। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : जो मेरे नाम की झूटी क़सम उठाता है वोह मेरी अ़-ज़मत को नहीं जानता।

(كتاب العظمة، باب فى قصة عوج......الخ، فصل فى صفة العمالقة والجبابرة ذكر ساعات الليل والنهار......الخ، ص٤٥٨، الحديث:١٢٦٣)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दा'वत देने वाले की ता'रीफ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुरआने मजीद में फ़रमाने अ़ज़ीम है :

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۳۳﴾ (پ٢٤، حم السّجدة:٣٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाए और नेकी करे और कहे मैं मुसल्मान हूं।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی लिखते हैं : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया कि मेरे नज़्दीक येह आयत मुअज़्ज़िनों के ह़क़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल येह भी है कि जो कोई किसी त़रीक़े पर भी **अल्लाह तआ़ला** की त़रफ़ दा'वत दे वोह (या'नी हर नेकी की दा'वत देने वाला) इस में दाख़िल है।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 24, **حم السّجدة**, तह़्तल आयह : 33, स. 884)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

जो नेकी की दा'वत की धूमें मचाए
मैं देता हूं उस को दुआ़ए मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 152)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

"शबे हिजरत" मइय्यते मुस्तफ़ा में कौन थे ?

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ثَانِیَ اثْنَیْنِ اِذْ هُمَا فِی الْغَارِ اِذْ یَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا (پ۱۰، التوبة:۴۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर तुम मह़बूब की मदद न करो तो बेशक **अल्लाह** ने उन की मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुवा सिर्फ़ दो जान से जब वोह दोनों ग़ार में थे जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक **अल्लाह** हमारे साथ है।

इस आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह **मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا और दीगर सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان का फ़रमान नक़्ल फ़रमाते हैं कि "وَكَانَ اَبُوْبَكْرٍ مَعَ النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِی الْغَارِ या'नी ग़ार में नबिय्ये अकरम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सिद्दीक़े अक्बर **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ थे।"

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب المهاجرین وفضلهم، ص۹۲۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिजरते मदीना करने वाली औ़रतों का इम्तिह़ान

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِیْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ (پ۲۸، الممتحنة:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो जब तुम्हारे पास मुसल्मान औ़रतें कुफ़्रिस्तान से अपने घर छोड़ कर आएं तो उन का इम्तिह़ान कर लो **अल्लाह** उन के ईमान का ह़ाल बेहतर जानता है फिर अगर वोह तुम्हें ईमान वालियां मा'लूम हों तो उन्हें काफ़िरों को वापस न दो।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی इस आयत के नुज़ूल के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि येह आयते मुबा-रका सुल्हे़ हुदैबिया के बा'द नाज़िल हुई, और इस का सबबे नुज़ूल येह है कि मुसल्मानों और क़ुरैश के दरमियान पहले येह सुल्ह़ इस शर्त़ पर हुई थी कि क़ुरैश

www.dawateislami.net

में से जो शख़्स मुसल्मानों की त़रफ़ आएगा मुसल्मान उसे वापस कर देंगे फिर **अल्लाह तआ़ला** ने इम्तिह़ान की शर्त़ के साथ औ़रतों को अलग फ़रमा दिया (जो मुसल्मान औ़रत हिजरत कर के मदीना शरीफ़ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर होगी बा'दे इम्तिह़ान उसे कुफ़्फ़ारे कु़रैश को वापस नहीं किया जाएगा।) (فَتحُ الْبَارِی، کتاب التفسیر، باب:اِذَا جَآءَکُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُھٰجِرٰتٍ، ۸/۸۱۱، تحت الحدیث:۴۸۹۱)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं : जो मुसल्मान औ़रत हिजरत कर के **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर होती तो रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान के साथ इम्तिह़ान लेते थे :

يٰۤاَيُّهَا النَّبِیُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰۤى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّ لَا يَسْرِقْنَ وَ لَا يَزْنِيْنَ وَ لَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَ لَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَ اَرْجُلِهِنَّ وَ لَا يَعْصِيْنَكَ فِیْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾

(پ۲۸، الْمُمْتَحِنَۃ:۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ नबी जब तुम्हारे ह़ुज़ूर मुसल्मान औ़रतें ह़ाज़िर हों इस पर बैअ़त करने को कि **अल्लाह** का शरीक कुछ न ठहराएंगी और न चोरी करेंगी और न बदकारी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी और न वोह बोहतान लाएंगी जिसे अपने हाथों और पाउं के दरमियान या'नी मौज़ए विलादत में उठाएं और किसी नेक बात में तुम्हारी ना फ़रमानी न करेंगी तो उन से बैअ़त ले लो और **अल्लाह** से उन की मग़्फ़िरत चाहो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्‌रबान है।

फिर जो मुसल्मान औ़रत इस शर्त़ का इक़्रार कर लेती तो **शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस से फ़रमाते : मैं ने तुझे बैअ़त किया।

(**सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं :) नबिय्ये मुख़्तार, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिर्फ़ कलाम के ज़रीए बैअ़त फ़रमाते थे, **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! बैअ़त करने में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस ने कभी किसी औ़रत के हाथ को नहीं छुवा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिर्फ़ क़ौल के साथ उन से बैअ़त फ़रमाया करते थे (या'नी वोह किसी को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का शरीक न ठहराएंगी, न चोरी करेंगी, न बदकारी, न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी, न बोहतान लाएंगी और न किसी नेक बात में तुम्हारी ना फ़रमानी करेंगी)। (صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب التفسیر، باب: اِذَا جَآءَکُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُھٰجِرٰتٍ، ص۱۲۵۵، الحدیث:۴۸۹۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

यतीम बच्चियों से इन्साफ़

हज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से **अल्लाह तआ़ला** के (इस) फ़रमान के बारे में पूछा :

وَ اِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِی الْیَتٰمٰی فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَ ثُلٰثَ وَ رُبٰعَ ۚ (پ٤، النساء:٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम्हें अन्देशा हो कि यतीम लड़कियों में इन्साफ़ न करोगे तो निकाह़ में लाओ जो औ़रतें तुम्हें ख़ुश आएं दो दो और तीन तीन और चार चार।

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ मेरे भान्जे ! येह आयत उस यतीम बच्ची के बारे में नाज़िल हुई है जो अपने वली की परवरिश में हो और माल में वली की शरीक हो, और उस का वली माल और हुस्न की वज्ह से उस यतीम लड़की को पसन्द करता हो तो वोह उस से निकाह़ करने का इरादा तो करता है लेकिन उस के महर में इन्साफ़ नहीं करना चाहता कि उस को इस क़दर महर दे जो दूसरा शख़्स देता है। इस लिये (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से) लोगों को उस यतीम बच्ची के साथ शादी करने से मन्अ़ कर दिया गया हां ! अगर महर में इन्साफ़ करते हुए उन्हें उन की हैसिय्यत के मुत़ाबिक़ आ'ला महर दें तो उस से निकाह़ कर सकते हैं। और उन को हुक्म दिया गया कि इन के इ़लावा जो औ़रत उन्हें पसन्द हो उस से निकाह़ कर लें।

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान फ़रमाते हैं कि सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : इस आयत के नाज़िल होने के बा'द लोगों ने सुल्त़ाने बह़रो बर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

وَ یَسْتَفْتُوْنَكَ فِی النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ یُفْتِیْكُمْ فِیْهِنَّ ۙ وَ مَا یُتْلٰى عَلَیْكُمْ فِی الْكِتٰبِ فِیْ یَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِیْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَ تَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ (پ٥، النساء:١٢٧)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम से औ़रतों के बारे में फ़तवा पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि **अल्लाह** तुम्हें इन का फ़तवा देता है और वोह जो तुम पर कुरआन में पढ़ा जाता है उन यतीम लड़कियों के बारे में कि तुम उन्हें नहीं देते जो उन का मुक़र्रर है और उन्हें निकाह़ में भी लाने से मुंह फेरते हो।

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो येह इर्शाद फ़रमाया है कि "वोह जो तुम पर क़ुरआन में पढ़ा जाता है" इस से मुराद पहली आयत है जिस में येह फ़रमाया गया है कि "अगर तुम्हें अन्देशा हो कि यतीम लड़कियों में इन्साफ़ न करोगे तो निकाह़ में लाओ जो औ़रतें तुम्हें ख़ुश आएं।"

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो येह इर्शाद फ़रमाया : "उन्हें निकाह़ में लाने से मुंह फेरते हो" येह उस यतीम लड़की के बारे में है जो तुम्हारी परवरिश में हो और माल व जमाल में कम हो तो तुम उन से निकाह़ करने से रू गर्दानी करते हो।

तो इस में उन लोगों को मन्अ़ किया गया जो यतीम औ़रतों से उन के माल और जमाल में रग़बत होने की वज्ह से निकाह़ करते हैं हां ! अगर इन्हें उन औ़रतों में रग़बत हो तो (मह्र में) इन्साफ़ के साथ निकाह़ कर सकते हैं। (صَحِيْحُ الْبُخَارِى، كتاب الشركة، باب شركة اليتيم واهل الميراث، ص٦٤٣، الحديث:٢٤٩٤)

फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द, शारेहे़ बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त फ़रमाते हैं : ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا) के जवाब का ह़ासिल येह है कि येह उस वक़्त के कुछ अफ़राद की इस्लाह़ के लिये फ़रमाया गया। होता येह कि कोई मालदार यतीम लड़की होती जिस का न कोई भाई होता न चचा न दादा, सिर्फ़ चचा का लड़का होता। येही उस का वली होता लड़की उस की परवरिश में रहती ब हैसिय्यत वली के (या'नी वली होने की हैसिय्यत से) उस को ह़क़ ह़ासिल है कि जिस से चाहे उस यतीम लड़की का अ़क़्द कर दे और जो चाहे मह्र मुक़र्रर कर दे। येह उस लड़की से ख़ुद अपना निकाह़ कर लेता और मह्र बहुत मुख़्तसर रखता इस में लड़की की ह़क़ त-लफ़ी थी, येह महरे मिस्ल की मुस्तह़िक़ है येह उस से कम देता, लड़की अपनी फ़ित़री ह़या और उस के दबाव की वज्ह से कुछ नहीं बोलती और तस्लीम कर लेती। इस के इज़ाले (या'नी ख़त्म करने) के लिये फ़रमाया गया कि जब तुम इन बेकस मजबूर बच्चियों को महरे मिस्ल न दे सको तो उन पर ज़ुल्म न करो, उन से अपना निकाह़ न करो बल्कि उस से इस का निकाह़ करो जो माल के ए'तिबार से **कुफ़ू** हो और इसे महरे मिस्ल दे तुम्हें निकाह़ की ह़ाजत है तो औ़रतें बहुत हैं चार तक जितनी पसन्द आएं उन से निकाह़ कर लो।

इस का **दूसरा रुख़** येह था अगर यतीम लड़की नादार और बद सूरत होती तो उस से निकाह़ नहीं करते और **तीसरी सूरत** येह थी कि वोह बद सूरत और मालदार होती तो न ख़ुद उस से निकाह़ करते न दूसरों से। इमाम इब्ने अबी ह़ातिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने अपनी तफ़्सीर में ब त़रीक़े सदी रिवायत किया कि ह़ज़रते जाबिर (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ) की एक चचाज़ाद बहन थी मगर अपने बाप से उसे मीरास में बहुत माल मिला था जिस की वज्ह से वोह मालदार थी, वोह उस

www.dawateislami.net

की शादी कहीं नहीं करते, इस सिल्सिले में सहाबए किराम (عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان) ने दरयाफ़्त किया तो येह (या'नी मज़्कूरा) आयत नाज़िल हुई।

हासिल येह निकला कि जो यतीम बच्ची तुम्हारी परवरिश में वली होने की वज्ह से है उन के साथ इन्साफ़ करो, सिर्फ़ अपनी मन्फ़अत को सामने रख कर उन से मुआ-मला न करो। अगर तुम खुद निकाह करना चाहते तो महरे मिस्ल पर करो और अगर तुम्हें इस की इस्तिताअत नहीं तो औरतें बहुत हैं उन से निकाह कर लो और अगर तुम्हें इन से निकाह की रग़बत नहीं तो जब वोह निकाह के क़ाबिल हो जाएं उन का निकाह दूसरे से कर दो, उन के माल से मन्फ़अत हासिल करने के लिये उन्हें अपने पास रोके मत रखो। (نزہۃ القاری، کتاب الشرکۃ،۳/۱۰۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल

अल्लाहु रब्बुल आ-लमीन عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ (پ۲۱،الاحزاب:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब काफ़िर तुम पर आए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से और जब कि ठिटक कर रह गईं निगाहें और दिल गलों के पास आ गए।

इस आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर में उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं : येह (ग़ज़्वए) खन्दक़ का दिन था।

(صَحِیْح مُسْلِم، کتاب التفسیر، ص۱۱۵۳، الحدیث:۳۰۲۰)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस रिवायत में उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ग़ज़्वए खन्दक़ का ज़िक्र फ़रमाया है, **दा'वते इस्लामी** के इशाअती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ **1186** सफ़हात पर मुश्तमिल तफ़्सीर "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़हा **774** पर ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल हाफ़िज़ सय्यिद मुफ़्ती **मुहम्मद नईमुद्दीन** मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی ग़ज़्वए खन्दक़ का मुख़्तसर तआरुफ़ ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं : येह ग़ज़्वा शव्वाल 4 या 5 हिजरी में पेश आया जब यहूदे बनी नुज़ैर को जिला वतन किया गया तो उन के अकाबिर मक्कए मुकर्रमा में कुरैश के पास पहुंचे और उन्हें सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जंग की तरग़ीब दिलाई और वा'दा किया कि हम तुम्हारा साथ देंगे यहां तक कि मुसल्मान नेस्तो नाबूद हो जाएं, अबू सुफ़्यान ने

www.dawateislami.net

इस तह़रीक की बहुत क़द्र की, और कहा कि हमें दुन्या में वोह सब से प्यारा है जो **मुह़म्मद** (**मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की अ़दावत में हमारा साथ दे फिर क़ुरैश ने उन यहूदियों से कहा कि तुम पहली किताब वाले हो बताओ तो हम ह़क़ पर हैं या मुह़म्मदे (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ? यहूद ने कहा : तुम्हीं ह़क़ पर हो, इस पर क़ुरैश ख़ुश हुए इसी पर येह आयत,

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ (پ۵، النساء:۵۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम ने वोह न देखे जिन्हें किताब का एक ह़िस्सा मिला ईमान लाते हैं बुत और शैत़ान पर।

नाज़िल हुई फिर यहूदी क़बाइले ग़त़्फ़ान व क़ैस व ग़ीलान वग़ैरा में गए, वहां भी येही तह़रीक की वोह सब उन के मुवाफ़िक़ हो गए इस त़रह़ उन्हों ने जा बजा दौरे किये और अ़रब के क़बीले क़बीले को मुसल्मानों के ख़िलाफ़ तय्यार कर लिया, जब सब लोग तय्यार हो गए तो क़बीलए ख़ुज़ाआ़ के चन्द लोगों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार की इस ज़बर दस्त तय्यारियों की इत्तिलाअ़ दी, येह इत्तिलाअ़ पाते ही ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने ब मश्वरा ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ख़न्दक़ ख़ुदवानी शुरूअ़ कर दी, इन ख़न्दक़ में मुसल्मानों के साथ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी काम किया, मुसल्मान ख़न्दक़ तय्यार कर के फ़ारिग़ हुए ही थे कि मुश्रिकीन **बारह हज़ार** का लश्करे गिरां ले कर इन पर टूट पड़े और मदीनए त़य्यिबा का मुह़ा-सरा कर लिया, ख़न्दक़ मुसल्मानों के और उन के दरमियान ह़ाइल थी उस को देख कर मु-तह़य्यर हुए और कहने लगे कि येह ऐसी तदबीर है जिस से अ़रब लोग अब तक वाक़िफ़ न थे, अब उन्हों ने मुसल्मानों पर तीर अन्दाज़ी शुरूअ़ की और इस मुह़ा-सरे को **पन्दरह रोज़** या **चौबीस** रोज़ गुज़रे, मुसल्मानों पर ख़ौफ़ ग़ालिब हुवा और वोह बहुत घबराए और परेशान हुए तो **अल्लाह तआ़ला** ने मदद फ़रमाई और उन पर तेज़ हवा भेजी निहायत सर्द और अंधेरी रात में उस हवा ने उन के ख़ैमे गिरा दिये, त़नाबें तोड़ दीं, खूंटे उखाड़ दिये, हांडियां उलट दीं, आदमी ज़मीन पर गिरने लगे और **अल्लाह तआ़ला** ने फ़िरिश्ते भेज दिये जिन्हों ने कुफ़्फ़ार को लरज़ा दिया, उन के दिलों में दह्शत डाल दी मगर इस जंग में मलाएका ने क़िताल नहीं किया फिर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा बिन यमान (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) को ख़बर लेने के लिये भेजा वक़्त निहायत सर्द था। येह हथियार लगा कर रवाना हुए, ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रवाना होते वक़्त उन के **चेहरे और बदन पर दस्ते मुबारक फेरा** जिस से उन पर सर्दी असर न कर सकी और येह

www.dawateislami.net

दुश्मन के लश्कर में पहुंच गए, वहां तेज़ हवा चल रही थी और संगरेज़े उड़ उड़ कर लोगों को लग रहे थे, आंखों में गर्द पड़ रही थी, अ़जब परेशानी का आ़लम था, लश्करे कुफ़्फ़ार के सरदार अबू सुफ़्यान हवा का येह आ़लम देख कर उठे और उन्हों ने क़ुरैश को पुकार कर कहा कि जासूसों से होशियार रहना, हर शख़्स अपने बराबर वाले को देख ले, येह ए'लान होने के बा'द हर एक शख़्स ने अपने बराबर वाले को टटोलना शुरूअ़ किया, ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने दानाई से अपने दाहने शख़्स का हाथ पकड़ कर पूछा तू कौन है ? उस ने कहा : मैं फ़ुलां बिन फ़ुलां हूं, इस के बा'द अबू सुफ़्यान ने कहा : ऐ गुरौहे क़ुरैश ! तुम ठहरने के मक़ाम पर नहीं हो, घोड़े और ऊंट हलाक हो चुके, बनी क़ुरैज़ा अपने अ़ह्द से फिर गए और हमें उन की त़रफ़ से अन्देशा नाक ख़बरें पहुंची हैं, हवा ने जो ह़ाल किया है वोह तुम देख ही रहे हो, बस अब यहां से कूच कर दो, मैं कूच करता हूं अबू सुफ़्यान येह कह कर अपनी ऊंटनी पर सुवार हो गए और लश्कर में "اَلرَّحِیْلُ اَلرَّحِیْلُ या'नी कूच कूच" का शोर मच गया, हवा हर चीज़ को उलटे डालती थी मगर येह हवा उस लश्कर से बाहर न थी, अब येह लश्कर भाग निकला और सामान का बार कर के ले जाना उस को शाक़ हो गया इस लिये कसीर सामान छोड़ गया ।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 21, अल अह़ज़ाब, तह़तल आयह : 9, स. 774)

इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से औलाद मिल गई

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इ़ल्मे दीन की ब-र-कतें पाने, गुनाहों से ख़ुद बचने और दूसरों को बचाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने यहां होने वाले इस्लामी बहनों के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत फ़रमाइये । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! इस सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में की जाने वाली दुआ़ओं को **अल्लाहु रब्बुल आ़-लमीन** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से क़बूल फ़रमाता है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **308** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इस्लामी बहनों की नमाज़**" सफ़ह़ा **287** पर है : बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है कि مَعَاذَاللّٰہ मैं नित नए फ़ेशन की शौक़ीन और नमाज़ें क़ज़ा कर देने की आ़दी थी । हमारी ख़ुश बख़्ती कि मेरी एक बेटी **दा'वते इस्लामी** के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गई । वोह मुझे भी इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत देती रहती थी लेकिन मैं उस की

www.dawateislami.net

बात को नज़र अन्दाज़ कर दिया करती थी। एक मर्तबा ह़स्बे मा'मूल मेरी बेटी ने मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश की और मुझे **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाआ़त में शिर्कत की एक ब-र-कत येह भी बताई कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाआ़त में शरीक होने वालियों की दुआ़ओं की क़बूलिय्यत के कई वाक़िआ़त हैं, लिहाज़ा आप भी इज्तिमाअ़ में शरीक हों और भाई के लिये दुआ़ कीजिये। बात येह थी कि मेरे बेटे की शादी को **4** साल का अ़र्सा गुज़र चुका था मगर वोह औलाद की ने'मत से मह़रूम था। चुनान्चे मैं ने अपनी बेटी की तरग़ीब पर येह निय्यत की, कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मैं **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करूंगी और अपने बेटे के लिये औलाद की दुआ़ मांगूंगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत करना शुरूअ़ कर दी। वहां मैं अपने बेटे के लिये भी दुआ़ किया करती। कुछ ही अ़र्से में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे बेटे को औलाद की ने'मत से मालामाल फ़रमा दिया। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की एक और ब-र-कत येह भी मिली कि तक़रीबन **3** साल से मेरे पाउं में जो शदीद तक्लीफ़ रहती थी اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मुझे उस से भी नजात मिल गई है।

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न "لَا" है न ह़ाजत अगर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 225)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

✿===✿===✿===✿===✿===✿

मुसल्मानों की ह़ाजत रवाई

साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो अपने भाई की ह़ाजत पूरी होने तक ह़ाजत रवाई करता रहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **पछत्तर** हज़ार (75000) मलाएका के ज़रीए़ उस पर साया फ़रमाता है वोह उस के लिये इस्तिग़्फ़ार और दुआ़ करते हैं, अगर सुब्ह़ को ह़ाजत रवाई की तो शाम तक और अगर शाम को ह़ाजत रवाई की तो सुब्ह़ तक और वोह जो भी क़दम उठाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का एक गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाता है और उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाता है।"

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلة، الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین، ص۸٤۱، الحدیث:۹)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾16﴿...... सय्यि-दतुना आइशा का ईसार

बरोज़े क़ियामत हुज़ूर के ज़ियादा क़रीब कौन ?

सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान फ़रमाते हैं कि रसूले बे मिसाल, महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत हर जगह मेरे सब से ज़ियादा क़रीब वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद पढ़ा होगा, जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ और शबे जुमुआ 100 मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ उस की 100 हाजतें पूरी फ़रमाएगा, 70 आख़िरत की और 30 दुन्या की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस दुरूदे पाक पर एक फ़िरिश्ते को मुक़र्रर फ़रमा देगा वोह उस को मेरी क़ब्र में ऐसे लाएगा जैसे तुम्हारे पास तोहफ़े लाए जाते हैं वोह उस दुरूदे पाक पढ़ने वाले का नाम और उस का नसब उस के क़बीले तक बयान करेगा तो मैं उसे अपने पास एक सफ़ेद सहीफ़े में दर्ज कर लूंगा।

(شُعَبُ الْاِیْمَان، باب فی الصلوات ، فضل الصلاة علی النبی لیلة الجمعة، ۱۱۱/۳، الحدیث:۳۰۳۵)

और एक रिवायत में इस बात का इज़ाफ़ा है कि मेरा इ़ल्म मेरी मौत के बा'द भी ऐसे ही है जैसे दुन्या में था।

(اَلصِّلَاتُ وَالْبَشَرُ فِی الصَّلٰوۃِ عَلٰی خَیْرِ الْبَشَر، الباب الثانی فی ذکر الاحادیث الدالة علی فضل شان الصلاة علی رسول اللّٰہ...الخ، الحدیث الثالث والثلاثون، ص۷۷)

विर्द जिस ने किया दुरूद शरीफ़ — और दिल से पढ़ा दुरूद शरीफ़
हाजतें सब रवा हुई उस की — है अ़जब कीमिया दुरूद शरीफ़
आप का साया हश्र में होगा
जिस ने अक्सर पढ़ा दुरूद शरीफ़

(काफ़ी की ना'त, स. 40)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला किस क़दर खुश नसीब है कि उस का नाम और उस के ख़ानदान का नाम

www.dawateislami.net

सुल्ताने बहरो बर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में पेश किया जाता है नीज़ बरोज़े क़ियामत वोह नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सब से ज़ियादा क़रीब होगा। शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : क़ियामत में सब से आराम में वोह होगा जो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के साथ रहे और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की हमराही नसीब होने का ज़रीआ दुरूद शरीफ़ की कसरत है इस से मा'लूम हुवा कि दुरूद शरीफ़ बेहतरीन नेकी है कि तमाम नेकियों से जन्नत मिलती है और इस से बज़्मे जन्नत के दूल्हा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم।

(مرآۃ المناجیح، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی وفضلھا، ۲/۱۰۰)

बयान कर्दा रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि नबिय्ये अकरम, शहन्शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी फ़रमाने के बा'द भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उलूम में किसी क़िस्म की कमी वाक़ेअ नहीं हुई है जैसे विसाले ज़ाहिरी से क़ब्ल आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **आलिमे मा का-न व मा यकून** (या'नी जो कुछ हो चुका है और जो कुछ होगा उस सब के जानने वाले) थे वैसे ही अब भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उलूम में कोई कमी नहीं हुई लिहाज़ा जो कोई किसी भी जगह और किसी भी वक़्त आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ का नज़राना पेश करता है आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने उस ग़ुलाम का इल्म होता है और फ़िरिश्ते के आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे आली में दुरूद शरीफ़ पेश करने से येह लाज़िम नहीं आता है कि ख़ुद आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उस दुरूद पढ़ने वाले का इल्म नहीं होता बल्कि फ़िरिश्ते का आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में दुरूद पेश करना उस दुरूद ख़्वां ग़ुलाम की इज़्ज़त अफ़्ज़ाई के लिये होता है, जैसा कि शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : फ़िरिश्ते के दुरूद पहुंचाने से येह लाज़िम नहीं आता कि हुज़ूर ब नफ़्से नफ़ीस हर एक का दुरूद न सुनते हों हक़ येह है कि सरकार हर दूर व क़रीब के दुरूद ख़्वां का दुरूद सुनते भी हैं और दुरूद ख़्वां की इज़्ज़त अफ़्ज़ाई के लिये फ़िरिश्ता भी बारगाहे आली में दुरूद पहुंचाता है ताकि दुरूद की ब-र-कत से हम गुनहगारों का नाम आस्तानए आलिया में फ़िरिश्ते की ज़बान से अदा हो। देखो रब तआला हमारे आ'माल देखता है फिर भी उस की बारगाह में फ़िरिश्ते आ'माल पेश करते हैं।

(مرآۃ المناجیح، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی وفضلھا، ۲/۱۰۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सय्यि-दतुना आ़इशा का जज़्बए ईसार

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इन्हें ग़ाबह के मक़ाम पर मौजूद एक नख़्लिस्तान दिया जिस से **20** वस्क़(1) खजूरें आती थीं। जब उन के विसाले पुर मलाल का वक़्त क़रीब आया उन्हों ने फ़रमाया : क़सम ब ख़ुदा ! ऐ मेरी नूरे नज़र ! मैं अपने बा'द तुम्हारे ग़नी होने से ज़ियादा किसी का साहिबे सरवत होना पसन्द नहीं करता, न ही मुझ पर अपने बा'द किसी का मुफ़्लिस हो जाना तुम्हारे इफ़्लास से ज़ियादा गिरां गुज़रता है। मैं ने तुम्हें एक नख़्लिस्तान हिबा किया था जिस से **20** वस्क़ खजूरें आती हैं। काश ! तुम उसे काट लेतीं, उस पर क़ब्ज़ा कर लेतीं, वोह तुम्हारा हो जाता। आज तो वोह वु-रसा का माल है, वु-रसा में तुम्हारे दो भाई और दो बहनें शामिल हैं, किताबे इलाही के मुताबिक़ विरासत तक़्सीम कर लेना।

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बयान फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे वालिदे माजिद ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! अगर इतना इतना माल होता मैं फिर भी उसे छोड़ देती। मेरी बहन तो सिर्फ़ ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا हैं, दूसरी कौन है ? ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : बिन्ते ख़ारिजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के शिकम में मौजूद ह़म्ल मेरे इल्म के मुताबिक़ लड़की है।

(مُوَطّا اِمَام مالِك، كتاب الاقضية ، باب ما لايجوز من النخل، الجزء الثانى، ص۷۵۲)

इस ह़दीस के तह़्त **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल बाक़ी ज़ुरक़ानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی तह़रीर फ़रमाते हैं : चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि **लड़की** पैदा हुई जिन का नाम ''उम्मे कुल्सूम'' रखा गया। **(شرحُ الزُّرقانى على المُؤطا، كتاب الاقضية، باب مالا يجوز من النحل، ۲۱۸/۳)**

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दो करामतें साबित हुईं

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़दीसे मुबारक के बारे में ह़ज़रते अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने तह़रीर फ़रमाया कि इस ह़दीस से **ख़ली-फ़तुर्रसूल** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की **दो करामतें** साबित होती हैं :

(1)...... वस्क़ अ़रब के एक पैमाने का नाम है। एक वस्क़ 60 साअ़ का होता है और एक साअ़ मौजूदा वज़्न के ए'तिबार से 3 किलो 840 ग्राम का होता है।

www.dawateislami.net

﴾1﴿ आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ को क़ब्ल अज़ वफ़ात ही येह इल्म हो गया था कि मैं इस मरज़ में दुन्या से रिह़लत (या'नी कूच) कर जाऊंगा, इसी लिये तो ब वक़्ते वसिय्यत फ़रमाया, मेरे पास जो मेरा माल था, वोह आज मीरास का माल है। ﴾2﴿ जो बच्चा पैदा होगा वोह **लड़की** है।

(حُجَّۃُ اللّٰہ علَی العٰلَمِین، المطلب الثالث فی ذکر بعض کرامات اصحاب رسول ﷺ، فمن کرامات ابی بکر، ص ۸۶۰)

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को इल्मे ग़ैब था

इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा, مَا فِی الْاَرْحَام (या'नी जो कुछ मां के पेट में है उस) का इल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को ह़ासिल हो गया था। इस मस्अले को समझने के लिये आयते क़ुरआनी और उस की तफ़्सीर ग़ौर से मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह **21 सूरए लुक़्मान** की आख़िरी आयते करीमा में इर्शाद फ़रमाता है :

وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ (پ۲۱، لقمٰن :۳۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) जानता है जो कुछ माओं के पेट में है।

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़ज़रते **सदरुल अफ़ाज़िल** अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی ख़ज़ाइनुल इरफ़ान के सफ़ह़ा **765** पर इस आयते मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : "इल्मे ग़ैब **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास है और अम्बिया व औलिया को ग़ैब का इल्म **अल्लाह** तआ़ला की ता'लीम से ब त़रीक़े मो'जिज़ा व करामत अ़ता होता है। येह इस इख़्तिसास (या'नी मख़्सूस होने) के मुनाफ़ी (ख़िलाफ़) नहीं और कसीर आयतें और ह़दीसें इस पर दलालत करती हैं। "बारिश का वक़्त और ह़म्ल में क्या है और कल कोई क्या करेगा और कहां मरेगा।" इन उमूर की ख़बरें ब कसरत औलिया व अम्बिया ने ही दी हैं और क़ुरआन व ह़दीस से साबित हैं। ह़ज़रते इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلَیْہِ السَّلَام को फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ السَّلَام के पैदा होने की और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़-करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام को ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या عَلَیْہِ السَّلَام के पैदा होने की और ह़ज़रते मरयम को ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلَیْہِ السَّلَام के पैदा होने की ख़बरें दीं तो इन फ़िरिश्तों को भी पहले से मा'लूम था कि इन ह़म्लों में क्या है और इन ह़ज़रात को भी जिन्हें फ़िरिश्तों ने इत्तिलाएं दी थीं और इन सब का जानना क़ुरआने करीम से साबित है तो आयत के मा'ना क़त्अन येही हैं कि बिग़ैर **अल्लाह** तआ़ला के बताए कोई नहीं जानता। इस के येह मा'ना लेना कि **अल्लाह** तआ़ला के बताने से भी कोई नहीं जानता मह़्ज़ बात़िल और सदहा आयात व अह़ादीस के ख़िलाफ़ है।"

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! काश ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا जज़्बए ईसार के समुन्दर से एक क़त़रा हमें भी नसीब हो जाए और हम शैत़ान के मक्रो फ़रेब में आ कर माले मुफ़्त की त़लब में रहने की बजाए ख़ुद अपनी पसन्दीदा अश्या दूसरे मुसल्मानों के लिये ईसार किया करें लेकिन **हाए अफ़्सोस !** नफ़्सो शैत़ान के ह़ीले बहानों में आ कर ईसार करना तो दर कनार ख़ुद हमारे दिल दूसरों के माल की त़लब में फंसे रहते हैं, **काश !** उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के जज़्बए ईसार के सदक़े हम पर ऐसा करम हो जाए कि माले दुन्या की वक़्अ़त हमारे दिलों से ख़त्म हो जाए।

सरवरे दीं ! लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैत़ां सय्यिदा ! कब तक दबाते जाएंगे

(ह़ाइके़ बख़्शिश, स. 157)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوۡبُوۡا اِلَی اللّٰہ اَسۡتَغۡفِرُاللّٰہ
صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईसार की ता'रीफ़

बयान कर्दा रिवायत में सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के जज़्बए ईसार का ज़िक्र है, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ **44** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **"मदीने की मछली"** सफ़ह़ा **3** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ईसार की ता'रीफ़ बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं, **ईसार का मा'ना है :** दूसरों की ख़्वाहिश और ह़ाजत को अपनी ख़्वाहिश व ह़ाजत पर तरजीह़ देना।

ईसारे सह़ाबा व सालिह़ीन के वाक़िआ़त

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ईसार करना (या'नी अपने नफ़्स पर दूसरे मुसल्मानों को तरजीह़ देना) सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان और औलिया व सालिह़ीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الۡمُبِیۡن के अख़्लाक़ में से है, येह ह़ज़रात رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ख़ुद मुश्किलात उठा कर दूसरे मुसल्मानों के लिये आसानियां फ़राहम करते, अपनी जान पर दूसरे मुसल्मानों की जानों को तरजीह़ दिया करते थे, चुनान्चे

www.dawateislami.net

﴾1﴿...... पानी का ईसार :

हज़रते सय्यिदुना अबू जुहम बिन हुजैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "ग़ज़्वए यरमूक के दिन मैं अपने चचाज़ाद भाई को तलाश कर रहा था और मेरे पास पानी की एक मश्क या बरतन था। मेरा इरादा था कि किसी में थोड़ी सी भी जान बाक़ी हो मैं उस को पानी पिलाऊंगा या हाथ फेर कर उन के चेहरों को साफ़ करूंगा। (अचानक मुझे मेरे चचाज़ाद भाई नज़र आए) क्या देखता हूं कि वोह आख़िरी सांसें ले रहे हैं, मैं ने पूछा : क्या आप को पानी पिलाऊं ? उन्हों ने (गरदन के) इशारे से हां की (तो मैं ने पानी की मश्क उन की त़रफ़ बढ़ा दी)। (अभी उन्हों ने अपना मुंह मश्क के क़रीब किया ही था) कि अचानक किसी ज़ख़्मी के कराहने की आवाज़ आई, चचाज़ाद भाई ने (फ़ौरन मश्क मेरी त़रफ़ बढ़ाई और) इशारा किया : **"जाओ, पहले उस ज़ख़्मी को पानी पिलाओ।"** मैं उन के पास आया तो देखा कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना हश्शाम बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे। मैं ने उन से पूछा : "क्या आप को पानी पिलाऊं ?" (उन्हों ने इस्बात में सर हिलाया मैं ने उन को पानी दिया)। इतने में एक और ज़ख़्मी की आवाज़ आई, तो उन्हों ने फ़रमाया : **"जाओ, पहले उस ज़ख़्मी भाई को पानी पिलाओ।"** मैं उन के पास आया तो वोह जामे शहादत नोश फ़रमा चुके थे, मैं वापस ह़ज़रते सय्यिदुना हश्शाम बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आया तो वोह भी अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जा चुके थे। फिर मैं अपने चचाज़ाद भाई के पास आया तो वोह भी वासिल बह़क़ हो चुके थे।"

(شُعَبُ الْاِیْمَان، باب فی الزکاۃ، فصل فیما جاء فی الایثار، ۳/۲۶۰، الحدیث:۳۴۸۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿...... बकरी की सिरी का ईसार :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : एक बकरी की सिरी एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास स-दक़ा आई तो उन्हों ने येह फ़रमा कर कि मेरा फ़ुलां भाई और उस के अहलो इ़याल इस के ज़ियादा मुस्तह़िक़ हैं, वोह सिरी उस के पास भेज दी। (और उस ने दूसरे की त़रफ़ और दूसरे ने आगे तीसरे की त़रफ़ भेज दी, इस त़रह़) हर एक दूसरे के पास भेजता रहा यहां तक कि फिरते फिरते सात घरों से लौट कर फिर पहले सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आ गई। तो येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई :

www.dawateislami.net

وَ يُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَ لَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ﳴ وَ مَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ﴿۹﴾ (پ۲۸، الحشر: ۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी जानों पर उन को तरजीह़ देते हैं अगर्चे इन्हें शदीद मोह़ताजी हो और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही काम्याब हैं।

(اَلْمُسْتَدرَك لِلْحَاكِم، كتاب التفسير، قصة ايثار الصحابة رضى الله عنهم، ۲۹۹/۳، الحديث:۳۸۵۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿...... अनोखा ईसार :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **78** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन"** सफ़्ह़ा **38** पर मन्क़ूल है **:** सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में तो यहां तक ईसार था (और इस का जज़्बा इस क़दर कूट कूट कर भरा हुवा था कि जब इन्हों ने मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ हिजरत की तो मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में मुक़ीम अन्सार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ईसार का अनोखा मुज़ा-हरा किया) कि उन्हों ने अपने भाई मुहाजिरीन को अपनी सब जाएदाद निस्फ़ निस्फ़ तक़्सीम कर दी। बल्कि जिस के पास दो बीवियां थीं उन्हों ने एक को त़लाक़ दे कर अपने भाई मुहाजिर के निकाह़ में दे दी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿...... ईसार बाइसे नजात :

(मन्क़ूल है) चन्द दरवेश जासूसी की तोहमत में पकड़े गए सरकारी हुक्म हुवा कि इन को क़त्ल किया जाए जब क़त्ल करने लगे तो हर एक ने येही तक़ाज़ा किया कि पहले मुझे क़त्ल किया जाए ताकि एक दो दम ज़िन्दगी के दूसरा भाई ह़ासिल करे और मैं इस से पहले मारा जाऊं। बादशाह ने येह ईसार देखा, सब को रिहा कर दिया। (अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन, स. 39)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《5》...... एक मां का ईसार :

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मेरे पास एक मिस्कीन औ़रत अपनी दो बेटियों को उठाए हुए आई । मैं ने उसे तीन खजूरें दीं । उस ने हर एक को एक एक खजूर दी । और एक खजूर को अपने खाने के लिये उठाया ही था कि बेटियों ने वोह खजूर भी मांग ली तो उस औ़रत ने जिस खजूर को ख़ुद खाने का इरादा किया था वोह भी दोनों बेटियों के दरमियान तक़्सीम कर दी । मुझे इस वाक़िए़ से बहुत तअ़ज्जुब हुवा, मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में उस औ़रत का अ़मल बयान किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस (ईसार) की वज्ह से उस औ़रत के लिये जन्नत वाजिब कर दी या उस को उस (ईसार) की वज्ह से (जहन्नम की) आग से आज़ाद कर दिया । (صَحِیْح مُسْلِم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب فضل الاحسان الی البنات، ص۱۰۱٤، الحدیث:۲٦۳۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《6》...... जो खाना मिलता ईसार कर देतीं :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **649** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"ह़िकायतें और नसीह़तें"** सफ़ह़ा **119** पर मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यि-दतुना राबिआ़ अ़-दविय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا ने नंगे पाउं पैदल **बैतुल्लाह** शरीफ़ का ह़ज किया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को जो भी खाना अ़त़ा फ़रमाता उस को ईसार कर देतीं । का'बए मुशर्रफ़ा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا पहुंचते ही बेहोश हो कर गिर पड़ीं । होश में आने के बा'द अपने रुख़्सार को **बैतुल्लाह** शरीफ़ पर रख कर अ़र्ज़ की : येह तेरे बन्दों की पनाह गाह है और तू इन से मह़ब्बत करता है अब तो आंखों में आंसू ख़त्म हो गए हैं । फिर त़वाफ़ किया, सअ़्य करने के बा'द जब वुक़ूफ़े अ़-रफ़ा का इरादा किया तो ह़ाएज़ा हो गईं । रोते हुए अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! अगर येह मुआ़-मला तेरे ग़ैर की त़रफ़ से होता तो मैं ज़रूर तेरी बारगाह में शिकायत

www.dawateislami.net

करती अब जब कि येह सब कुछ तेरी मशिय्यत से हुवा है तो अब कैसे शिकायत कर सकती हूं ? पस उन्हों ने हातिफ़े ग़ैबी को येह कहते सुना : ऐ राबिआ (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْھَا) ! हम ने तेरे सबब तमाम हाजियों का हज क़बूल कर लिया और तेरी इस कमी की वज्ह से उन के नक़ाइस भी पुर कर दिये । (اَلرَّوْضُ الْفَائِق، المجلس الثامن فی ذکرحجاج بیت اللہ الحرام ......الخ، ص ٦٠)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾7﴿...... ईसार जन्नत में दाख़िले का बाइस :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : दो शख़्स सहरा से गुज़र रहे थे, उन में एक इबादत गुज़ार था जब कि दूसरा गुनहगार, तो आबिद (या'नी इबादत गुज़ार) को प्यास लगी यहां तक कि वोह शिद्दते प्यास से गिर पड़ा तो उस के रफ़ीक़ ने उसे देखा कि वोह (बेहोशी की हालत में) गिरा हुवा है, उस ने सोचा कि अगर येह नेक मर गया हालां कि मेरे पास पानी भी है, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से मैं कभी भलाई न पा सकूंगा, और अगर मैं ने इस को पानी पिला दिया तो मैं मर जाऊंगा । बहर हाल उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया और (उस आबिद की मदद का) इरादा किया, कुछ पानी उस पर छिड़का बाक़ी उसे पिला दिया तो वोह खड़ा हो गया और (दोनों ने) सहरा तै कर लिया । (मरने के बा'द जब) गुनहगार का हिसाब होगा तो उसे जहन्नम का हुक्म सुना दिया जाएगा । उसे फ़िरिश्ते ले कर चलेंगे, उसी लम्हे उस की नज़र (उसी) नेक बन्दे पर पड़ेगी, वोह कहेगा : ऐ फ़ुलां ! क्या तूने मुझे पहचाना ? तो वोह (आबिद) कहेगा : तू कौन है ? कहेगा : मैं वोही हूं जिस ने बयाबान वाले दिन अपने नफ़्स पर आप को फ़ज़ीलत दी थी । तो वोह कहेगा : हां, हां ! पहचान गया । तो वोह नेक बन्दा फ़िरिश्तों से कहेगा : ठहरो ! तो वोह ठहर जाएंगे । फिर रब तआला से दुआ करेगा, अर्ज़ करेगा : ऐ परवर दगार ! तू उस शख़्स का मुझ पर एहसान जानता है, कैसे उस ने अपने नफ़्स पर मुझे फ़ज़ीलत दी थी । ऐ रब ! उस का मुआ-मला मुझे सोंप दे । तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा वोह तेरे हवाले, फिर वोह नेक बन्दा आएगा और अपने (पानी पिलाने वाले) भाई का हाथ पकड़ कर जन्नत में ले जाएगा ।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط، باب الالف، من اسمہ ابراھیم، ٢/١٦٧، الحدیث:٢٩٠٦)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यि-दतुना आइशा का तवक्कुल

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि एक मिस्कीन ने आप से सुवाल किया जब कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا रोज़े से थीं और घर में सिवाए एक रोटी के कुछ न था । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपनी बांदी से इर्शाद फ़रमाया : इसे वोह रोटी दे दो, तो बांदी ने कहा : आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इफ़्तारी के लिये इस के सिवा कुछ नहीं । सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : इसे वोह रोटी दे दो । बांदी कहती हैं : तो मैं ने वोह रोटी उसे दे दी जब हम ने शाम की तो अहले बैत या उस शख़्स ने जो हमें हदिय्या करता था, एक बकरी हदिय्या की, लाने वाला उस गोश्त को कपड़े में ढांपे हुए लाया आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ख़ादिमा को बुला कर फ़रमाया : लो, इस में से खाओ, येह तुम्हारी उस रोटी से बेहतर है ।

(شُعَبُ الاِیْمَان، باب فی الزکاۃ، فصل ما جاء فی الایثار، ۳/۲۶۰، الحدیث:۳۴۸۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मक़ामे तवक्कुल यक़ीनन बहुत बुलन्द था कि बांदी ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इफ़्तारी के लिये जो रोटी बचा कर रखी हुई थी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करते हुए उस को भी ईसार फ़रमा दिया, **अल्लाहु अक्बर ! तवक्कुल** हो तो ऐसा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसा तवक्कुल व ईसार का जज़्बा हमें भी अता फ़रमाए । اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तवक्कुल की हक़ीक़त

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : तवक्कुल येह है कि इस बात पर तेरा पुख़्ता यक़ीन हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो वा'दा फ़रमाया है या'नी जो कुछ तेरे मुक़द्दर में लिख दिया है, वोह हर हाल में तुझे मिल कर रहेगा । अगर्चे पूरी दुन्या उस की राह में रुकावट डालने की कोशिश करे, (तब भी उस को रोका नहीं जा

www.dawateislami.net

सकता) और जो कुछ तेरी तक़्दीर में नहीं लिखा, वोह तुझे कभी नहीं मिलेगा अगर्चे उस (को हासिल करने) के लिये पूरी दुन्या तेरी मदद करे। (اَیُّھَا الْوَلَد، ص۲۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

निराली मेहमान नवाज़ी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان जो कि कामिलुल ईमान मोमिन थे उन की शाने तवक्कुलो ईसार बहुत अ़ज़ीम थी, चुनान्चे आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये इस ज़िम्न में एक वाक़िआ़ पेश किया जाता है, बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में एक बार एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा, सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तमाम उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ के घरों में मा'लूम करवाया (कि कोई खाने की चीज़ मिल जाए) मगर किसी के यहां कोई खाने की चीज़ न थी। शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان से) इर्शाद फ़रमाया : सुन लो ! जो आज की रात इस शख़्स को मेहमान बनाए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर रह़्म फ़रमाएगा। तो एक अन्सारी ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं (मेहमान बनाऊंगा। फिर मेहमान को अपने दौलत ख़ाने पर ले गए) घर जा कर अपनी अह्लिया से फ़रमाया : (येह) **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मेहमान है, (घर में) कुछ बचा कर न रखना। उन्हों ने कहा : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! सिर्फ़ बच्चों के लिये थोड़ा सा खाना है। अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : जब बच्चे शाम को खाने का इरादा करें तो उन को सुला देना (और जब मेहमान खाना खाने लगे तो) चराग़ बुझा देना आज रात हम भूके रहेंगे। उन्हों ने ऐसा ही किया।

जब सुब्ह़ बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हुए तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बारे में फ़रमाया : फ़ुलां और फ़ुलाना से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ बहुत ख़ुश और राज़ी हुवा।

(شُعَبُ الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل ما جاء فی الایثار، ۳/۲۵۸، الحدیث:۳۴۷۸)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

आक़ा दूसरे दिन के लिये खाना न बचाते

इस हिकायत सरापा नसीहत से तरबिय्यत के बहुत सारे म-दनी फूल मुयस्सर आते हैं। म-सलन शहन्शाहे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस क़दर सा-दगी के आलम में ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे कि किसी भी उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ के घर से रात को खाना बरआमद न हुवा। हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवक्कुल का आलम येह था कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दूसरे दिन के लिये खाना बचा कर नहीं रखते थे। उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी मुसल्सल तीन दिन तक पेट भर कर खाना नहीं खाया हालां कि खा सकते थे मगर (खाने के बजाए) ईसार कर दिया करते थे।

(اَلتَّرْغِيب وَالتَّرهِيب، كتاب التوبة والزهد، الترغيب فى الزهد فى الدنيا...الخ، ص١٠٢٢، الحديث:٨٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत का दम भरने वालियो ! देखा आप ने ! मक्की म-दनी सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवक्कुल का आलम क्या था कि कभी दूसरे दिन के लिये खाना बचा कर नहीं रखा और मुसल्सल तीन दिन तक पेट भर कर खाना नहीं खाया करते थे बल्कि ईसार फ़रमा दिया करते थे और एक हम हैं जो इश्क़े रसूल का दा'वा करने के बा वुजूद माल जम्अ़ करने की फ़िक्र से ही ख़लासी (छुटकारा) नहीं पाते हालां कि सच्चा मुहिब अपने महबूब की अदाओं को अपनाने का भरपूर जज़्बा रखता है चुनान्चे किसी शाइर का क़ौल है :

لَوْ كَانَ حُبُّكَ صَادِقًا لَاَطَعْتَهُ
اِنَّ الْمُحِبَّ لِمَنْ يُّحِبُّ مُطِيْعٌ

या'नी अगर तेरी महब्बत में सदाक़त होती तो तू ज़रूर उस की इताअ़त करता क्यूं कि मुहिब तो अपने महबूब की बात माना करता है। (بَحْرُ الدُّمُوْع، مقدّمة المؤلف،ص١٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ब्रे अन्वर की जगह ईसार कर दी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बा'दे वफ़ात शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवारे रहमत में

www.dawateislami.net

दफ़्न होने की जगह पाना कितनी बड़ी खुश नसीबी है बल्कि हम गुलामों के लिये तो मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में दफ़्न होना ही बहुत बड़े शरफ़ की बात है (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी येह सआदत नसीब फ़रमाए) फिर सरकारे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रौज़ए अन्वर में दफ़्न होने की सआदत का कौन अन्दाज़ा लगा सकता है और जो इस अज़ीम सआदत को किसी दूसरे मुसल्मान के लिये ईसार कर दे उस की शान किस क़दर बुलन्द होगी।

आइये ! सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इस अज़ीमुश्शान ईसार का वाक़िआ पढ़िये और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ईसार की एक झलक मुला-हज़ा कीजिये, चुनान्चे जब अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने शहज़ादे हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को फ़रमाया : उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में चले जाओ और उन से अर्ज़ करो। उमर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने आप को सलाम भेजा है, "**अमीरुल मुअमिनीन**" का लफ़्ज़ न कहना क्यूं कि आज मैं मुसल्मानों का अमीर नहीं हूं। और उन से अर्ज़ करो : उमर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) इस बात की इजाज़त चाहता है कि इसे इस के दोस्तों के साथ दफ़्न किया जाए (और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कुर्ब में जगह अता फ़रमाई जाए)। फिर हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह बिन उमर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में हाज़िर हुए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को रोते हुए पाया। हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह बिन उमर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अर्ज़ की : हज़रते उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप को सलाम अर्ज़ कर रहे हैं और इस बात की इजाज़त चाहते हैं कि इन्हें इन के दोस्तों के कुर्ब में दफ़्न किया जाए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने येह सुन कर इर्शाद फ़रमाया : येह जगह तो मैं ने अपने लिये रखी थी लेकिन अब मैं येह जगह उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ईसार करती हूं। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह बिन उमर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا वापस तशरीफ़ लाए।

जब हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह बिन उमर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के आने की ख़बर दी गई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मुझे बिठा दो। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सहारा दे कर बिठा दिया गया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : (ऐ मेरे बेटे !) क्या ख़बर लाए हो ? अर्ज़ की : ऐ अमीरुल मुअमिनीन जिस चीज़ को आप पसन्द फ़रमाते हैं उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

www.dawateislami.net

ने (उस की) इजाज़त अ़ता फ़रमा दी है, येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! (मुझे मेरी पसन्दीदा चीज़ मिल गई है) मुझे इस चीज़ से ज़ियादा और किसी चीज़ की फ़िक्र न थी।

(لُبَابُ الْاِحْیَاء، وفاۃ عمر رضی اللّٰہ عنہ، ص ۳۵۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बच्चों को ईसार करना सिखाइये !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमें चाहिये कि अपनी औलाद को भी म-दनी तरबिय्यत करते हुए इन्हें सिखाएं कि किसी मुसल्मान की ज़रूरत पर अपनी ज़रूरत को कुरबान कर देने का बड़ा अज्रो सवाब है। बच्चे को इस का आ़दी बनाने के लिये मुख़्तलिफ़ अवक़ात में उसे ईसार की अ़-मली मश्क़ इस त़रह़ करवाएं कि वोह चीज़ें जो उस की मिल्किय्यत में नहीं, उस के हाथ से दूसरों को दिलाएं ताकि इसे बड़ा होने के बा'द अपनी ज़रूरत की चीज़ें दूसरे के लिये ईसार करने की आ़दत पड़े। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर (दूसरे को) तरजीह़ दे, तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उसे बख़्श देता है।''**

(الطبقات الشافعیۃ، الطبقۃ الخامسۃ......الخ، کتاب کسر الشھوتین، ۶/۳۳۵)

ईसार करने वाली पर आक़ा का करम

एक इस्लामी बहन के साथ पेश आने वाली एक म-दनी बहार मुख़्तसरन अ़र्ज़े ख़िदमत है : बम्बई के एक अ़लाक़े में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से इस्लामी बहनों के होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (पीर शरीफ़ 22 **स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र** 1428 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ **12.3.2007**) के इख़्तिताम पर एक ज़िम्मेदार इस्लामी बहन के पास किसी नई इस्लामी बहन ने अपनी चप्पल की गुम शु-दगी की शिकायत की। ज़िम्मादार इस्लामी बहन ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उसे अपनी चप्पल की पेशकश की। वहां मौजूद एक दूसरी इस्लामी बहन जिन को म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हुए अभी तक़रीबन सात ही माह हुए थे, उस ने आगे बढ़ कर येह कहते हुए कि क्या **दा'वते इस्लामी** की ख़ात़िर मैं इतनी कुरबानी भी नहीं दे सकती ! ब इसरार अपनी चप्पलें पेश कर के उस नई इस्लामी

www.dawateislami.net

बहन को क़बूल करने पर मजबूर कर दिया और ख़ुद पा बरह्ना (या'नी नंगे पाउं) घर चली गई। रात जब सोई तो उस की क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी ! क्या देखती है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना चांद सा चेहरा चमकाते हुए जल्वा फ़रमा हैं, नीज़ एक मुअम्मर मुबल्लिग़े **दा'वते इस्लामी** सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजाए क़दमों में हाज़िर हैं। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : चप्पल ईसार करते वक़्त तुम्हारी ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ "क्या **दा'वते इस्लामी** की ख़ातिर मैं इतनी क़ुरबानी भी नहीं दे सकती ?" हमें बहुत पसन्द आए हैं। (इलावा अज़ीं भी हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई) (मदीने की मछली, स. 36)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल में ईसार की भी क्या ख़ूब म-दनी बहार है ! नीज़ ईसार की फ़ज़ीलत के भी क्या ही अन्वार हैं ! मज़्कूरा ह़दीसे पाक में आप मुला-ह़ज़ा कर चुकी हैं कि जो शख़्स दूसरे को अपने ऊपर तरजीह़ देता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है। रब की बारगाह से बख़्शिश का परवाना मिल जाए तो और क्या चाहिये ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क्या आप अपनी आख़िरत की बेहतरी की ख़ातिर **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के लिये हर रोज़ **2** घन्टों की क़ुरबानी नहीं दे सकतीं ? मक़ामे ग़ौर है ! क्या **दा'वते इस्लामी** की ख़ातिर इतनी क़ुरबानी भी नहीं दे सकतीं ?

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 193)

या रब्बे मुस्तफ़ा ! हमें ख़ुशदिली और अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ ख़ूब ख़ूब ईसार करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा और हमें मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला इनायत कर और अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में जगह अ़ता फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

बयान ﴾17﴿...... सय्यि-दतुना आइशा का इश्क़े रसूल

एक बार दुरूदे पाक पढ़ने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू तल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि एक दिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरे पर मसर्रत व बश्शाशत (या'नी खुशी) के आसार थे, सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आज तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरे पर चमक दमक और खुशी के आसार दिखाई दे रहे हैं ? तो इर्शाद फ़रमाया : ''हां ! (आज मैं क्यूंकर खुश न होउंगा कि) मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से एक आने वाला मेरे पास आया उस ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का **जो उम्मती आप** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **पर एक बार दुरूद भेजे उस के इवज़ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस के लिये 10 नेकियां लिखता है उस के 10 गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाता है और उस के 10 द-रजात बुलन्द फ़रमाता है और उसी दुरूदे पाक की मिस्ल उस शख़्स पर लौटाता है (या'नी अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ख़ुद भी उस बन्दे पर दुरूद भेजता है) ।**

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند المدنيين، حديث ابی طلحة زيد بن سهل...الخ، ٦/٦٢٥، الحديث:١٦٧٩٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़लावते ईमान पाने का नुस्ख़ा

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : तीन चीज़ें जिस में हों वोह ईमान की ह़लावत पा लेता है : (1)...... जिस को **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم सारे आ़लम से ज़ियादा प्यारे हों (2)...... जो किसी बन्दे को ख़ास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़बूब रखता और (3)...... जो कुफ़्र में लौटने को ऐसा बुरा जानता हो जैसा अपने आप को आग में डाले जाने को बुरा जानता है ।

(صَحِيْحُ الْبُخَارِی، كتاب الايمان، باب حلاوة الايمان، ص٧٤، الحديث:١٦)

www.dawateislami.net

महब्बते रसूल जाने ईमान

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़दीस शरीफ़ में **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की महब्बत को ईमान की जान क़रार दिया गया है और इस महब्बत को ईमान की दूसरी ह़लावतों पर मुक़द्दम कर के इस की ग़ैर मा'मूली अहम्मिय्यत भी बताई गई है जिस से वाज़ेह़ होता है कि महब्बते रसूल, जान, माल, औलाद वग़ैरा हर चीज़ पर फ़ौक़िय्यत रखती है, अगर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत पूरे तौर पर दिल में जा गुज़ीं हो तो दिलो दिमाग़ और जिस्मो रूह़ पर किताबो सुन्नत की ऐसी हुकूमत क़ाइम हो जाती है कि **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के बारे में गुस्ताख़ी से भरा एक ह़र्फ़ भी बरदाश्त नहीं हो सकता, चुनान्चे

हुज़ूर से वालिहाना महब्बत

एक दफ़्आ़ यहूदिय्यों का वफ़्द महबूबे रब्बे ज़ुल जलाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुवा, उन्हों ने "اَلسَّامُ عَلَیْکُمْ" कहा, या'नी आप पर मौत वाक़ेअ़ हो । (مَعَاذَاللہ) । **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "मैं इन अल्फ़ाज़ को समझ गई और मैं ने उन्हें "وَعَلَیْکُمُ السَّامُ وَاللَّعْنَۃُ" कहा या'नी तुम पर मौत और ला'नत वाक़ेअ़ हो । फ़रमाती हैं : (मेरा येह जवाब सुन कर) शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! रुक जाओ, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर मुआ़-मले में नरमी को पसन्द फ़रमाता है ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या जो कुछ उन्हों ने कहा है आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने नहीं सुना ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने (सुन लिया था और जवाब में सिर्फ़) "وَعَلَیْکُمْ" कह दिया था या'नी तुम पर वोही कुछ हो जो तुम ने कहा है ।"

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب الادب، باب الرفق فی الامر کلہ، ص۱۵۰۲، الحدیث:۶۰۲۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का येह ग़ज़ब व ग़ुस्सा हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की वालिहाना महब्बत की बिना पर था कि तुम ने महबूब को येह क्यूं कहा । एक रिवायत में ला'नत के साथ ग़ज़ब का लफ़्ज़ भी आया है कि उम्मुल मुअमिनीन ने उन्हें **3** बद-दुआएं दीं : (1).... मौत की (2).... ला'नत की (3).... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब की ।

www.dawateislami.net

शारेहे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इर्शाद फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि जंग व मुना-ज़रे में कुफ़्फ़ार पर सख़्ती महबूब है मगर जब वोह हमारे घर हम से मिलने आवें तब उन पर नरमी की जावे लिहाज़ा येह हदीस इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं कि وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ (پ۱۰، التوبة:۷۳) (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन पर सख़्ती करो ।) मुख़्तलिफ़ मक़ामात के मुख़्तलिफ़ अहकाम होते हैं। हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने आ'ला अख़्लाक़ की ता'लीम दी वोह भी मेहमान कुफ़्फ़ार के साथ वरना हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मनों पर सख़्ती करना इबादत है । हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मेहमान कुफ़्फ़ार की ख़ातिर तवाज़ोअ़ करते थे लिहाज़ा इस हदीस से येह धोका न दिया जाए कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के दुश्मनों पर नरमी करनी चाहिये मेहमान का हुक्म कुछ और है।

(مرآۃ المناجیح، کتاب الاداب، باب السلام، ۳۱۹/۶-۳۲۰، ملتقطا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आक़ा की शान में गुस्ताख़ी ना मन्ज़ूर !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बे पनाह महब्बत थी कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस में अदना सी गुस्ताख़ी भी बरदाश्त न करती थीं बल्कि तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की येही कैफ़िय्यत थी कि जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में किसी भी क़िस्म की गुस्ताख़ी सुनना इन्हें गवारा न होता था और वोह गुस्ताख़े रसूल की बिल्कुल रिआयत नहीं करते थे ख़्वाह वोह उन के अपने वालिदैन ही क्यूं न हों, अपने बारे में तो गाली सुन लेते थे लेकिन सुल्ताने बहरो बर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में ना ज़ैबा कलिमात तक बरदाश्त न करते थे, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन उमैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, एक आदमी नबिय्ये मुख़्तार, साहिबे पसीनए ख़ुश्बूदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने अपने दुश्मनों को सामने आता हुवा पाया और उन में मेरा वालिद भी था जिस से मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में गुस्ताख़ी सुनी जिसे मैं बरदाश्त न कर सका लिहाज़ा मैं ने उसे नेज़ा मारा या क़त्ल कर दिया। इस पर आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे ।

(السنن الكبرى للبيهقي، كتاب السير، باب المسلم يتوقى فى الحرب ...الخ، ۴۶/۹، الحديث:۱۷۸۳۶)

www.dawateislami.net

हुर्मते महबूबे रहमान पर जान कुरबान

हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन अतिय्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है फ़रमाते हैं : नबिय्ये अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक लश्कर रवाना फ़रमाया जिस में हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाहा और हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا भी थे जब उन्हों ने मुश्रिकीन के ख़िलाफ़ सफ़ें बनाईं तो एक शख़्स आया और उस ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ी की, तो एक मुसल्मान ने कहा : मैं फ़ुलां बिन फ़ुलां हूं और मेरी वालिदा फ़ुलां है (अब जब कि मैं ने तुम्हें अपना नसब बयान कर दिया है) तो तू मुझे और मेरी वालिदा को गाली दे ले मगर मक्की म-दनी सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में ऐसा न कह।

मगर उस ने फिर वोही गुस्ताख़ी की, सहाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उसे दोबारा येही कहा और उस शख़्स ने भी दोबारा गुस्ताख़ी की तो सहाबिये रसूल ने फ़रमाया : अब अगर तूने तीसरी मर्तबा गुस्ताख़ी की तो मैं अपनी तलवार के साथ तेरे ऊपर आ जाऊंगा। उस ने फिर गुस्ताख़ी की, (जां निसार) सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपनी तलवार निकाल कर उस का पीछा किया हत्ता कि मुश्रिकीन की सफ़ तोड़ कर उस (गुस्ताख़) को अपनी तलवार से मारा और मुश्रिकीन ने जम्अ़ हो कर उस जां निसार सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को शहीद कर दिया। इस पर रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम उस आदमी पर तअ़ज्जुब करते हो जिस ने **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم को तक्लीफ़ पहुंचाई? (مكارم الاخلاق، باب فی صدق البأس وما جاء فيه، ص١٣٨، الحديث:١٧٨)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى الله تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم

ख़ाक हो कर इश्क़ में आराम से सोना मिला
जान की इक्सीर है उल्फ़त रसूलुल्लाह की

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 153)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आक़ा को रोते देख कर रोने लगीं

हज़रते सय्यिदुना इमाम शम्सुद्दीन अबू **अ़ब्दुल्लाह** मुहम्मद बिन अहमद अन्सारी कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : जब **हिज्जतुल वदाअ़** के मौक़अ़ पर **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम लोगों को साथ ले कर चले और ह़जून की घाटी पर से गुज़रे तो रन्जो ग़म में डूबे हुए रोने लगे और **शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **को रोता देख कर मैं भी रोने लगी।** फिर नबिय्ये मुकर्रम, ताजदारे अ़-रबो अ़जम, शहन्शाहे उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم छलांग लगा कर (अपनी ऊंटनी से) नीचे तशरीफ़ ले आए और मुझ से फ़रमाया : ऐ हुमैरा ! (यहीं) ठहरी रहो। मैं ने ऊंट के पहलू से टेक लगा ली। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काफ़ी देर मुझ से दूर रहे फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुश ख़ुश मुस्कुराते हुए मेरे पास वापस तशरीफ़ लाए। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप पर मेरे मां बाप कुरबान ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रन्जो ग़म में डूबे हुए मेरे पास से तशरीफ़ ले गए थे मगर शादां व फ़रहां मुस्कुराते हुए वापस लौटे, **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह क्या माजरा है ? नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं अपनी वालिदा ह़ज़रते सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की क़ब्र के पास से गुज़रा तो मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से सुवाल किया कि वोह उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दे (मेरे सुवाल करने पर) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया और वोह मुझ पर ईमान लाईं फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें वापस (पहली ह़ालत पर) लौटा दिया।

(التذکرة فی احوال الموتی وامور الآخرة، باب ما یذکر الموت الآخرة، فصل ذکر فیه فائدة زیارة القبور، ۱/۱۳۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाहु अक्बर ! येह था उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इश्क़े रसूल कि सरकारे दो आ़लम, शाहे उमम, रसूले मुह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रोना भी इन से बरदाश्त न होता था इसी लिये तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रोता देख कर ख़ुद रोने लगीं।

जान है इश्क़े मुस्त़फ़ा रोज़ फ़ुज़ूं करे ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यूं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 94)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईमाने अ-बवैने करीमैने मुस्त़फ़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा रिवायत में शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वालिदए मोह़-त-रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ईमान का तज़्किरा है, ईमाने वालिदैने मुस्त़फ़ा के बारे में आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत,

www.dawateislami.net

परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द **14** में इर्शाद फ़रमाते हैं : मज़्हबे सह़ीह़ येह है कि हु़ज़ूरे अक़्दस, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **वालिदैने करीमैन** ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** और ह़ज़रते सय्यि-दतुना आमिना رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا अहले तौह़ीद व इस्लाम व नजात थे बल्कि हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आबा व उम्महात ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** व आमिना (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) से ह़ज़रते आदम व ह़व्वा (عَلَيْهِمَا السَّلَام) तक मज़्हबे अरजह़ में सब अहले इस्लाम व तौह़ीद हैं।

قَالَ اللهُ تَعَالٰی (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया) :

الَّذِیْ یَرٰىكَ حِیْنَ تَقُوْمُ ﴿۲۱۸﴾ وَ تَقَلُّبَكَ فِی السّٰجِدِیْنَ ﴿۲۱۹﴾ (پ۱۹، الشعراء:۲۱۸۔۲۱۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो तुम्हें देखता है जब तुम खड़े होते हो और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को।

इस आयए करीमा की तफ़्सीर में सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नूर एक नमाज़ी से दूसरे नमाज़ी की त़रफ़ मुन्तक़िल होता आया और ह़दीस में है कि रब عَزَّوَجَلَّ ने नूरे अक़्दस की निस्बत फ़रमाया कि इसे अस्लाबे त़य्यिबा व अरह़ामे त़ाहिरा में रखूंगा और रब عَزَّوَجَلَّ कभी किसी काफ़िर को त़य्यिब व त़ाहिर न फ़रमाएगा।

اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ (پ۱۰، التوبة:۲۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुशरिक निरे (बिल्कुल) नापाक हैं। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 273)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आक़ा की भूक देख कर रो पड़ीं

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से खाना क्यूं त़लब नहीं फ़रमाते ताकि वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खिलाए ? फ़रमाती हैं : मैं शाहे अबरार, ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भूक देख कर रोने लगी। इस पर मेरे सरताज, साहि़बे मे'राज, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا) ! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर मैं अपने **रब** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करूं कि येह दुन्या के पहाड़ सोने के बन कर मेरे साथ चलें तो जहां मैं चाहता वोह उन पहाड़ों को मेरे साथ चला देता लेकिन

www.dawateislami.net

मैं ने दुन्या की सैरी पर भूक, दुन्यवी ग़िना पर फ़क्र और दुन्यवी ख़ुशी पर ग़म को इख़्तियार किया है।"

ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **) !** मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और आले मुहम्मद के लिये दुन्या मुनासिब नहीं।

ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **) ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **ऊलुल अ़ज़्म** रसूलों के लिये दुन्या की ना पसन्दीदा चीजें मिलने और पसन्दीदा चीजें (न मिलने पर) सब्र करने को पसन्द फ़रमाया है फिर मुझे भी इन्हीं बातों का मुकल्लफ़ बनाना पसन्द फ़रमाया जिन का उन्हें (या'नी रसूलों को) मुकल्लफ़ बनाया था, चुनान्चे **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ (پ۲۶، الاحقاف:۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो तुम सब्र करो जैसा हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया।

(شرح السنة، كتاب الرقاق، باب القناعة بالقليل من الدنيا، ۱۴/۲۴۷، الحديث: ۴۰۴۶)

एक रिवायत में मज़ीद येह भी : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझ पर इस की इताअ़त ज़रूरी है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं (इन मुश्किलात पर) ज़रूर सब्र करूंगा जैसे **ऊलुल अ़ज़्म** रसूलों ने सब्र किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई ताक़त नहीं।"

(احياء علوم الدين، كتاب الفقر والزهد، بيان فضيلة الزهد، ۴/۲۷۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ाक़ा कशिये मुस्तफ़ा के बाइस सय्यिदह आइशा का आंसू बहाना

इसी से मिलती जुलती एक और रिवायत में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं : ताजदारे अ़-रबो अ़जम, शहन्शाहे उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का शि-कमे मुबारक कभी भी न भरा और न कभी इस का शिक्वा किया आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शिकम सैर होने से फ़ाक़ा ज़ियादा पसन्द था जब मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की भूक की صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पेट मुबारक पर हाथ फेरती तो आप ह़ालत देख कर मुझे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर रह़्म आता और मैं रोते हुए अ़र्ज़ करती : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब ! मेरी जान आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर दुन्या में इतनी ग़िज़ा ले लें जो आप की भूक के लिये काफ़ी हो (तो क्या है)

सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! मुझे इस दुन्या से क्या तअ़ल्लुक़ ?

फिर इर्शाद फ़रमाया : मुझ से पहले जो **ऊलुल अ़ज़्म** रसूल गुज़रे हैं उन्हों ने इस से ज़ियादा तक्लीफ़ देह ह़ालत पर सब्र किया और वोह इसी ह़ालत में चले गए। जब वोह **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त**

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर पहुंचे तो **अल्लाह तबा-र-क व तआला** ने उन के अन्जाम को बहुत मुअ़ज़्ज़ज़ बना दिया और उन के सवाब को और बढ़ा दिया, मुझे इस से ह़या आती है कि मैं अपनी ज़िन्दगी खुशह़ाल गुज़ारूं और कल द-रजे में अपने भाइयों से पीछे रह जाऊं।

(كتابُ الشِّفَاء، الباب الثانی فی تکمیل اللّٰہ تعالٰی لہ المحاسن ...الخ، فصل زهده فی الدنیا، الجزء الاوّل، ص١١٤)

कौनो मकां के आक़ा हो कर दोनों जहां के दाता हो कर
फ़ाक़े से हैं सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 646)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सरकारे आ़ली वक़ार की दुन्या से बे रग़बती

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मह़बूब को मुश्किलात में देखना मुह़िब के दिल पर बहुत शाक़ गुज़रता है, मह़बूब को तक्लीफ़ पहुंचे तो दर्द मुह़िब को होता है इसी लिये उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सरकारे आ़ली वक़ार, शाफ़ेए रोज़े शुमार, मह़बूबे खुदाए ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की भूक को देख कर खुद रो पड़ती थीं। سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दोनों जहां के मालिको मुख़्तार हो कर शहन्शाहे खुश ख़िसाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुन्या से ऐसी बे रग़बती ! **अल्लाहु अक्बर !** यक़ीनन सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़क़्र इज़्तिरारी न था बल्कि इख़्तियारी था जैसा कि बयान कर्दा रिवायत में आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इस फ़रमान से ज़ाहिर होता है कि इर्शाद फ़रमाया : "अगर मैं अपने **रब** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करूं कि येह दुन्या के पहाड़ सोने के बन कर मेरे साथ चलें तो जहां मैं चाहता वोह उन पहाड़ों को मेरे साथ चला देता।" लेकिन फिर भी मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ-लमिय्यान, मकीने ला मकान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ता'लीमे उम्मत के लिये ग़ना की बजाए फ़क़्र को इख़्तियार फ़रमाया लेकिन आह ! एक हम इश्क़े रसूल का दा'वा करने वालियों का ह़ाल है कि मालो दौलत की मह़ब्बत ऐसी घर किये हुए है कि फ़र्ज़ होने के बा वुजूद माल कम होने के ख़ौफ़ से ज़कात अदा करने को जी नहीं चाहता, **याद रखिये !** इस्लामी बहनों पर ज़ेवरात की ज़कात भी फ़र्ज़ है अगर्चे वोह ज़ेवरात इस्ति'माली हों, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा **903** पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सोना चांदी जब कि ब क़दरे निसाब हों तो उन की ज़कात चालीसवां ह़िस्सा **(1/40)** है, ख़्वाह वोह वैसे ही हों या उन की कोई चीज़ बनी

www.dawateislami.net

हुई हो ख़्वाह उस (बनी हुई चीज़) का इस्ति'माल जाइज़ हो जैसे औरत के लिये ज़ेवर या इस्ति'माल ना जाइज़ हो जैसे चांदी सोने के बरतन वग़ैरा (दोनों सूरतों में इन पर ज़कात फ़र्ज़ है)।

(حَاشِيَةُ اِبْنِ عَابِدِيْن عَلَى الدُّرِّ الْمُخْتَار، كتاب الزكوٰة، باب زكوٰة المال،٣/٢٧٠،ملتقطًا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बरोज़े क़ियामत आग के कंगन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! फ़र्ज़ होने के बा वुजूद ज़कात अदा न करना ह़राम और बरोज़े क़ियामत दर्दनाक अ़ज़ाब का ह़क़दार बनाने वाला काम है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं : मैं और मेरी ख़ाला, शाहे अबरार, नबिय्ये मुख़्तार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुईं, ख़ाला ने सोने के कंगन पहने हुए थे। नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम इस की ज़कात देती हो ? ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं, हम ने अ़र्ज़ की : नहीं। इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम डरती नहीं हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें आग के कंगन पहनाए ? इस की ज़कात अदा करो। (مسند احمد بن حنبل، مسند القبائل، من حديث اسماء ابنة يزيد، ١١/٣٤٠، الحديث:٢٨٣٨١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

विसाले मुस्त़फ़ा पर सय्यिदह आइशा के इश्क़ भरे अल्फ़ाज़

जब सरकारे आ़ली वक़ार, मक्के मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़ुज़ूर अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाले पुर मलाल हुवा तो आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़ौजए मोह़-त-रमा उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इस सानिह़ए अ़ज़ीमा पर अपने रन्जो ग़म का इज़्हार करते हुए कहा : **हाए अफ़्सोस !** वोह नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन्हों ने फ़क़्र को ग़ना पर और मिस्कीनी को दौलत मन्दी पर तरजीह़ दी, **अफ़्सोस !** वोह मुअ़ल्लिमे दीन जो गुनहगार उम्मत की फ़िक्र में कभी पूरी रात आराम से न सोए, हम से रुख़्सत हो गए, जिन्हों ने हमेशा सब्रो इस्तिक़ामत से अपने नफ़्स के साथ मुक़ाबला किया, जिन्हों ने बुराइयों पर कभी तवज्जोह न की, जिन्हों ने नेकी और एह़सान के दरवाज़े कभी ज़रूरत मन्दों पर बन्द न किये, जिस रोशन ज़मीर के दामन पर दुश्मनों की ईज़ा

www.dawateislami.net

रसानी का गर्दो गुबार कभी न बैठा। (सहाबए किराम का इश्क़े रसूल, स. 238)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदह आइशा के इश्क़े रसूल से मा'मूर अश्आर

मन्क़ूल है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने रसूले बे मिसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुस्नो जमाल को बयान करते हुए येह अश्आर पढ़े :

فَلَوْ سَمِعُوْا فِیْ مِصْرٍ اَوْصَافَ خَدِّہٖ لَمَا بَذَلُوْا فِیْ سَوْمِ یُوْسُفَ مِنْ نَقْدٍ

لَوَاحِیْ زُلَیْخَا لَوْ رَاَیْنَ جَبِیْنَہٗ لَاٰثَرْنَ بِالْقَطْعِ الْقُلُوْبَ عَلَی الْاَیْدِیْ

(شَرْحُ الزُّرْقَانِی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاهرات ...الخ، عائشة اُمّ المؤمنین، ۴/۳۹۰)

तर-ज-मए अश्आर : अगर अहले मिस्र शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़्सारे मुबारक के औसाफ़ सुन लेते तो जनाबे यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की क़ीमत लगाने में सीमो ज़र न बहाते।

अगर ज़ुलैख़ा को मलामत करने वाली औरतें आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जबीने अन्वर देख पातीं तो हाथों के बजाए अपने दिल काटने को तरजीह़ देतीं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह व रसूल को इख़्तियार किया

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ पारह **21**, **सू-रतुल अह़ज़ाब** में इर्शाद फ़रमाता है :

یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا وَ زِیْنَتَهَا فَتَعَالَیْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَ اُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِیْلًا ﴿۲۸﴾ وَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِیْمًا ﴿۲۹﴾

(پ۲۱، الاحزاب:۲۸-۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) अपनी बीबियों से फ़रमा दे अगर तुम दुन्या की ज़िन्दगी और इस की आराइश चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें माल दूं और अच्छी त़रह़ छोड़ दूं और अगर तुम **अल्लाह** और उस के रसूल और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक **अल्लाह** ने तुम्हारी नेकी वालियों के लिये बड़ा अज्र तय्यार कर रखा है।

www.dawateislami.net

जब येह आयाते मुबा-रका नाज़िल हुई तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से फ़रमाया : ऐ आइशा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) ! मैं तुझ पर एक बात पेश करता हूं, उस में जल्दी न करना जब तक अपने वालिदैन से मश्वरा न कर लो (जवाब न देना)।

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह क्या बात है ? शाहे उमम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़िक्र कर्दा आयए मुबा-रका तिलावत फ़रमाई।

(इस पर) मह़बूबए मह़बूबे ख़ुदा, सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में अपने वालिदैन से मश्वरा करूं ? बल्कि मैं **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم और आख़िरत के घर को इख़्तियार करती हूं।

(صحیح مسلم، کتاب الطلاق، باب بیان ان تخییر امراته...الخ، ص۵۶۲، الحدیث:۱۴۷۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को सब से पहले पूछा और दोनों चीज़ों का इख़्तियार दिया और फ़रमाया कि अपने वालिदैन से भी मश्वरा कर लो लेकिन सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم से कैसी मह़ब्बत थी कि इस सिल्सिले में वालिदैन से मश्वरे की ह़ाजत भी न समझी और फ़ौरन **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم को इख़्तियार किया और इस बात का अ़-मली सुबूत फ़राहम किया कि मुझे **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जान व माल, वालिदैन और औलाद सब से ज़ियादा मह़ब्बत है, **ऐ काश !** उम्मुल मुअमिनीन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم से मह़ब्बत का एक क़त़रा हमें भी नसीब हो जाए और हम अपने वक़्त को मालो दौलत की फ़िक्र और इस्यां में बरबाद करने की बजाए **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की इत़ाअ़त वाले कामों में सर्फ़ करना शुरूअ़ कर दें। اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नबिय्ये रह़मत की निस्बत से मह़ब्बत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शहन्शाहे खुश खि़साल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली चीज़ों से मह़ब्बत रखना खुद नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में दाखि़ल है, कुदरती तौ़र पर इन्सान जिस से मह़ब्बत रखता है उस के साथ निस्बत रखने वाली तमाम निस्बतों को भी मह़बूब जानता है लिहाज़ा शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत रखने वाले भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वत़ने पाक और यहां के रहने वालों और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली हर चीज़ के साथ दिलो जान से मह़ब्बत करते हैं । इस तौ़र पर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत के बेशतर वाक़िआत मरवी हैं, चुनान्चे

हुज़ूर का कम्बल मुबारक

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बयान है कि सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने हमारे सामने एक पैवन्द वाला कम्बल निकाला और फ़रमाया : इसी (कम्बल) में रसूले अन्वर, साहि़बे कौसर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूहे़ मुबा-रका क़ब्ज़ की गई ।

(صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب ما ذکر من درع النبی وعصاہ ...الخ، ص۷۹٦، الحدیث:۳۱۰۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदह आइशा का हुज़ूर के तबर्रुकात की ज़ियारत कराना

शारेहे़ मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इसी मफ़्हूम की रिवायत के तह़त फ़रमाते हैं : बा'ज़ ह़ज़रात उम्मुल मुअमिनीन आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की खि़दमत में हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के तबर्रुकात की ज़ियारत करने आया करते थे और आप (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) उन्हें ज़ियारत कराती थीं ।

मज़ीद फ़रमाते हैं : येह उस दुआ़ का असर है कि (सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारगाहे इलाही में येह दुआ़ किया करते थे :) **اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِىْ مِسْكِيْنًا وَاَمِتْنِىْ مِسْكِيْنًا** या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी ज़िन्दगी व मौत मिस्कीन हो कर हो ।

www.dawateislami.net

हम जैसे कमीने गुलाम इन के नाम पर ऐश कर रहे हैं और वोह खुद इस हालत में दुन्या से पर्दा फ़रमाते हैं, صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَسَلَّم । ख़याल रहे कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आ'ला व उम्दा लिबास भी पहने हैं मगर उन की आदत न डाली । हर क़िस्म का लिबास बे तकल्लुफ़ पहन लेते थे आख़िर वक़्त येह लिबास जिस्मे अत्हर पर था । (مراٰۃ المناجیح، کتاب اللباس،٦/٩١،ملتقطا)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज हर त़रफ़ बे अ-मली का दौर दौरा है, सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अमल तर्क किया जा रहा है, अपने आप को गुनाहों से बचाना मुश्किल से मुश्किल तर होता जा रहा है ह़त्ता कि अब तो दिलों से गुनाहों की नफ़रत भी ख़त्म होती जा रही है इस पुर फ़ितन दौर में गुनाहों से नफ़रत करने और नेकियां करने का म-दनी ज़ेहन पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इस म-दनी माहोल की ब-र-कत से कई इस्लामी बहनों की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, चुनान्चे

फ़ेशन की पुतली म-दनी बुरक़अ़ पहनने वाली कैसे बनी....?

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब (या'नी खुलासा) है कि **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले मैं बहुत ज़ियादा फ़ेशन एबल थी, फ़ोन के ज़रीए ग़ैर मर्दों से दोस्ती करने में बड़ा लुत्फ़ आता, पड़ोस की शादियों में रस्मे मेहंदी वग़ैरा के मौक़अ़ पर मुझे ख़ास त़ौर पर बुलाया जाता, वहां मैं न सिर्फ़ खुद रक़्स करती बल्कि दूसरी लड़कियों को भी डांडिया रास सिखा कर अपने साथ नचवाती, ला ता'दाद गाने मुझे ज़बानी याद थे, आवाज़ चूंकि अच्छी थी इस लिये मेरी सहेलियां मुझ से अक्सर गाना सुनाने की फ़रमाइश किया करतीं । बद क़िस्मती से घर में **T.V** बहुत देखा जाता था, इस के बेहूदा प्रोग्रामों का मेरी तबाही में बहुत अहम किरदार था । **रबीउ़न्नूर** शरीफ़ की एक सुहानी शाम थी, नमाज़े मग़रिब के बा'द मेरे बड़े भाई घर आए तो उन के हाथ में **मक-त-बतुल मदीना** के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की तीन केसिटें थीं, उन में से एक बयान का नाम "**क़ब्र की पहली रात**" था खुश क़िस्मती से येह केसिट सुनने की मैं ने सआदत ह़ासिल की, क़ब्र का मर्ह़ला किस क़दर कठिन है, इस का एह़सास मुझे येह बयान सुन कर हुवा । मगर **अफ़्सोस !** मेरे दिल पर गुनाहों की लज़्ज़त का इस क़दर ग़-लबा था कि मुझ में कोई ख़ास तब्दीली न आई । **हां !** इतना फ़र्क़ ज़रूर पड़ा कि अब मुझे गुनाहों का एह़सास होने लगा । कुछ ही दिन बा'द पड़ोस में **दा'वते इस्लामी**

www.dawateislami.net

की ज़िम्मेदार इस्लामी बहनों ने ब सिल्सिलए ग्यारहवीं शरीफ़ इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम किया। मुझे भी शिर्कत की दा'वत दी गई। **"क़ब्र की पहली रात"** सुन कर मेरा दिल पहले ही चोट खा चुका था, चुनान्चे मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में जाने का इरादा किया। मगर मेरी ह़माक़त कि ख़ूब मेकअप कर के जदीद फ़ेशन का लिबास पहन कर इज्तिमाअ़ में गई, एक इस्लामी बहन ने वहां सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया, जिसे सुन कर मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई। बयान के बा'द जब मन्क़बत **"या ग़ौस बुलाओ मुझे बग़दाद बुलाओ"** पढ़ी गई, इस ने गोया गर्म लोहे पर हथोड़े का काम किया ! यूं मैं **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शरीक होने लगी। म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दीवानियों की सोह़बतों की ब-र-कत से मेरे दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा हुई, तौबा की सआ़दत मिली और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मैं **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर नेकियों की शाहराह पर ऐसी गामज़न हुई कि मैं वोही फ़ेशन की पुतली जो कि पहले बाहर निकलते वक़्त दुपट्टा भी ठीक त़रह़ से नहीं ओढ़ती थी, कुछ ही अ़र्से में म-दनी बुरक़अ़ पहनने की सआ़दत पाने लगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! आज मैं **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां हूं। (इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 273)

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 193)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मोटापे का सब से बेहतरीन इलाज

सब से बेहतरीन इलाज **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तज्वीज़ फ़रमूदा है और वोह येह कि **"भूक के तीन ह़िस्से कर लिये जाएं एक ह़िस्सा ग़िज़ा, एक ह़िस्सा पानी और एक ह़िस्सा हवा और सांस।"** (كَنْزُالْعُمَّال،الجز ١٥، ٨/١١٠، الحديث:٤٠٨١٣) अगर खाने में **येह त़रीक़ा** अपना लिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ न कभी बदन मोटा होगा न कभी गेस, बादी, पेट में गड़बड़, क़ब्ज़ वग़ैरा का आ़रिज़ा। मगर हाए ! लज़्ज़त ख़ोर नफ़्स की ह़ीला बाज़ियां !

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना
कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 159)

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

बयान (18)..... सय्यि-दतुना आइशा का फ़रामीने मुस्तफ़ा पर अमल

दुरूदे पाक की ब-र-कत से मग़्फ़िरत

मरवी है कि एक औरत ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या शैख़ ! मेरी बेटी फ़ौत हो गई है मेरी ख़्वाहिश है कि मैं उसे ख़्वाब में देखूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से फ़रमाया : "चार रक्अ़तें इस त़रह़ पढ़ो कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द एक मर्तबा सूरए तकासुर पढ़ो और येह चार रक्अ़तें नमाज़े इशा के बा'द होनी चाहिएं फिर करवट के बल लैट कर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते हुए सो जाओ।"

उस ने ऐसे ही किया तो ख़्वाब में अपनी बेटी को देख लिया, उस की बेटी अ़ज़ाब में थी और उस पर तारकोल का लिबास था, उस के हाथ बंधे हुए थे और उस के पाउं आग की ज़न्जीरों में जकड़े हुए थे।

बेदार होने के बा'द वोह औरत ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास ह़ाज़िर हुई और वाक़िए़ की ख़बर दी, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "स-दक़ा करो शायद कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुआ़फ़ फ़रमा दे।"

उस रात जब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सोए तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने देखा गोया कि आप जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में हैं और एक नस्ब शुदा तख़्त देखा जिस पर एक ह़सीनो जमील लड़की बैठी हुई है, उस के सर पर नूर का ताज है, उस ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा : "ऐ ह़सन (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ! क्या आप मुझे पहचानते हैं ?" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाब दिया : "नहीं।" उस ने कहा : "मैं उसी औरत की बेटी हूं जिसे आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने का फ़रमाया था।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हारी मां ने तो तुम्हारी कुछ और ह़ालत बयान की थी।" उस ने जवाब दिया : "उस वक़्त ऐसे ही था।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "किस सबब से तुम इस मर्तबे को पहुंची ?" उस ने जवाब दिया : "जैसा कि मेरी वालिदा ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से बयान किया, हम 70 हज़ार

www.dawateislami.net

अफ़राद अ़ज़ाब में थे, एक नेक शख़्स हमारी क़ब्रों पर से गुज़रा और उस ने एक मर्तबा सरवरे कौनैन, ताजदारे ह़-रमैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ कर उस का सवाब हमें बख़्शा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे क़बूल फ़रमा कर उस नेक शख़्स की ब-र-कत से हम सब को उस अ़ज़ाब से आज़ाद फ़रमा दिया और मुझे जो मेरा ह़िस्सा पहुंचा वोह इस क़दर है जिस का आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुशा-हदा फ़रमा रहे हैं।" (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع، الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ علٰی رسول اللّٰہ، ص١٣٦)

आ़सियो ! जुर्म की दवा है दुरूद

क्या दवा ऐने कीमिया है दुरूद

(काफ़ी की ना'त, स. 39)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औ़रतों को पर्दे का हुक्म

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बारीक कपड़े पहन कर सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने आई तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुंह फेर लिया और इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अस्मा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! **औ़रत जब बालिग़ हो जाए तो उस के बदन का कोई ह़िस्सा दिखाई नहीं देना चाहिये** सिवाए इस के और इस के।" (और इस की वज़ाह़त फ़रमाते हुए) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने मुंह और हथेलियों की त़रफ़ इशारा फ़रमाया।

(سُنَن اَبِی داوٗد، کتاب اللباس، باب فیما تبدی المراۃ من زینتھا، ص ٦٤٥، الحدیث:٤١٠٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त फ़रमाते हैं : "येह मुंह फेर लेना या तो इज़्हारे नाराज़ी के लिये था या निगाहे पाक की ह़िफ़ाज़त के लिये। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नुज़ूले अह़काम से पहले भी अह़काम पर आ़मिल थे।" (مِراٰۃُ المَناجِیح شرح مشکوٰۃُ المَصابِیح، کتاب اللباس، ١٢١/٦)

मुफ़्ती साह़िब मज़ीद फ़रमाते हैं : "इस से दो मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि अगर बारीक कपड़े में से जिस्म नज़र आ रहा हो तो वोह नंगे जिस्म के हुक्म में है उस को पहन कर नमाज़ न होगी दूसरे येह कि औ़रत के हाथ कलाइयों तक और चेहरा सत्र नहीं मगर अब अज्नबी को इस का देखना ह़राम है।" (المرجع السّابق، ص١٢٢)

www.dawateislami.net

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा **484** पर नक़्ल फ़रमाते हैं : औ़रत का चेहरा अगर्चे औ़रत नहीं मगर ब वज्हे फ़ितना ग़ैर मह़रम के सामने मुंह खोलना मन्अ़ है। यूहीं उस की त़रफ़ नज़र करना, ग़ैर मह़रम के लिये जाइज़ नहीं और छूना तो और ज़ियादा मन्अ़ है।

(حاشیہ ابن عابدین، کتاب الصلاۃ، مطلب فی ستر العورۃ، ۲/۹۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औ़रतों पर पर्दा फ़र्ज़ है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ औ़रतों को पर्दे का हुक्म देते हुए पारह **22**, **सू-रतुल अह़ज़ाब**, आयत नम्बर **33** में इर्शाद फ़रमाता है :

وَقَرْنَ فِیْ بُیُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِیَّةِ الْاُوْلٰى

(پ۲۲، الاحزاب:۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **679** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जन्नती ज़ेवर"** सफ़ह़ा **80** पर शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मज़्कूरा आयत की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : "इस आयत में **अल्लाह तआ़ला** ने साफ़ साफ़ औ़रतों पर पर्दा फ़र्ज़ कर के येह हुक्म दिया है कि वोह घरों के अन्दर रहा करें और ज़मानए जाहिलिय्यत की बे ह़याई व बे पर्दगी की रस्म को छोड़ दें। ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ारे अ़रब का येह दस्तूर था कि उन की औ़रतें ख़ूब बन संवर कर बे पर्दा निकलती थीं और बाज़ारों और मेलों में मर्दों के दोश बदोश घूमती फिरती थीं। इस्लाम ने इस बे पर्दगी की बे ह़याई से रोका और हुक्म दिया कि औ़रतें घरों के अन्दर रहें और बिला ज़रूरत बाहर न निकलें और अगर किसी ज़रूरत से इन्हें घर से बाहर निकलना ही पड़े तो ज़मानए जाहिलिय्यत के मुत़ाबिक़ बनाव सिंगार कर के बे पर्दा न निकलें बल्कि पर्दे के साथ बाहर निकलें।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "औ़रत पर्दे में रहने की चीज़ है

www.dawateislami.net

(लिहाज़ा इस को पर्दे में रहना चाहिये) जिस वक़्त वोह बे पर्दा हो कर बाहर निकलती है तो शैतान उस को झांक झांक कर देखता है।" (جَامِعُ التِّرۡمِذِی، کتاب الرضاع، ۱۸-باب، ص۳۰٤، الحدیث:۱۱۷۳)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوۡبُوۡا اِلَی اللّٰہ اَسۡتَغۡفِرُاللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बेटा खोया है, ह़या नहीं खोई !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सहाबिय्याते तय्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُنَّ जिन के अन्दर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़कामात पर अ़मल करने का जज़्बा कूट कूट कर भरा हुवा था, पर्दे के सिल्सिले में भी अपनी मिसाल आप थीं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا का बेटा जंग में शहीद हो गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا उन के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये निक़ाब डाले बा पर्दा बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुईं, इस पर किसी ने हैरत से कहा : इस वक़्त भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا ने निक़ाब डाल रखा है ! कहने लगीं : **"मैं ने बेटा ज़रूर खोया है ह़या नहीं खोई।"** (سُنَنِ اَبِی داؤد، کتاب الجهاد، باب فضل قتال الروم علی غیرهم من الامم، ص۳۹۷، الحدیث:۲۴۸۸)

سُبۡحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا अह़कामाते शरइय्या पर किस क़दर अ़मल पैरा थीं !

ग़ौर कीजिये ! मैदाने जंग में शु-हदाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُم के मुबारक अज्साम तशरीफ़ फ़रमा हैं इन में ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا के बेटे भी हैं ऐसे सब्र आज़्मा मौक़अ़ पर भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا ने ह़या का दामन नहीं छोड़ा, ऐसे नाज़ुक लम्ह़ात में भी पर्दा किये रखा और हैरत से दरयाफ़्त करने वाले को कैसा ज़बर दस्त जवाब दिया कि **"मैं ने बेटा ज़रूर खोया है ह़या नहीं खोई"** इस से आज कल की बे पर्दा इस्लामी बहनों को दर्स लेना चाहिये। **आइये !** इस सिल्सिले में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا की कैफ़िय्यात भी मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

पर्दे की एह़तियात !

﴾1﴿...... अबू क़ुऐ़स की ज़ौजा ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا को बचपन में दूध पिलाया था लिहाज़ा अबू क़ुऐ़स ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के रज़ा-ई वालिद और अबू कुऐस के भाई अफ़्लह़ ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के रज़ा-ई चचा हुए चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में है, सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : पर्दे से मु-तअ़ल्लिक़ आयाते मुक़द्दसा नाज़िल होने के बा'द अबू कुऐस के भाई अफ़्लह़ ने मेरे पास आना चाहा तो मैं ने कहा : मैं उस शख़्स को इजाज़त नहीं दूंगी जब तक वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस बारे में इजाज़त ह़ासिल न कर ले, यक़ीनन अबू कुऐस के भाई ने मुझे दूध नहीं पिलाया बल्कि अबू कुऐस की बीवी ने मुझे दूध पिलाया है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अबू कुऐस के भाई अफ़्लह़ ने मुझ से अन्दर आने की इजाज़त मांगी तो मैं ने उन्हें घर में आने की इजाज़त देने से इन्कार कर दिया ह़त्ता कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाएं। तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आप को किस ने रोका कि अपने चचा को इजाज़त न दें ? मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस शख़्स ने मुझे दूध नहीं पिलाया, मुझे तो अबू कुऐस की बीवी ने दूध पिलाया है, तो सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़्लह़ को इजाज़त दे दो वोह तुम्हारे (रज़ा-ई) चचा हैं। (صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب التفسیر، باب قولہ:اِنۡ تُبۡدُوۡا شَیۡئًا...الخ، ص١٢١٩، الحدیث:٤٧٩٦ ملتقطًا)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ालते एह़राम में भी चेहरे का पर्दा

﴾2﴿.... **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "हमारे पास से सुवारों के क़ाफ़िले गुज़रते थे और हम रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ (सफ़रे ह़ज में) ह़ालते एह़राम में होतीं, जब सुवार हमारे सामने आ जाते तो हम अपनी चादरों को अपने सरों से लटका कर चेहरे के सामने कर लेतीं[1] और जब वोह हम से आगे गुज़र जाते तो हम चेहरे खोल लेतीं।" (سُنَن اَبی داوٗد، کتاب المناسک، باب فی المحرمۃ تغطی وجھھا، ص٢٩٧، الحدیث:١٨٣٣)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1)...... **तम्बीह :** एह़राम में मुंह छुपाना औ़रत को भी ह़राम है, ना मह़रम के आगे कोई पंखा वग़ैरा मुंह से बचा हुवा सामने रखे।

www.dawateislami.net

बारीक दुपट्टा फाड़ दिया

﴾3﴿...... एक मर्तबा उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की ख़िदमते सरापा ग़ैरत में (इन के भाई) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की बेटी ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ह़ाज़िर हुईं उन्हों ने बारीक दुपट्टा ओढ़ रखा था, ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने उस दुपट्टे को फाड़ दिया और उन्हें मोटा दुपट्टा ओढ़ा दिया। (اَلْمُؤَطَّا للامام مالك، كتاب اللباس، باب ما يكره للنساء لبسه من الثياب، الجزءُ الثانى، ص٩١٣، الحديث:٦)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बाजेदार झांझन पहनने की मुमा-न-अ़त

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! येह था उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का पर्दे के सिल्सिले में जज़्बए इत़ाअ़ते रसूल ! **ऐ काश ! अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** हमें भी ऐसा जज़्बा अ़त़ा फ़रमा दे। याद रखिये ! औ़रत की बे पर्दगी मूजिबे ग़-ज़बे इलाही और सबबे तबाही है। पारह **18** सूरए नूर की आयत नम्बर **31** के इस ह़िस्से की तफ़्सीर में मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे इर्शादे इलाही होता है :

وَلَا یَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِہِنَّ لِیُعْلَمَ مَا یُخْفِیْنَ مِنْ زِیْنَتِہِنَّ ؕ (پ١٨، النور:٣١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुवा सिंगार।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی फ़रमाते हैं : ''या'नी **औ़रतें घर के अन्दर चलने फिरने में भी पाउं इस क़दर आहिस्ता रखें कि उन के ज़ेवर की झन्कार न सुनी जाए।**''

मस्अला : इसी लिये चाहिये कि औ़रतें बाजेदार झांझन न पहनें। ह़दीस शरीफ़ में है : **अल्लाह तआ़ला** उस क़ौम की दुआ़ नहीं क़बूल फ़रमाता जिन की औ़रतें झांझन पहनती हों। (تفسیراتِ اَحمدیه، پ١٨، النور:تحت الآية:٣١، ص ٥٦٥)

इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अ़-दमे क़बूले दुआ़ (या'नी दुआ़ क़बूल न होने) का सबब है तो ख़ास औ़रत की (अपनी) आवाज़ (का बिला इजाज़ते शर-ई ग़ैर मर्दों

www.dawateislami.net

तक पहुंचना) और इस की बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़-ज़बे इलाही होगी ? पर्दे की त़रफ़ से बे परवाई तबाही का सबब है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 18, अन्नूर, तह़्तल आयह : 31 स. 656)

बयान कर्दा आयत की तफ़्सीर में ''झांझन'' का ज़िक्र है, इस की वज़ाह़त करते हुए शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **''पर्दे के बारे में सुवाल जवाब''** सफ़ह़ा **5** पर इर्शाद फ़रमाते हैं : ''इस से घुंगुरू वाला ज़ेवर मुराद है।'' ऐसे ज़ेवर पहनने वालियों से मु-तअ़ल्लिक़ एक ह़दीस में इर्शाद होता है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ झांजन की आवाज़ को ऐसे ही ना पसन्द फ़रमाता है जिस त़रह़ गिना (गाने) को ना पसन्द फ़रमाता है और इसे पहनने वाली का ह़श्र वैसा ही करेगा जैसा कि मज़ामीर वालों का होगा और मल्ऊ़ना (या'नी ला'नती) औ़रत ही आवाज़ वाली झांझन पहनती है।

(كنز العُمّال، كتاب النكاح، الباب السادس فى ترهيبات وترغيبات وتختص بالنساء، جز١٦، ٨/١٦٤، الحديث:٤٥٠٦٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बजने वाले ज़ेवर के इस्ति'माल के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाते हैं : बजने वाला ज़ेवर औ़रत के लिये इस ह़ालत में जाइज़ है कि ना मह़रमों म-सलन ख़ाला, मामूं, चचा, फूफी के बेटों, जेठ, देवर, बहनोई के सामने न आती हो न उस के ज़ेवर की झन्कार (या'नी बजने की आवाज़) ना मह़रम तक पहुंचे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ (پ١٨، النور:٣١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने शोहरों पर।

और फ़रमाता है :

وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ (پ١٨، النور:٣١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुवा सिंगार।

फ़ाएदा : येह आयए करीमा जिस त़रह़ ना मह़रम को गहने की आवाज़ पहुंचना मन्अ़ फ़रमाती है यूंही जब आवाज़ न पहुंचे इस का पहनना औ़रतों के लिये जाइज़ बताती है कि धमक कर पाउं रखने को मन्अ़ फ़रमाया न कि पहनने को। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 128)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

झांझन की मज़म्मत में 3 फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿...... फ़िरिश्ते उस गुरौह के साथ नहीं रहते जिस में कुत्ता हो और न ही उस के साथ रहते हैं जिस में झांझन हो। (صَحِیْح مُسْلِم، کتاب اللباس والزینۃ، باب کراھۃ الکلب والجرس فی السفر، ص۸۴۱، الحدیث:۲۱۱۳)

﴾2﴿...... **झांझन शैतान का बाजा है।** (المرجع السّابق، الحدیث:۲۱۱۴)

﴾3﴿...... हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन **अब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़बर दी कि इन की एक लौंडी हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बेटी को अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास ले गई, उन के पाउं में झांजन थे, अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन्हें तोड़ कर फ़रमाया : मैं ने शहन्शाहे अबरार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है : "**हर झांझ के साथ शैतान है।**" (سُنَن اَبی داوٗد، کتاب الخاتم، باب ما جاء فی الجلاجل، ص۶۶۲، الحدیث:۴۲۳۰)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस हदीस शरीफ़ की शर्ह में तहरीर फ़रमाते हैं : "क्यूं कि झांज एक क़िस्म का बाजा है और जहां बाजा हो वहां फ़िरिश्तए रहमत नहीं होता (बल्कि) शैतान होता है।"

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب اللباس، باب الخاتم، ۱۳۶/۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

झांझन तोड़ दिये जाएं

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! फ़रमाने मुस्तफ़ा पर अमल करते हुए झांझन से इज्तिनाब के सिल्सिले में सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की कैफ़िय्यत भी मुला-हज़ा फ़रमाती जाइये, चुनान्चे हज़रते सय्यि-दतुना बुनाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि वोह उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास हाज़िर थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में एक बच्ची लाई गई जिस पर झांझन थे जो आवाज़ कर रहे थे, सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : इसे मेरे पास हरगिज़ न लाओ मगर इस सूरत में कि इस के झांजन तोड़ दिये जाएं, और फ़रमाती हैं : मैं ने पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार,

www.dawateislami.net

मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि **''उस घर में फ़िरिश्ते नहीं आते जिस में झांझन हो ।''** (سُنَن اَبی داوٗد، کتاب الخاتم، باب ما جاء فی الجلاجل، ص٦٦٢، الحدیث:٤٢٣١)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीस शरीफ़ की वज़ाहत करते हुए तहरीर फ़रमाते हैं : ''फ़िरिश्तों से मुराद रहमत के फ़िरिश्ते हैं जो खुसूसी तौर पर मुसल्मानों के घरों में आते जाते रहते हैं या वहां ही मुक़ीम रहते हैं खुसूसन उन घरों में जहां तिलावते कुरआन का ज़िक्रे ख़ैर रहता है ।''

मज़्कूरा हदीसे पाक में जो झांझन तोड़ देने का ज़िक्र है उस की शर्ह करते हुए मज़ीद फ़रमाते हैं : ''इस तरह (तोड़ दें) कि उन के अन्दर के कंकर निकाल दिये जाएं या इस तरह कि उस के घुंगुरू अलग कर दिये जाएं या इस तरह कि खुद झांझन ही तोड़ दिये जाएं ग़-रज़े कि उन में आवाज़ न रहे ।'' (مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب اللباس، باب الخاتم، ٦/١٣٦)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शर-ई पर्दे की पाबन्दी और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम भी करती रहिये । سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल, सुन्नतों भरे इज्तिमाआत और म-दनी क़ाफ़िलों की भी क्या खूब बहारें और ब-र-कतें हैं । **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे माहोल में रचने बसने की ब-र-कत से मु-तअद्दद इस्लामी बहनों को शर-ई पर्दा करने की सआदत नसीब हो गई ऐसी ही एक बहार मुला-हज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के तहरीरी बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं **दा'वते इस्लामी** के मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले **T.V.** पर फ़िल्में डिरामे देखने की आदी थी, बाज़ार वग़ैरा जाने के लिये बे पर्दा ही निकल खड़ी होती, नमाज़ भी नहीं पढ़ती थी । यूं मेरे सुब्ह व शाम ग़फ़्लत व मा'सियत में बसर हो रहे थे । एक बार किसी ने मुझे **मक-त-बतुल मदीना** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात के केसिट दिये, मैं ने उन्हें सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मैं ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो गई । इन बयानात की ब-र-कत से मुझे ख़ौफ़े खुदा की दौलत नसीब हुई, इश्क़े रसूल का जज़्बा मिला और मैं नमाज़ी बन गई, मैं ने अपने तमाम गुनाहों बिल खुसूस बे पर्दगी से पक्की तौबा कर ली ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! म-दनी बुरक़अ़ मेरे लिबास का हिस्सा बन गया । वोह बे लगाम ज़बान जो पहले गाने गुन-गुनाने में मसरूफ़ रहती थी अब اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! ना'ते मुस्तफ़ा सुनाने लगी । ता दमे तहरीर **दा'वते इस्लामी** की ज़ैली मुशा-वरत की ख़ादिमा के तौर पर सुन्नतों की ख़िदमत की सआदत हासिल कर रही हूं ।

www.dawateislami.net

कटी है ग़फ़्लतों में ज़िन्दगानी न जाने ह़श्र में क्या फ़ैसला हो
इलाही हूं बहुत कमज़ोर बन्दा न दुन्या में न उ़क़्बा में सज़ा हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 165)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! **मक-त-बतुल मदीना** की जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनना, सुनाना कितना मुफ़ीद है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! कई ख़ुश नसीब इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रोज़ाना कम अज़ कम एक सुन्नतों भरा बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं और जो साह़िबे हैसिय्यत होते हैं वोह तक़्सीम भी करते हैं आप भी हर माह या कम अज़ कम हर साल लंगरे रसाइल करने की निय्यत फ़रमाइये और ह़स्बे तौफ़ीक़ इस में सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें और रसाइल वग़ैरा बांटिये कि येह भी स-दक़ा है और राहे ख़ुदा में स-दक़ा व ख़ैरात के क्या कहने ! हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मान का स-दक़ा उ़म्र में ज़ियादती का सबब है और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की वज्ह से तकब्बुर व फ़ख़्र को दूर फ़रमा देता है।"

(المعجم الكبير للطبراني، باب العين، عمرو بن عوف ملحة المزني، ٦/٠٤٤، الحديث:١٣٥٠٨)

मैं सब दौलत रहे ह़क़ में लुटा दूं
ख़ुदा ऐसा मुझे जज़्बा अ़ता हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 165)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अफ़्ज़ल स-दक़ा

काश ! माले दुन्या की मह़ब्बत हमारे दिलों से निकल जाए और राहे ख़ुदा में कसरत से माल ख़र्च करने की आ़दत बन जाए। **याद रखिये !** स-दक़ा के लिये मालदार होना शर्त़ नहीं बल्कि हर एक को ह़स्बे इस्तित़ाअ़त स-दक़ा करते रहना चाहिये, इस ज़िम्न में एक ह़दीस शरीफ़ मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ?" इर्शाद फ़रमाया : "वोह स-दक़ा जो कोई ग़रीब ब क़दरे त़ाक़त करे और येह कि तुम (देने में) उन से शुरूअ़ करो जिन की परवरिश करते हो।" (سنن ابی داؤد، كتاب الزكاة، باب الرخصة فی ذلك، ص٢٧٤، الحديث:١٦٧٧)

इस फ़रमाने आ़ली की बदौलत सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ज़ियादा स-दक़ा करने की इस्तित़ाअ़त न होने की सूरत में थोड़ी सी चीज़ स-दक़ा करने में भी कोई शर्म व आ़र न समझा

www.dawateislami.net

करते थे, जैसा कि इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **"मुअत्ता इमाम मालिक"** में नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक मिस्कीन ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से खाने का सुवाल किया। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के सामने कुछ अंगूर रखे हुए थे तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने किसी से फ़रमाया : (इन में से) एक दाना उठा कर इसे दे दो। वोह तअ़ज्जुब के साथ आप की त़रफ़ देखने लगा तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : क्या तुम तअ़ज्जुब करते हो, तुम्हारा क्या ख़याल है कि इस दाने में कितने ज़र्रात हैं ?

(اَلْمُوَطَّا للامام مالك، كتاب الصدقة، باب الترغيب فى الصدقة، الجزء الثانى، ص٤٩٧، الحديث:٦)

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! **इमामुल आ़बिदीन, सय्यिदुस्साजिदीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर अ़मल करने का सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का कैसा जज़्बा है कि किसी क़िस्म की दुन्यवी ह़या इन्हें अ़मल से मानेअ़ नहीं आती और फिर तवक्कुल व ईसार भी कैसा कि ख़ुद को भी ह़ाजत है ऐसे में भी अगर कोई साइल सुवाल करता है तो उस को भी अ़त़ा फ़रमाती हैं। आइये ! सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के तवक्कुल की एक और झलक मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

कल के लिये खाना बचा कर न रखा

मरवी है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे लिये दुआ़ फ़रमाएं कि ह़क़ तआ़ला मुझे जन्नत में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात में रखे। रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम इस रुत्बे की तमन्ना करती हो तो कल के लिये खाना बचा कर न रखो और किसी कपड़े को जब तक उस में पैवन्द लग सकता है बेकार न समझो। सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا शहन्शाहे अबरार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस वसिय्यत व नसीह़त पर इस क़दर कारबन्द रहीं कि **कभी आज का खाना कल के लिये बचा कर न रखा।** (مدارج النبوة، قسم پنجم، باب دوم درذکر ازواج مطهرات، ذکر حضرت ام المومنین سیده عائشه، الجزء الثانی، ص٤٧٢)

मु-तवक्किल ख़ातून

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने आज का खाना कल के लिये बचा कर न रखने की कैसी उ़म्दा

www.dawateislami.net

मिसाल क़ाइम की, हमेशा **रब तबा-र-क व तआला** पर तवक्कुल करते हुए बचा हुवा खाना दूसरों पर ईसार कर दिया। मगर **आह !** आज के हम जैसे बे अमल मुसल्मान ईसार तो क्या करेंगे, जिन से बन पड़ता है वोह दूसरों के मुंह से भी लुक़्मा छीन लेते हैं, ढेरों ढेर गिज़ाएं मौजूद होने के बा वुजूद एक एक टुकड़े की ख़ातिर फ़साद बरपा करते फिरते हैं, हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों का तवक्कुल बे मिसाल होता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर कामिल तवक्कुल करने वालों की भी क्या शान होती है, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना इमाम अब्दुर्रहमान बिन अली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى एक मु-तवक्किल ख़ातून की हिकायत नक़्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अफ़्फ़ान बिन मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन स-लमा عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعُلٰى ने बताया। उन्हों ने कहा : एक मर्तबा हमारे हां एक साल लगातार बारिश होती रही। मेरे पड़ोस में एक इबादत गुज़ार बुढ़िया थी। जिस के पास यतीम बच्चियां थीं। उन पर छत टपक्ने लगी। उसे यूं कहते हुए सुना गया : "मेरे दोस्त ! मेरे साथ नरमी कर" उसी वक़्त बारिश रुक गई। मैं ने एक थेली ली, जिस में दस दीनार थे। उस के दरवाज़े पर दस्तक दी। उस ने कहा : "इसे हम्माद बिन स-लमा बना दे।" मैं ने कहा : मैं हम्माद ही हूं। मैं ने तुम्हारी सदा सुनी। तुम ने बारिश बन्द होने के लिये आहो फ़ुग़ां की। तुम ने कहा : "ऐ दोस्त ! मेरे साथ नरमी कर" उस की कौन सी नरमी तुम तक पहुंची है ? वोह नेक औरत बोली : "मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने हम पर इस तरह नरमी फ़रमाई कि बारिश रुक गई और जो पानी हमारे घर में जम्अ हो गया था वोह भी ख़ुश्क हो गया। मेरे बच्चे भी सर्दी से महफ़ूज़ हो गए हैं, इन्हों ने गर्माइश हासिल करने का भी इन्तिज़ाम कर लिया है।" मैं ने दीनार निकाले और कहा : "इन से फ़ाएदा हासिल करो।" अचानक एक बच्ची नुमूदार हुई। जिस पर सूफ़ की ओढ़नी थी। जिस की जगह जगह से फटन अयां थी वोह मेरे पास आई। उस ने कहा : "हम्माद ! आप ख़ामोश नहीं हो जाते आप हमारे और हमारे रब के माबैन हाइल हो रहे हैं" फिर उस ने कहा : "वालिदा माजिदा ! जब हम ने अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से अपनी मुसीबतों की इल्तिजा की तो उस ने फ़ौरन ही दुन्यावी दौलत हमारी तरफ़ भिजवा दी, कहीं ऐसा न हो कि हम इस दुन्यवी दौलत की वज्ह से अपने मालिके हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाएं और हमारी तवज्जोह उस से हट कर किसी और की तरफ़ मब्ज़ूल हो जाए।" फिर उस लड़की ने अपना चेहरा ज़मीन पर मलना शुरूअ किया और कहने लगी : "जहां तक मेरा तअल्लुक़ है तो तेरी इज़्ज़त की क़सम ! मैं तेरा दरवाज़ा नहीं छोडूंगी। अगर्चे तू मुझे धुत्कार भी दे" फिर उस ने कहा : ऐ हम्माद ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को मुआफ़ फ़रमाए येह दीनार ले जाओ। इन्हें उसी जगह रख दो जहां से निकाले थे। हम अपनी ज़रूरिय्यात उस हस्ती के सामने पेश करते हैं

www.dawateislami.net

जो आ़-लमीन से नहीं डरता। (عُيُونُ الحِكايات، الحكاية السبعون بعد المائة، حكاية فتاة عابدة، ص۱۸۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सच है इन्सान को कुछ खो के मिला करता है
आप को खो के तुझे पाएगा जोया तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 12)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! हमें नफ़्सो शैत़ान की शरारतों से मह़फ़ूज़ फ़रमा और तवक्कुल की अ़ज़ीम ने'मत से नवाज़ कर अपनी साबिरा व शाकिरा बन्दियां बना दे।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अपना निक़ाब ख़ुद सी रही थीं

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ऊपर बयान कर्दा ह़दीसे आ़इशा में नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह मुबारक फ़रमान भी है कि **''किसी कपड़े को जब तक उस में पैवन्द लग सकता है बेकार न समझो''** लिहाज़ा इस सिल्सिले में भी उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का अ़मल मुबारक मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे **''त़बक़ाते इब्ने सा'द''** में है कि एक आने वाला ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपना निक़ाब सी रही हैं। उस ने कहा : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मालो दौलत की फ़िरावानी नहीं फ़रमा दी ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : ''(इन बातों को) छोड़ो, वोह नए कपड़ों का ह़क़दार नहीं जो पुराने कपड़े इस्ति'माल न करे।''

(طبقات الکبرٰی لابن سعد، ذکر ازواج رسولِ اللّٰہ، عائشة بنت الصدیق، ۷۲/۱۰)

पुराने लिबास की फ़ज़ीलत

सय्यिदुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम नहीं सुनते, क्या तुम नहीं सुनते ! बेशक पुराने कपड़े पहनना ईमान से है, बेशक पुराने कपड़े पहनना ईमान से है।'' (سنن ابی داؤد، کتاب الترجل، ۱-باب، ص ۶۵۳، الحدیث:۴۱۶۱)

www.dawateislami.net

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीस शरीफ़ की शर्ह में फ़रमाते हैं : ''इस का मतलब है कि मा'मूली लिबास फटे पुराने कपड़े पहनने से शर्म व आर न होना कभी पहन भी लेना मोमिन मुत्तक़ी की अलामत है, हमेशा आ'ला द-रजे के लिबास पहनने का आदी बन जाना कि मा'मूली लिबास पहनते शर्म आए तरीक़ा **मु-तकब्बिरीन** का है यहां ईमान से मुराद कमाले ईमान है।''

(مراۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب اللباس، ۱۰۹/٦)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सारे दिन की हाजतें सुब्ह की 4 रक्अत में

हज़राते सय्यिदैना अबू दरदा और अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, ताजदारे अ-रबो अजम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि रब तआला عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : **''ऐ इब्ने आदम ! तू शुरूअ दिन में मेरे लिये 4 रक्अतें पढ़ ले, मैं आख़िर दिन तक तेरे लिये काफ़ी होउंगा।''** ।

(سنن الترمذی، ابواب الوتر، باب ما جاء فی صلاۃ الضُّحٰی، ص۱٤۲، الحدیث:٤٧٥)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! कितनी प्यारी फ़ज़ीलत इर्शाद फ़रमाई कि शुरूअ दिन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करे तो रब्बे काएनात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सारा दिन उस आदमी की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा, चुनान्चे शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीस शरीफ़ की शर्ह में फ़रमाते हैं : ख़ुलासा येह है कि तू अव्वल दिन में अपना दिल मेरे लिये फ़ारिग़ कर दे मैं आख़िर दिन तक तेरा दिल ग़मों से फ़ारिग़ रखूंगा। سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दिल की फ़रागत बड़ी ने'मत है। रिवायत में है कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हो जाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का हो जाता है।

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکٰوۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الضحی، ۲۹٧/۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत में 2 रिवायात

﴾1﴿.... **हज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मालिके जन्नत, क़ासिमे ने'मत, सरापा जूदो सख़ावत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे बा अ-ज़मत है : **''जो चाश्त की 12 रक्अतें पढ़ ले तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस के लिये जन्नत में सोने का महल बनाएगा।''**

(سنن التِّرمِذی، ابواب الوتر، باب ما جاء فی صلاۃ الضحٰی، ص۱٤۱، الحدیث:٤٧٣)

﴾2﴿.... **दा'वते इस्लामी** के इशाअती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ **134** सफ़्हात

www.dawateislami.net

पर मुश्तमिल किताब "**जन्नत की तय्यारी**" सफ़्हा **63** पर है : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक जन्नत में एक दरवाज़ा है जिसे दुहा कहा जाता है जब क़ियामत का दिन आएगा तो एक मुनादी निदा करेगा : नमाज़े चाश्त की पाबन्दी करने वाले कहां हैं ? येह तुम्हारा दरवाज़ा है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत से इस में दाख़िल हो जाओ ।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط، من اسمه محمّد، ٤/١٨، الحديث: ٥٠٦٠)

बे अ़दद ग़ुलाम आक़ा ख़ुल्द जा रहे हैं साथ

पीछे पीछे मैं भी काश ! शाहे बहरो बर जाता

(वसाइले बख़्शिश, स. 412)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नमाज़े चाश्त और सय्यि-दतुना आइशा

इस सिल्सिले में **उम्मुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मुबारक अ़मल भी मुला-हज़ा फ़रमाइये : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا चाश्त की **8** रक्अ़तें पढ़ा करतीं फिर फ़रमातीं कि अगर मेरे मां बाप भी उठा दिये जाएं तो भी मैं येह रक्अ़तें न छोड़ूं ।"

(اَلْمُوَطَّا للامام مالك، كتاب قصر الصلوة فى السفر، باب صلوة الضُّحٰى، الجزء الاول ، ص١٥٣، الحديث: ٣٠)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی "**मिरआतुल मनाजीह**" में इस हदीसे पाक की शर्ह में तहरीर फ़रमाते हैं : "या'नी अगर इश्राक़ के वक़्त मुझे ख़बर मिले कि मेरे वालिदैन ज़िन्दा हो कर आ गए हैं तो मैं उन की मुलाक़ात के लिये येह नफ़्ल न छोड़ूं बल्कि पहले येह नफ़्ल पढ़ूं फिर उन की क़दम बोसी करूं ।"

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الضُّحٰی، ٢/٢٩٩)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नेक आ'माल पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करना उ़मूमन दुश्वार होता है लेकिन **याद रखिये !** इस्तिक़ामत बेहद ज़रूरी है, चुनान्चे

इस्तिक़ामत की फ़ज़ीलत में 3 फ़रामीन

﴾1﴿.... सरकारे आ़ली वक़ार, नबियों के सालार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है : "**अफ़्ज़ल अ़मल वोह है जो हमेशा हो ।**" और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब

www.dawateislami.net

कोई अमल फ़रमाते तो इस बात को पसन्द फ़रमाते कि इस पर मुदा-वमत इख़्तियार की जाए।

(صَحِیْح اِبْنِ خُزَیْمَہ، کتاب الصلاۃ، جماع ابواب الاوقات التی عن التطوع فیھن، باب ذکر الدلیل علی ان نھی النبی عن الصلاۃ...الخ، ص۲۹۸، الحدیث:۱۲۷۷)

﴿2﴾.... **अमीरुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم का फ़रमाने दिल नशीन है : **"इस्तिक़ामत आधी काम्याबी है जैसा कि ग़म आधा बुढ़ापा।"**

(عُیُوْنُ الْحِکَایَات، الحکایۃ الثامنۃ والخمسون بعد المائۃ من وصایا الامام علی، ص۱۷۳)

﴿3﴾.... **हज़रते सय्यिदुना** ज़ुन्नून मिसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा गया कि बन्दे को जन्नत कैसे हासिल होती है ? उन्हों ने फ़रमाया : "पांच बातों से जन्नत हासिल होती है : (1).... ऐसी इस्तिक़ामत जिस में झोल न हो। (2).... ऐसा इज्तिहाद जिस में भूल न हो। (3).... ज़ाहिर व बातिन में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को सामने देखना (या'नी मुरा-क़बा) (4).... तय्यारी के साथ मौत का इन्तिज़ार और (5).... नफ़्स का एहतिसाब करना इस से पहले कि इस का मुहा-सबा किया जाए।"

(احیاء علوم الدین، کتاب المراقبۃ والمحاسبۃ، المرابطۃ الثانیۃ: المراقبۃ، ۴/۴۸۲)

अल्लाह तआला के नज़्दीक पसन्दीदा अमल

इसी तरह उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बयान फ़रमाती हैं कि मेरे सरताज, साहिबे मे'राज, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आ'माल में ज़ियादा पसन्द **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को वोह है जो हमेशा हो अगर्चे थोड़ा हो।" रावी कहते हैं कि **"सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا **जिस अमल को शुरूअ करतीं तो उस को लाज़िम कर लेतीं।"**

(صَحِیْح مُسْلِم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب فضیلۃ العمل الدائم ...الخ، ص۲۸۳، الحدیث:۷۸۳)

जो बिग़ैर मांगे मिले क़बूल कर लो

सहाबए किराम व सहाबिय्यात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم सरकारे आली वक़ार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हर हर अदा और हर हर सुन्नत को दीवाना वार अपनाया करते थे, नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन को हिर्ज़े जां बनाते और उन्हें अपने लिये दलीले राह बनाते हुए उन की पैरवी किया करते थे, चुनान्चे मुत्तलिब बिन **अब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि **अब्दुल्लाह** बिन आमिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को कुछ ख़र्च व लिबास भेजा तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने क़ासिद से फ़रमाया : "ऐ बेटा ! मैं किसी से कुछ नहीं लेती।" जब क़ासिद

www.dawateislami.net

रवाना होने लगा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "येह (ख़र्च व लिबास) मुझे वापस कर दो।" रावी फ़रमाते हैं : तो उस (लाने वाले) ने उसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को वापस कर दिया, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "मुझे याद आ गया था कि मुझ से मेरे सरताज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था : ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! जो तुम्हें बिग़ैर मांगे कुछ दे तो क़बूल कर लिया करो कि वोह तो रिज़्क़ है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी त़रफ़ भेजा है।"

(شُعَبُ الْاِیْمَان، باب فی الزکاۃ، فصل فیمن اتاہ اللہ مالا۔۔۔الخ، ۳/۲۸۲، الحدیث:۳۵۵۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-दनी चेनल की बहारें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की दीनी ख़िदमात का एक ज़माना मो'तरिफ़ है। **नेकी की दा'वत** को सारी दुन्या में आ़म करने के लिये आप की कोशिशें रोज़े रोशन की त़रह़ अ़यां हैं। आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने आ़लमे इस्लाम के मुसल्मानों को एक अ़ज़ीम म-दनी मक़्सद पेश किया कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" इस म-दनी मक़्सद के तह़त आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने **1401** सि.हि., **1981** ई. में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी आ़लमगीर तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी काम का आग़ाज़ फ़रमाया। आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की पुर ख़ुलूस और अनथक कोशिशों की ब-र-कत से देखते ही देखते इस तह़रीक का पैग़ाम ता दमे तह़रीर कमो बेश **200 से ज़ाइद** ममालिक में पहुंच चुका है और **86** से ज़ाइद शो'बाजात में म-दनी काम हो रहा है। इन शो'बाजात में से एक शो'बा "**म-दनी चेनल**" भी है। हर बा शुऊ़र मुसल्मान येह जानता है कि हमारे मुआ़-शरे की तबाही में **T.V.** का बहुत अहम किरदार है ! **मुबल्लिग़ीने** दा'वते इस्लामी ने **T.V.** की तबाह कारियों के ख़िलाफ़ अच्छी ख़ासी मुहिम चलाई, इन काविशों में कुछ न कुछ काम्याबी भी मिली, मगर फ़ी ज़माना हज़ार में से शायद तक़रीबन नव सो निनानवे **(999)** मुसल्मान **T.V.** के रसिया हो चुके हैं और ग़ालिब अक्सरिय्यत दुन्या व आख़िरत की भलाई बुराई की परवाह किये बिग़ैर **T.V.** की ग़ैर शर-ई व ग़ैर अख़्लाक़ी नशिरयात देखने में मश्ग़ूल है। **T.V.** बीनी में इन की जुनून की ह़द तक दिल

www.dawateislami.net

चस्पी की वज्ह से शैतान की इन के किरदार के साथ साथ इस्लामी अक़्दार पर भी यलग़ार है। इब्लीस की तह़रीक पर इस्लाम ही का लबादा ओढ़ कर बा'ज़ लोग इस्लाम को मॉडर्न अन्दाज़ में पेश करने की मज़्मूम सअ्य कर रहे हैं, इस्लाम की ह़क़ीक़ी रूह़ मुसल्मानों के दिलों से निकाली जा रही है।

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को इन ना मुसाइद ह़ालात में इस बात का शिद्दत से एह़सास हुवा कि मुसल्मानों की इस इस्लाह़ का दाइरए कार अगर सिर्फ़ मसाजिद और इज्तिमाआत वग़ैरा की ह़द तक रखते हैं तो उम्मत की ग़ालिब अक्सरिय्यत तक हमारा दर्द भरा म-दनी पैग़ाम पहुंच ही नहीं पाता और ताग़ूती ताक़तें यक-तरफ़ा तौर पर अपने मुख़्तलिफ़ चेनल्ज़ के ज़रीए़ मुसल्मानों को गुमराह करती रहेंगी। अग़्लब गुमान येही है कि मुसल्मानों के घरों से अब **T.V.** निकलवाना मुश्किल ही नहीं क़रीब ब ना मुम्किन है, बस एक ही सूरत नज़र आई और वोह येह कि जिस त़रह़ दरिया में सैलाब आता है तो उस का रुख़ खेतों वग़ैरा की त़रफ़ मोड़ने की कोशिश की जाती है ताकि खेत भी सैराब हों और आबादियों को भी हलाकत से बचाया जा सके, ऐन इसी त़रह़ **T.V.** के ज़रीए़ आने वाले तूफ़ाने बद तमीज़ी के सैलाब की रोकथाम की कोशिश के लिये **T.V. ही के ज़रीए़ मुसल्मानों के घरों में दाख़िल हुवा जाए** और इन को ग़फ़्लत की नींद से बेदार किया जाए और गुनाहों और गुमराहियों के सैलाब से इन्हें ख़बरदार किया जाए, चुनान्चे जब मा'लूम हुवा कि अपना **T.V. चेनल** खोल कर फ़िल्मों डिरामों, गानों बाजों, मूसीक़ियों की धुनों और औ़रतों की नुमाइशों से बचते हुए **100** फ़ी सदी इस्लामी मवाद फ़राहम करना मुम्किन है तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** ने ख़ूब जिद्दो जहद कर के **र-मज़ानुल मुबारक** 1429 सि.हि. ब मुताबिक़ 2008 सि.ई. में **म-दनी चेनल** के ज़रीए़ नेकियों और घर घर सुन्नतों का म-दनी पैग़ाम पेश करना शुरूअ़ कर दिया और देखते ही देखते ब शुमूल यूरोपियन ममालिक दुन्या के बे शुमार मुल्कों में **T.V.** पर म-दनी चेनल देखा जाने लगा और इन्टर नेट के ज़रीए़ ता दमे तह़रीर दुन्या के तक़रीबन **150** मुल्कों में **म-दनी चेनल** दाख़िल हो चुका है और यूं डेढ़ सो के क़रीब मुल्कों में **दा'वते इस्लामी** का म-दनी पैग़ाम पहुंच गया है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के ह़ैरत अंगेज़ म-दनी नताइज आने लगे हैं। यक़ीनन इस की येह ब-र-कत तो बच्चा भी समझ सकता है कि जब तक **म-दनी चेनल** घर या दफ़्तर वग़ैरा में ऑन रहेगा कम अज़ कम उस वक़्त तक तो मुसल्मान दूसरे गुनाहों भरे चेनल्ज़ से बचे रहेंगे! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ! **म-दनी चेनल 100** फ़ी सदी इस्लामी चेनल है, न इस में मूसीक़ी है न ही औ़रत की नुमाइश। इस पर कारोबारी इश्तिहारात (एडवर्टाइज़) भी नहीं दिये जाते, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के अख़्राजात मुख़य्यर मुसल्मानों के अ़तिय्यात **(DONATIONS)** से पूरे किये जाते हैं।

www.dawateislami.net

म-दनी चेनल में क्या है ? इस में फ़ैज़ाने कुरआन, फ़ैज़ाने ह़दीस, फ़ैज़ाने अम्बिया, फ़ैज़ाने सह़ाबा और फ़ैज़ाने औलिया के मा'लूमाती रूह़ परवर सिल्सिले हैं, इस में तिलावतें, ना'तें, मन्क़बतें **दा'वते इस्लामी** की म-दनी ख़बरें और म-दनी ख़ाके हैं, दुआ व मुनाजात में इल्ह़ाहो ज़ारी के दिल हिला देने वाले और इश्क़े रसूल में रोने रुलाने और तड़पाने वाले रिक़्क़त अंगेज़ मनाज़िर हैं, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, रूह़ानी इलाज, सुन्नतों भरे **म-दनी फूल** और आख़िरत बेहतर बनाने वाली ख़ूब **म-दनी बहारें** हैं । इस में सुन्नतों भरे इज्तिमाआत, म-दनी मुज़ा-करात, म-दनी मुका-लमात, सुब्ह़ के वक़्त "खुले आंख صَلِّ عَلٰی कहते कहते" वग़ैरा कई सिल्सिले बराहे रास्त **(LIVE)** भी दिखाए जाते हैं । अल ग़रज़ ! **म-दनी चेनल** एक ऐसा चेनल है कि इस के ज़रीए इन्सान घर बैठे अच्छा ख़ासा इल्मे दीन सीख सकता है ! **म-दनी चेनल** की म-दनी बहारों के क्या कहने ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! **म-दनी चेनल** देख कर कई ग़ैर मुस्लिमों को ईमान की दौलत नसीब हो गई, नीज़ न जाने कितने ही "बे नमाज़ी" नमाज़ी बन गए, मु-तअ़द्दद अफ़राद ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी का आग़ाज़ कर दिया । एक **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे

मुझे म-दनी चेनल ने म-दनी बुरक़अ़ पहना दिया

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन का कुछ इस त़रह़ बयान है कि पहले पहल मैं पर्दा नहीं करती थी । फिर हमें **दा'वते इस्लामी ने "म-दनी चेनल"** का अ़ज़ीम तोह़फ़ा अ़ता किया जिसे देखने की ब-र-कत से मैं और मेरे बच्चों के अब्बू नमाज़ के पाबन्द हो गए । एक दिन म-दनी चेनल पर **"पर्दे की अहम्मिय्यत"** के मौज़ूअ़ पर सुन्नतों भरा बयान जारी था । मेरे बच्चों के अब्बू ने जब वोह बयान सुना तो इतने मु-तअस्सिर हुए कि मुझे म-दनी बुरक़अ़ पहनने की तरग़ीब दिलाई और बिला ज़रूरत बाज़ार वग़ैरा जाने से भी मन्अ़ कर दिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! **दा'वते इस्लामी** के म-दनी चेनल की ब-र-कत से मुझे बे पर्दगी से तौबा नसीब हुई और अब मैं कोई दीदा ज़ैब, ग़ैर मर्दों को मु-तवज्जेह करने वाला या مَعَاذَ اللّٰہ नंगा सर रखने वाला रस्मी बुरक़अ़ नहीं बल्कि शर-ई पर्दे के मुताबिक़ सिर्फ़ और सिर्फ़ म-दनी बुरक़अ़ पहनती हूं । (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 264)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

इस्लामी बहनों के म-दनी चेनल देखने का शर-ई मस्अला

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **505** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"ग़ीबत की तबाह कारियां"** सफ़ह़ा **476** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं **:** इस्लामी बहनों को म-दनी चेनल देखने से पहले **112** बार ग़ौर कर लेना चाहिये क्यूं कि **म-दनी चेनल** में अक्सर नौ जवानों ही के मनाज़िर होते हैं और औ़रत नाज़ुक शीशी है और इसे मा'मूली सी ठेस ही काफ़ी। कहीं مَعَاذَاللّٰه वोह बद निगाही के गुनाह में न जा पड़े। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त ह़िस्सा **16** सफ़ह़ा **86** पर फ़रमाते हैं **:** औ़रत का मर्दे अज्नबी की त़रफ़ नज़र करने का वोही हुक्म है जो मर्द का मर्द की त़रफ़ नज़र करने का है और येह उस वक़्त है कि औ़रत को यक़ीन के साथ मा'लूम हो कि उस की त़रफ़ नज़र करने से शह्वत नहीं पैदा होगी और अगर इस का शुबा भी हो तो हरगिज़ नज़र न करे। (فتاویٰ عالمگیری،۵/۳۲۷)

आक़ा की ह़या से झुकी रहती थीं निगाहें
आंखों पे मेरी भहन लगा क़ुफ़्ले मदीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़िर्स और हुब्बे जाह की मज़म्मत

अल्लाह के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है **:** "दो भूके भेड़िये अगर बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिये जाएं तो इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि मालो दौलत की ह़िर्स और हुब्बे जाह इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाते हैं।"

(سنن الترمذی، کتاب الزھد، ۴۳۔باب، الحدیث:۲۳۷۶، ص۵۶۵)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾19﴿...... सय्यि-दतुना आ़इशा का सुवालात करना

जुमा'रात और शबे जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "जब जुमा'रात का दिन आता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास **चांदी** के काग़ज़ और **सोने** के क़लम होते हैं, वोह **यौमे जुमा'रात** और शबे **जुमुआ़** नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने वालों के नाम लिखते हैं।"

(تاریخ مدینہ دمشق، حرف المیم فی اباء من اسمہ علی، علی بن محمد بن احمد، ۱۴۲/۴۳)

पढ़ती रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 106)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़बीबए ह़बीबे ख़ुदा, सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **नबिय्युल ह़-रमैन, सय्यिदुस्स-क़लैन, इमामुल क़िब्लतैन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से ज़ियादा मह़बूब ज़ौजा हैं, इसी द-र-जए मह़बूबिय्यत के बाइ़स आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जो चाहतीं बिला झिजक सरकारे आ़ली वक़ार, मक्के मदीने के ताजदार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ कर देतीं, चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं : एक रात मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास से कहीं तशरीफ़ ले गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने इस पर ग़ैरत की फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो देखा जो मैं कर रही थी। फ़रमाया : "ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! क्या ह़ाल है ? क्या तुम ने ग़ैरत खाई है ?" मैं बोली : "मुझे क्या हुवा कि मुझ जैसी बीबी आप जैसे पर ग़ैरत न करे ?" तब शहन्शाहे अबरार, मह़बूबे

www.dawateislami.net

रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "तुम्हारे पास शैतान आ गया ।" मैं बोली : **"या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** क्या मेरे साथ शैतान है ?" फ़रमाया : हां ।

फ़रमाती हैं : "मैं ने कहा : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** आप के साथ भी ?" इर्शाद फ़रमाया : "हां ! लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस पर मेरी मदद फ़रमाई ह़त्ता कि उस ने इस्लाम क़बूल कर लिया ।" (صحیح مسلم، کتاب صفة القیامة والجنة والنار، باب تحریش الشیطان......الخ، ص۱۰۸۳، الحدیث:۲۰۱۵، ملتقطًا)

इसी त़रह़ एक मौक़अ़ पर सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम के पास तशरीफ़ ले जाने का इरादा फ़रमाया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पानी के मटके में देख कर अपना इमामा शरीफ़ और गेसू संवारे तो उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : **"या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी ऐसा कर रहे हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **पसन्द फ़रमाता है जब बन्दा अपने दोस्त अह़बाब की त़रफ़ जाए तो उन के लिये ज़ीनत इख़्तियार करे ।"**

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم الجاہ والریاء، بیان حقیقة الریاء وما یراء ی بہ، ۳/۳۶۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बारगाहे मुस्त़फ़ा में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का येह नाज़ो अन्दाज़ उस मह़ब्बत की बिना पर था जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से थी, इसी वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में बिला झिजक जो चाहतीं अ़र्ज़ कर देतीं, इसी सिल्सिले में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से किये गए सुवालात और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़िक्मत भरे जवाबात पेश किये जाते हैं, मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

हुज़ूर के चेहरे की नूरानिय्यत

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते **सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "मैं वक़्ते सह़र कुछ सी रही थी कि सूई मेरे हाथ से गिर गई और चराग़ बुझ गया । इतने में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के **चेह़रए अक़्दस के नूर से सारा कमरा जगमगा उठा और सूई मिल गई ।"**

www.dawateislami.net

फ़रमाती हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **!** आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर कितना रोशन है ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! हलाकत है उस के लिये जो बरोज़े क़ियामत मुझे न देखेगा ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "बरोज़े क़ियामत आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से कौन महरूम रहेगा ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**बख़ील ।**" मैं ने पूछा: **बख़ील कौन है ?** इर्शाद फ़रमाया : "**वोह है जो मेरा नाम सुनते वक़्त मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े ।**"

(القول البدیع، الباب الثالث فی تحذیر من ترک الصلاۃ علیہ......الخ، ص ۱۵۳، مفهومًا)

सू-ज़ने गुमशुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे
शाम को सुब्ह़ बनाता है उजाला तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 17)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُالله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना कसीर फ़ज़ाइल का मूजिब है जिन का शुमार हमारी त़ाक़त से बाहर है । मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ने का हुक्म बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "ह़क़ येह है कि हर मुसल्मान पर उ़म्र में एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज़ और हर मजलिस में जहां बार बार हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम शरीफ़ लिया जाए एक बार वाजिब है और हर बार मुस्तह़ब । दुरूद शरीफ़ सिर्फ़ नबी या फ़िरिश्तों पर हो सकता है, ग़ैरे नबी पर नबी के ताबेअ़ हो कर दुरूद जाइज़ बिल इस्तिक़्लाल मक्रूह ।"

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی وفضلها، ۲/۹۷)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीमो तौक़ीर जिस त़रह़ उस वक़्त थी कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) इस आ़लम में ज़ाहिरी निगाहों के सामने तशरीफ़ फ़रमा थे, अब भी इसी त़रह़ फ़र्ज़े आ'ज़म है, जब हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का ज़िक्र आए तो **ब कमाले ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ व इन्किसार बा अदब सुने और नामे पाक सुनते ही दुरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब है ।**"

www.dawateislami.net

मज़ीद फ़रमाते हैं : "और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से महब्बत की अलामत येह है कि ब कसरत ज़िक्र करे और दुरूद शरीफ़ की कसरत करे और नामे पाक लिखे तो उस के बा'द صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिखे, बा'ज़ लोग बराहे इख़्तिसार صلعم या ص लिखते हैं, येह महज़ **ना जाइज़ व हराम** है।" (बहारे शरीअत, अक़ाइद मु-तअल्लिक़ए नुबुव्वत, हिस्सा : 1, जि. 1, स. 75 ता 77)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"चल मदीना" के सात हुरूफ़ की निस्बत से दुरूद शरीफ़ के 7 म-दनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दुरूद शरीफ़ के सिल्सिले में ज़िक्र कर्दा अक़्वाले उ-लमा की रोशनी में दर्जे ज़ैल म-दनी फूल हासिल हुए :

﴾1﴿.... हर मुसल्मान पर उम्र में एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज़ है।

﴾2﴿.... जब बार बार सरवरे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक लिया जाए तो हर मजलिस में एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब और ﴾3﴿.... हर बार मुस्तहब है।

﴾4﴿.... दुरूद शरीफ़ सिर्फ़ नबी और फ़िरिश्तों पर पढ़ सकते हैं, ग़ैरे नबी पर नबी के ताबेअ़ हो कर जाइज़ वरना मक्रूह है। (म-सलन अगर किसी ग़ैरे नबी का ज़िक्र कर के उन पर इस तरह दुरूद पढ़ा : "صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم" तो येह मन्अ़ है और अगर किसी नबी के ताबेअ़ हो कर दुरूद पढ़ा म-सलन इस तरह कहा : "हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" तो अब इस में भी आल पर दुरूद भेजा जा रहा है जो ग़ैरे नबी हैं लेकिन चूंकि नबी के ताबेअ़ हो कर है इस लिये मम्नूअ़ नहीं)।

﴾5﴿.... सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की कसरत आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत की अलामत है।

﴾6﴿.... जब भी नामे पाक लिखा जाए तो उस के साथ दुरूद शरीफ़ ज़रूर लिखा जाए।

﴾7﴿.... दुरूदे पाक का इख़्तिसार या'नी "صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" की जगह صلعم या ص वग़ैरा न लिखा जाए कि ना जाइज़ व हराम है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती अमजद अली

www.dawateislami.net

आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मज़ीद फ़रमाते हैं : वोह कि (जो) अपने अवक़ात दुरूद शरीफ़ में मुस्तग़रक़ रखते हैं उन के बदन को मिट्टी नहीं खा सकती।

(बहारे शरीअ़त, आ़लमे बरज़ख़ का बयान, हिस्सा : 1, जि. 1, स. 114)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दुरूदे पाक के इस क़दर फ़ज़ाइल हैं कि पढ़ या सुन कर जी चाहता है कि बस हर वक़्त सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक के नज़राने पेश करते रहें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। नीज़ सरकारे आ़ली वक़ार, नबियों के सालार, शहन्शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार, मक्के मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र शरीफ़ सुन कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद न पढ़ने वाले की येह कितनी बड़ी महरूमी है कि बरोज़े क़ियामत उसे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब नहीं होगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़राते जिब्राईल व इस्राफ़ील का ख़ौफ़े ख़ुदा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है, किस के बारे में उस की क्या ख़ुफ़्या तदबीर है कोई नहीं जानता इस लिये मुक़र्रबीने बारगाहे इलाह अपने बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से हमेशा ख़ौफ़ज़दा रहते हैं, चुनान्चे मन्क़ूल है कि जब इब्लीस के मरदूद होने का वाक़िआ़ हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल और ह़ज़रते सय्यिदुना इस्राफ़ील عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام एक लम्बे अ़र्से तक रोते रहे, रब तआ़ला ने उन की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि "तुम क्यूं रोते हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ नहीं हैं।" **अल्लाह** रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : **"तुम इसी ह़ालत पर रहना मेरी ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ न होना।"**

(اَلرِّسَالَةُ الْقُشَيْرِيَّة، باب الخوف، ص١٦٦)

दीन पर साबित क़-दमी की दुआ़

(इसी लिये) दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ़ मांगा करते थे : "يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ! ثَبِّتْ قَلْبِىْ عَلٰى دِيْنِكَ या'नी ऐ दिलों के फेरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर साबित क़दम रख।"

(جَامِعُ التِّرْمِذِی، كتاب الدعوات، ٩٢-باب، ص٨٠٧، الحديث:٣٥٢٢)

www.dawateislami.net

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर येह दुआ़ मांगा करते थे : **''یَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ! ثَبِّتْ قَلْبِیْ عَلٰی دِیْنِکَ وَطَاعَتِکَ''** या'नी ऐ दिलों के फेरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन और अपनी इताअ़त पर साबित क़दम रख।'' मैं ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कसरत से येह दुआ़ मांगते हैं, क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी कोई ख़ौफ़ है ?'' तो रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं बे ख़ौफ़ कैसे रह सकता हूं हालां कि बन्दों के कुलूब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की (दस्ते कुदरत की) उंगलियों में से दो उंगलियों के दरमियान हैं, वोह जब अपने किसी बन्दे के दिल को फेरना चाहता है फेर देता है।'' **(مسند ابی یعلٰی، مسند عائشۃ، ۴/۵۷، الحدیث:۴۶۶۷)**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाहु अक्बर ! नबियों के सालार, शहन्शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब मख़्लूक़ात से अफ़्ज़ल होने के बा वुजूद किस क़दर ख़ौफ़े ख़ुदा रखते और बार बार **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दीन पर साबित क़-दमी की दुआ़ मांगते थे।

याद रखिये ! सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दुआ़ मांगना उम्मत की ता'लीम के लिये था वरना आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो मा'सूम बल्कि मा'सूमीन के भी सरदार हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुफ़्र बल्कि इस के शाएबे से भी मुनज़्ज़ह व मुबर्रा फ़रमा कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हर क़िस्म के गुनाहों से भी मा'सूम फ़रमाया है कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से गुनाह हो ही नहीं सकता, मुहाल है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कोई गुनाह सरज़द हो बल्कि तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام गुनाहों से मा'सूम होते हैं तो फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो **सय्यिदुल अम्बिया** या'नी अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के भी सरदार हैं।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ नहीं होना चाहिये, हर दम ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र में रहना चाहिये, किसी गुनाह को छोटा समझ कर न कीजिये क्या मा'लूम वोही गुनाह जिसे हम ने मा'मूली समझ लिया है **अल्लाह** न करे हमारी हलाकत व बरबादी का सबब बन जाए, **याद रखिये ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है जब वोह

www.dawateislami.net

नवाज़ने पर आता है तो ब ज़ाहिर बहुत छोटे से अ़मल पर जन्नत की आ'ला ने'मतों से सरफ़राज़ फ़रमा देता है और जब गिरिफ़्त करने पर आता है तो किसी एक सग़ीरा गुनाह पर पकड़ लेता है लिहाज़ा हमें चाहिये कि कोई भी नेकी हरगिज़ तर्क न करें और गुनाह से हर सूरत में इज्तिनाब करें और हर ह़ाल में रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से डरते हुए ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र करते रहें और रो रो कर अ़र्ज़ करें : "**يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ! ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ** या'नी ऐ दिलों के फेरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर साबित क़दम रख।"

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सरकारे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ौफ़े ख़ुदा मुला-ह़ज़ा फ़रमाया।

आइये ! इसी सिल्सिले में एक और रिवायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

हुज़ूर का ख़ौफ़े ख़ुदा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब बादल या तेज़ हवा देखते तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेह्‌रए अन्वर पर ना पसन्दी-दगी पहचानी जाती थी।" मैं رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا अ़र्ज़ करती : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! लोग जब बादल देखते हैं ख़ुश हो जाते हैं इस उम्मीद पर कि इस में बारिश होगी और मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखती हूं कि जब भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बादल को देखते हैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेह्‌रए अक़्दस पर ना पसन्दी-दगी के आसार देखे जाते हैं।" नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! मुझे इस में अ़ज़ाब होने के अन्देशे से अम्न नहीं (या'नी मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं इस में अ़ज़ाब न हो), एक क़ौम को हवा के ज़रीए अ़ज़ाब दिया गया उन्हों ने अ़ज़ाब को देख कर कहा (चुनान्चे क़ुरआने पाक में उन का क़ौल इन अल्फ़ाज़ में नक़्ल किया गया) :

هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا (پ۲۶، الاحقاف:۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह बादल है कि हम पर बरसेगा।

(صَحِيْحُ الْبُخَارِی، کتاب التفسیر، باب فلما راوہ عارضا مستقبل اودیتھم، ص۱۲۳۵، الحدیث:۴۸۲۹)

सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि जब तेज़ हवा चलती तो शहन्शाहे अबरार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारगाहे इलाही में इस त़रह़ अ़र्ज़ करते : "

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَخَيْرَ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ وَاَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ

www.dawateislami.net

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से हवा की ख़ैर और जो इस हवा में है उस की ख़ैर और जो चीज़ हवा ले कर भेजी गई उस की ख़ैर मांगता हूं और हवा के शर और जो इस में है उस के शर से और जो ले कर हवा भेजी गई उस के शर से तेरी पनाह मांगता हूं।''

और जब आस्मान अब्र आलूद होता आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रंग मुबारक मु-तग़य्यर हो जाता, बाहर जाते, अन्दर आते, सामने आते, पीछे जाते, फिर जब मींह बरसता तो येह कैफ़िय्यत दूर हो जाती, सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस में उस परेशानी को जान लिया । मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से (इस का सबब) पूछा तो रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! शायद येह ऐसा ही हो जैसा क़ौमे आ़द ने कहा था (चुनान्चे क़ुरआने पाक में है) :

فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِیَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ (پ۲۶، الاحقاف:۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब उन्हों ने अ़ज़ाब को देखा बादल की त़रह़ आस्मान के कनारे में फैला हुवा उन की वादियों की त़रफ़ आता बोले येह बादल है कि हम पर बरसेगा।

(صحیح مسلم، کتاب صلاۃ الاستسقاء، باب التعوذ عند رؤیۃ الریح......الخ، ص ۳۲۱، الحدیث: ۸۹۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ौमे आ़द पर अ़ज़ाब आने का वाक़िआ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमें हर दम रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से लरज़ां व तरसां रहना चाहिये, कौन है जो एक लम्ह़े के लिये भी क़हरे क़ह्हार के सामने ठहर सके, अ़ज़ाबे इलाही की ताब कौन ला सकता है, ज़िक्र कर्दा ह़दीस शरीफ़ में क़ौमे आ़द पर अ़ज़ाब आने का तज़्किरा है, बतौरे इब्रत उस का मुख़्तसर ज़िक्र किया जाता है : क़ौमे आ़द मक़ामे ''अह़क़ाफ़'' में रहती थी जो उ़मान व ह़ज़्रमौत के दरमियान एक बड़ा रेगिस्तान है। येह लोग बुत परस्त और बहुत बद आ'माल व बद किरदार थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने पैग़म्बर ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلَیْہِ السَّلَام को उन लोगों की हिदायत के लिये भेजा। ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلَیْہِ السَّلَام ने उन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को एक मानने का हुक्म दिया और **ग़ैरुल्लाह** की इ़बादत से मन्अ़ फ़रमाया और

www.dawateislami.net

लोगों पर ज़ुल्म करने से रोका मगर उस क़ौम ने आप عَلَيْهِ السَّلَام को झुटला दिया और अपने कुफ़्र पर अड़े रहे। (क़ुरआने पाक में उन के बे-बाकाना और गुस्ताख़ाना जवाब को इन अल्फ़ाज़ में नक़्ल किया गया :)

اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ یَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝
(پ۸، الاعراف:۷۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो कि हम एक **अल्लाह** को पूजें और जो हमारे बाप दादा पूजते थे उन्हें छोड़ दें तो लाओ जिस का हमें वा'दा दे रहे हो अगर सच्चे हो।

आख़िर अ़ज़ाबे इलाही की झल्कियां शुरूअ़ हो गईं। तीन साल तक बारिश ही नहीं हुई और हर त़रफ़ क़ह़त़ व ख़ुश्क-साली का दौर दौरा हो गया। (उस ज़माने का दस्तूर था कि) जब कोई बला और मुसीबत आती थी तो तमाम मुसल्मान और कुफ़्फ़ार मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जा कर ख़ानए का'बा में दुआ़एं मांगते थे। चुनान्चे उस क़ौम की **70** अफ़राद पर मुश्तमिल एक जमाअ़त मक्कए मुअ़ज़्ज़मा चली गई। इस जमाअ़त में मरसद बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد नामी एक शख़्स भी था (जो मोमिन था मगर अपने ईमान को क़ौम से छुपाए हुए था)। जब क़ौम के लोगों ने एक दूसरे से कहा : ह़रम शरीफ़ में जा कर अपनी क़ौम के लिये बारिश त़लब करो तो मरसद बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد (का जज़्बए ईमानी बेदार हो गया और उस ने तड़प कर) ने कहा : (ऐ मेरी क़ौम !) ख़ुदा की क़सम ! उस वक़्त तक पानी नहीं बरसेगा जब तक तुम **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की बारगाह में तौबा कर के अपने नबी (ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلَيْهِ السَّلَام) पर ईमान न लाओगे। ह़ज़रते मरसद बिन सा'द (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد) ने जब अपना ईमान ज़ाहिर कर दिया तो क़ौमे आ़द के शरीरों ने उन्हें मक्का आने से रोक दिया। उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तीन बदलियां भेजीं। एक सफ़ेद, एक सुर्ख़, एक सियाह और आस्मान से एक आवाज़ आई : ऐ क़ौमे आ़द ! तुम लोग अपनी क़ौम के लिये इन तीन बदलियों में से एक बदली को पसन्द कर लो। उन लोगों ने काली बदली को पसन्द कर लिया, चुनान्चे वोह अब्रे सियाह क़ौमे आ़द की आबादियों की त़रफ़ भेज दिया गया। क़ौमे आ़द के लोग काली बदली को देख कर बहुत ख़ुश हुए (और कहने लगे) ''هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ'' या'नी येह तो बादल है जो हमें बारिश देने के लिये आ रहा है।'' और एक दम ना-गहां उस में से एक आंधी आई जो इतनी शदीद थी कि ऊंटों को मअ़ उन के सुवार के उड़ा कर (कहीं से कहीं) ले जाती थी। (تَفْسِیرِ رُوحُ البَیان، سورة الاعراف، تحت الآیة:۷۲، ۱۹۹/۳تا۲۰۰ مفهومًا)

येह देख कर क़ौमे आ़द के लोगों ने अपने मह़लों में दाख़िल हो कर दरवाज़ों को बन्द कर लिया मगर आंधी (के झोंके) न सिर्फ़ दरवाज़ों को उखाड़ कर ले गए बल्कि उन के घरों में दाख़िल

www.dawateislami.net

हो कर उन के मर्दों, औ़रतों, बच्चों और उन के मालों को हलाक कर दिया सात रात और आठ दिन मुसलसल येह आंधी चलती रही। (تَفْسِیْرُ الصَّاوِی، سورۃ الاعراف، تحت الآیۃ:۷۲، ۱/۶۸۲)

जहां में हैं इब्रत के हर सू नुमूने मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तूने जो आबाद थे वोह मकां अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क्या मैं रब का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ुदा तआ़ला की ने'मतें हर लम्ह़े, हर घड़ी, हर साअ़त हम पर बरस रही हैं जिन को शुमार करने का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता इस लिये बन्दे पर वाजिब है कि रब तआ़ला की ने'मतों पर उस का शुक्र अदा करता रहे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۷۲﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۷۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीजें़ और **अल्लाह** का एह़सान मानो अगर तुम उसी को पूजते हो।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ''इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों पर शुक्र वाजिब है।'' (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 2, अल ब-क़रह, तह़्तल आयह : 172, स. 56) इस लिये मुक़र्रबीने बारगाहे इलाह, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों पर उस का शुक्र अदा करने से कभी भी ग़ाफ़िल नहीं होते, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **743** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''जन्नत में ले जाने वाले आ'माल''** सफ़ह़ा **145** पर है : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात को उठ कर नमाज़ अदा फ़रमाया करते थे ह़त्ता कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़-दमैने शरीफ़ैन सूज गए। मैं ने अ़र्ज़ किया : ''आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसा क्यूं करते हैं, ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सबब से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अगलों और पिछलों के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये

www.dawateislami.net

हैं ?" तो **इमामुल मु-तवर्रिईन, सय्यिदुश्शाकिरीन** صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ وَاٰلہٖ وَسلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा बनना पसन्द न करूं ?"

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب التفسیر، باب لیغفر لك اللّٰہ ما تقدم من ذنبك...الخ، ص۱۲۳۷، الحدیث:۴۸۳۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हकीमुल उम्मत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : (ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ وَاٰلہٖ وَسلَّم के फ़रमान, "क्या मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा बनना पसन्द न करूं ?" से मुराद येह है कि) मेरी येह नमाज़ मग़्फ़िरत के लिये नहीं बल्कि मग़्फ़िरत के शुक्रिया के लिये है। ख़याल रहे कि हम लोग **"अ़ब्द"** हैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ وَاٰلہٖ وَسلَّم **"अ़ब्दुहू"** हैं हम लोग शाकिर हो सकते हैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ وَاٰلہٖ وَسلَّم **"शकूर"** हैं या'नी हर त़रह़ हर वक़्त हर क़िस्म का आ'ला शुक्र करने वाले मक़्बूल बन्दे। हज़रते अ़ली (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) फ़रमाते हैं कि जन्नत की लालच में इ़बादत करने वाले **"ताजिर"** हैं, दोज़ख़ के ख़ौफ़ से इ़बादत करने वाले **"अ़ब्द"** हैं मगर शुक्र की इ़बादत करने वाले **"अह़रार"** हैं। (مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب التحریض علی قیام اللیل،۲/۲۵۴)

عبد دیگر عبدہٗ چیزے دگر

ما سراپا انتظار اُو سراپا منتظر

मुराद येह कि **अ़ब्द** और **अ़ब्दुहू** में बहुत फ़र्क़ है **अ़ब्द** सरापा इन्तिज़ार होता है जब कि **अ़ब्दुहू** का इन्तिज़ार किया जाता है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शुक्र रब तआला की रिज़ा का बाइ़स और इस में ने'मतों की हिफ़ाज़त है जब कि ना शुक्री ग़-ज़बे जब्बार का बाइ़स, ने'मतों में रुकावट और बाइ़से हलाकत है, चुनान्चे बल्अ़म बिन बाऊ़रा जो अपने दौर का बहुत बड़ा आ़लिम और आ़बिदो ज़ाहिद था और उस को इस्मे आ'ज़म का भी इ़ल्म था। येह अपनी जगह बैठा हुवा रुहानिय्यत से अ़र्शे आ'ज़म को देख लिया करता था और बहुत ही मुस्तजाबुद्दा'वात था कि इस की दुआ़एं बहुत ज़ियादा मक़्बूल हुवा करती थीं। इस के शागिर्दों की ता'दाद भी बहुत ज़ियादा थी मश्हूर येह है कि इस की दर्सगाह में त़ालिबे इ़ल्मों की दवातें **बारह हज़ार** थीं लेकिन फिर येह मरदूदे बारगाहे इलाही हो गया। आख़िरी दम तक इस की ज़बान इस के सीने पर लटक्ती रही और वोह बे ईमान हो कर मर गया। (अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन, स. 117 ता 119 मुल्तक़ित़न)

www.dawateislami.net

रिवायत में है कि बा'ज़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़ुदा तआ़ला से बल्अ़म बिन बाऊ़रा के मुआ़-मले और इसे इतनी निशानियां और करामतें अ़ता फ़रमाने के बा'द धुत्कारने के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया कि इस ने मेरी ने'मतों का कभी शुक्र अदा नहीं किया अगर वोह एक मर्तबा भी इन ने'मतों पर मेरा शुक्र अदा करता तो मैं उस की करामतों को सल्ब कर के उस को दोनों जहान में इस त़रह़ ज़लीलो ख़्वार और ख़ाइबो ख़ासिर न करता। (تَفْسِيرِ رُوْحُ الْبَيان، سورة الاعراف، تحت الآية: ١٠، ١٤٧/٣)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُالله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुस्ने अख़्लाक़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुस्ने अख़्लाक़ वोह अ़ज़ीम ने'मत है जो हमारे ख़ालिक़ व मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ख़ासुल ख़ास बन्दों को अ़त़ा फ़रमाई है, एक शख़्स ने नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हुस्ने अख़्लाक़ के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾
(پ٩، الاعراف: ١٩٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।

फिर इर्शाद फ़रमाया : ''हुस्ने ख़ुल्क़ येह है कि तुम क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ करने वाले से सिलए रेह़्मी करो, **जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो।''**

(احياءُ عُلُوْمِ الدِّيْن، كتاب رياضة النفس، بيان فضيلة حسن الخلق ومذمة سوء الخلق، ٦٣/٣)

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हुस्ने ख़ुल्क़ का वस्फ़ बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करने, भलाई के कामों में ख़र्च करने और किसी को तक्लीफ़ न देने का नाम **''हुस्ने ख़ुल्क़''** है।''

(جَامِعُ التِّرْمِذِى، كتاب البر والصلة، باب ما جاء فى حسن الخلق، ص٤٨٦، الرقم: ٢٠٠٥)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुस्ने अख़्लाक़ के तमाम गोशों के जामेअ़ थे, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है कि एक शख़्स ने **सय्यिदुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ाज़िर होने की इजाज़त मांगी, (फ़रमाया कि इजाज़त दे दो) जब उस को

www.dawateislami.net

देखा तो फ़रमाया : येह इस क़बीले का बुरा आदमी है । फिर जब वोह बैठा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के सामने ख़न्दा पेशानी की और कुशादा रूई फ़रमाई । जब वोह शख़्स चला गया तो उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस शख़्स को देखा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के मु-तअ़ल्लिक़ ऐसा ऐसा फ़रमाया फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़न्दा पेशानी और कुशादा रूई भी फ़रमाई ? हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! तुम ने मुझे फ़ोहूश गो कब पाया ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बद तरीन द-रजे वाला क़ियामत के दिन वोह है जिसे लोग उस के शर से डर कर छोड़ दें ।"

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب الادب، باب لم یکن النبی فاحشاولامتفحشا، ص۱۵۰۳، الحدیث:۶۰۳۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त फ़रमाते हैं : (**अल्लाह** के नज़्दीक बद तरीन द-रजे वाला क़ियामत के दिन वोह है जिसे लोग उस के शर से डर कर छोड़ दें) या'नी बा'ज़ लोग ऐसे होते हैं कि लोग उन से नालां (या'नी तंग) होते हैं मगर उस से डर कर उस का एह़तिराम करते हैं, येह उन्हीं में से है अगर मैं इस के सामने वोह ही कहता जो उस के पसे पुश्त कहा था तो येह मेरे पास आना छोड़ देता और इस की इस्लाह़ न हो सकती । इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि किसी शख़्स का मश्हूर ऐ़ब पसे पुश्त बयान करना ग़ीबत नहीं नीज़ लोगों को उस के शर से बचाने के लिये उस के शर पर मुत्तलअ़ कर देना ग़ीबत नहीं नीज़ किसी की इस्लाह़ के लिये उस को बुरा न कहना उस से अख़्लाक़ से पेश आना सुन्नते रसूल है हर शख़्स की इस्लाह़ के त़रीक़े जुदागाना हैं, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ह़कीमे मुत़्लक़ हैं ।

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الاداب، باب حفظ اللسان والغیبۃ والشتم،۶/۴۵۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उ़स्माने बा ह़या से मलाएका की ह़या

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गुलशने सरवरे रिसालत के हर फूल की बू व रंग अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा है, इसी गुलशने पाक से फ़ैज़ पाने के बा'द कोई सिद्दीक़े अक्बर बन गया तो कोई

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म, किसी ने शेरे ख़ुदा होने का अ़ज़ीम लक़ब पाया तो कोई ह़िबरुल उम्मह के ख़िताब से नवाज़ा गया, इसी गुलशन के एक फूल ख़लीफ़ए सालिस अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं, **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बे शुमार ख़ूबियों से नवाज़ा जिन में से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का एक इम्तियाज़ी वस्फ़ "**ह़या**" का ब वज्हे कमाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अन्दर पाया जाना है, चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मेरे सरताज, साहिबे मे'राज, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने घर में अपनी रानें या पिंडलियां खोले लैटे हुए थे(1) तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इजाज़त मांगी इसी ह़ालत पर उन्हें इजाज़त दे दी उन्हों ने कुछ बातचीत की फिर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इजाज़त मांगी उन्हें भी इसी ह़ालत में इजाज़त दे दी फिर उन्हों ने भी बातचीत की फिर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इजाज़त मांगी तो हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बैठ गए और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिये फिर वोह दाख़िल हुए और बातचीत की। जब वोह चले गए तो सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया कि ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के लिये न तो जुम्बिश की और न उन की परवाह की फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आ गए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के लिये न तो जुम्बिश की और न उन की परवाह की फिर ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बैठ गए और अपने कपड़े दुरुस्त फ़रमा लिये (इस में क्या ह़िक्मत है) ?

नबियों के सालार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**क्या मैं उस शख़्स से ह़या न करूं जिस से फ़िरिश्ते भी ह़या करते हैं ?**"

(صَحِیْح مُسْلِم،کتاب فضائل الصحابة ، باب من فضائل عثمان بن عفان ، ص۹۳۷،الحدیث:۲٤۰۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शारेहे़ मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَنِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : "सभी फ़िरिश्ते भी ह़ज़रते उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से शर्म करते हैं इन की तौक़ीरो ता'ज़ीम का एहतिमाम फ़रमाते हैं।"

(1)...... इस की वज़ाह़त करते हुए शारेहे़ मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : या'नी बे परवाही से लैटे हुए थे जिस से आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की पिंडलियां या रान शरीफ़ खुली थीं। (और अगर) रान खुली थी तो इस का मत़लब येह नहीं कि बिल्कुल नंगी थी। येह मत़लब भी हो सकता है कि रान से क़मीस हटी हुई थी तहबन्द शरीफ़ उस जगह पर था। (مراٰۃ المناجیح،کتاب المناقب،باب مناقب عثمان،۸/۳۹۲)

www.dawateislami.net

एक रिवायत में है कि जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अन्सार व मुहाजिरीन में भाईचारे का अ़क्द फ़रमाया तो ह़ज़रते उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) भी वहां मौजूद थे उन के सीने से कुरता हट गया तो वहां के मौजूद फ़िरिश्ते उस मजलिस से हट गए, हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने मलाएका से हटने की वज्ह पूछी, उन्हों ने कहा : ह़ज़रते उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ) से हम को शर्म आती है। **ह़ज़रते उ़स्मान** (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ) की शर्मो ह़या का येह ह़ाल था कि आप गुस्ल ख़ाने में तहबन्द बांध कर गुस्ल करते थे, सिर्फ़ ऊपर का बदन बरह्ना होता था तब भी आप सीधे न बैठते थे शर्म से झुके हुए ही गुस्ल फ़रमाते थे। आप (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ) ने कभी अपनी शर्मगाह को न देखा। और एक रिवायत में है कि उ़स्मान शर्मीले आदमी हैं मुझे ख़ौफ़ हुवा कि अगर मैं ने इन्हें इसी ह़ालत में इजाज़त दे दी तो वोह मुझ तक अपनी ह़ाजत न पहुंचा सकेंगे।

(صَحِیْح مُسْلِم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل عثمان بن عفان، ص۹۳۸، الحدیث:۲۴۰۲)

शारेहे़ मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : एक रिवायत में है कि मैं ने अपने रब (عَزَّ وَجَلَّ) से दुआ़ की, कि मौला ! मेरा उ़स्मान बड़ा ही शर्मीला है तो कल क़ियामत में इस का ह़िसाब न लेना कि वोह शर्मो ह़या की वज्ह से तेरे सामने खड़े हो कर ह़िसाब न दे सकेगा, चुनान्चे पहले ह़िसाब अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) का होगा फिर उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) का फिर अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ) का फिर दूसरों का ह़ज़रते उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ) का ह़िसाब होगा ही नहीं।

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان، ۸/۳۹۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़राते अबू बक्र व उ़मर की फ़ज़ीलत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मज़्कूरा रिवायत में सय्यिदैना सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُمَا का भी ज़िक्र है, अहले सुन्नत व जमाअ़त का अ़क़ीदा है कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में सब से अफ़्ज़ल ख़ु-लफ़ाए अर-बआ़ हैं और इन में सब से अफ़्ज़ल ख़लीफ़ए अव्वल अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, फिर ख़लीफ़ए दुवुम अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म, फिर ख़लीफ़ए सिवुम अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और फिर ख़लीफ़ए चहारुम अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رِضْوَانُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن हैं, जैसा कि सय्यिदुना व मौलाना आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان **"फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़"** में इर्शाद फ़रमाते हैं : "सह़ाबए किराम (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) में सब से अफ़्ज़लो अक्मल व आ'ला व अक़्रब **इलल्लाह**

www.dawateislami.net

खु-लफ़ाए अर-बआ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم थे और इन की अफ़्ज़लिय्यते विलायत बि तरतीबे ख़िलाफ़त, येह चारों हज़रात सब से आ'ला द-रजे के कामिल मुकम्मल हैं।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 234)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : बा'दे अम्बिया व मुर-सलीन, तमाम मख़्लूक़ाते इलाही इन्सो जिन्नो मलक से अफ़्ज़ल सिद्दीक़े अक्बर हैं, फिर उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म, फिर उ़स्माने ग़नी फिर मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم । जो शख़्स मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم को सिद्दीक़ या फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से अफ़्ज़ल बताए गुमराह बद मज़्हब है।

(बहारे शरीअ़त, इमामत का बयान, हिस्सा : 1, जि. 1, स. 241 ता 246)

आस्मान के तारों के बराबर नेकियां

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि एक दफ़्आ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सरे मुबारक एक चांदनी रात में मेरी गोद में था। मैं ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या किसी की नेकियां आस्मान के तारों के बराबर होंगी ?'' महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार, ग़ैबों पर ख़बरदार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां ! वोह उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) हैं।'' सय्यिदह आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : ''हज़रते अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) की नेकियां कहां गईं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) की सारी नेकियां अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) की नेकियों में से एक नेकी की तरह हैं।''

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب ابی بکر وعمر، ۲/۴۲۳، الحدیث:۶۰۶۸)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : इस सुवाल से मा'लूम हो रहा है कि हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का अ़क़ीदा येह था कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हर आस्मान के हर गोशे की ख़बर है और ज़मीन के हर कोने और ता क़ियामत अपने हर उम्मती के हर अ़मल की ख़बर है क्यूं कि तारे मुख़्तलिफ़ आस्मानों पर हैं और उम्मत की इबादतें ज़मीन के मुख़्तलिफ़ गोशों में, दिन के उजियाले में, रात के अंधेरे में होंगी, दो चीज़ों की बराबरी या कमी बेशी वोह ही बता सकता है जिसे दोनों की ख़बर हो। येह है हज़रते आइशा सिद्दीक़ा उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) का अ़क़ीदा (और) येह है हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का इल्म कि न येह फ़रमाया कि जिब्रीले अमीन (عَلَیۡہِ السَّلَام) को आने दो पूछ कर बताएंगे, न येह कि क़लम दवात काग़ज़ लाओ टोटल लगा

www.dawateislami.net

कर कहेंगे, न येह कि ज़रा मुझे सोच कर हिसाब लगा लेने दो (बल्कि) बिला तअम्मुल फ़रमाया कि मेरी सारी उम्मत में ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) वोह हैं जिन की नेकियां ता'दाद में आस्मानों के तारों के बराबर हैं, येह है हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का इ़ल्मे ग़ैबे कुल्ली।

(और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान ''उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की सारी नेकियां अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की नेकियों में से एक नेकी की त़रह़ हैं'' के मु-तअ़ल्लिक़ मुफ़्ती साहि़ब फ़रमाते हैं :) इस एक नेकी में बहुत गुफ़्त-गू है कि इस से कौन सी नेकी मुराद है। फ़क़ीर (या'नी मुफ़्ती साहि़ब) के नज़्दीक इस से मुराद हिजरत की रात ग़ारे सौर में हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ख़िदमत मुराद है। उस रात ह़ज़रते सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने तहज्जुद नहीं पढ़ी थी और कोई इ़बादत नहीं की थी, हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बे मिसाल ख़िदमत की थी और आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का मुबारक सर अपने ज़ानू पर रख कर ख़ूब जी भर कर उस सूरते पाक के नज़ारे किये थे, येह एक नेकी दुन्या भर की सारी नेकियों से बढ़ कर क़रार पाई। (مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب ابی بکر وعمر، ۳۹۱/۸)

साबित हुवा कि जुम्ला फ़राइज़ फ़ुरूअ़ हैं
अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 205)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शा'बान के रोज़े

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रोज़ादारों की फ़ज़ीलत बयान करते हुए **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह **22**, **सू-रतुल अह़ज़ाब**, आयत नम्बर **35** में इर्शाद फ़रमाता है :

وَالصّٰٓئِمِیْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِیْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِیْنَ اللّٰهَ كَثِیْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِیْمًا ﴿۳۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा **1333** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास**

www.dawateislami.net

अत्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा नफ़्ल रोज़ों की भी आदत बनानी चाहिये कि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं और सवाब तो इतना है कि जी चाहता है बस रोज़े रखते ही चले जाएं। मज़ीद दीनी फ़वाइद में ईमान की हिफ़ाज़त, जहन्नम से नजात और जन्नत का हुसूल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी फ़वाइद का तअ़ल्लुक़ है तो रोज़े में दिन के अन्दर खाने पीने में सर्फ़ होने वाले वक़्त और अख़राजात की बचत, पेट की इस्लाह़ और बहुत सारे अमराज़ से हि़फ़ाज़त का सामान है और तमाम फ़वाइद की अस्ल येह है कि इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है।

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में रोज़ों की कसरत

हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, दो आलम के दाता, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **र-मज़ानुल मुबारक** के बा'द **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के रोज़े रखना सब से ज़ियादा पसन्द था, चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पूरे शा'बान के रोज़े रखा करते थे, मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम महीनों में से शा'बान के रोज़े ज़ियादा पसन्द हैं ?" तो इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस महीने में पूरे साल में मरने वालों के नाम लिखता है और मैं येह पसन्द करता हूं कि मुझे इस ह़ाल में मौत आए कि मैं रोज़ादार होउं।

(مسند ابی یعلٰی، مسند عائشة، ۱۱۹/٤، الحدیث:٤٩٠٨)

मा'लूम हुवा कि पूरे **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के रोज़े रखना सुन्नते मुबा-रका है इस लिये हो सके तो हर साल वरना ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार पूरे माहे शा'बान के रोज़े रख कर इस सुन्नत पर भी अ़मल करना चाहिये। ज़िक्र कर्दा ह़दीस शरीफ़ में नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूरे साल में मरने वालों के नाम लिखे जाने का जो तज़्किरा फ़रमाया है येह अ़मल **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** की पन्दरहवीं रात में होता है, जैसा कि तफ़्सीरे **दुर्रे मन्सूर** में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती़ शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی नक़्ल फ़रमाते हैं : "शा'बान की पन्दरहवीं रात लोगों की उ़म्रें, उन का रिज़्क़ और उस साल ह़ज करने वालों के नाम लिखे जाते हैं।"

(اَلدُّرُّالْمَنْثُوْر، سورة الدُّخان، تحت الآیة:٤، ۱۳/۲٥٥)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की रात के लम्ह़ात किस क़दर नाज़ुक हैं ! न जाने क़िस्मत में क्या लिख दिया जाए, बहुत सारे ग़ाफ़िल इन्सान इस रात को

www.dawateislami.net

आतश बाज़ी व खेलकूद में गंवा देते हैं, **आह !** बा'ज़ दफ़्आ बन्दा ग़फ़्लत में पड़ा रह जाता है और उस के बारे में कुछ का कुछ लिखा जा चुका होता है, चुनान्चे "**ग़ुन्यतुत्तालिबीन**" में है : "बहुत से कफ़न धुल कर तय्यार रखे होते हैं मगर कफ़न पहनने वाले बाज़ारों में घूम फिर रहे होते हैं, बहुत से लोग ऐसे होते हैं कि उन की क़ब्रें खुदी हुई तय्यार होती हैं मगर उन में दफ़्न होने वाले खुशियों में मस्त होते हैं। बहुत से लोग हंस रहे होते हैं ह़ालां कि उन की हलाकत का वक़्त क़रीब आ चुका होता है। बहुत से मकानात की ता'मीर का काम मुकम्मल होने वाला होता है मगर मालिके मकान की मौत का वक़्त भी क़रीब आ चुका होता है।"

(اَلْغُنْيَةُ لِطَالِبِیْ طَرِیْقِ الْحَقِ عَزَّوَجَلَّ، مجلس فی فضل شهر شعبان......الخ، فصل وقد سميت ليلة البراءة، الجزء الاوّل، ص۳۴۸)

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सो बरस का है पल की ख़बर नहीं

लिहाज़ा दिन रात धन कमाने की धुन में मगन रहना, और खेल तमाशों में वक़्त गंवाना कोई दानिश मन्दी नहीं, न जाने हमें येह नाज़ुक लम्ह़ात फिर कभी नसीब हों या न हों इस लिये इन को ग़नीमत जानते हुए **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** का पूरा महीना खुसूसन पन्दरहवीं रात को इ़बादत में गुज़ारना चाहिये, अब आइये ! इस महीने में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का अ़मल मुबारक भी मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "माहे शा'बान का चांद नज़र आते ही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तिलावते कुरआने पाक में मश्ग़ूल हो जाते, अपने अम्वाल की ज़कात निकालते ताकि कमज़ोर व मिस्कीन लोग माहे र-मज़ान के रोज़ों के लिये तय्यारी कर सकें, हुक्काम क़ैदियों को त़लब कर के जिस पर ह़द (सज़ा) क़ाइम करना होती उस पर ह़द क़ाइम करते बक़िय्या को आज़ाद कर देते, ताजिर अपने क़र्ज़े अदा कर देते, दूसरों से अपने क़र्ज़े वुसूल कर लेते (यूं माहे **र-मज़ानुल मुबारक** का चांद नज़र आने से क़ब्ल ही अपने आप को फ़ारिग़ कर लेते) और र-मज़ान शरीफ़ का चांद नज़र आते ही ग़ुस्ल कर के (बा'ज़ ह़ज़रात) ए'तिकाफ़ में बैठ जाते।"

(اَلْغُنْيَةُ لِطَالِبِیْ طَرِیْقِ الْحَقِّ عَزَّوَجَلَّ، مجلس فی فضل شهر شعبان......الخ، فصل قال الله تعالٰی: وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ، الجزء الاول، ص۳۴۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ताऊ़न मुसल्मानों के लिये रह़मत

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ताऊ़न के

www.dawateislami.net

मु-तअ़ल्लिक़ पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे बताया : ''वोह एक अ़ज़ाब है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस पर चाहे भेजे अलबत्ता रब तआ़ला ने इसे मुअमिनीन के लिये रह़मत बना दिया है, ऐसा कोई नहीं कि जिस के शह्‌र में त़ाऊ़न(1) फैले और वोह वहां सब्र कर के अज्र के लिये ठहरे रहे येह जानते हुए कि इसे वोही पहुंचेगा जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस के लिये लिखा मगर उसे शहीद का सा सवाब होगा।''

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب احادیث الانبیاء، باب حدیث الغار، ص۸۹۲، الحدیث:۳۴۷۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : ''या'नी त़ाऊ़न कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब है जो काफ़िर इस में मरेगा वोह अ़ज़ाब की मौत मरेगा। (और त़ाऊ़न ज़दा शह्‌र में सब्र के साथ ठहरने वाला मोमिन) ख़्वाह त़ाऊ़न में फ़ौत हो जाए या नहीं जब भी मरेगा उसे द-र-जए शहादत मिलेगा गोया त़ाऊ़न में सब्र शहादत के अज्र का बाइ़स है।''

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الجنائز، باب عیادۃ المریض وثواب المرض، ۲/۴۱۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़रबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : ''शु-हदा और अपने घरों में मरने वाले दोनों, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में त़ाऊ़न में मुब्तला हो कर मरने वालों के बारे में झगड़ेंगे, शु-हदा कहेंगे : (त़ाऊ़न से मरने वाले) हमारे भाई हैं येह ऐसे ही क़त्ल किये गए, जैसे हमें क़त्ल किया गया जब कि अपने बिस्तर पर मरने वाले कहेंगे येह हमारे भाई हैं और येह अपने बिस्तरों पर मरे जिस त़रह़ हम मरे। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा कि इन के ज़ख़्मों की त़रफ़ देखो, अगर वोह मक़्तूलीन के ज़ख़्मों की त़रह़ हों तो उन्हीं में से हैं और उन के साथ हैं। पस उन के ज़ख़्म शु-हदा के ज़ख़्मों के मुशाबेह होंगे।''

(سُنَنُ النَّسائِی، کتاب الجھاد، ۳۶-باب، ص۵۱۵، الحدیث:۳۱۶۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बहर ह़ाल मुसीबतों से घबरा कर भागना नहीं चाहिये बल्कि सब्र कर के अज्र कमाना चाहिये, बा'ज़ दफ़्आ़ येह मसाइब भी रह़मत हुवा करते हैं, चुनान्चे **अल्लाह** के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बन्दे के लिये इ़ल्मे इलाही में जब कोई मर्तबए कमाल मुक़द्दर होता है और वोह अपने अ़मल से उस मर्तबे को नहीं पहुंच सकता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस के जिस्म या माल या औलाद की आफ़त में मुब्तला कर देता है फिर उस पर

(1)...... त़ाऊ़न को इंग्लिश में प्लेग **(Plague)** बोलते हैं, येह चूहे या पिस्सूओं के काटने से लाह़िक़ होने वाला मोहलिक मरज़ है, इस में छाती या बग़ल वग़ैरा में गिल्टियां (गांठें) निकलती हैं और तेज़ बुख़ार हो जाता है।

(माख़ूज़ अज़ फ़ीरोज़ुल्लुग़ात, स. 923)

www.dawateislami.net

सब्र अ़ता फ़रमाता है यहां तक कि उसे उस मर्तबे तक पहुंचा देता है जो उस के लिये **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** की त़रफ़ से मुक़द्दर हो चुका होता है।"

(سُنَن اَبی داؤد، کتاب الجنائز، باب الامراض المکفرة للذنوب، ص۴۹۹، الحدیث:۳۰۹۰)

20 ग़म 20 मनाज़िल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा कि बन्दा बला व मुसीबत पर सब्र करने से उस मर्तबे तक पहुंच जाता है जिस तक त़ाअ़त व इ़बादत से नहीं पहुंच सकता, चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **"मस्नवी शरीफ़"** के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : "एक औ़रत के **बीस** बेटे थे क़ज़ाए इलाही से हर साल एक एक बेटा **अठ्ठारह अठ्ठारह** साल की उ़म्र में फ़ौत होना शुरूअ़ हुवा, **उन्नीस** तक येह साबिरा रही जब **बीसवें** बच्चे को वोह ही बीमारी हुई तो येह घबरा गई बहुत कुछ इ़लाज मुआ़-लजा किया, लड़का जां-बर (शिफ़ायाब) न हो सका और मर गया नतीजा येह हुवा कि मां दीवानी हो गई। एक रात इसी जुनून की ह़ालत में ख़्वाब में एक निहायत दिलकश बाग़ देखा जिस की सर-सब्ज़ी, नहरों की रवानी, ज़ैबाइश बयान नहीं हो सकती, उस में बे शुमार बंगले बने हुए थे हर एक पर मालिक का नाम कन्दा था, एक निहायत नफ़ीस बंगले पर अपना नाम लिखा हुवा देखा। बहुत ही ख़ुश हो कर अन्दर चली गई अन्दर की रौनक़ और बहार देख कर दंग रह गई, उस के बाग़ में टहलने लगी और मकान के कमरों में घूमने फिरने लगी, एक कमरे में देखा कि उस के बीसों लड़के निहायत ऐ़शो आराम से बैठे हैं, इसे देख कर बोले कि अम्मां ! हम अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) के पास निहायत आराम से हैं।

पुकारने वाले ने पुकार कर कहा : ऐ मोमिना ! तेरा मक़ाम येह है मगर तेरे आ'माल तुझे यहां तक नहीं पहुंचा सकते थे इस लिये तुझे **बीस ग़म** दिये गए येह **बीस ग़म** इस मन्ज़िल की **बीस सीढ़ियां** थीं जिन को तूने रब (عَزَّوَجَلَّ) के करम से तै़ कर लिया, अब तेरे लिये ख़ुशी ही ख़ुशी है।

जब वोह येह ख़्वाब देख कर चौंकी तो चीख़ी कि ख़ुदाया ! तू मुझे सो बेटे दे और सो ही को जवानी की मौत दे, मुझे क्या ख़बर थी कि तेरे क़ह्र में मेहर पोशीदा है।"

(रसाइले नईमिय्या, स. 440)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मा'लूम हुवा ! बा'ज़ दफ़्आ मुसीबतें इन्सान को संवारने और उसे आ'ला मरातिब पर फ़ाइज़ करने और अज्रे अ़ज़ीम का ह़क़दार बनाने के लिये आती हैं। कहीं ऐसा न हो कि इन पर बे सब्री करने के बाइस बरोज़े क़ियामत मिलने वाले अ़ज़ीम अज्रो सवाब से मह़रूम होना पड़े, बा'ज़ दफ़्आ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मह़बूब बन्दों पर मुसीबतें नाज़िल फ़रमा कर उन की आज़्माइश फ़रमाता है, चुनान्चे इस ज़िम्न में नबियों के सालार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िकायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

जंगे उहुद से ज़ियादा सख़्त दिन

सफ़रे उहुद के मुद्दतों बा'द एक मर्तबा उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया : क्या आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जंगे उहुद के दिन से भी ज़ियादा सख़्त कोई दिन गुज़रा है ? तो शहन्शाहे अबरार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : कि मैं ने तुम्हारी क़ौम से (सख़्त तक्लीफ़ का) सामना किया और लोगों से सख़्त तक्लीफ़ जो मैं ने पाई वोह उ़क़्बा के दिन थी जब मैं ने इब्ने अ़ब्दे यालैल बिन अ़ब्दे कुलाल को इस्लाम की दा'वत दी तो उस ने मुझे ऐसा जवाब न दिया जो मैं चाहता था। तो मैं इस ग़म में वहां से चल पड़ा अभी मुझे इफ़ाक़ा न हुवा था कि ''क़र्नुस्सआ़लिब'' (एक मक़ाम का नाम है वहां) पहुंच कर मैं ने सर उठाया तो क्या देखता हूं कि एक बदली मुझ पर साया किये हुए है मैं ने उस बादल में ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को देखा उन्हों ने मुझे आवाज़ दी और कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ौम का क़ौल और उन का जवाब सुन लिया और **म-लकुल जिबाल** (या'नी पहाड़ों के फ़िरिश्ते) को आप के पास भेजा ताकि आप उन के मु-तअ़ल्लिक़ **म-लकुल जिबाल** को जो चाहें हुक्म फ़रमा दें।

पहाड़ों का फ़िरिश्ता मुझे सलाम कर के अ़र्ज़ करने लगा कि ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे जो चाहें हुक्म फ़रमाएं मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म बजा लाने के लिये तय्यार हूं। अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चाहें तो मैं ''अख़्शबैन'' (या'नी अबू क़ुबैस और क़ुईक़आ़न नामी दोनों पहाड़ों) को इन कुफ़्फ़ार पर डाल दूं। येह सुन कर मैं ने जवाब दिया : (नहीं) बल्कि मैं उम्मीद करता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की नस्लों से अपने ऐसे बन्दे पैदा फ़रमाएगा जो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ही इबादत करेंगे और शिर्क नहीं करेंगे।

(صَحِيْحُ الْبُخَارِی، کتاب بدء الخلق ، باب اذا قال احدکم آمین والملائکة فی السماء...الخ ، ص۸۲۸، الحدیث:۳۲۳۱)

www.dawateislami.net

मा'लूम हुवा ! राहे खुदा में मसाइब बरदाश्त करना नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत है इस लिये ऐसे मौक़ओं पर हमें घबरा कर बे सब्री का मुज़ा-हरा नहीं करना चाहिये बल्कि सब्र कर के **100** शहीदों का सवाब कमाना चाहिये, जी हां ! मेरे आक़ा, दो आ़लम के दाता, शबे असरा के दूल्हा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने मेरी उम्मत के फ़साद के वक़्त मेरी सुन्नत को मज़्बूती से थामे रखा उस के लिये **100** शहीदों का सवाब है।" (مِشْكٰوةُ الْمَصَابِيْح، كتاب الايمان، باب الاعتصام بالكتاب والسنة، ١/٥٥، الحديث:١٧٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

औ़रतों का जिहाद "ह़ज व उ़म्रह"

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या औ़रतों पर जिहाद है ? इर्शाद फ़रमाया : "हां ! इन पर वोह जिहाद है जिस में जंग नहीं (या'नी) ह़ज व उ़म्रह।"

(سُنَن اِبْنِ مَاجَه، كتاب المناسك، باب الحج جهاد النِّساء، ص٤٧١، الحديث:٢٩٠١)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़ज को जिहाद कहने की वज्ह बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "इन के जिहाद में सफ़र, थकन और मशक़्क़त है जंग नहीं, (और ह़ज में भी सफ़र, थकन और मशक़्क़त होती है) इसी मुना-सबत से ह़ज को जिहाद फ़रमाया।" (مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب المناسک، ۴/۹۹)

अल्लाहु रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ पारह **4**, **सूरए आले इमरान**, आयत नम्बर **97** में इर्शाद फ़रमाता है :

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۷﴾ (پ٤، اٰل عمرٰن: ٩٧)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** के लिये लोगों पर इस घर का ह़ज करना है जो इस तक चल सके और जो मुन्किर हो तो **अल्लाह** सारे जहान से बे परवाह है।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस आयते करीमा में ह़ज की फ़र्ज़िय्यत का बयान है, सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ़ शहन्शाहे मुअ़ज़्ज़म, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें ख़ुत़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ लोगो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर ह़ज फ़र्ज़ किया है लिहाज़ा ह़ज करो।"

(صَحِيْح مُسْلِم، كتاب الحج، باب فرض الحج مرة فى العمر، ص٤٩٩، الحديث:١٣٣٧)

www.dawateislami.net

"मदीना" के 5 हुरूफ़ की निस्बत से फ़ज़ाइले हज व उ़म्रह पर मुश्तमिल 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा

आइये ! अब हज के बारे में शहन्शाहे अबरार, महबूबे रब्बे गफ़्फ़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन मुला-हज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿.... जिस ने हज किया और रफ़स (या'नी औरतों के सामने सोहबत का तज़्किरा) और फ़िस्क़ न किया तो गुनाहों से पाक हो कर ऐसा लौटा जैसे उस दिन था कि जब मां के पेट से पैदा हुवा था।

(صَحِيْحُ الْبُخَارِى، كتاب الحج، باب فضل الحج المبرور، ص٤٢٣، الحديث:١٥٢١)

﴾2﴿.... हज कमज़ोरों के लिये जिहाद है। (سُنَن اِبْنِ مَاجَه، كتاب المناسك، باب الحج جهاد النساء، ص٤٧١، الحديث: ٢٩٠٢)

﴾3﴿.... हज व उ़म्रह मोहताजी और गुनाहों को ऐसे दूर करते हैं जैसे भट्टी लोहे, चांदी और सोने के मैल को दूर कर देती है और हज्जे मबरूर का सवाब जन्नत ही है।

(جَامِعُ التِّرْمِذِى،كتاب الحج، با ب ما جاء فى ثواب الحج والعمرة ،ص٢٢٢، الحديث:٨١٠)

﴾4﴿.... र-मज़ान में उ़म्रह मेरे साथ हज के बराबर है।

(صَحِيْحُ الْبُخَارِى، كتاب جزاء الصيد، باب حج النساء، ص٤٩٤، الحديث:١٨٦٣)

﴾5﴿.... जो मक्कए मुकर्रमा (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا) से पैदल हज को जाए यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا) वापस आ जाए, उस के लिये हर क़दम पर **700** नेकियां ह़रम शरीफ़ की नेकियों की मिस्ल लिखी जाएंगी। कहा गया : ह़रम की नेकियों की क्या मिक्दार है ? फ़रमाया : हर नेकी लाख नेकी है। (اَلْمُسْتَدْرَك عَلَى الصَّحِيْحَيْن لِلْحَاكِم،كتاب المناسك، فضيلة الحج ماشيًا،٢/١١٤، الحديث:١٧٣٥)

तो इस हिसाब से हर क़दम पर सात करोड़ नेकियां हुईं।

ऐ मेरी वोह इस्लामी बहनो जिन पर हज फ़र्ज़ है ! तुम कैसे हज से पीछे रह जाती हो हालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर हज फ़र्ज़ किया है और तुम इस में रग़बत क्यूं नहीं रखतीं हालां कि येह तुम्हारे लिये रोज़े महशर का ज़ख़ीरा है और क्यूंकर इस का एहतिमाम नहीं करतीं हालां कि मन्क़ूल है कि "सिर्फ़ एक हज की ब-र-कत से तीन अफ़राद जन्नत में दाख़िल होंगे : **(1)**.... हज की वसिय्यत करने वाला। **(2)**.... वसिय्यत पूरी करने वाला और **(3)**.... मरने वाले की तरफ़ से हज करने वाला।" (اَلرَّوْض الْفَائِق، المجلس الثامن فى ذكر حجاج بيت الله الحرام، ص٥٥)

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! **अल्लाहुल करीम** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ले अ़मीम तो मुला-हज़ा फ़रमाइये कि जो कोई इख़्लास के साथ हज व उ़म्रह की सआदत हासिल करता है उस को कैसे कैसे फ़ज़ाइल

www.dawateislami.net

व मुबश्शरात से नवाज़ता है, **ग़ौर फ़रमाइये !** उस ने हमें पैदा फ़रमाया और फिर हमें सिह़्ह़तो तन्दुरुस्ती, मालो दौलत, चलने फिरने, सफ़र करने वग़ैरा वग़ैरा करोड़हा करोड़ ने'मतों से नवाज़ कर ह़ज व उ़म्रह की इस्तित़ाअ़त अ़ता फ़रमाई और फिर जो कोई बन्दा इस तौफ़ीक़ व अ़ता से ह़ज व उ़म्रह की सआ़दत पाता है तो उस को त़रह़ त़रह़ की बिशारात से नवाज़ता है कि उस के गुज़श्ता तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देता है, हर हर क़दम पर सात करोड़ नेकियां अ़ता फ़रमाता है लिहाज़ा इस से हरगिज़ हरगिज़ ग़फ़्लत नहीं करनी चाहिये **याद रखिये !** बिला उ़ज़्रे शर-ई ह़ज्जे फ़र्ज़ अदा न करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस्लामी बहन को शोहर या किसी मह़रम के बिग़ैर एक दिन (या'नी तक़्रीबन साढ़े **30** किलो मीटर) के सफ़र पर जाना ह़राम है। लिहाज़ा अगर औ़रत को मक्का तक जाने में एक दिन या ज़ियादा का रास्ता हो तो वोह बिग़ैर शोहर या मह़रम के ह़ज पर नहीं जा सकती और अगर इस से कम का रास्ता हो तो बिग़ैर शोहर या मह़रम के भी जा सकती है। चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن **"फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़"** में इर्शाद फ़रमाते हैं : "ह़ज की फ़र्ज़िय्यत में औ़रत मर्द का एक हुक्म है, जो राह की त़ाक़त रखता हो उस पर फ़र्ज़ है मर्द हो या औ़रत, जो अदा न करेगा, अ़ज़ाबे जहन्नम का मुस्तह़िक़ होगा। औ़रत में इतनी बात ज़ियादा है कि इसे बिग़ैर शोहर या मह़रम के साथ लिये, सफ़र को जाना ह़राम है, इस में कुछ ह़ज की ख़ुसूसिय्यत नहीं, कहीं एक दिन के रास्ते पर बे शोहर या मह़रम जाएगी तो गुनहगार होगी, हां जब फ़र्ज़ अदा हो जाए तो बार बार औ़रत को मुनासिब नहीं कि वोह जिस क़दर पर्दे के अन्दर है उस क़दर बेहतर है।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 657)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : मह़रम साथ जाए तो उस का न-फ़क़ा औ़रत के ज़िम्मे है, लिहाज़ा अब येह शर्त़ है कि अपने और उस के दोनों के न-फ़क़े पर क़ादिर हो।[1]

(الدُّرُّ المختار وردُّ المحتار، کتاب الحج، مطلب فی قولھم یقدم حق العبد...الخ، ۳/ ۵۳۲)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1)...... ह़ज व उ़म्रह के अह़कामात के बारे में मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल, हिस्सा 6 सफ़ह़ा नम्बर 1030 ता 1232 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये। (इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

अगर मुझे शबे क़द्र मिल जाए तो......!!!

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर मुझे शबे क़द्र का इ़ल्म हो जाए तो मैं उस में क्या (कलिमात) कहूं ?" तो हु़ज़ूर **सय्यिदुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम येह दुआ़ करो : "**اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ** या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू बहुत मुआ़फ़ करने वाला, मुआ़फ़ करने को पसन्द फ़रमाता है पस मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे ।"

(جَامِعُ التِّرْمِذِی، کتاب الدعوات، ۸۷-باب، ص۸۰۵، الحدیث:۳۵۱۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से शबे क़द्र में पढ़ी जाने वाली दुआ़ के बारे में दरयाफ़्त करना इस रात की इस अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत के पेशे नज़र था जो कई मक़ामात पर खुद हु़ज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुद बयान फ़रमाई है, चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस शरीफ़ में है : "जिस ने **लै-लतुल क़द्र** में ईमान और इख़्लास के साथ क़ियाम किया तो उस के गज़श्ता गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।"

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب فضل لیلۃ القدر، باب فضل لیلۃ القدر، ص۵۲۷، الحدیث:۲۰۱۴)

शबे क़द्र की फ़ज़ीलत में आयात

देखिये ! शबे क़द्र किस क़दर अहम रात है कि इस की शाने मुबारक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पूरी सूरत नाज़िल फ़रमाई, इस सूरए मुबा-रका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस मुबारक रात की कई खुसूसिय्यात इर्शाद फ़रमाई हैं, चुनान्चे पारह **30 सू-रतुल क़द्र** में **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ ﴿۱﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا لَیْلَةُ الْقَدْرِ ﴿۲﴾ لَیْلَةُ الْقَدْرِ ﴙ خَیْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ﴿۳﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓىٕكَةُ وَ الرُّوْحُ فِیْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ﴿۴﴾ سَلٰمٌ ﱡ هِیَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿۵﴾ (پ۳۰، القدر:۱تا۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा और तुम ने क्या जाना क्या शबे क़द्र, शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर इस में फ़िरिश्ते और जिब्रील उतरते हैं अपने रब के हुक्म से हर काम के लिये वोह सलामती है सुब्ह़ चमक्ने तक ।

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام इसी सूरए क़द्र के ज़िम्न में फ़रमाते हैं : "इस रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद को लौहे़ मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या पर नाज़िल फ़रमाया और फिर **20** या **23** बरस की मुद्दत में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर इसे ब तदरीज नाज़िल किया।" (تَفْسِيْرُ الصَّاوِی مع جلالین، پ ٣٠، القدر، تحت الآية:١، الجزء السادس، ٣٠٦/٣)

लिहाज़ा इस मुक़द्दस रात को हरगिज़ हरगिज़ ग़फ़्लत में नहीं गुज़ारना चाहिये, इस रात इ़बादत करने वाले को एक हज़ार माह या'नी **83** साल **4** माह से भी ज़ियादा इ़बादत का सवाब अ़ता किया जाता है और इस ज़ियादा का इ़ल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जाने या उस के बताए से उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जानें कि कितना है, इस रात में ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और फ़िरिश्ते नाज़िल होते हैं और फिर इ़बादत करने वालों से मुसा-फ़ह़ा करते हैं और इस मुबारक शब का हर एक लम्ह़ा सलामती ही सलामती है और येह सलामती सुब्हे़ सादिक़ तक बर क़रार रहती है, येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ासुल ख़ास करम है कि येह अ़ज़ीम रात सिर्फ़ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत को अ़ता की गई है। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 1126)

लड़ाई का वबाल

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए ताकि हम को शबे क़द्र के बारे में बताएं (कि किस रात में है), दो मुसल्मान आपस में झगड़ रहे थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं इस लिये आया था कि तुम्हें शबे क़द्र बताऊं लेकिन फुलां फुलां शख़्स झगड़ रहे थे इस लिये (इस का तअ़य्युन) उठा लिया गया और मुम्किन है कि इसी में तुम्हारी बेहतरी हो। अब इस को (आख़िरी अ़शरे की) नवीं, सातवीं और पांचवीं रात में ढूंडो।"

(صَحِيْحُ الْبُخَارِی، کتاب فضل ليلة القدر، باب رفع معرفة ليلة القدر...الخ، ص٥٢٨، الحديث:٢٠٢٣)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़दीसे पाक में हमारे लिये किस क़दर दर्से इ़ब्रत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बताने ही वाले थे कि शबे क़द्र कौन सी रात है कि दो मुसल्मानों का बाहम झगड़ना मानेअ़ हो गया और हमेशा हमेशा के लिये शबे क़द्र को मख़्फ़ी कर दिया गया इस से अन्दाज़ा लगाइये कि मुसल्मानों का आपस में लड़ाई

www.dawateislami.net

झगड़ा करना रह़मत से किस क़दर दूरी का सबब बन जाता है। **मुसल्मानो !** आप तो एक दूसरे के मुहाफ़िज़ थे आप को क्या हो गया है ? हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तुम मोमिनों को (इस्लामी भाईचारे के सबब) बाहम एक दूसरे पर रह़म करने, आपस में मह़ब्बत करने और बाहम एक दूसरे पर मेह्रबानी व शफ़्क़त करने में मिस्ले जिस्म देखोगे। जब एक उ़ज़्व तक्लीफ़ ज़दा होता है तो उस के बाक़ी आ'ज़ा उस की बेदारी और बे आरामी में बाहम एक दूसरे के शरीक हो जाते हैं।'' (صَحِيْحُ الْبُخَارِى، كتاب الادب، باب رحمة الناس والبهائم، ص١٤٩٩، الحديث:٦٠١١)

इस लिये हमें आपस में लड़ाई झगड़ा करने की बजाए एक दूसरे की हमदर्दी व ग़म गुसारी करनी चाहिये और इस्लामी भाईचारा क़ाइम करना चाहिये।

अख़ुव्वत इस को कहते हैं चुभे कांटा जो काबुल में
तो हिन्दुस्तां का हर पीरो जवां बेताब हो जाए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शबे क़द्र की अ़लामात

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, सरकारे वाला तबार, बि इज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''शबे क़द्र **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़-शरह की त़ाक़ रातों में है तो जो कोई ईमान के साथ ब निय्यते सवाब इस मुबारक रात में इबादत करे उस के तमाम अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। और लै-लतुल क़द्र (इक्कीसवीं 21,) तेईसवीं **23**, पच्चीसवीं **25**, सत्ताईसवीं **27** या उन्तीसवीं **29** शब या र-मज़ान की आख़िरी शब में है।'' और **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस की अ़लामात में से येह भी है कि वोह मुबारक शब **रोशन और बिल्कुल साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ और पुर सुकून होती है** गोया कि इस में चांद ख़ूब चमक रहा होता है, **इस में न ज़ियादा गरमी होती है न ज़ियादा सर्दी** बल्कि येह रात मो'तदिल होती है, इस **पूरी रात में शयात़ीन को आस्मान के सितारे नहीं मारे जाते**। मज़ीद निशानियों में से येह भी है कि इस रात (के गुज़रने के बा'द जो) सुब्ह़ आती है उस में **सूरज बिग़ैर शुआ़अ़ के तुलूअ़ होता है** और वोह ऐसा होता है गोया कि

www.dawateislami.net

चौदहवीं का चांद, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस दिन तुलूए आफ़्ताब के साथ शैत़ान को निकलने से रोक दिया है। (इस एक दिन के इलावा हर रोज़ सूरज के साथ साथ शैत़ान भी निकलता है।)

(مُسندِ اِمام احمد، مسندالانصار، حدیث عبادہ بن صامت ، ۳۴۶/۹، الحدیث:۲۳۴۰۸مفھومًا)

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औ़रत पर सब से ज़ियादा ह़क़ किस का ?

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सुवाल किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! औ़रत पर सब से ज़ियादा किस का ह़क़ है ?" इर्शाद फ़रमाया : "उस के शोहर का।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "तो फिर मर्द पर सब से ज़ियादा ह़क़ किस का है ?" इर्शाद फ़रमाया : "**उस की मां का।**"

(اَلْمُسْتَدرَك عَلَی الصَّحِیْحَیْن لِلْحَاکِم، کتاب البروالصلة، ۲۰۲۱ بر امك ثم اباك...الخ، ۲۰۸/۵، الحدیث:۷۳۲۶)

शोहर के क़दमों का ग़ुबार चेहरे से साफ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बीवी के ज़िम्मे शोहर के ह़ुक़ूक़ बे शुमार हैं ह़त्ता कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ औ़रतों के गुरौह !** अगर तुम अपने ऊपर अपने शोहरों के ह़ुक़ूक़ जानतीं तो तुम में से हर एक **शोहर के चेहरे का ग़ुबार अपने रुख़्सार से साफ़ करती।**"

(اَلْمُصَنَّف لِاِبْنِ اَبِی شَیْبَة، کتاب النکاح، (۱۵۰)۔ ما حق الزوج علی امرأته؟، ۳۹۸/۳، الحدیث:۸)

औ़रत पर शोहर के ह़ुक़ूक़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1010** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" जिल्द **2** सफ़ह़ा **184** पर शैख़ुल इस्लाम शहाबुद्दीन अ़ल्लामा **अह़मद बिन ह़जर** मक्की शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْکَافِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام इर्शाद फ़रमाते हैं : औ़रत पर वाजिब है कि **(1)**.... हमेशा अपने शोहर से ह़या करे। **(2)**.... उस के सामने निगाहें नीची रखे। **(3)**.... उस के ह़ुक्म की इत़ाअ़त करे। **(4)**.... उस की गुफ़्त-गू के वक़्त ख़ामोश रहे। **(5)**.... उस की आमद और रवानगी

www.dawateislami.net

पर खड़ी हो जाए। **(6)**.... सोते वक़्त अपना आप उसे पेश कर दे। **(7)**.... उस की अ़दम मौजू-दगी में उस की इ़ज़्ज़त और माल के मुआ़-मले में उस से ख़ियानत न करे। **(8)**.... उस को पसन्द आने वाली ख़ुश्बू लगाए। **(9)**.... मिस्वाक और ख़ुश्बू से अपने मुंह को साफ़ रखे। **(10)**.... उस की मौजू-दगी में बहुत सजी संवरी रहे और उस की अ़दम मौजू-दगी में बनाव सिंघार न करे। **(11)**.... उस के घर वालों और रिश्तेदारों की इ़ज़्ज़त करे और **(12)**.... उस की त़रफ़ से कम को भी ज़ियादा समझे।

मज़ीद फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने वाली औ़रत को चाहिये कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और अपने शोहर की इत़ाअ़त की कोशिश करे और पूरी कोशिश कर के शोहर की रिज़ा ह़ासिल करे क्यूं कि वोही इस की जन्नत और दोज़ख़ है। (الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة:٢٨٠، ٨٤/٢)

चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना हु़सैन बिन मिह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मेरी फूफी शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हु़स्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में किसी ह़ाजत के लिये ह़ाज़िर हुईं जब उन की ह़ाजत पूरी हो गई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम शादी शुदा हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "जी हां !" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम्हारा अपने शोहर के साथ रवय्या कैसा है ?" अ़र्ज़ किया : "मैं उस के हु़क़ूक़ पूरे करने में कोई कमी नहीं करती मगर जिस से मैं आ़जिज़ आ जाऊं।" इर्शाद फ़रमाया : "पस तुम ग़ौर कर लो कि तुम उस की नज़र में कहां हो ? वोही तुम्हारी जन्नत और जहन्नम है।" (مسند احمد، مسند الكوفيين، حديث حصين بن محصن، ٦٧٠/٧، الحديث:١٩٥١٩)

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़ीद येह इर्शादात भी फ़रमाए : **(1)**.... अपने शोहर की इत़ाअ़त करने वाली औ़रत के लिये हवा में परिन्दे, पानी में मछलियां, आस्मान में फ़िरिश्ते और चांद सूरज उस वक़्त तक इस्तिग़्फ़ार करते रहते हैं जब तक कि वोह अपने शोहर की इत़ाअ़त में रहती है। **(2)**.... जो औ़रत अपने शोहर की ना फ़रमानी करती है उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत होती है। **(3)**.... जो औ़रत अपने शोहर के चेहरे पर तेवरी चढ़ाने का बाइ़स बनती है तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहती है यहां तक कि उसे हंसा कर राज़ी कर ले और **(4)**.... जो औ़रत अपने शोहर की इजाज़त के बिग़ैर अपने घर से निकलती है उस के वापस पलटने तक फ़िरिश्ते उस पर ला'नत भेजते रहते हैं। (الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة:٢٨٠، ٨٤/٢) **(5)**.... एक औ़रत ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं औ़रतों की त़रफ़ से नुमायन्दा बन

www.dawateislami.net

कर हाज़िर हुई हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मर्दों पर जिहाद फ़र्ज़ फ़रमाया है अगर येह ज़ख़्मी हों तो अज्र पाएं और अगर शहीद हो जाएं तो अपने **रब** عَزَّوَجَلَّ के पास ज़िन्दा रहें और रिज़्क़ दिये जाएं और हम औरतें इन के घर की देखभाल करती हैं हमारे लिये इस में क्या अज्र है ?" तो नबिय्ये ग़ैबदान बि इज़्ने ख़ुदाए रहमान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम जिस औरत से भी मिलो उसे बता दो कि शोहर की फ़रमां बरदारी करना और उस के हक़ को पहचानना जिहाद के बराबर है और तुम में से बहुत कम औरतें ऐसा करती हैं।" (اَلتَّرْغِيْب وَالتَّرْهِيْب، كتاب النكاح، ترغيب الزوج فى الوفاء بحق زوجته، ص٦٤٦،الحديث:١٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस लिये बीवी को चाहिये कि हमेशा शोहर से हया करे, उस से लड़ाई झगड़ा न करे, हमेशा शोहर के हर हुक्म की इताअ़त करे, जब शोहर कलाम करे तो ख़ामोशी इख़्तियार करे, उस की ग़ैर मौजू-दगी में उस की इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त करे, शोहर के माल में ख़ियानत न करे, ख़ुश्बू वग़ैरा लगाए, मुंह की सफ़ाई और कपड़ों की पाकीज़गी का ख़ास ख़याल रखे, क़नाअ़त पसन्दी का इज़्हार करे, महब्बत व शफ़्क़त का अन्दाज़ अपनाए, ज़ैबो ज़ीनत की पाबन्दी करे, शोहर के घर वालों और क़राबत दारों का एहतिराम करे, अच्छे अन्दाज़ में उस का हाल दरयाफ़्त करे, उस के हर काम को शुक्रिया के साथ क़बूल करे, जब शोहर का क़ुर्ब पाए तो उस से महब्बत का इज़्हार और जब उसे देखे तो ख़ुशी व मसर्रत का इज़्हार करे। (رسائل امام غزالى، الادب فى الدِّين، ص١١)

शोहर के हुक़ूक़ की अदाएगी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **119** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़**" सफ़हा **38** पर सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "ज़न व शोहर (या'नी मियां बीवी) में हर एक के दूसरे पर हुक़ूक़े कसीरा (बहुत सारे हुक़ूक़) वाजिब हैं इन में जो बजा न लाएगा अपने गुनाह में गिरिफ़्तार होगा, अगर एक अदाए हक़ न करे तो दूसरा उसे दस्तावेज़ बना कर उस के हक़ को साक़ित नहीं कर सकता मगर वोह हुक़ूक़ कि दूसरे के किसी हक़ पर मब्नी हों अगर येह उस का ऐसा हक़ तर्क करे वोह दूसरा उस के येह हुक़ूक़ कि इस पर मब्नी थे तर्क कर सकता है जैसे औरत का नानो न-फ़्क़ा कि शोहर के यहां पाबन्द रहने का बदला है अगर नाहक़ इस के यहां से चली जाएगी जब तक वापस न आएगी कुछ न पाएगी, ग़रज़ वाजिब होने, मुता-लबा होने, बे वज्हे शर-ई अदा न करने से गुनहगार होने में तो हुक़ूक़े ज़न व शोहर बराबर हैं, **हां !** शोहर के हुक़ूक़ औरत पर ब कसरत हैं और इस पर वुजूब भी अशद व आकद (या'नी ज़ियादा सख़्त और

www.dawateislami.net

ज़ियादा ताकीद के साथ है) । औ़रत पर सब से बड़ा ह़क़ शोहर का है या'नी मां बाप से भी ज़ियादा और मर्द पर सब से बड़ा ह़क़ मां का है या'नी ज़ौजा का ह़क़ इस से बल्कि बाप से भी कम । ذٰلِکَ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ (तरजमा : येह इस लिये कि **अल्लाह** ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी)"

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किस चीज़ से मन्अ़ करना जाइज़ नहीं ?

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है, उन्हों ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सी चीज़ है जिस का मन्अ़ करना ह़लाल नहीं ?" फ़रमाया : "**पानी, नमक और आग ।**" फ़रमाती हैं, मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! पानी को तो हम समझ गए मगर नमक और आग का हुक्म क्यूं है ?" इर्शाद फ़रमाया : "ऐ हुमैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! जिस ने किसी को आग दी उस ने गोया उस आग से पका हुवा सारा खाना ख़ैरात किया और जिस ने किसी को नमक दिया उस ने गोया सारा वोह खाना ख़ैरात किया जिसे उस नमक ने लज़ीज़ बनाया और जिस ने किसी मुसल्मान को एक घूंट पानी पिलाया जहां पानी आ़म मिलता हो उस ने गोया ग़ुलाम आज़ाद किया और जिस ने मुसल्मान को वहां एक घूंट पानी पिलाया जहां पानी न मिलता हो गोया उस ने उसे ज़िन्दगी बख़्शी ।"

(سُنَن اِبْنِ مَاجَه، کتاب الرهون، باب المسلمون شرکاء فی ثلاث، ص۳۹۶، الحدیث:۲۴۷۴)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : शायद ! उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) इस आयते करीमा की तफ़्सीर पूछ रही हैं :

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۧ (پ۳۰، الماعون:۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बरत्ने की चीज़ मांगे नहीं देते ।

और अ़र्ज़ कर रही हैं कि "**مَاعُوْن**" क्या चीज़ें हैं जिन का मन्अ़ करना बुरा है ।

(और नबियों के सालार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिन तीन चीज़ों के बारे में इर्शाद फ़रमाया उन में से) पानी से मुराद दो एक गिलास पानी है जिस से प्यासे की प्यास बुझ सके और अपनी ज़रूरत से ज़ाइद हो, नमक से भी येह ही मुराद है कि एकआध हांडी का नमक किसी को दे देना जब कि अपने पास ज़रूरत से ज़ियादा हो, आग से मुराद भी वोह आग है जो एकआध चिंगारी किसी को दे दी जाए जिस से वोह अपने हां आग रोशन करे । इन चीज़ों के देने में अपना कुछ नुक़्सान नहीं होता दूसरे का भला हो जाता है उस की ज़रूरत पूरी हो जाती है, देने वाले को अज्र बे ह़िसाब मिल जाता है ।

www.dawateislami.net

(और सय्यिदह आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के फ़रमान **"पानी को तो हम समझ गए मगर नमक और आग का येह हुक्म क्यूं है"** की वज़ाहत करते हुए मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं :) या'नी पानी एक बे क़ीमत चीज़ है मगर इस से दूसरे की जान बच जाती है इस लिये इस का मन्अ़ करना वाक़ेई बुरा है मगर नमक व आग का तो येह हाल नहीं, नमक व आग पर पैसे ख़र्च होते हैं और इस से दूसरे की ज़िन्दगी वाबस्ता नहीं (फिर इस का येह हुक्म क्यूं है ?)

(और नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमाने आलीशान का मतलब येह है कि) इन मसाइल में अपनी क़ियास आराई न करो कि नमक व आग क़ीमती चीज़ है और इस पर दूसरे की ज़िन्दगी का दारो मदार नहीं बल्कि उस अज्र को देखो जो रब तआला इस मा'मूली ख़ैरात पर अता फ़रमाता है, इस मा'मूली ख़ैरात से बाज़ रह कर इतने बड़े अज्र से महरूम रह जाना अ़क़्ल मन्दी नहीं, रब तआला की अताएं हमारे ख़याल, वहमो समझ से वरा हैं।

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکٰوۃ المصابیح، کتاب البیوع، باب احیاء الموات والشرب، ۳۴۷/۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हदिय्या किसे दूं ?

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं, मैं ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे दो पड़ोसी हैं उन में से किस को हदिय्या दूं ? इर्शाद फ़रमाया : **"जिस का दरवाज़ा तुम से ज़ियादा क़रीब हो।"**

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب الشفعۃ، باب ای الجوار اقرب، ص۵۷۹، الحدیث:۲۲۵۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस हदीस शरीफ़ के तहत फ़रमाते हैं : "इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए : एक येह कि पड़ोसियों को हदिय्या देना सुन्नत है कि इस से महब्बत बढ़ती है। दूसरे येह कि इस की इल्लत पड़ोसियत है जिस क़दर पड़ोसियत क़वी होगी उसी क़दर हदिय्ये का इस्तिहक़ाक़ ज़ियादा होगा। तीसरे येह कि पड़ोस का क़ुर्ब दरवाज़े से होता है न छत से न दीवार से अगर एक शख़्स के मकान की दिवार और छत तो हमारे मकान से मिली हो मगर दरवाज़ा दूर हो और दूसरे की न छत मिली हो न दीवार मगर दरवाज़ा क़रीब हो तो ज़ियादा क़रीब येह दूसरा ही माना जाएगा और इस की वज्ह भी ज़ाहिर है क्यूं कि दरवाज़े की वज्ह से मुलाक़ात होती है और इसी के ज़रीए ज़ियादा ख़ल्त मल्त रहता है और एक दूसरे के दर्दो ग़म में शिर्कत का ज़ियादा मौक़अ़ मिलता है। येह हदीस इस आयते करीमा की तफ़्सीर है :

www.dawateislami.net

وَالۡجَارِ ذِی الۡقُرۡبٰی وَالۡجَارِ الۡجُنُبِ (پ۵، النسآء:۳۶) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और पास के हमसाए और दूर के हमसाए।

ह़दीस का मत़लब येह नहीं कि दूर वाले पड़ोसी को बिल्कुल न दो, मत़लब येह है कि सब को दो मगर क़रीब वाले को तरजीह़ दो।" (مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح،کتاب الزکاۃ،باب افضل الصدقۃ،۳/۱۲۱)

पड़ोसी के ह़ुक़ूक़ के मु-तअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने हमसायों व पड़ोसियों के भी ह़ुक़ूक़ मुक़र्रर फ़रमाए हैं जिन का अदा करना हर मुसल्मान मर्द व औ़रत पर लाज़िम है, आ़म मुसल्मानों के ह़ुक़ूक़ में से येह भी हैं अगर वोह बीमार हो जाए तो उन की बीमार पुरसी की जाए, फ़ौत हो जाने पर जनाज़े में शिर्कत की जाए, मुसल्मानों के ऐ़ब की पर्दा पोशी करे, किसी मुसल्मान को जानी या माली नुक़्सान न पहुंचाए न किसी मुसल्मान की आबरू रेज़ी करे, जो अपने लिये पसन्द करे वोही दूसरे मुसल्मान के लिये भी पसन्द करे वग़ैरा वग़ैरा इन के इ़लावा भी बहुत से ह़ुक़ूक़ हैं, तो जब एक आ़म मुसल्मान के ह़ुक़ूक़ का येह आ़लम है तो पड़ोसी के ह़ुक़ूक़ तो आ़म मुसल्मानों के ह़ुक़ूक़ से भी ज़ियादा हैं, चुनान्चे इस ज़िम्न में **4** फ़रामीने मुस्त़फ़ा मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿.... जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام मुझे हमेशा पड़ोसी के बारे में वसिय्यत करते रहे यहां तक कि मैं ने ख़याल किया कि वोह अ़न्क़रीब इसे **वारिस बना देंगे।**

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب الادب، با ب الوصاۃ بالجار، ص۱۵۰۰، الحدیث:۶۰۱۴)

﴾2﴿.... जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे अपने पड़ोसी की इ़ज़्ज़त करनी चाहिये। (صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب الادب، باب من کان یؤمن باللّٰہ والیوم الاٰخر......الخ، ص۱۵۰۱، الحدیث:۶۰۱۹)

﴾3﴿.... वोह शख़्स (कामिल द-रजे का) मुसल्मान नहीं जो ख़ुद पेट भर कर खा ले और उस का पड़ोसी उस के पहलू में भूका हो।

(شُعَبُ الْاِیْمَان، باب فی الزکاۃ، فصل ما جاء فی کراھیۃ امساك الفضل......الخ، ۳/۲۲۵، الحدیث:۳۳۸۹)

﴾4﴿.... पड़ोसियों को वक़्तन फ़ वक़्तन हदिय्या भी भेजते रहना चाहिये, चुनान्चे सरकारे आ़ली वक़ार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है : "ऐ अबू ज़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! जब तुम सालन पकाओ तो उस में कुछ ज़ियादा पानी डाल (कर शोरबे को बढ़ा) लो और **अपने पड़ोसियों का ख़याल रखो।"**

(صَحِیْح مُسْلِم، کتاب البر والصلۃ والآداب، با ب الوصیۃ بالجار......الخ، ص۱۰۱۳، الحدیث:۲۶۲۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अ़ज़ाबे क़ब्र ह़क़ है

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि एक यहूदी औ़रत उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और उस ने अ़ज़ाबे क़ब्र का ज़िक्र किया और आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) से अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाए तब उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़ज़ाबे क़ब्र के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हां ! **अ़ज़ाबे क़ब्र (ह़क़) है ।** उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि इस के बा'द मैं ने कभी न देखा कि नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कोई नमाज़ पढ़ी हो और अ़ज़ाबे क़ब्र से रब की पनाह न मांगी हो ।

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب الجنائز، باب ما جاء فی عذاب القبر، ص۳۸۴، الحدیث:۱۳۷۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : (सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने सरकारे आ़ली वक़ार, नबियों के सालार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़ज़ाबे क़ब्र के बारे में इस लिये पूछा) क्यूं कि अब तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को इस की ख़बर न थी और यहूद की बात पर ए'तिबार न किया । इस से मा'लूम हुवा कि **कुफ़्फ़ार की बताई बात पर ए'तिबार न किया जाए जब तक कि उस की तस्दीक़ उ़-लमाए इस्लाम से न हो जाए ।**

(और नबियों के सालार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हर नमाज़ के बा'द अ़ज़ाब से पनाह मांगने के मु-तअ़ल्लिक़ मुफ़्ती साहि़ब इर्शाद फ़रमाते हैं :) येह दुआ़ उम्मत की ता'लीम के लिये है ताकि लोग सीख लें वरना अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से न सुवाले क़ब्र है न अ़ज़ाब, उन की ब-र-कत से लोगों के अ़ज़ाब दूर होते हैं ।

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب اثبات عذاب القبر، ۱/۱۳۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़ब्र के मुआ़-मले में बे ख़ौफ़ नहीं रहना चाहिये । हमारे अस्लाफ़ इस सिल्सिले में किस क़दर ख़ौफ़ज़दा रहा करते थे आइये ! मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब किसी की क़ब्र

www.dawateislami.net

पर तशरीफ़ लाते तो इस क़दर रोते कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दाढ़ी मुबारक तर हो जाती। अ़र्ज़ की गई : "जन्नत व दोज़ख़ का तज़्किरा करते वक़्त आप नहीं रोते मगर क़ब्र (के तज़्किरे) पर बहुत रोते हैं इस की वज्ह क्या है ?" फ़रमाया : नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"क़ब्र आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल है अगर (साहिबे क़ब्र ने) इस से नजात पाई तो बा'द का मुआ-मला इस से आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ-मला ज़ियादा सख़्त है।"** (سُنَن اِبنِ مَاجہ، کتاب الزھد، باب ذکر القبر والبلی، ص ٦٩١، الحدیث:٤٢٦٧)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह ! अल्लाह ! ज़ुन्नूरैन, जामिउ़ल क़ुरआन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़ौफ़े ख़ुदाए रह़मान ! इन का लक़ब इस लिये **ज़ुन्नूरैन** था कि इन के निकाह़ में रह़मते कौनैन, साह़िबे क़ा-ब क़ौसैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की यके बा'द दीगरे दो शहज़ादियां थीं, इन्हें दुन्या ही में क़त़ई जन्नती होने की बिशारत मिल चुकी थी और इन से मा'सूम फ़िरिश्ते ह़या करते थे। इस के बा वुजूद क़ब्र की होल नाकियों और अन्धेरियों के बारे में बे इन्तिहा ख़ौफ़ज़दा रहा करते थे, चुनान्चे (ग़-ल-बए ख़ौफ़े ख़ुदा के आ़लम में) एक बार इर्शाद फ़रमाया : **"अगर मैं जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान होउं और मुझे मा'लूम न हो कि मुझे इन दोनों में से किस का हुक्म दिया जाएगा तो मैं पसन्द करूंगा कि इसे जानने से पहले राख हो जाऊं।"**

(حِلْیَۃُ الْاَوْلِیَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِیَاء، ذکر الصحابۃ من المھاجرین، عثمان بن عفان، ١/ ٩٩، الرقم:١٨٣)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! हमारे दिलों पर गुनाहों की तहें जम चुकी हैं, ह़ालां कि यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम है कि मौत आ कर रहेगी, ऐन मुम्किन है आज ही आ जाए और हम क़ब्र में उतार दिये जाएं, येह भी जानते हैं कि रात को बिजली बन्द हो जाए तो दिल घबराता और अंधेरा काट खाता है इस के बा वुजूद क़ब्र के होलनाक अंधेरे का कोई एह़सास नहीं। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़त़ई जन्नती होने के बा वुजूद ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी से लरज़ां व तरसां रहा करते थे। एक बार ग़-ल-बए ख़ौफ़ के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तिन्का हाथ में ले कर फ़रमाया : "**काश !** मैं येह तिन्का होता" "**काश !** मैं कोई क़ाबिले ज़िक्र शै न होता" "**काश !** मैं भूला बिसरा होता", "**काश !** मेरी मां ही मुझे न जनती।" (اِحیاءُ عُلُوْمِ الدِّیْن، کتاب الخوف والرجاء، بیان احوال الصحابۃ والتابعین ...الخ، ٤/٢٢٤)

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता   क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है   काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

www.dawateislami.net

गुलशने मदीना का काश ! होता मैं सब्ज़ा
या बतौरे तिन्का ही मैं वहां पड़ा होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 256, 258)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ियामत का दिन

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने रसूले ख़ुदा, अहमदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि क़ियामत के दिन लोग नंगे पाउं, नंगे बदन, बे ख़तना जम्अ़ किये जाएंगे तो मैं ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मर्द और औरतें सारे हैं बा'ज़ बा'ज़ को देखेंगे ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! वोह ह़ाल इस से सख़्त तर होगा कि बा'ज़ बा'ज़ की त़रफ़ नज़र भी करें।

(صَحِیْح مُسْلِم، کتاب الجنة وصفة نعیمها واهلها، باب فناء الدنیا وبیان الحشر۔۔۔الخ، ص١٠٩٦، الحدیث:٢٨٥٩)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : **येह ह़ालत आ़म लोगों की होगी हज़राते अम्बिया व ख़ास औलिया की येह ह़ालत नहीं (होगी) ।**

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب احوال القیامۃ وبدء الخلق، باب الحشر، ٣٦٩/٧)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़ियामत का दिन निहायत ही सख़्त होगा, तिरमिज़ी शरीफ़ में इस इम्तिह़ान के बारे में है : ''इन्सान उस वक़्त तक क़ियामत के रोज़ अपने रब तआ़ला की बारगाह से क़दम नहीं हटा सकेगा जब तक कि उस से **5** सुवालात न कर लिये जाएं : **(1)**.... ज़िन्दगी कैसे बसर की ? **(2)**.... जवानी कैसे गुज़ारी ? **(3)**.... माल कहां से कमाया ? और **(4)**.... कहां कहां ख़र्च किया ? **(5)**.... अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ कहां तक अ़मल किया ?''

(جَامِعُ التِّرْمِذِی، ابواب صفة القیامة، باب فی القیامة، ص٥٧٤، الحدیث:٢٤١٦)

हम ख़्वाह रोएं या हंसें, तड़पें या ग़फ़्लत की नींद सोते रहें क़ियामत का इम्तिह़ान बरह़क़ है, ख़ुदा न ख़्वास्ता नमाज़ें ज़ाएअ़ करते रहे, झूट बोलते रहे, ग़ीबत करते रहे, ह़राम रोज़ी कमाते रहे, फ़िल्में डिरामे देखते दिखाते और गाने बाजे सुनते सुनाते रहे, मुसल्मानों का दिल दुखाते रहे। अगर **रब** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो गया, उस के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रूठ गए, अगर गुनाहों की

www.dawateislami.net

नुहूसत के बाइस مَعَاذَاللّٰه ईमान बरबाद हो गया और हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम मुक़द्दर बन गया तो क्या बनेगा ? रिवायात में आता है : "जहन्नम में सब से हलका अ़ज़ाब उस शख़्स को होगा जिस के पाउं के नीचे अंगारे रखे जाएंगे जिन की वज्ह से उस का दिमाग़ खौलेगा।"

(صَحِیْح مُسْلِم، کتاب الایمان، باب اھو ن اھل النارعذابًا، ص١٠٢، الحدیث:٢١٣)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰه اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हक़ीक़त येह है कि इस दुन्या में आ कर हम सख़्त आज़्माइश में मुब्तला हो गए हैं, हमारी आमद का मक़्सद कुछ और था मगर शायद हम समझ कुछ और बैठे हैं ! हमारा अन्दाज़े ह़यात येह बता रहा है कि مَعَاذَاللّٰه गोया हमें कभी मरना ही नहीं।

याद रखिये ! हमें यहां हमेशा नहीं रहना, क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَیْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ﴿۱۱۵﴾
(پ١٨، المؤمنون:١١٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं।

याद रख ! हर आन आख़िर मौत है बन तू मत अन्जान आख़िर मौत है
मरते जाते हैं हज़ारों आदमी आ़क़िलो नादान आख़िर मौत है
क्या ख़ुशी हो दिल को चन्दे ज़ीस्त से ग़मज़दा है जान आख़िर मौत है
मुल्के फ़ानी में फ़ना हर शै को है सुन लगा कर कान आख़िर मौत है
बारहा इ़ल्मी तुझे समझा चुके
मान या मत मान आख़िर मौत है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शु-हदा के साथ ह़श्र

और जो लोग न आख़िरत को भुला कर दुन्यवी आराइश व ज़ैबाइश में बद मस्त रहते और न अपनी ज़िन्दगी को ग़फ़्लत की नींद में बरबाद करते बल्कि मौत को ब कसरत याद करते हैं बरोज़े क़ियामत उन का ह़श्र शु-हदा के साथ होगा, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की रिवायत में है कि

www.dawateislami.net

अ़र्ज की गई : **"या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** क्या शु–हदा के साथ किसी और को भी उठाया जाएगा ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! **जो हर दिन 20 मर्तबा मौत को याद करे ।"**

(المغنی عن حمل الاسفار، کتاب التوحید والتوکل، الشطر الثانی فی احوال التوکل واعماله، ۲/۱۱۴۰، الحدیث: ۴۱۳۴)

बिला ह़िसाब जन्नत में जाने का नुस्ख़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस लिये होश में आइये ! ग़फ़्लत से बेदार हो जाइये ! फ़िरंगी तहज़ीब से पीछा छुड़ाइये, मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतें अपनाइये, झटपट गुनाहों से तौबा कर लीजिये कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : "तौबा करने वाले जब अपनी क़ब्रों से निकलेंगे तो उन के सामने से मुश्क की ख़ुश्बू फैलेगी वोह जन्नत के दस्तर ख़्वान पर आ कर उस में से खाएंगे और वोह अ़र्श के साए में होंगे जब कि दीगर लोग ह़िसाब की सख़्ती में मुब्तला होंगे ।"

(بحر الدموع، الفصل الاوّل، فضل التوبة وثمارها، ص۲۲)

हो सके तो अपने गुनाहों को याद कर के अश्के नदामत भी बहाने चाहिएं कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि–दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं, मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया : **"या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में से कोई बिला ह़िसाब भी जन्नत में जाएगा ?" तो फ़रमाया : **"हां ! वोह शख़्स जो अपने गुनाहों को याद कर के रोए ।"**

(احیاءُ عُلُوْمِ الدِّیْن، کتاب الخوف والرجاء، بیان فضیلة الخوف والترغیب فیه، ۴/۱۹۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दीदारे मदीना की सआ़दत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गुनाहों से नफ़रत करने, ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने और अपने दिल में सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत बढ़ाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा 'वते इस्लामी** के महके महके म–दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इस म–दनी माह़ोल पर पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बेह़द करम है, चुनान्चे इस ज़िम्न में एक ह़िकायत मुला–ह़ज़ा फ़रमाइये :

www.dawateislami.net

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े कोरंगी में मुक़ीम एक इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि एक मर्तबा बा'द नमाज़े ज़ोहर सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मक़्बूलिय्यत के वाक़िआ़त और ईमान अफ़्रोज़ बिशारतों पर मुश्तमिल **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला "**सरकार का पैग़ाम अ़त्तार के नाम**" का मुता-लआ़ किया। रिसाले को पढ़ कर बड़ी फ़रह़त मह़सूस हुई, मुझे अपनी क़िस्मत पर रश्क आ रहा था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से कैसे बरगुज़ीदा और वलिय्ये कामिल का दामन नसीब हुवा है। बिल खुसूस इस रिसाले में मदीना शरीफ़ زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا ह़ाज़िर होने वाले इस्लामी भाई के ज़रीए सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के नाम येह पैग़ाम "**मेरे अ़त्तार इस बार मदीने क्यूं नहीं आए ! उन्हें मेरा सलाम कहना और कहना वोह मदीने आएं चाहे कुछ लम्ह़ात के लिये ही आएं**" पढ़ कर फ़र्ते मसर्रत से आंखें अश्कबार और वुफ़ूरे शौक़ से दिल बे क़रार हो गया कि काश ! सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ नाचीज़ को भी शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के नाम कोई पैग़ाम इनायत करें। दूसरे दिन हफ़्ते की सुब्ह़ बा'द नमाज़े फ़ज्र लैटी तो आंख लग गई। ज़ाहिरी आंखें तो क्या बन्द हुईं दिल की आंखें खुल गईं क्या देखती हूं कि मैं मस्जिदे न-बवी शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बाहर खड़ी हूं इतने में ह़सीनो दिलकश अल्फ़ाज़ से मुज़य्यन येह तह़रीर दिखाई दी "**अ़त्तार को हमारा सलाम कहना**" इस के बा'द आंख खुल गई दिल अ़जीब कैफ़ो सुरूर मह़सूस कर रहा था। उसी रात जब सोई तो ख़्वाब में अमीरे अहले सुन्नत को सरकारे आ़ली वक़ार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम सुना कर येह इस्तिग़ासा पेश किया कि अगर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को येह पैग़ाम मिल गया तो मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर दिल को तसल्ली व तशफ़्फ़ी से नवाज़ें। क़सम ब खुदा ! अमीरे अहले सुन्नत मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ लाए, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदीनए मुनव्वरह के उस मक़ाम पर एक ग़ार में मौजूद थे कि जहां ग़ज़्वए बद्र हुवा था और फ़रमा रहे थे कि येह वोह ग़ार है जिस में अंधेरा था मगर सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस ग़ार में तशरीफ़ आ-वरी ने इसे ऐसा रोशन किया कि येह आज तक मुनव्वर है। फिर मैं ने ख़्वाब में ही मदीनए त़य्यिबा की मुक़द्दस गलियों की ज़ियारत भी की इस के बा'द मेरी आंख खुल गई और दिल को खूब इत़्मीनान ह़ासिल हुवा। (मैं ह़यादार कैसे बनी......?, स. 4)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

बयान ﴾20﴿...... सय्यि-दतुना आइशा की फ़साहत

मौला मुश्किल कुशा की करामत

एक मर्तबा यहूदिय्यों का एक गुरौह बैठा था एक मुसल्मान फ़क़ीर ने आ कर उन से सुवाल किया। उसी वक़्त इत्तिफ़ाक़न मौला मुश्किल कुशा, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم भी सामने से गुज़रे। यहूदिय्यों ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को देख कर बत़ौरे तमस्ख़ुर कहा कि देखो ! शाहे जवां मर्दां आ रहे हैं। वोह मुसल्मान फ़क़ीर अमीरुल मुअमिनीन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अपने फ़क़्रो फ़ाक़े का ह़ाल बयान करने लगा ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم समझ गए कि इसे मेरे पास आज़्माइश के लिये भेजा गया है लेकिन उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के पास कुछ नहीं था। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने उस का हाथ पकड़ कर 10 मर्तबा दुरूद पढ़ा। और उस की हथेली पर दम कर के फ़रमाया : मुठ्ठी बन्द कर ले (कुफ़्फ़ार हंस रहे थे कि ख़ाली फूंक मारने से क्या होता है !) उस ने ता'मील की और यहूदिय्यों के पास वापस गया। उन्हों ने मुठ्ठी खुलवाई तो उस में एक दीनार था। उसी रोज़ कई यहूदी मुसल्मान हुए। (राह़तुल क़ुलूब (मुतर्जम), स. 142)

हर मरज़ की दवा दुरूद शरीफ़ दाफ़ेए हर बला दुरूद शरीफ़
विर्द जिस ने किया दुरूद शरीफ़ और दिल से पढ़ा दुरूद शरीफ़
ह़ाजतें सब रवा हुईं उस की है अ़जब कीमिया दुरूद शरीफ़

(काफ़ी की ना'त, स. 40)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़बीबए ह़बीबे ख़ुदा, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا जहां ज़ोह्दो तक़्वा, सब्रो शुक्र, फ़क़्रो क़नाअ़त और इन के इ़लावा इ़ल्मे क़ुरआन, तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, इफ़्ता अल ग़रज़ ! इ़ल्मो अ़मल के हर हर गोशे में निहायत अर-फ़ओ़ आ'ला मक़ाम रखती थीं वहीं आस्माने फ़साह़तो बलाग़त व अदब में

www.dawateislami.net

भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہَا की परवाज़ बहुत बुलन्दो बाला है, ह़क़ीक़त येह है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہَا तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, इफ़्ता, फ़साह़तो बलाग़त, ए'जाज़ बयानी और अदीबाना गुफ़्त-गू वग़ैरा उ़लूमो फ़ुनून में ह़द्दे कमाल को पहुंची हुई थीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہَا की गुफ़्त-गू और त़र्ज़े कलाम निहायत उ़म्दा व शीरीं हुवा करता था, चुनान्चे

सय्यिदह आइशा की फ़साह़तो बलाग़त और अदीबाना कलाम पर 5 रिवायात

﴾1﴿.... ह़ज़रते सय्यिदुना अह़्नफ़ बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : ''मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رِضۡوَانُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن और इन के बा'द आज के दिन तक होने वाले ख़ु-लफ़ा का ख़ुत़्बा सुना लेकिन उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہَا के मुंह से ज़ियादा उ़म्दा और बेहतरीन कलाम किसी मख़्लूक़ के मुंह से नहीं सुना।'' (اَلْمُسْتَدْرَک عَلَی الصَّحِیْحَیْن لِلْحَاکِم، کتاب معرفة الصحابة، ذکر تسع خلال عائشة...الخ، ۱۳/۵، الحدیث:۶۷۹۲)

﴾2﴿.... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : مَا رَأَيْتُ أَحَدًا اَعْلَمَ بِالْحَلَالِ وَالْحَرَامِ وَالْعِلْمِ وَالشِّعْرِ وَالطِّبِّ مِنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِيْن'' या'नी मैं ने ह़लाल व ह़राम, इल्म, शे'र और त़िब को उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہَا से ज़ियादा जानने वाला कोई नहीं देखा।'' (المرجع السّابق، با ب ذکرسعةعلم عائشة وفصاحة کلامها، ص۱۴، الحدیث:۶۷۹۳)

﴾3﴿.... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''अगर तमाम लोगों और **रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात का इल्म जम्अ़ कर लिया जाए तो ज़रूर सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہَا इल्म के ए'तिबार से इन सब से ज़ियादा वसीअ़ हैं।'' (المرجع السّابق، الحدیث:۶۷۹۴)

﴾4﴿.... ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बयान फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہَا के पास गए और उन से बातचीत की, रावी फ़रमाते हैं कि फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपने गुलाम ज़क्वान के हाथ का सहारा ले कर खड़े हुए और फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, तमाम नबियों के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इलावा सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہَا से ज़ियादा बलीग़ कलाम करने वाला किसी को नहीं देखा।'' (سِیَرُ اَعْلَامِ النُّبَلَاء، عائشة اُمّ المؤمنین، ۲/۱۸۳)

www.dawateislami.net

﴾5﴿.... हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन त़ल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : ''मैं ने हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से ज़ियादा फ़सीह़ किसी को नहीं देखा।''

(جَامِعُ التِّرۡمِذِی، ابواب المناقب عن رسول اللّٰہ، باب فضل عائشۃ، ص۸۷۳، الحدیث:۳۸۸۳)

इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) इलावा कुरआनो ह़दीस व फ़िक़्ह की आ़लिमा होने के बड़ी शाइ़रा, इ़ल्मे अन्साब में बड़ी कामिल, फ़साह़तो बलाग़त में बे मिसाल आ़लिमा थीं क्यूं न होतीं कि मह़बूबए मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन थीं, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) की लख़्ते जिगर, नूरे नज़र थीं, हम सब की बाइ़से नाज़, क़ाबिले फ़ख़्र उम्मे मोह़-त-रमा जिन के गीत कुरआन गाता है।''

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبی، ۸/۵۰۵)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को फ़साह़तो बलाग़त के साथ साथ शे'रो सुख़न गोई में भी ख़ूब महारत अ़त़ा फ़रमाई थी, कई शु-अ़राए अ़रब के अश्आ़र और बा'ज़ के पूरे पूरे क़सीदे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को ज़बानी याद थे, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना हश्शाम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपने वालिद से रिवायत करते हुए फ़रमाते हैं : बा'ज़ अवक़ात सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا **60** या इस से ज़ियादा अश्आ़र पर मुश्तमिल क़सीदा बयान कर देतीं। (سِیَرُ اَعۡلَامِ النُّبَلَاء، عائشۃ اُمّ المؤمنین، ۲/۱۸۹)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को शु-अ़राए अ़रब के किस क़दर अश्आ़र याद थे इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि जो बात भी दरपेश होती फ़ौरन उस की मुना-सबत से शे'र बयान फ़रमा देतीं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़िनाद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡجَوَاد फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से बढ़ कर अश्आ़र कहते किसी को नहीं देखा। उन से कहा गया कि ''आप से ज़ियादा शे'र बयान करने वाला कोई नहीं।'' इस पर उन्हों ने बयान फ़रमाया : ''मेरा अश्आ़र बयान करना उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को जो कोई बात पेश आती उस के बारे में शे'र पढ़ देती थीं।'' (اَلۡاِصَابَۃ فِیۡ تَمۡیِیۡزِ الصَّحَابَۃ، کتاب النساء، حرف العین المھملۃ، عائشۃ بنت ابی بکر الصّدیق، ۸/۲۵۸)

www.dawateislami.net

आइये ! सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की शे'र गोई से मु-तअ़ल्लिक़ चन्द वाक़िआत मुला-हज़ा फ़रमाइये !

﴾1﴿...... नूर की शुआएं

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : (एक दफ़आ) मैं बैठी चरखा कात रही थी और मेरे सरताज, साहिबे मे'राज, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने ना'लैने शरीफ़ैन सी रहे थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पेशानी मुबारक ने पसीना बहाना शुरूअ़ किया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के (खुश्बूदार) पसीने से नूर की शुआएं फूटने लगीं। फ़रमाती हैं : मैं (येह मन्ज़र देख कर) हैरत ज़दा हो गई (और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ देखने लगी) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी तरफ़ देख कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ! तुम्हें क्या हुवा कि इतनी हैरत ज़दा हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जबीने अक़्दस पसीना बहा रही है और इस मुश्कबार पसीने से नूर की शुआएं फूट रही हैं (इस वज्ह से मैं मब्हूत हो गई) अगर अबू कबीर हज़्ली (अ़रब का मशहूर शाइर) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देख लेता तो जान लेता कि इस के शे'र के ज़ियादा ह़क़दार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।" मह़बूबे रह़मान, रह़मते आ-लमिय्यान, नबिय्ये ग़ैबदान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ! अबू कबीर क्या कहता है ?" सय्यिदह आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की, वोह कहता है :

وَمُبَـرَّأً مِـنۡ كُـلِّ غُبَّـرِ حَيۡـضَةٍ　　وَفَسَـادِ مُـرۡضِـعَةٍ وَدَاءٍ مُـغۡيِـلِ

فَـاِذَا نَـظَـرۡتَ اِلٰـى اَسِـرَّةِ وَجۡـهِـهٖ　　بَـرَقَـتۡ كَبَـرۡقِ الۡـعَـارِضِ الۡمُتَهَـلِّلِ

तर-ज-मए अश्आर : (1).... वोह हैज़ के बाक़ी मांदा खून, दूध पिलाने वाली की ख़राबी और हलाक करने वाली बीमारी (वग़ैरा) हर ऐब से पाक है। **(2)....** जब तू उस की पेशानी के खुतूत देखे तो वोह चमक्ने वाले बादल में कूंदने वाली बिजली की तरह चमक्ते हैं।

सय्यिदह आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : (मेरी येह गुफ़्त-गू सुन कर) शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठ कर मेरे पास तशरीफ़ लाए और मेरी दोनों आंखों के दरमियान बोसा दे कर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हें मेरी तरफ़ से बेहतर बदला अ़ता फ़रमाए, तुम मुझ से इतना मसरूर नहीं हुई जितना मैं तुम से मसरूर हुवा।"

(اَلسُّنَنُ الْكُبْرٰى لِلْبَيْهَقِى، كتاب العدد، باب الحيض على الحمل، ٧/٦٩٣، الحديث:١٥٤٢٧)

www.dawateislami.net

सय्यिदी आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस वाक़िए की अक्कासी करते हुए फ़रमाते हैं :

चांद से मुंह पे ताबां दरख़्शां दुरूद
नमक आगीं सबाहत पे लाखों सलाम

(हदाइके बख़्शिश, स. 301)

और फ़रमाते हैं :

बीनिये पुरनूर पर रख़्शां है बुक्का नूर का है लिवाउल हम्द पर उड़ता फरेरा नूर का
आबे ज़र बनता है आ़रिज़ पर पसीना नूर का मुस्हफ़े ए'जाज़ पर चढ़ता है सोना नूर का

(हदाइके बख़्शिश, स. 243)

और कुत्बे ज़मां हज़रत सय्यिद पीर मेहर अली शाह عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعُلٰى इस की अक्कासी यूं फ़रमाते हैं :

मुख चन्द बदर शा'शानी ए मथ्थे चमकदी लाट नूरानी ए
काली ज़ुल्फ़ ते अख मस्तानी ए मख़्मूर अखीं हिन मद भरियां

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"मदीना" के 5 हुरूफ़ की निस्बत से हदीसे मज़्कूर से हासिल कर्दा 5 म-दनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस रिवायत से दर्जे ज़ैल म-दनी फूल चुनने को मिले :

﴾1﴿.... अपने जूते ख़ुद सी लेना ताजदारे कौनैन, सरवरे दारैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत है।

﴾2﴿.... चरखा़ कातना उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की सुन्नत है।

﴾3, 4﴿.... पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुस्नो जमाल और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइल बयान करना सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का तरीक़ा और नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पाने का नुस्ख़ा है।

﴾5﴿.... सरकारे आ़ली वक़ार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नूर हैं तभी तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पसीनए मुबारक से भी नूर की शुआएं फूट रही थीं।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बे मिस्ल बशर और नूर बल्कि नूर-गर हैं। ऊपर ज़िक्र कर्दा रिवायत से

www.dawateislami.net

मा'लूम हुवा कि पैकरे अन्वार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नूरानिय्यत ह़िस्सी भी थी कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नूरानिय्यत का मुशा-हदा कर लिया, इस के इलावा अह़ादीस में और कई ऐसे सह़ाबए किराम व सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का ज़िक्र है जिन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नूरानिय्यत का मुशा-हदा किया, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना हिन्द बिन अबी हाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से (हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुल्यए मुबारक के बारे में) सुवाल किया, वोह पैकरे हुस्नो जमाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुल्यए मुबारक को बहुत ज़ियादा बयान करने वाले थे मेरी ख़्वाहिश थी कि वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुल्ये मुबारक में से कोई चीज़ मुझे बयान कर दें, उन्हों ने फ़रमाया : ''हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़-ज़-मतो वजाहत वाले थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर ऐसा जग-मगाता था जैसे चौदहवीं रात का चांद।'' **(شُعَبُ الْاِیْمَان، باب فی حب النبی، فصل فی خَلقِہ وخُلُقِہ، ۲/ ۱۵۴، الحدیث: ۱۴۳۰، ملتقطًا)**

इसी त़रह़ सु-ननुद्दारिमी में ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, फ़रमाते हैं कि ''नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने के दो दांतों में कुछ कुशा-दगी थी जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कलाम फ़रमाते तो उन दोनों दांतों से नूर की त़रह़ रोशनी निकलती देखी जाती।'' **(سُنَنُ الدَّارِمی، المقدمۃ، باب فی حسن النبی، ص۴۷، الحدیث:۵۹)**

और सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा रोशन व मुनव्वर किसी को नहीं देखा।'' **(المرجع السّابق، الحدیث:۶۰)**

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस त़रह़ की दीगर रिवायात ज़िक्र कर के फ़रमाते हैं : इन तमाम रिवायात से मा'लूम होता है कि जिस्मे अत़्हर की नूरानिय्यत सह़ाबए किबार को मह़सूस होती थी। हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के चेहरए अन्वर को इस लिये वोह सूरज चांद बता कर समझाते थे, इसी त़रह़ जिस्म का साया न होना, जिस्मे अत़्हर से ऐसी ख़ुश्बू ज़ाहिर होना कि कूचे और गलियां महक जावें, येह भी नूरानिय्यत ही के बाइ़स है। मे'राज शरीफ़ में जिस्म शरीफ़ का आग और ज़म्हरीर के कुर्रे से गुज़र जाना और कुछ असर न होना, आस्मानों की सैर फ़रमाना, जहां हवा नहीं फिर ज़िन्दा रहना येह इसी वज्ह से है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नूर हैं और येह नूरानिय्यत ह़िस्सी भी है अ़क़्ली भी। इसी त़रह़ शर्हे सद्र के वक़्त सीनए मुबारक से दिल निकाल कर फ़िरिश्तों का उसे धोना और फिर

www.dawateislami.net

हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم) का ज़िन्दा रहना इसी वज्ह से है कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم) नूर हैं वरना दिल पर थोड़ा असर मौत का सबब होता है। (रसाइले नईमिय्या, रिसालए नूर, स. 9)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! अब नूरानिय्यते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान भी मुला-ह़ज़ा करती जाइये, चुनान्चे पारह **6**, **सू-रतुल माइदह** की आयत **15** में है :

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से एक नूर आया और रोशन किताब।

जुम्हूर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस आयते मुबा-रका में मज़्कूर लफ़्ज़े नूर से हुज़ूर की ज़ात मुराद ली है चुनान्चे **तफ़्सीरे जलालैन** शरीफ़ में इस आयते मुबा-रका ﴿ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ ﴾ के तह़त फ़रमाया : **هُوَ النَّبِيُّ** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم या'नी वोह नबी हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم। **(تفسيرِ جلالين، سورة المائدة، تحت الأية:١٥، ص٩٧)**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿.... सिद्दीक़े अक्बर की वफ़ात

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **417** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"एह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा"** सफ़ह़ा **395** पर है : जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का वक़्ते विसाल आया तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا तशरीफ़ लाईं और आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने बत़ौरे मिसाल येह शे'र पढ़ा :

لَعَمْرُكَ مَا يُغْنِى الثَّرَاءُ عَنِ الْفَتٰى
إِذَا حَشْرَجَتْ يَوْمًا وَضَاقَ بِهَا الصَّدْرُ

तरजमा : आप की उ़म्र की क़सम ! दौलत नौ जवान के काम नहीं आती जब मौत का दिन आ जाए और सीने में दम घुट रहा हो।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने चेहरे से कपड़ा हटाया और फ़रमाया : बात इस त़रह़ नहीं बल्कि यूं कहो :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾ (پ٢٦، ق:١٩) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ येह है जिस से तू भागता था।

www.dawateislami.net

(फिर फ़रमाया :) मेरे इन दो कपड़ों को धो कर इन्हीं में मुझे कफ़न दे देना क्यूं कि फ़ौत शुदा के मुक़ाबले में ज़िन्दा आदमी नए कपड़ों का ज़ियादा ह़क़दार है। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ का विसाल होने लगा और ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہَا ने येह शे'र पढ़ा :

وَ اَبْیَضُ یَسْتَسْقَی الْغَمَامُ بِوَجْهِهٖ

رَبِیْعُ الْیَتَامٰی عَصْمَةٌ لِّلْاَرَامِلِ

तरजमा : सफ़ेद रंग वाले जिन के चेहरे के सबब बादल बरसते हैं, आप यतीमों की बहार और बेवाओं का सहारा हैं।

तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : येह तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान है। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ के पास ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "क्या हम किसी त़बीब को न बुला लाएं जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ का ह़ाल देखे ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "त़बीब ने मुझे देख लिया और फ़रमाया है कि मैं जो चाहता हूं करता हूं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ की इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए और अ़र्ज़ की : ऐ अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ) ! हमें वसिय्यत फ़रमाएं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर दुन्या के ख़ज़ाने खोल देगा लेकिन तुम उस से ज़रूरत के मुत़ाबिक़ लेना और **याद रखो !** जिस ने सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ी वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़ह्द शि-कनी न करना वरना वोह तुम्हें मुंह के बल जहन्नम में डाल देगा।

जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ की त़बीअ़त ज़ियादा बोझल हो गई। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने चाहा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमा दें तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को अपना ख़लीफ़ा नामज़द फ़रमाया। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने एक सख़्त मिज़ाज शख़्स को हमारा ख़लीफ़ा नामज़द किया है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ अपने रब عَزَّوَجَلَّ को क्या जवाब देंगे ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं अ़र्ज़ करूंगा कि मैं ने तेरी मख़्लूक़ पर, मख़्लूक़ में सब से बेहतर इन्सान को अपना नाइब मुक़र्रर किया है।

(لُبَابُ الْاِحْیَاء، الباب الاربعون فی ذکر الموت وما بعده، وفاة ابی بکر الصّدیق، ص۳۴۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस रिवायत में हमारे लिये बे शुमार म-दनी फूल हैं, म-सलन ख़ौफ़े ख़ुदा का दर्स, ज़लीलो ह़क़ीर दुन्या की लालच दिल से निकालने, मौत की याद और हर काम में अपनी आख़िरत को पेशे नज़र रखना वग़ैरा। आप ने सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की आजिज़ी व क़नाअ़त पसन्दी मुला-ह़ज़ा फ़रमाई कि कफ़न के लिये भी पुराने कपड़े ही की वसिय्यत फ़रमाते हैं, سُبۡحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! बा'द अज़ अम्बिया व मुर-सलीन صَلَوَاتُ اللّٰہِ عَلَیۡہِمۡ وَسَلَامُہٗ सब से अफ़्ज़ल होने के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का दुन्या की दौलत से मुंह मोड़ कर फ़क़्र और आ़जिज़ी व इन्किसारी इख़्तियार करना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की महब्बत का दम भरने के बा वुजूद दुन्याए ज़ाहिर के मतवालों के लिये दर्से हिदायत है। **काश ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ह़क़ीक़ी आशिक़े सिद्दीक़े अक्बर बनाए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के किरदार व ता'लीमात को मद्दे नज़र रख कर ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

﴾3﴿...... भाई की क़ब्र पर अश्आ़र

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا का ह़ुबशा के मक़ाम पर इन्तिक़ाल हुवा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में ला कर दफ़्न किया गया, जब उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا आईं तो अपने भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا की क़ब्र पर आ कर येह अश्आ़र पढ़े :

وَكُنَّا كَنَدْمَانَيْ جَذِيْمَةَ حِقْبَةً مِنَ الدَّهْرِ حَتّٰى قِيْلَ: لَنْ يَّتَصَدَّعَا

فَلَمَّا تَفَرَّقْنَا كَأَنِّيْ وَمَالِكًا لِطُوْلِ اِجْتِمَاعٍ، لَمْ نَبِتْ لَيْلَةً مَّعَا

तरजमा : (1).... हम अ़र्सा तक बादशाह जज़ीमा के मुसाह़िबों की त़रह़ रहे ह़त्ता कि कहा गया कि अब येह दोनों जुदा नहीं होंगे।

(2).... फिर जब हम जुदा हुए तो मैं ने और मालिक ने तूले इज्तिमाअ़ के बा वुजूद एक रात भी इकठ्ठे नहीं गुज़ारी।

फिर फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मैं तुम्हारे पास मौजूद होती तो तुम्हें वहीं दफ़्न किया जाता जहां फ़ौत हुए और अगर मैं तुम्हारे पास मौजूद होती तो अब मैं तुम से मिलने के लिये न आती। (جَامِعُ التِّرْمِذِی، کتاب الجنائز، باب ما جاء فی کراهية زيارة القبور للنساء، ص۲۷۵، الحديث:۱۰۵۵)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن औ़रतों के लिये ज़ियारते क़ब्र के जवाज़ की सूरत बयान करते हुए फ़रमाते हैं : अगर क़ब्र घर में हो या औ़रत म-सलन ह़ज या किसी सफ़रे जाइज़ को गई, राह में कोई क़ब्र मिली उस की ज़ियारत कर ली बशर्ते कि जज़अ़ व फ़ज़अ़ व तज्दीदे ह़ुज़्न (ग़म ताज़ा करना) व बुका व नौह़ा व इफ़रातो तफ़रीते अदब (या'नी अदब में ह़द से ज़ियादा कमी या ह़द से ज़ियादा अदब करना) वग़ैरहा मुन्कराते शरइय्या से ख़ाली हो (इन शराइत़ व क़ुयूद के साथ औ़रत के लिये ज़ियारते क़ब्र जाइज़ है) । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 562)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का अपने भाई की क़ब्र की ज़ियारत करना उसी क़िस्म से था, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इस फ़े'ल को मुत़्लक़ ज़ियारते क़ुबूर के लिये जाने को दलील नहीं बनाया जा सकता । **जी हां !** औ़रतों को ज़ियारते क़ुबूर की ग़रज़ से जाना मन्अ़ है, जैसा कि आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن औ़रतों के लिये ज़ियारते क़ुबूर का ह़ुक्म बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : नज़र बह़ाले ज़माना, मेरे, न मेरे बल्कि अकाबिर मु-तक़द्दिमीन के नज़्दीक सबीले मुमा-न-अ़त ही है । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 547)

ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद होता है : ''لَعَنَ اللّٰهُ زَوَّارَاتِ الْقُبُوْر या'नी ज़ियारते क़ुबूर करने वालियों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ला'नत फ़रमाता है ।''

(السنن الکبریٰ للبیہقی، کتاب الجنائز، باب ما ورد فی نَہْیِہِنَّ عن زیارۃ القبور، ۴/۱۳۰، الحدیث: ۷۲۰۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से सुवाल हुवा कि औ़रतों का मक़ाबिर को जाना जाइज़ है या नहीं ? फ़रमाया : ऐसी जगह जवाज़ और फ़साद नहीं पूछते, येह पूछो कि इस में औ़रत पर कितनी ला'नत पड़ती है, जब घर से क़ब्रों की त़रफ़ चलने का इरादा करती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्तों की ला'नत में होती है, जब घर से बाहर निकलती है, सब त़रफ़ से शयात़ीन उसे घेर लेते हैं, जब क़ब्र तक पहुंचती है मय्यित की रूह़ उस पर ला'नत करती है, जब वापस आती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत में होती है ।

(حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح، کتاب الصلوۃ، باب احکام الجنائز، فصل فی زیارۃ القبور، ص ۶۲۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की फ़साह़तो बलाग़त और शे'रो सुख़न गोई पर महारत मुला-ह़ज़ा फ़रमाई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अश्आ़रे अ़रब, फ़साह़तो बलाग़त और अन्साब व अख़्बारे अ़रब पर ख़ूब महारत ह़ासिल थी इस लिये इन फुनून को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आग़ोशे पिदर में ही ह़ासिल कर लिया था, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़्बी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रिवायत फ़रमाते हैं कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा गया : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! इस कुरआन को तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने रसूले मक़्बूल, **आ़लिमे मा का-न व मा यकून** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़ासिल किया है, इसी त़रह़ ह़लाल व ह़राम का इ़ल्म भी हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ही सीखा। और शे'र, नसब और अख़्बारे अ़रब का इ़ल्म अपने वालिदे माजिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वग़ैरा से सुना तो त़िब का क्या ह़ाल है ? फ़रमाया : मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में वुफ़ूद ह़ाज़िर होते रहते थे, हमेशा कोई शख़्स अपनी बीमारी की शिकायत कर के उस की दवा के बारे में पूछता, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे उस के बारे में ख़बर दे देते तो जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें बयान फ़रमाते मैं उसे याद कर के समझ लेती। (سِیَرُ اَعْلَامِ النُّبَلَاء، عائشة ام المؤمنين، ۱۹۷/۲)

याद रहे ! फ़ी नफ़्सिही अश्आ़र न अच्छे हैं न बुरे, वोह अश्आ़र जो **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ह़म्दो सना या सह़ाबा व औलियाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मनाक़िब या आ'दाए दीन की मज़म्मत पर मुश्तमिल हों या जिन में इ़ल्मो ह़िक्मत की बातें और अच्छे अख़्लाक़ की ता'लीम हो वोह अच्छे हैं और कुफ़्रो शिर्क व मुह़र्रमात पर मुश्तमिल अश्आ़र बुरे हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿۲۲۴﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِیْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ﴿۲۲۵﴾ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۲۲۶﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَیَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿۲۲۷﴾ (پ۱۹، الشعراء:۲۲۴تا۲۲۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और शाइ़रों की पैरवी गुमराह करते हैं क्या तुम ने न देखा कि वोह हर नाले में सरगर्दां फिरते हैं और वोह कहते हैं जो नहीं करते मगर वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और ब कसरत **अल्लाह** की याद की और बदला लिया बा'द इस के कि उन पर ज़ुल्म हुवा और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम कि किस करवट पर पलटा खाएंगे।

www.dawateislami.net

सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى आयत नम्बर **227** के तह़त फ़रमाते हैं : "इस में शु-अ़राए इस्लाम का इस्तिस्ना फ़रमाया गया वोह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त लिखते हैं, **अल्लाह तआ़ला** की ह़म्द लिखते हैं, इस्लाम की मद्ह़ लिखते हैं, पन्दो नसाएह़ लिखते हैं, इस पर अज्रो सवाब पाते हैं।"

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 19, अश्शु-अ़राअ, तह़तल आयह : 224 ता 227, स. 698)

"**तिरमिज़ी शरीफ़**" में है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है वोह फ़रमाती हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिदे न-बवी में ह़ज़रते ह़स्सान (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) के लिये मिम्बर बिछाते वोह उस पर खड़े हो कर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से (कुफ़्फ़ार का) फ़ख़्र करने में मुक़ाबला करते या ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से दिफ़ाअ़ करते थे (या'नी कुफ़्फ़ार की बद गोइयों का जवाब देते थे) और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते थे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रूहुल क़ुदुस (जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام) के ज़रीए ह़स्सान (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) की ताईद फ़रमाता है जिस की वज्ह से वोह **रसूलुल्लाह** की त़रफ़ से फ़ख़्र करते या दिफ़ाअ़ करते हैं। (سُنَنُ التِّرمذی، کتاب الادب، باب ما جاء فی انشاد الشعر، ص٦٦٢، الحدیث: ٢٨٤٦، ملتقطًا)

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मजलिसे मुबारक में अक्सर शे'र पढ़े जाते थे जैसा कि "**जामेअ़ तिरमिज़ी**" में ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) फ़रमाते हैं कि मैं रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सो से ज़ाइद मर्तबा बैठा हूं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबा एक दूसरे को शे'र सुनाते और जाहिलिय्यत के कामों में से कुछ का तज़्किरा करते और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहते और बसा अवक़ात उन के साथ तबस्सुम फ़रमाते थे। (المرجع السّابق، ص٦٦٣، الحدیث:٢٨٥٠)

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है वोह फ़रमाती हैं : शे'र अच्छे भी होते हैं और बुरे भी, तुम अच्छे लो बुरे छोड़ दो।

(الادب المفرد، باب الشعر حسن کحسن الکلام ومنه قبیح، ص٢٥٦، الرقم:٨٦٦)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ह़ज़रते शअ़बी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ शे'र कहते थे और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इन दोनों से ज़ियादा शे'र कहते थे।

(العلل ومعرفة الرجال، الجزء الرابع،٢/٢٤٤، الرقم:٢١٢٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अच्छे और बुरे अश्आर के मु-तअ़ल्लिक़ 6 फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿.... बा'ज़ अश्आर हिक्मत हैं। (صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب الادب، باب مایجوز من الشعر۔۔الخ، ص۱۵۲۵، الحدیث:۶۱۴۵)

﴾2﴿.... हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया कि मुशिरकीन की हज्व करो, जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلام) तुम्हारे साथ हैं।

(صَحِیْح مُسْلِم، کتاب فضائل الصحابة، باب فضائل حسّان بن ثابت، ص۹۶۹، الحدیث:۲۴۸۶)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना हस्सान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाते : तुम मेरी तरफ़ से जवाब दो। इलाही ! तू रूहुल कुदुस (عَلَیْہِ السَّلام) से हस्सान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की ताईद फ़रमा।

(المرجع السّابق، ص۹۶۸، الحدیث:۲۴۸۵)

﴾3﴿.... हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में शे'र का ज़िक्र किया गया। इस पर इर्शाद फ़रमाया : वोह एक कलाम है, अच्छा है तो अच्छा है और बुरा है तो बुरा।

(سُنَنُ الدَّار قُطْنِی، کتاب الوکالة، خبر الواحد یوجب العمل، الجزء الرابع، ۷۴/۲، الحدیث:۴۲۶۱)

﴾4﴿.... आदमी का पेट पीप से भर जाए जो उसे ख़राब कर दे येह बेहतर है इस से कि शे'र से भरा हो।

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب الادب، باب ما یکره ان یکون الغالب ...الخ، ص۱۵۲۷، الحدیث:۶۱۵۵)

﴾5﴿.... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह मक़ामे अ़रज में गए, एक शाइ़र शे'र पढ़ता हुवा सामने आया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : शैतान को पकड़ो ! या फ़रमाया : शैतान को दबोच लो, आदमी का जौफ़ पीप से भरा हो येह इस से बेहतर है कि शे'र से भरा हो।

(صَحِیْح مُسْلِم، کتاب الشعر، ص۸۹۰، الحدیث:۲۲۵۹)

﴾6﴿.... क़ियामत क़ाइम न होगी जब तक ऐसे लोग ज़ाहिर न हों जो अपनी ज़बानों के ज़रीए़ से खाएंगे, जिस त़रह़ गाय अपनी ज़बान से खाती है।

(مُسْنَدِ اَحْمَد، مسند العشرة المبشرین بالجنة، مسند ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص، ۵۰۴/۱، الحدیث:۱۶۱۹)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीस शरीफ़ के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी उन का ज़रीअ़ए रिज़्क़ लोगों की ता'रीफ़ व मज़म्मत करना है और इस में ह़क़ व नाह़क़ का बिल्कुल ख़याल न करेंगे, जिस त़रह़ गाय इस का ख़याल नहीं करती है कि येह चीज़ मुफ़ीद है या मुज़िर जो चीज़ ज़बान के सामने आ गई खा गई।

www.dawateislami.net

मुफ़्ती साहिब मज़ीद फ़रमाते हैं : इन अहादीस से येह मा'लूम हुवा कि अश्आर अच्छे भी होते हैं और बुरे भी, अगर **अल्लाह** व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلَّم) की ता'रीफ़ के अश्आर हों या उन में हिक्मत की बातें हों, अच्छे अख़्लाक़ की ता'लीम हो तो अच्छे हैं और अगर लग्व व बातिल पर मुश्तमिल हों तो बुरे हैं और चूंकि अक्सर शु-अरा ऐसे ही बे तुकी हांकते हैं इस वज्ह से उन की मज़म्मत की जाती है। (बहारे शरीअत, अश्आर का बयान, हिस्सा : 16, जि. 3, स. 514)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ख़ुद को नजात दिलवाने और दूसरों को नेक बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे महके महके म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इस म-दनी माहोल की ब-र-कत से लाखों इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया, चुनान्चे एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि आम लड़कियों की तरह मैं भी फ़िल्में डिरामे देखने की आदी, गाने सुनने की शौक़ीन और शादी बियाह में बन संवर कर बे पर्दा शरीक होने की दिलदादा थी। मरने के बा'द मेरा क्या बनेगा, इस का मुझे बिल्कुल भी एहसास तक न था, **2** साल पहले मुझे बाबुल मदीना कराची अपने रिश्तेदारों के हां जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा। उन के घर के बिल्कुल क़रीब इस्लामी बहनों का **सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** होता था, एक इस्लामी बहन की दा'वत पर मैं भी इज्तिमाअ़ में चली गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! उस इज्तिमाअ़ ने मेरी सोचों का रुख़ तब्दील कर के रख दिया। फिर मैं ने बाबुल मदीना कराची में ही **रबीउ़ल अव्वल** शरीफ़ की बहारें देखीं तो दिल नेकियों की तरफ़ मज़ीद माइल हुवा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी। **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और शर-ई पर्दा करना नसीब हो गया। **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम करते करते ता दमे तहरीर मैं अ़लाक़ाई सत्ह पर **म-दनी इन्आ़मात** की ज़िम्मादार की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत करने की सआ़दत पा रही हूं। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 315)

आई नई हुकूमत सिक्का नया चलेगा
आ़लम ने रंग बदला सुब्हे शबे विलादत

(ज़ौक़े ना'त, स. 69)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾21﴿.... सय्यि-दतुना आइशा बतौरे मुहद्दिसा व मुफ़्तिय्या

एक लाख साठ हज़ार हज का सवाब

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा, शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने **हज्जतुल इस्लाम** अदा किया, इस के बा'द जिहाद किया उस का जिहाद **400** हज के बराबर लिखा जाएगा।'' हज़रते सय्यिदुना अली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : ''इस से उन लोगों के दिल टूट गए जो जिहाद और हज पर कुदरत नहीं रखते थे।'' फ़रमाते हैं : तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ वह्य फ़रमाई : ''जो कोई भी तुम पर दुरूद पढ़ेगा उस का तुम पर दुरूद पढ़ना **400** जिहाद के बराबर लिखा जाएगा और हर जिहाद **400** हज के बराबर लिखा जाएगा।'' (الصلات والبشر، الحديث التاسع بعد المائة، ص۱۱۳)

أَلَا إِنَّ الصَّلَاةَ عَلَى الرَّسُوْلِ ... شِفَاءٌ لِّلْقُلُوْبِ مِنَ الْغَلِيْلِ
فَصَلِّ عَلَيْهِ إِنَّ اللّٰهَ صَلّٰى ... عَلَيْهِ وَلَا تَكُوْنَنَّ بِالْبَخِيْلِ
فَصَلِّ عَلَيْهِ قَدْ صَلَّتْ عَلَيْهِ ... مَلَائِكَةُ السَّمَاءِ وَجِبْرَائِيْلُ
أَلَا إِنَّ الصَّلَاةَ عَلَيْهِ نُوْرٌ ... لِذِى الظُّلُمَاتِ فِى الْيَوْمِ الْمُهَوَّلِ

وَتَثْقِيْلٌ لِمِيْزَانٍ خَفِيْفٍ
وَتَخْفِيْفٌ مِّنَ الْوِزْرِ الثَّقِيْلِ

(الصلات والبشر، ص۲۱٤)

तरजमा : जान लो ! **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना दिलों के लिये गुस्से से शिफ़ा है। पस तुम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो और बख़ील हरगिज़ न होना बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजता है। मला-इ-कए समा और जिब्रईले अमीन عَلَيْهِمُ السَّلَام भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजते हैं तो तुम भी आप

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक के नज़राने पेश करो। जान लो ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजना अंधेरों वाले के लिये उस दिन में नूर है जिस से डराया गया है और हलके मीज़ान भारी करने वाला और गुनाहों के भारी बोझ को हलका करने वाला है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इल्मे ह़दीस व फ़िक़्ह में महारत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के बे शुमार औसाफ़ में से एक वस्फ़ ह़दीस व फ़िक़्ह में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ग़ैर मा'मूली महारत भी है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हम अस्ह़ाबे रसूल पर कोई भी ह़दीस मुश्किल होती फिर उस बारे में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से सुवाल करते तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास उस का ह़ल पाते। (جَامعُ التِّرْمِذِی، ابواب المناقب عن رسول الله، باب فضل عائشة رضی الله عنها، ص۸۷۳، الحدیث:۳۸۸۲)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इस रिवायत से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का मुह़द्दिसा और मुफ़्तिय्या होना दोनों बख़ूबी साबित होते हैं, शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی **''मिरआतुल मनाजीह़''** में इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी अस्ह़ाबे **रसूलुल्लाह** (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) को किसी मस्अले में कोई इश्काल होता और वोह मुश्किल कहीं ह़ल न होती तो जनाबे आ़इशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) के पास ह़ाज़िर होते उन के पास या तो उस के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीस मिल जाती या किसी ह़दीस से उस मस्अले का इस्तिम्बात़ मिल जाता अज़ आदम ता ई दम (या'नी तख़्लीक़े ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام से आज तक) कोई बीबी ऐसी आ़लिमा फ़क़ीहा पैदा न हुई जैसी जनाबे आ़इशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) हुई आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) उ़लूमे क़ुरआनिया, उ़लूमे ह़दीस की जामेअ़ थीं, बड़ी मुह़द्दिसा, बड़ी फ़क़ीहा।

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکوۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبی، ۵۰۵/۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सब से बड़ी आ़लिमा

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू स-लमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से ज़ियादा किसी को सुन्नते

www.dawateislami.net

रसूल का आलिम देखा, न किसी ऐसे मुआ-मले में जिस में राय की हाजत हो, उन से ज़ियादा किसी को फ़क़ीहा देखा, न किसी आयत के शाने नुज़ूल में उन से ज़ियादा आलिम देखा और न ही फ़राइज़ में। (الطبقات الکبرٰی لابن سعد، ذکر من جمع القران علی عهد رسول الله، عائشة زوج النبی، ۲/۳۲۳)

इस से मा'लूम हुवा कि हदीस व फ़िक़्ह के साथ साथ इल्मुल फ़राइज़ में भी आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا को महारत हासिल थी इस इल्म में भी आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا यदे तूला (अच्छी दस्त-रस) रखती थीं। हज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अकाबिर सहाबा को देखा फ़राइज़ के बारे में वोह उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا से पूछा करते थे।" (المرجع السّابق)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुहद्दिस की ता'रीफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ 96 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**निसाब उसूले हदीस**" सफ़हा 20 पर मुहद्दिस की ता'रीफ़ यूं मन्क़ूल है : वोह शख़्स जो इल्मे हदीस में रिवा-यतन दिरा-यतन मश्गूल हो और कसीर रिवायात और उन के रावियों के हालात पर मुत्तलअ़ हो।

रिवा-यतन व दिरा-यतन की ता'रीफ़

"**रिवा-यतन**" से मुराद सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अक़्वाल व अफ़आल का जानना, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अक़्वाल व अफ़आल को रिवायत करना, ज़ब्त करना और तहरीर करना है। और "**दिरा-यतन**" से मुराद रिवायत की हक़ीक़त, उस की शराइत, उस की अक़्साम, उस के अहकाम, रावियों के अहवाल और उन की शराइत, मरविय्यात की अक़्साम और उन के मु-तअ़ल्लिक़ात की मा'रिफ़त है। (تدریب الراوی، ص۸، ملخّصًا)

मरविय्याते सय्यि-दतुना आइशा की ता'दाद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہا से कसीर अहादीस मरवी हैं, अहादीस का एक बहुत बड़ा ज़ख़ीरा उम्मते मुस्लिमा ने आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا के ज़रीए हासिल किया, सरकारे आली वक़ार, नबियों के सालार, शहन्शाहे

www.dawateislami.net

अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दाख़िली व ख़ानगी ज़िन्दगी की ऐसी बे शुमार बातें हैं कि अगर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के ज़रीए पता न चलतीं तो उम्मते मुस्लिमा उन से महरूम ही रहती। मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते सय्यिदुना मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی **"इज्माल तर-ज-मए इक्माल"** में इर्शाद फ़रमाते हैं : **"ख़ुलासए तहज़ीब"** में है कि हज़रते आइशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) से **दो हज़ार दो सो दस (2210)** अहादीस मरवी हैं जिन में **एक सो चोहत्तर (174)** मुत्त-फ़क़ुन अलैह हैं या'नी बुख़ारी व मुस्लिम दोनों की रिवायात और **चव्वन (54)** अहादीस सिर्फ़ बुख़ारी की हैं **अड़सठ (68)** अहादीस सिर्फ़ मुस्लिम की (बक़िय्या दीगर कुतुबे अहादीस में हैं)। **(اِجْمَال تَرْجَمَهٔ اِکْمَال علٰی ذَیلِ مِرْاٰةِ المَناجِیْح، صحابیات، عائشه صدّیقه، ۷۰/۸)**

2 क़ीरात सवाब

शहन्शाहे अबरार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अहादीस से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को इस क़दर वाक़िफ़िय्यत हासिल थी कि अकाबिर सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास आ कर अहादीस दरयाफ़्त करते और उन की तस्दीक़ करवाते, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से रिवायत है कि वोह हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के पास बैठे हुए थे कि अचानक हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तशरीफ़ लाए और पूछा : "ऐ **अब्दुल्लाह बिन उमर** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ! क्या आप ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की येह बात सुनी है कि उन्हों ने सरवरे कौनैन, रहमते दारैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना कि "जो शख़्स मय्यित के साथ उस के घर से निकला और उस पर नमाज़ पढ़ी और तदफ़ीन तक उस के साथ रहा तो उस के लिये दो क़ीरात सवाब है और हर क़ीरात उहुद पहाड़ के बराबर है और जो नमाज़ पढ़ कर लौट आया उस को उहुद पहाड़ की मिस्ल एक अज्र मिलेगा।" तो हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने हज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के इस क़ौल के बारे में पूछने के लिये हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास भेजा कि फिर वापस आ कर मुझे ख़बर दें कि हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने क्या जवाब दिया है।

इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने मस्जिद में पड़े हुए पथ्थरों में से एक पथ्थर को उठाया और उसे अपने हाथ में पलटने लगे। फिर जब हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आ कर बताया कि उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि हज़रते अबू

www.dawateislami.net

हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ सच कहते हैं तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने अपने हाथ में मौजूद पथ्थर ज़मीन पर मार कर फ़रमाया : "(अफ़्सोस !) हम ने बहुत सारे क़ीरात़ ज़ाएअ़ कर दिये।" (صَحِیح مُسلِم، کتاب الجنائز ، باب فضل الصلاة علی الجنازة واتباعها، ص ٣٤٠، الحدیث:٩٤٥)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इफ़्त़ार में जल्दी करना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़त़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं और ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास गए, हम ने अ़र्ज़ किया : ऐ उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ! सरकारे आ़ली वक़ार, नबियों के सालार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा में से दो ह़ज़रात हैं, एक तो इफ़्त़ार भी जल्द करते हैं और नमाज़ भी जल्द पढ़ते हैं और दूसरे साह़िब इफ़्त़ार में भी देर करते हैं और नमाज़ भी देर से पढ़ते हैं। फ़रमाने लगीं : "कौन साह़िब नमाज़ व इफ़्त़ार में जल्दी करते हैं ?" हम ने अ़र्ज़ की : **अ़ब्दुल्लाह** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) या'नी इब्ने मस्ऊ़द। बोलीं : "ऐसे ही **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم करते थे।" अबू कुरैब ने इज़ाफ़ा किया है : दूसरे (शख़्स) ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हैं।

(صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب فضل السحور وتاکید استحبابه......الخ، ص٣٩٧، الحدیث:٤٩-١٠٩٩)

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त फ़रमाते हैं : "येह दोनों ह़ज़रात (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़त़िय्या और ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) जलीलुल क़द्र ताबेई हैं, इन में नमाज़े मग़रिब और इफ़्त़ारे रोज़ा में इख़्तिलाफ़ हुवा, फ़ैसले के लिये उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास ह़ाज़िर हुए क्यूं कि आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) बड़ी फ़क़ीहा आ़लिमा थीं।"

मुफ़्ती साह़िब मज़ीद फ़रमाते हैं : "नमाज़ से मुराद नमाज़े मग़रिब है और जल्दी से बहुत ही जल्दी आफ़्ताब का कनारा छुपते ही बिल्कुल मुत्तसिल और देर से मुराद चन्द मिनट की एह़तियातन देर लगाना है न कि तारे गुथ जाने तक की ताख़ीर लिहाज़ा इन में से किसी बुज़ुर्ग पर ए'तिराज़ नहीं, एक साह़िब अ़ज़ीमत पर आ़मिल हैं दूसरे रुख़्सत पर।"

फिर फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ने जनाबे **अ़ब्दुल्लाह** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) के अ़मल को सुन्नते मुस्तह़ब्बा के मुवाफ़िक़ बताया और क़दरे ताख़ीर को

www.dawateislami.net

मुस्तहब क़रार दिया, मा'लूम हुवा कि जनाबे उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) मिज़ाज शनासे रसूल हैं और अह़वाल-दाने मुस्त़फ़ा हैं صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم। ग़ालिब येह है कि येह ख़बर ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) को पहुंची होगी और उन्हों ने अपने अ़मल में तब्दीली कर ली होगी, सहाबा से येह तवक़्क़ोअ़ हो सकती ही नहीं कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़मल से वाक़िफ़ हो कर उस के ख़िलाफ़ काम करें।'' (مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الصوم، ۳/۱۵۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नौह़ा से मय्यित पर अ़ज़ाब होने का मस्अला

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़बर दस्त क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा के साथ साथ हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़्वाल व अफ़्आ़ल के असरारो रुमूज़ से भी ख़ूब आगाह फ़रमाया हुवा था, लिहाज़ा हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस मौक़अ़ पर क्या फ़रमाया और क्यूं फ़रमाया और कौन सा काम किस मौक़अ़ पर किया और इस के करने के पीछे मक़्सद क्या था ? इन सब से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ख़ूब अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ थीं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यि-दतुना उ़म्रह बिन्ते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से ज़िक्र किया गया कि ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : ज़िन्दों के रोने की वज्ह से मय्यित को अ़ज़ाब दिया जाता है। ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अबू अ़ब्दुर्रह़मान (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) को बख़्शे, उन्हों ने झूट न बोला लेकिन वोह भूल गए या ख़त़ा कर गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक यहूदिय्या के पास से गुज़रे जिस पर रोया जा रहा था तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : येह इस पर रो रहे हैं और इसे क़ब्र में अ़ज़ाब हो रहा है। (صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب المیت یعذب ببکاء اهله علیه، ص۳۳٤، الحدیث:۲۷-۹۳۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीस शरीफ़ के तह़त फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) के फ़रमान का मन्शा येह है कि नौह़ा से मुसल्मान मय्यित को अ़ज़ाब नहीं होता बल्कि कुफ़्फ़ार को होता है। ह़ज़रते इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ने उसी को आ़म समझ लिया या येह मत़लब है कि वहां

www.dawateislami.net

अज़ाब तो कुफ़्र की वज्ह से हो रहा था, ह़ज़रते इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) रोने की वज्ह से समझ गए लिहाज़ा उन से भूल हुई या ख़त़ा।''

मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर मय्यित इस रोने पीटने की वसिय्यत कर गया हो तो अ़ज़ाब पाएगा या येह मत़लब है कि मरने वाले को मरते वक़्त या मरने के बा'द इस शोरो पुकार से तक्लीफ़ होती है जैसे उसे तिलावते क़ुरआन वग़ैरा से राह़त ह़ासिल होती है क्यूं कि मय्यित की रूह़ को मूज़ी चीज़ों से ईज़ा और आराम देह चीज़ों से राह़त होती है इसी लिये क़ब्र पर चलने, इस का तक्या लगाने से मय्यित को ईज़ा होती है। (مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح،کتاب الجنائز،باب البکاء علی المیت،۲/۵۰۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इसी त़रह़ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान **''اُطْلُبُوا الْحَوائِجَ مِنْ حِسَانِ الْوُجُوهِ''** : या'नी ख़ूब सूरत चेहरों से ह़ाजतें त़लब करो'' के बारे में पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस का मा'ना येह है कि उन बेहतरीन त़रीक़ों से ह़ाजतें त़लब करो जो ह़लाल हैं।''

(ادبُ الدِّین والدنیا، آداب المواضعة والاصطلاح، الفصل السابع فی المروءة، ص۳۳۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उम्मुल मुअमिनीन की त़रफ़ सह़ाबा का रुजूअ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अह़कामे शरीअ़त का इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये इफ़्ता एक लाज़िमी और ज़रूरी अम्र है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाया :

فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ (پ۱۷، الانبیاء:۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म न हो।

इस से मा'लूम हुवा कि एक त़बक़ा मिल्लत का ऐसा होगा जिसे इ़ल्मे दीन पर उ़बूर ह़ासिल न होगा और एक त़बक़ा ऐसा होगा जो साह़िबे इ़ल्मो फ़ज़्ल होगा और उसे इ़ल्मे दीन में बसीरत ह़ासिल होगी चूंकि हर मुसल्मान के लिये वोही रास्ता इख़्तियार करना ज़रूरी है जो **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पसन्दीदा रास्ता है इस लिये हर शख़्स को अपना हर अ़मल इस्लाम के अह़काम के मुत़ाबिक़ रखना चाहिये और अगर किसी को किसी मुआ़-मले में शरीअ़त का हुक्म मा'लूम नहीं है तो उसे अहले इ़ल्म की त़रफ़ रुजूअ़ करना चाहिये और उन से सुवाल कर के हुक्मे शर-ई मा'लूम करना चाहिये इसी उसूल के मुत़ाबिक़

www.dawateislami.net

ज़मानए सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से आज तक मुसल्मानों का येही त़रीक़ा रहा है कि अगर उन्हें किसी चीज़ के जवाज़ या अ़-दमे जवाज़ का इ़ल्म नहीं है तो उन्हों ने बिला तअम्मुल अहले इ़ल्म से उस का हुक्मे शर-ई मा'लूम कर लिया है हर ज़माने में लोग उ़-लमाए शरीअ़त की त़रफ़ मसाइले शरइय्या का इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये रुजूअ़ करते रहे हैं।

(बहारे शरीअ़त, त़बक़ातुल फु-क़हा, हिस्सा : 19, जि. 3, स. 1059)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا भी उन्हीं अहले इ़ल्म ह़ज़रात में से थीं जिन की त़रफ़ सहाबए किराम व ताबिईने इ़ज़ाम رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن ब कसरत रुजूअ़ किया करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू **अ़ब्दुल्लाह** शम्सुद्दीन ज़हबी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : **اُمِّ عَبۡدُ اللہ، حَبِیۡبَۃُ رَسُوۡلِ اللہ، بِنۡتُ خَلِیۡفَۃِ رَسُوۡلِ اللہ** उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا किबार फु-क़हा सह़ाबा में से थीं, **सय्यिदुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़क़ीह सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की त़रफ़ रुजूअ़ किया करते थे।

(تذکرۃ الحُفّاظ للذھبی، الطبقۃ الاولٰی، اُمُّ المؤمنین عائشۃ رضی اللہ عنھا، اُم عبد اللہ حبیبۃ رسول اللہ ...الخ، ۱/۲۷)

अल ग़रज़ ! अल्लाहु रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को फ़क़ाहत फ़िद्दीन की बे बहा दौलत से ख़ूब ख़ूब मालामाल फ़रमाया था, ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के अ़हदे ख़िलाफ़त में ही मुस्तक़िल त़ौर पर इफ़्ता का मन्सब ह़ासिल कर चुकी थीं, ह़ज़रते सय्यिदैना उ़मर व उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا और इन के बा'द अपने विसाले मुबारक तक वोह बराबर फ़तवा देती थीं।"

(الطبقات الکبرٰی لابن سعد، ذکر من جمع القراٰن علٰی عھد رسول اللہ، عائشۃ زوج النبی، ۲/۳۲۳)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औ़रत को मर्दाना जूते पहनना कैसा ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मर्द को औ़रतों की और औ़रत को मर्दों की मुशा-बहत इख़्तियार करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ला'नत की है ऐसे मर्दों पर जो औ़रतों से मुशा-बहत रखें और ऐसी औ़रतों पर जो मर्दों से मुशा-बहत पैदा करें।

(مُسۡنَدِ اَحۡمَد، مسند بنی ھاشم، مسند عبد اللہ ابن عبّاس بن عبد المطلب، ۲/۳۶۹، الحدیث:۳۲۰۶)

www.dawateislami.net

इस लिये मर्द को मर्दाना और औरत को ज़नाना अश्या इस्ति'माल करनी चाहिएं। किसी ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से कहा कि एक औरत (मर्दों की त़रह़) जूते पहनती है। उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मर्दानी औरतों पर ला'नत फ़रमाई है। **(سُنَن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب لباس النساء، ص ٦٤٤، الحدیث:٤٠٩٩)**

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी औरतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औरतों का इम्तियाज़ होता है उन में हर एक को दूसरे की वज़्अ़ इख़्तियार करने (या'नी नक़्क़ाली करने) से मुमा-न-अ़त है, न मर्द औरत की वज़्अ़ (त़र्ज़) इख़्तियार करे, न औरत मर्द की।

(बहारे शरीअ़त, जूता पहनने का बयान, ह़िस्सा : 16, जि. 3, स. 422)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जब सिर्फ़ मर्दों की त़रह़ का जूता पहनना मूजिबे ला'नत या'नी ला'नत का बाइ़स है ह़ालां कि येह एक ख़ारिजी शै है तो ख़ास जुज़्वे बदन को मर्दों की त़रह़ बना लेना म-सलन सर के बाल कटवा कर मर्दों की त़रह़ छोटे छोटे करवा देना, इसी त़रह़ दीगर अफ़्आ़ल में मर्दों की मुशा-बहत इख़्तियार करना किस क़दर मूजिबे ला'नत होता होगा।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوۡبُوۡا اِلَی اللّٰہ اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰہ
صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बिग़ैर इ़ल्म के फ़तवा देना कैसा ?

बद क़िस्मती से हमारे मुआ़-शरे में ऐसे अफ़राद की भी कमी नहीं है जो इ़ल्मे दीन से बे बहरा होने के बा वुजूद दीनी मसाइल में राय-ज़नी को अपना पैदाइशी ह़क़ तसव्वुर करते हैं और लोगों को ग़लत़ मसाइल बताने में ज़रा झिजक मह़सूस नहीं करते ऐसे लोगों को डर जाना चाहिये कि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है : "जो बिग़ैर इ़ल्म के फ़तवा दे उस पर ज़मीन व आस्मान के फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं।"

(تاریخ مدینة دمشق، حرف الالف فی اسماء آبائهم، ذکر من اسمه ابیه اسحاق، محمد بن اسحاق بن ابراهیم ابوعبد اللّٰه الانطاکی، ١٩/٥٢، الحدیث:١٠٩١٤)

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ियामत की निशानी कि **"इ़ल्म उठ जाएगा"** की वज़ाह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : **"अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म को इस त़रह़ नहीं

www.dawateislami.net

उठाएगा कि इसे लोगों से जुदा कर ले बल्कि इल्म का उठा लेना उ़-लमा के विसाल कर जाने से होगा, ह़त्ता कि कोई आ़लिम बाक़ी न रहेगा, लोग जाहिलों को सरदार बना लेंगे उन से सुवाल किये जाएंगे, वोह बिग़ैर इल्म फ़तवा देंगे ख़ुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।"

(صَحِیْحُ الْبُخارِی، کتاب العلم، باب کیف یقبض العلم، ص ۱۰۰، الحدیث:۱۰۰)

और इर्शाद फ़रमाया : जिस को बिग़ैर इल्म फ़तवा दिया गया तो इस का गुनाह उस फ़तवा देने वाले पर है। (سُنَن اَبِی داوٗد، کتاب العلم، باب التوقی فی الفتیا، ص ۵۸۰، الحدیث:۳۶۵۷)

इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **"बे इल्म फ़तवा सख़्त ह़राम है।"** (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 628)

लिहाज़ा हम पर भी लाज़िम है कि अपने दरपेश मसाइल के ह़ल के लिये सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम से ही रुजूअ़ करें और इन्ही से फ़तवा ह़ासिल कर के उस पर अ़मल करें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सच्ची निय्यत की ब-र-कत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपनी इस्लाह़ और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश कर के फ़लाह़े दारैन के ह़ुसूल के लिये **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इस म-दनी माह़ोल पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बेह़द करम है, चुनान्चे बाबुल मदीना (कराची) की एक ज़िम्मादार इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि **दा'वते इस्लामी** के बैनल अक्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की आमद आमद थी। आख़िरी दिन की ख़ुसूसी निशस्त का बयान ज़िक्र व दुआ़ और सलातो सलाम ब ज़रीअ़ए टेलीफ़ोन इस्लामी बहनों के बा पर्दा इज्तिमाआ़त में भी रिले किया जाता है। चुनान्चे हमारे अ़लाक़े की इस्लामी बहनों ने घर घर जा कर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत को आ़म करना शुरूअ़ कर दिया, उन इस्लामी बहनों में मर्ह़ूमा ज़ाहिदा अ़त्तारिय्या भी शामिल थीं, उन का जज़्बा क़ाबिले दीद था, वोह सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की आख़िरी निशस्त में शिर्कत के लिये इस्लामी बहनों पर भरपूर इन्फ़िरादी कोशिश और उन्हें इज्तिमाअ़ गाह में ले जाने

www.dawateislami.net

के इन्तिज़ामात में मसरूफ़ दिखाई देती थीं। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से एक हफ़्ता क़ब्ल इतवार के दिन अचानक उन की त़बीअ़त ख़राब हो गई और उन्हें अस्पताल में ले जाया गया जहां ह़ालत देखते हुए उन्हें फ़ौरन दाख़िल कर लिया गया। तीन रोज़ बिस्तरे अ़लालत पर रहने के बा'द वोह मंगल के रोज़ इस दुन्याए फ़ानी से कूच फ़रमा गईं, إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّآ إِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ इतवार के रोज़ **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की आख़िरी निशस्त में उन के अ़लाक़े की कसीर इस्लामी बहनों ने शिर्कत की। अचानक एक इस्लामी बहन ने येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देखा कि चन्द रोज़ क़ब्ल इन्तिक़ाल कर जाने वाली **दा'वते इस्लामी** की मुबल्लिग़ा ज़ाहिदा अ़त्तारिय्या मर्हूमा भी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हैं। (इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 286)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

निफ़ास के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ ज़रूरी मसाइल

किसी औ़रत को **40 दिन** व रात से ज़ियादा **निफ़ास** का ख़ून आया, अगर पहला बच्चा पैदा हुवा है तो **40 दिन** रात **निफ़ास** है, बाक़ी जितने अय्याम **40 दिन** रात से ज़ियादा हुए हैं वोह **इस्तिह़ाज़े** के हैं। और अगर इस से पहले भी बच्चा तो पैदा हुवा था मगर येह याद नहीं रहा कि कितने दिन ख़ून आया था तो इस सूरत में भी येही मस्अला होगा या'नी **40 दिन** रात **निफ़ास** के और बाक़ी **इस्तिह़ाज़े** के और अगर पहले बच्चे के पैदा होने पर ख़ून आने के दिन याद हैं म-सलन पहले जो बच्चा पैदा हुवा था तो **30** दिन रात ख़ून आया था तो इस सूरत में **30** दिन रात **निफ़ास** के हैं बाक़ी **इस्तिह़ाज़े** के म-सलन पहले बच्चे के पैदा होने पर **30** दिन रात ख़ून आया था और दूसरे बच्चे की पैदाइश पर **50** दिन रात ख़ून आया तो 30 दिन **निफ़ास** के होंगे बाक़ी **20** दिन रात **इस्तिह़ाज़े** के।

(बहारे शरीअ़त, निफ़ास का बयान, ह़िस्सा : 2, जि. 1, स. 377, मफ़्हूमन)

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

बयान ﴾22﴿..... सय्यि-दतुना आ़इशा की गिर्या व ज़ारी

दुरूद शरीफ़ अपने पढ़ने वाले के लिये इस्तिग़्फ़ार करता है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **328** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात**" सफ़्ह़ा **11** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ नक़्ल फ़रमाते हैं : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि साह़िबे मे'राज, मह़बूबे रब्बे बे नियाज़ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई बन्दा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो फ़िरिश्ता उस दुरूद को ले कर ऊपर जाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पहुंचाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : इस दुरूद को मेरे बन्दे की क़ब्र में ले जाओ येह दुरूद अपने पढ़ने वाले के लिये इस्तिग़्फ़ार करता रहेगा और उस (बन्दए ख़ास) की आंखें इसे देख कर ठन्डी होती रहेंगी।

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف المیم، ٣٢١/٦، الحدیث:١٩٤٦١)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मह़ब्बते ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा में आंसू बहाना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते हुए गिर्या कुनां रहना और नेक आ'माल पर इतराते हुए फ़ख़्रो ग़ुरूर, ह़ुब्बे नफ़्स व ह़ुब्बे जाह में मुब्तला होने की बजाए अपनी कोताहियों पर नज़र करते हुए अश्के नदामत बहाना और बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में मुआ़फ़ी के ख़्वास्त-गार होना अ़ज़ीम नेकी व सआ़दत मन्दी है, हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام इन **औसाफ़ से अ़ला वज्हिल कमाल** (या'नी कामिल त़ौर पर) मुत्तसिफ़ थे, येह ह़ज़रात अपने शबो रोज़ **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी वाले कामों में बसर करते लेकिन फिर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से गिर्या कुनां रहते, ह़त्ता कि, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी ता'लीमे उम्मत के लिये गिर्या व ज़ारी फ़रमाया करते, चुनान्चे

www.dawateislami.net

महबूबे बारी की गिर्या व ज़ारी

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ अबू क़ासिम सुलैमान बिन अहमद त़-बरानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی **"अल मो'जमुल औसत़"** में हदीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : एक बार सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार में हज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नबिय्ये बरहक़ बना कर भेजा है ! अगर जहन्नम को सूई के नाके के बराबर खोल दिया जाए तो तमाम ज़मीन वाले उस की गरमी से हलाक हो जाएं, अगर जहन्नम का एक कपड़ा ज़मीन व आस्मान के दरमियान लटका दिया जाए तो तमाम अहले ज़मीन उस की गरमी से मौत के घाट उतर जाएं। उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हक़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया ! अगर जहन्नम पर मुक़र्रर फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता दुन्या वालों के सामने ज़ाहिर हो जाए वोह उस को देखें तो उस के चेहरे की हैबत और बू से तमाम अहले ज़मीन मर जाएं। उस ज़ाते वाला की क़सम जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रसूले बरहक़ बना कर भेजा है ! जहन्नम वालों की ज़न्जीरों का एक ह़ल्क़ा जिस का ज़िक्र क़ुरआने करीम में फ़रमाया गया है अगर उसे दुन्या के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो वोह रेज़ा रेज़ा हो जाएं और वोह एक दूसरे के क़रीब भी न हों यहां तक कि **अर्ज़ुस्सुफ़्ला** (या'नी सब से निचली ज़मीन तक) जा पहुंचें। सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ! बस करो इतना ही तज़्किरा काफ़ी है, कहीं मेरा दिल न फट जाए और मैं वफ़ात पा जाऊं। प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) को रोता देख कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ऐ जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ! तुम रो रहे हो ? ह़ालां कि बारगाहे ख़ुदा वन्दी में तुम को तो एक ख़ास मक़ाम ह़ासिल है। अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** मैं क्यूं न रोऊं, कहीं ऐसा न हो कि इ़ल्मे इलाही में मौजूदा ह़ाल के बजाए मेरा कोई और ह़ाल हो, कहीं इब्लीस की त़रह़ मुझे भी इम्तिह़ान में न डाल दिया जाए, कहीं हारूत व मारूत की त़रह़ मुझे भी आज़्माइश में मुब्तला न कर दिया जाए।

रावी बताते हैं : रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी रोने लगे, हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) भी रो रहे थे। दोनों हज़रात रोते रहे आख़िरे कार आवाज़ आई : ऐ जिब्रईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ! ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने आप दोनों को अपनी ना फ़रमानी से मह़फ़ूज़ कर लिया है। हज़रते सय्यिदुना जिब्रईल (عَلَیْہِ السَّلَام) आस्मानों की त़रफ़ परवाज़ कर गए। मदीने ताजवर, शाहे बह़रो बर, रसूले अन्वर

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए। बा'ज़ अन्सार सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان के क़रीब से गुज़रे जो हंस खेल रहे थे। फ़रमाया : तुम हंस रहे हो और तुम्हारे पीछे जहन्नम है, अगर तुम वोह बातें जानते जो मैं जानता हूं तो तुम थोड़ा हंसते और ज़ियादा रोते और तुम खाना पीना आसानी से न निगल सकते और रस्तों और जंगलों की त़रफ़ निकल जाते और गिड़गिड़ा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़एं मांगते। आवाज़ आई : ऐ **मुह़म्मद** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मेरे बन्दों को मायूस मत कीजिये, मैं ने तुम्हें आसानी पैदा करने वाला बना कर भेजा है और तंगी करने वाला बना कर नहीं भेजा। पस **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : राहे रास्त पर गामज़न रहो और मियाना रवी इख़्तियार करो। **(المعجم الاوسط، باب من اسمه ابراهيم، ٢/٧٨، الحديث:٢٥٨٣، ملتقطًا)**

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़रा ग़ौर फ़रमाइये, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम जहानों के लिये रह़मत बना कर भेजा, जो खु़दा के बा'द सब से अफ़्ज़ल हैं, जिन के हाथ में बरोज़े क़ियामत **लिवाउल ह़म्द** (या'नी ह़म्द का झन्डा) होगा ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيۡهِ السَّلَام और दीगर तमाम अम्बिया भी जिस के नीचे होंगे, जिन की ह़क़ीक़त को सिवाए रब तआ़ला के कोई नहीं जानता, जो गुरौहे अम्बिया के सरदार हैं और अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से गुनाहों का सुदूर मुह़ाल है या'नी येह बात मुह़ाल है कि किसी भी नबी से कोई गुनाह सादिर हो फिर हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो सय्यिदुल अम्बिया हैं, इस अ़-ज़-मतो रिफ़्अ़त और शानो शौकत के बा वुजूद आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में ब कसरत गिर्या व ज़ारी फ़रमाते थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'लीमात के इन सुनहरी खु़तूत़ को दलीले राह बनाते हुए कई सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ताबिईने इ़ज़ाम व दीगर औलियाए किराम व उ़-लमाए आ'लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का ख़ौफ़े खु़दा में आंसू बहाना मन्क़ूल है, इन्हीं अख़्यार में से एक अ़ज़ीम हस्ती उम्मुल मुअमिनीन, मह़बूबए मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا भी हैं, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا के भी बारगाहे ईज़्दी में गिर्या व ज़ारी के मु-तअ़द्दद वाक़िआ़त मरवी हैं, ज़ेरे नज़र बयान में आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا की ह़याते मुबा-रका के इन्ही सुनहरी नुक़ूश को पेश करने की सअ़्य की जाती है, चुनान्चे

﴿1﴾.... क़ब्र के दबाने के ख़याल पर रोना :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ग़नवी رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने एक शख़्स से रिवायत किया वोह फ़रमाते हैं : मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا के पास था कि एक छोटे बच्चे का जनाज़ा गुज़रा। (येह देख कर) उम्मुल मुअमिनीन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا रोने लगीं। मैं ने

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अ़र्ज़ किया : आप को किस चीज़ ने रुलाया ? फ़रमाया : मैं क़ब्र के दबाने की वज्ह से इस पर शफ़्क़त करते हुए रोई हूं। (شرح الصدور باحوال الموتٰی والقبور، باب ضمة القبر لكل احد، ص٨٢)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़ब्र हर एक को दबाती है, नेकों को ऐसे दबाती है जैसे मां बिछड़े हुए लाल को शफ़्क़त के साथ सीने से चिमटा लेती है और जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ होता है उन को ऐसे भींचती है कि पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में इस त़रह़ पैवस्त हो जाती हैं जिस त़रह़ दोनों हाथों की उंग्लियां एक दूसरे में मिल जाती हैं, चुनान्चे अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने (बारगाहे रिसालत में) अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जिस दिन से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे मुन्कर नकीर की आवाज़ और क़ब्र की तंगी के बारे में बयान फ़रमाया है मुझे किसी चीज़ ने नफ़्अ़ नहीं दिया। ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ! मुन्कर नकीर की आवाज़ मुअमिनीन के कानों में ऐसे है जैसे आंख में सुर्मए इस्मिद और क़ब्र का मोमिन को दबाना ऐसे है जैसे कोई बच्चा अपनी शफ़ीक़ मां से दर्दे सर की शिकायत करे तो वोह उस की त़रफ़ उठ कर नरमी से उस का सर दबाती है। लेकिन ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में शक करने वालों (या'नी काफ़िरों) के लिये हलाकत है ! उन्हें उन की क़ब्रों में ऐसे भींचा जाएगा जैसे पथ्थर का अन्डे को भींचना। (معجم ابن الاعرابی، حدیث ترفقی، ٣/٨٩٥، الحدیث:١٨٧٠)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़ब्र का मुआ़-मला निहायत ही होलनाक है, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जब किसी क़ब्र के पास ठहरते तो इस क़दर रोते कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की दाढ़ी मुबारक आंसूओं से तर हो जाती। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : "जन्नत और दोज़ख़ के तज़्किरे पर तो आप नहीं रोते और इस पर (या'नी क़ब्र के तज़्किरे पर इतना ज़ियादा) रोते हैं ?" इर्शाद फ़रमाया कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ब्र आख़िरत की मनाज़िल में से सब से पहली मन्ज़िल है, अगर (साहिबे क़ब्र ने) इस से नजात पाई तो बा'द (या'नी क़ियामत) का मुआ़-मला आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़-मला ज़ियादा सख़्त है।" फिर फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया है कि "मैं ने क़ब्र से ज़ियादा होलनाक मन्ज़र कोई नहीं देखा।" (سنن الترمذی، کتاب الزھد، باب ما جاء فی ذکر الموت، ص٥٥٤، الحدیث:٢٣٠٨)

नीज़ फिर इसी पर बस नहीं बल्कि इस बात से भी ख़बरदार किया गया है कि क़ियामत

www.dawateislami.net

का दिन 50 हज़ार साल के बराबर होगा, सूरज एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, ह़िसाब किताब का सिल्सिला होगा, **आह !** वोह कैसा होलनाक मन्ज़र होगा जब हर त़रफ़ नफ़्सा नफ़्सी का आ़लम होगा। उस वक़्त नेकों के लिये जन्नत की राह़तें होंगी और मुजरिमों को घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा। हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام बा वुजूद येह कि उन का हर हर लम्ह़ा यादे इलाही में गुज़रता था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से हर दम लरज़ा बर अन्दाम रहते और उन पर गिर्या व ज़ारी की कैफ़िय्यत त़ारी रहती, चुनान्चे

﴾2﴿...... ख़ौफ़ो ख़शिय्यत का ग़-लबा :

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **"फ़तावा र-ज़विय्या"** जिल्द **30**, सफ़ह़ा **283** पर मह़बूबए मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बारे में नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर एक बार ख़ौफ़ो ख़शिय्यत का ग़-लबा था, गिर्या व ज़ारी फ़रमा रही थीं, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ की : **या उम्मल मुअमिनीन** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! क्या आप येह गुमान रखती हैं कि **रब्बुल इ़ज़्ज़त** جَلَّ وَعَلَا ने जहन्नम की एक चिंगारी को मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जोड़ा बनाया, उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ने फ़रमाया : **"فَرَّجْتَ عَنِّیْ فَرَّجَ اللّٰہُ عَنْکَ"** (या'नी) तुम ने मेरा ग़म दूर किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा ग़म दूर करे।"

(كتاب الآثار لابی يوسف، باب الغزو والجيش، ص ٢١٠، الحديث:٩٣٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿...... जहन्नम के ख़याल पर रोना :

नीज़ एक दफ़्आ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दोज़ख़ याद आ गई तो रोने लगीं। नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : कौन सी चीज़ तुम्हें रुलाती है ? अ़र्ज़ की : मुझे आग याद आ गई तो मैं रो पड़ी। (ऐ लोगो !) क्या तुम क़ियामत में अपने घर वालों को याद करोगे तो उम्मत के ग़म ख़्वार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन मौक़ओं में कोई किसी को याद न करेगा : (1).... मीज़ान के पास ह़त्ता कि जान ले कि इस का वज़्न हलका है या भारी। (2).... नामए आ'माल मिलने के वक़्त जब कहा जाए : **आओ !** नामए आ'माल पढ़ो ह़त्ता कि जान ले कि इस का नामए आ'माल कहां पड़ता है इस के दाहने हाथ में या बाएं में या पीठ के पीछे और (3).... पुल सिरात़ के नज़्दीक जब कि वोह दोज़ख़

www.dawateislami.net

के कनारों के दरमियान रखा जाएगा। (سنن ابی داؤد، کتاب السنة، باب فی ذکر المیزان، ص٧٤٨، الحدیث:٤٧٥٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस हदीस शरीफ़ की शर्ह में फ़रमाते हैं : "येह हैबत कमाले ईमान की दलील है वरना आप के जन्नती होने पर आयाते कुरआनिया (और) अहादीसे न-बविय्या दाल्ल (दलील) हैं, आप यक़ीनन जन्नती हैं मगर ख़ौफ़े ख़ुदा रुला रहा है।"

मज़ीद फ़रमाते हैं : इस में ख़िताब आम ख़ावन्दों से है या'नी **ऐ ख़ावन्दो !** तुम लोग क़ियामत में अपने बाल बच्चों को बख़्शवाओगे या नहीं इस ख़िताब से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़ला-हदा हैं हुज़ूर की शफ़ाअ़त तो हर मुसल्मान को पहुंचेगी चे जा-ए कि ख़ास अपने घर वाले लिहाज़ा मत़लब वाज़ेह है। (और हुज़ूर عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم के फ़रमान **"तीन मौक़ओं में कोई किसी को याद न करेगा"** की वज़ाहत करते हुए मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं :) या'नी कोई ख़ावन्द उस वक़्त तक अपने बीवी बच्चों को याद न करेगा, जब तक उसे अपने मु-तअ़ल्लिक़ इन तीन बातों का इत्मीनान न हो जाए : (1).... वज़्न के वक़्त नेकियों का पल्ला भारी हो जाए। (2).... नामए आ'माल दाहने हाथ में मिल जाए, (3).... पुल सिरात़ से ब ख़ैरियत पार लग जाए।

इन तीन मन्ज़िलों से गुज़र कर मुत़्मइन हो कर अपने बाल बच्चों को याद करेगा। जवाब शरीफ़ से मा'लूम हो रहा है कि येह उन ख़ावन्दों के मु-तअ़ल्लिक़ है जिन को येह तीन उल्झनें हों उन्हें अपनी फ़िक्रें हों हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उस दिन गुनहगारों की फ़िक्र होगी अपनी फ़िक्र न होगी। हज़रते सय्यिदुना अनस (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से सुवाल किया था कि **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क़ियामत में आप के मिलने के मक़ामात कौन कौन से हैं वहां आप को कहां ढूंडूं तो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने अपने मिलने के येह ही मक़ामात बयान फ़रमाए : मीज़ान, हौज़े कौसर, पुल सिरात़ ग़रज़ कि येह सुवाल जवाब अ़वाम के मु-तअ़ल्लिक़ है न कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मु-तअ़ल्लिक़। ख़याल रहे कि क़ियामत में पुल सिरात़ दोज़ख़ पर रखी जाएगी, जिस पर गुज़रना हर एक के लिये ज़रूरी है कुफ़्फ़ार वहां ही गिर जाएंगे मोमिन ब ख़ैरियत गुज़र जाएंगे वहां से गुज़रना ज़रूरी है कि जन्नत के रास्ते में येह पुल है :

وَ اِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا (پ١٦، مریم:٧١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो।

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال القیامۃ وبدء الخلق، باب الحساب والقصاص والمیزان، ٧/٣٩٧)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا का ख़ौफ़े ख़ुदा मुला-हज़ा फ़रमाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا के बे शुमार फ़ज़ाइल व ख़साइस हैं, आप की बराअत की शहादत में **अल्लाह तबा-र-क व तआला** ने कुरआने पाक की **18** आयात नाज़िल फ़रमाईं, आप के बिस्तर में रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह्य नाज़िल होती थी, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रौज़ए मुबा-रका आप के हुज्रए मुबा-रका में बना नीज़ आप महबूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महबूब तरीन ज़ौजा हैं और अज़्वाजे मुतहहरात के बारे में रसूले अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : **''बेशक अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने मेरे लिये न माना कि मैं निकाह में लाने या निकाह में देने का मुआ-मला करूं मगर अहले जन्नत से ।''**

(تاریخ مدینة دمشق، اسماء النساء علی حرف الراء، رملة بنت ابی سفیان...الخ،٦٩/١٤٩، الحدیث: ١٣٧٣٢)

और एक रिवायत में हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअज़्ज़म है : ''मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से सुवाल किया कि मैं अपने जिस उम्मती के साथ भी निकाह में देने या निकाह में लाने का मुआ-मला करूं वोह जन्नत में मेरे साथ हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे येह अता फ़रमा दिया ।''

(تاریخ مدینة دمشق، حرف العین، ابو العاص بن الربیع...الخ، ٦٧/٢١، الحدیث: ١٣٤٧٩)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा मुहम्मद अब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : इस हदीस से ज़ाहिर है कि इस बिशारत में वोह सब दाख़िल हैं जिन से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद निकाह फ़रमाएं या जिन के निकाह में अपनी औलाद को दें तो जिन मर्द व औरत से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रिश्तए मुसा-हरत इख़्तियार फ़रमाया उन के लिये अज़ीम ख़ुश ख़बरी है। **(فیض القدیر شرح جامع الصغیر، حرف السین، ٤/١٠٢، تحت الحدیث:٤٦٠٤)**

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मज़्कूरा बाला रिवायात से महबूबए महबूबे रब्बुल आ-लमीन, उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا की अज़ीम फ़ज़ीलत ज़ाहिर होती है इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا का ख़ौफ़े ख़ुदा, سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ !

ऐ काश ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا के ख़ौफ़े ख़ुदा का एक ज़र्रा हमें भी नसीब हो जाए और गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का हमारा ज़ेह्न बन जाए।

ऐ काश ! हम दुन्या से ईमान सलामत ले जाने में काम्याब हो जाएं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम नहीं जानते कि हमारे बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर क्या है।

www.dawateislami.net

तश्वीश...... तश्वीश...... इन्तिहाई तश्वीश की बात है...... ख़ौफ़...... ख़ौफ़...... वल्लाहिल अ़ज़ीम, सख़्त ख़ौफ़ का मक़ाम है कि हमें येह भी नहीं मा'लूम कि हमारा ख़ातिमा ईमान पर होगा या नहीं।

आह ! हम ग़फ़्लत की चादर ओढ़े बे ख़बर सो रहे हैं। **ऐ काश !** हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाता। **आइये !** तरग़ीब व तह़रीस के लिये सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के ख़ौफ़े ख़ुदा में डूबे हुए फ़रामीन पढ़िये और अपनी ह़ालत पर ग़ौर कीजिये, चुनान्चे

ग़-ल-बए ख़ौफ़ पर मुश्तमिल 6 फ़रामीने आइशा

﴾1﴿.... ग़-ल-बए ख़ौफ़े ख़ुदा के वक़्त फ़रमाया **: काश !** मैं (बजाए इन्सान के) पथ्थर होती।

﴾2﴿.... कभी फ़रमाया **: ऐ काश !** मैं दरख़्त होती।

﴾3﴿.... कभी फ़रमाया **: ऐ काश !** मैं मिट्टी का एक ढेला होती।

﴾4﴿.... (किसी मौक़अ़ पर एक दरख़्त की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया :) **ऐ काश !** मैं इस दरख़्त का पत्ता होती।

﴾5﴿.... कभी फ़रमाया **: ऐ काश !** मैं ज़मीन के पौदों में से एक पौदा होती और कोई क़ाबिले ज़िक्र शै न होती।

﴾6﴿.... कभी फ़रमाया **:** मैं ख़्वाहिश करती हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे कोई भी चीज़ न बनाता।

(الطبقات الكبرى لابن سعد، ذكر ازواج رسول الله، ۱۰/۷۳-۷۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का इन्सान के बजाए जमादात होने की ख़्वाहिश करना ग़-ल-बए ख़ौफ़ के वक़्त कमाले तवाज़ोअ़ व इन्किसारी फ़रमाना है, **अल्लाह** वालों की शान ही अलग होती है येह ह़ज़रात शबो रोज़ इबादते इलाही में बसर करते हैं फिर भी बत़ौरे तवाज़ोअ़ उन्हें कोताह समझते और उन में इख़्लास की कमी तसव्वुर करते हुए बारगाहे इलाही में द-र-जए क़बूलिय्यत पर फ़ाइज़ न होने के ख़ौफ़ से गिर्या व ज़ारी फ़रमाते रहते हैं, सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का भी एक ऐसा ही वाक़िआ़ पेश किया जाता है, चुनान्चे

www.dawateislami.net

﴾4﴿.... क़सम याद कर के रोना :

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को ख़बर पहुंचाई गई कि (आप के भान्जे) **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) ने आप की बैअ़ (या'नी आप के फ़रोख़्त कर्दा घर) या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के अ़तिय्या के बारे में येह कहा है कि **अल्लाह** की क़सम ! ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا (घर फ़रोख़्त करने से) रुक जाएं या मैं ज़रूर इस (बैअ़) को रोक दूंगा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने पूछा : क्या उस ने ऐसे कहा है ? लोगों ने कहा : जी हां ! आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** की मुझ पर नज़्र है कि मैं इब्ने ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) से कभी कलाम नहीं करूंगी । जब तर्के तअ़ल्लुक़ त़वील हो गया तो उन्हों ने आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) के हां सिफ़ारिश करवाई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : **अल्लाह** की क़सम मैं सिफ़ारिश क़बूल नहीं करूंगी और न अपनी क़सम तोड़ूंगी । जब इब्ने ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) पर मुफ़ा-रक़त की येह मुद्दत लम्बी हो गई तो उन्हों ने मिस्वर बिन मख़्रमा और अ़ब्दुर्रह़मान बिन अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) से बात की और कहा कि मैं तुम दोनों को **अल्लाह** की क़सम देता हूं कि तुम मुझे सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) के पास ले जाओ क्यूं कि उन के लिये जाइज़ नहीं कि वोह क़त्ए रेह़मी की मन्नत मानें । तो मिस्वर और अ़ब्दुर्रह़मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) दोनों चादरें ओढ़े हुए इब्ने ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) को साथ ले कर आए और सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) से अन्दर आने की इजाज़त मांगी और सलाम के बा'द अ़र्ज़ किया : क्या हम अन्दर आ जाएं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : आ जाओ । उन्हों ने कहा : हम सब आ जाएं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : हां ! तुम सब आ जाओ । सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को इ़ल्म न था कि इन दोनों के साथ इब्ने ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) भी हैं, जब वोह सब अन्दर दाखि़ल हुए तो इब्ने ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) पर्दे में चले गए और उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से लिपट गए और रोते हुए बात करने का मुत़ा-लबा करने लगे, वोह दोनों ह़ज़रात भी मुत़ा-लबा करते रहे कि इन से कलाम करें और इन का उ़ज़्र क़बूल फ़रमाएं और कहते कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इस बात को जानती हैं कि नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तर्के तअ़ल्लुक़ से मन्अ़ किया है कि मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि वोह अपने मुसल्मान भाई से तीन रातों से ज़ियादा तर्के तअ़ल्लुक़ करे जब उन्हों ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पर ब कसरत ज़िक्र किया और इसरार किया तो सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا उन दोनों को अपनी

www.dawateislami.net

क़सम याद दिला कर रोते हुए फ़रमाने लगीं कि मैं ने नज़्र मानी है और नज़्र सख़्त है और वोह दोनों कोशिश करते रहे यहां तक ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इब्ने ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से बातचीत शुरूअ़ कर दी और अपनी नज़्र में **40** ग़ुलाम आज़ाद किये और इस के बा'द जब वोह अपनी क़सम को याद करतीं तो इतना रोतीं कि उन का दुपट्टा आंसूओं से तर हो जाता।

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الھجرة، ص ١٥١١، الحدیث: ٦٠٧٣، ٦٠٧٤، ٦٠٧٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! किसी मुसल्मान रिश्तेदार से क़त़्ए़ रेह़्मी ह़राम है, फिर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने भान्जे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से क्यूं क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ी फ़रमाई ?

इस की वज़ाह़त करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू मुह़म्मद बदरुद्दीन मह़मूद बिन अह़मद ऐनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इर्शाद फ़रमाते हैं : जो क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ी मज़्मूम है वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इस क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ी पर सादिक़ नहीं आती क्यूं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उम्मुल मुअमिनीन हैं बिल ख़ुसूस ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की निस्बत कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन की ख़ाला हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बारे में जो कहा था कि "ह़ज़रते आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) रुक जाएं या मैं इस (बैअ़) को रोकूंगा" गोया कि येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ना फ़रमानी थी, चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बत़ौरे तादीब उन से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ फ़रमाया।

(عمدة القاری، کتاب الادب، باب الھجرة، ٢٢/١٤٢، ملتقطًا)

इसी त़रह़ ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان इस मस्अले की वज़ाह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : (दो मुसल्मान भाइयों के आपस में बायकाट करने की ह़दीसे पाक में जो वई़द मज़्कूर है कि उन की नमाज़ उन के सरों से बालिश्त भर ऊंची नहीं उठती, इस से मुराद वोह हैं जो) दुन्यावी वज्ह से एक दूसरे से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ कर चुके हों। ख़याल रहे कि दीनी वज्ह से बायकाट ऐ़न इबादत है, ऐसे ही किसी की इस्लाह़ के लिये उस का बायकाट करना जाइज़, नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कुछ सिखाने के लिये **चालीस दिन** बायकाट किया।

(مراۃ المناجیح، کتاب الصلاۃ، باب الامامۃ، ٢/٢٠٣، ملتقطًا)

याद रखिये ! सिलए रेह़्मी वाजिब और क़त़्ए़ रेह़्मी ह़राम और **जहन्नम में ले जाने वाला काम** है, सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली

www.dawateislami.net

आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى **"सिलए रेहूमी"** का मा'ना बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "सिलए रेहूमी के मा'ना रिश्ते को जोड़ना है या'नी रिश्ते वालों के साथ नेकी और सुलूक करना।" और फ़रमाते हैं : "सिलए रेहूमी इस का नाम नहीं कि वोह सुलूक करे तो तुम भी करो, येह चीज़ तो ह़क़ीक़त में मुकाफ़ात या'नी अदला बदला करना है कि उस ने तुम्हारे पास चीज़ भेज दी तुम ने उस के पास भेज दी, वोह तुम्हारे यहां आया तुम उस के पास चले गए, ह़क़ीक़तन सिलए रेहूम येह है कि वोह काटे और तुम जोड़ो, वोह तुम से जुदा होना चाहता है, बे ए'तिनाई करता है और तुम उस के साथ रिश्ते के हुक़ूक़ की मुराआ़त करो।" (बहारे शरीअ़त, सुलूक करने का बयान, हि़स्सा : 16, जि. 3, स. 558, 559)

आइये ! अब क़त्ए़ रेहूमी की वई़द में चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

क़त्ए़ रेहूमी की वई़द में 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.... रिश्ता काटने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب صلة الرحم وتحریم قطیعتها، ص۹۹۳، الحدیث:۲۵۵۶)

﴾2﴿.... जिस क़ौम में क़ाते़ए़ रेहूम होता है, उस पर रह़मते इलाही नहीं उतरती।

(شعب الایمان، باب فی صلة الارحام، ۶/ ۲۲۳، الحدیث:۷۹۶۲)

﴾3﴿.... बग़ावत और क़त्ए़ रेहूमी से ज़ियादा कोई गुनाह इस लाइक़ नहीं जिस के मुर-तकिब को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आख़िरत में तय्यार कर्दा सज़ा के साथ साथ दुन्या में भी जल्द सज़ा दे दे।

(سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة، باب۱۲۲، ص۵۹۳، الحدیث:۲۵۱۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿...... ज़ौक़े इ़बादत :

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ की पासदारी का इस क़दर ख़याल था कि अगर किसी ऐसे सबब से भी फ़राइज़ की अदाएगी से पीछे रह जातीं जो त़ाक़ते ब-शरिय्या से बाहर और मह़ज़ **मिन जानिबिल्लाह** होता, तो भी अपने पीछे रह जाने के ख़याल से आंसू बहातीं, चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ही फ़रमान है : हम सिर्फ़ ह़ज के इरादे से (नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ)

www.dawateislami.net

गए जब हम मक़ामे सरफ़ में थे तो मुझे हैज़ आ गया, महबूबे खुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए और मैं रो रही थी, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम्हें क्या हुवा, हैज़ आ गया है ? मैं ने अ़र्ज़ किया : जी हां ! फ़रमाया : येह वोह चीज़ है जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बनाते आदम (या'नी हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की बेटियों) पर लिख दिया है पस तुम वोह सब करो जो हज करने वाले करते हैं मगर **बैतुल्लाह** शरीफ़ का तवाफ़ न करना । फ़रमाती हैं : फिर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात की तरफ़ से गाय की कुरबानी दी । (صحیح البخاری، کتاب الحیض، باب الامر بالنساء اذا نفسن، ص١٤٥، الحدیث:٢٩٤)

हज़रते अ़ल्लामा महमूद बिन अहमद ऐनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस हदीस शरीफ़ के तहत फ़रमाते हैं : इस हदीस शरीफ़ से इबादत की राह में कोई रुकावट पेश आने के बाइस रन्जो मलाल करने और रोने का जवाज़ मा'लूम होता है । (नीज़) येह भी मा'लूम हुवा कि मर्द अपनी औरत की तरफ़ से उस की इजाज़त के साथ कुरबानी कर सकता है ।

(عمدة القاری، کتاب الحیض، باب الامر بالنساء اذا نفسن، ٣/٢٠٧، ملتقطًا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने **उम्मुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का ज़ौक़े इबादत मुला-हज़ा फ़रमाया कि इबादत की राह में रुकावट हाइल होने के बाइस हालां कि इस का इज़ाला इन्सान की कुदरत से बाहर है, फिर भी शौक़े इबादत में रन्जो मलाल और आहो बुका फ़रमाती हैं, इस से हमारी उन इस्लामी बहनों को तरग़ीब लेनी चाहिये जो कोई मानेअ़ व रुकावट न होने के बा वुजूद इस अ़ज़ीम फ़रीज़े की अदाएगी से महरूम रहती हैं । ख़याल रहे कि हज फ़र्ज़ होने की सूरत में बिला उ़ज़्रे शर-ई हज अदा न करना या अदाएगी में ताख़ीर करना हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : जब हज के लिये जाने पर क़ादिर हो हज फ़ौरन फ़र्ज़ हो गया या'नी उसी साल में और अब ताख़ीर गुनाह है और चन्द साल तक न किया तो फ़ासिक़ है और उस की गवाही मरदूद मगर जब करेगा अदा ही है क़ज़ा नहीं । (बहारे शरीअ़त, हज का बयान, हिस्सा : 6, जि. 1, स. 1036)

लिहाज़ा तमाम साहिबे इस्तिताअ़त इस्लामी बहनों को चाहिये कि फ़ौरन से पहले अपने माल सोने चांदी पैसों का हिसाब लगाइये और हज के सफ़री अख़राजात होने की सूरत में महरम के साथ फ़ौरन हज्जे फ़र्ज़ अदा कीजिये और शैतान के हीलों बहानों से बचिये कि बच्चियों की शादी के बा'द हज कर लूंगी वग़ैरा वग़ैरा ।

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! अब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों के इरतिकाब से बचने की फ़ज़ीलत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **300** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"आंसूओं का दरिया"** सफ़ह़ा **235** पर है : **"अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! मैं ने तीन क़िस्म की आंखों को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा दिया है, एक वोह आंख जो मेरी राह में पहरा देती है, दूसरी वोह आंख जो मेरी ह़राम कर्दा चीज़ों से रुक जाती है और तीसरी वोह आंख जो मेरे ख़ौफ़ से रोती है। और आंसू के इलावा हर शै की एक जज़ा है और आंसू की जज़ा रह़मत, मग़्फ़िरत और जन्नत में दाख़िले के इलावा कुछ नहीं।" **(بحر الدموع، الفصل السابع والعشرون: موبقات الزنى وعواقبه، ص۱۷۲)**

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता
मुझे रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

(वसाइले बख़्शिश, स. 238)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपने अन्दर ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े मुस्त़फ़ा पैदा करने, गुनाहों पर नदामत का एह़सास, नेकियों की रग़्बत और **नेकी की दा'वत** देते हुए दूसरों को नेक बनाने की अहम्मिय्यत बेदार करने के लिये **दा'वते इस्लामी** के महके महके सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इस म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से लाखों इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया है, इस सिल्सिले में एक म-दनी बहार पेश की जाती है मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

घर में म-दनी माह़ोल बन गया

इस्लामआबाद (पंजाब, पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन का बयान है कि मेरी छोटी हमशीरा की शादी **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से मुन्सलिक इस्लामी भाई से हुई। हम ने जब अपने घर उन की दा'वत की तो उन्हों ने अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तालीफ़ **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** हमें तोह़्फ़तन देते हुए इस का मुत़ा-लआ़ करने का भरपूर ज़ेह्न दिया। चुनान्चे मैं ने मुत़ा-लआ़ शुरूअ़ कर दिया। फ़ैज़ाने सुन्नत के मुत़ा-लए़ से मुझे सुन्नतों से मह़ब्बत होने लगी और मैं ने घर में दर्स शुरूअ़ कर दिया। मेरे बच्चों के अब्बू ने **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत** की ब-र-कत से दाढ़ी शरीफ़

www.dawateislami.net

सजा ली और देखते ही देखते पूरा घराना म-दनी रंग में रंग गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ता दमे तह़रीर मुझे **इस्लामआबाद डिवीज़न** की ज़िम्मादार और मेरे बच्चों के अब्बू को डिवीज़न मुशा-वरत के निगरान की हैसिय्यत से म-दनी कामों की धूमें मचाने की सआदत ह़ासिल है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** को मज़ीद तरक़्क़ियां और हमें म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم (मैं ह़यादार कैसे बनी.....?, स. 26)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"आबे कौसर" के छ⁶ ह़ुरूफ़ की निस्बत से जोड़ों के दर्द के 6 इलाज

《1》 **یا غَنِیُّ** रीढ़ की हड्डी, घुटनों, जोड़ों वग़ैरा जिस्म में कहीं भी दर्द हो, चलते फिरते उठते बैठते पढ़ते रहिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **दर्द** जाता रहेगा 《2》 रोज़ाना दो भुने हुए **आलू** (छिलके समेत) और थोड़ी सी **अदरक** मिला कर खा लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **जोड़ों के दर्द** में फ़ाएदा होगा 《3》 **मौसम्बी** के आधे गिलास ख़ालिस रस में एक चम्मच **मछली का तेल** (मेडीकल स्टोर से मिल सकता है) मिला कर पहली बार मुसल्सल चार दिन तक रोज़ाना दिन के ग्यारह बजे पियें। इस के बा'द चार माह तक हर **15** दिन के बा'द मुसल्सल दो दिन उसी वक़्त में पियें। येह इलाज सर्दियों में ज़ियादा मुनासिब है। इस इलाज के दौरान ठन्डी तासीर वाले फल म-सलन मीठे, मौसम्बी, अनन्नास और अनार वग़ैरा ज़ियादा इस्ति'माल कीजिये 《4》 सुब्ह़ नहार मुंह **घी कवार का ह़ल्वा** खाइये। (येह बाज़ार में मिल सकता है) 《5》 पियाज़ का रस और राई का तेल मिला कर जोड़ों पर मालिश करें। इस से सुस्त जोड़ खुल जाएंगे और بِفَضلِہٖ تعالٰی आप राह़त मह़सूस फ़रमाएंगे। 《6》 अगर डॉक्टर इजाज़त दे तो रोज़ाना एक गोली न्यूरोमेट (NEUROMET) खाने के बा'द पानी से इस्ति'माल कीजिये जोड़ों के दर्द के लिये मुजर्रब है। डॉक्टर के मश्वरे से रोज़ाना एक से ज़ियादा भी ले सकते हैं और अगर दर्द की शिद्दत कम हो तो नाग़े से भी ली जा सकती है। इस त़रह़ की दवाएं बिला नाग़ा मुसल्सल न खाई जाएं बीच में कुछ दिन वक़्फ़ा कर लेना चाहिये म-सलन अगर मुसल्सल **12** दिन इस्ति'माल कर ली तो **7** या **12** दिन तक वक़्फ़ा कर लिया फिर ज़रूरत मह़सूस हुई तो शुरूअ़ कर दे। (घरेलू इ़लाज, स. 82)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बयान ﴾23﴿..... सय्यि-दतुना आ़इशा की तवाज़ोअ़ व इन्किसारी

दुरूद शरीफ़ लिखने की फ़ज़ीलत

महबूबे रब्बे अक्बर, शफ़ीए़ रोज़े महशर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने मुझ से (ह़ासिल कर के) कोई इ़ल्म की बात लिखी और उस के साथ मुझ पर दुरूदे पाक भी लिखा तो जब तक वोह किताब में पढ़ा जाता रहेगा उसे सवाब मिलता रहेगा।''

(الصلات والبشر فی الصلاۃ علی خیر البشر، ص۷۸)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दुरूदे पाक लिखने की फ़ज़ीलत के क्या कहने, जब किसी किताब में दुरूदे पाक लिख दिया जाए तो जब तक किताब में उसे पढ़ा जाता रहता है पढ़ने वाले को तो अज्र मिलता ही है साथ ही उस लिखने वाले के लिये भी सवाब का ज़ख़ीरा होता चला जाता है। **याद रखिये !** जब भी आक़ाए नामदार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे नामी तह़रीर किया जाए तो साथ मुकम्मल दुरूद शरीफ़ ज़रूर लिखा जाए कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामे मुबारक के साथ दुरूदे पाक लिखना बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक वाजिब है जैसा कि सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ''**बहारे शरीअ़त**'' में तह़रीर फ़रमाते हैं : ''नामे अक़्दस लिखे तो दुरूद ज़रूर लिखे कि बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक उस वक़्त दुरूद शरीफ़ लिखना वाजिब है। (नीज़) अक्सर लोग आज कल दुरूद शरीफ़ के बदले صلعم, عم, ص, عـہ लिखते हैं, **येह ना जाइज़ व सख़्त ह़राम है।**''

(बहारे शरीअ़त, दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल व मसाइल, हिस्सा : 3, जि. 1, स. 534)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! महबूबाने ख़ुदा के औसाफ़े ह-सना में से एक वस्फ़ तवाज़ोअ़ व इन्किसारी है, येह ह़ज़रात आ़ली मर्तबा होने के बा वुजूद बहुत ज़ियादा तवाज़ोअ़ व इन्किसारी फ़रमाते ह़त्ता कि आक़ाए दो जहां, शहन्शाहे कौनो मकां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन्तिहाई बुलन्द मर्तबे पर फ़ाइज़ होने के बा वुजूद निहायत **मु-तवाज़ेअ़ व मुन्कसिरुल मिज़ाज** थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुन्फ़रिद मक़ाम पर तशरीफ़ फ़रमा होने की बजाए कमाले तवाज़ोअ़ व इन्किसारी फ़रमाते हुए अपने अस्ह़ाबे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के दरमियान मिलजुल कर तशरीफ़ फ़रमा होते ह़त्ता कि अगर कोई अज्नबी शख़्स ह़ाज़िर होता तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहचान न पाता यहां तक कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने बारगाहे मुस्त़फ़ा में दर-ख़्वास्त की : "आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसी जगह तशरीफ़ रखा करें कि ना वाक़िफ़ पहचान लिया करे।" चुनान्चे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये मिट्टी का एक चबूतरा बना दिया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस पर तशरीफ़ फ़रमा हुवा करते।

(احیاء علوم الدین، کتاب آداب المعیشة واخلاق النبوة، بیان تواضعه، ۲/۴۷۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम मख़्लूक़ात से अफ़्ज़ल होने के बा वुजूद किस क़दर तवाज़ोअ़ फ़रमाते, उम्मत की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारहा तवाज़ोअ़ व इन्किसारी के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए, चुनान्चे

तवाज़ोअ़ के फ़ज़ाइल पर मब्नी 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.... जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक द-रजा तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे एक द-रजा बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है यहां तक कि उसे **आ'ला इल्लिय्यीन** में पहुंचा देता है।

(الاحسان فی تقریب صحیح ابن حبان، کتاب الحظر والاباحة، باب التواضع وکبر والعجب، ذکر الاخبار عن وضع اللّٰه......الخ، ص۱۵۱۷، الحدیث: ۵۶۷۸)

﴾2﴿.... जब बन्दा तवाज़ोअ़ करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को सातवें आस्मान तक बुलन्द फ़रमा देता है।

(مکارم الاخلاق للخرائطی، جماع ابواب الرفق بالمملوکین، باب مایستحب من التواضع فی المجلس وغیرها، ۲/۱۷۱۷، الحدیث:۲۹۷)

﴾3﴿.... तवाज़ोअ़ को लाज़िम पकड़ लो क्यूं कि तवाज़ोअ़ दिल में है और कोई मुसल्मान किसी मुसल्मान को ईज़ा न दे क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात बोसीदा कपड़ों में कमज़ोर नज़र आने वाले (ऐसे लोग भी हैं कि)

www.dawateislami.net

अगर (किसी बात पर) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा लें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस (क़सम) को ज़रूर पूरा फ़रमाता है।

(المعجم الكبير، من اسمه الصعب، عروة بن رويم اللخمى عن القاسم بن عبد الرحمٰن عن ابى امامة صدى بن عجلان، ٤/٣٠٥، الحديث: ٧٦٧٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुअ़ल्लिमे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'लीमात पर अ़मल पैरा होने वाला सब से पहला गुरौह सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का है, इन ह़ज़रात ने अपने शबो रोज़ मह़बूबे रब्बे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में बिताते हुए ज़ानूए तलम्मुज़ तै किया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़-सना के फ़ैज़ से मुत्तसिफ़ हो कर आ़लम में जल्वा आरा हुए, इन्हीं बुलन्द पाया हस्तियों में एक नुमायां हस्ती उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की है, सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीगर औसाफ़ से मुत्तसिफ़ होने के साथ साथ तवाज़ोअ़ की सिफ़त से भी ब द-र-जए अतम मुत्तसिफ़ थीं, न सिर्फ़ ख़ुद बल्कि दूसरों को भी इस वस्फ़े आ़ली से मुत्तसिफ़ होने की तरग़ीब दिलातीं, चुनान्चे

फ़ज़ाइले तवाज़ोअ़ ब ज़बाने आइशा

﴾1﴿.... तुम पर तवाज़ोअ़ करना लाज़िम है क्यूं कि तवाज़ोअ़ अफ़्ज़ल इबादत है।

(الزهد للمعافى بن عمران، باب فى فضل التواضع والتشديد، ص٢٤٩، الرقم:١١٣)

﴾2﴿.... اِنَّكُمْ لَتَدَعُوْنَ اَفْضَلَ الْعِبَادَةِ التَّوَاضُعَ या'नी बेशक तुम ज़रूर अफ़्ज़ल इबादत या'नी तवाज़ोअ़ को तर्क करते हो।

(مصنف ابن ابى شيبة، كتاب الزهد، كلام عائشة، ٨/١٩٢، الحديث: ٥)

﴾3﴿.... يَغْفُلُوْنَ عَنْ اَفْضَلِ الْعِبَادَةِ التَّوَاضُعَ लोग अफ़्ज़ल इबादत या'नी **तवाज़ोअ़ से ग़ाफ़िल हैं।**

(شُعَبُ الايمان، باب فى حسن الخلق، فصل فى التواضع......الخ، ٦/٢٧٨، الحديث: ٨١٤٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तवाज़ोअ़ की ता'रीफ़

"**अपने आप को ह़क़ीर और कमतर समझने** (और दूसरों को अपने से अफ़्ज़ल जानने) **को तवाज़ोअ़ कहते हैं।**"

(مِنْهَاجُ الْعَابِدِيْن، ص ٨١)

www.dawateislami.net

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के इन इर्शादात से बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि आ़जिज़ी व इन्किसारी की कितनी अहम्मिय्यत है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के फ़रामीन में कहीं तो तवाज़ोअ़ को इख़्तियार करना लाज़िम कहा गया कहीं इसे अफ़्ज़ल इबादत क़रार दिया गया और साथ ही साथ इन फ़रामीन में हमारी सुस्ती व काहिली को बयान किया गया कि हम इस अ़ज़ीम इबादत से कितने ग़ाफ़िल और इसे तर्क किये हुए हैं, येह हमारे लिये लम्ह़ए फ़िक्रिया है लिहाज़ा हमें इस पर ग़ौरो फ़िक्र कर के अपनी इस्लाह़ की कोशिश करनी चाहिये।

पैवन्द दार लिबास की तरग़ीब

पैवन्द दार लिबास पहनना हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक सुन्नत और कस्रे नफ़्स का बेहतरीन ज़रीआ़ है इस लिये सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तुम मुझ से मिलना चाहती हो तो तुम्हें दुन्या से उतना ही काफ़ी है जितना कि सुवार का ज़ादे राह, अग़्निया की सोह़बत से बचो और किसी कपड़े को पुराना न समझो ह़त्ता कि तुम उसे पैवन्द लगा लो।''

(سنن الترمذی، کتاب اللباس، باب ما جاء فی ترقیع الثوب، ص٤٤٤، الحدیث:١٧٨٠)

अल्लाहु अक्बर ! सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी मह़बूब ज़ौजा सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को किस क़दर अह़सन अन्दाज़ में तवाज़ोअ़ की तरग़ीब दी, आ़शिक़ाने रसूल के दिलों में तवाज़ोअ़ की अहम्मिय्यत को बेदार करने के लिये रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मज़्कूरा फ़रमान बहुत काफ़ी है, **ऐ काश !** आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन की रोशनी में हम भी आ़जिज़ी व इन्किसारी के ख़ूगर बन जाएं, बहर ह़ाल इस सिल्सिले में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का अ़मल मुबारक भी ख़ूब था। चुनान्चे,

सय्यि-दतुना आ़इशा का लिबास

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : ''उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا **70** हज़ार (दिरहम) तक़्सीम फ़रमा दिया करती थीं ह़ालां कि अपनी क़मीस मुबारक को पैवन्द लगाती थीं।''

(مُصَنَّف ابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام عائشة رضی الله عنها، ٨/١٩٢، الحدیث:٦)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह है इताअ़ते मुस्तफ़ा और سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! क्या ही खूब अन्दाज़े सख़ावत व आ़जिज़ी है कि सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا एक त़रफ़ **70** हज़ार दराहिम को अपने हाथों से तक़्सीम फ़रमा रही हैं और दूसरी त़रफ़ ह़ाल येह है कि पैवन्द दार लिबास ज़ैबे तन फ़रमाया हुवा है और आज हमारी ह़ालत इतनी ना गुफ़्ता बेह है कि नए लिबास को चन्द एक बार पहन कर पुराना समझ कर मज़ीद पहनना गवारा नहीं होता, ख़याल रहे पैवन्द दार लिबास पहनना नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان बिल ख़ुसूस ख़ु-लफ़ाए राशिदीन व अहले बैते त़ाहिरीन की सुन्नते मुबा-रका भी है, चुनान्चे

पैवन्द दार लिबास की फ़ज़ीलत

एक दफ़्आ़ ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमते बा ब-र-कत में अ़र्ज़ की गई : ऐ अमीरुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी क़मीस मुबारक में पैवन्द क्यूं लगाते हैं ? इर्शाद फ़रमाया : “इस से दिल नर्म रहता है और मोमिन इस की पैरवी करता है (या’नी मोमिन का दिल नर्म ही होना चाहिये) ।”

(حلیة الاولیاء، ذکر الصحابة من المهاجرین، علی بن ابی طالب، ۱۲٤/۱، الرقم:۲۵٤)

बत़ौरे तवाज़ोअ़ अपना निक़ाब सीना

त़बक़ाते इब्ने सा’द में है कि एक आने वाला उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपना निक़ाब सी रही हैं । उस ने कहा : उम्मुल मुअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! येह क्या ! क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भलाई (या’नी मालो दौलत) की फ़िरावानी नहीं फ़रमा दी ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : तुम हमें छोड़ो ! वोह नए कपड़े का ह़क़दार नहीं जो पुराने कपड़े इस्ति’माल न करे । (الطبقات الکبرٰی لابن سعد، ذکر ازواج رسول اللّٰه، باب عائشة، ۷۲/۱۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बेश क़ीमत लिबास पर क़ुदरत होने के बा वुजूद मह़्ज़ रिज़ाए इलाही के लिये तवाज़ोअ़ करते हुए उसे तर्क कर देना रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी का मूजिब है, चुनान्चे मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : “जो बा वुजूदे क़ुदरत अच्छे कपड़े पहनना तवाज़ोअ़ के त़ौर पर छोड़ दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को करामत का हुल्ला पहनाएगा ।”

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب من کظم غیظًا، ص۷۵۳، الحدیث:٤۷۷۸)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! झूम जाइये ! पास दौलत है, उ़म्दा लिबास पहनने की त़ाक़त है फिर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर आ़जिज़ी इख़्तियार करते हुए सादा लिबास पहनना बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत का बाइ़स है कि रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ उसे हुल्लए करामत अ़त़ा फ़रमाएगा। और इस के बर अ़क्स लोगों पर रो'ब डालने, अमीराना ठाठ पालने और मह़ज़ अपने नफ़्स के लिये लोगों को मु-तअस्सिर करने की ख़ात़िर नुमायां, फ़ेन्सी और भड़कीले लिबास पहनने वाले मुला-ह़ज़ा करें कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या में जिस ने शोहरत का लिबास पहना, क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ज़िल्लत का लिबास पहनाएगा।" **(سنن ابن ماجه، كتاب اللباس، باب من لبس شهرة من الثياب، ص٥٨٢، الحديث: ٣٦٠٦)**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰه اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

लिबासे शोहरत किसे कहते हैं ?

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी जो ऐसा लिबास पहने जिस से लोग उसे अमीर जानें या ऐसा लिबास पहने जिस से उसे लोग बड़ा तारिकुद्दुन्या फ़क़ीर सूफ़ी वली समझें येह दोनों क़िस्म के लिबास, शोहरत के लिबास हैं। ग़-रज़े कि जिस लिबास में येह निय्यत हो कि उस की त़रफ़ लोगों की उंग्लियां उठें, लोग उस की इ़ज़्ज़त करें ख़्वाह अमीर समझ कर ख़्वाह वली समझ कर वोह उस की शोहरत है इ़ज़्ज़त **अल्लाह** रसूल की है जिसे चाहें दें। साह़िबे मिरक़ात رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया कि मस्ख़रा पन का लिबास पहनना जिस से लोग हंसें येह भी लिबासे शोहरत है।

(مرآۃ المناجیح، کتاب اللباس، ٦/١٠٩ملتقطاً)

वाक़ेई सख़्त इम्तिह़ान है, लिबास पहनने में बहुत ग़ौर करने और दिखावे से बचने की सख़्त ज़रूरत है **अलबत्ता !** शोहर के लिये ज़ीनत इख़्तियार करते हुए अच्छा लिबास पहनना न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि अच्छी निय्यत के साथ सवाब का मूजिब भी है।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इन्किसारी

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِیْنَ اصْطَفَیْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَ مِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَ مِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَیْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِیْرُ ﴿۳۲﴾

(پ۲۲، فاطر:۳۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर हम ने किताब का वारिस किया अपने चुने हुए बन्दों को तो उन में कोई अपनी जान पर ज़ुल्म करता है और उन में कोई मियाना चाल पर है और उन में कोई वोह है जो **अल्लाह** के हुक्म से भलाइयों में सब्क़त ले गया येही बड़ा फ़ज़्ल है।

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया : (इस आयत में) سَابِقٌ (से मुराद) अ़हदे रिसालत के वोह मुख़्लिसीन हैं जिन के लिये रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नत की बिशारत दी और مُّقْتَصِدٌ (से मुराद) वोह अस्ह़ाब हैं जो आप के त़रीक़े पर आ़मिल रहे और ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ (से मुराद) हम तुम जैसे लोग हैं। येह कमाले इन्किसार था ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का कि अपने आप को इस तीसरे त़बक़े में शुमार फ़रमाया बा वुजूद इस जलालते मन्ज़िलत व रिफ़्अ़त द-रजात के जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को अ़त़ा फ़रमाई थी। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 22, सूरए फ़ात़िर, तह़्तल आयह : 32, स. 810)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इस क़दर अ़ज़ीमुश्शान मर्तबा रखने के बा वुजूद अपने आप को "**ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ**" से ता'बीर करना इन्तिहाई तवाज़ोअ़ व इन्किसारी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरत के इन सुनहरी ख़ुत़ूत़ में हमारे लिये बेहतरीन सबक़ है। **याद रखिये !** तवाज़ोअ़ मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने की ख़ात़िर होनी चाहिये इसी सूरत में येह अ़ज़ीम अज्रो सवाब कमाने और बुलन्द द-रजात पाने का बाइ़स बन सकता है वरना दुन्यादार ग़नी के लिये उस के माल के सबब तवाज़ोअ़ करना दीन की बरबादी और जहन्नम में दाख़िले का सबब हो सकता है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा **497** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इर्शाद फ़रमाते हैं : अरबाबे इक़्तिदार और सरमाया दार लोगों से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है, इन की दा'वतें खाने और इन के तह़ाइफ़ क़बूल करने में आख़िरत के लिये शदीद ख़त़रात हैं कि इन की

www.dawateislami.net

दा'वतें खाने और तोहफ़े क़बूल करने वाले का इन की ख़ुशामद करने और ख़्वाह म ख़्वाह हां में हां मिलाने से बचना बहुत ही मुश्किल होता है। ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा : जो किसी ग़नी (या'नी मालदार) की उस के ग़ना (या'नी मालदारी) के सबब तवाज़ोअ़ करे उस का दो तिहाई दीन जाता रहा। (كشف الخفاء، حرف الميم، ٢/٢١٥، الحديث:٢٤٤٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू मुलैका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दरबान ह़ज़रते सय्यिदुना ज़क्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बयान फ़रमाया : "जब उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا काशानए अक़्दस पर आए और अन्दर आने की इजाज़त त़लब की।" मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भतीजे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सिरहाने (खड़े) थे। मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आप के पास आने की इजाज़त त़लब कर रहे हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आप के पास आना चाहते हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "**अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को न आने दो।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ की : "ऐ फूफीजान ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आप के नेक बेटों में से हैं, वोह आप को सलाम कहने और अल वदाअ़ कहने आए हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "अच्छा अगर तुम्हारी येही मरज़ी है तो इजाज़त दे दो।" मैं ने उन्हें अन्दर बुला लिया।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए तो सलाम किया और बैठ गए और अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ख़ुश ख़बरी हो।" उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "किस बात पर ख़ुश ख़बरी ?" अ़र्ज़ की : "जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इस दुन्या से रुख़्सत होंगी तो फ़ौरन

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا की मुलाक़ात आक़ाए दो जहां, मालिके कौनो मकां, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से होगी (जो दुन्या से ज़ाहिरी तौ़र पर रुख़्सत हो चुके हैं) और आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا तो ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُنَّ में सब से ज़ियादा मह़बूब थीं। (आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا तो त़य्यिबा व त़ाहिरा हैं) और ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पाकीज़ा चीज़ ही से मह़ब्बत करते थे। और अब्वा की रात आप का हार गुम हो गया था तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे ढूंडने के लिये उसी मक़ाम में सुब्ह़ तक ठहरे रहे सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी (आप صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ) ठहरे रहे उन के पास पानी नहीं था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आयते तयम्मुम नाज़िल फ़रमाई :

فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا (پ٥، النساء:٤٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो।

(आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا तो बड़ी शान की मालिक हैं) आप के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस उम्मत के लिये तयम्मुम की रुख़्सत का ए'लान फ़रमाया है (जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا पर तोहमत लगाई गई तो) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप की बराअत (पाकीज़गी और त़हारत के मु-तअ़ल्लिक़ आयाते क़ुरआनी) नाज़िल फ़रमाई जिन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ले कर आए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मसाजिद में से कोई मस्जिद ऐसी नहीं जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया जाता हो मगर दिन और रात के अवक़ात में इन (या'नी आप की त़हारत और पाकीज़गी पर मुश्तमिल) आयात की तिलावत की जाती है।" **येह सुन** कर उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "ऐ इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُمَا ! मेरी ता'रीफ़ न करो, क़सम है मुझे मेरे उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मैं तो पसन्द करती हूं कि मैं भूली बिसरी हो जाती।" **(الطبقات الکبرٰی لابن سعد، ذکر ازواج رسولِ اللّٰہ، باب عائشۃ، ١٠/٧٤)**

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम
या'नी है सूरए नूर जिन की गवाह उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 311)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि मुअमिनीन की मां सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا की तवाज़ोअ़ किस क़दर अ़ज़ीम थी कि विसाल का वक़्त क़रीब है फिर भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا तवाज़ोअ़ का दामन थामे हुए हैं येही होती है मह़बूबाने ख़ुदा की शान कि इन की पूरी ज़िन्दगी सुन्नते न-बवी पर अ़मल करते गुज़रती है।

www.dawateislami.net

ज़मीन जैसी तवाज़ोअ़

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुल हक़्क़े वद्दीन चिश्ती अजमेरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی अपने पीरो मुर्शिद हज़रते ख़्वाजा उस्मान हारूनी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی का इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हैं : ख़ुदा का दोस्त वोह है जिस में तीन ख़ूबियां हों : एक सख़ावत दरिया जैसी, दूसरे शफ़्क़त आफ़्ताब की त़रह़, तीसरे तवाज़ोअ़ ज़मीन की मानिन्द । (اخبار الاخیار، طبقہ اوّل در ذکر خواجہ بزرگ معین الحق والملۃ۔۔۔الخ، ص۲۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदह आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ग़-ल-बए ख़ौफ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आह ! काश ! हम दुन्या से ईमान सलामत ले जाने में काम्याब हो जाएं । **ख़ुदा की क़सम !** हम नहीं जानतीं कि हमारे बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर क्या है ।

तश्वीश...... तश्वीश...... इन्तिहाई तश्वीश की बात है...... ख़ौफ़...... ख़ौफ़...... वल्लाहिल अ़ज़ीम, सख़्त ख़ौफ़ का मक़ाम है कि हम को येह नहीं मा'लूम कि हमारा ख़ातिमा ईमान पर होगा या नहीं ।

आह ! हम ग़फ़्लत की चादर ओढ़े बे ख़बर सो रही हैं ।

ऐ काश ! हम तवाज़ोअ़ को इख़्तियार करने वालियां बन जाएं ।

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का ख़ौफ़े ख़ुदा व आ़जिज़ी इन्किसारी मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

﴾1﴿.... **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ग़-ल-बए ख़ौफ़े ख़ुदा के वक़्त फ़रमाया : **काश !** मैं (बजाए इन्सान के) पथ्थर होती ।

﴾2﴿.... कभी फ़रमाया : **ऐ काश !** मैं दरख़्त होती ।

﴾3﴿.... कभी फ़रमाया : **ऐ काश !** मैं मिट्टी का एक ढेला होती ।

﴾4﴿.... (किसी मौक़अ़ पर एक दरख़्त की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया :) **ऐ काश !** मैं इस दरख़्त का पत्ता होती ।

﴾5﴿.... कभी फ़रमाया : **ऐ काश !** मैं ज़मीन के पौदों में से एक पौदा होती और कोई क़ाबिले ज़िक्र शै न होती ।

﴾6﴿.... कभी फ़रमाया : मैं ख़्वाहिश करती हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे कोई भी चीज़ न बनाता ।

(الطبقات الکبرٰی لابن سعد، ذکر ازواج رسول اللہ، ذکر عائشۃ، ۱۰/۷۳۔۷۵)

www.dawateislami.net

मजीद फ़रमाती हैं : **काश !** मैं पैदा न होती । **काश ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे पैदा न फ़रमाता । **काश !** मैं दरख़्त होती कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पाकी में **रत़्बुल्लिसान** रहती और पूरी त़रह़ से (अपनी ज़िन्दगी से) सुबुक दोश हो जाती । (हाए !) मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द नई नई बातें इख़्तियार कर ली हैं (येह कस्रे नफ़्सी के त़ौर पर फ़रमाया था) लिहाज़ा मुझे दीगर अज़्वाज के साथ दफ़्न करना । **काश !** मैं भूली बिसरी होती । (المرجع السابق، ۱۰/۷۳)

लम्ह़ए फ़िक्रिया !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا किस क़दर आ़जिज़ी व इन्किसारी फ़रमाया करती थीं कि ख़ुद को आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने पथ्थर तो कभी दरख़्त, तो कभी दरख़्त का पत्ता, घास, मिट्टी का ढेला कह डाला और आज हमारी ह़ालत येह है कि हर जगह अपनी ता'रीफ़ों के पुल बांधने की आ़दत है, आ़जिज़ी व इन्किसारी की त़रफ़ हमारी बिल्कुल तवज्जोह नहीं रही । हमारी तवज्जोह तो नित नए फ़ेशन की ख़ात़िर रोज़ नए नए लिबास पहनने और अज़ रूए शोहरत अपने आप को दूसरों से बेहतर बनाने पर लगी हुई है, ज़रा फ़ेशन तब्दील हुवा या हमारा लिबास थोड़ा पुराना ही हुवा तो उसे पहनने में शर्म मह़सूस करती हैं अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस......!!!

ऐ काश ! उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के फ़रामीन पर अ़मल करने की हमारी आ़दत बन जाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमूनए आ़जिज़ी व इन्किसारी उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की सीरत के मुत़ाबिक़ ख़ुद को ढालते हुए आप भी आ़जिज़ी व इन्किसारी का पैकर बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और नेकियों का ज़ेह्न पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इस म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से लाखों इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया है, चुनान्चे

म-दनी माह़ोल मुयस्सर आ गया

टन्डो जाम (सिन्ध) की एक इस्लामी बहन का बयान है कि मैं बहुत मॉडर्न थी । आवाज़ तो अच्छी थी ही मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस ने'मत का ग़लत़ इस्ति'माल करते हुए स्टेज

www.dawateislami.net

(Stage) पर गाना शुरूअ़ कर दिया। मुझे गाने में مَعَاذَاللّٰه इतनी महारत थी कि एक मुक़ाबले में ग़ज़ल गा कर पूरे सूबे में पहली पोज़ीशन (Position) भी ह़ासिल कर चुकी थी। अब तो टीवी और रेडियो पर गाने के लिये पेशकश होने लगी। अगर मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम न होता तो मैं इन्ही गुनाहों में मौत के घाट उतर जाती लेकिन ख़ुदा भला करे **दा'वते इस्लामी** का कि जिस की बदौलत मुझे सुन्नतों भरा माह़ोल मिल गया और मैं ने गुनाहों से तौबा कर ली। हुवा यूं कि 1999 सि.ई. में हमारी पड़ोसन जो कि टन्डो जाम से है़दरआबाद शिफ़्ट (Shift) हो चुकी थीं, उन के घर इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त की तरकीब थी उन्हों ने मुझे भी दा'वत दी। ख़ुश क़िस्मती से मैं भी शरीक हो गई हमारी पड़ोसन ने ना'त शरीफ़ पढ़ने का कहा पहले तो मैं ने इन्कार किया मगर उन के इसरार पर ना'त शरीफ़ पढ़ ही दी। मुझे बड़ा सुकून मह़सूस हुवा। इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर मुबल्लिग़ा इस्लामी बहन ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे है़दरआबाद में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत दी। मैं ने हां कर दी और इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर हो गई। इज्तिमाअ़ में होने वाले बयान और ज़िक्रो दुआ़ ने मेरे दिल से गुनाहों की लज़्ज़त निकाल दी। दौराने दुआ़ इज्तिमाअ़ में शरीक इस्लामी बहनों पर नूर की बारिश होते देख कर मैं ने भी बारगाहे ख़ुदा वन्दी में अ़र्ज़ की : मौला ! मुझे भी इन जैसा बना दे। इज्तिमाअ़ के आख़िर में इस्लामी बहनों ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए आयिन्दा इज्तिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत पेश की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मैं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक होती रही। एक मर्तबा उसी इस्लामी बहन ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए कहा कि आप अपने शह्र में इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त की तरकीब बनाएं اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हम भी शिर्कत करेंगे। चुनान्चे हम ने अपने शह्र में इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त की तरकीब बनाई। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! हमारे शह्र में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की तरकीब बन गई। कुछ अ़र्से बा'द शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़ैज़ाने मदीना है़दरआबाद तशरीफ़ लाए। इस्लामी बहनों के लिये पर्दे में रह कर सुनने की तरकीब थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मुझे भी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिक़्क़त अंगेज़ बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल हुई। इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर मैं ने म-दनी बुरक़अ़ पहन लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! ता दमे तह़रीर म-दनी कामों की सआ़दत ह़ासिल कर रही हूं। (मैं ह़यादार कैसे बनी......?, स. 16)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

कलामे मन्ज़ूम दर शाने आ़इशा सिद्दीक़ा

उस मुबारक मां पे सदके़ क्यूं न हों सब अहले दीं
जो हो उम्मुल मुअमिनीं बिन्ते अमीरुल मुअमिनीं

जिन का पहलू हो नबी की आख़िरी आराम गाह
जिन के हुजरे में क़ियामत तक नबी हों जा गुज़ीं

आस्तां इन का फ़िरिश्तों की ज़ियारत गाह है
क्यूं कि इस में जल्वा फ़रमा हैं इमामुल मुर-सलीं

आप के दौलत कदे में दौलते दारैन है
इस ज़मीं पर फिर न क्यूं क़ुरबान हो अ़र्शे बरीं

क्या मुबारक नाम है और कैसा प्यारा है लक़ब
आ़इशा महबूबए महबूबे रब्बुल आ़लमीं

आप सिद्दीक़ा पिदर सिद्दीक़ और शोहर नबी
मयका व सुसराल आ'ला आप ख़ुद हैं बेहतरीं

क्यूं न हो रुत्बा तुम्हारा अहले ईमां में बड़ा
सब तो हैं मोमिन मगर हैं आप उम्मुल मुअमिनीं

दी गवाही आप की इफ़्फ़त की सूरए नूर ने
मद्ह़ करता है तेरी इ़स्मत की क़ुरआने मुबीं

इन के बिस्तर में वह़ी आए रसूलुल्लाह पर
और सलामे ख़ादिमाना भी करें रूहुल अमीं

आप का इ़ल्मो फ़िक़्ह तह़क़ीक़े क़ुरआनो ह़दीस
देख कर हैरान हैं सारे सह़ाबा ताबेई़

नाज़ बरदारी तुम्हारी क्यूं न फ़रमावे ख़ुदा
नाज़नीने ह़क़ नबी हैं तुम नबी की नाज़नीं

आयए तत़्हीर में है इन की पाकी का बयां
हैं येह बीबी त़ाहिरा शोहर इमामुत्त़ाहिरीं

सालिके ख़स्ता तुम्हारा गो है ना लाइक़ मगर !
मां बुरे बेटे को अपने से जुदा करती नहीं

(दीवाने सालिक, स. 31)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

"मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है" के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 म-दनी फूल

﴾1﴿.... **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।"

(حِلْيَةُ الْاَولِیاء، طبقات اهل المشرق، ابراهيم الهروى، ۱۰/۴۵، رقم: ۱۴۴۶۶)

﴾2﴿.... **सरकारे** मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को तरो ताज़ा रखे जिस ने हम से ह़दीस सुनी और उस को याद रखा यहां तक कि उसे दूसरों तक पहुंचाया।"

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، ابواب العلم، باب ما جاء فی الحث......الخ، ص۶۲۶، الحديث:۲۶۵۶)

﴾3﴿.... **ह़ज़रते** सय्यिदुना इदरीस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नामे मुबारक की एक ह़िक्मत येह भी है कि कुतुबे इलाहिय्यह की कस्रते दर्सो तदरीस के बाइ़स आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम **इदरीस** हुवा। (تفسیر کبیر ج ۷ ص ۵۵۰، تفسیر الحسنات ج۴ ص۴۸)

﴾4﴿.... **हुज़ूरे** ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰی صِرْتُ قُطْبًا या'नी मैं ने इल्म का **दर्स** लिया यहां तक के मक़ामे क़ुत़्बिय्यत पर फ़ाइज़ हो गया। (क़सीदए ग़ौसिय्या)

﴾5﴿.... **फ़ैज़ाने सुन्नत** से **दर्स** देना भी दा'वते इस्लामी का एक म-दनी काम है। घर, मस्जिद, दुकान, स्कूल, कॉलेज, चौक वग़ैरा में वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना **दर्स** के ज़रीए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के **म-दनी फूल** लुटाइये और ढेरों सवाब कमाइये।

﴾6﴿.... **फ़ैज़ाने सुन्नत** से रोज़ाना कम अज़ कम **दो² दर्स** देने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। (इन दो में एक "घर दर्स" ज़रूर हो)

﴾7﴿.... पारह 28 **सू-रतुत्तह़रीम** की छटी आयत में इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

www.dawateislami.net

अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** का **दर्स** भी है। (दर्स के इ़लावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान या म-दनी मुज़ा-करे की एक केसिट या V.C.D भी घर वालों को सुनाइये)

﴾8﴿.... **ज़िम्मेदार** घड़ी का वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना **चौक दर्स** का एहतिमाम करें। म-सलन रात **9** बजे **मदीना चौक** (साढ़े नव बजे) **बग़दादी चौक** में वग़ैरा। छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर **चौक दर्स** का एहतिमाम कीजिये। (मगर हु़क़ूक़े आ़म्मा तलफ़ न हों म-सलन आप की वज्ह से मुसल्मानों का रास्ता न रुके वरना गुनहगार होंगे)

﴾9﴿.... **दर्स** के लिये वोह नमाज़ मुन्तख़ब कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें।

﴾10﴿.... **दर्स** वाली नमाज़ उसी मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ **बा जमाअ़त** अदा फ़रमाइये।

﴾11﴿.... **मेह़राब** से हट कर (सेह़्न वग़ैरा में) कोई ऐसी जगह दर्स के लिये मख़्सूस कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दुश्वारी न हो।

﴾12﴿.... **ज़ैली** मुशा-वरत के निगरान को चाहिये कि अपनी मस्जिद में **दो ख़ैर ख़्वाह** मुक़र्रर करे जो दर्स (बयान) के मौक़अ़ पर जाने वालों को नरमी से रोकें और सब को क़रीब क़रीब बिठाएं।

﴾13﴿.... **पर्दे में पर्दा** किये दो[2] ज़ानू बैठ कर **दर्स** दीजिये। अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो खड़े हो कर या माईक पर देने में भी ह़रज नहीं जब कि किसी एक भी नमाज़ी या तिलावत करने वाले वग़ैरा को तश्वीश न हो।

﴾14﴿.... **आवाज़** न तो ज़ियादा बुलन्द हो और न ही बिल्कुल आहिस्ता, ह़त्तल इम्कान इतनी आवाज़ से **दर्स** दीजिये कि सिर्फ़ ह़ाज़िरीन सुन सकें। इस बात की हमेशा एह़तियात़ फ़रमाइये कि दर्स व बयान की आवाज़ से किसी सोए हुए या किसी नमाज़ी या मश्ग़ूले तिलावत वग़ैरा को तक्लीफ़ न हो।

﴾15﴿.... **दर्स** हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये।

www.dawateislami.net

﴾16﴿.... **जो** कुछ **दर्स** देना है पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुत़ा-लआ़ कर लीजिये ताकि ग़-लतियां न हों।

﴾17﴿.... **फ़ैज़ाने सुन्नत** के मुअ़र्रब अल्फ़ाज़ ए'राब के मुताबिक़ ही अदा कीजिये इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **तलफ़्फ़ुज़** की दुरुस्त अदाएगी की आ़दत बनेगी।

﴾18﴿.... **ह़म्दो सलात**, दुरूदो सलाम के दोनों सीगे़, आयते दुरूद और इख़्तितामी आयात वग़ैरा किसी सुन्नी आ़लिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये। इसी त़रह़ अ़-रबी दुआ़एं वग़ैरा जब तक उ़-लमाए अहले सुन्नत को न सुना लें अकेले में भी न पढ़ा करें।

﴾19﴿.... **फ़ैज़ाने सुन्नत** के इ़लावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ होने वाले **म-दनी रसाइल** से भी **दर्स** दे सकते हैं।[1]

﴾20﴿.... **दर्स** मअ़ इख़्तितामी दुआ़ सात मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये।

﴾21﴿.... **हर** मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह **दर्स का त़रीक़ा**, बा'द की **तरग़ीब** और **इख़्तितामी दुआ़** ज़बानी याद कर ले।

﴾22﴿.... **दर्स** के त़रीक़े में इस्लामी बहनें ह़स्बे ज़रूरत तरमीम कर लें।

(1)... अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल के इ़लावा किसी और किताब से दर्स की इजाज़त नहीं

– मर्कज़ी मजलिसे शूरा

www.dawateislami.net

हिकायात की फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
सय्यि-दतुना आ़इशा की रहनुमाई से बारिश	19	दुश्वार गुज़ार घाटी	222
20 ग़मों की हिकायत	76	हर मुआ़-मले में नरमी पसन्दीदा है	237
इस्राईली इबादत गुज़ार और एक गुनहगार	99	पसीनए जबीन ने मुझे हैरान कर दिया	260
पूरी सल्तनत की क़ीमत एक गिलास पानी	109	इ़ल्म के क़द्रदानों का सिला	265
रोज़े की खुश्बू	118	बीबी आ़इशा के ईसाले सवाब की हिकायत	270
क़ियामत की सख़्त तरीन गरमी से बचने का नुस्ख़ा	119	आरामे जाने नबी	274
ख़राब मछली से क़ीमती मोती का ज़ुहूर	145	सय्यिदह आ़इशा की तदबीर से क़ह़त़ दूर हुवा	313
बद निय्यती का अ-सरे बद	146	क़ब्रिस्तान की ख़ौफ़नाक आवाज़	366
रोटी के बदले गोश्त	148	आस्मान को देख कर ग़ौरो फ़िक्र न करने वाला	
आटे के बदले पकी हुई रोटियां	150	मह़रूम	383
ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श की सख़ावत	154	हुज़ूर की ज़ोहर के बा'द वाली सुन्नतें क़ज़ा होने	
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन	156	का वाक़िआ़	396
ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहली की सख़ावत	160	पानी का ईसार	437
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई की सख़ावत	161	बकरी की सिरी का ईसार	437
ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म की सख़ावत	162	एक मां का ईसार	439
एक अ़-रबी ग़ुलाम की सख़ावत	162	जो खाना मिलता ईसार कर देतीं	439
पर्दे की एह़तियात़ ! سُبْحٰنَ الله !	176	ईसार जन्नत में दाख़िले का बाइस	440
नाबीना से भी पर्दा	183	निराली मेहमान नवाज़ी	442
सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा का कमाल		क़ब्रे अन्वर की जगह ईसार कर दी	443
द-रजे का ज़ोह्द	196	दुरूदे पाक की ब-र-कत से मग़्फ़िरत	461
भूका शेर	200	मु-तवक्किल ख़ातून	471
सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम को ग़ीबत सुनने		क़ौमे आ़द पर अ़ज़ाब आने का वाक़िआ़	488
का सदमा	205	जंगे उहुद से ज़ियादा सख़्त दिन	502
ईमान की ह़क़ीक़त	211	मह़बूबे बारी की गिर्या व ज़ारी	547
सुल्ताने विलायत का आ़लमे क़नाअ़त	217	क़सम याद कर के रोना	554

www.dawateislami.net

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
इज्माली फ़ेहरिस्त	5	सह़ाबा की मर्कज़ी दर्सगाह बारगाहे आ़इशा	27
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	6	बेहतरीन आ़लिमा ह़ज़रते आ़इशा	29
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़ (अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)	7	इस्लामी बहनों के लिये हुसूले इ़ल्मे दीन के मवाक़ेअ़	30
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8	**''आ़इशा'' के पांच हुरूफ़ की निस्बत से इ़ल्मे आ़इशा के मु-तअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने मुबा-रका**	32
बयान ﴿1﴾ सीरते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा	11	क़ाबिले फ़ख़्र उम्मे मोह़-त-रमा	32
ब-रकाते दुरूदो सलाम	11	नाविलें पढ़ना कैसा ?	33
ख़ुसूसी रफ़ाक़त व क़ुर्बते मुस्त़फ़ा	12	सय्यि-दतुना आ़इशा की शाने फ़क़ाहत व त़बाबत	35
''सराए सलामत'' के दस हुरूफ़ की निस्बत से 10 ख़साइसे आ़इशा ब ज़बाने आ़इशा	13	मैं पेन्ट शर्ट पहना करती थी	37
तआ़रुफ़े सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा	15	**बयान ﴿3﴾ सय्यि-दतुना आ़इशा और वाक़िअ़ए इफ़्क**	39
सय्यि-दतुना आ़इशा की शाने इ़बादत व सख़ावत	15	दुरूदे पाक ज़रीअ़ए दीदार व पहचान व शफ़ाअ़त	39
''बिन्ते सिद्दीक़'' के सात हुरूफ़ की निस्बत से फ़ज़ाइले आ़इशा पर मुश्तमिल 7 रिवायात	16	वाक़िअ़ए इफ़्क क्या है ?	40
करामाते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा	19	रईसुल मुनाफ़िक़ीन की नापाक साज़िश	44
सय्यि-दतुना आ़इशा की रहनुमाई से बारिश	19	बद मज़्हबों के जहन्नमी करतूत	45
गुमनामी की ख़्वाहिश	20	वाक़िअ़ए इफ़्क के तनाज़ुर में शाने आ़इशा ब ज़बाने सह़ाबा	45
नेकियों पर त़-लबे शोहरत क़ाबिले मज़म्मत है	21	(1) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़	45
सय्यि-दतुना आ़इशा का मुख़ालिफ़ और सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर	22	(2) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी	45
सय्यि-दतुना आ़इशा का नेकी की दा'वत का जज़्बा	23	(3) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली	46
चल मदीना की सआ़दत मिल गई	25	(4) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी	46
बयान ﴿2﴾ सय्यि-दतुना आ़इशा की इ़ल्मी शानो शौकत	27	(5) ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद	46
नेकियां बढ़ाने और गुनाह मिटाने का नुस्ख़ा	27	(6) उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब	47

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
(7) ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरीरा	47	**"मुह़म्मद" के चार हु़रूफ़ की निस्बत से हु़स्ने**	
(8) रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का अपना मौक़िफ़	47	**अख़्लाक़ की फ़ज़ीलत में 4 रिवायात**	66
रसूले रह़मत की शानो अ़-ज़मत	48	हु़स्ने अख़्लाक़ की **10** बातें	67
नुज़ूले आयात के बा'द सय्यि-दतुना आ़इशा		"ह़या" रूह़ की पाक दामनी का नाम है	68
का त़र्ज़े अ़मल	51	**《2》 हु़स्ने अख़्लाक़ की अस्ल**	68
अब जो सय्यिदह पर तोहमत लगाए वोह काफ़िर है	52	"ह़या" की ता'रीफ़	68
इ़फ़्फ़ते आ़इशा पर एक और दलील	53	मौजूदा दौर की ह़ालते ज़ार	69
ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन मुअ़त्त़ल	54	**《3,4》 तवाज़ोअ़ अफ़्ज़ल इ़बादत**	70
ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान का मुख़्तसर तआ़रुफ़	54	तवाज़ोअ़ की ता'रीफ़	71
हर नबी की बीवी पाक दामन	55	तवाज़ोअ़ का इन्आ़म	71
एक शुबे का इज़ाला	55	तवाज़ोअ़ व इन्किसारी के फ़ज़ाइल पर	
इ़ल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा का सुबूत क़ुरआन से	56	मब्नी **4** फ़रामीने मुस्त़फ़ा	71
नबी के इ़ल्मे ग़ैब का मुन्किर मुसल्मान है या काफ़िर ?	56	तवाज़ोअ़ मह़ज़ लि वज्हिल्लाह हो	72
क़ज़्फ़ की ता'रीफ़, हु़क्म और क़ाज़िफ़ पर ह़द्दे शर-ई़	59	ख़ुशामद की मज़म्मत	73
क़ज़्फ़ की वई़दों पर मुश्तमिल आयात व अह़ादीस	59	**《5,6》 "वरअ़" अफ़्ज़ल इ़बादत**	74
गुनाह के इल्ज़ाम का अ़ज़ाब	60	वरअ़ के **4** द-रजात	74
शक्की मिज़ाजों को तम्बीह	60	(1) अ़वाम का वरअ़	74
औ़रत पर तोहमत लगाने के सबब हलाकत	61	(2) सालिह़ीन का वरअ़	74
ए'तिकाफ़ का फ़ैज़ इंग्लेंड पहुंचा	62	(3) मुत्तक़ीन का वरअ़	74
बयान 《4》 सय्यि-दतुना आ़इशा के फ़रामीन	63	(4) सिद्दीक़ीन का वरअ़	75
मजालिस की ज़ीनत	63	मु-तवर्रिई़न (परहेज़ गारों) की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत	75
"हु़रूफ़े तहज्जी" के उन्तीस हु़रूफ़ की निस्बत से		मुसीबत पर सब्र कीजिये	76
29 फ़रामीने आ़इशा	63	**20** ग़मों की ह़िकायत	76
《1》 हु़ज़ूर का ख़ुल्क़ क़ुरआन है	65	《7》 मुसीबत ज़दा की ख़त़ाएं मुआ़फ़	77
मकारिमे अख़्लाक़	66	《8》 आग से रुकावट	77

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
इन्तिक़ाले औलाद पर फ़ज़ीलते सब्र पर मुश्तमिल		**﴾17﴿ शोहर के चेहरे का गुबार रुख़्सार से साफ़**	92
4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	78	औरत के ज़िम्मे शोहर के हुक़ूक़	93
﴾9﴿ मुर्दों को भलाई से याद करो	79	**﴾18﴿ बात़िन की इस्लाह़**	94
﴾10﴿ जन्नत सख़ियों का घर है	81	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता	94
सख़ावत जन्नत में एक दरख़्त है	81	ज़ाहिरो बात़िन एक	95
लोगों में सब से बड़ा सख़ी	81	**﴾19﴿ नजात की राह**	96
स-दक़े के 25 फ़वाइद	81	ख़ौफ़े ख़ुदा से आंसू बहाना	96
क्या अल्लाह को सख़ी कह सकते हैं ?	82	सोने और चांदी की जन्नतें	97
﴾11﴿ स-दक़े को ह़क़ीर न जानो	83	**﴾20﴿ आदमी गुनहगार कब होता है ?**	97
﴾12﴿ स-दक़ा इवज़ से बचा रहे	84	ख़ुद पसन्दी क्या है ?	98
स-दक़ा देने के आदाब	84	दो चीज़ों में हलाकत	98
﴾13﴿ सूरए वाक़िअ़ह पढ़ने की तरग़ीब	85	ख़ुद पसन्दी की आफ़ात	99
सू-रतुल वाक़िअ़ह ख़ुशह़ाली का बाइस	85	इस्राईली इबादत गुज़ार और एक गुनहगार	99
फ़क़्रो फ़ाक़ा से बचने का नुस्ख़ा	85	**﴾21, 22﴿ ग़-ल-बए ख़ौफ़े ख़ुदा से मा'मूर**	
कई कई रातें फ़ाक़ा	86	**5 फ़रामीने आ़इशा**	100
﴾14﴿ हुज़ूर के बा'द सब से पहली बिद्अ़त	86	**﴾23﴿ गुमनामी की ख़्वाहां**	101
जन्नत में आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस	87	शोहरत की ख़्वाहिश बुरी और अगर ख़ुद बख़ुद	
सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की भूक शरीफ़	88	मिल जाए तो फ़ज़्ले रब है	102
अहले बैते किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का खाना	88	गुमनामी के त़ालिब, मह़बूबाने ख़ुदा	102
﴾15﴿ मिस्वाक रब तआ़ला की रिज़ा का बाइस	89	क़सावते क़ल्बी के अस्बाब	103
"मिस्वाक" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से		**﴾24, 25﴿ लोगों की मज़म्मत की वज्ह**	105
मिस्वाक के मु-तअ़ल्लिक़ 5 अह़ादीसे मुबा-रका	89	**﴾26﴿ क़सावते क़ल्बी कैसे दूर हो ?**	106
मौत के सिवा हर बीमारी से शिफ़ा	90	क़सावते क़ल्बी दूर करने का एक और नुस्ख़ा	107
औ़रतों के लिये मिस्वाक का हुक्म	91	**﴾27﴿ लै-लतुल क़द्र की दुआ़**	107
﴾16﴿ सुन्नते फ़ज्र की फ़ज़ीलत	91	"लै-लतुल क़द्र" कहने की वुजूहात	108

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
《28》 पानी की ने'मत पर शुक्र अदा करना	109	नेकियों से जलना शैत़ानी अ़मल है	123
पूरी सल्त़नत की क़ीमत एक गिलास पानी	109	नमाज़े तहज्जुद की पाबन्दी	123
पानी अ़ज़ीम ने'मत है	110	नमाज़े तहज्जुद अ़ज़ीम ने'मत है	126
《29》 ज़बान की आज़्माइश	111	सरकार पर नमाज़े तहज्जुद फ़र्ज़ थी	126
बहराम और परिन्दा	111	बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िला	127
ख़ामोशी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल		क़बूलिय्यत की घड़ी	127
4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	112	तहज्जुद या फ़ज्र के लिये जल्दी आंख खुलने का	
60 साल की इबादत से बेहतर की वज़ाह़त	112	म-दनी नुस्ख़ा	128
इस्लामी बहनों के म-दनी कामों की एक झलक	113	नमाज़े चाश्त और सय्यि-दतुना आ़इशा	129
क़ाबिले रश्क मौत	114	सारे दिन की ह़ाजतें सुब्ह़ की 4 रक्अ़त में	130
बयान 《5》 सय्यि-दतुना आ़इशा का ज़ौक़े इबादत	115	नमाज़े इश्राक़ की फ़ज़ीलत	130
निफ़ाक़ और जहन्नम से आज़ादी	115	नमाज़े इश्राक़ का वक़्त	131
गरमी की शिद्दत में रोज़ा	116	नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत	131
गर्मियों के रोज़े का लुत्फ़ो सुरूर	117	नमाज़े चाश्त का वक़्त	132
अ़मल जितना दुश्वार उतना ही ज़ियादा सवाब	117	पाबन्दे चाश्त तंगदस्ती से मह़फ़ूज़	132
रोज़े की ख़ुश्बू	118	अमीरे अहले सुन्नत का मा'मूल	132
तीन चीज़ों से मौला अ़ली का प्यार	118	सूरज गहन की नमाज़	133
क़ियामत की सख़्त तरीन गरमी से बचने का नुस्ख़ा	119	सूरज ग्रहन क़ियामत की याद दिलाने के लिये !	133
अ़-रफ़ा के बारे में कुछ अहम मा'लूमात	119	ग्रहन देखो तो ज़िक्रुल्लाह करो	134
अ़-रफ़ा के दिन जहन्नम से आज़ादी	120	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानी पर सज्दा करना	135
ह़ाजियों के लिये अ़-रफ़ा के रोज़े का हुक्म	121	नेक लोगों की वफ़ात से ब-र-कत रुख़्सत हो जाती है	135
"अ़-रफ़ा" के चार हुरूफ़ की निस्बत से		गहन की नमाज़	136
अ़-रफ़ा का रोज़ा रखने के 4 फ़ज़ाइल	121	ख़ावन्द की ना शुक्री का वबाल	136
अ़-रफ़ा दुआ़ओं की क़बूलिय्यत का दिन है	122	रिज़ाए इलाही के लिये बाहम मह़ब्बत करने के फ़ज़ाइल	139
शर्ह़े ह़दीस	122	मैं रोज़ाना तीन, चार फ़िल्में देख डालती !	140

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
बयान 《6》...... सय्यि-दतुना आ़इशा की सख़ावत	142	《3》 ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन की	
100 ह़ाजतों का पूरा होना	142	सख़ावत	156
जूदो सख़ा की इन्तिहा	142	पोशीदा अ़मल अफ़्ज़ल है	157
पैवन्द दार लिबास की फ़ज़ीलत	143	《4》 ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी का जज़्बए सख़ावत	158
ख़ुद भूके रह कर दूसरों के पेट पाले !	144	《5》 ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ की सख़ावत	158
ख़राब मछली से क़ीमती मोती का ज़ुहूर	145	《6》 ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान की सख़ावत	158
बद निय्यती का अ-सरे बद	146	《7》 ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहली की सख़ावत	160
सख़ावत ब नज़्रे शरीअ़त व त़रीक़त	148	《8》 ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया की सख़ावत	160
रोटी के बदले गोश्त	148	《9》 ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर की	
स-दक़े से माल में कमी नहीं आती	149	सख़ावत	161
आटे के बदले पकी हुई रोटियां	150	《10》 ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र की	
सख़ावत किसे कहते हैं ?	150	सख़ावत	161
बख़ील की ता'रीफ़	150	《11》 ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई की सख़ावत	161
शुजाअ़त अफ़्ज़ल या सख़ावत	151	《12》 ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म की सख़ावत	162
"सख़ावत" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से		《13》 एक अ़-रबी ग़ुलाम की सख़ावत	162
सख़ावत के मु-तअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	151	《14》 सरकारे आ़ली वक़ार की सख़ावत	163
अंगूर का दाना	152	सरकार ने किसी भी साइल को "لَا" न फ़रमाया	164
भूके को खाना खिलाने का सवाब	152	अ़त़ाए मुस्त़फ़ा पर फ़क़ीरी का ख़ौफ़ नहीं रहता	165
अपना मुह़ा-सबा कीजिये !	153	क़ियामत तक के लोग फ़ैज़याब	165
"सख़ावत में ब-र-कत है" के चौदह ह़ुरूफ़ की		सख़ावत सबबे दुख़ूले जन्नत	166
निस्बत से सख़ावते अस्लाफ़ के 14 वाक़िआत	154	ह़द द-रजा सख़ावत	166
《1》 ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब बिन्ते जह़श की		सख़ी क़ियामत के दिन क़ुर्बे इलाही में !	167
सख़ावत	154	बे पर्दगी से तौबा	168
《2》 ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा की		**बयान 《7》 सय्यि-दतुना आ़इशा की रौज़ए रसूल**	
सख़ावत	155	**पर ह़ाज़िरी**	170

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
जुमा'रात और शबे जुमुआ़ दुरूद पढ़ने की फ़ज़ीलत	170	फ़ित़री और शर-ई ह़या	185
रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िरी की कैफ़िय्यत	170	ह़या में तमाम इस्लामी अह़काम पोशीदा हैं	186
शर्हे़ ह़दीस	170	ह़या के अह़काम	186
ग़ैर मह़रम से पर्दा क्यूं ज़रूरी है ?	171	ह़या का माह़ोल से तअ़ल्लुक़	186
मुद्दते ज़मानए जाहिलिय्यत	172	खुल्क़े इस्लाम	186
बे पर्दगी का वबाल	173	ह़या ख़ैर ही ख़ैर है	187
झांझन से मुराद कौन सा ज़ेवर है ?	174	दूल्हा लड़कियों के झुरमट में	187
हर घुंगरू के साथ शैत़ान होता है	174	ग़ैरत रुख़्सत हो गई	188
झांज वाले घर में फ़िरिश्ते नहीं आते	174	नाज़ुक शीशियां	188
आप के बा पर्दा रहने के मज़ीद वाक़िआ़त	175	बेटी को पहले ही से संभालिये......	188
पर्दे की एह़तियात़ ! سُبْحٰنَ اللہ !	176	जन्नत से मह़रूम	189
क्या पर्दा तरक़्क़ी में रुकावट है ?	177	दय्यूस किसे कहते हैं ?	189
बच्चे का पहला मक्तब मां की गोद है	178	औ़रत की मज़ार पर ह़ाज़िरी	190
अहले ख़ाना को दोज़ख़ से कैसे बचाएं ?	179	औ़रत की रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िरी	191
आ'ज़ाए जिस्मानी	179	औ़रत पर अपने नफ़्स के आदाब	192
बरोज़े क़ियामत आ'ज़ा गवाही देंगे	180	15 दिन के बा'द जब क़ब्र खुली	193
"बा ह़या" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से सय्यि-दतुना आ़इशा की ह़या के मु-तअ़ल्लिक़ 5 अह़ादीसे मुबा-रका	181	**बयान ﴿8﴾ सय्यि-दतुना आ़इशा का ज़ोह्दो क़नाअ़त**	195
दौराने त़वाफ़ भी पर्दा फ़रमातीं	182	दुरूदे पाक बाइसे क़ुर्बे इलाही है	195
नाबीना से भी पर्दा	183	40 साल पहले जन्नत में दाख़िला	195
ह़-सनैने करीमैन से भी पर्दा	184	मसाकीन के साथ मह़ब्बत करने की तरग़ीब	196
ह़या ईमान से है	184	ज़ोह्द की ता'रीफ़	196
ह़या की अक़्साम	185	सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा का कमाल द-रजे का ज़ोह्द	196

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुन्या फ़ानी है	197	ज़ोह्द की फ़ज़ीलत पर आयात व अह़ादीस	210
दुन्या की मज़म्मत पर चन्द आयाते मुबा-रका	198	दुन्या तो इसी क़दर आएगी	210
दुन्या की मज़म्मत पर चन्द अह़ादीसे मुबा-रका	198	जिसे ज़ोह्द दिया गया उसे ह़िक्मत दी गई	210
मौत के लिये तय्यारी कर ले	198	ज़ोह्द की ब-र-कत	211
दुन्या की मज़म्मत पर इमाम शाफ़ेई के चन्द अश्आ़र	199	ईमान की ह़क़ीक़त	211
जन्नत में ह़ुज़ूर के साथ रहने की तमन्ना	200	ज़ोह्द के ज़रीए़ नजात पा गए	211
भूका शेर	200	मुक़र्रबीने बारगाहे इलाही	212
मुर्ग़ी का तवक्कुल	201	बकरी का तोह़फ़ा	212
खजूर और पानी पर गुज़ारा	202	क़नाअ़त की ता'रीफ़	212
अगर हम चाहते तो पेट भर कर खा लेते	203	ऐ आ़इशा ! अपने आप को आग से बचाओ !	212
कम खाने से इ़बादत में ज़ौक़	203	जहन्नम क्या है ?	213
चार बातों की नसीह़त	203	जहन्नम कहां है ?	213
ग़ीबत से सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम की नफ़रत	204	जहन्नम के त़बक़ात	213
ग़ीबत करने वालों को सय्यिदुना इब्राहीम बिन		जहन्नम की ख़ौफ़नाक शक्ल	214
अदहम की नसीह़त	204	जहन्नम का दारोग़ा	214
सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम को ग़ीबत		अ़ज़ाबे जहन्नम की चन्द सूरतें	214
सुनने का सदमा	205	आग का अ़ज़ाब	214
3 दिन तक भूक ही काफ़ूर	205	आग का पहाड़	215
ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग	206	क़नाअ़त की फ़ज़ीलत	215
खाने में ज़ियादती ज़ौक़े इ़बादत में कमी	206	तीन खजूरें	216
ह़ज़रते आ़इशा को ज़ोह्द का आ'ला द-रजा ह़ासिल था	207	मेरा रोने को जी चाहता है	216
ह़ज़रते आ़इशा का ज़ोह्दाना लिबास	208	ऐ आ़इशा ! आ़जिज़ी इख़्तियार करो	217
इस में से खाओ येह तुम्हारी रोटी से बेहतर है	208	सुल्ताने विलायत का आ़लमे क़नाअ़त	217
रोटी के बदले पकी हुई बकरी	209	औलियाए रह़मान मह़फ़ूज़ अज़ शैत़ान	218

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
थोड़े से जव	218	आ़जिज़ी ज़रीअ़ए फ़ज़ीलत	236
किसी का मोह़ताज न हो	219	नरमी इख़्तियार करने की नसीह़त	236
क़नाअ़त की ता'लीम	219	नरमी ज़ीनत देती है	237
हु़ब्बे मालो दौलत की मज़म्मत	219	हर मुआ़-मले में नरमी पसन्दीदा है	237
तीन दीनार बाक़ी हैं	220	कुफ़्फ़ार को सलाम करने का हु़क्म	238
दुन्या त़ालिबे दीन के पीछे भागती है	221	ग़ीबत की नुहूसत	240
दुश्वार गुज़ार घाटी	222	इशारे से भी ग़ीबत	240
शिक्वा नहीं करना चाहिये !	222	हमेशा जन्नत का दरवाज़ा खट-खटाती रहो	242
हु़सूले क़नाअ़त का त़रीक़ा	223	भूक के फ़वाइद	242
मैं दा'वते इस्लामी में कैसे आया ?	225	बुज़ुर्गों का सरमाया	243
अ़त़ाए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ोल	226	शैत़ान की गुज़र गाहों को तंग करो	243
बयान ﴾9﴿ सय्यि-दतुना आ़इशा को नसीह़तें	227	इसराफ़ से बचो !	244
एक लाख बन्दों की शफ़ाअ़त	227	हंडिया में कद्दू ज़ियादा डालने की नसीह़त	244
मसाकीन से मह़ब्बत का दर्स	227	सरकार का पसन्दीदा खाना	245
बिला इजाज़ते शर-ई मांगने के अ़ज़ाब पर मुश्तमिल 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	230	कद्दू शरीफ़ के चन्द त़िब्बी फ़वाइद	245
		क़ुरआने पाक में कद्दू शरीफ़ का ज़िक्र	246
पेशावर भिकारियों को देने का हु़क्म	230	अ़जीब मो'जिज़ा	246
गदा-गरी की मौजूदा सूरते ह़ाल	231	अच्छी चीज़ का एह़तिराम करो	247
हुज़ूर से मुलाक़ात	231	**"नबी" के तीन हु़रूफ़ की निस्बत से गिरे हुए दाने खा लेने के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 3 फ़रामीन**	247
सरकार की दुन्या से बे रग़्बती	234		
आ़जिज़ी इख़्तियार करने की नसीह़त	235	ज़कात अदा न करने का गुनाह	248
"आ़जिज़ी" के पांच हु़रूफ़ की निस्बत से आ़जिज़ी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	235	ज़ेवरात पर भी ज़कात है	248
		आग से बचो अगर्चे खजूर के बा'ज़ हि़स्से के ज़रीए हो !	249
		स-दक़ा बुरी मौत से बचाता है	249
सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा और तवाज़ोअ़	236	गिन गिन कर स-दक़ा करने की मुमा-न-अ़त	249

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
उम्मुल मुअमिनीन को दीनार स-दक़ा करने		**फ़ज़ीलते इल्म पर मुश्तमिल 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा**	264
का हुक्म दिया	250	इ़ल्म के क़द्रदानों का सिला	265
किन चीज़ों से मन्अ़ करना जाइज़ नहीं	251	मह़ब्बत भरा अन्दाज़	266
पड़ोसी के बच्चों का ख़याल	251	मुझे हुज़ूर के पास पहुंचाया गया	267
पड़ोसी के हुक़ूक़	251	सरकार का सय्यि-दतुना आ़इशा को मनाना	267
सफ़रे मदीना की सआ़दत मिल गई	252	मैं तुम्हारी रिज़ा मन्दी व नाराज़ी को जानता हूं	268
बयान ﴾10﴿ मह़बूबए मह़बूबे ख़ुदा	254	मख्खन मिली खजूर से भी ज़ियादा मह़बूब	269
रह़मतों की बरसात	254	दौड़ का मुक़ाबला	269
ह़बीबए ह़बीबे ख़ुदा	254	बीबी आ़इशा के ईसाले सवाब की ह़िकायत	270
ह़बीबए ह़बीबे ख़ुदा की फ़ज़ीलत	255	ईसाले सवाब का इन्तिज़ार !	271
सय्यि-दतुना आ़इशा को जिब्रीले अमीन का सलाम	256	दुआ़ए मग़्फ़िरत की फ़ज़ीलत	272
नूरानिय्यते मुस्त़फ़ा	257	अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्ख़ा	272
"قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ" की तफ़्सीर	258	उम्मे सा'द के लिये कुंवां	272
ह़िस्सी व मा'नवी नूरे न-बवी	258	मैं कल कहां रहूंगा ?	273
मख़्लूक़ में सब से पहले कौन पैदा हुवा	259	आरामे जाने नबी	274
पसीनए जबीन ने मुझे ह़ैरान कर दिया	260	विसाल के वक़्त लुआ़ब एक हो गया	276
जिस से मैं मह़ब्बत करता हूं तुम भी	261	मुझे जन्नत में आ़इशा दिखाई गई !	277
उस से मह़ब्बत करो		सक्राते मौत का बयान	277
सय्यि-दतुना आ़इशा का नाज़ो नियाज़	261	गोया मेरी रूह़ सूई के नाके से निकल रही है	279
दो बाज़ू वाला घोड़ा	261	मौत के फ़िरिश्ते की शक्ल देख कर	
अकाबिर सह़ाबए किराम मसाइल पूछते थे	262	दिल पर ख़ौफ़ त़ारी होना	280
"आ़लिम" के चार हुरूफ़ की निस्बत से फ़ज़ीलते		गुनाहगार का जहन्नम में अपना मक़ाम देखना	280
इल्म से मु-तअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने बारी तआ़ला	263	मुर्दा अपना ठिकाना देख लेता है	280
"आ़इशा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से		सरकारे मदीना का दीदार नसीब हो गया	281

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
बयान «11» सय्यि-दतुना आइशा की इन्फ़िरादिय्यत	283	**«16» जिब्रीले अमीन का सलाम कहना**	297
		«17» वालिद लोगों में सब से ज़ियादा महबूब	298
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	283	**«18» हुज़ूर की हयाते ज़ाहिरी के आख़िरी अय्याम में तीमार दारी**	298
सय्यि-दतुना आइशा के फ़ज़ाइलो मनाक़िब	283		
सय्यि-दतुना आइशा की 41 ख़ुसूसिय्यात	284	**«19» हुज्रए मुबा-रका फ़िरिश्तों के झुरमट में**	299
«1» सय्यि-दतुना आइशा के सिवा किसी कुंवारी औरत से निकाह नहीं फ़रमाया	284	**«20» ख़लीफ़ा और सिद्दीक़ की बेटी**	300
		«21» तय्यिब के पास तय्यिबा पैदा की गई	300
ब वक़्ते निकाह सय्यि-दतुना आइशा की उम्र	284	**«22» मग़्फ़िरत और रिज़्क़े करीम का वा'दा**	300
«2» मां बाप दोनों मुहाजिर	285	**मज़ीद ख़ुसूसिय्यात**	302
«3» आस्मान से पाक दामनी की गवाही	286	**«23» तहाइफ़ की कसरत**	302
«4» सय्यिदह आइशा को क़ब्ल अज़ निकाह तीन दफ़्आ ख़्वाब में देखा	287	**«24» दुन्या व आख़िरत में हुज़ूर की ज़ौजा**	302
		«25» तमाम औरतों पर बुज़ुर्गी	303
«5» एक ही बरतन के पानी से ग़ुस्ल	288	हज़रते आइशा को सरीद से मुशा-बहत देने की वज्ह	303
«6» नमाज़े मुस्तफ़ा और आरामे आइशा	288	**«26» सय्यि-दतुना आइशा और नुज़ूले आयते तयम्मुम**	304
«7» लिहाफ़े आइशा में नुज़ूले वह्य	289		
«8,9» हुज़ूर का विसाले ज़ाहिरी	289	**«27» सय्यिदह आइशा के हां दो रातें क़ियाम**	305
«10» हुज़ूर का रौज़ा हुज्रए आइशा में	290	**«28» सय्यिदह आइशा की फ़क़ीहाना शान**	305
आख़िरी आराम गाहे मुस्तफ़ा	291	**اَفْقَهُ نِسَاءِ الْاُمَّة**	305
«11,12» लुआबे आइशा लुआबे मुस्तफ़ा से मिला	291	मुश्किल कुशाई के लिये बारगाहे आइशा में हाज़िरी	305
हुज़ूरे पर आलमे नज़्अ की सख़्तियों की हिक्मत	293	एक दक़ीक़ मस्अले का हल	306
औरतों के लिये मिस्वाक का हुक्म	293	**«29» सय्यिदह आइशा की फ़सीहाना शान**	306
«13» हबीबए हबीबे ख़ुदा	295	**«30,31» इल्मे फ़राइज़ और इल्मे तिब की माहिर**	307
«14» हयाते ज़ाहिरी के आख़िरी लम्हात की क़ुर्बत	297	**«32» सहाबए किराम का रुजूअ**	307
«15» जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत	297	**«33» सब से ज़ियादा रिवायत करने वालीं**	308

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
﴾34﴿ **दो तिहाई दीन आ़इशा से ह़ासिल करो**	308	बेहतरीन उम्मत	323
﴾35﴿ **हुज्रए मुबा-रका में तीन चांद**	308	**"नेकी की दा'वत" के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल**	
हुज्रए आ़इशा और मद्फ़ने सिद्दीक़े अक्बर	309	**7 फ़रामीने मुस्त़फ़ा**	323
हुज्रए आ़इशा और मद्फ़ने फ़ारूक़े आ'ज़म	309	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी का मोह़ताज नहीं	327
﴾36﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का मदफ़न	310	बुराई से मन्अ़ करना ज़रूरी है	327
﴾37﴿ **हुज्रए सय्यि-दतुना आ़इशा की**		बुराई से रोकने के ज़रूरी होने की वज़ाह़त	
रिफ़्अ़त व बुलन्दी	310	ब ज़रीअ़ए मिसाल	328
﴾38﴿ **जन्नत की क्यारी**	310	अम्र बिल मा'रूफ़ कब वाजिब है ?	329
﴾39﴿ **बिला झिजक मा'रूज़ात पेश करना**	312	बुराई से रोकने पर क़ादिर होने के बा वुजूद न रोकना	329
﴾40﴿ सय्यिदह आ़इशा की तदबीर से क़ह़त़ दूर हुवा	313	नेक शख़्स भी अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार	330
क़ब्रे अन्वर को ज़ाहिर करने में ह़िक्मत	314	नेक लोगों की हलाकत का सबब	331
﴾41﴿ **सरे अन्वर में कंघी करतीं**	315	इस्लामी बहनों को ह़म्माम में जाने की मुमा-न-अ़त	331
बेटी की इस्लाह़ का राज़	315	सरकार का सय्यि-दतुना आ़इशा को नेकी	
बयान ﴾12﴿ सय्यि-दतुना आ़इशा की		की दा'वत फ़रमाना	332
नेकी की दा'वत	317	सय्यि-दतुना आ़इशा का फ़रमाने मुस्त़फ़ा पर अ़मल	332
अम्बिया के अज्साम को खाना ज़मीन पर ह़राम है	317	सय्यि-दतुना आ़इशा की नेकी की दा'वत	
बारीक दुपट्टा फाड़ दिया	318	के चन्द वाक़िआ़त	333
"सत्रे औ़रत" क्या है ?	318	﴾1﴿ रात की नमाज़ तर्क न करो	333
औ़रतों के लिये पर्दे के चन्द अह़काम	319	﴾2﴿ नफ़्ली रोज़े की तरग़ीब	333
बारीक दुपट्टे में नमाज़ का हुक्म	319	﴾3﴿ मुसल्मान को मुसीबत पहुंचने पर हंसने से	
बारीक कपड़ों से सरकार की ना गवारी	320	मन्अ़ करना	334
बारीक दुपट्टे से सरकार का मन्अ़ फ़रमाना	320	﴾4﴿ मय्यित को अज़िय्यत देने से मन्अ़ फ़रमाना	335
बारीक लिबास पहनने की वईद में 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	320	मय्यित को भी तक्लीफ़ होती है	335
ह़दीस शरीफ़ की वज़ाह़त	321	﴾5﴿ मौत को याद करने की तरग़ीब	336

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
﴾6﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी का वबाल	336	﴾1﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ना पसन्दीदा बन्दा	352
﴾7﴿ मोमिन, मोमिन का भाई है	336	﴾2﴿ म-दनी आक़ा का मु-तकब्बिरीन से इज़्हारे नफ़रत	352
सच्चा मुसल्मान	337	﴾3﴿ बद तरीन शख़्स	353
﴾8﴿ झांज वाले घर में फ़िरिश्ते नहीं आते	338	﴾4﴿ क़ियामत में रुस्वाई	353
बे पर्दगी से तौबा	339	﴾5﴿ दूरी में इज़ाफ़ा	353
बयान ﴾13﴿ सय्यि-दतुना आ़इशा की उमूरे		﴾6﴿ जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा	354
ख़ानादारी	340	मु-तकब्बिर जन्नत में नहीं जाएगा	354
दुरूदे पाक ज़रीअ़ए शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा	340	सय्यि-दतुना आ़इशा जंग के हथियार दुरुस्त करतीं	355
सय्यि-दतुना आ़इशा का मुख़्तसर तआ़रुफ़	341	सय्यि-दतुना आ़इशा क़ुरबानी के जानवर के हार बनातीं	355
अपना निक़ाब ख़ुद सी रही थीं	343	ह़दीसे पाक से अख़्ज़ होने वाले म-दनी फूल	356
सुन्नत की अहम्मिय्यत	344	सय्यि-दतुना आ़इशा का रोज़ा	357
100 शहीदों का सवाब	344	आ़शिक़ाने रसूल से मुलाक़ात की ब-रकात	358
शराबी की तौबा	344	सय्यि-दतुना आ़इशा जव शरीफ़ ख़ुद पीसतीं	359
सुन्नत की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में	346	हंडिया में कद्दू ज़ियादा डालो !	359
पुराना लिबास ईमान से है	347	गोश्त में कद्दू शरीफ़ डालें	360
उम्मते मुस्लिमा की तनज़्ज़ुली का एक सबब	348	क़ुरआने पाक में कद्दू शरीफ़ का ज़िक्र	360
बे पर्दगी की होलनाक सज़ा	348	अ़जीब मो'जिज़ा	360
मरने से पहले संभल जाना	348	इसे पथ्थर पर तेज़ कर लो	361
ना जाइज़ फ़ेशन करने वालियों के अ़ज़ाब का मुशा-हदा	349	**घर को ख़ुशियों का गहवारा बनाने और आख़िरत**	
औ़रतों के ना जाइज़ फ़ेशन	349	**संवारने के लिये "अ़त्तार" की त़रफ़ से "बिन्ते**	
तकब्बुर किसे कहते हैं ?	351	**अ़त्तार" के लिये 12 म-दनी फूल**	361
तकब्बुर से बचने की फ़ज़ीलत	351	मैं सरकार के बालों में मांग निकालती थी	363
कौन सा तकब्बुर कुफ़्र है ?	352	मांग निकालने का सुन्नत त़रीक़ा	364
"يَاقَهَّارُ" के छ⁶ हुरूफ़ की निस्बत से तकब्बुर		हुक़ूक़े ज़ौजैन	365
के 6 नुक़्सानात	352	जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो जा !	365

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
क़ब्रिस्तान की ख़ौफ़नाक आवाज़	366	किन चीज़ों में ग़ौरो फ़िक्र किया जाए और किन में नहीं ?	383
बद नसीब दूल्हा	367	﴾1﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में ग़ौरो फ़िक्र	384
हुज़ूर के लिये नबीज़ तय्यार करतीं	369	﴾2﴿ ज़ाहिरी व बातिनी ने'मतों में ग़ौरो फ़िक्र	384
शोहर की इता़अ़त पर इन्आ़मे खुदा वन्दी	370	﴾3﴿ सवाब में ग़ौरो फ़िक्र करना	384
शोहर की इता़अ़त बड़ा फ़र्ज़ है	370	﴾4﴿ अ़ज़ाब में ग़ौरो फ़िक्र करना	384
शोहर के हुक़ूक़	370	﴾5﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एह़सानात में ग़ौरो फ़िक्र	384
"शोहर के हुक़ूक़" के दस हुरूफ़ की निस्बत से		हुज़ूर के अख़्लाक़	385
शोहर की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 10 फ़रामीने		ऐ अल्लाह ! मुझे बुरे अख़्लाक़ से दूर रख	386
मुस्त़फ़ा	371	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अपने महबूब को आ'ला अख़्लाक़	
हुज़ूर के मेहमानों की ख़िदमत	373	ता'लीम फ़रमाने की 4 मिसालें	386
घरेलू काम करना सहाबिय्यात की सुन्नत है	374	**अख़्लाक़े मुस्त़फ़ा के मु-तअ़ल्लिक़ मज़ीद**	
सय्यि-दतुना आ़इशा हुज़ूर को खुश्बू लगातीं	375	**फरामीने आ़इशा**	387
हमारे रसूल कामकाज में मश्ग़ूल रहते	375	﴾1﴿ साहिबे मे'राज का अख़्लाक़	387
अपने कपड़े खुद सी लेते	375	﴾2﴿ सब से ज़ियादा ह़सीन अख़्लाक़ वाले	387
घरेलू कामकाज के बारे में चन्द म-दनी फूल	376	﴾3﴿ मुआ़फ़ और दर गुज़र करने वाले	388
म-दनी मुन्ना सिह़्ह़त याब हो गया	377	﴾4﴿ पर्दा नशीन दोशीज़ाओं से ज़ियादा ह़या	388
बयान ﴾14﴿ सह़ाबए किराम सय्यि-दतुना		अच्छे अख़्लाक़ वाला हुज़ूर का मह़बूब	388
आ़इशा से आक़ा की बातें पूछते	378	अज़्वाजे मुत़ह्हरात से हुज़ूर का हुस्ने अख़्लाक़	389
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	378	तबस्सुम नबिय्ये मुकर्रम की आ़दते करीमा थी	389
सह़ाबए किराम की बे क़रारी	378	क़ह्क़हा शैत़ान की त़रफ़ से है	390
सय्यिदुना ज़ैद का इ़श्क़े रसूल	379	ज़ियादा हंसी दिल को मुर्दा कर देती है	390
सय्यि-दतुना फ़ात़िमा बिन्ते क़ैस का इ़श्क़े रसूल	379	सन्जी-दगी इख़्तियार कीजिये	390
हुज़ूर की सब से अनोखी चीज़	381	हुज़ूर घर में क्या अ़मल फ़रमाते थे ?	391
अ़क़्ल मन्द कौन ?	382	अम्बिया का त़र्ज़े अ़मल	392
आस्मान को देख कर ग़ौरो फ़िक्र न करने वाला मह़रूम	383	सरकार के घरेलू मुआ़-मलात के मु-तअ़ल्लिक़	

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
सय्यिदह आ़इशा की मज़ीद 2 रिवायात	392	सय्यिदुना अबू स-लमा का कफ़ने मुस्त़फ़ा के	
﴾1﴿ जूता शरीफ़ ख़ुद सी लेते	392	मु-तअ़ल्लिक़ पूछना	404
﴾2﴿ अपने कपड़े ख़ुद सी लेते	393	सय्यि-दतुना आ़इशा हुज़ूर को कौन सी ख़ुश्बू लगातीं ?	405
हुज़ूर का महबूब अ़मल	393	हुज़ूर को ख़ुश्बू महबूब थी	405
इस्तिक़ामत हज़ार करामत से अफ़्ज़ल है	394	इस्लामी बहनें कौन सी ख़ुश्बू लगाएं ?	407
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक पसन्दीदा अ़मल	394	क्या हुज़ूर को बुढ़ापा आया ?	407
दाइमी अ़मल के फ़वाइद	394	हुज़ूर के कितने बाल मुबारक सफ़ेद थे ?	408
हुज़ूर का बा'दे अ़स्र नमाज़े नफ़्ल पढ़ना	395	फ़िल्में डिरामे देखने से तौबा कर ली	408
नमाज़े अ़स्र के बा'द नफ़्ल पढ़ना हुज़ूर का ख़ास्सा है	396	**बयान ﴾15﴿ सय्यि-दतुना आ़इशा ब हैसिय्यते**	
हुज़ूर की ज़ोह्र के बा'द वाली सुन्नतें		**मुफ़स्सिरा**	410
क़ज़ा होने का वाक़िआ़	396	दुरूदे पाक बाइसे नजात	410
एक सुवाल और उस का जवाब	397	तफ़्सीर की ता'रीफ़	410
घर में दाख़िले के बा'द पहला काम	398	तफ़्सीर बिर्राय का हुक्म	411
मिस्वाक शरीफ़ के फ़वाइद	398	तफ़्सीरे क़ुरआन के मुआ़-मले में सय्यिदुना सिद्दीक़े	
अम्बियाए किराम की 10 सुन्नतें	398	अक्बर का ख़ौफ़े ख़ुदा	412
इस्लामी बहनों का मिस्वाक करना	398	सय्यि-दतुना आ़इशा के बा'ज़ फ़ज़ाइल	413
हुज़ूर का बिस्तर मुबारक	399	बार बार पूछ कर बात समझ लेतीं	413
हुज़ूर की दुन्या से बे रग़्बती	400	मज़्कूरा आयात की दूसरी तफ़्सीर	414
बारगाहे ख़ुदा में दुआ़ए मुस्त़फ़ा	401	यतीम के माल से खाना	415
हुज़ूर अक्सर अवक़ात कौन सी दुआ़ फ़रमाते ?	401	**''यतीम'' के चार हुरूफ़ की निस्बत से माले यतीम**	
रात में किस चीज़ से इब्तिदा फ़रमाते ?	402	**नाह़क़ खाने की वईदात पर मुश्तमिल 4 रिवायात**	415
हुज़ूर की रात की नमाज़	403	किन के दिल डर रहे हैं ?	417
हुज़ूर रात को किस चीज़ से नमाज़ शुरूअ़ फ़रमाते ?	403	एक आयत की तफ़्सीर	417
हुज़ूर का म-रज़े वफ़ात शरीफ़	403	आयते त़लाक़ का शाने नुज़ूल	418
सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर का कफ़ने रसूल के		मुसीबत का सवाब	419
मु-तअ़ल्लिक़ पूछना	404	सफ़ा व मर्वह की सअ़्य का हुक्म	420

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
उसूले फ़िक़्ह के एक दक़ीक़ मस्अले का ह़ल	421	﴾6﴿ जो खाना मिलता ईसार कर देतीं	439
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किस क़सम पर पकड़ नहीं फ़रमाता	421	﴾7﴿ ईसार जन्नत में दाख़िले का बाइस	440
क़सम की अक़्साम	422	सय्यि-दतुना आ़इशा का तवक्कुल	441
﴾1﴿ लग़्व	422	तवक्कुल की ह़क़ीक़त	441
﴾2﴿ ग़मूस	422	निराली मेहमान नवाज़ी	442
﴾3﴿ मुन्अ़क़िदा	422	आक़ा दूसरे दिन के लिये खाना न बचाते	443
झूटी क़सम की सज़ा	422	क़ब्रे अन्वर की जगह ईसार कर दी	443
अ़-ज़्-मते ख़ुदा वन्दी से ना वाक़िफ़	423	बच्चों को ईसार करना सिखाइये !	445
नेकी की दा'वत देने वाले की ता'रीफ़	423	ईसार करने वाली पर आक़ा का करम	445
"शबे हिजरत" मइय्यते मुस्त़फ़ा में कौन थे ?	424	**बयान ﴾17﴿ सय्यि-दतुना आ़इशा का इश्क़े रसूल**	447
हिजरते मदीना करने वाली औ़रतों का इम्तिह़ान	424	एक बार दुरूदे पाक पढ़ने की फ़ज़ीलत	447
यतीम बच्चियों से इन्साफ़	426	ह़लावते ईमान पाने का नुस्ख़ा	447
आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल	428	मह़ब्बते रसूल जाने ईमान	448
इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से औलाद मिल गई	430	हु़ज़ूर से वालिहाना मह़ब्बत	448
बयान ﴾16﴿ सय्यि-दतुना आ़इशा का ईसार	432	आक़ा की शान में गुस्ताख़ी ना मन्ज़ूर !	449
बरोज़े क़ियामत हु़ज़ूर के ज़ियादा क़रीब कौन ?	432	हु़रमते मह़बूबे रह़मान पर जान क़ुरबान	450
सय्यि-दतुना आ़इशा का जज़्बए ईसार	434	आक़ा को रोते देख कर रोने लगीं	450
दो करामतें साबित हुईं	434	ईमाने अ-बवैने करीमैने मुस्त़फ़ा	451
सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को इ़ल्मे ग़ैब था	435	आक़ा की भूक देख कर रो पड़ीं	452
ईसार की ता'रीफ़	436	फ़ाक़ा कशिये मुस्त़फ़ा के बाइस सय्यिदह आ़इशा	
ईसारे सहाबा व सालिह़ीन के वाक़िआ़त	436	का आंसू बहाना	453
﴾1﴿ पानी का ईसार	437	सरकारे आ़ली वक़ार की दुन्या से बे रग़्बती	454
﴾2﴿ बकरी की सिरी का ईसार	437	बरोज़े क़ियामत आग के कंगन	455
﴾3﴿ अनोखा ईसार	438	विसाले मुस्त़फ़ा पर सय्यिदह आ़इशा	
﴾4﴿ ईसार बाइसे नजात	438	के इश्क़ भरे अल्फ़ाज़	455
﴾5﴿ एक मां का ईसार	439	सय्यिदह आ़इशा के इश्क़े रसूल से मा'मूर अश्आ़र	456

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
अल्लाह व रसूल को इख़्तियार किया	456	नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत में 2 रिवायात	474
नबिय्ये रह़मत की निस्बत से मह़ब्बत	458	नमाज़े चाश्त और सय्यि-दतुना आ़इशा	475
हुज़ूर का कम्बल मुबारक	458	**इस्तिक़ामत की फ़ज़ीलत में 3 फ़रामीन**	475
सय्यिदह आ़इशा का हुज़ूर के तबर्रुकात की ज़ियारत कराना	458	अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक पसन्दीदा अ़मल	476
फ़ेशन की पुतली म-दनी बुरक़अ़ पहनने वाली कैसे बनी....?	459	जो बिग़ैर मांगे मिले क़बूल कर लो	476
बयान ﴾18﴿ सय्यि-दतुना आ़इशा का फ़रामीने मुस्त़फ़ा पर अ़मल	461	म-दनी चेनल की बहारें	477
दुरूदे पाक की ब-र-कत से मग़्फ़िरत	461	मुझे म-दनी चेनल ने म-दनी बुरक़अ़ पहना दिया	479
औ़रतों को पर्दे का हुक्म	462	इस्लामी बहनों के म-दनी चेनल देखने का शर-ई मस्अला	480
औ़रतों पर पर्दा फ़र्ज़ है	463	**बयान ﴾19﴿ सय्यि-दतुना आ़इशा का सुवालात करना**	481
बेटा खोया है, ह़या नहीं खोई !	464	जुमा'रात और शबे जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत	481
पर्दे की एह़तियात़ !	464	हुज़ूर के चेहरे की नूरानिय्यत	482
ह़ालते एह़राम में भी चेहरे का पर्दा	465	**''चल मदीना'' के सात हुरूफ़ की निस्बत से दुरूद शरीफ़ के 7 म-दनी फूल**	484
बारीक दुपट्टा फाड़ दिया	466	ह़ज़राते जिब्राईल व इस्राफ़ील का ख़ौफ़े ख़ुदा	485
बाजेदार झांझन पहनने की मुमा-न-अ़त	466	दीन पर साबित क़-दमी की दुआ़	485
झांझन की मज़म्मत में 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	468	हुज़ूर का ख़ौफ़े ख़ुदा	487
झांझन तोड़ दिये जाएं	468	क़ौमे आ़द पर अ़ज़ाब आने का वाक़िआ़	488
अफ़्ज़ल स-दक़ा	470	क्या मैं रब का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?	490
कल के लिये खाना बचा कर न रखा	471	हुस्ने अख़्लाक़	492
मु-तवक्किल ख़ातून	471	उ़स्माने बा ह़या से मलाएका की ह़या	493
अपना निक़ाब ख़ुद सी रही थीं	473	ह़ज़राते अबू बक्र व उ़मर की फ़ज़ीलत	495
पुराने लिबास की फ़ज़ीलत	473	आस्मान के तारों के बराबर नेकियां	496
सारे दिन की ह़ाजतें सुब्ह़ की 4 रक्अ़त में	474	शा'बान के रोज़े	497
		शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में रोज़ों की कसरत	498

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
ता़ऊ़न मुसल्मानों के लिये रह़मत	499	अदीबाना कलाम पर 5 रिवायात	522
20 ग़म **20** मनाज़िल	501	﴾**1**﴿ नूर की शुआ़एं	524
जंगे उहु़द से ज़ियादा सख़्त दिन	502	**"मदीना"** के **5** हु़रूफ़ की निस्बत से	
औ़रतों का जिहाद "ह़ज व उ़म्रह"	503	ह़दीसे मज़्कूर से ह़ासिल कर्दा **5** म-दनी फूल	525
"मदीना" के 5 हु़रूफ़ की निस्बत से फ़ज़ाइले		﴾**2**﴿ सिद्दीक़े अक्बर की वफ़ात	527
ह़ज व उ़म्रह पर मुश्तमिल 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा	504	﴾**3**﴿ भाई की क़ब्र पर अश्आ़र	529
अगर मुझे शबे क़द्र मिल जाए तो	506	अच्छे और बुरे अश्आ़र के मु-तअ़ल्लिक़	
शबे क़द्र की फ़ज़ीलत में आयात	506	**6** फ़रामीने मुस्तफ़ा	533
लड़ाई का वबाल	507	गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा	534
शबे क़द्र की अ़लामात	508	**बयान ﴾21﴿ सय्यि-दतुना आ़इशा बतौ़रे**	
औ़रत पर सब से ज़ियादा ह़क़ किस का ?	509	**मुह़द्दिसा व मुफ़्तिय्या**	535
शोहर के क़दमों का गुबार चेहरे से साफ़	509	एक लाख साठ हज़ार ह़ज का सवाब	535
औ़रत पर शोहर के हु़क़ूक़	509	इ़ल्मे ह़दीस व फ़िक़्ह में महारत	536
शोहर के हु़क़ूक़ की अदाएगी	511	सब से बड़ी आ़लिमा	536
किस चीज़ से मन्अ़ करना जाइज़ नहीं ?	512	मुह़द्दिस की ता'रीफ़	537
हदिय्या किसे दूं ?	513	रिवा-यतन व दिरा-यतन की ता'रीफ़	537
पड़ोसी के हु़क़ूक़ के मु-तअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने		मरविय्याते सय्यि-दतुना आ़इशा की ता'दाद	537
मुस्तफ़ा	514	**2** क़ीरात़ सवाब	538
अ़ज़ाबे क़ब्र ह़क़ है	515	इफ़्तार में जल्दी करना	539
क़ियामत का दिन	517	नौह़ा से मय्यित पर अ़ज़ाब होने का मस्अला	540
शु-हदा के साथ ह़श्र	518	उम्मुल मुअमिनीन की त़रफ़ सह़ाबा का रुजूअ़	541
बिला ह़िसाब जन्नत में जाने का नुस्ख़ा	519	औ़रत को मर्दाना जूते पहनना कैसा ?	542
दीदारे मदीना की सआ़दत	519	बिग़ैर इ़ल्म के फ़तवा देना कैसा ?	543
बयान ﴾20﴿ सय्यि-दतुना आ़इशा की फ़साह़त	521	सच्ची निय्यत की ब-र-कत	544
मौला मुश्किल कुशा की करामत	521	**बयान ﴾22﴿ सय्यि-दतुना आ़इशा की**	
सय्यिदह आ़इशा की फ़साह़तो बलाग़त और		**गिर्या व ज़ारी**	546

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ अपने पढ़ने वाले के लिये		पैवन्द दार लिबास की तरग़ीब	563
इस्तिग़फ़ार करता है	546	सय्यि-दतुना आ़इशा का लिबास	563
महबूबे बारी की गिर्या व ज़ारी	547	पैवन्द दार लिबास की फ़ज़ीलत	564
क़ब्र के दबाने के ख़याल पर रोना	548	बत़ौरे तवाज़ोअ़ अपना निक़ाब सीना	564
ख़ौफ़ो ख़शिय्यत का ग़-लबा	550	लिबासे शोहरत किसे कहते हैं ?	565
जहन्नम के ख़याल पर रोना	550	सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इन्किसारी	566
ग़-ल-बए ख़ौफ़ पर मुश्तमिल 6 फ़रामीने आ़इशा	553	बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी	567
क़सम याद कर के रोना	554	ज़मीन जैसी तवाज़ोअ़	569
क़त्ए़ रेह़्मी की वईद में 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	556	सय्यिदह आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ग़-ल-बए ख़ौफ़	569
ज़ौक़े इबादत	556	लम्ह़ए फ़िक्रिया !	570
घर में म-दनी माह़ोल बन गया	558	म-दनी माह़ोल मुयस्सर आ गया	570
बयान ﴾23﴿ सय्यि-दतुना आ़इशा की तवाज़ोअ़		कलामे मन्ज़ूम दर शाने आ़इशा सिद्दीक़ा	572
व इन्किसारी	560	दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के **22** म-दनी फूल	573
दुरूद शरीफ़ लिखने की फ़ज़ीलत	560	ह़िकायात की फ़ेहरिस्त	576
तवाज़ोअ़ के फ़ज़ाइल पर मब्नी 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	561	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	577
फ़ज़ाइले तवाज़ोअ़ ब ज़बाने आ़इशा	562	मआख़िज़ो मराजेअ़	595
तवाज़ोअ़ की ता'रीफ़	562	इल्मिय्या कुतुब का तआ़रुफ़	603

घर, औ़रत और घोड़े को मन्ह़ूस कहना कैसा ?

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : येह सब मह़ज़ बात़िल व मरदूद ख़यालात हिन्दूओं के हैं, शरीअ़ते मुत़ह्हरा में इन की कोई अस्ल नहीं, शरअ़न घर की नुह़ूसत येह है कि तंग हो हमसाए बुरे हों, घोड़े की नुह़ूसत येह कि शरीर हो, बद लगाम, बद रिकाब हो, औ़रत की नुह़ूसत येह कि बद ज़बान हो, बद रवय्या हो, बाक़ी वोह ख़याल कि औ़रत के पहरे से येह हुवा, फ़ुलां के पहरे से येह, येह सब बात़िल और काफ़िरों के ख़याल हैं। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 220)

www.dawateislami.net

مآخذ و مراجع

نام کتاب	مؤلف /مصنِّف	مطبوعات
قرانِ مجید	کلامِ باری تعالیٰ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
ترجمۂ کنزُ الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
اَلْجَامِعُ لِاَحْکَامِ الْقُرْاٰن (تَفْسِیْرِ قُرْطبِی)	ابوعبد اللّٰہ محمد بن احمد انصاری قرطبی متوفّٰی ۶۷۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۸ھ
تَفْسِیْرِ رُوْحُ الْمَعَانِی	ابوفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی متوفّٰی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
تَفْسِیْرُ الطَّبرِی	امام ابوجعفر محمد بن جریر طبری متوفّٰی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۰ھ
اَلتَّفْسِیْرُ الْکَبِیْر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی متوفّٰی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۹ھ
تَفْسِیْر اَلدُّرُ الْمَنْثُوْر	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی شافعی متوفّٰی ۹۱۱ھ	مرکز ھجر للبحوث والدراسات القاھرۃ ۱۴۲۴ھ
تَفْسِیْرِ جَلَالَیْن	امام جلال الدین محلی متوفّٰی ۸۶۳ھ وامام جلال الدین سیوطی متوفّٰی ۹۱۱ھ	مرکز الاولیاء لاہور
مَدَارِکُ التَّنْزِیْل وَحَقَائِقُ التَّاْوِیْل	امام بن احمد بن محمود نسفی متوفّٰی ۷۱۰ھ	دار الکلم الطیب بیروت ۱۴۱۹ھ
تَفْسِیْرُ الصَّاوِی	علامہ احمد بن محمد صاوی مالکی متوفّٰی ۱۲۴۱ھ	مکتبۃ الغوثیہ باب المدینہ کراچی
تَفْسِیْرَاتِ اَحْمَدِیّہ	شیخ احمد بن ابوسعید المعروف بملّا جیون جونپوری متوفّٰی ۱۱۳۰ھ	پشاور
تَفْسِیْرِ رُوْحُ الْبَیَان	امام شیخ اسماعیل حقی بروسوی متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۰ھ
تفسیرِ نعیمی	مولانا مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ مرکز الاولیاء لاہور
تفسیرِ خَزَائِنُ العِرْفَان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
تفسیرِ نورُ العِرْفَان	حکیمُ الاُمَّت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
مُفْرَدَاتُ القراٰن (مترجم)	امام حسین بن محمد بن مفضل بن محمد راغب اصفہانی متوفّٰی ۵۰۲ھ	مرکز الاولیاء لاہور
صَحِیْحُ البُخَارِی	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
صَحِیْح مُسْلِم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
سُنَنُ التِّرْمِذِی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی متوفّٰی ۲۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
سُنَن اِبْنِ ماجه	امام محمد بن یزید قزوینی ابن ماجہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۰ھ
سُنَنِ اَبِیْ دَاوٗد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی متوفّٰی ۲۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
سُنَنُ النِّسَائِی	امام ابوعبد الرحمٰن احمد بن شعیب نسائی متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۰ھ
صَحِیْحُ اِبْنِ حِبَّان	امام حافظ محمد بن حبان متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
سُنَن دَارِ قُطْنِیْ	امام علی بن عمر دار قطنی متوفّٰی ۳۸۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۵ھ
صَحِیْحُ اِبْنِ خُزَیْمَة	امام محمد بن اسحاق بن خزیمہ متوفّٰی ۳۱۱ھ	المکتبۃ الاعظمی الریاض ۱۴۳۰ھ
اَلْمُوَطَّا	اِمام مالِک بن اَنَس اِصحی حمیری متوفّٰی ۱۷۹ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۳ھ

www.dawateislami.net

اَلْبَصَائِرُ وَالذَّخَائِر	ابوالحیان علی بن محمد بن عباس توحیدی متوفّٰی ۴۱۴ھ	دار صادر بیروت ۱۴۳۰ھ
اَلْمَوْسُوْعَةُ لِابْنِ اَبِی الدُّنْیَا	حافظ ابوبکر بن محمد بن عبید ابن ابی الدنیا متوفّٰی ۲۸۱ھ	المکتبة العصریة بیروت ۱۴۲۹ھ
مُصَنَّف عَبْدُ الرَّزَّاق	امام ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی متوفّٰی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۱ھ
اَلْمُصَنَّف لِابْنِ اَبِیْ شَیْبَة	حافظ عبد اللّٰہ محمد بن ابی شیبہ متوفّٰی ۲۳۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان شریف
سُنَنُ الدَّارِمِی	امام حافظ عبد اللّٰہ بن عبد الرحمٰن دارمی متوفّٰی ۲۵۵ھ	دار المعرفة بیروت ۱۴۳۱ھ
مَجْمَعُ الزَّوَائِد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ہیثمی متوفّٰی ۸۰۷ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۲ھ
مُسْنَدِ اَحْمَد	امام ابو عبد اللّٰہ احمد بن محمد بن حنبل متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۹ھ
اَلْمُسْتَدْرَک عَلَی الصَّحِیْحَیْن	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن عبد اللّٰہ حاکم نیشاپوری متوفّٰی ۴۰۵ھ	دار المعرفة بیروت ۱۴۲۷ھ
فِرْدَوْسُ الْاَخْبَار	ابو شجاع شیرویہ بن شہردار دیلمی متوفّٰی ۵۰۹ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۰۷ھ
کَنْزُ الْعُمَّال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی متوفّٰی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۴ھ
مَکَارِمُ الْاَخْلَاق	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
کَشْفُ الْخِفَاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی متوفّٰی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۲ھ
اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۸ھ
اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الفکر عمان ۱۴۲۰ھ
اَلتَّرْغِیْب وَالتَّرْهِیْب	امام زکی الدین منذری متوفّٰی ۶۵۶ھ	دار المعرفة بیروت ۱۴۲۹ھ
شُعَبُ الْاِیْمَان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۹ھ
شَرْحُ السُّنَّة	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی متوفّٰی ۵۱۶ھ	المکتب الاسلامی بیروت ۱۴۰۳ھ
اَلْاَدَبُ الْمُفْرَد	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۱۰ھ
مُسْنَدِ اَبِیْ یَعْلٰی	امام ابو یعلی احمد بن علی موصلی متوفّٰی ۳۰۷ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۲ھ
مِشْکٰوةُ الْمَصَابِیْح	علامہ ولی الدین تبریزی متوفّٰی ۷۴۲ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۸ھ
جَمْعُ الْجَوَامِع	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۱ھ
دَلَائِلُ النُّبُوَّة	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۹ھ
اَلْکَامِلُ فِیْ ضُعَفَاءِ الرِّجَال	امام ابو احمد عبد اللّٰہ بن عدی جرجانی متوفّٰی ۳۶۵ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
اَلسُّنَنُ الْکُبْرٰی	امام ابو عبد الرحمٰن احمد بن شعیب نسائی متوفّٰی ۳۰۳ھ	مؤسسة الرسالہ بیروت ۱۴۲۱ھ
اَلْجَامِعُ الصَّغِیْر	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۷ھ
اَلسُّنَنُ الْکُبْرٰی	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
اَلزُّهْدُ الْکَبِیْر	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الجنان بیروت لبنان ۱۴۰۸ھ
طَبَقَاتُ الشَّافِعِیَّةِ الْکُبْرٰی	تاج الدین ابو نصر عبد الوہاب بن علی بن عبد الکافی سبکی متوفّٰی ۷۷۱ھ	دار احیاء الکتب العربیة

www.dawateislami.net

كِتَابُ الْآثَار	قاضی القضاۃ امام ابو یُوسُف یعقوب بن ابراہیم انصاری متوفّٰی ۱۸۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
كِتَابُ الزُّهْد	شیخ الاسلام ابو مسعود معافی بن عمران موصلی متوفّٰی ۱۸۵ھ	دار البشائر الاسلامیۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء	حافظ ابو نُعَیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
كِتَابُ الزُّهْد	امام ابو عبد اللہ احمد بن محمد بن حنبل متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
اَلْعِلَل وَمَعْرِفَةُ الرِّجَال	امام ابو عبد اللہ احمد بن محمد بن حنبل متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الخانی الریاض ۱۴۲۲ھ
كِتَابُ الزُّهْد	عبد اللہ بن مبارک مروزی متوفّٰی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۵ھ
مَكَارِمُ الْاَخْلَاق	حافظ ابو بکر بن محمد بن عبید ابن ابی الدنیا متوفّٰی ۲۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۹ھ
مَكَارِمُ الْاَخْلَاق	امام محمد بن جعفر خرائطی	مکتبۃ الرشد الریاض ۱۴۲۷ھ
كِتَابُ الْعَظَمَة	امام ابو محمد عبد اللہ بن محمد بن جعفر بن حیان متوفّٰی ۳۶۹ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۴ھ
كِتَابُ الْمُعْجَم	امام ابو سعید احمد بن محمد بن زیاد بن بشر ابن الاعرابی متوفّٰی ۳۴۰ھ	دار ابن الجوزی الریاض ۱۴۱۸ھ
عُمْدَةُ الْقَارِی	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی متوفّٰی ۸۵۵ھ	ادارۃ الطباعۃ المنیریۃ دمشق
فَتْحُ الْبَارِی	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
اَلتَّيْسِيْر شَرْحُ الْجَامِعِ الصَّغِيْر	حافظ زین الدین عبد الرءُوف مناوی متوفّٰی ۱۰۳۱ھ	مکتبۃ امام الشافعی الریاض ۱۴۰۸ھ
فَيْضُ الْقَدِيْر	حافظ زین الدین عبد الرءُوف مناوی متوفّٰی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۷ھ
مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيْح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری متوفّٰی ۱۰۱۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
نُزْهَةُ الْقَارِی	فقیہِ اعظم ہند مفتی محمد شریف الحق امجدی متوفّٰی ۱۴۲۰ھ	فرید بک سٹال مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۸ھ
شَرْحُ الزُّرْقَانِی عَلَى الْمُوَطَّا	محمد بن عبد الباقی بن یوسف زرقانی متوفّٰی ۱۱۲۲ھ	مطبعہ خیریہ
اَشِعَّةُ اللَّمْعَات (مترجم)	شیخ عبد الحق محدث دہلوی متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	فرید بک سٹال مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۳ھ
مِرْاٰةُ الْمَنَاجِيْح	حکیم الاُمّت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
فُيُوْضُ الْبَارِی	سید محمود احمد رضوی	حزب الاحناف مرکز الاولیاء لاہور
اُسْدُ الْغَابَة فِی مَعْرِفَةِ الصَّحَابَة	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
اَلْاِصَابَةُ فِی تَمْيِيْزِ الصَّحَابَة	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفّٰی ۸۵۲ھ	المکتبۃ التوفیقیۃ القاہرۃ مصر
شَرْحُ الزُّرْقَانِی عَلَى الْمَوَاهِب	محمد بن عبد الباقی بن یوسف زرقانی متوفّٰی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
اَلطَّبَقَاتُ الْكُبْرٰى	محمد بن سعد بن منیع ہاشمی متوفّٰی ۲۳۰ھ	مکتبہ خانجی القاہرۃ
سِيَر اَعْلَامُ النُّبَلَاء	شمس الدین محمد بن احمد ذہبی متوفّٰی ۷۴۸ھ	مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۱۴۰۵ھ
تاريخ مدينة دمشق	امام علی بن حسن المعروف ابن عساکر متوفّٰی ۵۷۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۵ھ
اَلسِّيْرَةُ النَّبَوِيَّه	ابو محمد عبد الملک بن ہشام متوفّٰی ۲۱۳ھ	دار الفجر للتراث القاہرۃ ۱۴۲۵ھ
اَلْمَوَاهِبُ اللَّدُنِّيَه	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی متوفّٰی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۰ھ

www.dawateislami.net

تاریخُ الْخلَفَاء	امام جلال الدین عبدالرحمٰن بن ابوبکر سیوطی شافعی متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۹ھ
اَلشِّفَاء بِتَعْرِیْفِ حُقُوْقِ الْمُصْطَفٰے	قاضی ابوالفضل عیاض مالکی متوفّٰی ۵۴۴ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۳۱ھ
سیرتِ مصطفٰے	علامہ عبدالمصطفٰے اعظمی متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
اَلْبِدَایَۃُ وَالنِّھَایَۃ	عمادالدین اسمٰعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی متوفّٰی ۷۷۴ھ	مرکز البحوث والدراسات العربیۃ الاسلامیہ قاہرہ ۱۴۲۶ھ
اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع	امام ابوالفرج محمد بن عبدالرحمٰن سخاوی شافعی متوفّٰی ۹۰۲ھ	دارُالکتابِ العربی بیروت ۱۴۰۵ھ
اَلصَّلاتُ وَالْبُشَرُ فِی الصَّلٰوۃِ عَلٰی خَیْرِ الْبَشَر	شیخ الاسلام مجدالدین محمد بن یعقوب فیروزآبادی متوفّٰی ۸۱۷ھ	مرکز الاولیاء لاہور
سَعَادَۃُ الدَّارَیْن	قاضی شیخ یوسف بن اسماعیل نبہانی متوفّٰی ۱۳۵۰ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
اَلرِّسَالَۃُ الْقُشَیْرِیَّۃ	امام ابوالقاسم عبدالکریم ہوازن قشیری متوفّٰی ۴۶۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
اَلْمُنَبِّھَات (مترجم بنام انمول خزانہ)	حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفّٰی ۸۵۲ھ	مکتبہ اعلیٰ حضرت لاہور ۱۴۲۳ھ
اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْکَبَائِر	شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر مکی ہیتمی متوفّٰی ۹۷۴ھ	دارالحدیث القاہرۃ ۱۴۲۳ھ
مُکَاشَفَۃُ الْقُلُوْب	حُجَّۃُ الاسلام ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	کوئٹہ
مُکَاشَفَۃُ الْقُلُوْب (مترجم)	مترجم: نبیرۂ اعلیٰ حضرت مفتی تقدس علی خان متوفّٰی ۱۴۰۸ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۶ھ
تاریخِ بغداد	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالغرب الاسلامی بیروت ۱۴۲۲ھ
مَدَارِجُ النُّبُوَّت (فارسی)	شیخ عبدالحق محدّث دہلوی متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۹ھ
اَلْوَفَا بِاَحْوَالِ الْمُصْطَفٰے	امام ابوالفرج عبدُ الرَّحمٰن بن علی جوزی متوفّٰی ۵۹۷ھ	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۳۲ھ
شَرْحُ الصُّدُوْر	امام جلال الدین عبدالرحمٰن بن ابی بکر سیوطی شافعی متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتاب العربی بیروت
تَنبِیۃُ الغافِلِیْن	امام ابواللیث نصر بن محمد بن ابراہیم سمرقندی متوفّٰی ۳۷۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۰ھ
کَشْفُ الْمَحْجُوب	سیّدُ الاولیاء علی بن عثمان جلابی المعروف داتا گنج بخش متوفّٰی ۴۶۵ھ	سنگِ میل پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۸ھ
مِنْھَاجُ الْعَابِدِیْن	حُجَّۃُ الاسلام ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارالبشائر الاسلامیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
مجموعہ رسائلِ امام غزالی	حُجَّۃُ الاسلام ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	المکتبۃ التوفیقیۃ القاہرہ مصر
اَلزُّھْد وَقَصْرُ الْاَمَل	شیخ اسعد محمد سعید صاغرجی	دارالغزالی دمشق ۱۴۱۷ھ
اَلْخَیْرَاتُ الْحِسَان	شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر مکی ہیتمی متوفّٰی ۹۷۴ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
دُرَّۃُ النَّاصِحِیْن	علامہ عثمان بن حسن بن احمد خوبوی	دارالطباعۃ الباہرۃ قاہرہ مصر
نُزْھَۃُ الْمَجَالِس	امام عبدالرحمٰن بن عبدالسلام صفوری شافعی متوفّٰی ۸۹۴ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تَنْبِیۃُ الْمُغْتَرِّیْن	امام عبدالوہاب بن احمد بن علی بن احمد شعرانی متوفّٰی ۹۷۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
اَلْاَدَب فِی الدِّیْن	حُجَّۃُ الاسلام ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	المکتبۃ التوفیقیۃ القاہرہ مصر
اَیُّھَا الْوَلَدُ	حُجَّۃُ الاسلام ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	مکتبہ نظامیہ گجرات ۱۴۰۴ھ
قُرَّۃُ الْعُیُوْنِ وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن	امام ابواللیث نصر بن محمد سمرقندی متوفّٰی ۳۷۳ھ	دارالاحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ

www.dawateislami.net

اَلرَّوْضُ الْفَائِق	مبلّغِ اسلام شیخ شعیب حریفیش متوفّٰی ۸۱۰ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ
قُوْتُ الْقُلُوْب	شیخ ابوطالب محمد بن علی مکی متوفّٰی ۳۸۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
اِحْیَاءُ عُلُوْمِ الدِّیْن	حُجَّةُ الاسلام ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۹ھ
لُبَابُ الْاِحْیَاء	حُجَّةُ الاسلام ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارالبیروتی دمشق ۱۴۲۴ھ
مکتوباتِ امامِ ربّانی (فارسی)	مجدد الف ثانی شیخ احمد سرہندی متوفّٰی ۱۰۳۴ھ	مطبع منشی نول کشور لکھنؤ ہند
غُنْیَةُ الطَّالِبِیْن	امامُ الاولیا ابوصالح سید عبدالقادر جیلانی متوفّٰی ۵۶۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
اَسرارُ الاولیاء	ملفوظات حضرت شیخ فریدالدین گنج شکر متوفّٰی ۶۶۴ھ	مکتبہ نول کشور لکھنؤ ہند
تَذْکِرَةُ الْاَوْلِیَاء (فارسی)	شیخ ابوحامد محمد بن ابوبکر ابراہیم فریدالدین عطّار نیشاپوری متوفّٰی ۶۳۷ھ	انتشارات گنجینہ تہران ایران ۱۳۷۹ھ
کیمیائے سعادت (فارسی)	ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	النوریۃ الرضویہ پبلشنگ کمپنی لاہور ۱۴۳۰ھ
اخبار الاخیار (فارسی)	شیخ عبدُالحق محدِّث دہلوی متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	النوریہ الرضویہ پبلشنگ کمپنی لاہور ۱۴۳۰ھ
دُرِّ مُخْتَار	علامہ علاءالدین حصکفی متوفّٰی ۱۰۸۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ
اَلتَّذْکِرَة فِیْ اَحْوَالِ الْمَوْتٰی وَاُمُوْرِ الْاٰخِرَة	ابوعبداللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی متوفّٰی ۶۷۱ھ	مکتبہ دارالمنہاج الریاض
تَعْلِیْمُ الْمُتَعَلِّمِ طَرِیْقَ التَّعَلُّم	امام برہانُ الدِّین زرنوجی متوفّٰی ۶۱۰ھ	باب المدینہ کراچی
رَدُّ الْمُحْتَار (حاشیہ ابن عابدین)	علامہ محمد امین ابن عابدین شامی متوفّٰی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
نُوْرُ الْاِیْضَاح مع مَرَاقِیِ الْفَلَاح	شیخ ابوالاخلاص حسن بن عمار مصری شرنبلالی حنفی متوفّٰی ۱۰۶۹ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
اَلْفَتَاوٰی الْھِنْدِیَّة	امامِ ہمام مولانا شیخ نظام متوفّٰی ۱۱۶۱ھ وجماعۃ من علماء الہند	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
فتاوٰی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۶ھ
غُنْیَةُ الْمُسْتَمْلِی اَلْمُشْتَھَرْ بِحَلْبِی الْکَبِیْر	علامہ محمد ابراہیم بن حلبی متوفّٰی ۹۵۶ھ	سہیل اکیڈمی لاہور
بہارِ شریعت	صدرالشریعہ مفتی امجد علی اعظمی متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
جامِعُ بَیَانِ الْعِلْمِ وَفَضْلِہٖ	حافظ ابوعمر یوسف بن عبداللہ بن عبدالبر متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
اَحْسَنُ الْوِعَاء	رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان بن علی رضا متوفّٰی ۱۲۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
رَوْضُ الرِّیَاحِیْن	امام عبداللہ بن اسعد یافعی متوفّٰی ۷۶۸ھ	المکتبۃ التوفیقیۃ القاہرہ مصر
عُیُوْنُ الْحِکَایَات	امام ابوالفرج عبدُالرَّحمٰن بن علی جوزی متوفّٰی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ
کِتَابُ الْفَوَائِد اَلشَّھِیْر بِالْغَیْلَانِیَّات	حافظ ابوبکر محمد بن عبداللہ بن ابراہیم شافعی متوفّٰی ۳۵۴ھ	دارابن جوزی الریاض ۱۴۱۷ھ
اَلْاَرْبَعِیْن فِیْ اُصُوْلِ الدِّیْن	حُجَّةُ الاسلام ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارالقلم دمشق ۱۴۲۴ھ
اَدَبُ الدِّیْن وَالدُّنْیَا	امام ابوالحسن علی بن محمد بن حبیب بصری ماوردی متوفّٰی ۴۵۰ھ	دار اقرأ بیروت ۱۴۰۵ھ
اَلْمُغْنِیْ عَنْ حَمْلِ الْاَسْفَار	حافظ ابوالفضل زین الدین عبدالرحیم بن حسین عراقی متوفّٰی ۸۰۶ھ	مکتبہ دار طبریہ الریاض ۱۴۱۵ھ

www.dawateislami.net

تَدْرِیْبُ الرَّاوِی	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابوبکر سیوطی شافعی متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
بَحْرُ الدُّمُوع	امام ابوالفرج عبدُ الرَّحمٰن بن علی جوزی متوفّٰی ۵۹۷ھ	مکتبہ دار الفجر دمشق ۱۴۲۴ھ
اِجْمَال تَرْجَمَۃِ اِکْمَال	حکیم الاُمّت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ مرکز الاولیاء لاہور
مواعظِ نعیمیہ	حکیم الاُمّت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ مرکز الاولیاء لاہور
شفاءُ القلوب (مترجم)	مصنّف: مولوی محمد نبی بخش حلوائی نقشبندی مجددی متوفّٰی ۱۹۴۴ء	مکتبہ نبویہ مرکز الاولیاء لاہور
راحتُ القلوب (مترجم)	ملفوظات حضرت شیخ فرید الدین گنج شکر متوفّٰی ۶۶۴ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور ۱۴۰۴ھ
رسائلِ نعیمیہ	حکیم الاُمّت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
فیروزُ اللغات	الحاج مولوی فیروز الدین	فیروز سنز لمیٹڈ لاہور ۱۴۲۶ھ
(ذَیْلُ الْمُدَّعَا لِاَحْسَنِ الْوِعَا) فضائلِ دُعا	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
الملفوظ	مفتی مصطفیٰ رضا خان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
والدین، زوجین اور اساتذہ کے حقوق	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
راہِ خدا میں خرچ کرنے کے فضائل	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
فیضانِ سنّت جلد اوّل	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
غیبت کی تباہ کاریاں	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
نیکی کی دعوت	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
اسلامی بہنوں کی نماز	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
پردے کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
نماز کے احکام	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
رَفیق الحرمین	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
مدنی پنج سورہ	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
عاشقانِ رسول کی 130 حکایات	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
گھریلو علاج	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
بیاناتِ عطاریہ	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ
پُراسرار بھکاری	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
باحیا نوجوان	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ
خاموش شہزادہ	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

مدینے کی مچھلی	امیرِاہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
قبر کا امتحان	امیرِاہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
گانے باجے کی ہولناکیاں	امیرِاہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
انمول ہیرے	امیرِاہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ
دعوتِ اسلامی کی مدنی بہاریں	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
سرکار کا پیغام عطّار کے نام	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
اسلامی بہنوں میں مدنی انقلاب	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
چل مدینہ کی سعادت مل گئی	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ
میں حیادار کیسے بنی......؟	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
معذور بچی مُبلِّغہ کیسے بنی	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
بلند آواز سے ذکر کرنے میں حکمت	امیرِاہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
وضو کے بارے میں وسوسے اور ان کا علاج	امیرِاہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
سنّتِ نکاح	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
عِلم وحِکمت کے 125 مدنی پھول	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ
مدنی مذاکرہ نمبر 120	امیرِاہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
فیصلہ کرنے کے مدنی پھول	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
جنّت کی تیاری	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
اِحساسِ ذِمّہ داری	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
اَخْلَاقُ الصَّالِحِیْن	علامہ مولانا ابو یوسف شریف کوٹلوی متوفّٰی ۱۹۵۱ء	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
عجائب القرآن مع غرائب القرآن	علامہ عبدالمصطفٰے اعظمی متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
بہشت کی کنجیاں	علامہ عبدالمصطفٰے اعظمی متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
اُمّہاتُ المؤمنین	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
کراماتِ صحابہ	علامہ عبدالمصطفٰے اعظمی متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
جنّتی زیور	علامہ عبدالمصطفٰے اعظمی متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
صحابۂ کرام کا عشقِ رسول	علامہ صوفی محمد اکرم رضوی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
ضیائے صدقات	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
حضرتِ سیّدُنا عُمر بن عبدُالعزیز کی 425 حِکایات	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
تکبُّر	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ

www.dawateislami.net

تنگ دستی کے اَسباب اور اُن کا حل	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
نصاب اُصولِ حدیث	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
فیضانِ صدیقِ اَکبر	مجلس المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
آنسوؤں کا دریا	امام ابوالفرج عبدُ الرَّحمٰن بن علی جوزی متوفّٰی ۵۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
اَحیاءُ العُلوم جلد اوّل (مترجم)	حُجَّۃُ الاسلام ابو حامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
احیاء العلوم کا خلاصہ	حُجَّۃُ الاسلام ابو حامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
راہِ علم	امام برہانُ الدِّین زرنوجی متوفّٰی ۶۱۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
سایۂ عرش کس کس کو ملے گا؟	امام جلال الدین عبدالرحمٰن بن ابو بکر سیوطی شافعی متوفّٰی ۹۱۱ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
عُیُونُ الحِکایات (مترجم، حصہ اول و دوم)	امام ابوالفرج عبدُ الرَّحمٰن بن علی جوزی متوفّٰی ۵۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
شکر کے فضائل	امام ابو بکر عبداللہ بن محمد قرشی المعروف امام ابن ابی دنیا متوفّٰی ۲۸۱ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ
حِکایتیں اور نصیحتیں	مبلِّغِ اسلام شیخ شعیب حریفیش متوفّٰی ۸۱۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
جنّت میں لے جانے والے اَعمال	امام محمد شرفُ الدِّین عبدالمومن بن خلف دمیاطی توفّٰی ۷۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۶ھ
جہنّم میں لے جانے والے اَعمال	شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر مکی ہیتمی متوفّٰی ۹۷۴ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
نیکیوں کی جزائیں اور گناہوں کی سزائیں	امام ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی متوفّٰی ۳۷۳ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ
آدابِ دین	حُجَّۃُ الاسلام ابو حامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
بیٹے کو نصیحت	حُجَّۃُ الاسلام ابو حامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۵ھ
اِمامِ اَعظم کی وصیتیں	امامِ اعظم ابو حنیفہ نعمان بن ثابت متوفّٰی ۱۵۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
حدائقِ بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
ذوقِ نعت	شہنشاہِ سُخن مولانا حَسن رضا خان متوفّٰی ۱۳۲۶ھ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۸ھ
سامانِ بخشش	مفتیِ اعظم ہند نوری متوفّٰی ۱۴۰۲ھ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۳۲ھ
دِیوانِ سالِک	حکیمُ الاُمَّت مفتی احمد یار خان متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
وسائلِ بخشش	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
کافی کی نعت	علامہ کفایت علی کافی شہید متوفّٰی ۱۸۷۴ء	مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۱۶ھ

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा
245 कुतुबो रसाइल मअ़ अ़न्क़रीब आने वाली 16 कुतुबो रसाइल
शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیہ

उर्दू कुतुब

(1) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحط وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيرَان وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء)
(2) करन्सी नोट के मसाइल (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم)
(3) दुआ के फ़ज़ाइल (اَحْسَنُ الْوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهُ ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِاَحْسَنِ الْوِعَاء)
(4) ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد)
(5) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوق)
(6) अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से)
(7) शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء)
(8) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)
(9) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे इस्लाह़ व नजात व इस्लाह़)
(10) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي)
(11) हुक़ूक़ुल इबाद कैसे मुआफ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد)
(12) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَال)
(13) औलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد)
(14) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान)
(15) अल वज़ी-फ़तुल करीमा
(16) कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान
(17) ह़दाइक़े बख़्शिश

अ़-रबी कुतुब

18، 19، 20، 21، 22......جَدُّ الْمُمْتَار عَلٰی رَدِّالْمُحْتَار (المجلد الاول والثانی والثالث والرابع والخامس) (کل صفحا570، 672، 713، 650، 483)
23......اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِی عَلٰی صَحِيْحِ الْبُخَارِی (کل صفحات:458)
24......كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (کل صفحات:74) 25......اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (کل صفحات:62)
26......اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (کل صفحات:93) 27......اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِی (کل صفحات:46)
28......تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (کل صفحات:77) 29......اَجْلَى الْاِعْلَام (کل صفحات:70)
30......اِقَامَةُ الْقِيَامَة (کل صفحات:60)

www.dawateislami.net

शो'बए तराजिमे कुतुब

(1) अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द

(2) नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَر)

(3) म-दनी आक़ा के रोशन फ़ैसले (اَلْبَاهِر فِیْ حُكْمِ النَّبِیِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِر)

(4) सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा ? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَة لِظِلِّ الْعَرْش)

(5) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن)

(6) नसीहतों के म-दनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة)

(7) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح)

(8) इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَا اِمَامِ اَعْظَم عَلَيْهِ الرَّحْمَة)

(9) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِر عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر)

(10) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِر عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر)

(11) फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْر عَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر)

(12) दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْد وَقَصْرُ الْاَمَل)

(13) राहे इल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم)

(14) उ़यूनुल हि़कायात (मुतर्जम, हि़स्सए अव्वल)

(15) उ़यूनुल हि़कायात (मुतर्जम, हि़स्सए दुवुम)

(16) एह़याउल उ़लूम का खुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء)

(17) हि़कायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق)

(18) अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُ الْمُذَاكَرَة)

(19) शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ)

(20) हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق)

(21) आंसूओं का दरिया (بَحْرُ الدُّمُوْع)

(22) आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّيْن)

(23) शाहराहे औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن)

(24) बेटे को नसीह़त (اَيُّهَا الْوَلَد)

(25) اَلدَّعْوَة اِلَى الْفِكْر

(26) इस्लाहे़ आ'माल (اَلْحَدِيْقَةُ النَّدِيَّة شَرْحُ طَرِيْقَةِ الْمُحَمَّدِيَّة)

(27) आ़शिक़ाने ह़दीस की हि़कायात (اَلرِّحْلَة فِیْ طَلَبِ الْحَدِيْث)

(28) एह़याउल उ़लूम मुतर्जम (जिल्द अव्वल) (احياء علوم الدين)

(29) क़ूतुल क़ुलूब मुतर्जम (जिल्द अव्वल)

www.dawateislami.net

शो'बए दर्सी कुतुब

01......مراح الارواح مع حاشية ضياء الاصباح(كل صفحات:241)

02......الاربعين النووية فى الأحاديث النبوية(كل صفحات:155)

03......اتقان الفراسة شرح ديوان الحماسه(كل صفحات:325)

04......اصول الشاشي مع احسن الحواشي(كل صفحات:299)

05......نورالايضاح مع حاشيةالنوروالضياء(كل صفحات:392)

06......شرح العقائدمع حاشيةجمع الفرائد(كل صفحات:384)

07......الفرح الكامل على شرح مئة عامل(كل صفحات:158)

08 ......عناية النحو فى شرح هداية النحو(كل صفحات:280)

09......صرف بهائي مع حاشية صرف بنائي(كل صفحات:55)

10......دروس البلاغة مع شموس البراعة(كل صفحات:241)

11......مقدمةالشيخ مع التحفة المرضية(كل صفحات:119)

12......نزهة النظر شرح نخبة الفكر(كل صفحات:175)

13......نحو ميرمع حاشية نحو منير(كل صفحات:203)

14......تلخيص اصول الشاشي(كل صفحات:144)

15......نصاب النحو(كل صفحات:288)

16......نصاب اصولِ حديث(كل صفحات:95)

17......نصاب التجويد(كل صفحات:79)

18......المحادثة العربية(كل صفحات:101)

19......تعريفاتِ نحوية(كل صفحات:45)

20......خاصيات ابواب(كل صفحات:141)

21......شرح مئة عامل(كل صفحات:44)

22......نصاب الصرف(كل صفحات:343)

23......نصاب المنطق(كل صفحات:168)

24......انوارالحديث(كل صفحات:466)

25......نصاب الادب(كل صفحات:184)

26......تفسيرالجلالين مع حاشية انوارالحرمين(كل صفحات:364)

27......خلفائے راشدین(کل صفحات:341)

28......قصیدہ بردہ مع شرح خرپوتی(کل صفحات:317)

29......فیض الادب(مکمل حصہ اوّل،دوم)(کل صفحات:228)

शो'बए तख़रीज

(1) सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का इश्क़े रसूल

(2) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सए अव्वल ता शशुम)

(3) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा 7 ता 13)

(4) उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ

(5) अ़जाइबुल कु़रआन मअ़ ग़राइबुल कु़रआन

(6) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल

(7) बहारे शरीअ़त (सोलहवां हिस्सा)

www.dawateislami.net

(08) तह्क़ीक़ात
(09) अच्छे माहोल की ब-र-कतें
(10) जन्नती ज़ेवर
(11) इल्मुल क़ुरआन
(12) सवानेहे करबला
(13) अर-बईने ह-नफ़िय्या
(14) किताबुल अ़क़ाइद
(15) मुन्तख़ब ह़दीसें
(16) इस्लामी ज़िन्दगी
(17) आईनए क़ियामत
(18 ता 24) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)
(25) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़
(26) बिहिश्त की कुन्जियां
(27) जहन्नम के ख़त़रात
(28) करामाते सहाबा
(29) अख़्लाक़े सालिहीन
(30) सीरते मुस्त़फ़ा
(31) आईनए इ़ब्रत
(32) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम
(33) जन्नत के त़लबगारों के लिये म-दनी गुलदस्ता
(34) फ़ैज़ाने नमाज़
(35) 19 दुरूदो सलाम
(36) फ़तावा अहले सुन्नत (आठवां ह़िस्सा)
(37) फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़ मअ़ दुआ़ए निस्फ़े शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म

शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा

(01) ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुललाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ
(02) ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ
(03) ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ
(04) ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ
(05) ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ
(06) फ़ैज़ाने सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ
(07) फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

www.dawateislami.net

शो'बए फ़ैज़ाने सहाबिय्यात

(01) शाने ख़ातूने जन्नत
(02) फ़ैज़ाने आइशा सिद्दीक़ा

शो'बए इस्लाही कुतुब

(01) ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हालात
(02) तकब्बुर
(03) 40 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
(04) बद गुमानी
(05) क़ब्र में आने वाला दोस्त
(06) नूर का खिलोना
(07) आ'ला ह़ज़रत की इन्फ़िरादी कोशिशें
(08) फ़िक्रे मदीना
(09) इम्तिहान की तय्यारी कैसे करें ?
(10) रियाकारी
(11) क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत
(12) उ़श्र के अह़काम
(13) तौबा की रिवायात व हिकायात
(14) फ़ैज़ाने ज़कात
(15) अहादीसे मुबा-रका के अन्वार
(16) तरबिय्यते औलाद
(17) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ?
(18) टीवी और मूवी
(19) त़लाक़ के आसान मसाइल
(20) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी
(21) फ़ैज़ाने चेहल अहादीस
(22) शर्हे श-ज-रए क़ादिरिय्या
(23) नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल
(24) ख़ौफ़े ख़ुदा
(25) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत
(26) इन्फ़िरादी कोशिश
(27) आयाते क़ुरआनी के अन्वार
(28) नेक बनने और बनाने के त़रीक़े

www.dawateislami.net

(29) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम
(30) ज़ियाए स-दक़ात
(31) जन्नत की दो चाबियां
(32) काम्याब उस्ताज़ कौन ?
(33) तंगदस्ती के अस्बाब
(34) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात
(35) ह़ज व उ़म्रह का मुख़्तसर त़रीक़ा
(36) जल्द बाज़ी के नुक़्सानात
(37) क़सीदए बुर्दा से रूह़ानी इलाज

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

(01) सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम
(02) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब
(03) इस्लाह़ का राज़ (म-दनी चेनल की बहारें ह़िस्सए दुवुम)
(04) 25 क्रिस्चेन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम
(05) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात
(06) वुज़ू के बारे में वस्वसे और उन का इलाज
(07) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (1)
(08) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (2)
(09) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (3) (सुन्नते निकाह़)
(10) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (4)
(11) मुर्दा बोल उठा
(12) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से)
(13) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में ह़िक्मत
(14) क़ब्र खुल गई
(15) पानी के बारे में अहम मा'लूमात
(16) गूंगा मुबल्लिग़
(17) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें
(18) गुमशुदा दूल्हा
(19) मैं ने म-दनी बुरक़अ़ क्यूं पहना ?
(20) जिन्नों की दुन्या
(21) ग़ाफ़िल दरज़ी
(22) कफ़न की सलामती
(23) चल मदीना की सआ़दत मिल गई

www.dawateislami.net

(24) बद नसीब दूल्हा

(25) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ?

(26) बे क़ुसूर की मदद

(27) अ़त्तारी जिन का ग़ुस्ले मय्यित

(28) हेरोइन्ची की तौबा

(29) नौ मुस्लिम की दर्द भरी दास्तान

(30) मदीने का मुसाफ़िर

(31) ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा

(32) फ़िल्मी अदाकार की तौबा

(33) सास बहू में सुल्ह़ का राज़

(34) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल

(35) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुनत

(36) हैरत अंगेज़ ह़ादिसा

(37) मॉडर्न नौ जवान की तौबा

(38) मुख़ा-लफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ?

(39) मैं ह़यादार कैसे बनी ?

(40) क्रिस्चेन का क़बूले इस्लाम

(41) सलातो सलाम की आ़शिक़ा

(42) क्रिस्चेन मुसल्मान हो गया

(43) म्यूज़ीकल शो का मतवाला

(44) नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग

(45) आंखों का तारा

(46) वली से निस्बत की ब-र-कत

(47) बा ब-र-कत रोटी

(48) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी

(49) मैं नेक कैसे बना ?

www.dawateislami.net

(50) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ?

(51) बद किरदार की तौबा

(52) खुश नसीबी की किरनें

(53) नाकाम आ़शिक़

(54) मैं ने वीडियो सेन्टर क्यूं बन्द किया ?

(55) चमक्ती आंखों वाले बुजुर्ग

(56) इल्मो हिक्मत के 125 म-दनी फूल (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ 6)

(57) हुक़ूक़ुल इबाद की एह़तियातें (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ 6)

(58) नादान आ़शिक़

(59) सिनेमा घर का शैदाई

(60) गूंगे बहरों के बारे में सुवाल जवाब, क़िस्त़ (5)

(61) डान्सर ना'त ख़्वान बन गया

(62) गुलूकार कैसे सुधरा ?

(63) नशेबाज़ की इस्लाह़ का राज़

(64) काले बिच्छू का ख़ौफ़

(65) ब्रेक डान्सर कैसे सुधरा ?

(66) अ़जीबुल ख़िल्क़त बच्ची

www.dawateislami.net

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

सुन्नत की बहारें

الحمد للہ عزوجل तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, ان شاء اللہ عزوجل इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** ان شاء اللہ عزوجل" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। ان شاء اللہ عزوجل

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फूलाई दरीन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुधोल कोम्पलेक्स, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net